कर्मयोगी आचार्य भगवान देव

9.1

कर्मवीर

आचार्य भगवानदेव

(संसद सदस्य)

प्रधान सम्पादक :

नवीन सूरी

(सम्पादक दैनिक मिलाप)

सम्पादक:

डॉ. कान्ता गुप्ता

M. A. Phd. L. L. B.

मूल्य : श्रद्धा

प्रकाशक :

आचार्य भगवानदेव अभिनन्दन ग्रंथ समिति

"योग मन्दिर" 2 पार्क एवेन्यू महारानी बाग

नई दिल्ली-110065

आचार्य भगवानदेव अभिनन्दन समारोह समिति

अध्यक्ष : पू० स्वामी जगदीश्वरानन्द गीता मन्दिर न्यूयार्क
उपाध्यक्ष : डॉ० धर्मवीर जी भूतपूर्व राज्यपाल
,, श्री पूनम सूरी मैनेजिंग डायरेक्टर मिलाप नई दिल्ली ।
,, श्री सोमनाथ मरवाहा एडवोकेट नई दिल्ली ।
,, डॉ० गोस्वामी गिरधारीलाल जी, नई दिल्ली ।
,, डॉ० दुःखनराम "पद्म श्री" पटना ।
,, श्री यशपाल कपूर नई दिल्ली ।
,, प्रो० राम पंजवाणी "पद्म श्री" बम्बई ।
,, श्री हुंदराज दुखायल "पद्म श्री" गांधी धाम ।
,, डॉ० लोकेशचन्द्र संसद सदस्य नई दिल्ली ।
,, प्रिंसीपल बी. राम जकार्ता इन्डोनेशिया ।
,, राष्ट्रकवि सनम गोरखपुरी बम्बई ।
,, श्री एल० लुला दुबई ।
,, प्रोफेसर आनन्द मोहन न्यूयार्क ।
,, श्री राम वक्षशाणी, दुबई ।
महामन्त्री : श्री नवीन सूरी सम्पादक दैनिक मिलाप नई दिल्ली ।
मन्त्री : श्री राजीव लोचन एडवोकेट नई दिल्ली ।
,, श्री बलदेव गाजरा सम्पादक भारतवासी बम्बई ।
,, श्री आनन्द विरमानी नई दिल्ली ।
,, श्री पं० आनन्दप्रिय जी बड़ौदा ।
,, श्री पं० विशम्भरदास शर्मा सम्पादक "गोधन"
,, श्री इन्द्र ईसराणी एडवोकेट जयपुर ।
,, श्री किशन मोटवाणी *M. L. A.* अजमेर ।
,, श्री मोती सागर बम्बई ।
,, श्री आचार्य झमटमल टिलवाणी अजमेर
,, श्री टी० बी० मनसुखानी बैंगलौर ।
,, श्री एल हीरा मद्रास ।
,, डॉ. गीताशाह गीता मन्दिर बड़ौदा ।
,, डॉ. दुर्गा थावराणी कलकत्ता ।
,, डॉ. कुसुम कुमार नई दिल्ली ।
,, प्रो. दयाल परमार जामनगर
,, श्रीमती माला सिंगापुर ।
,, श्रीमती कुसुम आनन्द न्यूयार्क ।
,, श्रीमती प्रीति सागर बम्बई ।
,, श्री लखमीचन्द रूपचन्दाणी नई दिल्ली ।
,, डॉ. गीता बहिन *M. L. A.* अहमदाबाद ।
,, डॉ. कान्ता गुप्ता नई दिल्ली ।

सिन्धु रत्न आचार्य भगवान देव

आचार्य भगवानदेव

विषय सूची

उत्तम जन धन पायके, कभी न चले कुचाल ।
पर उपकारी सुजन जो, है मर्यादा पाल ।।

तन रक्षा भिक्षा करे, गुरु शिक्षा उर पोष ।
भोग भूप धन मोक्ष रिपु, मोक्ष करे हित मोक्ष ॥

जिम तरुवर अति भार ते अती नम्र हो जाय।
नवजल से भरपूर धन, झुके भूमि पर आय॥

कांटा औरों को लगे, तड़पे साधु सुजान ।
सारे जग के दुःख को, समझें अपना जान ।।

दुख सागर संसार में, प्रभु प्रेम इक सार।
दुख से प्रेमी भक्तजन, उतर गये सब पार॥

१४७. अमूल्य ग्रन्थ देने वाले — डा० वीर रत्न आर्य - किशनगढ़
१४८. यशस्वी साहित्यकार एवं पत्रकार — वाई० एस० ईसरानी ऐडवोकेट - जयपुर
१४९. दिल्ली का कायाकल्प कांग्रेस ने किया भा० ज० पा० का संसद में भण्डाफोड़
१५०. टैगोर की साधना स्थली — विश्व भारती
१५१. महर्षि अरविन्द की तपोभूमि — पांडिचेरी
१५२. कश्मीर की वादियों को बर्बाद नहीं होने देंगे
१५३. चोरों को पकड़वाने वालों को इनाम दें
१५४. सिनेमा कर्मकारों का कल्याण करें
१५५. सिन्धियों की समस्याओं का समाधान करें
१५६. रीजनल कालेज को यूनिवर्सिटी में बदलें
१५७. कांग्रेस ने दिल्ली का नक्शा बदला
१५८. सारी उमर तुम्हें लग जाये — जगपाल सिंह सरोज - नई दिल्ली
१५९. शैतान बसे रहें अच्छे उजड़ जाएं
१६०. विरोधी अन्धकार में भटक रहें हैं
१६१. तस्करी अन्तर्राष्ट्रीय चन्द सफेदपोश डाकू कर रहे हैं
१६२. सांप्रदायिक दंगे करने वालों को जेलों में बन्द करें
१६३. हिंदी संवाद समितियों को शक्तिशाली बनावें
१६४. आसाम की समस्या को विरोधियों ने राजनैतिक रूप दिया है
१६५. महर्षि दयानन्द फिल्म — सोमनाथ मरवाह - नई दिल्ली
१६६. महर्षि दयानन्द फिल्म — सार्वदेशिक सभा का एग्रीमेन्ट
१६७. सार्वदेशिक सभा को पत्र
१६८. आचार्य भगवानदेव द्वारा किए गए कार्यों का संक्षिप्त विवरण
१६९. संसदीय राजभाषा समिति — कार्य विवरण

(सन् १९८० से १९८४ तक)

170. Great men are meteoro designed to busn, Sothat Earth may ke lighted. — Apoorva Lochan - New Delhi
१७१. श्री ओमप्रकाश प्रवासी का पत्र न्यूयार्क से
172. Letter From Mrs. Kusum Mohan — New York.
१७३. आचार्य भगवानदेव लोकसभा में विजयी
174. Acharya Bhagwan Dev—Giver — Smt. Vijay Soni - N. Delhi
१७५. मध्य प्रदेश के मुख्यमन्त्री द्वारा अभिनन्दन पत्र
१७६. प्रथम विश्व सिन्धी सम्मेलन तथा उसका कार्य विवरण

प्रेम प्रेम सब ही कहे, प्रेम न जाने कोय।
आठ पहर नाभो रहे, प्रेम कहावे सोय॥

सम्पादकीय

आचार्य भगवान देव की जीवनी

श्री नवीन सूरी सम्पादक "मिलाप"
दैनिक—नई दिल्ली

कुछ दिन हुए मुझे ये मालूम हुआ कि आचार्य भगवानदेव जी अपनी जिन्दगी के पचास वर्ष पूरे कर रहे हैं। पचास वर्ष एक लम्बा अरसा होता है खासकर एक ऐसे इन्सान का जिसने जिन्दगी को बहुत करीबी से देखा हो। जिसने हर पहलू में रहकर उसको परखा हो, उसकी खनखनाहट को सुना हो, उसे अपने दिल की गहराईयों से महसूस किया हो फिर वो दावे के साथ कह सकता है कि जिन्दगी को उसने जिया है। आचार्य भगवानदेव एक ऐसे ही शख्स हैं जिसने वाकई जिन्दगी को जिया है। पचास वर्ष यूं तो लगते हैं कि बहुत लम्बे होंगे लेकिन इन्सानी जिन्दगी में इन वर्षों को देखा जाये, उनके लम्हात को सोचा जाये, उनके विषय में लिखा जाये, उनके विषय में तपसुरा किया जाए, उन्हें ब्यान किया जाए तो यूं लगेगा कि शायद ये पचास वर्ष, पचास मिनट भी न थे बल्कि पचास सेकेन्ड ही होंगे।

इन्सान की जिन्दगी में इतना कुछ होता है करने को, करवाने को, सोचने को, कहने को, लिखने को, बोलने को कि पचास वर्ष कुछ भी नहीं होते हैं। वो चाहे तो न जाने एक उम्र क्या, पचास उम्रें गुजार देगा और फिर भी वो मुतमाईन नहीं होगा। संतुष्ट नहीं होगा उसको शांति नहीं मिलेगी, और शायद इसी तड़प का नाम इन्सान है। ये आगे बढ़ने की, आगे भविष्य काल में क्या होना है उसे पाने की, कुछ हासिल करने की, कुछ गंवाने की, अगर यह इच्छा भी उसमें न हो तो फिर वो इन्सान कैसे कहलायेगा ? वो तो फिर एक पत्थर है, जिसे किसी ने उठाकर रख दिया और किसी ने फेंक दिया। इन्सान कहलाने के लिये उसके दिल में एक तड़प होनी चाहिए। यह तड़प ही ऐसी चीज है, जो इन्सान को इन्सान बनाती है। मैं नहीं जानता कि आचार्य भगवानदेव जी के पचास बरसों की उम्र को कैसे अल्फाज में ढालूं। जैसे कि इन्सान को पचास वर्ष जीने के लिये वाकई पचास वर्षों की जरूरत होती है, वैसे ही अगर पचास वर्षों के बारे में ब्यान करना हो, उनके वाक्यात को, हालात को, उनमें जो कुछ गुजरा है, एहम या गैर जरूरी बातें हुईं उनको अगर ब्यान करना है तो उसके लिए पचास सफे तो क्या, पचास किताबें तो क्या, पचास ग्रंथ तो क्या, पचास महाकाव्य भी लिखे जायें तो फिर भी पूरी तरह अपने मकसद में कामयाब नहीं हो सकेंगे।

ये मुमकिन ही नहीं है कि एक जिन्दगी के बारे में अल्फाज से पूरी तरह ब्यान किया जाए। मैं जानता हूं कि

किसी के काम जो आए, वह एक अनमोल हीरा है।
किसी के काम न आए, वह दस पैसे का खीरा है॥

बहुत से बड़े रहनुमाओं की, लीडरों की biographies लिखी गई हैं, उनकी जिन्दगी ब्यान की गई है, उम्र सवानियां लिखी गई हैं लेकिन ये जो लिखा गया है उन शख्सियतों को पूरी तरह बता सके तो ये नादानी होगी। ये तो कभी हो ही नहीं सकता। क्योंकि अल्फाज इन्सान के बनाए हुए हैं। और जिन्दगी के लम्हात भगवान के बनाए हुए हैं। भगवान और इन्सान से कोई मुकाबला हो ही नहीं सकता।

इस महान् ग्रंथ को पेश करते हुए आचार्य भगवानदेव जी की जिन्दगी के बारे में कुछ लिखने को बैठा हूं तो अपने-आपको अधूरा महसूस कर रहा हूं। अपने आपको बहुत मजबूर महसूस कर रहा हूं। अपने आपको बंधा महसूस कर रहा हूं और ऐसा लगता है जैसे कि मैं एक ऐसे मौजू को, एक ऐसे topic को, एक ऐसे वक्त को ले बैठा हूं जिसके बारे में मेरी लिखने की ताकत ही नहीं है, जिसके बारे में मेरे कलम में वो सलाहियत नहीं है, जिसके बारे में मैं आपको पूरी तरह ब्यान कर सकूं। फिर भी अपनी कमियों को समझते हुए कोशिश जरूर करूंगा कि आचार्य भगवानदेव जी के बारे में चन्द बातें आपके सामने रखूं।

आचार्य जी की उम्र कब, कहां, कैसे शुरू हुई ये तो तारीख में आ ही जाता है। हम और आप तारीखों के अगर हेर-फेर में पड़े रहेंगे तो उस शख्सियत को समझ नहीं पायेंगे। मैं यह नहीं कह रहा हूं कि तारीख गैर जरूरी है या उसे नजरअन्दाज कर देना चाहिए। ये नहीं हो सकता। तारीख को भी उसकी अहमियत देनी पड़ेगी, पूरी-पूरी importance देनी पड़ेगी, इसलिए मैं सबसे पहले आचार्य भगवानदेव जी के वंश वृक्ष के विषय में कुछ कहना चाहूंगा। आचार्य जी एक बहुत ही पुराने और प्राचीन खानदान के हैं। आप जानते ही हैं कि हर मनुष्य एक पुराने और प्राचीन खानदान से है क्योंकि वह मनुष्य है। वरना अगर और कोई होता तो उसका खानदान पता करना मुश्किल हो जाता। मनुष्य, मनुष्य से ही पैदा हुआ है, यह हमारा विश्वास है, हमारे धर्म का विश्वास है। विज्ञान हमें बताता है। वो अलग बात है। यहां हम वो discuss नहीं कर रहे, बहस नहीं कर रहे। यहां हम एक इन्सान को, एक मनुष्य को, एक आदमी को, उसके जज्बात को देखने की कोशिश कर रहे हैं। आचार्य जी के वंश के बारे में हमें सबसे पहले यह मालूम होता है कि श्री वरलमल जी ने इसे शुरू किया। उसके बाद उनके बेटे आये श्री नाऊमल जी, उसके बाद उनके बेटे श्री खानचन्द जी। श्री गंगाराम जी उनकी औलाद थे और उन्होंने खानदान को आगे शुरू किया। श्री गंगाराम जी, आचार्य भगवानदेव जी के दादा जी थे।

उनके पुत्र श्री गोपालदास जी आचार्य जी के पिता थे। श्री गोपालदास जी के काफी औलाद हैं, जिनमें सबसे बड़े आचार्य भगवानदेव जी हैं उनसे छोटे देवराज जी, उनसे छोटी जमुना जी, उनसे छोटी सीमा जी फिर मेघराज, ईश्वर, मोहिनी, श्याम, रुकमणी और अन्त में सरस्वती। लेकिन अगर हम सबों के बारे में सोचने लगेंगे तो आचार्य भगवानदेव जी के बारे में ब्यान करना मुश्किल हो जायेगी।

इसलिए हम भगवानदेव जी को देखें। उनका विवाह पद्मा जी से हुआ। इनके दो बच्चे हैं, बड़ी लड़की प्रियदर्शनी और असीम प्रियदर्शी छोटा लड़का। ये तो है आचार्य जी के वंश का वृक्ष, जो अब असीम प्रियदर्शी पर रुका हुआ है, वो बड़ा होगा, उसका विवाह होगा तो यह वंश आगे चलेगा। मुझे यकीन है कि जैसे कि आज हमने बाकी वंश के बारे में ब्यान किया है, वैसी ही प्रियदर्शी के आगे के पुत्रों के पौत्रों के बारे में भी ब्यान किया जाएगा। वो भी इसी तरह फलता-फूलता रहे और दुनिया में एक रोशनी फैलाता रहे जैसे आचार्य जी फैला रहे हैं। मेरी यह आदत सी है, चाहे अच्छी कहें या बुरी मैं जल्दी जज्बाती हो जाता हूं, शायद यह हर लेखक में होता है। पर आचार्य जी पर लिखते हुए जज्बात से भर जाना कोई बड़ी बात नहीं है। आचार्य जी मेरे लिये एक बड़े भाई के समान हैं। उनको मैं तब से जानता हूं जब से शायद मैंने होश सम्भाला है। उनकी सेवाओं को, उनके मित्रों को, उनके परिवार को, उनके दायरे को अगर पूरी तरह लिखना हो यह मुमकिन नहीं है। लेकिन फिर भी चन्द चीजों से मैं

भगवानदेव तेरा नाम ही इन्कलाब है।
गरीबी मिटाओ की पुकार से तू जिन्दाबाद है॥
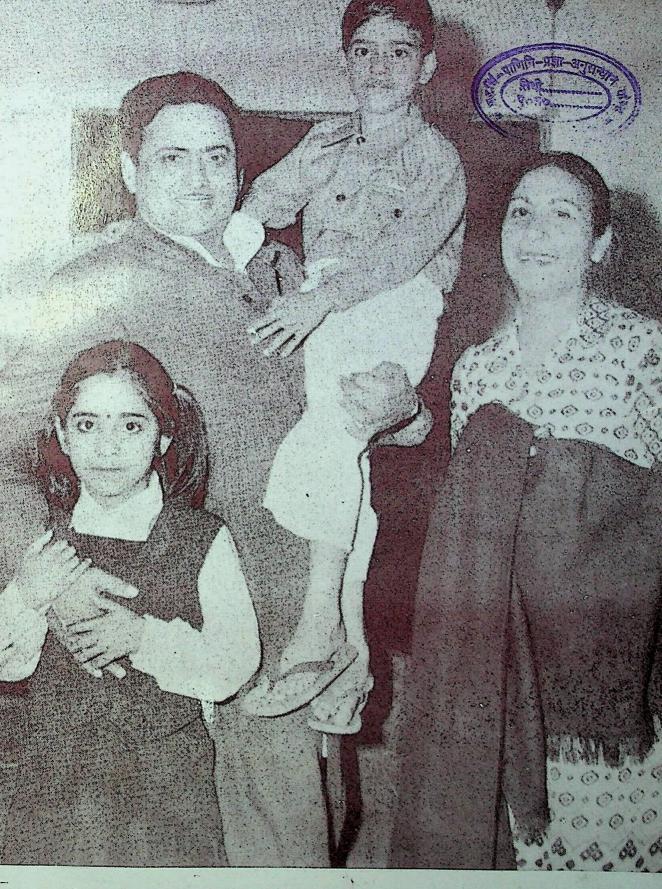
ग्राचार्य भगवानदेव संसद सदस्य ग्रपनी पत्नी श्रीमती पदमाभारती पुत्री प्रियदर्शनी पुत्र ग्रसी प्रियदर्शी के साथ

आचार्य भगवानदेव के

पिता — श्री गोपालदास

माता — ज्ञानी बाई

यह बताने की कोशिश करूंगा कि आचार्य जी का सिलसिला कहां से शुरू हुआ, कहां तक पहुंचा है और कहां तक जाना है। आचार्य भगवानदेव जी का जन्म ३ फरवरी १९३५ में हुआ था। पाकिस्तान के सिन्ध सूबे जिला नवाब शाह के छोटे से बैरानी गांव में एक ऐसे लड़के ने जन्म लिया जो शुरू से इस बात का अहसास करता था कि भगवान ने उसे बेहतराई और अच्छाई फैलाने के लिए भेजा है। और आचार्य जी ने अपने गुजरे हुए पचास वर्षों की जिम्मेदारी को बहुत खूबी से निभाया है। १९३८ में गांव के सरकारी विद्यालय में आचार्य जी ने प्रवेश किया और पढ़ाई शुरू की।

१९४१ में आचार्य जी का यज्ञोपवीत हुआ। ये रस्म यूं तो बहुत से घरानों में होती है, बहुत से लोगों के यहां होती है पर इसकी अहमियत बहुत कम इंसान समझते हैं। आचार्यजी ने इसकी अहमियत को समझा भी है निभाया भी है। गुरु ऋण, मातृ ऋण, पितृ ऋण, तीनों ऋणों को आचार्यजी ने बहुत ही जिम्मेदारी से और प्यार से निभाया है।

१९४७ में आचार्य जी सातवीं कक्षा में पढ़ते थे, उस वक्त मुल्क का बंटवारा हुआ और हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दो मुल्क बनाए गए। बाकी विद्यार्थियों की तरह इन्हें भी १४-८-१९४७ को स्कूल में आने को कहा ताकि वह पाकिस्तानी झण्डे को सलामी दे सकें।

मगर ये जानते थे कि अन्दर से वो एक हिन्दुस्तान को सलाम करते हैं, वो हिन्दुस्तानी ही रहेंगे और वह झण्डे को सलामी देने नहीं गये। १५ तारीख को उनके शिक्षक मौलवी जान मुहम्मद साहब ने उन्हें सख्त सजा दी। सिर्फ इतना ही नहीं, उन्हें कड़ी धूप में खड़ा कर दिया गया और भूखा-प्यासा रखा गया। लेकिन आचार्य जी अपने इरादे के पक्के थे। सातवीं कक्षा में ही उन्हें यह अहसास था कि देश एक है, कौम एक है, इन्सानियत एक है। इसलिये बंटवारा करने वालों के कहे हुए किसी ऐसे मुल्क को सलामी नहीं देंगे जो सम्प्रदाय की बुनियाद पर बना हो। २१-९-१९४७ को आचार्य जी अपने खानदान के साथ पाकिस्तान से हिन्दुस्तान आये। राजस्थान के ब्यावर शहर में आकर रुके। १९४९ में आचार्य जी ने नौवीं कक्षा तक पढ़ाई खत्म की। १९५२ में पटेल स्कूल, ब्यावर में ही मैट्रिक पास की लेकिन उसके बाद १७ मई १९५२ को इनके दिल में एक ऐसा तूफान आया कि उन्होंने अपने घर को त्यागने का फैसला किया। इतना ही नहीं, वह अपने देश को देखना चाहते थे, घूमना चाहते थे। इसलिये वह भारत भ्रमण पर निकल पड़े। बड़े योगी महात्माओं, संतों से उन्होंने सम्पर्क किया, उनके चरणों में जाकर बैठे, योगदान पाया, तालीम हासिल की, उनसे शिक्षा पाई। इसके अलावा एक रोज हवन करके पैन्ट, कमीज, टाई, सब कुछ उतार दिया और उसी अग्नि में जला दिया। उसके बाद खद्दर का कुरता, लुंगी या पाजामा जैसे मौका हो, धारण कर लिया। इसे आज तक उन्होंने निभाया है।

२० अगस्त १९५३ में वृन्दावन के गुरुकुल विद्यालय में संस्कृत के वेद, दर्शन और दूसरे महान् ग्रन्थों का अध्ययन करके अपनी तालीम को और भी ऊँचा किया।

१९५४ में गोआमुक्ति आंदोलन में इन्होंने बहुत बड़ा अहम रोल अदा किया। उस वक्त उन्होंने महसूस किया था कि सारा हिन्दुस्तान आजाद है, एक छोटा सा टुकड़ा गोरों और गैर मुल्कियों ने क्यों दबाया है। और नौजवानों की तरह आचार्य जी ने भी अपना सारा सुख और चैन त्याग कर देश की खातिर अपने आपको अर्पण कर दिया।

१९५५ में वृन्दावन के गुरुकुल को उन्होंने छोड़ दिया। फिर वो निकल पड़े भारत के और संतों और फकीरों को मिलने के लिये, उनके जन्म स्थानों पर जाने के लिये। विद्वान् योगियों के चरणों में बैठने के लिये ताकि उनके अनुभवों, उनकी जिन्दगियों, त्यागमयी जीवन से वह भी कुछ सीख सकें। लेकिन उसका यह मतलब नहीं है कि आचार्य जी ने हिन्दुस्तान के लाखों करोड़ों लोगों की तरफ कोई ध्यान ही नहीं दिया, या वह सिर्फ अपने ही तालीम के लिए लगे रहे।

इस जिन्दगी में बन्दे, कुछ ऐसा काम कर जा।
आया है इस जहाँ में, कुछ पैदा नाम कर जा॥

१९५६ में गुजरात और मध्यप्रदेश के भील आदिवासियों के पास गये और ठोस काम किया। उनके अन्दर जागृति पैदा की कि वो अब हिन्दुस्तान के नागरिक हैं, गुलाम नहीं हैं। वो आदिवासी चाहे हों एक तरक्की वज़ीर, एक तेजी से आगे बढ़ते हुए मुल्क के नागरिक हैं जिसका हिस्सा वो बनकर अपने पर फक्र और विचार ला सकते हैं।

१९५६ में बड़ौदा होते हुए आचार्य जी ने महा गुजरात आंदोलन में काम किया। वह गिरफ्तार भी हुए और वह गुजरात की प्राचीन राजधानी पाटन भी गये। १९५७ में पाटन नगरपालिका के वह सदस्य चुने गये। इसी बीच आचार्य जी ने आर्य युवक महा सभा की स्थापना की और देश भर के युवक, जवानों को एक नई राह दी जिससे वो एक नई उम्मीद, नया लक्ष्य और नई रोशनी कायम कर सके। उस वक्त हिन्दुस्तान के लोग डगमगाये हुए थे गुलामी तो हट गई थी लेकिन जो दो मुल्क बंटे थे, जो Partition हुआ था, जो विभाजन हुआ था, सीनों के अन्दर घाव पैदा हो गये थे। बहुत से घर उजड़ गए थे। उन घावों पर मरहम रखने के लिये लोगों को एक नई दिशा की जरूरत थी। बाकी रहनुमाओं से हिम्मत और रोशनी पाकर आचार्य जी ने एक नई सभा बनाई जिसका नाम उन्होंने आर्य युवक महासभा दिया।

१९५७ में ही सितम्बर में पंजाब के अन्दर हिन्दी सत्याग्रह शुरू किया गया। बम्बई से बड़ा जत्था लेकर उसका नेतृत्व करते हुए आचार्य जी चण्डीगढ़ पहुंचे तथा उन्होंने सत्याग्रह में पूरा योगदान दिया। चण्डीगढ़ में वो गिरफ्तार भी हुए जहां वह चार दिन जेल में रहे और उसके बाद अंदाजन साढ़े तीन महीने को जालन्धर जेल में बंदी रहे।

दिसम्बर १९५७ में उनसे मुक्ति पाकर वह गुजरात पाटन आ गये। १९५८ में उन्होंने बम्बई प्रांतीय आर्य धर्म परिषद् का आयोजन किया। इस आयोजन को देखकर लोगों को अहसास हुआ कि भगवानदेव सिर्फ एक social worker ही नहीं, एक स्वयं सेवक ही नहीं बल्कि एक बहुत अच्छे आयोजक भी हैं। १९६० में आचार्य जी ने प्रांतीय आर्य वीर दल का काम संभाला और इसके संचालक बने।

१९६० में ही जब गुजरात के अंदर एक महाकाल आया, सूखा पड़ा तो पीड़ित लोगों के लिये आचार्य जी ने एक आंदोलन चलाया और उसके अंदर एक बड़ा रोल अदा किया। १९६१ में महाऋषि दयानन्द जी की जन्मभूमि टंकारा के वह अध्यक्ष चालक चुने गये।

१९६२ में हरिद्वार के अन्दर एक कुम्भ मेला लगा था जिसमें आचार्य जी ने भाग लिया, अनेक सम्मेलन किये और वेदों और योगों के बारे में ज्ञान दिया और इसके बाद वह तपोवन चले गये जो देहरादून के करीब है और एक साल एकांतवास किया। इसी दौरान उन्होंने एक महान् किताब लिखी 'विश्व वंदनीय महाऋषि दयानन्द'।

१९६३ में टंकारा नगरपालिका में, दो वार्डो से, एक हिन्दू एक मुस्लिम, दोनों से चुने गये। न्यायपंच बनाये गए। आयुर्वेद कालेज की स्थापना की थी।

१९६४ में उन्होंने अखिल भारतीय शुद्ध आयुर्वेद सम्मेलन किया, जिसमें अंदाजन तीन हजार वैद्य आये थे। ये अपने किस्म का बेमिसाल सम्मेलन था और उससे जो आयुर्वेद को लाभ पहुंचा वो आज तक तारीख में सुनहरी अल्फाज में लिखा हुआ है।

१९६५ में पाकिस्तान द्वारा जब हिन्दुस्तान पर आक्रमण किया गया तो आचार्य जी ने जवानों के लिए मदद जुटाई, चिकित्सा शिविर लगाए और जागृति पैदा की कि हमें अपना बचाव करने के लिए आत्म निर्भर होना बहुत जरूरी है।

१९६७ में किसान आन्दोलन हुआ, आचार्य जी ने यहां भी एक बड़ा रोल अदा किया।

१९६९ में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा में गोआ के प्रतिनिधि के रूप में वो लिए गए। सभा के उपमन्त्री चुने गये। लेकिन अब आचार्य जी का जीवन टंकारा से दूर दिल्ली की तरफ चलने लगा।

खुदा के बन्दे हैं हजारों, बनों में फिरते हैं मारे मारे।
मैं उसका बन्दा बनूंगा, जिसको खुदा के बन्दों से प्यार होगा॥

पति पत्नि
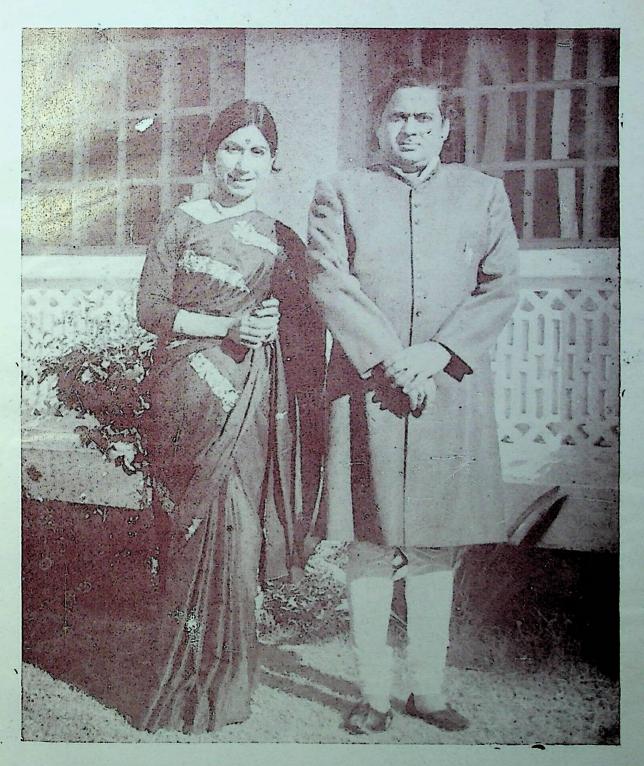
आचार्य भगवानदेव तथा पदमाभारती

पांच भाई
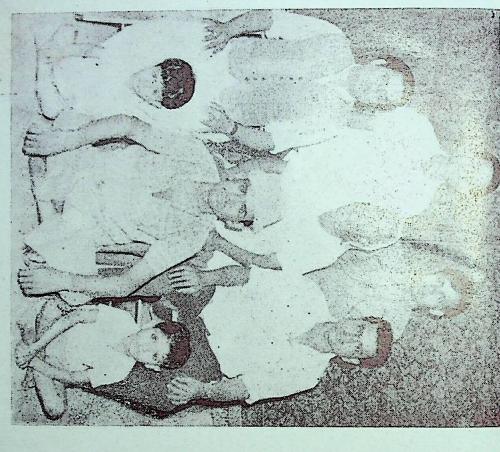
आचार्य भगवानदेव अपनी माता ज्ञानीबाई तथा चार भाइयों—देवराज, मेघराज, ईश्वर तथा श्याम के साथ
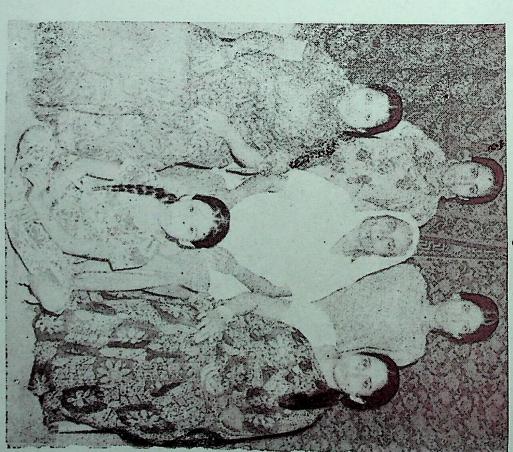
पांच बहनें

आचार्य भगवान देव अपनी माता ज्ञानीबाई तथा पांच बहनों—जमुना, खीमा, मोहिनी, रूक्मणी तथा सरस्वती के साथ

१९७० में अजमेर, बियावर, टंकारा को छोड़ कर आचार्य जी दिल्ली को आए और चार—विश्वविद्यालय मार्ग पंचवटी में आकर रहे।

१९७१ में Supreme Court में हिन्दी में केस चलाए जाएं इस पर मांग करते हुए आचार्य जी गिरफ्तार हुए। इससे जाहिर है कि आचार्य जी जहां कहीं भी रहे उन्होंने मुल्क और मुल्कवासियों का हित कभी नहीं छोड़ा। हर बार इस बात पर जोर देते रहे कि हिंदुस्तान एक है, उसकी भाषा एक है, यह सच है कि हमारे सूबे अलग-अलग हैं, प्रान्तीय भाषाओं का अपना महत्त्व है, अहमियत है, उनका अपना Literature है, अदव है, उनको हम नजरअन्दाज नहीं कर सकते। पर मुल्क को बांधने के लिए एक जबान जरूरी है, उसके लिए उन्होंने हर दम हिन्दी पर जोर दिया।

१९७२ में अलवर, (राजस्थान) में आर्य महासभा का आयोजन किया गया। जिसके पीछे आचार्य जी का हाथ अहम था। और Mauritius के प्रधान मंत्री Dr. शिव सागर राम गुलाम को इसके अन्दर बतौर खास मेहमान बनाकर बुलाया गया। इसी मौके पर आचार्य जी ने 'अंष्टांग योग प्रकाश' नामक ग्रन्थ लिखा और उसका विमोचन कराया।

१९७३ में आर्य सम्मेलन Mauritius में हुआ, आचार्य जी ७५० यात्रियों को लेकर पानी के जहाज से Mauritius गए। वहां पर भारतीयों के प्रतिनिधि बनकर आचार्य जी ने पहला भाषण दिया। इसी मौके पर उन्होंने "स्वतन्त्रता की वेदी" पर पुस्तक लिखी। और सारी दुनिया को हिन्दुस्तान के स्वतन्त्रता संग्राम के बारे में, वीरों के बारे में एक नई रोशनी में एक नई कहानी बताई।

१९७५ में आर्य समाज स्थापना शताब्दी मनाई गई थी। दिल्ली में इसका मुख्य आयोजन किया गया था। सम्मेलन के अध्यक्ष श्री आनन्द स्वामी जी महाराज बनाए गए थे। इस सम्मेलन का आयोजन भगवानदेव जी ने किया और इसकी सबसे मूल और असल बात यह थी कि महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज का स्वागत जामा मस्जिद के इमाम अबदुल्ला बुखारी जी ने खुद सीढ़ी से उतर कर किया। ये अपने आप में एक ऐतिहासिक बात थी कि पहले कभी मुस्लमान और आर्यसमाज एक नहीं हुए थे, लेकिन हिन्दुस्तान एक था, आजाद था। यहां पर मुस्लिम, हिन्दू, सिख, ईसाई सब बाद में, पहले हिन्दुस्तानी थे। आचार्य जी ने यह जज्बा और बढ़ाने में अपना योगदान दिया।

१९७५ में ही योग मन्दिर मासिक पत्रिका शुरु की गई जिसके एडिटर भगवानदेव जी थे। यह पत्रिका हिंदी और अंग्रेजी में है।

१९७६ में अखिल भारतीय योग विज्ञान सम्मेलन हुआ। दिल्ली में यह सम्मेलन करके आचार्य जी ने योग की नई जागृति दी। और जोरबाग के आर्यभवन में वह योग की क्लास लेते और उस पर कथा करते थे।

१९७७ में Nairobi में आर्य महासम्मेलन हुआ और भाग लेने के लिए वो भी गए।

१९७८ में कांग्रेस के कार्यों में उन्होंने दिलचस्पी ली। उस समय श्रीमती इन्दिरा गांधी और संजय गांधी जी के ऊपर उस समय के सरकार के अत्याचार और विरोध चल रहे थे। उन अत्याचारों को देखकर आचार्य जी ने इन्दिरा जी की शख्सियत और संजय जी की महानता को पहचान कर के ये फैसला किया कि अगर मुल्क की रहनुमाई के लिए कोई काबिल है, अगर ऐसी कोई शख्सियत है जो मुल्क को आगे लेकर जा सकती है तो वह इन्दिरा गांधी की है, इसलिए वह इन्दिरा जी की सेवा में जुट गए।

१९७९ में मोरवी के अन्दर बहुत भयानक बाढ़ आई जिसमें हजारों लाखों लोग बह गए। उनकी मदद के लिए सारा भारत एक होकर जाग उठा। आचार्य जी ने भी इस महान् कार्य में अपना योग दान दिया। 'दूर से ही नहीं पर खुद मोरवी जाकर काम में जुट गए ताकि बेसहारों को नए जीवन शुरू करने की मदद दी जा सके। आचार्य जी

सतत हृदय में जो जले—वह आग चाहिए।
उर में स्वदेश के लिए—अनुराग चाहिए॥

जन सेवा में लगे हुए थे कि मुल्क के अन्दर तेजी से तबदीली आ रही थी। देश की सियासत बहुत तेजी से बदल रही थी। आपको तो मालूम ही है कि देश के लोगों ने १९७७ में चन्द लोगों के अत्याचार से तंग आकर इन्दिरा जी के खिलाफ वोट दी। उन्हें सरकार छोड़ने की हिदायत दी। इन्दिरा जी ने लोगों का हुक्म माना और सरकार छोड़ दी। उसके बाद जनता पार्टी की हुकूमत आई जिसके श्री मोरारजी देसाई प्रधानमन्त्री बने। लेकिन जो पार्टी एक दूसरे के शक के ऊपर बनाई गई हो वो कामयाब कैसे हो सकती है; इसलिए जनता पार्टी भी कामयाब नहीं हो सकी। आपस की दुश्मनी, आपस की लड़ाई, आपस के इख्तलाफ ने उसे तोड़ दिया। श्री चरणसिंह कांग्रेस के हिमायत से ही प्रधानमंत्री बने पर वह एक दफा भी पार्लियामेन्ट के सामने पहुंच नहीं सके।

१९७९ में पार्टी भंग कर दी गई और राष्ट्रपति जी ने आम चुनाव का एलान किया।

१९८० में आम चुनाव होने वाले थे। कांग्रेस अपना जोर लगा रही थी, जनता पार्टी अपना, लोक दल अपना और जो पार्टियाँ छोटी-छोटी नई बनी थीं वो भी अपना जोर लगा रही थीं। पर तब आज का इन्सान बात समझ चुका था। वो देख चुका था कि सिवाय कांग्रेस के ऐसी कोई और पार्टी नहीं जो मुल्क को आगे ले जा सके, एक बना कर रख सके। बाकी पार्टियों ने सिर्फ अपने बारे में सोचा, अपनी ही पार्टी के बारे में सोचा। उन्होंने अपनी सरकार की गद्दी को कायम रखने के लिए ही सोचा। उन्होंने यह नहीं देखा कि मुल्क की सेवा कैसे की जाए, मुल्क का नाम आल्मी स्टेज पर कैसे बढ़ाया जाए, राजनीति कैसे की जाए और देश को और उसके लोगों को इज्जत कैसे दी जाए। इन सब बातों को नजरअंदाज करते हुए उस वक्त के सियासत दान अपनी ही सियासत में उलझे रहे। सिर्फ एक ऐसी पार्टी थी जिसका सिर्फ एक रहनुमा था, एक पोलिसी थी, एक रास्ता था और वो थी देश की सेवा। इन्दिरा जी ने फिर लोगों के सामने हाजिरी दी, अपील की कि अगर वो देश को बचाना चाहते हैं, तो सिर्फ इंदिरा गांधी की ही सरकार बचा सकती है। इसमें भी आचार्य जी ने बहुत बड़ा हिस्सा लिया। चुनाव तो सारे देश में हो रहे थे लेकिन राजस्थान के अजमेर हल्के से भगवानदेव जी को कांग्रेस आई की टिकट दी गयी। ताकि वहां के लोगों में कांग्रेस और देशभक्ति के बारे में जागृति फैला सकें। आचार्य जी ने चुनाव लड़ा। किन हालात में लड़ा, ये शायद एक बेमिसाल और लाजवाब वाक्य है। ये तो सारी दुनियां जानती है कि आचार्य जी न तो कोई व्यापारी हैं, न ही उनकी कोई बड़ी Factory है और न ही कोई दुकान है, न कोई बसें चलती हैं न कोई License है, न ही कोई export-import का बिजनेस है, कुछ भी नहीं है। वो तो सिर्फ एक विद्वान् हैं, सिर्फ वेदों, ग्रन्थों, आचार्यों और महाऋषियों का दिया हुआ ज्ञान है। और इसी ज्ञान के जरिए जागृति के जरिए वो लोगों के पास गए। उनसे उनका विश्वास मांगा। देश की नेता श्रीमती इन्दिरा गांधी की रहनुमाई में लोगों को विश्वास करने को कहा। जब लोगों ने देखा कि आचार्य भगवानदेव जैसा इन्सान इन्दिरा जी की रहनुमाई को कबूल करता है, तो जरूर उनमें कोई तो ऐसी खसूसियत ऐसी कोई खासियत, कोई काबलियत तो होगी कि वो मुल्क को इतना आगे लेकर जा रही हैं। लोगों ने अपना विश्वास दिया सिर्फ अजमेर में ही नहीं बल्कि सारे हिन्दुस्तान में और कांग्रेस आई एक बहुत बड़ी अकसरियत लेकर बहुत बड़ा मत लेकर वो पार्लियामेंट में अपने नुमाइन्दों के साथ चुनी गईं। इन्दिरा जी फिर दोबारा प्रधानमन्त्री बनीं। देश में उस कारवां ने जो दो तीन साल पहले पिछड़ गया था दोबारा चलना शुरू किया ताकि जिस रफ्तार में कमी आ गयी थी उसे फिर से पूरा किया जा सके। आचार्य जी पहले भी लोगों के सेवक थे। और पार्लियामेंट के मेम्बर बनने के बाद वो सेवक ही रहे। उन्होंने और जोरों से सलाहियत से सेवा करनी शुरू करी।

अगस्त १९८० में लन्दन में विश्व आर्य सम्मेलन में भाग लेने के लिए गए। वहां पर जो भाषण दिया जिसका असर वहां की ही जनता पर नहीं बल्कि सारी दुनियां के लोगों पर इतना प्रभाव पड़ा कि आर्य जगत् का एक नया सिलसिला शुरू हो गया। योग सम्मेलन की अध्यक्षता की, अनेक जगहों पर आचार्य जी के समारोह हुए, इतना ही

अपनी आवाज उठाए चल, जग की अगणित आवाजों में।
आवाज तुम्हारी सुन शायद, युग की आवाज बदल जाए॥

हम दो

आचार्य भगवानदेव

पद्मा भारती

हमारे दो

प्रिय दर्शनी-पुत्री

असीम प्रिय दर्शी -पुत्र

असीम प्रियदर्शी पुत्र के नामकरण संस्कार में उपस्थित परिजन।
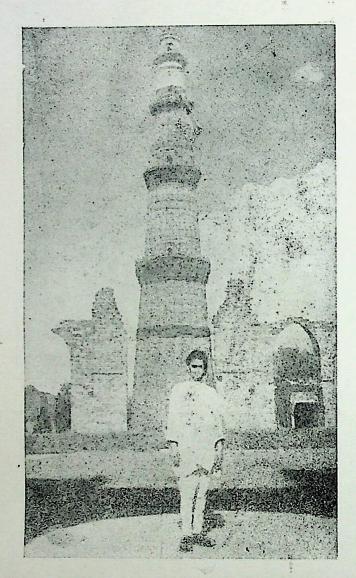
गृह त्याग के पश्चात् सत्य की खोज में तथा जीवन की बुलन्दियों को
पाने के लिये दृढ़ प्रतिज्ञ आचार्य भगवानदेव ।
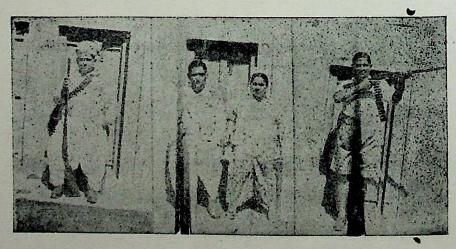
आचार्य भगवानदेव के पिता श्री गोपालदास तथा माता श्रीमती ज्ञानी बाई के दुर्लभ चित्र।

नहीं उन्होंने स्वर्गीय संजय गांधी के नाम पर यूथ कांग्रेस का संगठन किया और इसमें लन्दन में पहली दफा इसका सम्मेलन रखा। वहां पर जिस तरह आचार्य जी ने इन्दिरा जी, संजय जी, नेहरू जी के विषय में लोगों को बताया तो लोगों को महसूस हुआ कि हिन्दुस्तान के रहनुमा कोई आम शख्सियत नहीं परन्तु बहुत बड़ी और तेजस्वी औरत है।

सितम्बर १६८० में आचार्य जी संसदीय राज भाषा समिति के साथ एक आलमी दौरे पर गए। दुनिया के बहुत से मुल्कों में वो घूमे और वहां पर हिन्दुस्तान के कार्यालयों के अन्दर क्या काम चल रहा है उसका निरीक्षण किया। इटली, बरतानिया, अमेरिका, कैनेडा, इजप्ट, यूनान, किनीया Mauratius सीशिल्ज और दूसरे मुल्कों में गए। विदेश में भी घूमकर आचार्य जी का दिल अपने मुल्क, अपने हल्के और अपने लोगों में रहता था। विदेश तो वो सरकार की सेवा और आदेशों से जाते थे, उनकी असली दिलचस्पी तो हिन्दुस्तान में थी। जब दिल्ली के अंदर कांग्रेस महासम्मेलन हुआ, तो आचार्य भगवानदेव जी ने एक बहुत बड़ा रोल अदा किया। १६८० ऐसे ही गुजर गया। लोगों के यहां आना जाना, मेल मिलाप, समारोह, भाषण और बहुत से| प्रोग्रामों के अन्दर आचार्य जी को मान सम्मान दिया गया। लेकिन अगर सबका जिक्र यहां करने लगे तो ये ग्रन्थ भी कम होगा।

१६८० को छोड़ कर मैं १६८१ में आता हूं। जब अखिल भारतीय सिंधी साहित्य सम्मेलन पालिताणां गुजरात में रखा गया जिसमें आचार्य जी अध्यक्ष बनाए गए। फिर अखिल भारतीय सिंधी स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी सम्मेलन इन्दौर में रखा गया। वे इसमें भी थे। बहुत से लोगों को ये मालूम ही नहीं था कि आचार्य जी सिंधी ही हैं। वो सोचते थे कि शायद ये पंजाबी हैं U. P. के हैं M. P. के हैं, या बिहार के या पेशावर से आए हैं। यही आज के इन्सान की जरूरत है। असलियत क्या हैं वो उसके दिल में होनी चाहिए। उसका काम ऐसा होना चाहिए कि वो सारे न्हिदुस्तान का लगे। वो इन्सानियत की सेवा करने के योग्य होना चाहिए। ये नहीं सिर्फ जात पात में ही रह जाए। मैं यह नहीं कह रहा हूं कि आपको अपने जात, अपने लोगों के बारे में नहीं ख्याल होना चाहिए, वो तो जरूर सोचना चाहिए। आचार्य जी ने ये भी किया हैं। वो सिंधी है, सिंधियों की रहनुमाई की, एक वजूद दिया। उसके बारे में आप सबको मालूम है। मैं आगे जाकर भी उसका जिक्र करूंगा। फिर अखिल भारतीय सिंधी युवक सम्मेलन जयपुर में हुआ। आचार्य जी को खास तौर पर बुलाया गया और अध्यक्ष बनाया गया। हमारी स्वतंत्रता के संग्राम में बहुत से अमर शहीद हुए हैं। शहीदों के बलिदान ने, उनकी कुर्बानियों ने हमें यह अवसर दिया है कि हम आजादी की सांस ले सकें। इन्ही शहीदों में अमर शहीद हेमू कालानी का नाम बहुत ऊंचा और रौशन है। वो भी एक सिंधी नौजवान थे। अमर शहीद हेमूकालानी शहीदी दिवस कानपुर उत्तर प्रदेश में मनाया गया। इसमें आचार्य जी बतौर खसूसी मेहमान के रूप में शामिल हुऐ और उन्होंने वहां जो अमर शहीद हेमूकलानी पर भाषण दिया, उससे सिर्फ सिंधी समाज में ही नहीं बल्कि सारे देश में इस महान् सपूत का नया चर्चा शुरू हुआ। बैंगलौर में कांग्रेस युवक सम्मेलन के अंदर भी वो शामिल हुए। सिंधी कांग्रेस फोर्म के वो Chairman बनाए गए। दुबई में खासतौर पर सिंधियों ने एक समारोह रखा। आचार्य जी को खास मेहमान बनाकर हिन्दुस्तान से बुलाया गया और सम्मान किया गया। सिर्फ भाषण देकर ही लोगों को खुश करने में आचार्य जी यकीन नहीं करते। उन्होंने अमर शहीद हेमूकालानी की माताजी को खासतौर पर सरकार से ५०० रू० माहवार की पेन्शन दिलवाई। इतनी बड़ी माँ ने जब इतना बड़ा बेटा खो दिया तो क्या देश का इतना भीं फर्ज नहीं कि वो अमर शहीद की माँ को कोई चीज बतौर एक छोटा सा नजराना भी पेश करे। इससे सारे सिन्धी समाज की कितनी हौंसलाफसाई हुई, अपने आप पर कितना गौरव महसूस किया, आप और मैं उसे अल्फाज में नहीं बता सकते। आप भी अपने दिलों में महसूस कर रहे हैं, मैं भी महसूस कर रहा हूं। आचार्य जी ने All India radio में रोज रात को ६-१५ बजे से लेकर ६-४५ बजे तक सिंधी में कार्यक्रम शुरू करवाया। सिन्धियों को वो रोजाना हर पल, हर लम्हा मुल्क की तरक्की का एक हिस्सा बनाते चले गए। ये कहना गलत होगा कि सिंधी पहले मुल्क में

न कुछ हम हंस के सीखे हैं न कुछ हम रोके सीखे हैं।
जो कुछ थोड़ा सा सीखे हैं, किसी के होके सीखे हैं॥

शामिल नहीं थे। यह बात सच है की सिन्ध, जब बंटवारा हुआ तो पाकिस्तान में रह गया, लेकिन उस वक्त भी पंडित नेहरू ने यह कहा था कि "सिन्धी हमारे आईन की एक भाषा है। अगर सिन्ध पाकिस्तान में रह गया तो क्या हुआ सिन्धी तो हमारे पास हैं।" सिन्ध सूबा तो कोई पत्थर का, या ईंटों का या जमीन का नहीं है वो तो सिन्धियों से होता है। और सिन्धी तो सारे हिन्दुस्तान आए हैं, अकसरियत के तो आए ही थे। इसलिए हमारे मुल्क ने हमेशा हर वर्ग, हर धर्म, हर जात और हर दर्जे के इन्सान को पूरी और बराबर की अहमियत देने की कोशिश करी है। यह जरूर है कि सिन्धियों ने व्यापार को बहुत आगे बढ़ाया और इस काम के लिए समाज को उसकी Recognition या उसकी मान्यता या सम्मान मिले, यह आचार्य जी ने नई राह दिखाई और देश की सरकार को एहसास दिलाया कि सिन्धी समाज देश की तरक्की के लिए कितना अहम और बड़ा रोल कायम कर रहा है और कितना बड़ा योगदान दे रहा है।

१९८१ का वर्ष इन कामों में यूं गुजरा जैसे आँख झपकी हो। शायद किसी ने सच कहा है कि जब इन्सान दूसरों की सेवा में जुट जाए तो वक्त भी उसे कम लगता है। २4 घण्टे दिन में जैसे सिर्फ १२ घण्टे ही रह गए हों। रात को भी काम करने के लिए दिल चाहता है लेकिन समाज मजबूर कर देता है। आचार्य जी अपनी लगन में, अपनी धुन में लगे रहे और देश को पार्टी को और लोगों को, उसका फायदा पहुंचता रहा।

२६ अप्रैल १९८२ को आचार्य जी ने लोकसभा के अन्दर प्रथम सिन्धी भाषण दिया। इससे पहले आज तक स्वतन्त्रता के बाद यां पहले कभी किसी वक्ता ने चाहे वो किसी भा पार्टी का हो लोकसभा में सिंधी भाषा में भाषण नहीं दिया था। हालांकि बड़े बड़े सिंधी लीडर हुए हैं, सियासतदान हुए हैं रहनुमा हुए हैं लेकिन किसी ने इतनी जुर्रत नहीं की कि पार्लियामेन्ट के लोक सभा के अन्दर एक अहम बैठक के दौरान सिन्धी में भाषण दे। इससे साफ जाहिर होता है कि आचार्य भगवान देव ने सिन्धी समाज के सिन्धी भाषा को सिन्धी लोगों को सरकार के आगे मान्यता दिलवाई जिसके हकदार वो हमेशा थे और रहेंगे। १९८२ में महाराष्ट्र के अन्दर भी एक सिन्धी Academy की स्थापना करवाई। सरकार की तरफ से योगदान होगा, लोगों ने भी अपनी आहुति डाली, इससे यह Academy तैयार होनी शुरू हो गई। सितम्बर १९८२ में ही आचार्य जो ने एक और तारीखी मकाम हासिल किया। उन्होंने राष्ट्रपति जी के द्वारा राष्ट्रपति भवन में अंदाजन १२-१५ सिन्धी विद्वानों का सम्मान कराया। राष्ट्रपति जी ने उनका स्वागत किया उनको सम्मानित किया और उनको जलपान देकर अपना और मुल्क का अपनापन जाहिर किया। सिन्धी लोग जो बरसों से सिर्फ व्यापार और मुल्क की तीजारत में लगे हुए थे अब वो मुल्क की तरक्की, मुल्क की सियासत, मुल्क की तामीर में एक हो रहे थे।

इतना ही नहीं जब पंजाब का मसला छिड़ा और गुरूद्वारा Amendment bill की बात हुई तो सिंधियों ने सारे देश में अपना रंज प्रकट किया। जाहिर है कि सिन्धी समाज गुरूद्वारों और पूज्य गुरू ग्रन्थ साहिब जी महाराज का बहुत आदर और सम्मान करता है। उनके हर मन्दिर में पूज्य गुरू ग्रन्थ साहिब का प्रकाश होता है और इसके अलावा हर सिन्धी बहुत श्रद्धा से शीश नवाता है। लेकिन अगर गुरूद्वारा Amendment bill बनें तो फिर ये एक गुरूद्वारा उसमें शामिल किया जाए ये तो कहीं का इन्साफ नहीं होगा क्योंकि सिंधियों के मन्दिर में सिर्फ गुरू ग्रन्थ साहिब महाराज ही नहीं लेकिन झूले लालन और दूसरे देवी देवताओं की भी पूजा होती है। सिन्धी गुरूद्वारा तो एकता और अपने भाईचारे, अपनापन का प्रतीक है। सिन्धियों के मंदिर से हम सबको मिसाल लेनी चाहिए जहां खुदा, भगवान, अल्लाह की शक्ति एक है। और वो एक ही घर में उसकी उपासना होती है। उसे पूजा जाता है। पर उसका यह मतलब नहीं है कि हम उसके रीति रिवाजों पर, तरीकों पर आपस में लड़ पड़े। इस बात को सिन्धी परेशानी बनाकर आचार्य भगवानदेव जी ने प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी जी के आगे रखा। और प्रधानमंत्री जी ने उन्हें विश्वास दिलाया कि जब भी कोई ऐसा फैसला होने लगेगा जिसमें गुरूद्वारा Amend-

---

उठ जाय अगर दिल से खुदी का पर्दा।
इन्सान का मुमकिन है खुदा हो जाना॥

गृह त्याग के पश्चात् जीवन रहस्य की खोज में निकले हुए आचार्य भगवानदेव के विभिन्न दुर्लभ चित्र।
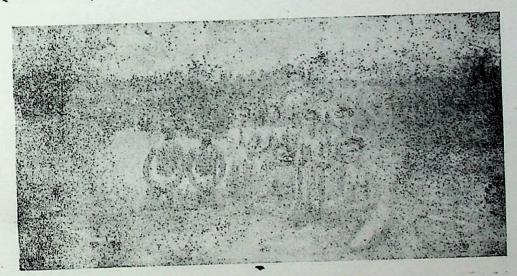
साधन रत साथियों के साथ आचार्य भगवानदेव।
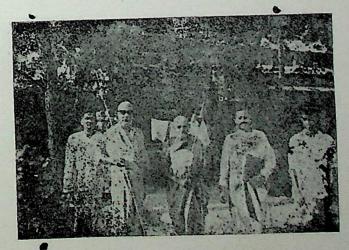
सिद्धपुर (गुजरात) में योगियों के साथ आचार्य भगवानदेव।
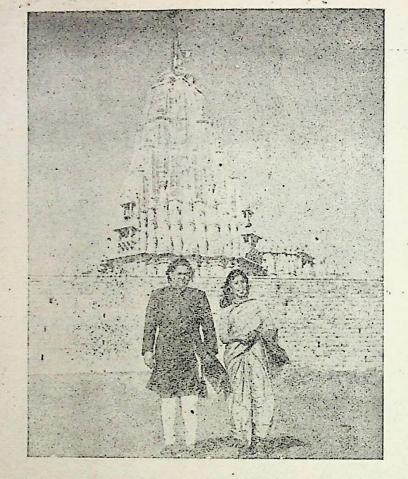
आचार्य भगवानदेव सोमनाथ मन्दिर में अपनी पत्नि श्रीमती पद्मा भारती के साथ।

सोमनाथ समुन्दरी तट पर आचार्य भगवानदेव अपनी पत्नि तथा अपने पुराने टंकारा के आयुर्वेद स्नातकों के साथ।
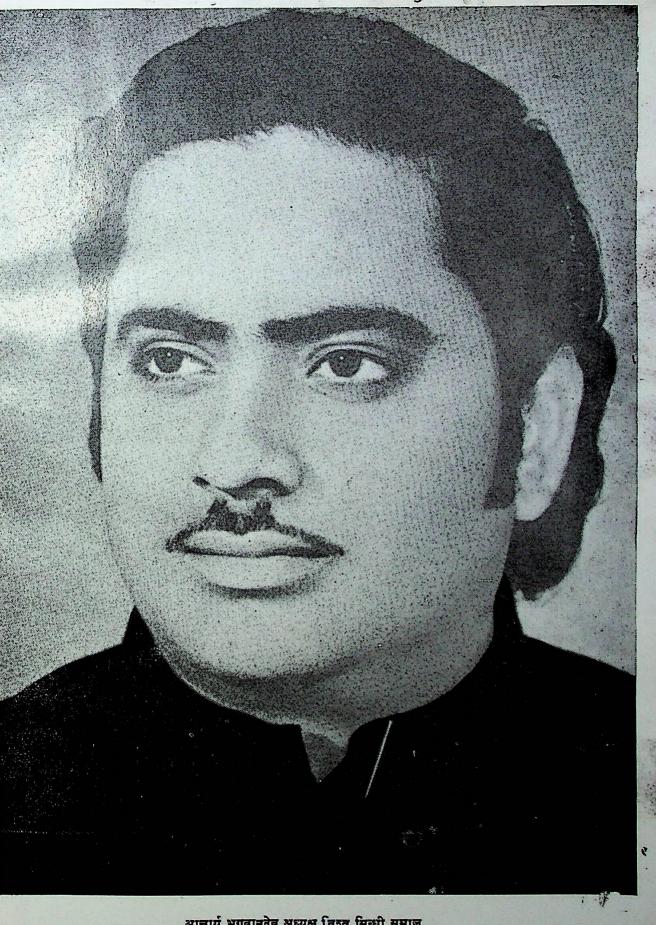
आचार्य भगवानदेव अध्यक्ष विश्व सिन्धी समाज

प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के साथ आचार्य भगवानदेव संसद सदस्य

प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी से विचार-विमर्श करते हुए
आचार्य भगवानदेव संसद सदस्य
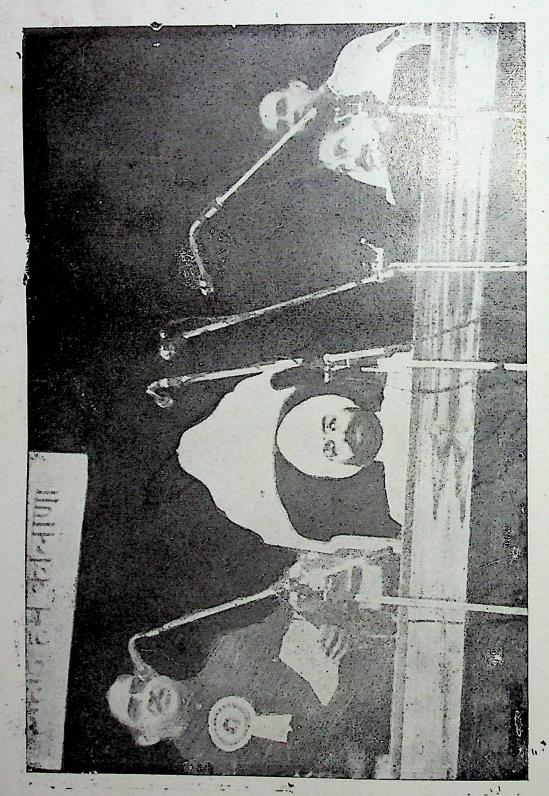
महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह जी विश्व सिन्धी सम्मेलन के समापन समारोह में। सभा में बोलते हुए आचार्य भगवानदेव साथ में बैठे हैं श्री लक्ष्मणदास मानकाणी
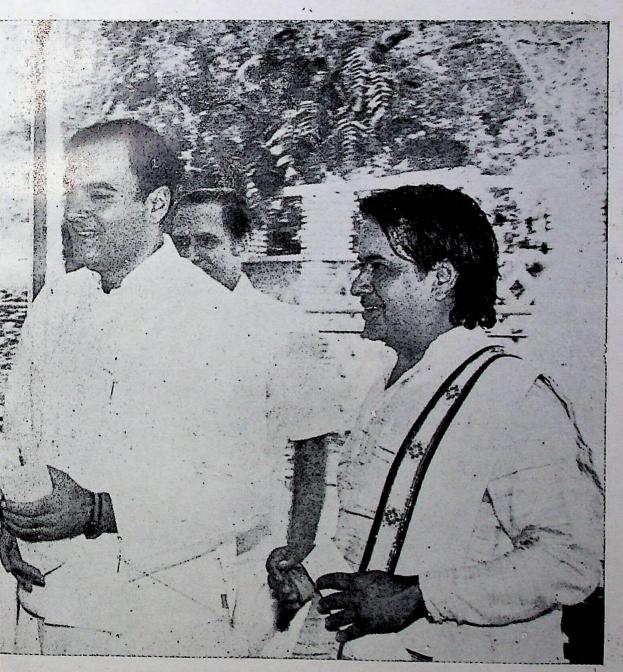
धानमंत्री श्री राजीव गांधी के साथ "विश्व आर्य समाज" तथा "विश्व सिन्धी समाज" के अध्यक्ष आचार्य भगवानदेव जी

प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी का विश्व सिन्धी सम्मेलन में विश्व भर से आया हुआ विशाल जन समूह इन्द्रप्रस्थ स्टेडियम नई दिल्ली में भाषण सुनते हुए

प्रधान मंत्री श्री राजीव गाँधो श्री जयरामदास की डाक टिकट का विमोचन करते हुए। साथ में खड़े हैं रामनिवास मिर्धा संचार राज्य मंत्री; विश्व सिन्धी समाज के अध्यक्ष आचार्य भगवानदेव तथा वयोवृद्ध गाँधीवादी श्री आनन्द हिंगोरानी।

डाक टिकट

अमर शहीद
हेमू कालाणी
जिसका विमोचन
प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने
१८ अक्तूबर १९८३
इन्द्रप्रस्थ स्टेडियम नई दिल्ली में किया

डाक टिकट

श्री जयरामदास दौलतराम
जिसका विमोचन
प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी ने
२१ जुलाई १९८५ को
तीन मूर्ति भवन नई दिल्ली
में किया

प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी को विश्व सिन्धी समाज के ट्रस्टी श्री एच० यू० बिजलानी विश्व सिन्धी सम्मेलन की वीडियो फिल्म, प्रधान मंत्री
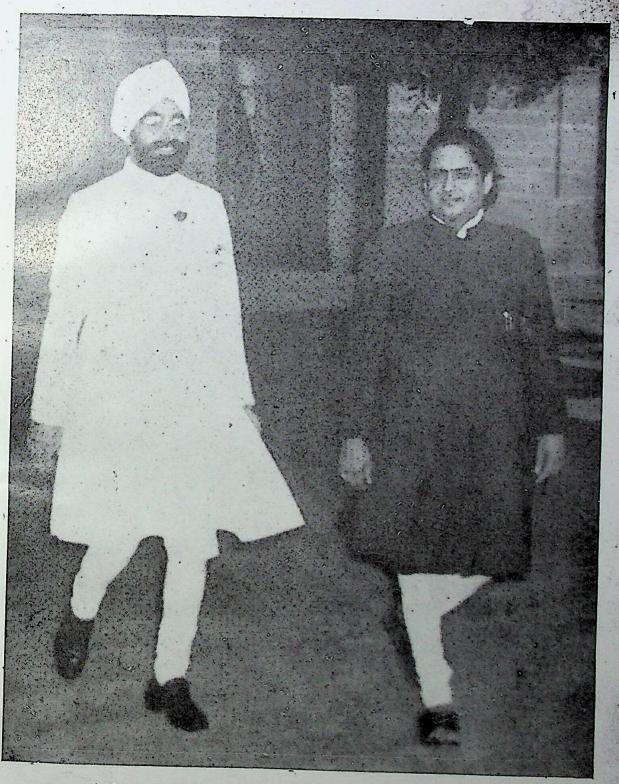
Acharya Bhagwandev, Sindhi Lok Sabha Member with President, Gyani Zailsingh

प्रथम विश्व सिन्धी सम्मेलन के उद्घाटन के अवसर पर प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी एवं विश्व सिन्धी समाज के अध्यक्ष आचार्य भगवानदेव

श्री राजीव गांधी को आचार्य भगवानदेव सिन्धी भाइयों की समस्याएं बताते हुए

प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी विश्व सिन्धी सम्मेलन के अवसर पर सिन्धी नेताओं के साथ। आचार्य भगवानदेव, श्री श्रीचन्द हिन्दु श्री लक्ष्मण मानकाणी, श्री सुन्दर वाछाणी संचार राज्य मंत्री श्री वी० एन० गाडगिल आदि

प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी अमरशहीद हेमू कालानी की माता श्रीमती जेठीबाई को डाकटिकट भेंट करते हुए। साथ में आचार्य भगवानदेव, प्रो० राम पंजवानी
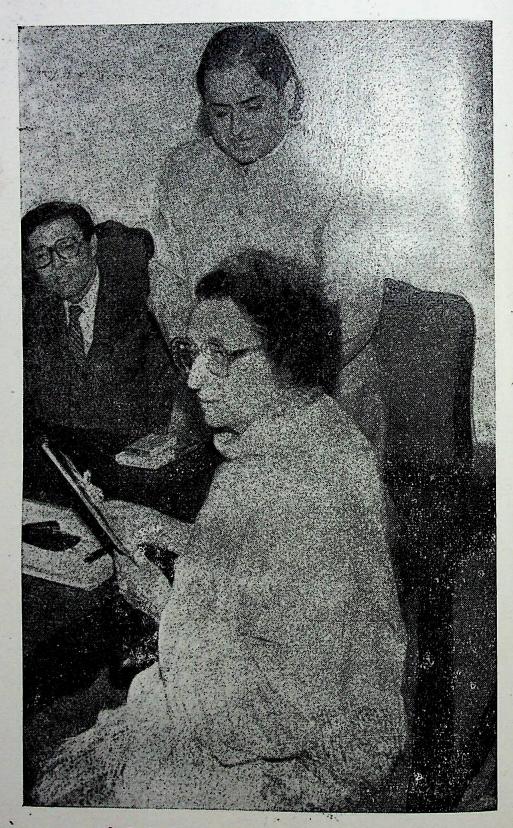
प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के साथ आचार्य भगवानदेव संसद सदस्य

राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह के साथ सेवादल बिरादरी के चेयरमैन आचार्य भगवानदेव संसद सदस्य राष्ट्रपति भवन में
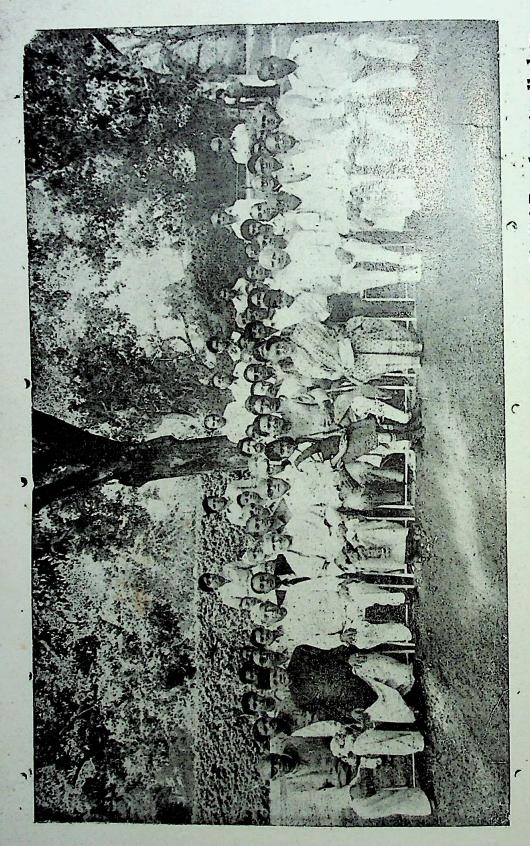
Acharya Bhagwandev, and Sindhi Leaders A deputation of the Sindhi Panchayat called on Shrimati Indira Gandhi to place their objections to Gurdwara Amendment Act

राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह विश्व सिन्धी सम्मेलन में सांस्कृतिक कार्यक्रम देखते हुए। साथ में बैठे हैं—आचार्य भगवानदेव तथा विश्व सिन्धी समाज की कोषाध्यक्षा श्रीमती माया विरमानी

विश्व सिन्धी सम्मेलन में आए विदेशी प्रतिनिधि इन्द्रप्रस्थ स्टेडियम में

राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह जी आजाद हिन्द फौज के श्री काका तेजूमल का सम्मान करते हुए ।
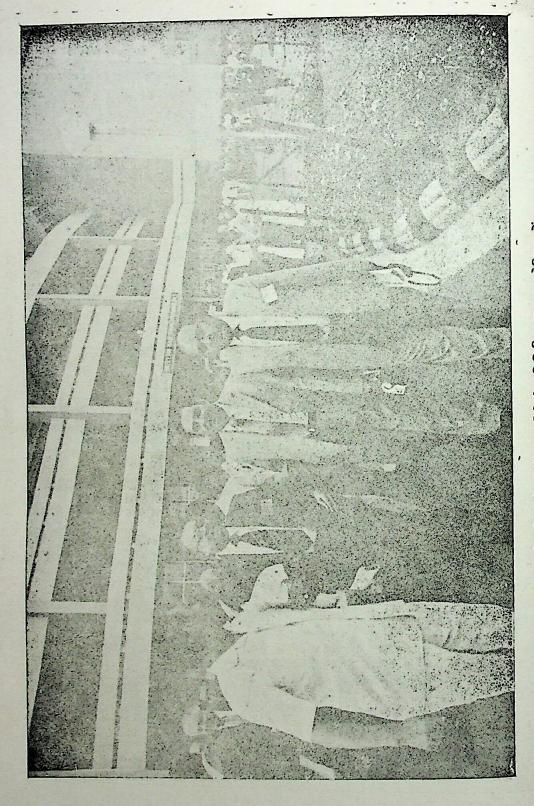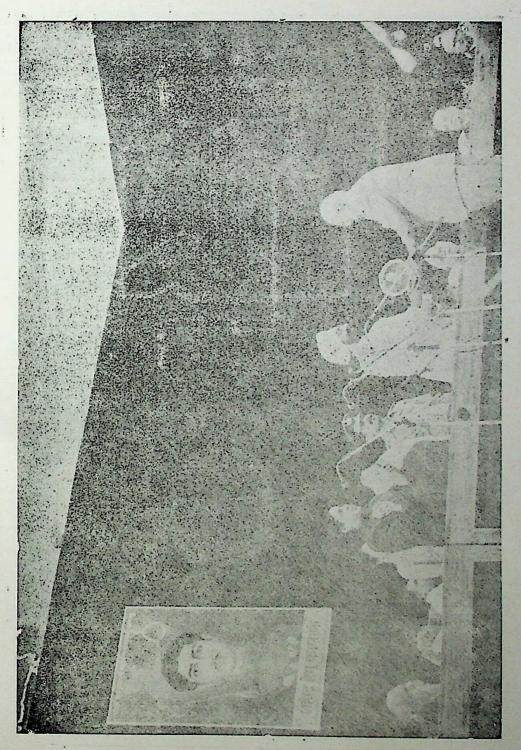
प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को सिन्धी जन समूह में परिचय कराते हुए आचार्य भगवानदेव ।

महामहीम राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह जी दुबई के प्रसिद्ध सिन्धी नेता श्री राम बक्षानी का सम्मान करते हुए

आचार्य भगवानदेव विश्व सिन्धी सम्मेलन में बोलते हुए। मंच पर प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी बठी हैं

प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को सिन्धी नेताओं से परिचय कराते हुए आचार्य भगवानदेव संसद सदस्य
साथ में—महात्मा गंगाराम, श्री राम बक्षानी, प्रि० झमटमल टिलवाणी, श्री अशोक हिन्दुजा, श्री चौथराम आदि

VISHWA SINDHI SAMELAN
विश्व सिन्धी सम्मेलन

मोरवी बाढ़ मदद के लिए आचार्य भगवानदेव जी को वड़ौदा में थैली भेंट करते हुए पं० आनन्द प्रिय जी

गोधरा (गुजरात) में हुए साम्प्रदायक दंगे से प्रभावित सिंधी भाइयों को
65000 रुपयों की सहायता देते हुए आचार्य भगवानदेव संसद सदस्य

प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के साथ राजस्थान के सांसद आचार्य भगवानदेव पीछे स्वर्गीय संजय गांधी के साथ खड़े हैं।

मिलाप परिवार के साथ आचार्य भगवानदेव।

प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी गगवाना (अजमेर) ग्रामीण क्षेत्र में किसानों के साथ तथा आचार्य भगवानदेव।

श्री शिवराज पाटिल रक्षा राज्य मंत्री के साथ टाटगढ़ में अवकाश प्राप्त सैनिकों के सम्मेलन में बोलते हुए आचार्य भगवानदेव संसद सदस्य।

सेवादल बिरादरी के अध्यक्ष आचार्य भगवानदेव संसद सदस्य बिरादरी के समारोह में बोलते हुए। साथ में समारोह की अध्यक्षता करते हुए केन्द्रीय मंत्री श्री प्रकाशचन्द्र सेठी, श्री केदार पाण्डे तथा संसद सदस्य श्री जनरल स्पैरो जी।

सेवादल बिरादरी सम्मेलन के अवसर पर ध्वज वन्दन के समय भाषण करते हुए आचार्य भगवानदव संसद सदस्य।

विश्व सिन्धी समाज की स्थापना करते हुए श्री तथा श्रीमती लता लूला (दुबई)
साथ में खड़े हैं—श्री वसन्तदादा पाटिल, श्री आरिफ मोहम्मद, सुश्री सीता
सामताणी तथा आचार्य भगवानदेव आदि।

आचार्य भगवानदेव पाकिस्तानी सरहद पर निरीक्षण करते हुए।
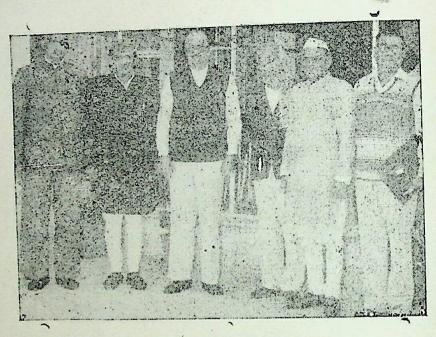
मध्य प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री अर्जुन सिंह जी से भोपाल में सिन्धी अकादमी की घोषणा करवाते हुए आचार्य भगवान देव जी ।

भोपाल में सिन्धियों द्वारा आचार्य भगवानदेव संसद सदस्य का मुख्यमंत्री श्री अर्जुनसिंह अभिनन्दन कराते हुए

महान् सिन्धू सपूत
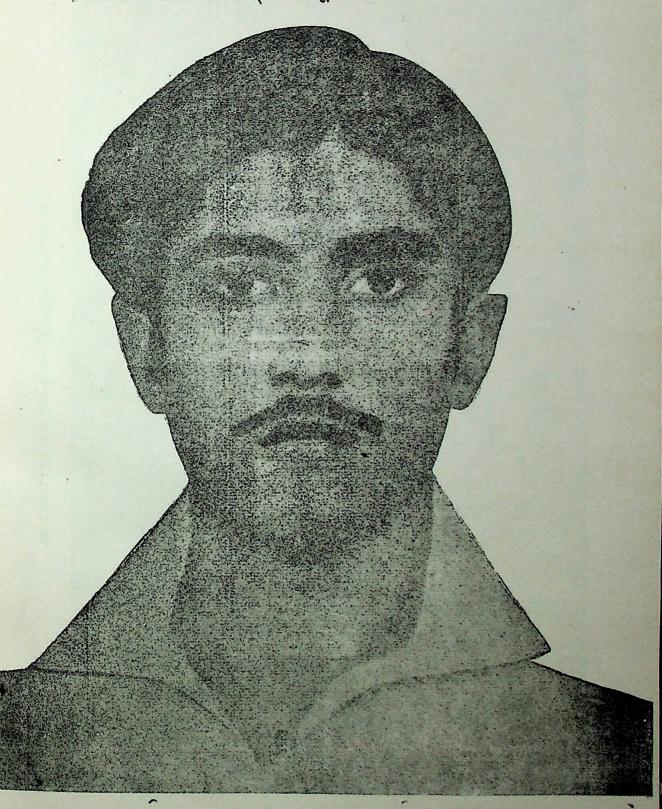
अमर शहीद हेमू कालानी
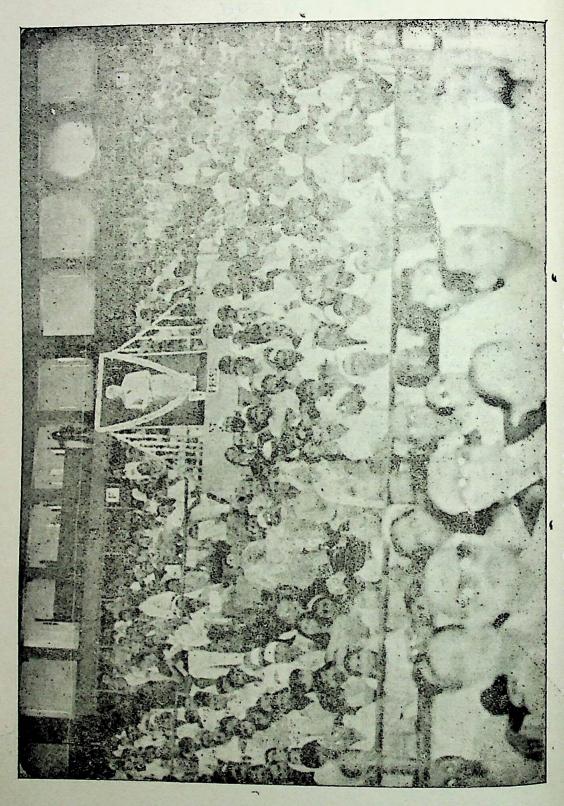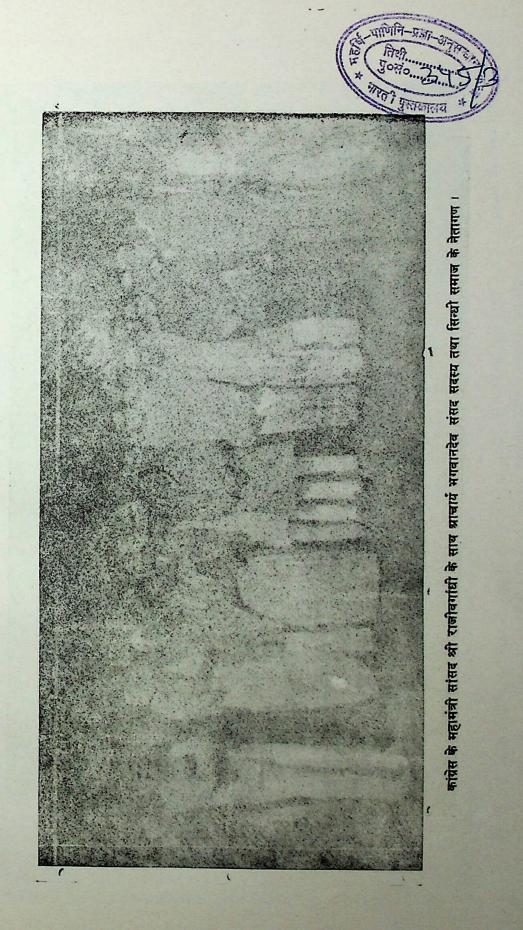
विश्व सिन्धी सम्मेलन में विश्व से आए हुए प्रतिनिधियों का जन समूह।

कांग्रेस के महामंत्री सांसद श्री राजीवगांधी के साथ आचार्य भगवानदेव संसद सदस्य तथा सिन्धी समाज के नेतागण ।

आचार्य भगवानदेव सिन्धी प्रतिनिधि मंडल को गृहमंत्री श्री प्रकाशचन्द सेठी से मिलाते हुए ।
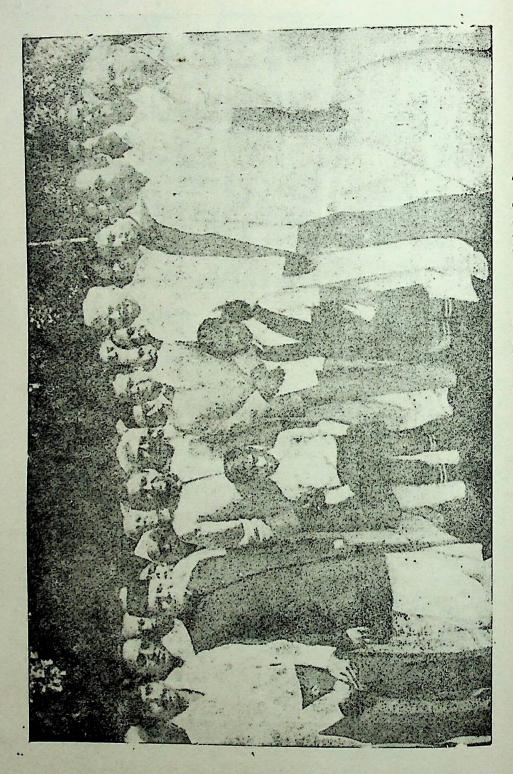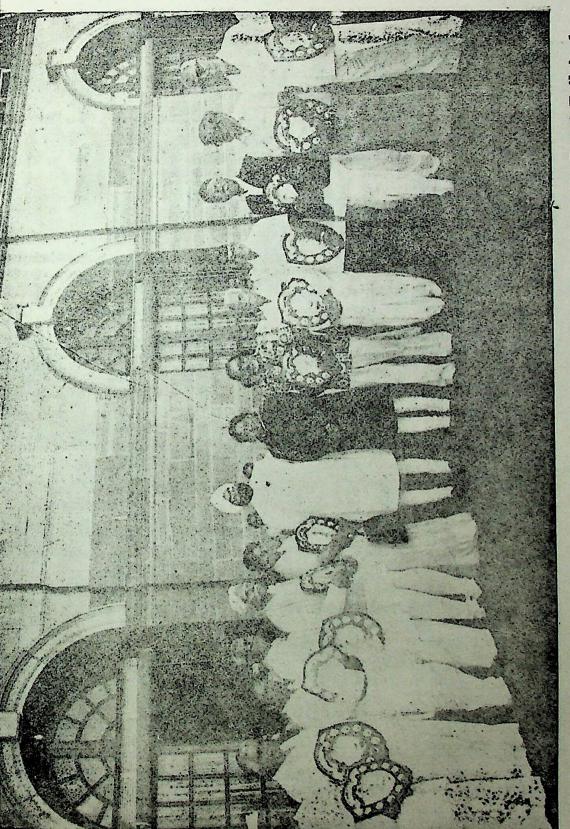
Acharya Bhagwandev and twelve men of letters with the President of India Gyani Zailsingh with the Shields given away to them by the President

महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह को सिन्धी समाज के मुख्य व्यक्तियों से परिचय कराते हुए आचार्य भगवानदेव जी, राष्ट्रपति श्रीमती माया दरयानी से बात करते हुए। साथ में खड़े हैं राष्ट्रपति सनम गोरखपुरी एच० एम० टी० के मैनेजिंग डाइरेक्टर श्री मनसुरवानी तथा श्रीमती माया विरमानी.।

राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति द्वारा सिन्धी विद्वानों का सम्मान समारोह । आचार्य भगवानदेव मंच पर राष्ट्रपति के साथ
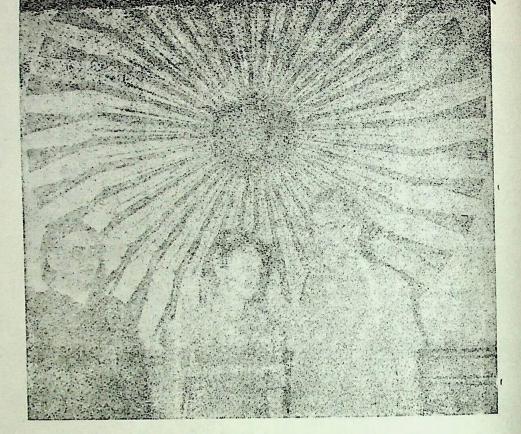
फ्रांस के राष्ट्रपति श्री मितरां तथा उनकी धर्म पत्नि के साथ आचार्य भगवानदेव संसद सदस्य।
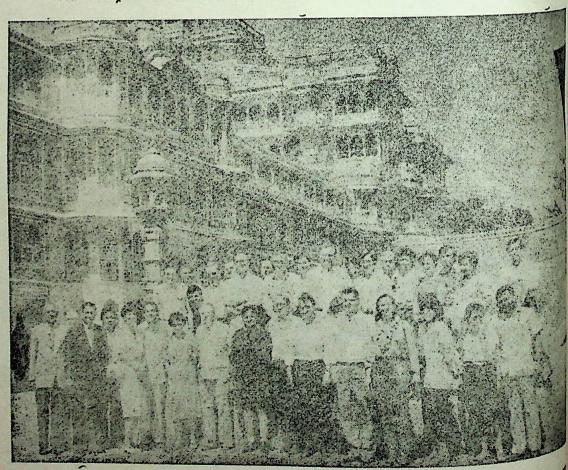
फ्रांस के राष्ट्रपति श्री मितरां उनकी धर्म पत्नि एवम् फ्रांस संसद के सदस्य के साथ आचार्य भगवानदेव संसद स

Acharya Bhagwandev M. P.
With Shahid Hemu Kalani's Mother Shrimati Jethibhen

देश भक्त श्री चेतनदेव वर्मा "यमराज" का आगरे में अभिनन्दन करते हुए आचार्य भगवान देव संसद सदस्य

A HISTORIC CONFERENCE

Baldav Gajra

The Conference of Sindhi men of letters held at Delhi on the 25th and 26th of September, under the auspices of the Sindhi Boli Sahitya and Kala Vikas Sabha (an institution founded by late Shri Jairamdas Doulatram, the eminent leader of the Sindhi Community), will go down as a very important landmark in the history of the Sindhis in India and an event of unique achievements.

For the first time in the annals of the Sindhis a group of over one dozen Sindh writers and social workers were recognized and honoured by the President of India, who invited them to Rashtrapati Bhavan and felicitated them giving away to them shields in appreciation of the laudable services rendered by them in the cause of promoting Sindhi literature and in the social field. Addressing the writers, Giani Zailsing exhorted them to write for the betterment of the community and the country at large.

The Conference was presided over by Acharya Bhagwandev, the dynamic Sindhi member of the lok Sabha, and was addressed by as many as three Central ministers besides Shri Vasant Dada Patil, General Secretary of the All India Congress Committee. They all praised the Sindhis for their great sacrifices in the cause of India's Freedom and later on for their commendable contribution in the Country's development after their migration to India, having been uprooted from their soil.

Another important achievement of the Conference was the large hearted action of the Sabha to put an end to a misunderstanding deliberately created by a group of Sindhi writers about the objective of the Sabha, a misunderstanding that had been plaguing the Sindhi Literary World. A controversy has been going on whether Sindhi language in India should be written in the Devanagari Script, which is the original script of the language and which is its natural Script, Sindhi being inherited from the Sanskrit, family, or it be written in the Persio-Arabic Script which was imposed on the Sindhi Language by the British Rulers in 1853 only, to please the Muslim majority in Sind.

As far back as 1848-49, three Conferences of Sindhis comprising Sindhi men of letters and Sindhi public men resolved that in India, under the changed circumstances, it was only proper that the original Devanagari script be restorted for Sindhi language. Accordingly the Union Government, after consulting the various State Governments,

---

न जग्र को त्यागो न हर को भूल जाओ जिन्दगानी में।
रहो दुनियां में यूं जैसे कमल रहता है पानी में॥

directed that Sindhi be taught in Devanagari Script in all Schools in India.

At this stage, some old teachers who were habituated to the use of Arabic script and were averse to adapt themselves to the need of the times, and some young writers who had political objective to serve, namely to keep their contacts with the Muslims in Sind. (who had driven us out of our homeland), protested against the wise decision of the Government of India, and under a misunderstanding of the situation, the Union Government decided to give the option to children to use either of the two scripts for learning Sindhi.

Now, unfortunately, on account of circumstances beyond our control, — want of our own State, lack of utility of the Sindhi language for official or commercial purposes, aversion of the new generation of Sindhis to learn Sindhi, the language began to lose its popularity and several Sindhi Schools began to close down as children preferred to go to English Medium Schools. It was under these circumstances that late Shri Jairamdas Doulatram founded the Sindhi Boli. Sahitya and Kala Vikas Sabha to propagate the Devanagari Script for Sindhi language for saving it from languishing and dying out, for it was rightly believed that as all Sindhi children learnt the Devanagri Script, it being the script of our national language Hindi, the best way to save the Sindhi language was to adhere to the wise decision of adopting Devanagari Script for the Sindhi language.

In order to thwart the efforts of Sabha, the pratagonists of the Arabic Sc started a mischievous compaign against Sabha that our attitude was responsible the diminishing use of Sindhi language. N although, as we have said above, the fa use of Sindhi language was due to altoge different reasons, raasons that had noth to do with the Script controversy, the o nizers of this Conference, in their wisd resolved to put an end to the spread of misunderstanding, and accordingly passe resolution that the Sabha did not oppose stand of the Government of India to a both the Scripts for the language.

At the back of this wise decision is realization that the supporters of the Ar Script have been unnecessarily maligning for obstructing the progress of the Si language. The decision of the Conferenc in fact, a challenge to the supporters of Arabic Script to now show the way to save language.

Although our basic stand is that D nagari script is the original script of the S language and its adoption alone can save Sindhi language here in India, we do want to come in the way of these fri who think that they can save the languag its foreign script. Let both the scripts conti time alone will decide which script will ult tely survive. This is the message of the I Conference.

नाम न रटा तो क्या हुआ जब अन्तरम है हेत।
पति व्रता पति को भजे मुख से नाम न लेत ॥

President Gyani Zailsingh giving away the Shield to Scholar and Writer Dr. Motilal Jotwani
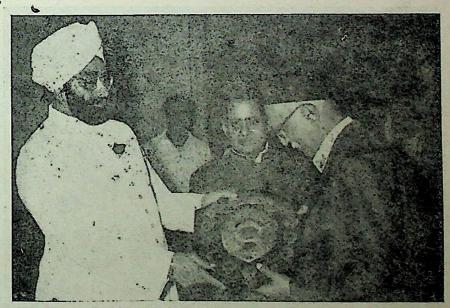
President Gyani Zailsing giving away the Shield to Pandit Krishinchandra Jetley of Poona

President Gyani Zailsingh giving away the Shield to the editor of "Hindvasi" Shri Tirath G. Sabhani

President Gyani Zailsingh giving away the Shield to Sindh's Patriot poet Shri Hundraj Dukhayal

President Gyani Zailsingh giving away the Shield to educationist Shri Jhamatmal Tilwani
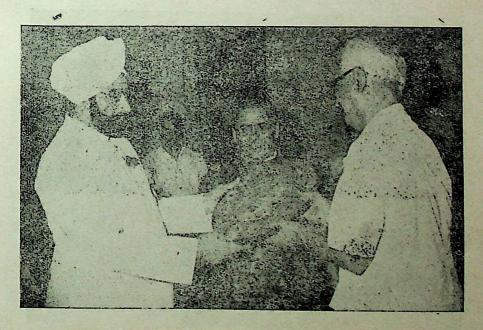
President Gyani Zailsingh giving away the Shield to eminent Scholar Shri Narayan Samtani

President Gyani Zailsingh giving away the Shield to the eminent historian Shri Gangaram Samrat
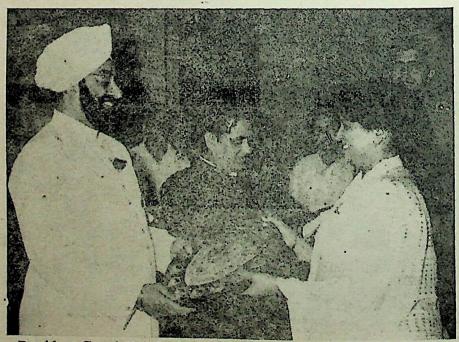
President Gyani Zailsingh giving away the Shield to prominent lady social worker of Dubai Mrs. Saraswati (Latta) L. Lulla

Acharya Bhagwandev M. P. and Shri muraj manglani Dubai.
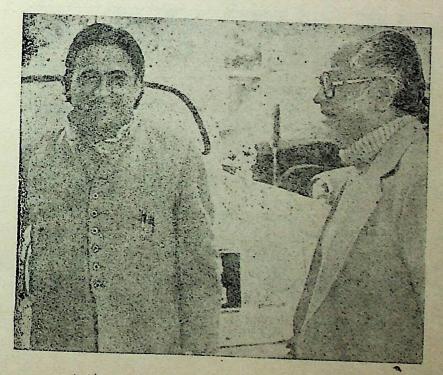
Acharya Bhagwandev, M. P. and H. U. Bijlani.

Greeting the Prime Minister Shrimati Indira Gandhi Shri Anand. T. Hingorani

Acharya Bhegwandev. M. P. Shri Hundraj Dukhayal.

Kum. Sita Samtani addressing the Sammelan
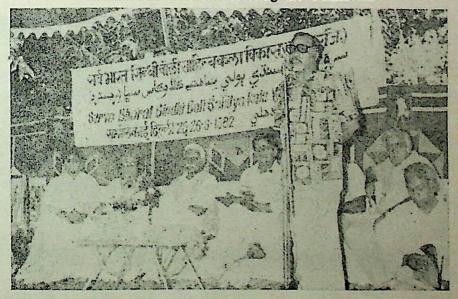
Dr. Lachhman Khubchandani addressing the Sammelan

Shri Arif Mohamed, Deputy Minister Information, addressing the Sammelan

Shri U. Raisingani addressing the Sammelan

Shri Tirath Sabhani, Editor "Hindvasi", addressing the Sammelan

Shri Dayal "Asha" addressing the Sammelan

Shri Vikram Mahajan, Union Minister of State addressing the Sammelan

Shri Assudomal Bulchand addressing the Sammelan

Acharya Bhagwandev addressing a gathering organised by the friends of the Oversees 'Sindhi'

Greeting the Prime Minister is Shri Gangaram Sajandas of Sadhu Vaswani Mission Poona. On extreme right is Shri mati Doryani

A scene of the Inaugural Yajana of the Sammelan

Shri Dharam Veer, Union Minister addressing the Sammelan

ment bill का जिक्र होगा तो वो सिन्धी समाज की, उनके ख्यालात को, उनके जज्बात को अच्छी तरह मद्देनजर रखेंगी, अच्छी तरह समझ कर कोई भी कदम उठायेंगी।

जैसे जैसे आचार्य भगवान देव समाजी जिन्दगी में आगे बढ़ते चले जा रहे थे उन्होंने हर पहलू में, हर कदम पर इस बात का खास ध्यान रखा कि वो जिन लोगों की नुमाईन्दगी कर रहे हैं, उनकी समस्याओं को सरकार तक पहुंचायें उनको हल करने के लिए ज्यादा से ज्यादा जोर दें। १५ मार्च १९८० को आचार्य जी ने एक बड़ा पत्र प्रधानमंत्री श्रीमति इन्दिरा गांधी के नाम लिखा उसके अंदर अजमेर जिले की समस्याओं, वहां के लोगों की मजबूरियों के बारे में साफ अल्फाज में बताया। खत का जवाब प्रधानमंत्री जी ने २० मार्च १९८० को दिया जिसमें उन्होंने आचार्य जी को विश्वास दिलाया कि वो रेल और नागरिक उड्डयन तथा पर्यटन मंत्रालयों को इन समस्याओं के बारे में देखने की हिदायत दे रही हैं। ताकि इनके ऊपर जांच करके कार्यवाही की जा सके। इस पत्र की एक फोटोकापी दी गयी है। इसी तरह जो-जो मैं आचार्य जी के खतों के ताबिद के बारे में मैं आपको बताऊंगा उनके प्रधानमंत्री का दिए हुए जवाबों की फोटोस्टेट कापियां आपके देखने के लिए मौजूद हैं। इससे मालूम होता है कि आचार्य जी हर पल नेतागिरी ही नहीं करते रहे पर अपने लोगों की अपने आवाम की वो सेवा करते रहे हैं और सेवक रहे हैं।

२७ मार्च १९८० को प्रधानमंत्री ने आचार्य जी के १९ मार्च के पत्र का जवाब देते हुए उन्हें बताया कि उनके सुझाव उनके जेरे अक्षर है। आचार्य जी ने ९ अप्रैल १९८० को पालेकर के ट्रिब्युनल के बारे में अपना खत प्रधानमंत्री जी को भेजा। उसके अंदर छोटे अखबारों का खास ख्याल रखने को कहा। इन्दिरा गांधी जी ने इसका जबाव १५ अप्रैल १९८० को दिया जिसमें उन्होंने सूचना और प्रसारण मंत्री को इस सुझाव के बारे में उचित कार्यवाही के लिए पत्र आगे भेज दिया था। ११ जून, १९८० को आचार्य जी ने आर्य समाज के प्रसिद्ध रहनुमां डा० सूरजभान के बारे में प्रधानमंत्री जी को लिखा। आप ये तो जानते ही हैं कि डा० सूरजभान जी एक बहुत ही बड़े Educationist और एक बहुत ही बड़े और महान् रहनुमां रहे हैं। उनका योगदान हजारों लोगों को हमेशा याद रहेगा और डा० सूरजभान अंतिम बरसों में बहुत बिमार रहे और जो एक सच्चा सेवक हो वो व्यापारी तो होता नहीं इसलिए उसकी माली हालत ऐसी तो होती नहीं कि वो बेहतर से बेहतर इलाज करा सके। आचार्य भगवान देव जी ने एक अच्छे रहनुमां के प्रति अपना फर्ज समझ कर सरकार से डा० सूरजभान के लिए एक खास रकम मंजूर कराई और उन्हें भेंट करने के लिए उस वक्त के गृह मंत्री ज्ञानी जैलसिंह जी को खास All India medical institute में लेकर गए। इस एक छोटी सी चीज के लिए डा० सूरजभान, उनका परिवार का हजारों आर्यसमाजियों के ऊपर असर पड़ा उससे ये जाहिर होता है कि आचार्य जी सही माने में एक अच्छे इन्सान, और एक अच्छे हिन्दुस्तानी का फर्ज अदा कर रहे थे। १६ जुलाई, १९८० को आचार्य भगवानदेव ने हिन्दुस्तान समाचार समिति के बारे में प्रधानमंत्री जी को खत लिखकर चंद बातों का सुझाव दिया, उसका जवाब १ अगस्त, १९८० को प्रधानमंत्री जी ने उनके हर सुझाव को माना और कहा कि आचार्य जी के ख्यालात इस मामले में बिलकुल सही हैं। कैसे कि पत्र के अंदर आप खुद पढ़ सकते हैं। फिर १७ नवम्बर, १९८० को आचार्य जी ने सिशिल्स में बैंक आफ बड़ौदा की ब्रांच के खोले जाने पर चंद बातें प्रधानमंत्री जी को लिखीं। प्रधानमंत्री जी को ये बातें कुछ ठोस और अहम लगीं, इसलिए उन्होंने संबंधित मंत्रालय से इसके बारे में जाँच करने को कहा। इससे जान पड़ता है कि इंदिरा गांधी जी, आचार्य जी के सुझावों को कितनी अहमियत और बजन देती थीं।

इसी तरह २५ मार्च, १९८१, १६ जुलाई, १९८१ और १७ जून, १९८२ को आचार्य जी ने जो सुझाव भेजे उनको उनके जबाब देते हुए प्रधानमंत्री जी ने मुख्तलिफ महकमों को इन सुझाव और ख्यालात के बारे में हिदायत

यों सबको भुला दे कि तुझे कोई न भूले।
दुनिया ही में रहना है तो, दुनिया से गुजर जा॥

करने की आज्ञा दी। ७ अक्तूबर, १९८२ को आचार्य जी के १७ जून, १९८२ के खत का जबाब दिया। उन्होंने उसके अंदर आचार्य जी का सुझाव कि सिंधी समुदाय को प्रगति में मदद देने के लिए, जो सुझाव हैं उन्होंने अलग अलग मंत्रालय को हिदायत भेजीं। आचार्य जी ने शुरू से ही ये सोच लिया था कि सिंधी समुदाय हिंदुस्तान की तरक्की में एक बहुत बड़ा रोल अदा कर सकता है। मैं ये पहले भी निवेदन कर चुका हूं इसलिए उनका ये सुझाव प्रधानमंत्री को देना और प्रधानमन्त्री जी को इस पर गौर करना कोई हैरानी की बात नहीं है।

इसी तरह १९८२ का वर्ष गुजर गया और १९८३ आया। अप्रैल १९८३ में आचार्य जी सेवादल बिरादरी के chairman बनाए गए। उन्होंने संसदीय राजभाषा समिति के कनवीनर होने के नाते बहुत से महकमों जैसे रक्षा, योजना, वृत उद्योग, नौकायन, नगर विमानन, पर्यटन और परिवहन, श्रम और पुनर्वास, इस्पात और खान, रसायन, निवास मंत्रालय, विज्ञान और खाद्य तथा नागरिक पूर्ति मंत्रालय की समितियों में भाग लिया। इन वर्गों दायरे में आचार्य जी के आने जाने से उनका दायरा और भी विशाल हो गया। उन्होंने अहसास किया कि हिंदुस्तान जैसे बड़े मुल्क के मसले और परेशानियां भी बहुत बड़ी हैं। उन्हें हल करने के लिए एक या दो वर्ष बहुत कम हैं। यह कोई अल्लादीन का चिराग तो है नहीं कि जल्दी से हर काम सही हो जाए। श्रम की जरूरत है। आचार्य जी ने प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में कांग्रेस ने जो अपना काम किया उसके अंदर उन्होंने अपनी मेहनत, अपना श्रम जी भर के दिया है।

फिर सितम्बर, १९८३ में आचार्य भगवानदेव Hongkong, Singapore, Jakarta, London और दूसरे मुल्कों में गये ताकि वहां पर रहने वाले सिंधियों को हिंदुस्तान में होने वाले विश्व सिंधी सम्मेलन के लिए निमंत्रण दें और लोगों को अहसास दें कि सिंधी समाज एक है और वह चाहे किसी भी मुल्क में रह रहा हो उसका हिंदुस्तान में इकट्ठा होना और आपस में प्यार और भाईचारे का जज्बा पैदा करना ही सबसे अहम बात है। सिंधी सम्मेलन की तैयारियां जोर शोर से हुईं। हिम्मत आचार्य भगवान देव जी की है जेब में न एक धेला न ही पैसा, न व्यापार न कोई दुकान और न मकान जिसके ऊपर वो एक बुनियाद बना सकें जिसके आधार पर कारवां चला सकें। सिर्फ दिल में एक लगन थी और इंदिरा गांधी की रहनुमाई पर विश्वास था। भगवान के ऊपर भरोसा था। आचार्य जी इन्हीं तीन बातों से अपना कारवां आगे ले चले। और भगवान ने उन्हें सफलता दी।

१८ अक्तूबर, १९८३ को नई दिल्ली के इन्द्रप्रस्थ स्टेडियम में प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी जी ने पहले विश्व सिंधी सम्मेलन का उद्घाटन किया। जिसकी अध्यक्षता आचार्य भगवानदेव जी ने की थी। ये अपने आप में एक बहुत ही बेमिसाल मौका था। सिंधी यूं तो बाकी सब समाजों और समितियों की तरह एक होते ही हैं लेकिन इतने विशाल जन समूह में, लोग दुनियां के कोने कोने से आकर एक जगह बैठ कर एक ही आवाज में प्रधानमंत्री को यह विश्वास दिलाया कि सिंधी समाज एक है और आपके पीछे है। ऐसा न ही पहले कभी हुआ था और न ही कभी होगा। और ऐसा कभी होगा तो वो सिर्फ एक भगवान देव जैसा शख्स ही करा सकेगा। वरन् ऐसा बहुत मुश्किल है। इस सम्मेलन में जो बारीकियां हुईं, सिंधियों का मान सम्मान हुआ, प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी जी ने सिंधियों की अहमियत को समझा, अहसास किया और उसको अपने अल्फाज में जिक्र किया। यहां पर यह बताना आपको दोहराना होगा। इस मौके के बारे में इसी ग्रंथ में आपको आगे भी बहुत बातें मिलेंगी, फोटो देखने को मिलेंगी, मजमून पढ़ने को मिलेंगी ! लेख पढ़ने को मिलेंगे और इससे आपको महान् सिंधी सम्मेलन और मौके के बारे में बहुत बारीकी से मालूम हो सकेगा।

१९ अक्तूबर, १९८३ को भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह जी ने विश्व सिंधी सम्मेलन समापन समारोह किया और उन्होंने खुद अंदाजन १-३० घण्टे से ज्यादा इसमें बैठकर भाग लिया। राष्ट्रपति जी जब अपना भाषण

मरना भला है उसका, जो अपने लिए जिए।
जीता है वह जो मर चुका है, और के लिए।।

सन् 1957 पंजाब हिन्दी सत्याग्रह के समय अपने साथियों के साथ अपनी गिरफ्तारी देते हुए आचार्य भगवानदेव।
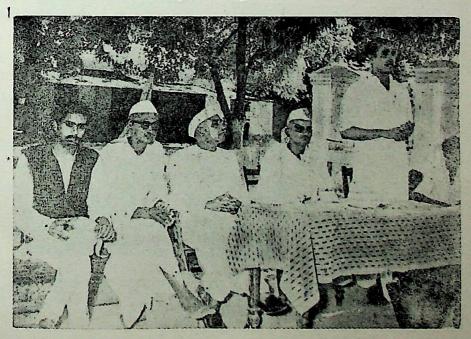
पंजाब हिन्दी सत्याग्रही जत्थे को आनन्द गुजरात में विदाई देते हुए पं० प्रकाशवीर शास्त्री श्री भाई पटेल, श्री वेणी भाई आर्य, श्री बलदेव आर्य तथा जत्थे के नेता आचार्य भगवानदेव।

आर्य समाज दीव (गोवा) के जलूस तथा समारोह का नेतृत्व करते हुए आचार्य भगवान देव।

रहे थे सम्मेलन में तो हालांकि उनका भाषण पहले से ही तैयार होता है, उन्होंने जब इतना बड़ा समूह उमड़ते देखा तो उनके दिल में भी जज्बात उमड़ पड़े। अपना तैयार किया हुआ भाषण एक तरफ करके ज्ञानी जी ने वो बातें कहीं आचार्य जी के बारे में, सिन्धी समाज के बारे में, जिसको सुनकर सारा सिन्धी समाज फक्र से सिर ऊंचा कर बैठा। ज्ञानी जी ने लोगों को विश्वास दिलाया कि सिंधी कभी भी हिन्दुस्तान की तरक्की का कारवां से अलग हो ही नहीं सकते बल्कि वो इसकी बुनियाद है। सिन्धी सम्मेलन के बारे में तो मैं जितना भी लिखूं कम होगा लेकिन यहां पर ही हमने लेख को खत्म नहीं करना है। हमें आचार्य जी के जिन्दगी के और भी पहलुओं पर नजर डालनी है।

३ नवम्बर, १९८३ को राजस्थान के महान् और पवित्र अजमेर शहर में महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी मनाई गई। यह समारोह बहुत ही धूमधाम से हुआ। और इतने महान् ऋषि और पथप्रदर्शक का समारोह शताब्दी मनाई जा रही हो और प्रधानमंत्री भी वहां पर हों तो इससे शोभा और भी बढ़ेगी। इसलिए भगवान देव जी श्रीमती इन्दिरा गांधी जी को साथ लेकर अजमेर पहुंचे वहां पर उन्होंने इस समारोह में पूरे श्रद्धा और विश्वास से हिस्सा लिया। दिसम्बर, १९८३ को पंजाब समस्या पर एक संसदीय समिति गठित की गई। उसमें आचार्य जी को एक सदस्य बनाया गया। और उनके सुझावों पर सारा महकमा अच्छी तरह गौर करता रहा।

३ मार्च, १९८४ को भगवान देव ने एक नये दायरे में कदम रखा। महर्षि दयानन्द की फिल्म बनाने का निश्चय किया और काम शुरू हो गया। दिल्ली में ही इस फिल्म का मुहूर्त हुआ। जहां पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के General Secratary और Vice-President कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ मरवाह आदि विद्वान् नेताओं ने भाग लिया। दिल्ली आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के सदर श्री सरदारीलाल वर्मा भी यहां मोजूद थे। मिलाप अखबार के Managing Partner श्री पूनम सूरी editor श्री नवीन और उनकी माता जी श्रीमति सुशीला ओम प्रकाश इस मौके पर आए और अपनी शुभकामनाएं दीं। और इसी मौके पर विश्व आर्य समाज की स्थापना की गई जिसका स्थापना समारोह श्रीमति सुशीला ओमप्रकाश के हाथों से हुआ।

१९८४ में ही आगे चलकर राजस्थान की सिन्धी academy जो जयपुर में स्थित है एक खास समारोह में आचार्य भगवान देव को सिन्धी रत्न का खिताब दिया इस खिताब के जरिए सिर्फ हिन्दुस्तान या राजस्थान में ही नहीं बल्कि सारे विश्व के सिन्धियों ने ये कबूल किया कि आचार्य भगवान देव जी उनकी जाति के लिए, उनके समाज के लिए एक ऐसे अनमोल रत्न हैं जिसको जहां भी जड़ दिया जाए वह जेवर खुदबखुद चमक पड़ता है।

मैं आचार्य भगवान देव जी की जिन्दगी का जायजा पेश कर चुका हूं। बरस बर बरस, साल दर साल, दिन बर दिन आचार्य जी कहां के कहां पहुंचे और उन्होंने अपने मुल्क में, जाति में, मित्रों में, भाईयों में, अपने बहनों में और हिन्दुस्तान के लोगों में जागृति फैलाई उसकी दूसरी मिसाल ढूंढ़नी बहुत मुश्किल है। लेकिन मैंने जो आपको अर्ज किया था जो विश्व सिन्धी सम्मेलन हुआ था वो अपने आप में बेमिसाल है। उसकी दूसरी मिसाल ढूंढ़नी बहुत मुश्किल है। इस conference के बारे में जो भी कहा जाए वो कम होगा। मैंने पहले भी निवेदन किया कि इस ग्रन्थ में आपको इस बारे में बहुत सी चीजें मिलेंगी देखने को और पढ़ने को। लेकिन मैंने सोचा जो आचार्य जी के बारे में मैं चन्द लाईनें लिख रहा हूं उसके अंदर, उनके लोगों के बारे में खासकर सिन्धियों के बारे में कुछ अल्फाज जरूर लिखना चाहूंगा। यूं तो सिन्धी सारी दुनिया में फैले हुए हैं लेकिन उनका असल घर तो वो इलाका है जो पाकिस्तान में है। सूबे का कुल रकबा १४१७९२५ मुरब्बा किलो मीटर है। और यहां की आबादी आजकल अन्दाजन ८० लाख है। सिंध की अपनी तारीख बहुत पुरानी है जब मिस्र और यूनान की तहजीब की बात होती है तो हिन्द के अगर किसी इलाके ने इस तहजीब का मुकाबिला किया है तो वो सिंध है ये तो सारे जानते हीं हैं कि मिस्र और यूनान की तहजीबें दुनिया की सबसे पहली तहजीबें मानी जाती हैं। लेकिन हिन्दुस्तान की जो मोहनजोदड़ो या सिंध इलाके

जननी जनजे भक्त जन, या दाता या शूर।
नहीं तो रहजे वांझणी, मती गवाइए नूर॥

की तहजीब है वो इनसे प्राचीन है यह स्वीकार की गई है। मोहनजोदड़ो का अजीम शहर इस इलाके में खोदा गया था। ये शहर आजकल के करांची शहर से ८० मील उत्तर पूर्व में बना हुआ था। अन्दाजा लगाया जाता है कि ईसा के जन्म से ढाई हजार बरस पहले इस इलाके में वो तरक्की की खूबसूरती थी जो आज की माहरीने तरक्की देखकर हैरान हैं। यह तहजीब कैसे बनी और कैसे इसने तरक्की की ये एक लम्बी दास्तान है। बहरहाल ३२५ कबल मसीह यानी ईसा से पहले यूनान के बादशाह सिकन्दर ने इसे अपने कब्जे में कर लिया। मैं ये छोटी सी तारीख आपके सामने इसीलिए पेश कर रहा हूं क्योंकि आपको यह अंदाजा होगा कि सिन्ध कितना पुराना और प्राचीन सूबा है। इस इलाके में हिन्दुस्तान की तारीख के अन्दर कितना अहम रोल अदा किया है। कोई हैरानी की बात नहीं है कि इतनी अजीम और अहम इलाके से एक अजीम और अहम इन्सान जन्म ले और वो हमारे भगवान देव जी हैं सिकन्दर की मौत के बाद सिकन्दर का ही एक जनरल selucus पहले के जेरे असर आया। पर तब तक हिन्द में चन्द्रगुप्त मौर्य की ताकत बहुत बढ़ चुकी थी। और उसने यूनानी फोर्स को दबाने का फैसला कर लिया था। selucus ने देखा जब मामला हाथ से निकला जा रहा है और संदीक किए बिना कोई और तो और सिन्ध को भी सम्राट चन्द्रगुप्त के हवाले कर दिया। सम्राट अशोक के वक्त सिन्ध में बौद्ध धर्म की मकबूलियत बढ़ी लेकिन इसके बाद उत्तर पश्चिम की तरफ से मुगल हमले होने लगे।

आठवीं सदी के शुरू में १७१२ ईसवी में अरब हाकिमों के जेरे असर आया। फिर अंदाजन तीन सदियों तक अरब हाकिमों की मलकियत बन कर रहा। ग्यारवीं सदी में मुहम्मद गजनवी ने इसे हिस्सा बनाया फिर भी सूबे के रहनुमां या वहां के रहने वालों की मकबूलियत बढ़ती ही गई कम नहीं हुई और इन्होंने यहां हकूमत चलानी शुरू कर दी। बारहवीं सदी में अकबरे आजम ने सिन्ध को मुगल सल्तनत में शामिल कर दिया। अकबर का अपना जन्म अमरकोट शहर में हुआ था। लेकिन औरंगजेब के बाद मुगल सल्तनत बिखर गई और सिन्ध बलूचिस्तान के तालपुर खानदान के जेरे असर आया। ये लोग यहां के मित्र बन कर राज करते रहे। इनकी राजधानी हैदराबाद थी। जब बरतानवी फोर्स ने पहली बार अफगानिस्तान के खिलाफ लड़ाई छेड़ी तो उन्होंने हैदराबाद को अपना सेन्टर बनाया। उसी के लिए सिन्ध के हितैषियों को बरतानिया के साथ एक सन्धि पर दस्तखत करने पड़े और बहुत से बरतानवी फौज को रियायतें भी दीं।

सन् १९४२ ईसवी में बरतानियां ने सिन्ध पर नई पाबन्दियां लगा दीं। ये हैरानी की बात नहीं थी। बरतानवी हकूमतअक्सर ऐसा ही किया करती थी। लेकिन इससे वहाँ के लोगों की आजादी सिर्फ नाम की ही रह गई थी। ये बात बारसूक लोगों को पसन्द नहीं आई। उन्होंने हैदराबाद में बनी बरतानवी residence पर हमला कर दिया। हिन्द के बरतानवी हुक्मरान तो यही एक मौका ढूंढ रहे थे। उन्होंने फौरन फौजें भेजीं और सिन्ध को बरतानवी राज का एक हिस्सा बना लिया।

१९३६ ईस्वी में ये एक अलग सूबा बनाया गया और यहाँ गवर्नर मुकमल किया गया। १९४७ ईसवी के बंटवारे में ये पाकिस्तान में शामिल कर दिया गया।

१९५५ इसवी में सिन्ध की अलग सरकार खत्म हुई और मरकजी हकूमत लागू की गई यानि वो पाकिस्तान के अन्दर मुकमल तौर पर शामिल हो गया आज तक यही सिलसिला चल रहा है। जब दिल्ली में आचार्य जी आलमी सिंध conference कर रहे थे तो बहुत से लोगों ने इस बात का एतराज किया था कि उसी वक्त पाकिस्तान में, सिन्ध में पाकिस्तानी फौजी हकूमत के खिलाफ एक movement या तहरीक चल रही थी। पाकिस्तान की अखबारों का कहना था कि दिल्ली में की गई सिन्धी conference इस movement को हिमायत दे रही है, उसको support कर रही है। लेकिन आचार्य जी ने साफ अलफाज में कह दिया था कि सिन्धी conference का फैसला तो फरवरी

गुणी पुत्र एको भलो, सौ मूरख नहीं भाय।
एक चन्द्र तम को हरे, शत तरिन नहीं जाय॥

महात्मा आनन्द स्वामी (आर्य समाज स्थापना शताब्दी के उपाध्यक्ष) का पालम एयरपोर्ट पर स्वागत करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री आचार्य भगवानदेव (सन् 1975)।

सन् 1975 : आर्य समाज स्थापना शताब्दी का देश भर में संदेश देते हुए निजामाबाद समारोह में बोलते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमंत्री आचार्य भगवानदेव।

अलवर आर्य महा सम्मेलन में मोरिशस के प्रधानमंत्री सर शिवसागर रामगुलाम के साथ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमंत्री आचार्य भगवानदेव 1972।

पं० आनन्दप्रिय जी का राजकोट में स्वागत करते हुए आचार्य भगवानदेव 1964।

१९८३ में ही हो गया था। तब इस movement की बात ही नहीं थी। और उसका जन्म ही नहीं हुआ था। लेकिन ये बात सच है कि conference के अन्दर जो सिन्धी भाई आये वो जम्हूरियत पसन्द थे, democratic पसन्द थे तो उनका पाकिस्तानी भाईयों के साथ हमदर्दी का इजहार करना हैरानी की बात नहीं थी। दिल्ली में बैठे हमदर्दी करने वाले पाकिस्तान में चल रही movement की कोई खास मदद तो कर नहीं सकते हैं। ये पाकिस्तान के अखबारों पर ऐसा इल्जाम लगाना गलत और बेबुनियाद था। आचार्य जी ने जोरदार अल्फाज में यह कहा था कि "हम सिर्फ पाकिस्तान में नहीं सारी दुनिया के सिन्धियों के हमदर्द और उनके साथी हैं" इस conference से सारे सिन्धी जमात को एक नया रुख और नया वजूद मिला था। इससे दुनिया के सिन्धियों को अहसास हुआ था कि उनका भी एक अलग मुकाम है। जिसकी वो बुनियाद बनाकर अपने तहजीब, अपने literature, अपने अदब की एहमियत को बढ़ा सकते हैं। आचार्य जी ने उसी conference में ऐलान किया था कि वो दिल्ली में एक सिन्धी कलचुरल सोसायटी बनायेंगे। उसके बहुत बड़े प्लैन बना रहे हैं। आचार्य जी के जहन में आज भी वो प्लैन घूमते हैं जिसको अम्ल में लाने के लिए वो पूरी कोशिशों में लगे हुए हैं। उनमें दिल है कि दिल्ली में ये centre बनाया जाये जिसमें एक बहुत बड़ा ओडिटोरियम हो, एक library हो, एक community centre एक बरातघर हो, दूसरी किसम की सहूलियात हों जिसको जहाँ पर आम इन्सान अपने फायदे के लिए इस्तेमाल कर सके। इसके जरिये सिन्ध के बारे में सिन्धी जाति के बारे में मजहब और धर्म के बारे में सभी लोगों को बताया जा सके। इन प्लैनस को इन तजवीजों को पूरा होने में ये तो सच है कि वक्त लगेगा परन्तु जब प्लैन पूरे हो जायेंगे तो आचार्य जी के योगदान का एक अमरदीप बनकर उनकी जिन्दगी की मेहनत का एक मशाल बनकर हमेशा जलते रहेंगे। मैं तो सारी सिन्धीं जाति को बधाई देता हूं कि उनको एक इतना निष्काम सेवक और अच्छा रहनुमां मिला है। अपने बारे में न सोचकर सारी जाति को सारे समाज को इतना ऊंचा ले जाना चाहता है कि वो हर एक जाति के लिए एक मिसाल बन पाये।

आचार्य जी के रसूक के बारे में मैं जितना कहूं उतना कम है। मेरा यह मतलब नहीं कि वो बड़े-बड़े लोगों के पास बैठकर अपना दबाव डालते हैं, नहीं। आचार्य जी का रसूक उनकी अपनी अमली जिन्दगी और बातचीत करने के तरीके से जाहिर होता है। वो जिसके साथ दो मिनट मिल लें, दो बातें हँसकर कर लें वो हमेशा आचार्य जी का मुरीद बन जाता है मुझे याद है कि दिल्ली के metropolition council और corporation के चुनाव में आचार्य जी ने एक बहुत ही अहम रोल अदा किया था। चुनाव के अन्दर जो उन्होंने काम किया उसका तो मैं जिक्र करूंगा ही लेकिन उससे पहले मैं ये भी बताना चाहूंगा कि जो काम उन्होंने आसाम, उड़ीसा, आन्ध्र, कर्नाटक, तमिलनाडु के जगलों में जाकर वहाँ के आदिवासियों और वहां के गरीब लोगों के साथ किया वो कोई आम बात नहीं है। बहुत से लोग जानते हैं कि भगवानदेव जी बुनियादी तौर पर आवाम के सेवक रहे हैं और हमेशा रहेंगे। उन्होंने हमेशा ये नजरिया रखा है कि हर आम आदमी किस तरह मुतमाईन हो और उसकी शान्ति कैसे हो और उनके मुश्किलात कैसे दूर हों। कभी इस बात की परवाह नहीं की कि वो अपने काम को पूरा कर पायेंगे कि नहीं। अगर एक काम उन्हें सौंपा गया है तो उस काम में वो इस तरह खो जाते हैं, इस तरह कूद पड़ते हैं जैसे प्रह्लाद होलिका की आग में कूद पड़ा था। क्योंकि भगवानदेव जी को यह विश्वास है कि उनकी सच्चाई और उनका संकल्प हर अंगारे को फूल बना देगा। आचार्य भगवान देव जी ने जो काम दिल्ली के चुनावों पर किया था उसे वही समझ सकता है जिसने उन्हें काम करते देखा है। हालांकि आचार्य जी धनी इन्सान नहीं है, मैंने पहले भी कहा है कि वो कोई व्यापारी नहीं है, उनके पास मोटर गाड़ी या बहुत सा रुपया धन नहीं है और हैरानी की बात यह है कि उन्हें इन चीजों में दिलचस्पी भी नहीं है वो सिर्फ काम से मतलब रखते हैं। चाहे बस में जाना पड़े, स्कूटर में जाना पड़े या पैदल ही चलना पड़े उन्हें कोई चिन्ता नहीं। वो लोगों से मिले, उन्हें कांग्रेस के बारे में बताया, उनसे हिमायत मांगी, और हासिल भी की। करौल-

जान हथेली पर लिये, चला सदा वह वीर।
संकट, सुख में एकसा, संजय सौम्य सुधीर॥

बाग के इलाकों में आचार्य जी ने लोगों के घरों में बैठकर बातचीत की और उनको कांग्रेस के मुखालिफ हल्के उसका हिमायती बनाया। सिख भाईयों पर भी उन्होंने अपना असर छोड़ा है। लेकिन सिन्धी और आर्यसमाज हल्के उनका रसूक बहुत था। इसका फायदा कांग्रेस आई को चुनाव के दौरान हुआ। इस किस्म के लोगों को जिम्मेदारी दी जाएं तो पार्टी को फायदा हो सकता है। पार्टी मुन्तजमीन या रहनुमाओं को चाहिए कि ऐसे लोगों को ओहदे जाएं कि उनकी काबलियत से सलाहियत से लोगों की सेवा कर सकें और पार्टी को बेहद मजबूत बना सकें।

मैं कांग्रेस को बधाई देता हूं कि उसके पास ऐसे अच्छे worker हैं जिसको सिवाय पार्टी और मुल्क के के और कुछ भी ख्याल नहीं है। ऐसे लोग देश के मुस्तकबिल की तामीर के लिये जरूरी हैं और उनकी अहमियत कभी भी नजरअन्दाज नहीं किया जा सकता। हमारे भगवानदेव जी की अहमियत इस वक्त क्या है, कितनी है कहां तक जाएगी ये शायद इस ग्रन्थ में लिखना मुमकिन नहीं है। इस बात का अहसास तो वही कर सकता आचार्य जी को मिला हो। जिसने उनके साथ सम्पर्क किया हो, जिसने उनको कोई काम कहा हो और वो काम हो गया हो। जिसने कोई दुःख महसूस किया हो और उन दुःखी आंखों से आचार्य जी के पास गया हो और वो कैसे भुला दिया गया हो और सुख में बदला गया हो यह आचार्य जी की महानता है। उनका सलूक है और यही बड़प्पन है।

मैं ये तो नहीं कहूंगा कि ये छोटा सा लेख जो मैंने लिखा है ऐसे आचार्य भगवानदेव जी की जिन्दगी के आपको मालूम हो उनकी शख्सियत के बारे में आपको मालूम होगा। किसी भी इन्सान की शख्सियत या आ उसकी जिन्दगी के बारे में बयान करने के लिए इन्सान के बने हुए लफ्ज बहुत कम होते हैं। क्योंकि लफ्ज और इन्सान ने बनाये हैं। जिन्दगी भगवान ने बनाई है। ये बात मैंने लेख के शुरू में भी निवेदन की थी। ये आपको दोबारा याद दिला रहा हूं। इस ग्रन्थ में आचार्य भगवानदेव जी की जिन्दगी के अलग-अलग पहलुओं पर बहुत से ने लिखकर भेजा है, कविताएं लिखी हैं। आचार्य जी के भाषण आपको इसमें पढ़ने को मिलेंगे। उनकी जिन्द तस्वीरें, समारोह। उनके अपने लिखे हुए लेख भी आपको पढ़ने को मिलेंगे। उन सबसे आपको एक ऐसे इन्स बारे में कुछ हद तक मालूम होगा कि ये इन्सान कितना लम्बा सफर तय करके आज इस मुकाम पर पहुंचा है इन्सानियत और इंसान की सेवा करने के लायक लगा हुआ है और अपनी पूरी ताकत से कर रहा है। इस मुकाम पर कर आचार्य जी कोई नई बात नहीं कर रहे हैं। बहुत से सियासत दान ऐसे होते हैं जो कुर्सी मिलने पर चन्द ऐसे कर देते हैं जिससे ऐसा लगे कि वो एक बहुत बड़े सेवक हैं। लेकिन आचार्य जी तो बचपन से ही सेवा करते हैं। ऋषि, मुनि, ग्रन्थ और विद्वानों के बीच में बैठकर उन्होंने वो ज्ञान हासिल किया है जो इन्सान को इन्सानियत बारे में सिखाता है। आज की दुनिया में आदमी तो करोड़ों हैं पर इन्सान बहुत थोड़े हैं। इन्हीं इन्सानों की गिनती आचार्य भगवानदेव जी हैं। इन इन्सानों के अन्दर भी बहुत से दर्जे हैं। कुछ इन्सान ऐसे भी होते हैं जो अपने बारे सोचते हैं, अपने साथ इन्सानियत और अपने आस-पास इन्सानियत का बर्ताव रखते हैं। कुछ ऐसे इन्सान होते अपने जात-पात अपने निकट भाई संबंधियों के बारे में सोचते हैं। उनसे ऊपर वो इन्सान होते हैं जो अपना नहीं, भाई बंधुओं का नहीं, अपनी जाति का नहीं परंतु हर इन्सान के बारे में अपने ही जैसा सोचते हैं। उनमें से भगवानदेव जी एक हैं। मैं भगवान का शुक्रगुजार हूं कि उन्होंने आचार्य जी की जिन्दगी में इतनी तरक्की दी वो इतना ऊंचा उठकर पार्लियामेंट की लोकसभा में बैठकर इन्सानियत की सेवा कर रहे हैं और इंसानियत का बहुत ही खूबी से निभा रहे हैं। आप लोग जो ये ग्रन्थ पढ़ेंगे, देखेंगे आचार्य जी के करीब खुद व खुद हो जाएंगे। आप लोगों से ये अपील करता हूं कि भगवानदेव जी की जिन्दगी से हमें कुछ सीखना है। सीख करके हमें अपनी जि में ढालना है। अगर हम में से एक भी जन ऐसा कर ले तो ये ग्रन्थ सफल हो जाएगा और मकसद पूरा हो जाए

हर दिल है सोगवार तो हर आंख अश्कबार।
यह कौन आज अञ्म से उठकर चला गया॥

आचार्य भगवानदेव जी को मैं शुभकामनाएं पेश करता हूं कि उन्होंने अपनी जिन्दगी के पचास वर्ष पूरे किये। मैं ये तो नहीं कहूंगा कि वो हजारों और करोड़ों वर्ष जिएं क्योंकि ये हो नहीं सकता। जो इन्सान आया है उसने जाना भी है। मैं भगवान से यह प्रार्थना करता हूं कि उनकी जिन्दगी में सोचे हुए सारे काम पूरे हो जायें। कोई काम अधूरा न छोड़कर जाएं। इन्सानियत को अपना प्यार और जज्बा इस तरह उलेट जाएं जैसे गंगाजल की धारा एक पवित्र और शुद्ध कमण्डल से बह रही हो। इस धारा से हजारों लोगों को जीवन दान मिलता है और लाखों लोगों को यह सहारा देती है। मैंने आचार्य जी के बारे में जो कुछ लिखा वो कोई नई बात नहीं है। यह सब बातें आप लोगों को मालूम ही होंगी, लेकिन मैंने इन्हें एक तरतीब देकर आपके सामने पेश किया है। इसमें चन्द लाईनों में ही हम सबको इस महान् व्यक्ति के जीवन के बारे में एक झलक मिल जाती है जिसने लोगों और मुल्क की सेवा करना ही अपनी जिंदगी का मकसद बनाया हुआ है। लेकिन आप में से बहुत से ऐसे होंगे जो यह सोचेंगे कि नवीन ने आचार्य जी को एक देवता सा बना दिया है। मैं इससे सहमत हूं। देवता वो होता है जो लेने से ज्यादा देने का जज्बा रखता हो। और आचार्य भगवानदेव जी ने जिन्दगी में लिया बहुत कम है और दिया खूब ज्यादा है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि आचार्य जी में कोई कमी या खामी ही नही है। वो भी जरूर होंगी वो इंसान हैं और इंसान के अन्दर कमियां होनी लाजमी हैं। लेकिन मैंने उन कमियों की तरफ कभी ध्यान नहीं दिया। मुझे उनकी खूबियों से ही फुरसत नहीं मिली तो भला खामियों की तरफ कहां जाऊं। यूं भी यह दुनिया बहुत बेहतर हो जाएगी अगर हर इन्सान एक-दूसरे की अच्छाईयों पर ध्यान दें। मैं इसी में विश्वास रखता हूं और यह भी उम्मीद करता हूं कि आप सब इसी सिलसिले पर अमल करेंगे। मैं आप सबको बधाई देता हूं कि आज हमारे प्यारे आचार्य भगवानदेव जी जिन्दगी का आधा हिस्सा पूरा करके दूसरे हिस्से में कदम रख रहे हैं। हम सबकी शुभकामनाएं उनके साथ हैं।

नवीन
सम्पादक दैनिक मिलाप,
मिलाप-निकेतन बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली

3 फरवरी 1985

□□□

जो हार कर बैठ जाते हैं उनकी किस्मत डूब जाती है।
जो सदैव चलते रहते हैं सफलता उन्हें ही मिलती है ॥

श्री प्रकाशचन्द्र सेठी का स्वागत करते हुए आचार्य भगवानदेव संसद सदस्य — अध्यक्ष सेवादल बिरादरी
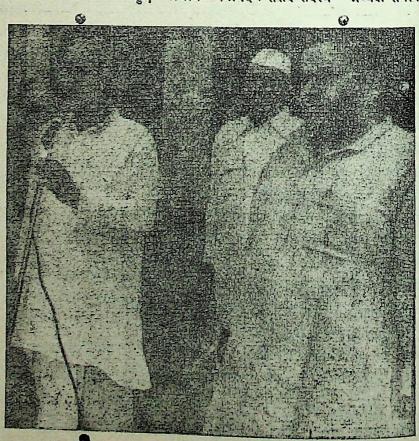
अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी कार्यालय में १५ अगस्त को ध्वज वन्दन के समय महामन्त्री श्री बसन्त दादा पाटिल संसद सदस्य आचार्य भगवानदेव तथा श्री मक्खन भाई ।

मेरी प्रभु

से

प्रार्थना

संस्कृत—

ओ३म् ! असतोमा सद्गमय ।
तमसोमा ज्योर्तिगमय ।
मृत्योर्मा ऽमृतं गमय ।।

हिन्दी—

मेरे प्रभु ! मुझे असत्य से सत्य की ओर लें चल ।
मुझे अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चल ।
मुझे मृत्यु से अमृत की ओर ले चल ।

अंग्रेजी—

My Lord, From untruth lead me to truth.
From darkness lead me to light.
From death lead me to immortality.

सिन्धी—

मुहिजा प्रभु ! मूंखे असत्य खां सत्य जे रस्ते ढ़े वठी हल् ।
मूंखे अन्धकार खां प्रकाश जे रस्ते ढ़े वठी हल् ।
मूंखे मृत्यु खां अमृत जे रस्ते ढ़े वठी हल् ।

Phones : { 377880
377798
377830 }

कांग्रेस (ई) संसदीय दल
Congress (I) Party in Parliament

Prof. N.G. Ranga, M.P.
Deputy Leader

125, Parliament House
New Delhi-110001.
October 5, 1984

Dear Sri Suri,

I am glad that you are bringing out Abhinandan Granth about Sri Bhagwan Dev, the Acharya.

He has distinguished himself as a powerful, dynamic and convinced champion of the 20-Point programme and secular political approach of the Congress (I). It is always a pleasure to listen to his speeches in Lok Sabha. He is endowed with a vibrant rich voice and with his command over flavoury Hindi, he makes a superb speaker and enjoys the attention of the House.

How cheerful he is and heroic in standing up for the policies and programmes of Smt. Indiraji. His attractive personality, even more fascinating eloquence and confident and vibrant posture are all prized by the Congress (I) Party in Parliament.

It is a surprise to me to learn that he is reaching 50th year, so young he is in his enthusiastic Abhimanya-like readiness to be always in the vanguard of Parliamentary debates.

I wish him 100 years of useful and vigorous public life.

Yours affectionately,
N. G. Ranga

खुदा के बन्दे तो हैं हजारों, वनों में फिरते हैं मारे-मारे।
मैं उनका बन्दा, बनूंगा, जिसको खुदा के बन्दों से प्यार होगा।।

आचार्य भगवानदेव वंश वृक्ष

वरलमल
|
नाऊंमल
|
खानचन्द
|
गंगाराम
|
गोपालदास
|
भगवानदेव | देवराज | जमनादेवी | खीमाबाई | मेघराज | ईश्वर | मोहनी | श्याम | रुकमणी | सरस्वती

भगवानदेव—पद्मा
|
प्रियदर्शनी | असीम प्रियदर्शी
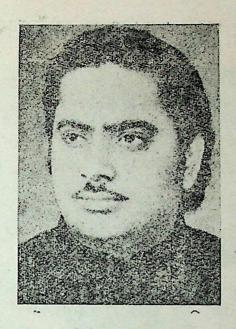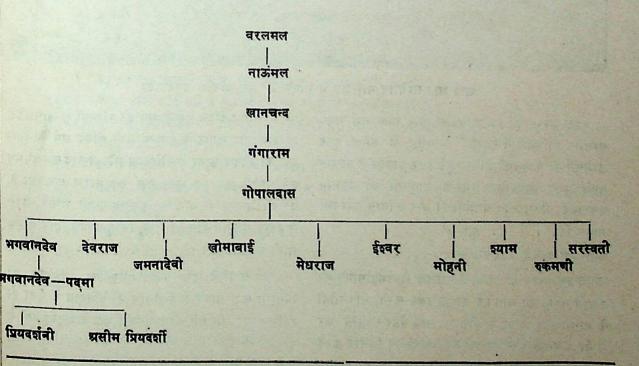
भगवानदेव तेरा नाम ही तो इन्कलाब है।
युवकों की आवाज से तू जिन्दाबाद है॥
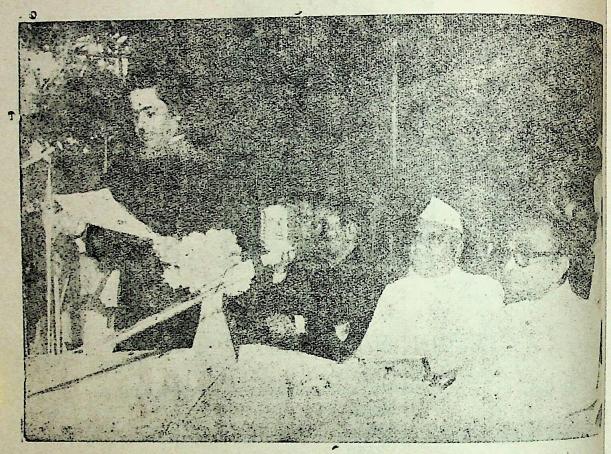
आर्य महा सम्मेलन मोरिशस में

आर्य महा सम्मेलन मोरिशस में भाषण देते हुए आचार्य भगवानदेव

२४ अगस्त १९७३ रात्रि को साढ़े सात बजे महा-सम्मेलन मोरिशस में विशाल जनसमूह के समक्ष मुख्य सम्मेलन की कार्यवाही आरम्भ हुई। इस प्रार्थना के पश्चात् सबसे पहले सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री आचार्य भगवानदेव ने भारतीय यात्रियों की ओर से निम्न मर्मस्पर्शी भाषण दिया।

'मोरिशस के धर्म प्रेमी बन्धुओ,

"इस भारत के नर-नारी विशाल हिन्दमहासागर की उत्ताल तरंगों को लांघकर आपके दर्शन करने, आप लोगों के सत्संग से लाभ उठाने और एक साथ बैठकर विश्व भर में वैदिक संदेश प्रसारित करने के उपायों पर विचार करने के लिए यहां आए हैं। हम अपने हृदय-सरोवर के पुष्प आपको अर्पण करते हैं। धर्म बन्धुओ! आप हमारी इस तुच्छ भेंट को स्वीकार करें।"

"आर्य समाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द का स्वप्न था कि संसार वैदिक धर्म के सूर्य की रश्मियों से आलो[illegible] हो जाए और संसार के समस्त प्राणी वैदिक धर्म के [illegible] वृक्ष की शीतल छाया के नीचे सुख और आनन्द का [illegible] करें। महर्षि का यह स्वप्न मूर्त्त रूप धारण कर रहा [illegible] यह बड़े सन्तोष की बात है। इस स्वप्न की झांकी [illegible] से बाहर यत्र-तत्र दीख पड़ती है, किन्तु आपके द्वीप में [illegible] झांकी बहुत भव्य है।"

हम आर्यों के इस प्रथम सांस्कृतिक अभियान [illegible] व्यवस्था कर आपने आर्य समाज के इतिहास में वैसा [illegible] स्वर्णिम पृष्ठ जोड़ा है, जैसा भगवान बुद्ध के अनुयायि[illegible] बौद्धधर्म के इतिहास में जोड़ा था। निश्चय ही यह [illegible] सन्तति के लिए मार्गदर्शन का काम करेगा। इस अभि[illegible] का आप लोगों ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा [illegible] माध्यम से हमें अवसर प्रदान किया, इसके लिए हम [illegible] आभारी हैं।"

आचार्य भगवानदेव के जीवन की विशेष घटनाएं
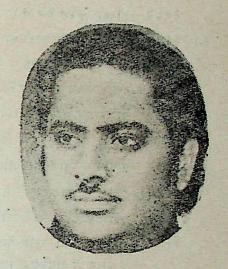
२३-२-१९३५—जन्म बोरानी गांव, तालुका शैदारपुर, नवाबशाह जिला सिन्ध, पिता गोपालदास, माता ग्यानी बाई।

१९४१—यज्ञोपवीत (जनेऊ) बोरानी, बोरानी में सातवीं कक्षा तक शिक्षा ली।

२१-८-१९४७—पाकिस्तान से आकर ब्यावर में रहने लगे।

१९५२—मेट्रिक तक सिन्धी हायर सेकण्डरी स्कूल (मोहम्मद अली मेमोरियल बिल्डिंग) में शिक्षा ग्रहण की।

१७-५-१९५२—घर को छोड़कर हिन्दुस्तान के मुख्य ऐतिहासिक स्थानों का भ्रमण व फकीरी में साधुओं और सन्तों की सेवा में रहकर योग का अभ्यास किया और सत्य का ज्ञान प्राप्त करने के लिये दृढ़ संकल्प लिया। अजमेर, पुष्कर, व जयपुर में आर्य समाज मन्दिरों में हवन करके वस्त्र सर्टिफिकेट हवन कुंड में जला दिये और फकीरी का भेष धारण किया।

२०-८-१९५२—गुरूकुल विश्व विद्यालय में संस्कृत भाषा, वैद्य, उपनिषद् दर्शन, रामायण, महाभारत, गीता आदि का अभ्यास किया। पहला हिन्दी में लेख (सुखमार्ग) पर लिखा।

१९५४—गोवा मुक्ति आंदोलन में घूधला वेऊ पर सत्याग्रह में शामिल हुए।

१९५५—गुरूकुल से निकलकर महात्माओं व वीरों की भूमि स्थलों के दर्शन करने के लिए सारे हिन्दुस्तान का दौरा करने निकल पड़े।

१९५६—ईद के अवसर पर गोधरा में ४०० गऊओं को कतल होने से बचाया।

१९५६—बड़ौदा, अहमदाबाद व गुजरात की प्राचीन राजधानी पाटण में पहुंचे और महा गुजरात आंदोलन में शामिल हुए।

१९५६—पाटण म्युनिसिपलटी के सदस्य चुने गये।

१३-९-१९५७—पंजाब में हिन्दी रक्षा आंदोलन में ३६ साथियों सहित शामिल हुए। जालन्धर में साढ़े तीन माह तक जेल की सजा काटी। जेल में ५०० सत्याग्रहियों के बीच में आर्य समाज स्थापित की और उसका मन्त्री चुना गया।

२४-१२-५७—जालन्धर जेल से आजाद।

१९५८—पाटण में बम्बई प्रान्त आर्य धर्म सम्मेलन, बम्बई प्रान्तीय आर्य बीर दल के संचालक चुने गये।

१९६१—महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा गुजरात के संचालक चुने गये।

खुदी को कर बुलन्द इतना कि हर तकदीर से पहले।
खुदा बन्दे से खुद पूछे बता तेरी रजा क्या है॥

१९६२—हरिद्वार कुम्भ मेले में शामिल हुए।

१९६३—टंकारा म्युनिसिपलटी का सदस्य बने।

१९६४—यूक्रिस्ट कांग्रेस बम्बई में कार्य।

१९६४—टंकारा में अखिल भारतीय शुद्ध आयुर्वेदिक सम्मेलन बुलाकर ३ हजार वैद्य शामिल किए।

१९६५—पाकिस्तान के साथ लड़ाई के अवसर पर जवानों के साथ कार्य किया।

१९६८—मई में "जनज्ञान" (मासिक) का दिल्ली में प्रकाशन।

१९६९ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधि चुने गये व सभा के उपमन्त्री चुने गये।

१९७०—टंकारा छोड़कर दिल्ली में रहने लगे (४ विश्व विद्यालय मार्ग दिल्ली-७)

१९७१—सुप्रीम कोर्ट में केस हिन्दी में चलाने की मांग को लेकर गिरफ्तारी दी।

१९७२—अलवर में आर्य महासम्मेलन जिसमें मोरीशस के प्रधानमन्त्री शिवसागर राम गुलाम भी शामिल थे जलूस में हाथी पर संचालन किया।

१९७३—२ फरवरी मारीशस में रखे गए आर्य महासम्मेलन में ७५० यात्री लेकर जहाज में गए व सम्मेलन में उद्घाटन भाषण दिया।

१९७३—८ फरवरी को पद्माभारती से विवाह दिल्ली में।

१९७३—अष्टांग योग पुस्तक का प्रकाशन।

१९७४—"स्वतंत्रता की वेदी पर" पुस्तक का प्रकाशन।

१९७५—२७ फरवरी को पुत्री प्रियदर्शनी का जन्म ब्यावर में।

१९७५—"योग मन्दिर" मासिक मैगजीन का दिल्ली से प्रकाशित करना, आर्य समाज की स्थापना शताब्दी सम्मेलन दिल्ली में कराना जिसमें दस लाख लोग शामिल हुए। महर्षि दयानन्द सरस्वती जीवन कथा पुस्तक का हिन्दी में प्रकाशन।

१९७६—अखिल भारतीय योग साइंस कानफ्रेन्स का दिल्ली में कराना।

१९७७—३ फरवरी को असीम प्रियदर्शी पुत्र का जन्म नजफगढ़ में।

१९७७—नैरोबी में आर्य महा सम्मेलन में शामिल होना, ६०० यात्री अपने साथ ले गए।

१९७९—मोरबी बाढ़ सहायता कार्य में सम्मिलित हुए, कांग्रेस में सक्रिय भाग लिया।

१९८०—जनवरी में लोकसभा चुनाव में अजमेर क्षेत्र से कांग्रेस टिकट पर विजयी हुए।

१९८०—१४ अगस्त को लंदन में "विश्व आर्य सम्मेलन" में शरीक हुए, योग सम्मेलन के प्रधान बनाए गए बर्नल विश्वविद्यालय में रहे। संजय यूथ कांग्रेस की स्थापना। साऊथ हाल में स्पीकर बलराम जाखड़ के साथ भ्रमण।

१९८०—सितम्बर में, रोम, लण्डन, अमेरिका, कनाडा, मिश्र, यूनान, नैरोबी, सेलीसस का दौरा पार्लियामेंट की तरफ से कायम की गई संसदीय राज्य भाषा कमेटी के निरीक्षण प्रवास में शामिल हुए। कांग्रेस के दिल्ली महासम्मेलन में सम्मिलित हुए।

मन्दिर मसजिद डोलती, किसे मिला भगवान।
सेवा, करुणा, प्यार से मनुज बने भगवान॥

१९८१—सिन्धी साहित्य सम्मेलन पालीताणा [गुजरात] ७-८ मार्च को सिंन्धी स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी सम्मेलन इन्दौर, सिन्धी १-२ मार्च युवक सम्मेलन जयपुर, हेमू कालाणी जन्म दिन कानपुर में सम्मिलित हुए, कांग्रेस युवक सम्मेलन बंगलौर में सम्मिलित हुए।

९-१-१९८२—आ० दूई० सिन्धी कांग्रेस मेज का चेयरमैन बना।

७-३-१९८२—प्रधान मन्त्री से सिंधी मिले। प्रथम कांग्रेस फोर्म की बैठक।

३-४-१९८२—दुबई ५ दिन।

१९८२—२४ से ३० मार्च दुबई में चीफ गेस्ट।

१९-४-१९८२—All India Federation of Diploma Eng. जलूस में।

२६-४-१९८२—संसद में प्रथम सिन्धी में भाषण दिया।

२७-४-१९८२—गृह मन्त्री जैलसिंह के साथ अमृतसर जाने के लिए प्रधानमन्त्री ने भेजा।

१९८२—२५-२६ सितम्बर को दिल्ली में सिन्धी बोली साहित्य कला विकास सम्मेलन में राष्ट्रपति से विद्वानों का सम्मान कराया। तथा विश्व सिन्धी समाज की स्थापना की।

२-११-१९८२—को रुपनगढ़ में अनुसूचित जाति जनजाति सम्मेलन में।

१९८२—२७ दिसम्बर को बम्बई में मास्टर चन्द्र का सम्मान, श्री एच० के० एल० भगत सूचना मन्त्री तथा श्री यशपाल कपूर उपस्थित रहे।

७-४-१९८३—सिन्धी मन्दिर कमेटी का प्रतिनिधि मण्डल प्रधान मन्त्री, तथा गृहमन्त्री से मिलाया। हाँगकाँग, सिंगापुर, जकार्ता (इण्डोनेशिया) दुबई, लंदन गए।

१९८३—१८, १९ अक्तूबर को दिल्ली इन्द्रप्रस्थ स्टेडियम में प्रथम विश्व सिन्धी सम्मेलन। १८ को प्रधानमन्त्री ने उद्घाटन किया। १९ को राष्ट्रपति ने समापन प्रोग्राम अटेंड किया।

८-१२-१९८३—निरंकारी और अकालियों की समस्या पर पंजाब के बारे में संसद के दोनों सदनों की एक कमेटी बनाई गई जिसमें लिया गया।

३-३-१९८४—को विश्व आर्य समाज की स्थापना। "महर्षि दयानन्द" फिल्म में दयानन्द की भूमिका में फिल्म का महूर्त शार्ट दिया।

१९-४-१९८४—राष्ट्रपति से सेवादल कार्यकर्ताओं का सम्मान।

२७-४-१९८४—प्रधान मन्त्री से ब्यावर के कार्यकर्ताओं को मिलाया।

२५-१०-१९८४—प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी से दिल्ली में इन्टर नेशनल सिन्धी हाऊस बनाने के लिए विचार-विमर्श।

२६-११-१९८४—को प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी से मुलाकात तथा अनेक विषयों पर वार्ता। चुनाव न लड़कर अन्यकार्य का निर्णय।

□□□

उत्तम सुत साईं जानिये, जो देश भगत सुजान।
मातृ-पितृ कुल तारि दे करें विश्व कल्याण॥

संसदीय राजभाषा समिति

COMMITTEE OF PARLIAMENT ON OFFICIAL LANGUAGE
(SANSADIYA RAJBHASHA SAMITI)
11, तीन मूर्ति मार्ग
11, Teen Murti Marg
नई दिल्ली/New Delhi

संख्या/No. 29011/4/70-समिति-5 दिनांक-18 फरवरी, 1984

सेवा में,

आचार्य भगवानदेव,
संयोजक, तीसरी उपसमिति,
संसदीय राजभाषा समित,
नई दिल्ली

महोदय,

आपके दिनांक 18 फरवरी, 1984 के पत्र के सन्दर्भ में मुझे यह कहने का निर्देश हुआ है कि आप निम्नलिखित मंत्रालयों की हिन्दी सलाहकार समितियों के सदस्य हैं :—

1. रेल मंत्रालय
2. योजना मंत्रालय
3. वित्त मन्त्रालय
4. स्वास्थ एवं परिवार कल्याण मन्त्रालय
5. उद्योग मन्त्रालय
6. नौवहन और परिवहन मंत्रालय
7. ऊर्जा मन्त्रालय
8. पर्यटन और नागर विमानन
9. श्रम एवं पुनर्वास मंत्रालय
10. वाणिज्य मंत्रालय
11. पूर्ति विभाग
12. इस्पात और खान मंत्रालय
13. रसायन और उर्वरक मंत्रालय
14. निर्माण एवं आवास मंत्रालय
15. विज्ञान और प्रौद्योगिक विभाग
16. खाद्य तथा नागरिक पूर्ति विभाग।

भवदीय
(ब्रह्मदत्त चड्ढा)
वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी

राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह जी के आचार्य भगवान देव जी के सम्बन्ध में विचार

मुझे आचार्य भगवानदेव जी, पार्लियामेंट के मेम्बर का, मैं इनको हमारी लोकसभा का शृंगार समझता हूं—आपको मालूम है कि पार्लियामेंटरी System में सबका निशाना होम मिनिस्टर होता है। मैं होम मिनिस्टर था प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी जी के साथ तो हर पार्लियामेंट के Session में मैं निशाना होता था। उस निशाने के सामने जो ३-४ मेम्बर आने वाले थे, उनमें से एक ये भी थे। वो निशाना मेरे तक पहुँचता नहीं था—ये(आचार्य भगवानदेव) रोक लेते थे। "इनके लिए मेरे मन में श्रद्धा है।"

19 अक्टूबर 1983
विश्वसिन्धी सम्मेलन में
दिए गए भाषण से

राष्ट्रपति का प्रेस सचिव

Press Secretary to the President

सं० ८-एम० एच०/८४

राष्ट्रपति सचिवालय
राष्ट्रपति भवन
नई दिल्ली-११०००४

President's Secretariat
Rashtrapati Bhavan
New Delhi-110004

१५ फरवरी, १९८४

प्रिय महोदय,

आपका दिनांक १६ जनवरी, १९८४ का पत्र प्राप्त हुआ। राष्ट्रपति जी को यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आचार्य भगवानदेव अपने जीवन के ५० वें वर्ष में पदार्पण करने पर उनकी "स्वर्ण जयन्ती" मनाई जा रही है तथा इस अवसर पर एक अभिनन्दन ग्रन्थ भी प्रकाशित किया जा रहा है। राष्ट्रपति जी आचार्य भगवानदेव को शुभकामनाएं भेजते हैं और अभिनन्दन ग्रंथ की सफलता की कामना करते हैं।

भवदीय

के. सूर्यनारायण

मिला जन्म उत्तम तुझे, कर ले कुछ उपकार।
समय न यह फिर मिल सके, जीता दाव न हार॥

योजना मंत्री तथा उपाध्यक्ष
योजना आयोग
भारत
नई दिल्ली, ११०००१
Minister of Planning
&
Deputy Chairman
Planning Commission
India
New Delhi-110001

२८ फरवरी; १९८४

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई है कि अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशन समिति, नई दिल्ली आर्य समाज व सिंधी समाज के अनन्य व शीर्षस्थ नेता; संसद सदस्य आचार्य भगवानदेव जी का ५०वां जन्म दिन स्वर्ण जयन्ती के रूप में मनाने जा रही है और इस अवसर पर एक अभिनन्दन ग्रन्थ भी प्रकाशित किया जा रहा है।

आचार्य जी एक बहुत ही निष्ठावान और कर्मठ तपस्वी और कर्मयोगी हैं और विभिन्न क्षेत्रों में देश तथा विदेश में इनका महत्वपूर्ण योगदान सर्व-विदित है। हिन्दी जगत में भी इन्होंने अपनी एक अमिट छाप छोड़ी है और राजभाषा के रूप में हिन्दी के उत्तरोत्तर प्रयोग की दिशा में भी इनका योगदान काफी महत्वपूर्ण रहा है। उनकी स्वर्ण जयन्ती के इस पुनीत अवसर पर मैं ईश्वर से उनकी दीर्घायु की कामना करता हूं। इस अवसर पर जो अभिनन्दन ग्रंथ प्रकाशित किया जा रहा है उसकी सफलता के लिए भी मैं अपनी शुभकामनाएं भेजता हूं।

शंकरराव चव्हाण

लाभ क्या है उन करो से, जो न गिरते को उठाएं।
या कि बन दानी जगत् में, कीर्ति तक अपनी बढ़ाएं।।

वाणिज्य मंत्री
भारत
Minister of Commerce
India
New Delhi-110011

२ फरवरी, १९८४

सन्देश

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि संसद सदस्य, आचार्य भगवानदेव जी के ५०वें जन्म दिवस के शुभ अवसर पर एक अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित होने जा रहा है।

स्वर्ण जयन्ती समारोह के सफल आयोजन एवं अभिनन्दन ग्रन्थ के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं हैं।

विश्वनाथ प्रतापसिंह

न इतना नरम हो कि निचोड़ लिया जाये।
न इतना खुश्क कि तोड दिया जावे॥

No. 216/J/84 HMP

गृह मन्त्री, भारत
HOME MINISTER
INIDA
नई दिल्ली-११०००१

१२ सितम्बर, १९८४

प्रिय श्री सूरी,

आपके २७ अगस्त, १९८४, के पत्र द्वारा यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आगामी २ ३फरवरी को आचार्य भगवानदेव अपने सक्रिय समर्पित जीवन के ५०वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। यह उचित ही है कि इस अवसर पर एक अभिनन्दन ग्रंथ का प्रकाशन किया जाय। मैं आचार्य जी का प्रशंसक हूं और उनके प्रति मेरे मन में बहुत आदर है।

मैं प्रकाशन की सफलता की पूर्ण मंगलकामना करता हूं।

आपका

पी० वी० नरसिंह राव

वतन हमेशा रहे शाद, काम और आबाद।
हमारा क्या है, अगर हम रहें — रहें न रहें॥

Z. R. ANSARI

नौवहन और परिवहन राज्यमंत्री, भारत
MINISTER OF STATE FOR SHIPPING & TRANSPO
INDIA
NEW DELHI-110001

६-१-८४

सन्देश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि आचार्य भगवानदेव संसद सदस्य के पचासवें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में प्रेरणादायक शिक्षाओं से परिपूर्ण एक भव्य पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है।

प्रकाशन की सफलता के लिये हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित हैं।

जियाउर्रहमान अन्सारी

न हाथ थाम सके न पकड़ सके दामन।
बड़े करीब से उठकर चला गया कोई।

राज्य मन्त्री
विज्ञान और प्रौद्योगिकी, परमाणु ऊर्जा,
अंतरिक्ष, इलैक्ट्रोनिकी एवं महासागर विकास
भारत सरकार
नई दिल्ली

MINISTER OF STATE
SCIENCE & TECHNOLOGY, ATOMIC ENERGY,
SPACE, ELECTRONICS & OCEAN DEVELOPMENT
INDIA
NEW DELHI

दिनांक २० फरवरी; १९८४

प्रिय श्री सूरी,

आपके १७ जनवरी, १९८४ के पत्र से यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप आचार्य प्रवर भगवानदेव की स्वर्ण जयन्ती मनाने जा रहे हैं और उस अवसर पर एक अभिनन्दन ग्रन्थ भी प्रकाशित कर रहे हैं।

आज के युग में आचार्य भगवानदेव जैसे बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति दुर्लभ हैं। अतः यह अत्यन्त आवश्यक है कि जहां कहीं भी सरस्वती का कोई तपोपूत आराधक, साधक, साहित्यकार एवं समाजसेवी राष्ट्र एवं समाज की सेवा में अपने आपको अर्पित करे, वहां उसकी उपलब्धियों और उल्लेखनीय पक्षों को उजागर किया जाना चाहिये। इस कार्य से लोगों को ऐसे महापुरुषों द्वारा बताये गये मार्ग पर चलने की प्रेरणा मिलेगी।

मैं आपके इस आयोजन के सफलता की कामना करता हूं।

शुभकामनाओं सहित;

आपका

शिवराज वी. पाटिल

मेराजे हयात है फना हो जाना, तकमीले वसाल है जुदा हो जाना।
उठ जाये अगर दिल से खुदा का पर्दा, इंसान का मुमकिन है खुदा हो जाना॥
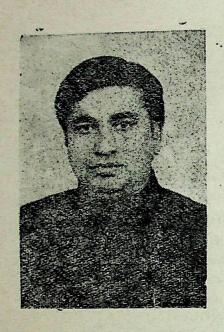
उप मन्त्री
निर्माण और आवास,
भारत
Deputy Minister of
Works and Housing,
India
नई दिल्ली

२५, जनवरी १९८४

सन्देश

मुझे यह जान कर अत्यन्त हर्ष हुआ कि आचार्य भगवानदेव, संसद सदस्य के ५०वें जन्म दिवस पर "स्वर्ण जयन्ती" समारोह मनाया जा रहा है तथा इस उपलक्ष में एक "अभिनन्दन ग्रन्थ" भी प्रकाशित किया जा रहा है।

आचार्य भगवानदेव, निसन्देह एक सकुशल सांसद एवं राष्ट्र सेवक, प्रभावशाली वक्ता, साहित्यकार तथा सिन्धी समाज के हृदय सम्राट हैं। इसमें अतिशयोक्ति नहीं कि उन्होंने अपने पराक्रम और निष्ठा से समाज सेवा करके, अपनी तीव्र बुद्धि एवं साहित्य लेखन से अपना उचित स्थान बना लिया है।

मैं इस समारोह का हार्दिक स्वागत करता हूं और इसकी सफलता की कामना करता हूं।

मोहम्मद उस्मान आरिफ

मौत से क्यों इतनी दहशत--जान क्यों इतनी अजीज।
मौत आने के लिए और जान जाने के लिए॥
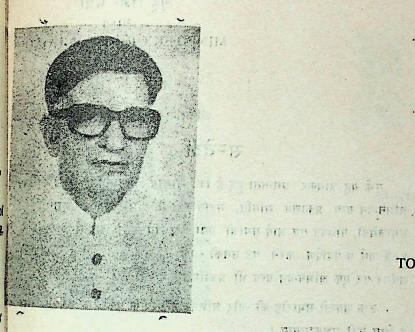
मन्त्री
पर्यटन एवं नागर विमानन
भारत
नई दिल्ली-११०००१
MINISTER
TOURISM & CIVIL AVIATION
INDIA
New Delhi-110001

२३-१-८४

प्रिय श्री सूरी,

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि आचार्य भगवानदेव जी के ५०वें वर्ष में प्रवेश करने के उपलक्ष्य में एक अभिनन्दन ग्रंथ का प्रकाशन किया जा रहा है। उन्होंने जो समाज के उत्थान के लिए कार्य किया है उसका मूल्यांकन शब्दों में नहीं किया जा सकता। उनके जैसे तपस्वी एवं साधक व्यक्ति की हमारे समाज को अत्यन्त आवश्यकता है। मुझे पूरा विश्वास है कि आने वाले वर्षों में भी वे समाज का नेतृत्व सम्भाले रहेंगे। उनके चिरआयु होने की प्रार्थना करता हूं।

आपका
खुरशीद आलम खाँ

**सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है ज़ोर कितना बाजुए कातिल में है॥**

गृह राज्य मंत्री
भारत
MINISTER OF STATE, HOM
INDIA
NEW DELHI,

दिनांक ३०, जनवरी, १९८४

सन्देश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि आचार्य भगवानदेव संसद सद अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशन समिति, महान तपस्वी, साहित्यकार, भाषावि समाजसेवी, गोभक्त एवं आर्य समाजी नेता आचार्य प्रवर भगवानदेव जी ५०वें वर्ष में पदार्पण करने पर उनकी स्वर्ण जयन्ती मना रही है और अवसर पर एक अभिनन्दन ग्रन्थ भी प्रकाशित कर रही है।

उक्त जयन्ती समारोह की और अभिनन्दन ग्रन्थ के प्रकाशन की सफल के लिए मेरी शुभकामनाएं।

पी० वेंकट सुब्ब

गार्गी शंकर मिश्र

ऊर्जा राज्य मंत्री
(पेट्रोलियम विभाग)
भारत सरकार
नई दिल्ली-११०००१
Minister of State For Ener
Deptt, of Petrolium
Government of India
New Delhi-110001

फरवरी ११, १९८४

"सिंधी समाज के प्रति आचार्य भगवान देव, संसद सदस्य का जो योग रहा है और उन्होंने उनके लिए जो कार्य किया है वह स्तुतियोग्य है। परमात्मा से प्रार्थना है कि वे १०० वर्ष तक स्वस्थ रहकर समाज की विशे के सिंधी समाज की सेवा करें और उसे आगे बढ़ायें।"

आपका
गार्गी शंकर

ढूंढता फिरता हूं ऐ इकबाल अपने आपको।
आप ही गोया मुसाफिर आप ही मंजिल हूं मं॥

इस्पात और खान मंत्री
भारत
MINISTER OF STEEL AND MINES
INDIA
नई दिल्ली

दिनांक ११ सितम्बर, ८४

सन्देश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि "आचार्य भगवानदेव अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशन समिति" उनके जीवन के ५० वर्ष पूरे करने के उपलक्ष्य में एक समारोह का आयोजन कर रही है और उनकी स्वर्ण-जयन्ती पर एक अभिनंदन ग्रन्थ भी प्रकाशित कर रही है।

आचार्य भगवानदेव उन महानुभावों में से हैं जो इस शास्त्रीय कथन "उदार चरिताणां तु वसुधैव कुटुम्बकम्" में न सिर्फ विश्वास ही रखते हैं अपितु उसे चरितार्थ भी करते हैं, अपने व्यवहार और आचरण के द्वारा।

मेरी शुभेच्छायें और अभिनन्दन आपके साथ हैं।

आपका

नरेन्द्र साल्वे

मांगूं मैं क्या किसी से जरूरत है क्या मुझे।
देता है वस्ते गैब से मेरा खुदा मुझे ॥

अशोक गहलोत

डी. एम. (टी. सी. ए.)

उप-मन्त्री
पर्यटन एवं नागर वि[illegible]
मंत्रालय
नई दिल्ली-११००[illegible]
भारत

DEPUTY MINIST[illegible]
MINISTRY OF TOUR[illegible]
& CIVIL AVIATION
New Delhi-110001
India

दिनांक ३१-१-८४

मुझे यह जानकर खुशी है कि आचार्य भगवानदेव, सांसद के ५०वें [illegible] पदार्पण पर स्वर्ण जयन्ती का आयोजन कर अभिनन्दन ग्रन्थ का प्रकाशन [illegible] जा रहा है।

कार्यक्रमों एवं अभिनन्दन ग्रन्थ के सफल प्रकाशन तथा उन्हीं की दी[illegible] हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं स्वीकार करें।

शुभकामनाओं सहित।

आपका
अशोक गहलोत

---

38 13 80
Phones : 38 80 62
38 25 38
Res : 38 66 07

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी

२४, अकबर रोड, नई दिल्ली-११००११

चन्दूलाल चन्द्राकर, संसद सदस्य
महामन्त्री

निवास : २२, अकबर [illegible]
नई दिल्ली-११०[illegible]

जनवरी १७, १९८४

सन्देश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आचार्य भगवानदेव के पचासवें जन्म-दिन के अवसर पर उनके कृतित्व के सम्बन्ध में आप एक पुस्तक प्रकाशित करने का आयोजन कर रहे हैं।

उनके जन्मदिवस पर कृपया मेरी शुभकामनाएं स्वीकार करें।
प्रयास की सफलता की कामना सहित।

चन्दूलाल चन्द्राकर

भंवर में जा के फंस जाती है जब इन्सान की किशती।
त्वक्कुल बन के चप्पू पार किशती को लगाता है॥

फोन : 37 78 80
37 77 98
37 78 30

कांग्रेस (इ) संसदीय दल

प्रो० एन० जी० रंगा, संसद सदस्य,
उप नेता

125, पार्लियामेंट हाउस,
नई दिल्ली-110001

दिनांक : 5 अक्तूबर 1984,

प्रिय श्री सूरी,

मुझे प्रसन्नता है कि आप आचार्य भगवानदेव के बारे में अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित कर रहे हैं। उन्होंने कांग्रेस (इ) के 20 सूत्री कार्यक्रम और धर्मनिरपेक्ष राजनीतिक दृष्टिकोण के सम्बन्ध में अपने आपको एक सशक्त तेजस्वी एवं सर्वविदित नेता के रूप में प्रतिस्थापित किया है। लोकसभा में भी इनके भाषण सुनने में बेहद आनन्द प्राप्त होता है। उन्हें ओजपूर्ण वाणी का वरदान प्राप्त है और उनका प्रभावशाली हिन्दी पर पूरा नियंत्रण है जिससे वे सर्वोत्कृष्ट वक्ता हो जाते हैं और श्रवण का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं।

वे हमेशा प्रसन्नचित रहते हैं और श्रीमती इन्दिरा गांधी की नीतियों और कार्यक्रमों का वे सदा अडिग नेता के रूप में समर्थन करते हैं। उनके आकर्षक व्यक्तितत्व और यहाँ तक कि उनकी कर्मठता, विश्वास और उत्कृष्ट प्रदर्शन का संसद में कांग्रेस (इ) दल द्वारा सर्वत्र सतत ही स्वागत किया जाता है।

मुझे यह जानकर सुखद आश्चर्य हो रहा है कि वे 50 वर्ष पूरे कर रहे हैं। वे अभी इतने युवा दिखाई देते हैं कि वे सदा उत्साही अभिमन्यु की तरह संसद के वाद-विवादों में हमेशा आगे आकर भाग लेने के लिए तत्पर रहते हैं।

मैं ईश्वर से उनके सौ वर्ष तक के बहुमूल्य सार्वजनिक जीवन के लिए कामना करता हूं।

आपका

एन० जी रंगा

हजारों ख्वाहिशें ऐसी कि हर ख्वाहिश पे दम निकले ॥
बहुत निकले, मेरे अरमा, लेकिन फिर भी कम निकले ॥

मूलचन्द डागा, संसद सदस्य
सचिव
कांग्रेस (इ) संसदीय दल

फोन : 37 78 70, 37 78 71
37 77 98, 37 78 30
37 78 80, 37 78 14

१२५, संसद भवन, नई दिल्ली-११०००१

१३-९-८४

मैंने एक बुलेटिन आज ही देखा है, बड़ी प्रसन्नता हुई। जब कर्मठ, ईमानदार, निष्ठावान, समाजसेवी नेता का अभिनन्दन होता है तो मुझे खुशी होती है। आज भी समाज में गुणी व्यक्तियों के पारखी हैं यह जानकर मन को अपार हर्ष हुआ।

आचार्य भगवानदेव जी ५०वें वर्ष में प्रवेश करने जा रहे हैं और इस अवसर पर आपने उनके जन्म की "स्वर्ण जयन्ती" मनाने का निश्चय किया है। इसके लिये मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं कि वे दीर्घायु हों जीवन में दिन-प्रतिदिन आगे बढ़ें और इसी तरह समाज की सेवा करते रहें। आचार्य भगवानदेव अपने आप में एक गुणी व्यक्ति हैं, उनका अपना एक निराला व्यक्तित्व है। वे अपनी जिन्दगी में कुछ उसूल लेकर चलते हैं और उस पर अड़े रहते हैं। आने वाला समय बतलायेगा कि यह व्यक्ति कितनी बुलन्दी पर पहुंचेगा। मैं आपके इस प्रयास की सराहना करता हूं।

शुभकामनाओं सहित,

आपका

मूलचन्द डागा

BHIKU RAM JAIN
Member of Parliament
(Lok Sabha)
49, Rajpur Road,
Delhi-110054
Phone : 2526500

7.9.1984

I am in receipt of your letter dated 25.8.1984 from where I learn about my friend Acharya Bhagwandev, M.P. completing 50 years. He has undoubtedly served the people for the past over 34 years.

I have the pleasure to know Shri Bhagwandev within and outside the Lok Sabha. His fearless and frank speaking, zealousness and his service to the community and the Nation is really commendable. He rightly deserves to be complemented and now congratulations on his Golden Jubillee.

It is highly thoughtful of his friends and admirers to celebrate his jubilee. I join myself in such delibrations and wish Acharya Bhagwandev a long and happy life.

Yours sincerely,

(BHIKU RAM JAIN)

गंगा उठो कि नींद में सदियां गुजर गईं ।
दखो तो सोते यह बरसें किधर गईं ॥

श्री धर्मवीर जी के साथ आचार्य भगवानदेव

DHARMA VIRA
54 Anandlok
New Delhi-110049

January 11, 1984

I met Acharya Bhagwandev long ago when he was very young and have since then been watching his progress with a considerable amount of pleasure. Starting as an ardent preacher of Arya Samaj he gradually enlarged his fields of operation to social and political activities finally emerging as an active member of Parliament.

Only recently he organised a Sindhi conference in Delhi and that was the first time that I learnt that he was a Sindhi. This indicates that his outlook is more a national one than merely a regional one. He was also very actively involved recently, with the centenary celebrations at Ajmer of the day of Samadhi of Rishi Dayanand Saraswathi. Every thing that he undertakes is done with a lot of interest and drive and that has helped him in the success in life which he has achieved.

He looks very young and I am surprised that he will now be stepping into his 50th year. I wish him many many more years of fruitful work in the service of the nation.

(DHARMA VIRA)

कल का दिन किसने देखा है, आज का दिन खोएं क्यों ?
जिन घड़ियों में हंस सकते हैं, उन घड़ियों में रोएं क्यों ?

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि०)

गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा
जालन्धर शहर-४

दिनांक-६-१-१९८४
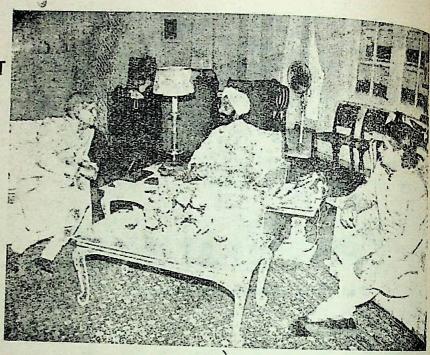
श्री वीरेन्द्र जी तथा आचार्य भगवानदेव राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह से पंजाब के सम्बन्ध में बातचीत करते हुए।

मुझे यह सुनकर हार्दिक प्रसन्नता हुई है कि मान्यवर भाई आचार्य भगवानदेव के जन्म की स्वर्ण जयन्ती तीन फरवरी १९८४ को मनाई जा रही है। भगवानदेवजी का जीवन एक कर्मयोगी, निष्ठावान और सघर्षमय जोग का जीवन रहा है। उन्होंने अपने इस जीवनकाल में न केवल आर्यसमाज की बहुत सेवा की है। अपितु समाज के दूसरे वर्गों की भी सेवा की है वे एक प्रभावशाली वक्ता हैं, गोभक्त हैं और उच्चकोटि के देशभक्त हैं। बहुत अच्छा बोलते हैं और बहुत ही अच्छा लिखते हैं। योग के प्रचार के लिए उन्होंने जो अनथक परिश्रम किया है, वह स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा। यह बहुत कुछ उनकी अपनी सेवा का ही परिणाम था कि वे भारतीय संसद सदस्य भी चुने गये। उन्होंने कई पुस्तकें भी लिखी हैं और अब सिंधी समाज को संगठित करके देश की एकता में अपना जो योगदान दिया है, वह भी अत्यन्त प्रशंसनीय है। ५० वर्ष में बहुत कम व्यक्ति अपने देश, धर्म और समाज की वह सेवा कर सकते हैं, जो आचार्य भगवानदेव जी ने की है। इस शुभावसर पर मैं उन्हें हार्दिक बधाई देता हुआ, परमपिता परमात्मा से यही प्रार्थना करता हूं कि हमारा यह नवयुवक सहयोगी दिन प्रतिदिन प्रगति करता जाए और जिस प्रकार वह आज तक अपने देशवासियों की सेवा करते रहे हैं, भविष्य में भी उसी तरह करते रहें। मैं अपनी शुभकामनायें उन्हें भेजता हूं।

भवदीय
वीरेन्द्र सभाप्रधान

सत्य बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप।
जांके हृदय सत्य तांके हृदय आप॥

Phone Resi. : 38 40 13

Yashpal Kapoor

Ex-Member of Parliament
(Rajya Sabha)

I am glad to know that Acharya Bhagwandev, M.P. has agreed to head the All India Sindhi Congressmen's Forum. As mentioned by you, he is, no doubt, a youthful and very energetic member of the Lok Sabha. I am sure, the Forum will be able to serve more effectively the Sindhis particularly and the country as a whole generally.

With best wishes,

Yours sincerely,
Yashpal Kapoor

श्री यशपाल कपूर श्री सूरज मंगलानी तथा आचार्य भगवानदेव विचार-विमर्श करते हुए

कुलानन्द भारतीय

कार्यकारी पार्षद (शिक्षा)
दिल्ली प्रशासन, दिल्ली
EXECUTIVE COUNCILLOR (EDU.)
DELHI ADMINISTRATION, DELHI

सं० ६८५/का पा शि/८५
दिल्ली, दिनांक २९ जनवरी, १९८५
Delhi, Dated 30 Jan, 1985

माननीय सूरी जी,

आपका दिनांक १८ जनवरी, ८५ का पत्र प्राप्त हुआ। मुझे अति प्रसन्नता है कि आप आचार्य भगवानदेव जी की ५०वीं जयन्ती पर अभिनन्दन ग्रंथ प्रकाशित कर रहे हैं।

मैं आचार्य भगवानदेव जी को कई वर्षों से जानता हूं। सचमुच ही वह बहुत बड़े समाज-सेवी, धार्मिक एवं शैक्षिक व्यक्ति हैं। सिन्धी समाज के तो नेता हैं ही साथ ही वह राजधानी के जन-समाज के लोकप्रिय नेता हैं। बहुत अच्छे लेखक पत्रकार भी हैं।

५०वें जन्म दिवस के शुभ अवसर पर मैं अपनी शुभ कामनाएं प्रकट करता हूं और भगवान् से प्रार्थना करता हूं कि श्री आचार्य भगवान देव जी दीर्घजीवी हों। समाज और देश की निरन्तर सेवा करने में समर्थ हों।

धन्यवाद सहित,

आपका

कुलानन्द भारतीय

आचार्य भगवानदेव(संयोजक संसदीय राजभाषा समिति)अपने सांसद साथियों के साथ अण्डमान निकोबार जेल के बाहर
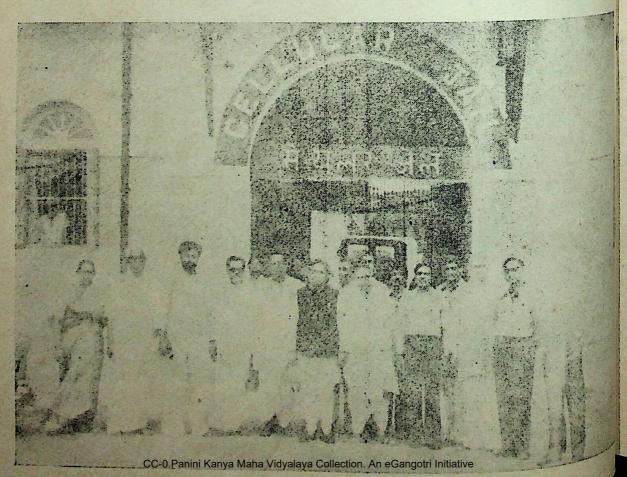
श्री गोरखनाथ मन्दिर

महन्त अवेद्यनाथ

भूतपूर्व सदस्य
विधान सभा एवं लोक सभा

गोरखपुर-२७३००१
दिनांक १-२-१९८५

प्रिय श्री राजीव लोचन

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि योग मन्दिर के संस्थापक आचार्य भगवान देव के ५० वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर उनके व्यक्तित्व एवं कर्त्तृत्व के सम्बन्ध में विशेषांक प्रकाशित करने का आयोजन किया गया है। आचार्य भगवानदेव ने योग मन्दिर मासिक पत्रिका के माध्यम से विगत १२ वर्ष में योग एवं अध्यात्म के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। उनके लेखनी तथा विचारों के योग एवं अध्यात्म के जिज्ञासुओं को योग की गुह्यतम् साधना को समझने में काफी सहायता मिली है। योग के जिज्ञासु उनके इस सहयोग के लिये सदैव ऋणी रहेंगे। महायोगी गोरखनाथजी से प्रार्थना है कि वे आचार्य भगवानदेव को चिरजीव बनावें, ताकि वे लम्बे समय तक पत्रिका के माध्यम से जिज्ञासुओं का पथ-प्रदर्शन करते रहें। शुभ कामना के साथ—

शुभेच्छु:—
(महन्त अवेद्यनाथ)

राजकोट (गुजरात) में खोजा परिवारों को वैदिक धर्म की दीक्षा देते हुए आचार्य भगवानदेव

MSR/156-B/85

Madhavrao Scindia

रेल राज्य मंत्री, भारत
Minister Of State For Railways
India
New Delhi

January 21, 1985

I send you my best wishes for the success of the Abhinandan Granth Prakashan Samiti. Unfortunately, I will be away in Madhya Pradesh on that day.

With best wishes,

Yours sincerely,

Madhavrao Scindia

मोरिशस के गवर्नर तथा उपप्रधान मंत्री के साथ आचार्य भगवानदेव आर्य महासम्मेलन के अवसर पर

स्वामी गणेशदास

साधुबेला-महन्त
18-A भुलाभाई देसाई रोड, बम्बई-४०००२६

पत्रांक: सा० बम्बई १७७-८३-१०७१४
दिनांक २२ अगस्त, १९८३

सादर नमस्कारम् ।

नव वर्ष के शुभ अवसर पर आपकी मंगलकामनायें मिलीं। स्मरण के लिये अनेकशः धन्यवाद ।

भगवान श्री वनखण्डीजी महाराज की कृपा एवं आशीर्वाद से आपके अन्दर असीम साहस, आत्मिक बल एवं मार्ग-दर्शन की गरिमा प्राप्त हो ताकि आप सिन्धी समाज के साथ-साथ राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में अपना अमूल्य योगदान कर सकें। सिन्धी समाज के कर्मठ नेता बनकर उन्हें सही राह एवं सिन्धु सभ्यता तथा उसकी सांस्कृतिक परम्परा से अवगत करायें।

मैं आपके सत्प्रयास की सफलता की सततकामना करता हूं, करता रहूंगा।

जयसाधुबेला ।

बुबई में आचार्य भगवानदेव का स्वागत करते हुए श्री मलानी श्री सोम बक्षाणी आदि नेता

महामहोपाध्याय
आचार्य विश्वश्रवा: व्यास
वेदाचार्य एम० ए०

विद्यावारिधि
सुश्री श्रीमती देवी शास्त्री
वेदाचार्य एम० ए०

वेद मन्दिर १०३, बाजार मोतीलाल बरेली (उ०प्र०) पिन : २४३००१

दिनांक ६-२-८?

आचार्य भगवानदेव का व्यक्तित्व

(यत्राकृतिस्तत्र गुणा वसन्ति)

आचार्य भगवानदेव जी आकृति से राजकुमार से प्रतीत होते हैं। वे संस्कृत भाषा के विद्वान् और शास्त्रों के भी पण्डित हैं। कार्य प्रणाली में दक्ष तथा सुदृढ़ व्यक्ति हैं। हमने देखा कि जब वे सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग में बैठते थे तब सम्पूर्ण एजेन्डा को अत्यन्त अध्ययन करके बैठते थे और प्रत्येक विषय पर पूर्ण विचार करके बैठते थे कि किस विषय में क्या निर्णय करना है। ऐसा प्रतीत होता था जैसे प्रधानमन्त्री यह ही हैं।

वे अपने जीवन में किसी से दबकर नहीं रहे। हमने उनके जीवन के दोनों युग देखे। जो उनके घोर विरोधी थे वे दूसरे दिन उनके आगे नतमस्तक दिखाई दिये।

ऐसे अदम्य उत्साही आचार्य भगवानदेव जी की हम राजनीतिक क्षेत्र में और धार्मिक क्षेत्र में पूर्ण सफलता की आशा रखते हैं।

म. म. आचार्य विश्वश्रवा व्यास
वेदाचार्य एम० ए०
प्रो० मीस (यूनीवर्सिटी) स्विटजरलैंड

सन् 1973 में आर्य महा सम्मेलन मोरिशस में 750 भारतीय यात्रियों के साथ वहां पहुंचने पर आर्य सभा के प्रधान श्री मोहनलाल जी मोहित आर्य, आर्य जनों द्वारा आचार्य भगवानदेव आदि नेताओं का स्वागत करते हुए

राजस्थान विद्यापीठ

पीठ अधिकरण, उदयपुर ३१३००१

डॉ० कर्ण सिंह
कुलपति

पं० जनार्दनराय नागर
संस्थापक-उपकुलपति
दिनांक ६-१२-८३

माननीय भाई श्री आचार्य भगवानदेव जी,

सादर वन्दे । राजस्थान विद्यापीठ कुल के संस्थापक कुटुम्वी जीवन सदस्य तथा अजयमेरु यूनिट के अधिष्ठाता भाई श्री भंवरलालजी पारीक ने मुझे आपके द्वारा प्रदत प्रोत्साहन और आपके द्वारा की जाती पवित्र सहायता के बारे में बताया । सच तो यह है विद्यापीठ के पीछे न कोई श्रीमन्त है और न ही सत्ताधीश है । आप जैसे जाग्रत तथा संकल्प के धनी हमारे वरेण्य जन-प्रतिनिधि ही हैं ।

और तो क्या लिखूं अजमेर यूनिट को आप अपना ही समझें तथा उचित मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन प्रदान कर अजयमेरू यूनिट के कार्यकर्ता कुटुम्बियों को विश्वास प्रदान करें । हमें आप श्री जैसे तिगमानों का सम्मल तथा विश्वास चाहिये ।

विशेष पारीकजी निवेदन करेंगे ।

आपका विनीत सेवक
जनार्दन राय नागर
संस्थापक उपकुलपति

सन् 1957 में पंजाब में चलाए गए हिन्दी रक्षा सत्याग्रह में आचार्य भगवानदेव जत्थे का नेतृत्व करते हुए

993/MS (FIN) 85

राज्य वित्त मंत्री
भारत
नई दिल्ली
MINISTER OF STATE
FOR FINANCE
INDIA
NEW DELHI
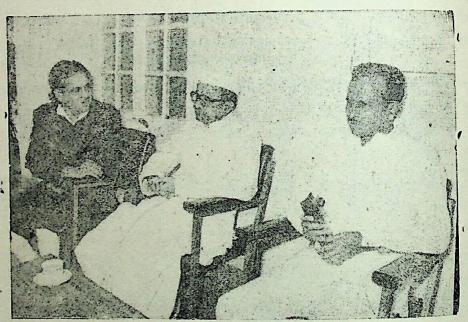
श्री जनार्दन पुजारी, श्री भीष्मनारायण सिंह तथा आचार्य भगवानदेव

January 23, 1985

Dear Shri Navin Suri,

I am happy to know that 'Acharya Bhagwandev Abhinandan Granth Prakashan Samiti' is being formed to celebrate the 50th year of Acharya Bhagwandev on 23rd February 1985. However, I convey my good wishes on the occasion of 50th year celebrations.

Yours sincerely,
(Janardhana Poojary)

ज्ञान मिला तो सब मिला, सकल शास्त्र का भेद।
ज्ञान बिना सब नरक है, पढ़ा न जिसने वेद ।।

Mahavir International

2, Mahavir Colony Pushkar road,
AJMER-305001

परम आदरणीया श्रीमती इन्दिराजी गाँधी,

सादर प्रणाम ।

अजमेर—हिन्दू, मुसिलम, जैन, सिक्ख, ईसाई, बौद्ध संस्कृति का संगम है । यहां प्रतिवर्ष भारतीय एवं विदेशी प्रतिभाओं का आगमन होता रहता है । अजमेर राज्य में राजधानी का गौरव तो था, किन्तु राजस्थान में मिल जाने पर भी राज्य के केन्द्र में स्थिति होने के नाते नगर एवं क्षेत्र का महत्त्व बना हुआ है । पश्चिम रेलवे एवं शिक्षा जगत् का भी यह केन्द्र है ।

वर्तमान में राजस्थान के प्रत्येक नगर—जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, उदयपुर, कोटा, भीलवाड़ा की तुलना में इसका विकास तुलनात्मक दृष्टि से कम ही हो पाया है । औद्योगिक यातायात, शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यटन, व्यापार ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें विकास की गति बहुत ही धीमी है ।

भारत की लोकसभा के गठन से लेकर आज तक इस क्षेत्र के किसी भी संसद् सदस्य को केन्द्रीय मन्त्री का अवसर नहीं मिला है । यहां का संसद् सदस्य अन्य क्षेत्र के संसद् सस्दयों के बनिस्पत क्षेत्रीय दृष्टि से अधिक महत्त्व रखता है । उसे भारतीय एवं विदेशी प्रतिभाओं से सम्पर्क रखकर स्वागत का अवसर लेना पड़ता है तो अपने क्षेत्र के धार्मिक महत्त्व को अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में विकसित करने का कार्य भी करना पड़ता है । क्षेत्र के सामाजिक, राजनैतिक, औद्योगिक, व्यापारिक, शिक्षा एवं स्वास्थ्य जैसी महत्त्वपूर्ण सेवाओं की विकास गति में भी योगदान करना होता है ।

ऐसी स्थिति में मेरा अनेक संस्थाओं के सचिव/अध्यक्ष होने के नाते आपसे विनम्र निवेदन है कि इस क्षेत्र के संसद सदस्य को इस बार अपने मन्त्री मण्डल में उचित स्थान दिलाकर यहां की धार्मिक एवं सामाजिक भावनाओं को प्रोत्साहन दिलाने की कृपा करें ।

अजमेर क्षेत्र के संसद् सदस्य आचार्य श्री भगवानदेव अपने क्षेत्र के हर क्षेत्र में पूर्ण निष्ठा एवं लगन से कार्य कर रहे हैं । विशेष बात यह रही कि समय-समय पर क्षेत्र के ग्रामीण क्षेत्रों में पहुंच कर गरीब एवं पिछड़े लोगों के दुःख-दर्द को दूर करने में भी अपना समय दिया है ।

श्री भगवानदेव अल्पभाषी भी हैं तथा युवकों के अग्रणी एवं कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं । आशा है इन्हें आप अवश्य ही मन्त्री मण्डल में यथास्थान देकर हमें अनुग्रहीत करेंगी ।

आदर पूर्वक

आपका
मांगीलाल जैन

जाति न पूछ्यो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान ।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान ॥

परमादरणीय श्री आचार्य भगवानदेव, सांसद (लोक सभा दिल्ली) निर्वाचित होने पर सादर समर्पित

★ अभिनन्दन-पत्र ★

जन्म एवं बचपन :—आपका जन्म सन १९३५ में सिंध के नवाब शाह जिले के बैरानी नगर में हुआ था। बचपन से ही कट्टर राष्ट्रवादीत था महात्मा गांधी के अनुयायी है। अगस्त १९४७ को पाक झण्डे को सलामी नहीं देने के अपराध में पाकिस्तान में आपको कोड़े मारे। आप भारत आए और वासी बने।

शिक्षा :—धुन के धुनी होने के कारण आपने ब्यावर की मोहम्मद अली मेमोरियर हायर सैकेण्डरी स्कूल में मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त कर उच्च शिक्षा हेतु १६ वर्ष की आयु में ही ब्यावर छोड़कर वृन्दावन, बनारस, बडौदा, पूना, कलकत्ता, हरिद्वार आदि स्थानों पर रहे।

लोकप्रिय निर्भीक नेता :—एक आदर्श समाज सेवी के गुणों से सम्पन्न रहकर आपको कल्याण के लिए अनेकों सामाजिक संस्थाओं से एक लम्बे समय से सम्बन्धित रहे हैं। आप आर्य समाज की अन्तर्राष्ट्रीय संस्था के मन्त्री स्वामी दयानन्द की जन्म भूमि आश्रम के बारह वर्ष तक अध्यक्ष, भारत गौ सेवक समिति के चार वर्ष से मंत्री, अखिल भारतीय योग संस्था विज्ञान के महा मंत्री तथा पिछड़ी वर्ग सेवा संघ के कार्य वाहक अध्यक्ष आदि अनेकों राष्ट्रीय स्तर की संस्थाओ के पदों पर रह कर राष्ट्रीय जीवन की धारा से निरन्तर डुबे हुए हैं।

कल्याणकारी भावना के मुर्ति रूप :—लोक कल्याण की भावना तो आपके रग-रग में प्रवाहित हो रही हैं। राष्ट्रीय विपत्तियों में चाहे वह चीन, पाक या बंगला युद्ध हो अथवा उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, दिल्ली और सन् १९७९ की मौरवी में आई विनाशकारी बाढ़ हो, आप इन कामों में जुट गये।

सुविख्यात लेखक: :—आपने पत्रकाविता व लेखक को अपना कर देश सेवा व्रत लिया। आपने राष्ट्रवादी व कांग्रेस की नीतियों, महात्मा गांधी व नेहरु के विचारों व नीतियों के प्रसार व प्रचार हेतु पत्र कारिता को माध्यम बनाकर दिल्ली से योग मन्दिर का प्रकाशन शुरु किया।

राजनैतिक जीदन :—राष्ट्रीय विचारों में परिपक्वता व देश भक्ति की प्रबल भावना होने के कारण आप गोवा मुक्ति आन्दोलन व राष्ट्रीय समस्याओं को लेकर ग्यारह बार जेल गये।

विदेश यात्रा :—आपने सन १९७३ में मोरीशिस व सन १९७७ में नैरोवी में हुए दो "विश्व सम्मेलनों" में विशेष आमन्त्रण पर भारत का प्रतिनिधित्व कर देश का सम्मान बढ़ाया।

इस अवसर पर हम सभी आपके सुखद एवं मंगलमय भविष्य की कामना करते हुए श्रद्धा वतन हैं।

दिनांक :—
१७-१-१९८०

श्री क्षत्रिय फूल मालियान पंजायत
शाहदरा मोहल्ला
ब्यावर (राज)

त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी
भारत के नियन्त्रक-महालेखापरीक्षक

ए०बी०-९४ शाहजहां रोड,
नई दिल्ली-११

जनवरी ३१, १९८५

प्रिय श्री सूरी,

आपका पत्र प्राप्त हुआ। धन्यवाद।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि आचार्य भगवानदेव, भूतपूर्व संसद् सदस्य के मित्रों, सहयोगियों और प्रशंसकों ने उनके पचासवें जन्मोत्सव के शुभ अवसर पर उनको एक अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट करने का निश्चय किया है। आचार्य भगवानदेव अच्छे वक्ता तथा आर्य समाज के उत्साही कार्यकर्त्ता हैं। उन्होंने योग विद्या के विशेष पक्षों पर कई पुस्तकें जन-साधारण के लाभार्थ लिखी हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने कई छोटी पुस्तकें स्वतन्त्रता संग्राम तथा उसके विशेष नायकों के सम्बन्ध में भी लिखी हैं। समाज सेवा तथा जन-रुचि को ऊपर उठाने वाले साहित्य में उनकी विशेष रुचि मालूम होती है। कुछ समय पहले उन्होंने सिन्धी समाज के विभिन्न भागों को एक मंच पर लाने का विशाल प्रयत्न किया था। यद्यपि वे अपने जीवन के पचास साल पूरे कर रहे हैं, उनमें हर प्रकार से युवकों जैसी स्फूर्ति और उत्साह है। ईश्वर से प्रार्थना है कि वे दीर्घ-जीवी हों ताकि अच्छे आदर्शों पर चलकर निरन्तर समाज की सेवा करते रहें।

कुछ प्रशासनिक पदों पर कार्य करने के समय उनसे कई विषयों के संबंध में बातचीत करने का मौका भी मुझे मिला। उनमें अपनी जानबूझ है और अपना दृष्टिकोण है, जो अनुभव तथा मानव जीवन एवं इतिहास की घटनाओं के विवेचन पर आधारित है। जिस जिले के प्रतिनिधि के रूप में वे संसद् सदस्य रहे हैं उनमें २२-२३ साल पहले मुझे भी कलक्टर एवं न्यायाधीश होने का अवसर मिला था। इस जिले की समस्याओं पर भी उनसे बातचीत हुई। यद्यपि मेरा सम्बन्ध तो इस जिले से दूर का ही रह गया, फिर भी यह देखकर प्रसन्नता हुई कि वे जन-प्रतिनिधि के रूप में समस्याओं के प्रति पूरी तरह से जानकार एवं सतर्क थे।

मैं आयोजकों के प्रयास की प्रशंसा करता हूं और आचार्य भगवान देव को लम्बे, सुखी एवम् स्वस्थ जनोपयोगी एवम् जन-सेवी जीवन के लिये शुभ कामनायें प्रेषित करता हूं।

भवदीय

त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी

अंग अंग सब जल रहे, हर्ष करें या शोक।
राग द्वेष की आग में, धधक रहे सब लोक ॥

ओ३म्

ओ३म् विश्वानी देव सवित दुरंतानी परासुव, यद्भद्रं तन्न आसुव ।

आर्य कुल भूषण, वीतराग, कर्मवीर, स्वातन्त्र्यवीर तपोमूर्ति

राजस्थान केसरी महामान्य श्री आचार्य भगवानदेव

विश्व सिन्धी समाज अध्यक्ष एवं संसद सदस्य की सेव में

❋ अभिनन्दन-पत्र ❋

वीर शिरोमणि !

आज प्रान्त के सर्वोच्च तुंग शिखर वाली भूमि पर आपका स्वागत एवं सम्मान करते, हम आर्यजनों को अपार हर्ष हो रहा है ।

कीर्ति केतुधारी कर्मठ कार्य अधिकारी !

देश की स्वतन्त्रता के लिए आप कई बार जेल गये और यातनाएं पाई । देश भक्ति की भावनाओं को जगाने में जो कार्य किया वह स्वयं ही एक इतिहास बन गया । आपकी कथनी और करनी में अन्तर नहीं, यही आपका सर्वोपरि सद्‌गुण, सभी के हेतु अनुकरणीय एवं वन्दनीय है ।

जनता जनार्दन के जागरूक प्रहरी !

आपकी धधकती हुई आग बरसाती हुई लेखनी ने भूचाल में भूकम्प ला दिया है। आपने जन जागृति का बिगुल बजा कर जनता जनार्दन की सेवा में बीर रस से भरी हुई एवं योम स्वस्थ्य, रोग मुक्ति, संसकार और भक्ति पर लिख कर समाज को कई पुस्तकें अर्पित की, आप सदैव जनता के जागरुक प्रहरी रहे । ये सेवाएं इतिहास में अंकित रहेंगी ।

धनु के धनी, विश्व बन्धु !

आप अपनी निष्ठा एवं संकल्प को सिद्ध करने में सफल रहे हैं । आपने समस्त भारत एवं विश्व का कई बार भ्रमण करते हुए विश्व कल्याण की मंगल कामना की है और आज आप स्वयं हमारे बीच हैं यह योगदान आप को विश्व बन्धु के रूप में प्रकट कर रहा है । आर्य सिद्धांतों की उदारता, विभिक्ता, सेवा भाव के प्रचार एवं राष्ट्रीय विकास में योग देने हेतु आप चिरायु हो, यही मंगल कामना करते हैं ।

हम हैं आपके ही

सदस्य गण

आर्य समाज, आबू

२३ सितम्बर, १९८१ बुधवार

आबू पर्वत

आचार्य श्री भगवानदेव
संसद सदस्य

★ अभिनन्दन-पत्र ★

मान्यवर,

अत्यंत हर्ष के साथ आपका अभिनन्दन करते हैं कि सातवीं लोकसभा में आपका अजमेर लोक सभा निर्वाचन क्षेत्र से ऐसे कठोर संघर्ष के समय इन्दिरा कांग्रेस के प्रत्याशी के रूप में निर्वाचित होना पार्टी की अध्यक्षा तथा भारत की एक दृढ़ निश्चय प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी के लिए गौरव, सम्मान एवं महान् हर्ष की बात है, किन्तु हम लोगों को भी इससे कितनी प्रसन्नता और मानसिक शान्ति प्राप्त हुई। इसका वर्णन करने के लिए हमारे पास कोई शब्द नहीं है।

भगवान प्रदत्त देव

अतः हमारी हार्दिक अभिलाषा है कि आप हमारे बीच अपने जीवन में उन्नति की ओर अग्रसर होने की अविजित प्रवृत्ति रखते हुए अपने इस क्षेत्र की आवश्यक तथा सार्वजनिक समस्याओं के निराकरण के लिए सभी सम्भव प्रयत्न करना जन-साधारण की सहानुभूति प्राप्त करते रहकर इन्दिरा कांग्रेस की विजय के इस प्रकाशमान दीपक को और भी दीप्तिमय करने के लिए अपनासर्वस्व न्यौछावर करने को तैयार रहेंगे जिसके परिणामस्वरूप हमें आशा है कि :—

[१] कोटा अजमेर बड़ी रेल लाइन का कार्य शीघ्र चालू हो सकेगा।

[२] अजमेर नगर में भारी वाहनों से होने वाली दुर्घटनाओं को रोकने तथा यातायात में गति लाने के लिए 'बाई-पास' की शीघ्र व्यवस्था हो सकेगी।

[३] अजमेर नगर का पूर्वी क्षेत्र जो १८ जुलाई १९७५ तथा १५/१६ जुलाई, १९७९ की विनाशकारी बाढ़ लीला प्रलयकारी दृश्य को देख चुका है उससे अतिशीघ्र मुक्त हो सकेगा।

[४] अजमेर नगर निवासी पेयजल तथा अकाल जैसी सामयिक दैवी विपत्तियों से अब सम्भवतः अधिक समय तक पीड़ित न रहेंगे।

[५] इस क्षेत्र के छात्र व छात्राओं के अच्छे सस्ते शिक्षण लाभ हेतु अजमेर में विश्वविद्यालय स्थापित किया जावेगा।

इस प्रकार आशाओं तथा शुभकामनाओं से प्रेरित होकर आपके नाम का वास्तविक विश्लेषण करते हुए हम चहुंमुखी सफलता की कामना करते हैं और आपको पूर्ण सहयोग का विश्वास दिलाते हुए आपका हार्दिक स्वागत करते हैं।

अजमेर
दिनांक: ६ फरवरी, १९८०

हम हैं आपके साथी नागरिक
श्री नगर रोड, अजमेर (राज०)

दिल्ली प्रदेश सिन्धी समाजों द्वारा

आचार्य भगवान देव

लोक सभा सदस्य की सेवा में

★ सम्मान-पत्र ★

आदरणीय आचार्य जी,

आज आपका स्वागत करते हुए खुशी व नाज का अहसास हो रहा है। सिंधी भी दूसरे भारतीयों की तरह प्रिय साथी हर क्षेत्र की सेवा कर सकते हैं, आपने इसका सबूत पेश करके सिंधियों की शान बढ़ायी है।

आपका जन्म नवावशाह सिंध में हुआ। आपका परिवार देश के बटवारे में ब्यावर-अजमेर आया।आपकी शिक्षा सिन्धी व हिन्दी में मिली आपने आर्य शिक्षा, वेद शास्त्र का तो बहुत अच्छाज्ञान प्राप्त किया है। योगासन योग के आप अच्छे ज्ञाता हैं। आपने आर्य समाज को अपनी बहतर सेवाऐं ही हैं इस संस्था में आप बहुत ही मुख्यपदों पर रहते आए हैं। आपने अपने कार्य का प्रचार व प्रसार भारत केसाथ-साथ मारिशस व अन्य विदेशी देशों में भी किया है। सिंधी समाज दिल्ली, संस्था में भी आपने सराहनीय कार्य किया है। आपके भाषण प्रभावशाली है और आपका लेखनकार्य भी अति सुन्दर है। आपने कई समस्याओं पर बड़ी ही सुन्दर व सरल भाषा में कई किताब लिखी हैं। आपके द्वारा लिखी किताबें 'पाकेट बुक' की तरह बड़ी लगन से पढ़ी जाती हैं।

आप खुद को सिंधी कहलवाने में शान महसूस करते हैं और सिन्धियों की शान बढ़ाते हैं। हम आशा करते हैं कि आप सिन्धी संस्कृति शिक्षा के विकास के लिए, सिन्धियों कें बुजुर्ग नेता, दादा जयरामदास दौलतराम की याद में आकाशवाणी व दूरदर्शन रे कार्यक्रम शुरू करवाने व पोस्ट स्टेम्प जारी करवाने में सहयोग देंगे।

अन्त में हम हम सच्चे हृदय से आपका सम्मान करते हैं।

आपके शुभचिन्तक

आसूदोमल, बूलचन्द, डा० मोहनलाल शर्मा,
जी० सी० लालवाणी, डा० मुरलीधर जेटले, हीरा
ठाकुर, रतन डेवाणी व सिन्धी पंचायतों के प्रतिनिधि।

दिल्ली ८ मार्च १९८०

सिन्धी एकका जिन्दाबाद ! देश की एकता जिन्दाबाद !

★ सम्मान पत्र ★

आदरणीय आचार्य भगवानदेव लोक सभा सदस्य अजमेर क्षेत्र

१. श्रीमान आचार्य जी आपका सिन्धी पचायती आनन्दसागर, खैरथल और इस क्षेत्र के बीस गांवों की तरफ से पूज्य लाल साहब के मन्दिर में भावभीना स्वागत कर रहे हैं। यहां आकर हम सिन्धी भाइयों को मान देने पर डम २० हजार सिन्धी आपका तहेदिल से आभार प्रकट करते हैं। हम आपके धर्म-निरपेक्ष धिचारों से सहमत हैं। देश का हित हमारे सामने दूसरी बातों के मुकाबले ज्याद महत्व रखता है। पूज्य सिन्धी पंचायत खैरथल १९८४ से समाज के विकास के लिए कार्य करती आ रही है। आप साहब समाज के विकास का सन्देश लेकर आए हैं इसीलिए भी हमें बड़ी खुशी हुई हैं।

२. आचार्य जी—आप साहब सिन्धी समाज के बिकास के लिए पक्का निश्चय करके कार्य क्षेत्र में कूद पड़े हैं। विश्व सिन्धी सम्मेलन बुलाना, दिल्ली में सिन्धु भवन का निर्माण, बिधवाओं व अपाहिजों के मंस्थान, कालेज व विद्वानों के लिए यादगार गैलरी बनवाना ये सभी मसान कार्य है। इन कार्यों के सम्पन्न कराने से आप भी एक महान् पुरुष हैं। इस सदी की यही तुकार है कि ऐसे अच्छे कार्य होने चाहिए। आप महाशय को इस अलबर जिले में हम सिन्धी विश्वास दिलाते हैं कि इस महान् व्यक्ति में तन, मन, धन से आपके साज हैं।

३. श्रीमान्—पूज्य सिन्धी पंचायत को आप पर पूर्ण विश्वान है कि आप सिन्धी संस्कृति के विकास के कार्यों की कोशिशों से पीछे नहीं हटेंगे।

सिन्धी पूर्ण देश-भक्त हैं परन्तु परन्तु समस्त भारत में बिखरे हुए समस्त सिन्धियों के भविष्य की पूरी चिन्ता आपको है। इसके सिवाय सिन्धी शिक्षा व भाषा में विकास न होगा सिन्धु संस्कृति के नष्ट होने की सम्भावना भी है।

४. यह आनन्द नगर लालोनी जिसमें हम इस समय बैंटे हुए हैं, यही १९४८ में हम लोग तम्बू व झोपड़ियों में रहते थे। हमने यहां भी आनन्द नगर गृह निर्माण सहकारी समिति गठित कर ईसका पंजीयन कराया। गृह निर्माण के लिए पंचायत समिति ने ऋण दिया। अफसोस है कि अभी तक राजस्थान सरकार ने इस कालोनी को नियनित नहीं किया है। हमने कनवरसेशन राशि की मांग की गई है जो हमारे साथ बड़ा अन्याय धर्ण व्यवहार है। हमें विश्वास है कि आप इस सम्बन्ध में आदरणीय प्रधान मन्त्री श्रीमती इंदिरा गांधी तक अपते प्रभाव से हमें इस अन्याय से मुक्त कराएंगे। आपकी शान व सम्मान बढ़ यही हमारी ईश्वर से प्रार्थना है।

—शामनवाख खिखूमल
अध्यक्ष पूज्न सिन्धी पंचायत
खैरथाल (अलबर) राजस्थान

सरदारीलाल वर्मा

१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली ११०००१
दिनांक १५-१-८५

माननीय सूरी जी

सादर नमस्ते।

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई है कि आचार्य भगवानदेव जी संसद सदस्य के जन्म दिवस के अवसर पर उनका अभिनन्दन किया जा रहा है और इस अवसर पर एक सुन्दर अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित किया जा रहा है।

आचार्य भगवानदेव जी को मैं लगभग २५ वर्षों से जानता हूं। आप एक कर्मनिष्ठ कार्यकर्त्ता महर्षि दयानन्द के अनन्य भगत आर्य समाज के मतवाले निर्भीक वक्ता और लेखक एवं अनर्थक राष्ट्रीय नेता हैं। सारा जीवन ही आप ने आर्य समाज की विभिन्न संस्थाओं में उत्तरदायित्व पूर्ण पदों पर काम किया है। आपको योगिक क्रियाओं पर पूर्ण अधिकार प्राप्त है और योग पर कई पुस्तकें भी लिख चुके हैं। और पत्र भी निकाल रहे हैं।

गतपांच वर्ष आप कांग्रेस (ई) के प्रतिनिधि के रूप में अजमेर में संसव में निर्वाचित संसद सदस्य रहे हैं। इन वर्षों में आपने जितना व्यस्त जीवन का परिचय निया है उसका उल्लेख करना कठिन है। इतने व्यस्त होने पर भी आपने इन वर्षों में भी अनेक पुस्तकें लिखी हैं। संसद में भी आप जब बोले आपके वक्तव्य निर्भीक एवं ओजस्वी होते थे। संसद कार्यों के साथ ही आपने सिंधी समाज को भी गठित किया और विश्व सिन्धी समाज की स्थापना की। विश्व सिन्धी सम्मेलन कामी आपने १९८३ के अक्टूबर मास में इन्द्रप्रस्थ स्टेडियम में शानदार आयोजन किया जिसका उद्घाटन भारत की यशस्वी प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा किया गया था। आप विश्व सिन्धी समाज के अध्यक्ष हैं और सिंधी समाज में आपका बड़ा मान एवं आदर है।

आजकल आप महर्षि दयानन्द की फिलम बनाने में लगे हैं। और महर्षि का अभिनय भी स्वयं ही कर रहे हैं। सबसे बड़ा गुण जिसे मैंने आपके जीवन में पाया वह यह है कि आप बड़े कार्य तो करते ही हैं परन्तु छोटे-से-छोटे सेवा कार्य करने को उद्यत रहते हैं।

प्रभु करे आप अपने जीवन में अधिक-से-अधिक सफलता प्राप्त करें। हमें ऐसे सर्व गुण सम्पन्न अपने साथी का अभिनन्दन करते हर्ष अनुभव हो रहा है।

भवदीय
सरदारी लाल वर्मा
भूतपूर्व प्रधान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

गल-अलि-मीन-पतंग-मृग इक इक दोष विनाश।
जाके तन पांचों बसें, ता की कैसी आश॥

प्रथम विश्व सिन्धी सम्मेलन
में
प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी
का
ऐतिहासिक भाषण

पूज्य श्रीमती जेठी बाई जी भाइयो और बहनो।

मुझे बेहद खुशी है कि इस प्रथम "विश्व सिंधी सम्मेलन" का उदघाटन करने के लिए यहाँ आपने मुझे बुलाया है। आज हम सब संग हैं इसीलिए और प्रसन्नता होती है। (तालियां...) भगवानदेव जी ने काफी अरसे से इस सम्मेलन के बारे में बात की थी, परन्तु समय नहीं मिलता था —"मैं सिंधी समाज का आदर करती हूं क्योंकि सिंधी लोग एक महान सभ्यता की याद दिलाते हैं।। शुरू से सिंधी अपनी कार्यकुशलता के लिए प्रसिद्ध हैं। दुनिया के सभी हिस्सों में सिंधी है जिनके प्रतिनिधि इस सम्मेलन में आए हैं। भारत के लोगों की ओर से मैं आप सब का हार्दिक स्वागत करती हूं'। (तालियाँ...)

मुझे याद आता है जब मैं विलायत में स्कूल में थी तो अपने स्कूल के संग एक दिन घूमने यात्रा पर गये थे कई मुल्क और वहां "सिसीली" जो एक छोटा-सा टापू है इटली के नीचे वहां के एक छोटे से गांव में भी देखा कि एक सिंधी की दुकान है।" बहुत दिन इसको हो गये और उस जमाने में "हिन्दुस्तानी" बहुत कम बाहर दिखलाई पड़ते थे। तो तब से आपकी ये एक साहस और-एक (spirit of) एडवेन्चर (Adventuer) के बारे में मुझे जानकारी मिली।

सिंधी वे लोग हैं जो सिंधु के तीर पर-सिंध में रहते थे। फारसी में "हिन्द" और यूनानी में "इंडिया" शब्द "सिंध" से आये। इसीलिए एक माने में हम कह सकते हैं कि प्रत्येक भारतीय सिंधी है।" (तालियां...)

आज सिंधू को भारत के एक छोटे भाग के रूप में दिखलाया जाता है। लेकिन हमारी प्राचीन सभ्यता के साथ उसका घनिष्ठ सम्बन्ध भुलाया नहीं जा सकता। सिंधु नदी भारत की अन्य महान नदियों की तरह ही महान है। अभी मैंने एक पुरानी बात याद दिलाई। लेकिन एक दूसरी बात भी याद आती है—

जब मैं अपने परिवार के साथ सिंध पहले दफा गई थी और वो वाकया था कराची में जब कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। उन दिनों का जोश और प्यार आज मेरी आंखों के सामने है (तालियां)

बहुत से सिंधीयों ने हमारी आजादी की लड़ाई में हिस्सा लिया। इनमें जैरामदास जी दौलतराम चौथाराम गिडवानी आचार्य कृपलानी के नाम उल्लेखनीय हैं और भी बहुत से हैं लेकिन अब यहां सब को तो कह नहीं सकते हैं। इस समय "शहीद हेमू कालीन" का नाम भी याद आता है (तालियां) आप सब को मालूम ही है कि इस बहादुर लड़के ने 1942 में अपनी इतनी कम उम्र में आजादी की लड़ाई में अपनी मातृभूमि के लिए अपने जीवन का बलिदान दिया। मुझे यह भी याद है जब एक महान संत और गायक साधू वासवाणी जी से मैं मिली थी

जाना है तूने इक दिन, जाने से पहले लेकिन,
सबके दिल में बन्दे, अपना मुकाम कर जा।

(तालियां) और अभी यहां बोलने के पहले उनके लिखने की और कविता की मुझे दी गई, जिसमें जल्दी से मैंने उसमें से थोड़ा सा जो पढ़ा तो आप सब के बारे में और आपकी सभ्यता के बारे में नई जानकारी प्राप्त हुई। आप लोग भले ही अपने पैतृक घर खो बैठे हैं लेकिन सारा भारत आपका घर है। (तालियां...) और आपकी भाषा भारतीय भाषा के रूप में स्वीकार कर ली गई है। विभाजन के समय भारी संख्या में सिंधी लोग सिंध से भारत आये जो इस समय पाकिस्तान में हैं। उनकी जड़ें आजाद भारत में मजबूत हुई, वो इस देश में फले और फूले जैसा कि आपके सामने कहा गया है—सिंधी ने किसी से मांग के नहीं अपनी हिम्मत, अपनी ताकत, योग्यता और कुशलता से (तालियां...) उन्होंने देश के विभिन्न हिस्सों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिए।

हमारी रक्षा सेनाओं में सिंधी समाज के बहुत से जवान और अफसरान ने देश की रक्षा के लिए अपनी कुर्बानी दी। सिन्धियों ने दूसरों के साथ हिलमिल कर रहने की अपार क्षमता है शायद इसी लिए इसी में उनकी सफलता भी है।

जैसे कि आपको मालूम है हमारे संविधान की 8 वीं अनुसूची की 15 भाषाओं में सिन्धी भी एक भाषा कुछ वर्षों से है। जब मैं पहली बार प्रधानमंत्री बनी तो यह प्रश्न मेरे सामने रखा गया और इसके बाद 1967 में हमने संविधान में संशोधन किया और इस निर्णय का जोर-दार स्वागत सारे भारत में (तालियां...) और खास तौर से सिंधी लोगों में हुआ। (तालियाँ...)

सिंधी भाषा को सरकार की ओर से वो सारे प्रोत्साहन दिये जाते हैं जो अन्य भारतीय भाषाओं को मिलते हैं जैसे कि शिक्षा मंत्रालय, साहित्य एकेडमी, नेशनल बुक ट्रस्ट इस भाषा के विकास के लिये अनुदान दे रहे हैं। यह सच है कि क्योंकि भारत सरकार के पास रुपये की कमी है तो कितना भी अच्छा कार्यक्रम हो हम उसकी उतनी पूरी मदद हमेशा नहीं कर सकते हैं जितना हम करना चाहते हैं और जितना होना चाहिये। मुझे यह जान-कारी दी गई है कि सिंधी भाषा में उत्कृष्ट कोटि के साहित्य का सृजन किया जा रहा है। अपनी मातृभाषा से प्यार होना स्वाभाविक है और अच्छी बात भी। आपको तो मालूम है कि मेरा कितना गहरा विश्वास है कि किसी को भी अपनी जड़ों से नहीं कटना चाहिए और अक्सर जब मैं देहात में गाँव में बोलती हूं तो लोगों से कहती हूं कि मनुष्य भी एक पेड़ की तरह है। वह अपनी ताकत धरती से, अपनी जड़ों से लेता है। लेकिन वो नीचे झुककर देखता नहीं है। वो ऊपर सूर्य और आकाश की तरफ देखकर ऊपर बढ़ता जाता है तो इस प्रकार हमको देखना है कि हम भी अपनी भाषा का प्रयोग ... अपने व्यक्तित्व के विकास में न करे इसमें किसी तरह की संकीर्णता नहीं होनी चाहिये इसे अन्य भाषाओं ... संस्कृतियों के ज्ञान का माध्यम बनना चाहिये। ... राष्ट्रीय एकीकरण का आधार है। इसके नाम पर ... फसाद न कर इस को दोस्ती का हाथ बढ़ाना चाहिए ... आज एकता की बहुत जरूरत है। अगर हम एक नहीं ... तो हमारा देश मजबूत नहीं रहेगा। आज हमारे देश ... चारों तरफ खतरों के बादल मंडरा रहे हैं इनका ... हमारे ऊपर अप्रत्यक्ष रूप से पड़ भी रहा है। कुछ ... ताकतें देश को तोड़ना चाहती हैं या चाहती हैं कि ... रास्ते पर देश चले। हमें तो अपने देश को टूटने से बचाना ... है और उसका व्यक्तित्व, उसकी सभ्यता, उसकी ... रखनी है। देश को मजबूत करना है और प्रगति की ... उसे हम सब को मिल के ले जाना है···मैंने आपसे ... ही कहा कि सिंधी लोग बड़े साहसी होते हैं लेकिन ... को अधिक ताकत और साहस की जरूरत है। ... माने यह नहीं कि निजी साहस सार्वजनिक ... से ऊपर है इन दोनों में कोई मतभेद नहीं है। सारे ... को पहल करनी है, एक दिशा देनी है जिससे कि ... राष्ट्र सम्पत्ति में वृद्धि हो मुझे आशा है कि सिंधियों ... साहस और स्वाबलम्ब की भावना है वह दूसरे समुदायों ... में भी फैलेगी। आप लोग दूर-दूर से आये हैं आप ... धन्यवाद करती हूं। आप सब को शुभकामनाएं ... और जिन्होंने यह सम्मेलन बुलाया और इसका ... किया उनको मैं बधाई भी दूंगी कि आप सब को ... में मिलने का मौका मिला मुझे आपसे मिलने का ... मिला। मुझे आपने यहां बुलाया इसके लिए ... आभारी हूं···धन्यवाद···शुभकामनाएं···

असली है यह कमाई, सबसे कर तू भलाई।
दुःखियों की करके सेवा, कुछ नेक काम कर जा॥

प्रथम विश्व सिन्धी सम्मेलन में

राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह

विश्व सिन्धी सम्मेलन के लिए प्रधान साहिब आचार्य भगवानदेव जी और इनके साथी पदाधिकारी, इस सभा में विराजमान सत्कार योग्य प्यारी बहिनों और प्यारे भाइयो ! मुझे संसार भर में रहने वाले सिन्धियों के इस सम्मेलन में शामिल होकर बहुत प्रसन्नता हुई—मैं बहुत मुद्दत से जब सिन्ध प्रान्त था। तब से मुझे मालूम है और मेरे पिताजी कहा करते थे—"जो सिन्धी हैं ये तो केवल गुरुनानक की श्रद्धा रखते हैं - लेकिन दूसरे प्रांतों के लोग गुरुनानक का नाम भी लेते हैं और उसकी कमाई खाते हैं और सिन्धियों के प्रेम की जो रस्सा है वो तब से मेरे मन में रही।

एक वक्त आया बदकिस्मती का, साम्प्रदायिकता के नाम पर भारत का बंटवारा हुआ। भारत का कत्लेआम नहीं, भारत की धरती का कत्लेआम नहीं—मैं इसको पंजाबियों, सिन्धियों, बुलाचिस्तानियों और नार्थ वैस्टर्न Province और बंगाल के लोगों का कत्लेआम समझता हूं...।

जब मैं सिन्धियों भाइयों को देखता हूं तब मैं समझता हूं कि हमारी देशभक्ति इनके सामने कोई हैसियत नहीं रखती—वतन का प्यार, धर्म का प्यार और कुर्बानी तन की, मन की, धन की देकर हिन्दुस्तान से मुहब्बत—आज संसार भर में सिंधी भाई हैं। वो पहले भी थे। मैं महसूस करता हूं कि जिस ambassador को मैं दस्तखत करके इख्तियार देता हूं दूसरे मुल्कों के president को, king को, जो हमारा ambassador होता है लेकिन असल बात जानिए तो मैं समझता हूं कि हमारे देश के असल ambassador तो सिंधी भाई हैं जहां भी बैठे हैं, हमारे देश का सम्मान बढ़ाते हैं।

आज तो जागृत आई है। हिंदुस्तान की आजादी के बाद हमने अपने बहिनों को अधिकार दिए हैं। लेकिन सिन्धी समाज में बहिनों का सत्कार पहले ही था तो आज एक सिंधी नहीं मिलता हम कहते हैं दो सिन्धी मिल गये—क्योंकि हमारी बहनों का कार्यक्रम, हिम्मत और दिलेरी इस बात की निशानी है कि कर्त्तव्य आपकी तस्वीर को देखकर, हमारे कर्त्तव्य को देखकर हमारे सारे भारत में यह असर पड़ा है। कभी-कभी मैं सोचता हूं कितना जुल्म हुआ सिंधियों के साथ, बिलोचिस्तानियों के साथ, नार्थ वेस्टर्न प्रोविंस के लोगों के साथ, जिनका सारा ही प्रांत चला गया। बंगालियों के पास तो आधा रह गया, पंजाबियों के पास १/४ चौथा हिस्सा रह गया—लेकिन इनके पास तो कुछ नहीं रहा—फिर ये हमारे वतन में क्यों आए हैं ? तो मुझे ख्याल हुआ कि मैं जहां जाऊं सिर्फ पंजाबियों को नहीं

मिला जन्म उत्तम मुझे करले कुछ उपकार ।
समय न यह फिर मिल सके, जीता दाव न हार ॥

मिलूंगा। जन्म मेरा जरूर पंजाब में हुआ मैं सिन्धियों को जरूर मिलूंगा। मैंने पंजाबियों को कहा…नारे…तुम्हारे पास पंजाब की तक्सीम के बाद छोटा सा पंजाब रह गया तुम्हारी सभ्यता को कोई खतरा नहीं लेकिन सिंधियों की बहादुरी देखो, जिनका सारा प्रांत चला गया, भाषा नहीं मरी culture नहीं मरी, charactor को नहीं मरने दिया, ये सिन्धियों की बहादुरी है - उनके साथ मुहब्बत करो, प्यार करो।

मुझे, आचार्य भगवानदेव जी, पार्लियामेंट का मेम्बर का, मैं इनको हमारी लोकसभा का शृंगार समझता हूं—आपको मालूम है कि पार्लियामैन्टरी System में सबका निशाना होम मिनिस्टर होता है। मैं होम मिनिस्टिर था प्रधानमन्त्री इन्दिरा गाँधी जी के साथ तो हर पार्लियामैंट के Session में मैं निशाना होता था। उस निशाने के सामने जो ३-४ मेंम्बर आने वाले थे, उनमें से एक ये भी थे। वो निशाना मेरे तक पहुंचता नहीं था—ये रोक लेते थे। इनके अलावा मेरे मन में एक श्रद्धा है—सभी हिंदुस्तान के अवतार ऋषि, मुनि, देवी-देवताओं की आप इज्जत करते हैं लेकिन आपको गुरुनानक देव जी से इतना प्यार है—जब मैं बम्बई गया तो मुझे सिन्धियों ने गुरु ग्रन्थ साहब सिंधी भाषा में print किया हुआ दिया। मैंने उस गुरुग्रन्थ साहब की जिल्द को राष्ट्रपति भवन में सत्कार के साथ रखा हुआ है—संसार में बनावटी बातें बहुत होती हैं जजबाती कम होती हैं। मेरा सिन्धियों से प्यार बनावटी नहीं, Diplomatic नहीं, जजबाती प्यार है—मुहब्बत —जहां भी मैं गया सिंधी नर, नारी, बहिनों भाइयों ने मुझे बहुत प्यार दिया, सत्कार दिया—और ये अमन पसन्द है कलाकार है, administrator हैं, देशभक्त हैं कुर्बानी करने वाले।

चौथराम गिडवानी और पं० जवाहर लाल नेहरू, मैंने सिखों को कहा था कि तुम जवाहर लाल नेहरू और गिडवानी को नहीं भूल सकते। वो ही थे जब जेलों में गोली के साथ मारे जा रहे थे तो आपके साथ पहुंचे। गिडवानी जी और नेहरू जी दोनों को एक हथकड़ी लगाई —दोनों की बाजू में एक हथकड़ी लगाई—जेटू में क्योंकि वो अकालिकों के मोर्चे में सिखों के मोर्चे में गये। मैं … के अकालियों को कहता हूं कि तुम भूल मत जाओ, … की कुर्बानियों को मिट्टी में न मिलाओ—और जो … साथ गिडवणी जी और नेहरू जी का साथ रहा—… मत भूलो। वो जेल में गए, नाभे की जेल में गए … रात एक बहुत निकम्मे प्लेटफार्म पर शाम से लेकर … रात वहां सोये। फिर जेल में गये मुकदमा चला। इ… इसका वाकिफ है मैं इसको ज्यादा विस्तार में नहीं कहूं…

देश के लिए आपने प्यार किया मुझे खुशी है … देश ने भी आपके साथ प्यार किया। आप जब … में गये उस प्राँत की भाषा को सीखा, उस प्रांत … culture को अपनाया, आसान बनाया, देश की तर… के लिए काम किया विदेशों में जाकर हमारा सम्मान ब… और फिर भी सिंधी culture को मरने नही दिया— और मैं आशा करता हूं कि सिन्धी culture को … नहीं मार सकता।

हमारे भारत का राष्ट्रीय गान आपने अभी … समाप्ति में भी सुनेंगे तो उसमें क्या आता है—पंजाब, … गुजरात, मराठा—द्राविण, उत्कल बंग—पहले नाम पं… का आता है, दूसरा नाम सिंध का आता है, सिंध हो … मगर सिंधी तो हैं न। सिन्धी भाषा हमारे देश की … कौमी भाषाओं में से एक है। ये मिटेगी नहीं। … जी ने ठीक कहा। मुझे खबर मिली कि यह खौफ पैदा … गया है कि वो तो गुरुद्वारे में गुरु ग्रन्थ साहब रखते हैं … अगर कोई एक्ट बन गया—कानून बन गया तो … कब्जा कर लेंगे आके—मैंने भरोसे से कहा आज … कहता हूं कि आपके गुरुद्वारे की तरफ कोई नहीं देखेगा … कोई एक्ट नहीं लागू होगा। आप उसका प्रबन्ध … से करें और जिस भावना से आप करते रहे हैं—परमा… आपको बरकत दें।

आपकी ये सारे संसार की विश्व की conferen… सम्मेलन बड़ी सफलता से निभा है—इसका आरम्भ … देश के प्रधानमन्त्री जी ने किया और आपने मुझे … सम्मान दिया कि मैं सभा आदि के वक्त आपके साथ … जितनी इज्जत संसार में हमारी बढ़ी है उसको …

किसी के काम जो आए, वह एक अनमोल हीरा है।
किसी के काम न आए, वह दस पैसे का खीरा है॥

कुछ मुल्कों के रहनुमाओं को jealousy हो गई वो हमको बखेरना चाहते हैं। सिन्धी भाइयो ! इस देश के अन्दर लड़ाई, झगड़े, नफरत को नहीं आने देना। प्यार और मुहब्बत से लोगों को साथ रखना। मैं तो यह कहता हूं कि जहां सिन्धी बैठे हैं वहाँ आपस में लड़ाई क्यों ? जहां सिन्धी बैठे हैं—वहां अहंकार क्यों ? आपको दौलत हजम करनी आती है। कुछ लोगों के पास दौलत हो जाय अहंकार हो जाता है लेकिन आप हजम कर सकते हैं—आपका हाजमा बहुत मजबूत है। बहुत-बहुत बड़े विद्वान, कुर्बानी वाले महान शायर और लम्बी उम्र वाले आज जो मुझे मुलाकात हुई भारत के ८२ साला नौजवान की मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। मैं चाहता हूं 82 साला नौजवान हमारे भारत के नौजवानों को अकल दें। उनको बताएं कि कैसे जिन्दगी जी जाती है। पहले तो मैं सोचता था कि यह बात गलत लगती है— ८२ साल के नहीं होंगे मगर अब इतनी भरी सभा में कह दिया तो मैं कैसे नहीं मानूं ? मैं उम्मीद रखता हूं, यकीन रखता हूं उम्मीद नहीं यकीन है मुझे कि आपने जो भारत की तरक्की में हिस्सा डाला — शायद जो बात गुरु नानकदेव जी महाराज ने एक जगह कही थी— उनकी बहुत सेवा हुई, बहुत आदर हुआ, सम्मान हुआ। चलते वक्त कहने लगे—भगवान। इस ग्राम को उजाड़ दे – यहां के लोग बिखर जाएं। दूसरे गांव में गुरुनानक को कहा कि आप इस गांव में नहीं आ सकते — घुस नहीं सकते। गुरुनानक देव जी ने कहा — भगवान, यह गांव यहीं बसता रहे। तो मर्दाना कहने लगा— अजीब बात है। जहां लोगों ने आदर किया वहां कहते हो "उजड़ जाओ" और जहाँ निरादर किया, वहां कहते हैं— "बसते रहो" यह न्याय क्या है आपका ? तो गुरुनानक देव जी ने कहा कि इस गांव के इतने नेक लोग हैं जहां जायेंगे नेकी फैलायेंगे और दूसरे गाँव के लोग इतने तंगदिल हैं कि मैं चाहता हूं, भगवान ये ही यहीं रहें, यहीं मर जायें, ये कहीं नहीं जाएं। शायद वो ही बात हो कि आप भारत में आएंगे तो हमारे भारत कीं उन्नति करेंगे।

आज हम इस बात को स्वीकार करते हैं कि पाकिस्तान सलामत रहे, हमारा वो छोटा भाई है। बंगला देश सलामत रहे, हम बुरा नहीं चाहते उनका। लेकिन हमारे बड़पन से उनको डरना नहीं चाहिए, बिल्कुल नहीं डरना चाहिए। हमें भगवान ने जो ताकत दी है—उस ताकत के साथ हम दिलेरी से संसार में अमन का सन्देश देते हैं—दुनिया की किसी ताकत से हम डरते नहीं हैं, प्यार करते हैं, अदब करते हैं, सत्कार करते हैं, करते रहेंगे। लेकिन हमें तो जो सबक दिया हमारे बुजुर्गों ने —"आप न डरो, न डराओ, यह हमारा principle है। हम इस पर चलते हैं— मजबूरन हमें अपनी ताकत बढ़ानी पड़ती है चूंकि कुछ बिगड़ते हुए दिमागों में कभी ख्याल आ जाता है कि हमको दबा लिया गया है। हम नहीं दबेंगे, हमारे देश का संदेशा आप सब ही जानते हैं। हमारी प्रधानमन्त्री जी ने भी आपको कहा—मैं उसको दोहराना नहीं चाहता। आप लेकर जाएंगे। आचार्य जी को कहता हूं कि सिंधियों को, जो हिन्दुस्तान में बसते हैं, वहां तो मैं सबसे मिल सकता हूं लेकिन मैं प्रबन्धकों का मशगूल हूं। जिन्होंने विदेश में रहने वाले सिन्धियों को भी मुझे मिला दिया है।

राष्ट्रपति के नाते विदेशों में रहने वाले सिन्धियों ! मेरा धर्म बनता है कि मैं उनको जीवां कहूं, उनको खुशामदीद कहूं और उनका स्वागत करूं। भले ही सिन्धी भाई citizenship भी ले लें वहां की—हमें कोई एतराज नहीं। लेकिन मैं यह कहूंगा कि आपके forefathers की यह मदरलैण्ड है — जिसके लिए कुर्बानी करके आप हिन्दुस्तान में आए हैं—इसको मत भूलना, याद रखना। आप के लिए हमारे दिल में बहुत बड़ा आदर है। झूलेलाल जी और बहुत बड़े भगत देवता मुझे थोड़े दिन हुए पूने में जाने का मौका मिला—साधु वासवाणी के आश्रम में गया, मीराबाई की education की प्रणाली को देखा—मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। आप कहीं भी खाली नहीं बैठते, कुछ न कुछ करते ही रहते हैं।

भगवान आपको और भी बरकत दे और भी ताकत दे मेरी प्यारी बहिनों को, भाइयों को, नौजवानों को, बुजुर्गों को ताकत मिले - मेरी यही शुभकामना है।

जयहिन्द

वक्त लिखेगा कहानी एक नये मज़मून की।
जिसकी सुर्खी को जरूरत है तुम्हारे खून की॥

श्री राजीवजी सिन्धी समुदाय के साथ

---आचार्य भगवान देव, संसद सदस्य

सन् १९८० में लन्दन में रखे गए "आर्य महा सम्मेलन" में एक समारोह की मुझे अध्यक्षता करनी थी। लन्दन अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से राजनीति का केन्द्र बना हुआ है। भारत के सम्बन्ध में वहां अनेक राष्ट्रों द्वारा योजना-वद्ध तरीके से जहर उगला जाता है। इसमें कुछ प्रवासी भारतीय भी जयचन्द का पार्ट अदा करके देश के गौरव और गरिमा को गिराने का प्रयास कर रहे हैं।

बी० बी० सी० दुनिया का एक शक्तिशाली प्रसारण माध्यम है। यह भी भारत के विरुद्ध विषवमन करने में पीछे नहीं है। वहां के अधिकारियों को जब पता लगा कि मैं वहां आया हूं, तब उन्होंने मेरी भेंट वार्ता बी० बी० सी० सर लेने का निश्चय किया। श्री कैलाश बुद्धवार ने मुझसे अनेक सवाल किए और भारत की समस्याओं को उठाया।

सर्वप्रथम जो सवाल मुझसे किया गया, वह था कि क्या राजीव गांधी राजनीति में आयेंगे! यही सवाल जब हम सितम्बर में अमेरिका गए थे तब न्यूयार्क में टेलीविजन पर भेंट वार्ता में हमसे किया गया। दुनिया के दो प्रभावशाली प्रसारणों द्वारा इस प्रकार के सवाल पूछे जाने पर यह अनुमान लगाना सहज था कि श्री राजीव गांधी का अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से कितना महत्व है। दुनियाँ की नजर श्री राजीव गांधी के अगले कदम पर थी। सवाल रोचक ढंग से पूछे गए थे।

दुनिया के दों प्रसारण माध्यमों द्वारा एक-सा सवाल पूछे जाने पर मैंने उनसे प्रश्न किया जो बात हमारे देश में विरोधी पार्टियों के लोग करते हैं, वही बात आप भी हमसे कर रहे हैं। क्या आपका उनसे सम्पर्क या मेल तो नहीं है। उन्होंने कहा, नहीं है। तब मैंने उनसे कहा—यदि लोकदल के चौधरी चरणसिंह अपनी वृद्ध पत्नी श्रीमती गायत्री देवी को लोकसभा में ला सकते हैं, जनता पार्टी के श्री मधु दण्डवते अपनी वृद्ध पत्नी श्रीमती प्रमिला दण्डवते को अपने साथ लोकसभा में ला सकते हैं, हेमवती नन्दन बहुगुणा अपनी पत्नी कमला बहुगुणा को लोकसभा में ला सकते हैं, जनसंघ वाले लाला हंसराज गुप्ता के पश्चात् उन के लड़के राजेन्द्र को बिना चुनाव के दिल्ली का मेयर बना सकते हैं तो फिर राजीव जी जैसे एक तेजस्वी कर्मठ कार्य-कुशल, निष्ठावान, सौम्यमूर्ति, सुयोग्य, नौजवान भारत की राजनीति में एक नागरिक के नाते प्रवेश करते हैं तो इसमें

कंकड़ चुन-चुन महल बनाया, लोग कहें घर मेरा है।
न घर मेरा, न घर तेरा, चिड़िया रैन बसेरा है॥

किसी की आपत्ति क्यों होनी चाहिए ! वास्तव में, श्रीमती इन्दिरा गांधी अथवा श्री राजीव गाधी जी स्वयं नहीं, परन्तु हम लोग चाहते हैं कि श्री राजीव गाँधी राजनीति में आयें और देश की युवाशक्ति की रहबरी करें। वे अगर चाहें तो बहुत सरलता के साथ राज्य सभा में जा सकते हैं, परन्तु वे राजनीति में आयेंगे तो सीधे चुनाव लड़कर और आम जनता का विश्वास प्राप्त कर लोकसभा प्रतिनिधि के रूप में आयेंगे। वैसे ही राजनीति में आयेंगे जैसे कि श्री संजय गांधी आए थे। हम नहीं चाहते कि राजीव जी अब वायुयान चलायें। अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों एवं षड्यन्त्रों को देखते हुए राजीव जी का राजनीति में आना ही उचित है। इससे युवा शक्ति को एक रहबर मिलेगा, प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा को बल मिलेगा।

विदेश यात्रा से लौटने के पश्चात् हम इस दिशा में प्रयत्नशील रहे कि राजीव जी को राजनीति में लाया जाए। मैंने योग मन्दिर के मार्च १९८१ के अंक में सम्पादकीय लिखकर श्री राजीव जी से प्रार्थना की कि—

राजीव जी राजनीति में आ जावें।
जनता की पलकों में छा जावे ॥

देश-विदेश के कोटि-कोटि लोगों की भावनाओं की कद्र करते हुए राजनीति में आएं। अपने छोटे भाई स्वर्गीय संजय गांधी के चुनाव क्षेत्र अमेठी से सब विरोधी पार्टियों के उम्मीदवारों की जमानतें जब्त कर कर सर्वाधिक वोटों से चुनकर आ गए। यह संजय जी के प्रति उनकी सच्ची श्रद्धांजलि कही जाएगी।

गत तीन वर्षों के राजनैतिक कार्यकाल में श्री राजीव जी ने कांग्रेस पार्टी में जान डाल दी है। देश भर के तमाम प्रांतों, जिलों, एवं छोटे-छोटे कस्बों में जाकर जो आपने जन-जागृति का काम किया है। वह अपने आप में एक महान् कार्य हैं। गत वर्ष मेरे चुनाव क्षेत्र अजमेर जिले के अनेक स्थानों पर आपके कार्यक्रम रखे गए। ब्यावर जहां का मैं रहने वाला हूं—रात्रि ढाई वजे तक आपने मीटिंग ली। उस समय आपने हमें कहा—बहुत देर हो गई है, लोग चले तो नहीं जायेंगे ? मैंने उन्हें कहा—जब तक आप यहां हैं, कोई नहीं जाएगा। लोगों के प्यार को देखकर वे दंग रह गए। हम लोग दिन तथा सारी रात मीटिंगों में श्री राजीव जी की उपस्थिति से दंग थे।

३१ अक्तूबर को साम्प्रदायक के शैतानों ने प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की क्रूर हत्या कर दी। सारे देश पर वज्रपात हुआ। विश्व की मानवता चीख उठी। श्री राजीव जी की मां, हमारी मां—विश्व की मां। श्रीमती इन्दिरा गाँधी के अकाल अचानक चले जाने से देश अनाथ-सा बन गया। देश में दंगे हुए। ऐसी अवस्था में श्री राजीव जी पर देश की जवाबदारी आई। आते ही उन्होंने जिस बहादुरी से देश का नेतृत्व सम्भाला है। दुनियां ने उसके लिए उन्हें दाद दी है। वह नेता के लायक हैं। हमारा कर्त्तव्य है कि उन्हें पूर्ण सहयोग दें।

जिस सूझबूझ से वे कार्य कर रहे हैं इससे उनकी योग्यता का अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। उन में पिता स्वर्गीय फिरोज गांधी जैसी गम्भीरता है। अपनी माता श्रीमती इन्दिरा गाधी जैसी कार्यकुशलता एवं हर व्यक्ति को परखने की शक्ति है। नाना जी जैसी कर्मठता और शालीनता है। इस त्रिवेणी संगम से श्री राजीव की प्रतिभा में चार चांद लग गए हैं। उनकी यश-कीर्ति दिन-दूनी, रात-चौगुनी बढ़ती ही जा रही है।

□□

मुझे कोई गम न था, अगर गम था तो यह गम था।
कि जहां किश्ती मेरी डूबी, वहां पानी बहुत कम था ॥

इन्दिरा गांधी

ने

कहा था

- हमें अपना आचार-व्यवहार स्थानीय परिस्थितियों, जलवायु और उन बातों के अनुसार ढालना होगा जिससे कि हमारे देश के लोगों को अधिकतम सुविधायें मिल सकें।
- हमें यह देखना है कि ध्यान देने योग्य गलतियां कौन-सी हैं, क्या किसी ने जानबूझकर ऐसी गलती की है जो राष्ट्रीय हित या किसी संस्था के हित में नहीं है।
- शिक्षा का अर्थ यह नहीं है कि कोई व्यक्ति कितना जानता है बल्कि यह कि कोई क्या बनना चाहता है और कोई क्या ? इसको प्राप्त करना ही शिक्षा है।
- हम आंखें बन्द करके या कान बन्द करके हर चीज पर विश्वास न करें बल्कि सत्य का स्वयं अन्वेषण करें।
- अपने आप में कुछ भी न हो तो अच्छा है न बुरा। यह इस पर निर्भर करता है कि हम उसे किस प्रकार लाते हैं। संघर्ष में आप अपने आपको सुदृढ़ बना सकते हैं।
- हम अपनी आत्मा टटोलकर यह देखें कि क्या उचित है और उसे बेहतर बनाने की कोशिश करें।
- हम अपने पैर, अपनी धरती पर जमा करके मजबूती से रखें, लेकिन हवा से हम लाभ उठायें कुछ परिवर्तन करना हो तो परिवर्तन से भी न डरें, पुरानी चीजों में अच्छाई है तो उससे भी न डरें।
- हमारे अन्दर काम करने की इच्छा होनी चाहिए क्योंकि ऐसी कोई बाधा नहीं है जिस पर हम विजय प्राप्त नहीं कर सकते।
- दुनिया में कोई न काम, न ज्यादा होता है। हरेक में कुछ गुण, कुछ कला होती है, कुछ लोग उसको प्रकट कर सकते हैं और कुछ के भीतर दबा रहता है। जो बाहर निकल सकते हैं, वे केवल अपने विचार नहीं, बल्कि समाज के विचार, देश के विचार, उस जमाने के विचार प्रकट कर सकते है, वे बड़ें कलाकार होते हैं।
- गरीब से गरीब और अत्यन्त असहाय लोगों की छिप्री ताकत के जरिए एक ऐसी शक्ति पैदा की जा सकती है जिससे कोई भी राष्ट्र एक युग से दूसरे युग में पहुंच जाता है।

खुदी को कर बुलन्द इतना कि हर तकदीर से पहले।
खुदा बन्दे से खुद पूछे बता तेरी रजा क्या है॥

प्रधान मन्त्री भारत

PRIME MINISTER,
INDIA.

नई दिल्ली
20 मार्च, 1980

प्रिय श्री भगवान देव,

अजमेर ज़िला की समस्याओं के संबंध में आप कृपया अपना 15 मार्च का पत्र देखें। मैं राज्य सरकार तथा रेल और नागरिक उड्डयन एवं पर्यटन मंत्रालयों से कह रही हूं कि वे आपके सुझावों की जांच करें।

भवदीया,
इन्दिरा गांधी
(इन्दिरा गांधी)

आचार्य भगवान देव,
संसद् सदस्य,
आर्य भवन, जोर बाग,
नई दिल्ली-3

प्रधान मन्त्री भारत

PRIME MINISTER,
INDIA.

नई दिल्ली
27 मार्च, 1980

प्रिय श्री भगवान देव,

आपका 19 मार्च का पत्र मिला । मैं रेल मंत्रालय से कह रही हूं कि ट्रेड अप्रेन्टिसों के प्रशिक्षण के बारे में आपने जो बातें कही हैं उनकी वह जांच करे ।

भवदीया,

इन्दिरा गांधी
(इन्दिरा गांधी)

आचार्य भगवान देव,
संसद् सदस्य,
आर्य भवन, जोर बाग,
नई दिल्ली-110003

प्रधान मन्त्री भारत
PRIME MINISTER,
INDIA.

नई दिल्ली
25 नवम्बर, 1980

प्रिय श्री भगवानदेव,

आपका 17 नवम्बर का पत्र मिला ।

मैं आर्थिक कार्य विभाग से इस बात की जांच करने के लिए कह रही हूं कि सेसल्स टापू में बैंक आफ बड़ौदा ने किन परिस्थितियों में अपनी शाखा खोली । भविष्य में आप कृपया सीधे संबंधित मंत्रालय को लिखें जिसकी एक प्रति हमें भेज दी जाए । हम मामले को आगे देखेंगे ।

भवदीया,

इन्दिरा गांधी

(इन्दिरा गांधी)

श्री भगवानदेव,
संसद सदस्य,
आर्य भवन, जोर बाग,
नई दिल्ली ।

प्रधान मन्त्री भारत

PRIME MINISTER,
INDIA.

No.254-PMO/81

New Delhi
March 25, 1981

Dear Acharya Bhagwan Dev,

I have received your letter of the 23rd March. I am asking the Ministry of Commerce to look into your suggestions about NTC Mills.

In future, please write direct to the Minister concerned, sending me a copy. We shall pursue the matter.

Yours sincerely,

Indira Gandhi

(Indira Gandhi)

Acharya Bhagwan Dev, MP
Arya Bhavan,
Jor Bagh,
New Delhi.

प्रधान मन्त्री भारत

PRIME MINISTER,
INDIA.

No.473-PMO/82

New Delhi
June 17, 1982

Dear Acharya Bhagwandev,

I have received your letter of June 5 suggesting that the Advisory Committees of the Hindi Directorate and of the Sahitya Akademi be made more broad-based.

The Education Minister is being asked to look into your suggestion.

Yours sincerely,

Indira Gandhi

(Indira Gandhi)

Acharya Bhagwandev, MP
13, Lodi Estate,
New Delhi - 110 003

PRIME MINISTER

No.528-PMO/81

New Delhi
July 16, 1981

Dear Acharya Bhagwandev,

I have received your letter of the 13th July. I am asking the Ministry of Industry to look into your suggestions about the Chairman and Managing Director of H.M.T.

Yours sincerely,

Indira Gandhi

(Indira Gandhi)

Acharya Bhagwandev, MP
Arya Bhawan,
Jor Bagh,
New Delhi.

प्रधान मंत्री भवन
PRIME MINISTER'S HOUSE
NEW DELHI

26 अक्तूबर, 1984

प्रिय आचार्य भगवानदेव,

आपकी छोटी बहन आयु० सरस्वती तथा छोटे भाई चि० श्याम के शुभ विवाह का निमंत्रण-पत्र मिला, धन्यवाद ।

दोनों वर-वधुओं को उनके सुखमय वैवाहिक जीवन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनायें एवं आशीर्वाद ।

इन्दिरा गांधी
(इन्दिरा गांधी)

आचार्य भगवानदेव,
संसद् सदस्य,
13, लोधी एस्टेट,
नई दिल्ली-110003

राजेन्द्र धवन
प्रधान मंत्री जी के विशेष सहायक

प्रधान मंत्री कार्यालय
नई दिल्ली-११००११
PRIME MINISTER'S OFFICE
NEW DELHI-110011

3 मई, 1983

पत्र सं० 1(1)/83-पी० एम० पी०-I

प्रिय आचार्य भगवान देव,

प्रधान मंत्री जी को आपका 22 अप्रैल, 1983 का पत्र मिला, जिसमें आपने विश्व सिंधी सम्मेलन का उद्घाटन करने का उनसे अनुरोध किया है। उन्होंने मंगलवार 18 अक्तूबर को सुबह 10 बजे इस सम्मेलन का उद्घाटन करना स्वीकार कर लिया है।

कृपया इस सम्मेलन के हर मिनट का कार्यक्रम और इसका स्थान तय होने पर हमें यथाशीघ्र सूचित करने का कष्ट कीजिये।

आपका,

(राजेन्द्र धवन)

आचार्य भगवान देव,
संसद सदस्य,
13, लोधी एस्टेट,
नई दिल्ली-110003
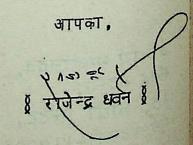
प्रधान मन्त्री भारत
PRIME MINISTER,
INDIA.

नई दिल्ली
15 अप्रैल, 1980

प्रिय आचार्य भगवान देव,

आपका 9 अप्रैल का पत्र मिला ।

पालेलकर वेज ट्रिब्यूनल के प्रस्ताव के संबंध में आपके विचार मैं सूचना व प्रसारण मंत्री को उचित कार्यवाही के लिए भेज रही हूं ।

भवदीया,

इन्दिरा गांधी
(इन्दिरा गांधी)

आचार्य भगवान देव,
संसद् सदस्य,
आर्य भवन, जोर बाग,
नई दिल्ली ।

प्रधान मन्त्री भारत

PRIME MINISTER,
INDIA.

नई दिल्ली
26 जून, 1980

प्रिय श्री भगवान देव,

आपका 11 जून का पत्र मिला ।

डा० सूरजभान की चिकित्सा की व्यवस्था भारत सरकार द्वारा करने का आपका सुझाव स्वास्थ्य मंत्रालय को भेजा जा रहा है ।

भवदीया,

इन्दिरा गांधी
(इन्दिरा गांधी)

श्री भगवान देव,
संसद् सदस्य,
आर्य भवन, जोर बाग,
नई दिल्ली-110003.

प्रधान मंत्री भवन
PRIME MINISTER'S HOUSE
NEW DELHI

1 अगस्त, 1980

प्रिय आचार्य भगवान देव,

आपका 16 जुलाई, 1980 का पत्र मिला।

हिन्दुस्तान समाचार समिति के साथ कांग्रेस नेताओं के संबद्ध होने के विषय में आपने जो लिखा है, वह सही है।

भवदीया,

इन्दिरा गांधी

(इन्दिरा गांधी)

आचार्य भगवान देव,
आर्य भवन, जोर बाग,
नई दिल्ली-110003

- - - - - - - - - -

प्रधान मन्त्री, भारत
PRIME MINISTER,
INDIA.

New Delhi
August 8, 1980

Dear Shri Bhagwan Dev,

I am grateful for your message of condolence.

There has been widespread admiration for the dignity with which Sanjay faced the hardship, the baseless propaganda and the concerted campaign of calumny. It is shocking that even in this, my time of grief, our opponents and large sections of our own and the western Press and media do not spare us and continue to indulge in misrepresentation.

To millions of people in India and, judging by the growing number of messages received, from many other nationalities too, Sanjay had come to symbolise the heroic spirit, promising new direction reaching out to the future. With singleness of purpose, he undertook thetask of helping to build a resurgent, united and self-confident India. His career in politics, only just begun,had already shown his qualities—calm courage in the face of adversity, decisive thought and action in whatever he attempted.

We shall mis shim. But his spirit will live on to guide the youth of India, to whom the torch must pass.

Thanking you again for your sympathy.

Yours sincerely,

Indira Gandhi

(Indira Gandhi)

Acharya Bhagwan Dev,
Arya Bhawan,
Jor Bagh,
New Delhi-110003

प्रधान मन्त्री भारत

PRIME MINISTER,
INDIA.

नई दिल्ली
7 अक्तूबर, 1982

प्रिय श्री भगवान देव,

आपका 17 सितम्बर, 1982 का पत्र मिला ।

आपने सिन्धी समुदाय की प्रगति में मदद देने के संबंध में जिन उपायों के सुझाव दिये हैं उनका संबंध विभिन्न मंत्रालयों से है, इसलिए इनको मैं संबंधित मंत्रालयों को भेज रही हूं ।

इन्दिरा गांधी

(इन्दिरा गांधी)

आचार्य भगवान देव,
संसद् सदस्य,
13, लोदी एस्टेट,
नई दिल्ली-110003

प्रधान मन्त्री भारत

PRIME MINISTER,
INDIA.

No.195-PMH/82

New Delhi,
October 23, 1982

Dear Shri Bhagwandev,

I have received your letter of October 14 suggesting extension of the period of Government take-over of Auroville for one more year.

The Government of India are already seized of this matter.

Yours sincerely,

(Indira Gandhi)

Shri Acharya Bhagwandev, MP
13 Lodi Estates,
New Delhi - 110 003

प्रधान मन्त्री भारत
PRIME MINISTER.
INDIA.

नई दिल्ली
28 नवम्बर, 1983

प्रिय आचार्य भगवान देव,

मेरे जन्म-दिन पर आपकी सद्भावनाओं के लिए धन्यवाद ।

शुभकामनाओं सहित,

इन्दिरा गांधी

(इन्दिरा गांधी)

आचार्य भगवान देव,
संसद् सदस्य,
13, लोधी एस्टेट,
नई दिल्ली ।

प्रधान मन्त्री भारत

PRIME MINISTER,
INDIA.

नई दिल्ली
22 मार्च, 1984

प्रिय श्री आचार्य भगवान देव,

आपका 6 मार्च, 1984 का पत्र मिला ।

वित्त और वाणिज्य मंत्रालयों को भारतीय प्रवासियों को अधिक सुविधायें देने और अंदमान निकोबार द्वीप-समूह को फ्री पोर्ट घोषित करने के आपके सुझावों पर विचार करने के लिए कहा जा रहा है ।

इन्दिरा गांधी
(इन्दिरा गांधी)

श्री आचार्य भगवान देव,
संसद सदस्य,
13, लोधी एस्टेट,
नई दिल्ली-110003
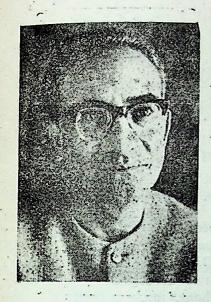
नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया

ए—ग्रीन पार्क, नई दिल्ली ११००१६

National Book Trust, India

A-5 GREEN PARK, NEW DELHI-110016

Phones : 664667 664020 664540 669962 668052 663188 663189 662124

कृष्ण कृपलानी
अध्यक्ष

क्रमांक : सी. एम.-३/८४ दिनांक : जनवरी, १९८५

आचार्य भगवानदेव जैसी कर्मयोगी, आचार्य प्रवर और महाप्र लेखक के ५० वर्ष में पदार्पण की प्रसन्नता हुई। आशा है भविष्य में भी समाज, देश को उनकी सेवा मिलती रहेगी।

शुभ कामनाओं सहित,

आपका
कृष्ण कृपलानी

सस्तासाहित्य के प्रणेता, प्रकाशक तथा प्रसारक

सस्ता साहित्य मण्डल

एन-७७ कनॉट सर्कस, नई दिल्ली-११०००१

३१ जनवरी, १९८५

प्रिय बंधु, सप्रेम नमस्कार।

आपका २४ जनवरी का पत्र मिला। यह जानकर हर्ष हुआ कि आप आचार्य भगवानदेव की स्वर्ण जयन्ती मना रहे हैं और उस अवसर पर एक अभिनन्दन ग्रन्थ का प्रकाशन कर रहे हैं।

मैं आपके इन आयोजनों का हार्दिक स्वागत करता हूं और उनकी सफलता के लिये अपनी शुभ कामनाएं भेजता हूं।

आचार्य भगवानदेव जी ने विभिन्न क्षेत्रों में जो योगदान दिया है, उसे सब जानते हैं। उनका अभिनन्दनं होवा ही चाहिये था। मुझे पूरा विश्वास है कि भविष्य में हमारा समाज और राष्ट्र उनसे और भी अधिक लाभान्वित होगा।

मैं आचार्य जी की वर्षगांठ पर उनका अभिनन्दन करता हूं और उनके स्वास्थ्य तथा दीर्घायु होने की कामना करता हूं।

विशेष कृपा

सप्रेम आपका
(यशपाल जैन)

सत्य धर्म जाग्रत हुआ, मिटी मोह की रात।
अंधकार को चीर कर, उज्ज्वल उगा प्रभात॥

॥ ओ३म् ॥

Suraj Bhan
President
D.A.V. College Managing Committee
Chitra Gupta Road,
New Delhi-110055

May 11, 1976

भू. पू. उपकुलपति पंजाब विश्वविद्यालय का पत्र

Dear Acharya Bhawandev Ji,

I was so happy to meet you at the Vasant Vihar function the other day. I am highly grateful for the two books that you were good enough to present to me on that occasion. I have glanced through them and write to offer you my felicitations on having produced such good books. Rishi Dayanand's Biography is indeed a valuable addition to the literature about that great maker of modern India. The other book, too, strikes me as an estimable production about Yoga which is gaining popularity tremendously all over the world.

I hope both the books will have a large sale and will do good to hundreds and thousands of readers.

Yours sincerely,

Suraj Bhan

Among the many qualities of head and heart that Acharya Bhagwandev Ji possesses in great measure, the most endearing is his deep concern for the welfare of the Sindhi Community scattered through out the length and breadth of this sacred land. Through his enthusiasm for working for Sindhi identity he has inspired many Sindhis, young and old alike, to hold their head high and feel a sense of pride and fulfilment. I Send my heartiest felicitation on this day, the 50th birthday of Shri Acharya Bhagwandev. May God give a long and healthy life to him so that he can carry the community from strength to strength.

Professor C.J. Daswani
Director
Post-Graduate Studies
University of Poona.

राग द्वेष की मोह की, घटा घुटी घनघोर ।
गहन रात को चीर कर, उगे धरम का भोर ॥

२१२/२३-२-८५

दूरभाष ६६९७१२

अक्षय कुमार जैन

सी-४७, गुलमोहर पार्क
नईदिल्ली-११००४६

प्रिय सूरी जी

आपका पत्र मिला। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि बन्धुवर आचार्य भगवानदेव के अभिनन्दन ग्रन्थ की तैयारी हो रही है। मैं भगवानदेव जी को लगभग २५ वर्ष से जानता हूं। उनकी समाज सेवा सर्वविदित है। लोक सभा में भी उनका योगदान कम नहीं रहा। ७० वर्ष की आयु में मेरा स्वास्थ्य अच्छा नहीं है। अधिक लिखने में अशक्यता है। मैं आचार्य जी के दीर्घ स्वस्थ जीवन की कामना करता हूं।

अभिनन्दन ग्रन्थ के आयोजन में मैं भी सम्मिलित हूं।

आपका

[अक्षयकुमार जैन]

अमृतलाल नागर

पद्मभूषण

चौक, लखनऊ—२२६००३.

१४-२-८५

प्रिय श्री नवीन सूरी,

आचार्य श्रीभगवानदेव की स्वर्ण जयन्ती के शुभ अवसर पर मेरे शत-शत शुभाशीर्वाद और बधाई। विद्वान् पुरुष कल्पवृक्ष के समान होता है उसकी छाया में जन लोकोत्तर आनन्द प्राप्त करता है।

शुभाकांक्षी

अमृतलाल नागर

भाई भाई से लड़े, नाम धराया राम।
राम भगत ने राम को किया बड़ा बदनाम॥

श्री मोती सागर जी के साथ आचार्य भगवानदेव महर्षिदयानन्द फिल्म के गीत तयार कराते हुए

आचार्य भगवानदेव के बारे में कुछ कहना छोटा मुंह बड़ी बात हो जाती है।
आचार्य भगवानदेव जैसा इनका नाम है वैसे ही इनके गुण हैं।
जो काम ये आज कर रहे हैं, वो एक महान् आत्मा ही कर सकती है, ये गरीबों के वास्ते एक रोशनी है, सहारा है और रास्ता है, मेरी दिली दुआ है कि भगवान् इनके इरादों में इनके लक्ष्य में कामयाबी दे।

आपका
मोती सागर

SMT. PRAVEEN C. KAMLANI

B.A., LL. B.

Ex. L.C. (Karnataka) Member : A.I.C.C
Opp. Dist. Juge's Court Dhanwad-580 008 (Karnataka)

13-1-1984

I am very happy to know that you are bringing out souvenir on the 50th Birthday of Shri Acharya Bhagwandev.

The life of Shri Acharya Bhagwandev is dedicated to the cause of downtrodden. During the short period of his membership of the Lok Sabha, he has many achievements to his credit. It is befitting to celebrate his 50th Birth by commemoration volume.

I wish him many more years of useful service in public life.

With kind regards,

Yours sincerely
P.B. Kamlani

कोई कहता बौद्ध हूं, कोई कहता जैन ।
बोधि जगी, न मन जगा, कहाँ नाम में चैन ।।

सच्चे सनातनी

डा० गीता शाह

गीता मन्दिर, बड़ौदा, गुजरात

आचार्य भगवानदेव जी के प्रथम दर्शन संजीवनी हास्पीटल अहमदाबाद के एक "आयुर्वेद समारोह" में हुए थे। मैं उस समय आयुर्वेद का अभ्यास करती थी। उनकी कार्य शैली सूझ-बूझ और प्रभावशाली व्यक्तित्व से हर व्यक्ति प्रभावित था।

अहमदाबाद में पूज्य महामन्डलेश्वर स्वामी सदानन्द जी से आपका निकट सम्बन्ध था। मेरी पूज्य माता परम योगनी वासंतीदेवी के पास आप आया करते थे। एक आर्य समाजी का सनातनी सन्तों से सम्बन्ध एक अजीब-सा लगता था।

एक बार आचार्य जी ने कहा था—मैं सच्चा और पक्का "सनातनी" हूं और आप सच्चे "आर्य" हैं इसलिए हमारा और आपका सम्बन्ध है। हम सच्चे अर्थ में "सनातनी आर्य" हैं।

आपके पास जब कभी कोई भी गया-आप उसका कार्य करने के लिये तैयार मिलते हैं। किसी के लिये कर-छूटने की इस पवित्र और समर्पित भावना से अनेकों को वे अपना बनाने में सफल हुए हैं।

संस्थाओं में मानव कल्याण के कार्य होने चाहिये इसकी प्रेरणा वे हमेशा देते रहते हैं।

साहित्य सर्जन, संस्था संचालन, योग-साधना, सेवा भावना—के कार्य में लगे रहते हैं। जीवन का एक पल भी बेकार न जाए—इसका सतत् प्रयास करते रहते हैं।

आचार्य जी राजनैतिक क्षेत्र का परित्याग करके "योग-मार्ग" पर चलकर "मानव कल्याण" के कार्य को ही करने लग जाएं तो जग का अधिक भला कर सकते हैं। वास्तव में वे एक "आध्यात्मिक व्यक्ति" हैं। मैं परमात्मा से आचार्य जी के मंगल जीवन की कामना करती हूं।

चलो चलो सब कोई कहे, विरला पहुंचे कोय।
एक कनक अरु कामिनि, दुर्गम घाटी दोय॥

एक सच्चे आर्य

□ श्री ओमप्रकाश गोयल
नई दिल्ली

आचार्य भगवानदेव को मैं कई वर्षों से जानता हूं। आर्य समाज में
निष्ठावान व्यक्ति कम नजर आते हैं। लेखक, वक्ता, संस्था संचा
का ज्ञान एवं शारीरिक दृष्टि से सुन्दर स्वास्थ्य का व्यक्तित्व का
आचार्य भगवानदेव में जो देखने को मिलता है—मेरी दृष्टि में यह सब "
का प्रताप है।

मैंने तथा मेरे परिवार एवं भाइयों सम्बन्धियों को आचार्य जी ने
त्मिक योगाभ्यास सिखाया है। वे छोटे से छोटे कार्य करने में कभी संकोच
करते। वे एक "सच्चे आर्य" हैं।

आपने अनेक पुस्तकें लिखी हैं। "योग मन्दिर" (मासिक) एक
शिक्षाप्रद पत्रिका भी आप कई वर्षों से निकाल रहे हैं।

आर्य समाज के संगठन को प्रतिपादन करने के लिए दिन-रात कार्य
लगे रहते हैं। उनको देखकर कोई यह नहीं कह सकता कि ५० वर्ष पूर्ण
चुके होंगे। मैं प्रभु से उनके सुन्दर स्वास्थ्य की कामना करता हूं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान
नई दिल्ली-११०००२

दिनांक २८-१२-१९८३

यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि युवा संसद सदस्य, आर्य समाज के उत्साही कार्यकर्त्ता और सिंधी समाज के अध्यक्ष श्री भगवानदेव जी की ५० वीं वर्षगांठ पर एक अभिनन्दन ग्रंथ प्रकाशित करने का आयोजन किया जा रहा है।

परम पिता परमात्मा से श्री भगवानदेव जी के दीर्घायु की मंगल कामना करते हुए अभिनन्दन ग्रन्थ के प्रकाशन की सफलता की कामना करता हूं।

भवदीय

रामगोपाल शालवाले
प्रधान

माता-पुत्री-बहिन सम, जो देखे पर नार।
सच्चा ज्ञानी वही नर, करे धरम से प्यार॥

ब्लाक कांग्रेस कमेटी (आई) किशनगढ़

आचार्य भगवानदेव जी का पंडित हरिश्चन्द्र प्रधान किशनगढ़ क्षेत्र में विशाल जलूस में स्वागत करते हुए।

प्रिय सूरी जी,

आचार्य अभिनन्दन समिति, नई दिल्ली।

हमें यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि आचार्य श्री भगवानदेव सांसद से जीवन के पचास वर्ष पूर्ण होने पर उनके जीवन की स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष्य में एक ग्रन्थ (अभिनन्दन) प्रकाशन किया जा रहा है साथ ही उन्हें सम्मानित भी किया जायेगा। आचार्य भगवानदेव से हमारा परिचय सातवीं लोक सभा के चुनावों से पूर्व अजमेर संसदीय क्षेत्र से कांग्रेस प्रत्याशी के रूप में हुआ। प्रथम भेंट में ही हम उनके आकर्षक मनमोहित ओजस्वी व्यक्तित्व से प्रभावित हुए बिना न रह सके।

आचार्य जी ओजस्वी वक्ता होने के नाते मतदाताओं के आकर्षण के केन्द्र हो गए और अपना कारवां बनाते हुए लोक सभा में भारी बहुमत से विजयी हुए। ये ओजस्वी वक्ता के साथ-साथ सफल लेखक, आर्य समाजी नेता के रूप में सुविख्यात हैं। इनके द्वारा लिखित योग की पुस्तकें मानव जीवन के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुई है। इनका संसदीय जीवन काफी चर्चित रहा है इनके इस संसदीय काल में किशनगढ़ क्षेत्र से गहरा लगाव रहा है और उन्होंने इस क्षेत्र के रेगिस्तानी क्षेत्र को हरा-भरा बनाने हेतु इस क्षेत्र की जनता की मांग के रूप में एक तौफा रूपन नदी पर बांध बनाने की स्वीकृति दिया है इसके लिए प्रधान जी के नेतृत्व में क्षेत्र के सरपंचों को प्रधानमन्त्री जी से भेंट कराकर महान् उपलब्धि कराई है। साथ ही इस क्षेत्र में अनुसूचित जाति का एक ऐतिहासिक सम्मेलन कराकर अनुसूचित जाति के लोगों में नई आशा का संचार किया। हम इनकी दीर्घ आयु की उत्तरोत्तर उन्नति की कामना करते हुए इनसे यह अपेक्षा करते हैं कि वे हमें अपना स्नेह व प्यार भविष्य में देते रहेंगे।

आपके ही

हरिश्चन्द्र शर्मा, प्रधान	पुरुषोत्तमलाल टन्डन
अध्यक्ष	महामन्त्री

Phones :

Dharam Dass Shastri

Member of Parliament (Lok Sabha)
18, Ashok Road, New Delhi-110 001

Dated February 21, 1983

Dear Acharya Bhagwandev,

At the outset, I would very much like to thank you for sparing your most valuable time to address election public meetings in Karol Bagh Parliamentary constituency. The overwhelming success of our candidates is the result of sincere efforts put by persons like you.

Besides that I have always considered you as one of us. I sincerely hope that in future also you continue to serve the Party in Delhi and keep our Party flag flying under the astute and able leadership of our beloved Prime Minister, Smt. Indira Gandhi and youthful General Secretary, Shri Rajiv Gandhi.

With kind and personal regards,

Yours sincerely,

Dharam Dass Shastri

मनीराम बागड़ी

संसद सदस्य (लोक सभा)
६, तीन मूर्ति लेन,
नई दिल्ली

दिनांक ६-९-८४

आपका अंग्रेजी में लिखा हुआ पत्र मिला, धन्यवाद। जो भी लेखनी मानव जाति के हित की होती है उसके लिए हमारी सहानुभूति है। आचार्य जी तों हमारे साथ लोक सभा में हैं ही। आप जो काम करने जा रहे हैं उसके लिए आपको बधाई।

शुभ कामनाओं सहित,

भवदीय

(मनीराम बागड़ी)

मन का मैल उतार ले, जो चाहे सुख चैन।
मैल होय तो दुःख रहे, बौद्ध होय या जैन॥

- लोकतंत्र
- समाजवाद
- सर्व धर्म सम्भाव
- आत्म निरर्भता
- अहिंसा

The world appears to us we look at the World. The world is a reflection of our mind. One woman appears as mother, sister, wife, etc. to different people

संसार हमारे मन प्रतिबिम्ब ही तो है। एक स्त्री दृष्टि भेद से माता, बहन, पत्नी आदि दिखाई देती है।

कंकड़ चुन-चुन महल बनाया, लोग कहें घर मेरा है।
न घर मेरा, न घर तेरा, चिड़िया रैन बसेरा है॥

- अनुशासन
- संघर्ष
- सद्भावना
- आत्मबल
- अभय
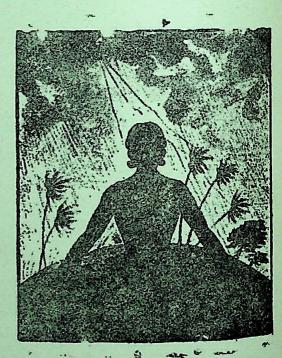
By living in Solitude away from multitude, one gets enlightened attitude.
एकान्तवास और ईश्वर में निवास, इससे बढ़कर कोई सुख शांति नहीं।

सच्च कहो ऐ बुलबुलो ! किस बाग से आती हो तुम ?
है हमारे भी तुम्हें कुछ आशियाने की खबर ?

विवेकानन्द का स्वरूप

आचार्य भगवान देव

पुरुषोत्तम लाल वाशिष्ठ
हिन्दी अधिकारी
अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन

बुधवार दिनांक 1 फरवरी 1984। पोर्ट ब्लेयर का लम्बालाइन स्थित हवाई अड्डा। मद्रास से आने वाला हवाई जहाज अभी-अभी धरती पर उतरा है। चारों ओर खिली धूप के बीच पंख चमचमाते हवाई जहाज ने विराम लिया। दरवाजा खुला। सामने ही सबसे पहले जिनके दर्शन किए, उन्हें देख मैं दो क्षण ठगा रहा गया। आप भी एक क्षण उन्हें देखें। नीचे दिए गए चित्र में वही सज्जन गाड़ी में विराजमान हैं :—

आपका नाम है आचार्य भगवान देव। अजमेर निर्वाचन क्षेत्र से निर्वाचित लोकसभा के सदस्य। पोर्ट ब्लेयर पधारे हैं संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति के संयोजक के रूप में। वे हमारे मेहमान हैं और अण्डमान तथा निकोबार प्रशासन के हिन्दी अधिकारी की हैसियत में मेजवानी कर रहा हूं मैं। औपचारिक स्वागत सत्कार के बाबजूद भी मैं पहचान नहीं पा रहा हूं अपने मेहमान को। लग रहा है, आचार्य जी के सौम्य किन्तु आकर्षक व्यक्तित्व में आधुनिक भारत के किसी महान मनीषी का विम्ब परिलक्षित है। लेकिन किस मनीषी का, यह स्पष्ट नहीं हो रहा है।

दो दिन और गुजरते हैं। तलवारनुमा हल्की मूंछों के नीचे ओठों पर खेलती मुस्कान मेरे समान कई व्यक्तियों को पकड़ लेती है आखों में चमक के साथ उभरती नन्हींसी शरारत साफ बता देती है, 'देखिये, हमें छल फरेब पसन्द नहीं।' सीधी माँग के चारों ओर तरतीब से विस्तृत लहरदार घूंघराले केश मुझे फिर वह सोचने को विवश कर रहे हैं कि आखिर, इस सपाट, चौड़े और गेहुंए रंग के चेहरे के बीच से कौन मनीषी झाँक रहा है। आपसे अनुरोध है कि आप पुन: ऊपर के चित्र में झाँकें और सम्भव हो तो मुझे अपने प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने में मेरी सहायता करें।

शुक्रवार दिनांक 3 फरवरी, 1984। सुबह सुबह आचार्य जी के पास गुलदस्ता आया है द्वीपों के उपराज्यपाल महोदय की ओर से। साथ में हैं गुलाबी कागज में लिपटी हुई शुभकामनाएं ; आचार्य जी का अभिनन्दन करती हुई। मुझे पता चलता है कि आज आचार्य जी का जन्म दिवस है और वे पदार्पण कर रहे हैं जीवन के पचासवें वर्ष में। मैं भी 'जीवेम् शरद : शतम्', कहकर उनका अभिनन्दन करता हूं किन्तु कुछ क्षण फिर उन्हें देखता ही रह जाता हूं और कह उठता हूं कि पच्चीस-तीस वर्ष के गठीले युवक का-सा बदन समेटे इस व्यक्ति को क्या कोई पचास का मान सकता है? निश्चय ही, यह दसवां आश्चर्य था। उनके आकर्षण का रहस्य उनकी नियमित योग साधना में

दिन खून के हमारे, यारो भूल न जाना।
सूनी पड़ी कबर ये, इक गुल खिलाते जाना॥

है। हिन्दुओं का पवित्र तीर्थ स्थान वृन्दावन आर्य समाज का भी सिद्धपीठ है। वहां महात्मा नारायण स्वामी द्वारा स्थापित गुरुकुल ने अनेक व्यक्तित्व निर्मित किए। उन्हीं में आचार्य श्री भगवान देव का विशेष स्थान है। वहां आपने भारतीय संस्कृति के विभिन्न पक्षों को आत्म-सात किया और अपने प्रभावी व्यक्तित्व के माध्यम से आज आप उन्हें समस्त आर्य संसार में प्रसारित कर रहे हैं। आपके प्रभाव के कारण अनेक व्यक्ति माँस-मदिरा छोड़कर गोसेवा का पाठ सीख चुके हैं। इन तत्वों को आपने नारा नहीं, आदर्श माना। तभी आप ये सद्गुण अन्य व्यक्तियों तक पहुंचाने में समर्थ हुए। ढोंग-ढकोसला, छल प्रपंच, कथनी और करनी का अन्तर सदा से मनुष्य को ठगता आया है। मैं बार-बार अनुभव कर रहा हूं पिछले तीन दिनों से, कि आचार्य जी ने मनुष्य के इस दुर्गण को मिटाने का संकल्प ले लिया है और कई अवसरों पर इसे मिटाने में वे कामयाब भी हुए हैं।

दोपहर 12.00 बजे जब हम सब आचार्य जी के साथ कार निकोवार में वहाँ के गेस्ट हाउस में बैठे सामने गरजते समुद्र की अतुल गहराई को देख रहे हैं, तब मैं अनुभव करता हूं कि आचार्य जी के इस पचासवें जन्मदिन की शुभ घड़ी में सागर की अथाह जलराशि न केवल ढेर सारे मोती बिखेर रही है, अपितु संकेत दे रही है कि हमारे सामने खड़े इस व्यक्तित्व में देश के विकास की अनेक सम्भावनाएं गहराइयां निहित हैं। अभी थोड़ी देर पहले निकोबारी लोगों द्वारा दिए गए स्वागत सम्मान के उत्तर में आचार्य जी ने देश और राष्ट्र की विशालता के सन्दर्भ में जिस एकता की चर्चा की है, मानो वह आचार्य जी के अन्तराल में गहरे रूप से बैठी प्रवल देश-भक्ति का ही द्योतक है और वही इस समय सामने विस्तृत नीली विशाल जलराशि के रूप में आ खड़ी हुई है। निश्चय ही, आचार्य जी के समान तेजस्वी व्यक्तियों की देश को अपेक्षा है और भारतीमाता भी सदा इन्हीं की प्रतीक्षा करती रहती है। प्रभु से प्रार्थना है कि वे न केवल आचार्य जी को चिरायु बनाएं बल्कि उनके माध्यम से देश और संसार दोनों की प्रगति में विशेष दिशाएं निर्धारित हों :—

आएँ पुनः कृष्ण देखें दशा तेरी
राणा शिवाजी का फिर से उदय हो।

तीन चार दिनों में मैंने बहुत कुछ जाना है, आचार्य जी को; किन्तु उनकी मुखाकृति में से जिस मनीषी की छवि झाँक रही है, वह मुझे अभी भी स्पष्ट नहीं हुई है। क्या ऊपर का चित्र देखकर आपने भी मेरे प्रश्न का उत्तर पाया है? आचार्य जी जिस समिति के संयोजक हैं, उसके दौरे के क्रम में एक और दिन [4.2.84] निकल जाता है किन्तु मुझे मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं मिलता। आज दिनांक 5 फरवरी, 1984 है। आचार्य जी और समिति दोनों आज के हवाई जहाज से फिर मद्रास वापस चले जाएंगे। मैं स्नान करके पूजा में बैठा हूं। सोच रहा हूं आचार्य जी की मुखाकृति को लेकर। मेरे मन में जो बात उठी है, क्या उसका समाधान नहीं होगा? दूसरे शब्दों में, क्या मैं उस मनीषी को नहीं जान सकूंगा, जिसकी छवि आचार्य जी की मुखाकृति में समाई है। तभी 'क्लेश' की तरह मेरे मस्तिष्क में उतर आता है स्वामी विवेकानन्द जी का वह चित्र, जिसमें वे एक भव्य कुर्सी पर कोट और वास्केट पहने बैठे हैं और जिसमें तेजस्वी, चौड़े तथा सौम्य चेहरे के ऊपर बीच में सीधी मांग से दोनों ओर लहराते केश, अंग्रेजी कट के साथ संवरे हुए हैं। स्वामी विवेकानन्द जी के इस चित्र के साथ अब आप भी मिलाइये आचार्य जी की मुखाकृति को कितनी अदभुत् समानता है दोनों में। हमारी शुभकामना है कि स्वामी जी और आचार्य जी की मुखाकृति की यह समानता कृति के स्तर भी पूरी खरी उतरे और आचार्य जी के रूप में हम स्वामी विवेकानन्द जैसे तेजस्वी स्वरूप के फिर दर्शन कर सकें।

आचार्य जी की स्वर्ण जयन्ती के इस वर्ष में मैं उन्हें नमन करता हूं उन्हें प्रणामांजलि अर्पित करता हूं।

□□

यदि देश के हित मरना पड़े, मुझको सहस्रों बार भी।
तो भी न मैं इस कष्ट को, निज ध्यान में लाऊं कभी॥

मानवीय आलोक के प्रदीप

आचार्य भगवान देव

डा० अरुण प्रकाश अवस्थी,
लेखक-पत्रकार कलकत्ता
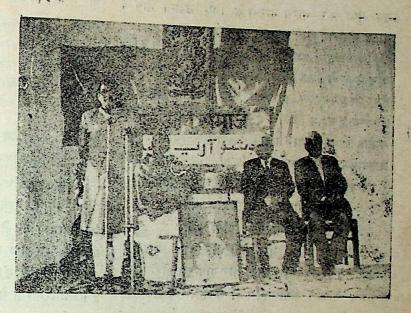
विश्व आर्य समाज की स्थापना करते हुए आचार्य भगवानदेव

घटना जनवरी 1981 की है। आम चुनाव होने वाले थे। प्रात: काल था। मैं अपने कमरे में बैठा कुछ लिख रहा था। सहसा अत्यन्त आकर्षक व्यक्तित्व के एक सज्जन ने प्रवेश किया। पहले तो मेरी समझ में ही नहीं आया कि किसी राजकुमार से सुन्दर यह सज्जन कौन हैं यद्यपि आकृति कुछ जानी पहचानी सी लग रही थी।

मुझे चकित होता देख वह मुसकराए और मेरे उठने के पूर्व ही मेरी बगल में चटाई पर बैठते हुए बोले 'मैं भगवान देव आचार्य।' मैं तो अवाक् हो गया।

किसी का किसी के घर में आना कोई बहुत बड़ी आश्चर्य जनक घटना नहीं है। पर ऐसी ही छोटी छोटी घटनाएं व्यक्ति की विशाल सहृदयता व अन्य मानवीय गुणों को प्रकट करती हैं। आचार्य भगवानदेव मात्र संसद सदस्य ही नहीं हैं, आप अनेक संसदीय समितियों में परामर्श दाता व उनके संयोजक हैं तथा कितनी ही सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। उस समय आप कलकत्ता के ग्रेट इस्टर्न होटल में ठहरे हुए थे। मुझे वहां भी बुला सकते थे।

उनका और मेरा परिचय भी एक रेल यात्रा में हुआ था। उस समय ना मैं उनके आकर्षक व्यक्तित्व, शालीनता व बातचीत की शैली से अत्यधिक प्रभावित हुआ था। उन्हें अपनी पुस्तक 'वन्दनीया युगे युगे' भी समर्पित की थी बात आई और गई हो गई। मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था कि रेल यात्रा का परिचय एक स्थाई सुदृढ़ व मधुर सम्बन्ध में बदल जाएगा।

सिन्धुपति महाराज दाहिर पर मेरा उपन्यास दैनिक सन्मार्ग में (धारावाहिक) प्रकाशित हो रहा था। आचार्य उसे पढ़ते थे और उन्होंने निः संकोच भाव से स्वीकार किया था कि—"मैं उपन्यास से इतना अधिक प्रभावित हुआ कि मिलने का लोभ संवरित न कर सका।" एक राजनेता की साहित्य के प्रति इतनी अनुशक्ति वास्तव में एक आश्चर्य ही है।

लेकिन आचार्य जी ने जब मुझे अपनी पुस्तकों का एक सेट दिया तो मेरा भ्रम दूर हो गया। उन्होंने अब तक 40 से भी अधिक अमूल्य पुस्तकें लिखी हैं। कई पुस्तकों के तो अनेक संस्करण भी हो चुके हैं। उनका सम्पूर्ण सृजन मावता राष्ट्र, एवं व्यक्ति के सुष्ठु निर्माण की एक युगीन प्रतिज्ञा है वह राष्ट्र व समाज की विरूपताओं को युगानुकूल श्रृंगार देने का अमृत संकल्प है और है एक ऐसे मानव के निर्माण का अमोघ मंत्र जो शरीर एवं मन से

कल का दिन किसने देखा है, आज का दिन खोएं क्यों ?
जिन घड़ियों में हंस सकते हैं उन घड़ियों में रोए क्यों ?

उसे पुष्ट कर भारत भारती के लिए उदान्त भाव से सादर सोल्लास समर्पित करने हेतु प्रेरित कर सके।

योग शास्त्र पर आपकी अव्याहत गति है। मैंने जब योग सम्बन्धी उनका पढ़ा तो मुझे भी वैसा ही आश्चर्य हुआ जैसा लक्ष्मण को राजा जनक का परिचय पाकर हुआ था। महर्षि केशवदास ने 'राम चन्द्रिका' में इसका सजीव चित्रण किया। महर्षि विश्वामित्र राजा जनक की आध्यात्मिक उपलब्धियों का परिचय राम-लक्ष्मण को देते हैं। सर्वज्ञ राम तो चुप रहते पर लक्ष्मण पूछ बैठते हैं —

जनु जोग वंत, जनु राज वंत।
उनको उदोत, केहि भांति होत।

जो राजा भी है और योगी भी उसका अभ्युदय या उत्कर्ष कैसे हो सकता है? राजा और योगी दो विरोधी तट हैं। ऐसे तट जो कभी नहीं मिल सकते। एक ही व्यक्ति में राज योग व अध्यात्म योग कैसे सम्भव है? अगर कोई यत्न भी करता है तो उसका व्यक्तित्व अवश्य ही बिखर जाएगा पर राजा जनक का व्यक्तित्व तो कनक केदार की भाँति समुज्जवल है। विश्वामित्र इसका रहस्य बतलाते हैं। आचार्य जी के सम्पर्क में आने पर यह रहस्य स्वतः प्रकट हो जाता है।

आचार्य जी वस्तुत: अविनश्वर भारतीय संस्कीन के उस हीरक अध्याय के अभिनव संस्करण हैं जो सिन्धु महानद की घाटी में सहस्राब्दियां पूर्व कालजयी आर्यों द्वारा रचा राचाय और यह निभ्रन्त सत्य हैं कि हमारी आर्य संस्कृति में सिन्धु धरा की चन्दन वंदना माटी की सुवान है और है सिन्धु महान की उत्ताल उर्मियों का साम संगीत। आचार्य जी उसी पीयुष परम्परा के सजग प्रहरी ही नहीं अपितु प्रबुद्ध व्याख्या।

साहित्य मनीषी बाबू श्यामसुन्दर दास ने कहा है कि इस बात का महत्त्व नहीं है कि किसी व्यक्ति ने कितनी सफलता प्राप्त की है, बल्कि महत्त्व इस बात का है कि उसने कैसे और किन परिस्थितियों में सफलता प्राप्त की है। हम अनुकूल हवा के साथ भी आगे बढ़ सकते हैं और येन केन प्रकारेण के अपनी प्रगति के साधनों का प्रबन्ध करके भी वांछित सफलता पा सकते हैं। पर जीवन संग्राम का असली विजयी योद्धा वह होता है जो बढ़ने के लिए हवा के रूख का मोहताज नहीं होते हैं तथा प्रतिकूलताओं को भी चुनौती देता हुआ उत्कर्ष के स्वर्ण शिखर पर अपनी विजय वैजंयती फहराता है। आचार्य भगवान देव ऐसे ही युग प्रेरक उत्कर्षमय व्यक्तित्व हैं, जिनका आत्म मंत्र है—

जीवन का यही तकाजा है,
बीहड़ में पंथ बनाए जा।

प्रबुद्ध राष्ट्र-चिन्तक एवं राजनेता स्व० जयराम दास दौलत राम के पश्चात् आज सिन्धी समाज के निर्विवाद नेता आचार्य जी ही हैं उनके संघर्षमय कर्मप्रधान जीवन का शुभारम्भ आर्य समाज से उनकी सम्पृक्तता के साथ होता है। आर्यों की यायावरी प्रवृत्ति उनकी मूल प्रवृत्ति है। किशोरावस्था से ही यह महान् राष्ट्र संत किसी अज्ञात अन्तर-प्रेरणावश अनजाने लक्ष्य की ओर गतिशील होता है। महान् सम्राट अशोक राणा प्रताप व शिवाजी के आदर्शों को अपना जीवन साध्य बनाने वाला यह तरुण तपस्वी उस स्वर्ण मण्डित पथ का पथिक है जिसकी अभ्यर्थना मैंने अपने खण्ड काव्य 'रावी-तट', में की है—

एक हाथ विश्व प्रेम का
खिलता हुआ कमल हो।
किन्तु दूसरे में आयुध का
पौरुष का संबल हो।
तभी राष्ट्र की चल सकती है
पावन नीति अहिंसा।
ग्रस लेगी अन्यथा तुम्हें
जग की निर्मम प्रतिहिंसा।
आचार्य जी भली भांति जानते हैं कि
सिंह अहिंसा व्रतो यहां
रह सकता है जीवन भर।
किन्तु अहिंसक शशकों का
जीवित रहना है दूभर॥

यदि राष्ट्रीय क्षेत्र में उनके आदर्श महान् अशोक राणा प्रताप व शिवाजी हैं तो आध्यात्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र में समर्थ गुरू हम एवं स्वामी दयानन्द हैं। इस प्रकार

गुणी पुत्र एको भलो, सौ मूरख भाय नहीं।
एक चन्द्र तम को हरे, शत तरिन नहीं जाय॥

आप शास्त्र शस्त्र दोनों के इस जीवन की पूर्णयता की प्राप्ति हेतु आप वर्षों तक विभिन्न आश्रमों मठों व ज्ञान केन्द्रों में भटकते रहे हैं। जीवन जगत की अन्यतनसिद्धि के लिए भटकने वाले इस युवा कर्म योगी को देखकर कोई ज्योतिषी भी भविष्य वाणी नहीं कर सकता था कि यह यायावर अलमस्त फकीर राजनीति से सम्बन्धित किसी दायित्व का भार सफलता पूर्वक वहन कर सकता है। पर आचार्य जी की डायवामिक परसनलिटी ने सारी प्रचलित मान्यताओं को झुठलाकर एक पूर्ण मानव की अभिनव परिभाषा गढ़ दी।

आप 12 वर्षों तक टंकारा (गुजरात : स्वामी दयानन्द की जन्म स्थली) स्थित महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट के प्रधान ही नहीं रहे अपितु सात वर्षों तक स्वामी जी के आदर्शों को विश्व व्याप बनाने का गुरुतर भार भी अपने वृषभ स्कन्धों पर संभाले रहे। गुजरात को बृहत्तर महाराष्ट्र से पृथक कर उसे एक मौलिक स्वरूप निर्मित करने के राष्ट्रीय उद्देश्य से भी सक्रिय भूमिका निभाई। और जन साधारण को उस समय चकित हो जाना पड़ा जब पाटन की नगर पालिका के चुनाव में आपने दो स्थानों से सफलता ही नहीं व बल्कि एक प्रभावशाली मुसलमान प्रत्याशी को मुस्लिम बहुल क्षेत्र से पराजित कर दिया।

सफलता-के स्वर्णिम कीर्तिमान गढ़ने वाले आचार्य जी ने एक बार फिर समस्त राष्ट्रीय नेताओं को चकित कर दिया जब उन्होंने अजमेर से लोक सभा की सीट भारी बहुमत से जीत ली। आप संसदीय राजभाषा समिति के संयोजक हैं पर आप भली भांति जानते हैं कि हिन्द की संस्कृति सिन्ध की ही संस्कृति है। सिन्ध के प्रति प्यार हिन्द के प्रति प्यार है। इसीलिए 26 अप्रैल, 1982 को संसद में आपने सिन्धी भाषा में भाषण देकर भारत का सम्बन्ध प्राचीन आर्य संस्कृति से जोड़ दिया। आपके ही भगीरथ प्रयत्नों से सिन्धी भाषा को गौरवम स्थान मिला। आज आकाशवाणी से सिन्धी के जो नियमित कार्यक्रम प्रसारित होते हैं उनके पीछे आपकी ही अटूट लगन है।

भारत की प्राचीन स्वर्णिम परम्परा की रक्षा के लिए ही आपने विश्व सिन्धी समाज का गठन किया। हमें गर्व है कि इस स्वार्थमय युग में भी ऐसा निस्पृह तरुण योगी राष्ट्र को वरदान स्वरूप मिला है।

'चरैवेति चरैवेति' का अमृत मंत्र आपका आत्मयंत्र है। आचार्य जी अपने संघर्ष पूर्ण, सृजनशील एवं सतत विकासान्मुख जीवन के 50 वसंत पूर्ण करने जा रहे हैं इस पर सहसाविश्वास नहीं होता है। आपमें नवयुवकों का सा उत्साह, उमंग एव स्वर नवीनता है। आपका अभिनन्दन सृजन का अभिनंदन है। आपका अभिनन्दन राष्ट्र की तरूणाई का अभिनन्दन है। आपका अभिनन्दन अविनश्वर भारतीयता का अभिनन्दन है। आपकी दृष्टि स्नेह करुणा सौहार्द, सौमनस्य, उदारता और उत्सर्ग के महिमा भावों को खोज रही है और तदनुरूप सृजन ही उसका लक्ष्य है।

मैं अपने अन्तर की राशि-राशि श्रद्धा ऐसे तरुण तपस्वी के चरणों में सादर समर्पित करता हूं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप विकास पथ में आने वाली प्रत्येक बाधा को पारकर विजयश्री का वरण करते रहेंगे क्योंकि आप भी तो यही मानते हैं—

चला जाता हूं हंसता खेलता मौजे हवादिस से
अगर आसानियां हों जिन्दगी दुश्वार हो जाए।

बड़े बड़ाई न करें, बड़े न बोलें बोल।
रहिमन हीरा कब कहै, लाख टका है मोल॥

आचार्य भगवानदेव :

जैसा हमने जाना

श्रीमती भूषण भारती
एम० ए० बी० एड०

आज से ठीक नौ वर्ष पूर्व अर्थात् जनवरी, 1974 में श्रद्धेय आचार्य भगवानदेव जी का जब हमारे परिवार से परिचय हुआ उस समय आचार्य भगवानदेव को हमने एक कर्मठ समाज सेवी, युवा आर्य नेता एवं सिद्धान्त प्रिय निष्ठावान व्यक्ति के रूप में पाया। जिस प्रकार मेंहदी अपना रंग समय पाकर छोड़ती है ठीक उसी प्रकार जैसे-जैसे समय व्यतीत होता गया वैसे-वैसे आचार्य जी के व्यक्तित्व रूपी पुष्प को अनेकानेक पंखुड़ियां हमारे समक्ष खुलती चली गयीं। अन्ततः वह शुभ दिन भी आया जब जनवरी, 1980 में आचार्य जी अजमेर निर्वाचन क्षेत्र से लोकसभा के लिए संसद सदस्य निर्वाचित हुए। लगा जैसे राजनीति इन्हें पाकर धन्य हो उठेगी, दूसरी ओर आचार्य जी का व्यक्तित्व भी राजनीति की गरिमा से गौरवान्वित हो उठा।

आज जब अधिसंख्य उम्मीदवार राजनीति में सार्वजनिक सेवा की वृत्ति से नहीं अपितु सत्ता प्राप्त करने और सत्ता के द्वारा पैसा बनाने के उद्देश्य से राजनीति में आते हैं, ऐसे समय में राजनीति के आकाश का यह सितारा धूम्रकेतु की भान्ति अपनी अनोखी आभा से, अपने एक नए अन्दाज से दमक रहा है। लालच जिसे छू नहीं गया हो। लोग एवं अन्य दुष्प्रवृत्तियां जिसके पास फटकती तक नहीं हों, जिनके चेहरे पर न झेले जा सकने वाला ओज, वाणी में गाम्भीर्य, हृदय में साहस, कर्म में आत्मविश्वास एवं निष्ठा हो उस नरसिंह को भला कौन अपने निश्चय से डिगा सकता है ?

आज भारत को ऐसे तपः पूत मनीषी व्यक्तियों की आवश्यकता है जो भारत माता की आजादी के सजग प्रहरी हों, एवं सत्यम् शिवमं सुन्दरम् की साक्षात् प्रति मूर्ति हों।

ऐसे शुभ अवसर पर हम सब की यह हार्दिक मनोकामना है कि ईश्वर को ऐसा कर्मनिष्ठ व्यक्ति देश के जन-सागर में अनन्त वर्षों तक द्वीप-स्तम्भ की भांति भटके हुए मानस को दिशाज्ञान कराता रहे।

इनकी उपलब्धियां, इनके द्वारा दिए गए उपकार कहां तक गिनायें, मैं तो कहूंगी कि इनका समग्र जीवन ही मानो हम सब के लिए एक उपलब्धि है।

खुदी को कर बुलन्द इतना कि हर तकदीर से पहले।
खुदा बन्दे से खुद पूछे बता तेरी रजा क्या है।।

आचार्य जी

कुन्दन बनकर

निकले

श्री सोमनाथ मरवहा एडवोकेट
नई दिल्ली
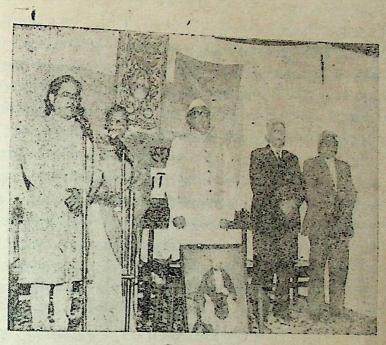
विश्व आर्य समाज की स्थापना के अवसर पर श्री सोमनाथ जी मंच पर

आचार्य भगवान देव के साथ मेरा पहली बार सम्पर्क आज से 26 साल पूर्व टंकारा महर्षि दयानन्द की जन्म भूमि में हुआ था। टंकारा के वार्षिक उत्सव पर उनका कार्य इतना सराहनीय था, कि ऐसा प्रतीत होता था कि यह व्यक्ति, अनथक कार्य करता था, लोगों के आवास का प्रबन्ध करना, लंकर की देखभाल करना, प्रात: काल व सायं यज्ञ का सारा प्रबन्ध करना। ऐसा मालूम होता था कि सब कार्य इन्हीं के ही जिम्मे थे। इसी लगन के साथ जो दिन रात वहां काम किया, इसी तरह मैंने उनको बड़ौदा आर्य कन्या गुरुकुल में 1956-60 में काम करते देखा, और आनन्द प्रिय जी के एक बड़े निकट सहयोगी थे। तबसे इस नवजवान के विषय में मेरे मन में बहुत आदर व सम्मान हुआ। यह नवजवान हर कार्य को, हंसते हंसते खुशी से जब करता दिखायी देता था और जबकि इनको यौगिक क्रियायें करते, व ब्रह्म चारी व अन्यों को सिखलाते देखा तो और भी इनके विषय में कि किस तरह इस व्यक्ति से आर्यसमाज का ज्यादा कार्य लिया जा सके तीव्र इच्छा होती गयी। यह कार्य उनके युवा अवस्था में ही देखने को मिले। और पंजाब में जब "हिंदी रक्षा आन्दोलन" आर्यसमाज ने सन् 1957 में किया तो साढ़े तीन माह की कारावास भी आचार्य जी को भुगतना पड़ा। बहुत से आर्यसमाज के व्यक्तियों को शायद आचार्य के विषय में पूरी जानकारी आज भी नहीं है। इसलिए यह उचित ही है कि जो जानकारी इनके विषय में इनके अभिनन्दन ग्रन्थ में दी जा सके वह उचित ही होगी व एक नौजवान कार्यकर्ता के कार्य की प्रशंसा हो सकेगी। तथा औरों की प्रेरणा मिलेगी। आज तक लोगों की धारणा है कि पंजाबी हर मुसीबत को सहने में और फिर अपने पांव पर खड़ा होने की शक्ति रखता है और इसी कारण लोगों की यह धारणा रही कि भारत की तकसीम के कारण लाखों पंजाबी अपने घेरों से उस हिस्सा से निकले जो कि पाकिस्तान में चला गया और उजड़ कर अपना सारा सरमाया खो जाने के पश्चात् खून खराबा में अपने अपने रिश्तेदारों के कत्ल होने के पश्चात् बगैर किसी सरमाया के कारोबार से वंचित होकर भारत में आकर बसे और शीघ्र ही अपने पांव पर खड़े हो गये। आचार्य

वह देश सदा ही अमर है, वह माता सदा निहाल।
जिस भाग्यवती की गोद में, संजय सरीखा लाल ॥

भगवान देव जी भी पंजाबियों की तरह नवाबशाह [सिंधी] प्रान्त से अपने माता पिता भाई बहनों के साथ अभी बालकपन में ही उजड़ कर भारत की सीमा में प्रवेश किया और ब्यावर में जो कि राजस्थान में पाकिस्तान की सीमा के करीब था, आकर बसे। पाठक खुद ही अनुमान लगा सकते हैं कि आचार्य भगवान देव जिनकी जन्मतिथी 3-2-1935 को है, कोई साढ़े बारह वर्ष की आयु में उजड़कर यहां आए। क्या क्या आर्थिक कठिनाईयां होंगी। जबकि उनके माता पिता, पांच बहनों व पांच भाइयों के एक कुनबे को उजड़ना पड़ा और एक नई जिन्दगी की शुरूआत हुई। ऐसे बालकपन में भी अपने पांव पर खड़े होने का निश्चय करके यह अपने 'माता-पिता व सम्बन्धियों को छोड़कर गुरुकुल वृन्दावन में पहुंच गये। और इस तरह 1952 में जब उन्होंने घर छोड़ा, तो अभी नाबालिग ही थे और तीन वर्ष तक गुरुकुल वृन्दावन में व्यतीत किए।

मैंने इनसे यह पूछने की आवश्यकता महसूस नहीं की, कि आर्यसमाज का रंग इन पर कैसे चढ़ा। कब यौगिक क्रियायें सीखी और कहां तक पढ़ाई की। यह पाठक खुद ही अनुमान लगावें कि, इस व्यक्ति ने अपने छोटे से काल में कहां से कहां तक पहुंचने की क्षमता प्राप्त की। यह वही व्यक्ति कर सकता है जिसने एक खास ध्येय अपनी जिन्दगी में बना लिया है। कन्या गुरुकुल बड़ौदा में 1959 से 1960 तक और 1960 से 1970 तक टंकारा में (बल्कि 1958 से ही) आश्रम अधिष्ठाता बन जाना यह कोई साधारण बात न थी। जिस-जिस से उन्होंने सम्पर्क किया, उन पर अपनी छाप लगाई। जब तक सेवा भाव न हो दूसरे व्यक्तियों को अपने समीप खींचा नहीं जा सकता।

जब लाला दौलतराम जो दौलतराम कालेज वालों ने इच्छा प्रकट की, कि उन्हें कोई नवजवान आर्यसमाजी, जो कि उनको यौगिक क्रियाएं सिखलाये, तो उस समय उनकी आचार्य भगवान देव पर दृष्टि पड़ी और यह लाला दौलतराम जी के निवास स्थान पर ही रहने लग गये, क्योंकि आर्यसमाज का प्रचार इस नवजवान का ध्येय था, वो इस अवसर को सही ढ़ंग से इस्तेमाल किया और लाला दौलतराम व उनके धर्मपत्नी, लड़के व लड़कियों पर आर्यसमा[ज] की छाप लगाने में आचार्य जी कामयाब हुए और इ[न] की प्रेरणा से लाला दौलतराम की धर्मपत्नी व ब[च्चों] ने आर्यसमाज की स्पेशल ट्रेन में दूसरे यात्रियों के सा[थ] टंकारा की भी यात्रा की और इसी तरह स्पेशल ट्रे[न] जिसका ध्येय आर्यसमाज का प्रचार करना था, उन प[र] समाज का गहरा प्रभाव पड़ा। सेवा करने को इससे ज्या[दा] और क्या, उदाहरण दिया जा सकता है, कि जब स्पे[शल] ट्रेन की छोटी पटरी की बजाय बड़ी पटरी की ट्रेन [में] यात्रियों को बिठाना था, तो यात्रियों का सामान उठा[कर] दूसरी स्पेशल ट्रेन में भी ले जाने में प्रसन्नता प्रकट क[रते] थे। इस तरह टंकारा और बड़ौदा कन्या गुरुकुल [में] एक प्रकार से इस नवजवान को मैंने सर्वेसर्वा पाया [।] [उन]में से एक वर्ष वो था जबकि आनन्द स्वामी जी महारा[ज] टंकारा पधारे और उन्होंने अपने पैन व ऐनक तक [की] बोली आर्य जनता से मांगी और इस तरह हजारों [रुपयों] से उनकी कलम उनके प्रेमियों ने खरीद की।

मैं उस अवसर की तलाश में था कि इस नौजवा[न] को कोई आर्यसमाज का विशेष कार्य सौंपा जाये। [वह] अवसर मुझे 1968 से मिला। उस वर्ष सार्वदेशि[क] आर्य प्रतिनिधि सभा का चुनाव हुआ और पद्मभूषण ड[ा.] दुःखनराम, पटना निवासी जो कि उन दिनों राष्ट्र[पति] के विशेष डाक्टर भी थे, सार्वदेशिक सभा के प्रधान [पद] के लिए चुने गये और उनको बाकी अधिकारियों [को] चुनने व अन्तरंग सदस्य भी मनोनीत करने का सर्वसम्[मति] से अधिकार दिया गया तो मेरे सुझाव पर कि आचा[र्य] भगवान देव को सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा का उपम[न्त्री] मनोनीत किया जाये, उन्होंने सहर्ष मान लिया और [जब] बाकी अधिकारियों की घोषणा की गई तो आचार्य भग[वान] देव सभा के "उपमन्त्री" लिए गए और तब से लें[कर] 1975 तक वो इस पद पर कार्य करते रहे।

आचार्य भगवान देव कलम का भी धनी है। [जब] लाला दौलत राम जो का देहावसान 1-10-71 को [हुआ] तो उसके शीघ्र ही इन्होंने लाला दौलतराम जी के [विषय] में एक ग्रन्थ की शक्ल में पुस्तक लिखी और छप[वाई]

जब तक खिलता रहे बागों में फूल गुलाब का प्यारा।
तब तक जिन्दा है धरती पर संजय नाम तुम्हारा॥

जब तक आचार्य भगवान देव लाला दौलत राम जी की कोठी जो कि दिल्ली यूनिवर्सिटी के समीप ही थी, में रहे। वह आर्यसमाज के बहुत समीप गुप्ता जी को ले आए और कई फंक्शन उनकी कोठी पर बड़े पैमाने पर होते रहे और उन्हीं की कोठी सार्वदेशिक सभा के आफिस के लिए सोफासेट भी भिजवाया गया जो कि आज तक उनकी याद दिलाता रहता है।

जब पूज्य आनन्द स्वामी जी का देहावसान 24-10-77 को दिल्ली में हुआ तो आचार्य भगवान ने उनके विषय में एक स्मारिका दिसम्बर 1977 में ही तैयार करके छपवा दी। उन्हीं के कारण मिलाप परिवार से भी इनका बड़ा घनिष्ठ संवंध रहा और मिलाप परिवार और मिलाप अखबार में आचार्य भगवान देव के यश को फैलाने में भी अपना सहयोग दिया। कुछ समय ऐसा आया कि जब लाला दौलत राम की मृत्यु के पश्चात्, इन्हें अपना वहां का निवास स्थान छोड़ना पड़ा, तब इनका सम्पर्क मास्टर शिवचरण दास व उनके सुपुत्र राजीव से हो गया। इन्होंने अपना सामान तो मास्टर जी के घर पर छोड़ा और कुछ समय लोनी जो कि शाहदरा के समीप यू० पी० प्रान्त की सीमा पर है, निवास किया।

आचार्य जी की शादी 8 फरवरी 1974 में पंजाबी बाग दिल्ली में आई। उनकी धर्मपत्नी श्री रामकृष्ण भारती की वहन है। भारती जी कई वर्षों तक आर्यसमाज सोहन गंज दिल्ली के मंत्री रहे और वे जब 1953 से अपने मकान 8, मलका गंज में पहाड़ गंज से चला गया तो मैं सोहन गंज आर्यसमाज का सभासद बना। तभी से ही मेरा भारती जी से संपर्क हुआ और इस रिश्ते में भी मुझसे उन्होंने सम्पर्क किया। श्री जी० एल० दत्ता जी जो कि कई वर्षों तक डी० ए० वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी के प्रधान रहे का भी आर्शीवाद इस शादी के अवसर पर आचार्य भगवान को प्राप्त हुआ। आचार्य जी को महाशय कृष्ण, भुवन, जोरबाग में स्वामी श्रद्धानन्द स्मारक ट्रस्ट का भी कुछ वर्षों तक कार्य करने का अवसर मिला। यह 1976 की बात है।

जैसा कि मैंने ऊपर लिखा है, आचार्य भगवान देव कलम का धनी है और जब पं० प्रकाश वीर शास्त्री का देहावसान 23-11-78 को एक ट्रेन दुर्घटना में हुआ जिससे आर्यसमाज को बड़ी हानि हुई तो प्रकाशवीर जी की जीवनी भी आचार्य जी ने आर्ट पेपर में मई 1979 में काशित करा दी। और इस तरह दर्जनों पुस्तकें इन्होंने काशित की और अपनी यौगिक क्रियाओं के विषय में भी पुस्तकें बनाकर आर्यसमाज के विशेष व्यक्तियों के घर यह पुस्तकें निःशुल्क भेंट करते रहे। स्वामी दयानन्द सरस्वती पर भी निर्वाण शताब्दी के अवसर पर पुस्तक प्रकाशित की है और उसी अवसर के लिए जो यह निर्वाण शताब्दी नवम्बर 1983 में अजमेर में वनायी गयी तब महर्षि दयानन्द और उनके अनुयाई तथा भारत के अमर क्रान्तिकारी दो पुस्तक तथा भजनों के कैसट तैयार करवाए गए और यह सराहनीय कार्य किया।

एक अवसर पर आर्यसमाज की स्पेशल ट्रेन के यात्रियों को ब्यावर भी लेजाया गया। वहां भी आचार्य भगवान देव को सर्वेसर्वा पाया और ऐसा प्रतीत होता था कि शायद इनका जन्मस्थान ब्यावर ही है। यह आर्य समाज में एक त्रुटी रही है कि समय पर आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं का सहयोग प्राप्त करने के बजाय उनको आगे बढ़ने का अवसर नहीं दिया जाता और इससे उस व्यक्ति पर कुछ न कुछ विरोध की भावना प्रकट हो जाती है। मैट्रिक तक आपने पढ़ाई ब्यावर में की थी।

जितना विरोध अपनो ने आचार्य भगवानदेव के साथ किया, उतना ही आश्चर्य भगवान देव आर्यसमाज के काम में यिप्त होता गया। जैसा कि सोने को जितना ज्यादा जलाया जाए वह कुन्दन बन जाता है यही चीज मैंने आचार्य भगवान देव में देखो। जितनी जितनी मुखालफत-विरोध होता रहा उतना उतना ही वह ज्यादा चमकता रहा। विरोध होने के बावजूद भी जितना काम आर्यसमाज का लेखनी द्वारा उन्होंने किया है, वह बहुत कम व्यक्तियों ने किया होगा। यह आश्चर्य की बात है कि किस समय यह व्यक्ति अपनी लेखनी से काम करता है। हर महीने कोई न कोई नई पुस्तक आर्यसमाज को मिल जाती है। आनन्द स्वामी जी की इन पर बड़ी

सच्च कहो ऐ बुलबुलो ! किस बाग से आती हो तुम ?
है हमारे भी तुम्हें कुछ आशियाने की खबर ?

कृपा थी। और यह उनके अनन्य भगत थे। और इसी कारण आनन्द स्वामी जी का स्मृति ग्रन्थ इन्होंने तैयार किया। दर्जनों नहीं बल्कि सैकड़ों पुस्तकें आर्यसमाज के प्रचार व प्रसार व आर्यसमाज की वेदी पर जिन शहीदों ने अपने आपको नौछावर किया की याद ताजा रखने के लिए, पुस्तकें प्रकाशित की। मुझे दुःख से कहना पड़ता है कि अभी भी आर्यसमाज के कुछ नेताओं ने इस व्यक्ति के विषय में कि वह आर्यसमाज के लिए कितना उपयोगी हो सकता है महसूस नहीं किया। जबसे संसद सदस्य बने हैं, हर समय अपने भाषणों में और लोक सभा में आर्यसमाज के गुण गाये हैं और उसका नाम ऊंचा किया है। स्वामी दयानन्द की निर्वाण शताब्दी के विषय में कई वर्षों से तैयारियां हो रही थीं और निर्वाण शताब्दी जो अजमेर में मनाई गई इसके विषय में भी राय एक जैसी नहीं है कुछ का विचार है कि सफलता पूर्वक मनाई गई; परन्तु ज्यादा का विचार है जिस सफलता से मनायी जानी थी नहीं मनायी जा सकी। और उसका एक विशेष कारण जो जिसको मुझे कहने में संकोच नहीं है वो परोपकारिणी सभा के अधिकारियों का आचार्य भगवान देव से सहयोग प्राप्त न करने का कारण था। इस व्यक्ति का सिर्फ यही अपराध था कि उसके बेहांक होकर जिस किसी अधिकारी में नुक्स पाया उसको स्पष्ट कहा और इस कारण स्वामी ओमानन्द प्रधान परोपकारिणी सभा और श्रीकर्ण शारदा परोपकारिणी सभा के कारण इनका सहयोग न लिया गया। इस व्यक्ति ने यह साबित कर दिया कि किसी सम्मेलन को किस तरह सफलता पूर्वक मनाया जा सकता है ओर विश्व सिंघी सम्मेलन जो; दिल्ली में इन्द्रप्रस्थ स्टेडियम में मनाया गया वह आचार्य भगवान देव के व्यक्तिगत परिश्रम का फल था। सारे विदेशों में जाना सारे सिंघीयों [देश व विदेश] को इक्ट्ठा करना उस के लिए रुपया इकट्ठा करना, उसका इन्तजाम करना, यात्रियों के ठहराने का प्रबन्ध करना, जितना सफलता पूर्वक मनाया गया और जितना उसका रेडियो और टी० वी० पर प्रचार हुआ और राष्ट्रपति व प्रधान मन्त्री का सम्मेलन में आगमन पाकिस्तान के लिए एक सिरदर्द बना, और मेरे विचार में इसकी सफलता जब निर्वाण शताब्दी अजमेर के साथ मुकाबला किया जाए तो अवश्य मेव कहना पड़ेगा कि अगर अजमेर शताब्दी के अवसर पर आचार्य भगवान देव का सहयोग लिया जाता तो यह समारोह शताब्दी दसगुणा ज्यादा सफल होती।

मुझे यह जानकारी नहीं थी कि आचार्य भगवान देव सिंधी हैं। जब मैं टंकारा जाता तो ऐसा ही प्रतीत होता कि आचार्य गुजराती हैं, क्योंकि गुजराती भाषा में ही उनको बोलते सुनता और जब ब्यावर जाने का अवसर प्राप्त हुआ तो यह प्रतीत हुआ कि यह राजधानी है। परन्तु यह मुझे जानकारी नहीं थी कि वास्तव में आचार्य भगवान देव का जन्मस्थान पाकिस्तान के सिंध प्रान्त का है। यह अनुमान लगाना बड़ा कठिन है कि जिस व्यक्ति ने अपने 12 वर्ष की आयु में ही अपने जन्मस्थान सिंध प्रान्त को छोड़ दिया हो कितना उस स्थान के लिए कुछ प्रेम हो सकता है। इस बात की जानकारी तो उस समय हुई कि जब अजमेर की संसद की सीट आचार्य भगवान देव को मिली कि वहां के हल्का में सिंधी वोटर्स बड़ी तादाद में और इसी कारण सिंधीयों का इन्हें स्नेह प्राप्त हुआ और यह लोक सभा के लिए निर्वाचित हुए। और उस व्यक्ति को पराजित किया जो कि उस हल्का से संसद सदस्य चले आ रहे थे और जिनके पिताजी ने आर्यसमाज के कार्य की उस इलाके में धाक बांधी हुई थी व बहुत उनकी सेवाएं थी। मैं समझता हूं कि जो प्रेम सिंधी वोटर्स ने आचार्य भगवान देव को दिया उसी कारण ही भारत वर्ष के सब सिन्धियों को ही एक मंच पर इक्ट्ठा करने की योजना ही न बनायी बल्कि विश्व के सिंधियों को एक मंच पर इक्ट्ठा करने की योजना पी न बनायी बल्कि विश्व के सिन्धियों को एक मंच पर लाकर खड़ा कर दिया। कितना प्रेम और मान सिंधियों दृष्टि में आचार्य के लिए है। इसका अनुमान लगाने का अवसर मुझे तभी मिल गया जबकि 16 दिसम्बर 1983 को हैदराबाद में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन हैदराबाद में हुआ और सिंधियों की

कहने को संसार में सम्राट बड़ा है, और सुखी धनवान है।
सबसे बड़ा वही है जग में; जो होता बलिदान है।।

तरफ से आचार्य भगवान देव का स्वागत हुआ। ऐसा मालूम होता था कि किसी बड़े स्तर पर कोई फंक्शन हो रहा हो। सारे हैदराबाद के सिंधी अपने परिवार सहित वहां पर उपस्थित थे। उस स्वागत समारोह के पश्चात बहुत बड़े स्तर पर जलपान का पूरा प्रबन्ध था। मुझे इस फंक्शन के विषय में इसलिए यहां लिखने की प्रसन्नता है कि आचार्य ने अपने भाषण में आर्यसमाज के सिद्धान्तों की ही बार बार और महर्षि दयानन्द सरस्वती की प्रशंसा की व श्रद्धांजलि अर्पित करते रहे।

आर्य समाज के नेताओं ने ही आचार्य भगवान देव को ही समझने में गलती नहीं की बल्कि यही गलती गवर्नमेन्ट के अफसरों ने भी की और उस का निवारण अजमेर के संसद सदस्य का टिकट देकर उस गलती को दुरुस्त किया। किस हद तक ये व्यक्ति कांग्रेस के कार्य में उपयुक्त साबित हुआ ये मेरा विषय नहीं क्योंकि मैं किसी भी राजनैतिक पार्टी का आज तक चार आना का भी सदस्य नहीं रहा। परन्तु इस बात में लिखने में मुझे कोई संकोच नहीं है जिस किसी व्यक्ति ने भगवान देव जी को अपनाया वो इस बात को कभी नहीं भूला और यही कारण था जब संजय गाँधी की अकस्मात् मृत्यु 24-6-80 को हुई तो "संजय दर्शन" के नाम से एक पुस्तिका आचार्य भगवानदेव जी ने जुलाई 1980 में प्रकाशित की जब भी कोई अवसर मिला तो रेडियो पर आर्य समाज और उसके प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द के विषय में आर्य समाज का पक्ष सही ढंग से वर्णन किया। और ऋषि के चरणों में अपनी श्रद्धान्जलि अर्पित करते रहे।

पंडित प्रकाशवीर शास्त्री जी जिस समिति के सदस्य रहे उस समिति के आचार्य भगवानदेव जी अध्यक्ष हैं। इन्होंने जो संसद में पंजाब के अकालियों की हाल की गतिविधियों के विषय में अपने उद्गार प्रकट किए वो सराहनीय ही नहीं बल्कि इनकी निर्भयता और साफ साफ कहने के एक में एक प्रमाण मिलता है। और यही स्वामी दयानन्द जी महाराज का उपदेश था कि सच कहने में कोई हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिये। और दोषी व्यक्ति चाहे कितना ही बड़ा और प्रभावशाली या शक्ति शाली हो इसकी कोई परवाह नहीं करनी चाहिये। और दुर्बल से दुर्बल सच्चे सच्चे व्यक्ति की सहायता करना चाहिये। अभी पिछले साल गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय का कनवेशन अप्रैल 1983 में हुआ था और इन्हीं के सहयोग से राष्ट्रपति इस अवसर पर पधारे। निर्वाण शताब्दी के उपलक्ष्य में सार्वदेशिक सभा का निर्णय था कि इसको सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि के स्तर पर अजमेर में मनाया जाय। और इस सिलसिले में मुझे लाला रामगोपाल जी, प्रो० वेदव्यास जो प्रधान प्रादेशिक सभा, श्री मुलखराज भल्ला, उप प्रधान सार्वदेशिक सभा, के साथ आचार्य भगवानदेव वहां गये, जाते समय और आते समय जो मान रेलवे के अधिकारियों ने दिल्ली रेलवे स्टेशन व अजमेर रेलवे स्टेशन व रास्ता में दिया। उससे प्रतीत होता था कि आचार्य भगवान देव का उनके साथ समीप का सम्पर्क है। यही अनुभव हमने अजमेर में देखा जबकि गवर्नमेन्ट का हर अफसर इस कार्य में उनके कहने पर सहयोग देने में अपनी प्रसन्नता प्रकट करते रहे।

प्रभु करे ये व्यक्ति इसी लग्न से दीर्घ आयु और स्वास्थ प्राप्त करता हुआ आर्य समाज का कार्य करता रहे।

□□

यों सबको भुला दे कि तुझे कोई न भूले।
दुनिया ही में रहना है तो, दुनिया में गुज़र जा॥

काश सब पदाधिकारी ऐसे होते

—चन्द्रवती, चन्द्र कुंज
४, फ्रैन्डस कालोनी नई दिल्ली

१३ अगस्त १९७३ को नई दिल्ली रेलवे स्टेशन आर्य समाज व ऋषि दयानन्द की जयनाद से गूंज उठा क्योंकि सैकड़ों नह-नारी उस दिन मौरिशस आर्य महा-सम्मेलन में जाने के लिए रेल से बम्बई जा रहे थे। इस सफर में मेरे साथ मेरी बेटी कांता व बहू इन्द्रा थी। अनजाने लोगों से परिचय तथा बातचीत में कब रात हुई पता ही न चला भोजन के उपरान्त में शौचालय की ओर गई कि अचानक अन्धेरे में मेरा पैर किसी व्यक्ति से टकराया। फस्टक्लास के डिब्बे में इस समय यहां कौन घुस आया—यह सोचकर एकदम घबराई और पूछा—कौन है? यहां कैसे आये? उत्तर मिला—भैया। कोई नहीं मैं हूं भगवान देव बड़ा आश्चर्य हुआ—'क्या वही भगवान देव जी सार्वदेशिक सभा के सेक्रेटरी के रूप में पूरी तत्परता से सब यात्रियों के जाने की व्यवस्था में लीन थे? बिना आरक्षित सीट के यहां वारिश में भीग रहे हैं—क्यों? उनसे पूछा—आपकी सीट कहां है? शांत एवं गम्भीर आवाज में उत्तर मिला—भैया, हमारा क्या हम तो फकीर हैं—यात्रा में साथ जाने वाले फोटोग्राफर को सीट चाहिए थी, सो उन्हें दे दी, जहां जगह मिली सो गए, जैसा मिला खा लिया हृदय में ममता जागी और जबरदस्ती उन्हें अपने डिब्बे में लाकर एक सीट दिलवाई। मन में ख्याल आया काश। सब पदाधिकारो ऐसे हों तो समाज का, देश का, विश्व का कितना कल्याण हो।

एक छोटी सी घटना के बाद तो भगवान देव को देख कर लगा कि अपना बेटा साथ है तो चिन्ता किस बात की?

१४ अगस्त को बम्बई पहुंचे और सब यात्रियों को रहने की व्यवस्था धर्मशाला में की गई। भगवान देव तथा अन्य पदाधिकारी मौरिशस यात्रा के लिए पासपोर्ट संबंधी आवश्यक कार्यवाही करवाने के लिए मुगल लाइन्स के दफ्तर में रात को काफी देर तक लगे रहे। अगले दिन ५०० से अधिक या सभी यात्री मुगल लाइन्स के जहाज अकबर पर पहुंच गए परन्तु पोस्ट आफिस के अवकाश के कारण मेरा, मेरी बेबी काँता, बहू इन्द्रा व अन्य दो यात्रियों के पासपोर्ट बम्बई नहीं पहुंचे थे। हम धर्मशाला में बैठे प्रतीक्षा कर रहे थे और उधर भगवान देव अत्यन्त परेशान थे, कि क्या किया जाय? आखिर बुद्धिपूर्वक मनन करने के उपरान्त उन्होंने एक युक्ति निकाली और सार्वदेशिक सभा, नई दिल्ली में फोन पर पासपोर्ट का रजिस्ट्री नम्बर पूछा। नम्बर पता लगाकर पोस्टआफिस से विशेष आग्रह कर डाक ढूंढवाई—हमारे पासपोर्ट लेकर जल्दी से यथोचित कार्यवाही के लिए मुगल लाइन्स के दफ्तर गये: इसी बीच एक सज्जन हम सब को धर्मशाला से इन्दिरा डोक पर ले गए जहां से हम में गए जहाज, जो पहले ही हम लोगों की वजह से लेट हो गया था और चलने को तैंयार था। कुली वगैरह कोई नहीं था।

भगवान देव ने झटपट हमारा सामान अपने आप उठाया और जहाज पर पहुंचाया। सब यात्री उनकी हिम्मत, लगन तथा कार्यशीलता को देखकर अत्यन्त प्रभावित हुए।

मौरिशस यात्रा में तथा अन्य यात्राओं में भगवानदेव मेरे साथ ही रहे। जीवन में यात्राएं तो अनेक की हैं परंतु इतना अपनत्व, प्यार, ममता, सरल तथा निष्कपट व्यवहार शायद हर कोई नहीं कर सकता और यही कारण है कि भगवानदेव मेरे और बच्चों के तरह मुझे प्रिय हैं तथा हमारे परिवार के अभिन्न अंग हैं।

अब पचासवें वर्ष में प्रवेश करने के अवसर पर चिरंजीव भगवान देव का अभिनन्दन किया जा रहा है। मैं अपने बेटे को आशीष ही दे सकती हूं तथा परमपिता ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि इन्हें शक्ति, भक्ति तथा दीर्घायु प्रदान करे जिससे ये समाज, देश तथा विश्व की बन्धुता एवं परोपकार की भावना से भर दे तथा ऋषि दयानन्द के स्वप्न "वसुधैव कुटुम्बकम्" को साकार करें।

मर जाऊ मांगूँ नही, अपने तन के काज।
कारण पर उपकार के मोहे न आवे गाज॥

मनुष्य नहीं देवता

—पं क्षितीश वेदालंकार
सम्पादक — आर्य जगत नई दिल्ली

आचार्य भगवान देव का जीवन बहुमुखी है। विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करते हुए जो उन्होंने कीर्ति अर्जित की है वह सामान्य नहीं है। जब से वे राजनीति में आए हैं, तब से कभी-कभी यह भ्रम होने लगता है कि जिन बातों के लिए राजनीतिज्ञ लोग बदनाम हैं, कहीं उनमें भी वही बातें न आ गई हों यह कौन जाने क्योंकि आजकल राजनीति तो काजल की कोठरी के समान है, इसलिए उसमें घुसकर यदि कोई अपने हाथों पर बिना कालिख लगाए कोठरी से निकल आये, तो अपना भाग्य समझना चाहिए। परन्तु मैं भगवान देव के एक ऐसे रूप का उल्लेख करना चाहता हूं जिसका राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं।

सन् १९६८ की बात है। अब से १६ साल पहले मेरे एक निकटवर्ती रिश्तेदार का लड़का अचानक बीमार हो गया। काफी समय तक तो उसकी बीमारी का पता ही नहीं लगा। जयपुर के प्रसिद्ध सरकारी अस्पताल में उसका इलाज चलता रहा एक बार खून की बोतल चड़ाई गई, तो वह ठीक हो गया। अस्पताल से वापिस घर आ गया। सब सगे सम्बन्धी सन्तुष्ट थे कि अब बीमारी से पीछा छूट गया।

परन्तु महीने भर बाद अचानक फिर वही बीमारी हो गयी। फिर उसको जयपुर अस्पताल में ले गए। फिर खून की बोतल चढ़ी। वह फिर ठीक होकर आ गया। परन्तु लगभग महीने भर बाद ही पहले जैसी स्थिति हो गयी। उसे फिर अस्पताल में भर्ती करवाया। फिर वही सब इलाज चलते रहे। इस वार खून की बोतल चढ़ाने पर भी और अन्य दवाइयां देने भी पर बीमार को आराम नहीं हुआ।

उसके पेट में एक ऐसा फोड़ा हो गया जो लगातार रिसता रहता था और किसी भी तरह के इलाज से वह फोड़ा ठीक होने की बजाय और विकराल रूप धारण करता जाता था अन्त में डाक्टरों ने घोषित किया कि यह ल्यूकीमिया (रक्त कैंसर) की बीमारी है और इसका इलाज आसान नहीं है। जब जयपुर और अजमेर के अस्पतालों में उसका इलाज नहीं हो सका, तब अन्त में बीमार को लेकर रिश्तेदार दिल्ली आए और सोचा कि यहां और बड़े डाक्टरों को दिखाकर उसका इलाज कराया जाए।

तब मैं करोलबाग में रहता था। वहीं मेरे निवास-स्थान पर मेरे रिश्तेदार उस बीमार को लेकर आए नवम्बर मास का उत्तरार्ध होगा। यहां दिल्ली में कई डाक्टरों को दिखाया। मेरी पत्नी अत्यन्त निष्ठा से दिन-रात उसकी तीमारदारी में लगी रहती। पोटाशियम एर मैंगनेट से फेफड़े को धोना और फिर बड़ी सावधानी से मरहम पट्टी करना। परन्तु वह फोड़ा भरने का नाम नहीं लेता था। रोज ही रोज उसकी आकृति बिगड़ती जाए और उसका विस्तार बढ़ता जाए तथा पेट में लगातार दर्द कायम रहा।

मैं पहले ल्यूकीमिया का मतलब नहीं समझ सकता था। पर जब यह पता लगा कि यह रक्त कैंसर है, और यह लाइलाज है, तब मन में चिन्ता होना स्वभाविक था। हम अपनी ओर से जब सब तरह का इलाज करके हार गए और बीमार की हालत दिन-प्रतिदिन बिगड़ती गई तब अन्त में उसको इरबिन अस्पताल में, जिसका नाम अब जयप्रकाश नारायण अस्पताल हो गया है, भर्ती करवाया। वहां भी डाक्टरों ने अपनी ओर से सब तरह का प्रयत्न करके देख लिया। परन्तु बीमार की हालत में कोई सुधार नहीं हुआ।

डाक्टर लोग अपनी ओर से कभी निराशा की बात नहीं करते और बीमार को बचाने के लिए अपनी ओर से प्रयत्न भी नहीं छोड़ते। डाक्टरी विद्या ने चाहे जितनी तरक्की कर ली हो पर अभी तक रक्त कैंसर के सफ़ल इलाज की बात सुनी नहीं गई। डाक्टरों के आश्वासनों के अनुसार हम भी मन के गविसी कोने में यह आशा बांध

मरना भला है उसका, जो अपने लिए जिए।
जीता है वह जो मर चुका है, औरों के लिए॥

रहे कि शायद किसी दिन बीमार इस भयंकर बीमारी से छुट्टी पा सकें।

मैं और दिल्ली आए हुए अन्य रिश्तेदार लोग रोज ही अस्पताल जाते और देखते कि बीमार की हालत में कोई सुधार नहीं हो रहा है पर आशा का क्या करें? वह तो कभी पीछा छोड़ती नहीं। हमेशा दीपक की क्षणिक लो की तरह मन में टिमटिमाहट करती रहती है कि शायद ठीक हो जाए शायद ठीक हो जाए।

उन दिनों हमारे साथ ही आचार्य भगवान देव भी रोज अस्पताल जाया करते थे। परिचय की घनिष्ठता के अलावा उनकी उदारता, संवेदना और सहानुभूति ही इसमें मुख्य कारण थी।

एक दिन डाक्टरों ने कहा कि बीमार को खून चढ़ाना है, इसलिए हम में से किसी को बीमार के लिए खून देना चाहिए। डाक्टरों के इस प्रस्ताव से मन में फिर आशा बनी कि जैसे पहले खून चढ़ाने से बीमार कुछ दिन के लिये अच्छा हो जाता था शायद फिर वही स्थिति आ गई है कि खून चढ़ाया जाएगा तो बीमार कुछ दिन तक और जीवन धारण कर सकेगा। परन्तु डाक्टरों द्वारा रक्त देने का प्रस्ताव सुनकर सब रिश्तेदार स्तब्ध रह गये। पैसे खर्च करके खून चढ़वाने में किसी को कोई आपत्ति नहीं थी, परन्तु उस समय अस्पताल में पैसे से भी खून उपलब्ध नहीं था। डाक्टर बार-बार कह रहे थे। तुरन्त खून चाहिए। बीमार की हालत नाजुक है। अगर खून मिलने में विलम्ब हो गया आकस्मात तो अनहोनी भी हो सकती है।

उस बीमार लड़के के पिता, चाचा तथा भाई वहां अस्पमाल में मौजूद थे। डाक्टरों द्वारा तत्काल खून की मांग पर सब एक-दूसरे का मुंह देख रहे थे कि कौन आगे बढ़कर कहे कि मैं बीमार को खून देने के लिए तैयार हूं। परन्तु कोई आगे आने की हिम्मत नहीं कर रहा था।

जब खून देने की इस मांग को पूरा करने में निकट... निकट का रिश्तेदार भी झिझक रहा था, तब एक व्यक्ति जिसका कोई रिश्ता नहीं था और केवल मित्रता ... सहानुभूति के नाते से वह अस्पताल में हमारे साथ ... जाया करता था, वह व्यक्ति आगे आया और उसने डाक्टर... से कहा कि बीमार के लिए मैं खून देने के लिए तैयार ... आप मेरा खून ले लीजिए।

वह व्यक्ति और कोई नहीं, आचार्य भगवान देव थे।

जिस काम के लिए सगा पिता और सगा भाई ... पहल करते झिझकता रहा, उस काम को एक ऐसे व्यक्ति ने करके दिखा दिया जिसका भले ही इस परिवार के ... खूनका रिश्ता न हो, पर अपना खून बीमार के लिए दे... उसने अपने आप को रिश्तेदारों से बढ़कर साबित ... दिया।

मैं सोचता हूं कि आज के युग में यह सहृदयता, ... संवेदनशीलता और सहानुभूति कितने व्यक्तियों में मिलेगी...

आचार्य भगवान देव के मानवीय संवेदना से पूर्ण ... मित्रों के लिए अपनी जान तक हाजिर कर देने के इस ... को मैं कभी भूल नहीं सकता।

बीमार फिर अधिक देर तक जीवित नहीं रह सका... जिस अनहोनी को कोई टाल नहीं सकता, वह अनहोनी ... होकर ही रही। ४ दिसम्बर को वह चल बसा। उसी ... किशोरावस्था के बालक को लेकर हम निगमबोध ... पहुंचे। अत्येष्टि के मंत्र पढ़ते जाते थे, पर सभी रिश्तेदारों की आंखें आंसुओं से तर थीं। कौन किसको ढाढस बंधाता... वहां भी आचार्य भगवान देव उपस्थित रहे और ... ढाढस बंधाने वाला भी एकमात्र वही व्यक्ति था।

हम सबको लगा कि वह मनुष्य नहीं देवता है।

मुझे लगता है कि उनकी यह सहृदयता ही ... जीवन को लगातार एक से एक ऊंचे शिखर तक ले ... का काम कर रही है।

समझता जो न ग़लती को उसे हैवान कहते हैं।
जो ग़लती पर करे ग़लती उसे शैतान कहते हैं॥

आर्य समाज का एक जाज्वल्यमान व्यक्तित्व

—श्री ओमप्रकाश झंवर

अधिष्ठता आर्यवीरदल राजस्थान

श्री आचार्य भगवानदेव के आकर्षक एवं सुदर्शन व्यक्तित्व का विकास बहुविध विचित्रताओं से भरा हुआ है। वे किशोरावस्था में 15-16 वर्ष की आयु में ही घर से निकल पड़े। उनके सामने आज के कठिन जीवन की अनेक चुनौतियां थी। शिक्षा बहुत ही सामान्य रही क्योंकि विधिवत तथा स्थिरतापूर्वक अध्ययन का अवसर नहीं मिल सका। अनेक गुरूकुलों में रहकर जैसा कुछ अवसर मिला, अध्ययन किया। मातृभाषा सिन्धी होते हुए भी राष्ट्रभाषा हिन्दी को अपनाया तथा ज्ञानार्जन का सम्मान होने के कारण शिष्ट लोगों का सान्निध्यलाभ करते रहे।

अत: प्रारम्भ होता है इनका सामाजिक जीवन। एक व्यक्ति सामाजिक जीवन में कहां से कहां पहुंच सकता है, इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं श्री आचार्य महोदय। इनका आर्य समाज में प्रवेश भी विचित्र है। आर्य समाज किशनपोल बाजार, जयपुर का सेवक कभी अवकाश पर गया और उस अवकाश काल में आपने वहां यज्ञ-पात्र मांजने प्रारम्भ किए। यहीं से इनका आर्य समाज से सम्पर्क प्रारम्भ होता है। अब जीवन की प्रत्येक गतिविधि का केन्द्र स्थल आर्य समाज हो गया। घुमक्कड की तरह बहुत भटकना पड़ा किन्तु हृदय में जैसे कुछ कर गुजरने की धुन रही। हिन्दी-रक्षा-आन्दोलन और गोरक्षा आन्दोलनों में कारागार की सैर करने पहुंच गये। कहीं कोई सामाजिक या राष्ट्रीय संकट आया, बस कूद पड़े, झोंक दिया अपने को, किसी फलितार्थ की लेशमात्र चिन्ता नहीं की। किन्तु जैसे स्वत: ही दिशा-बोध हो रहा था।

इनको प्रकाश में लाने वाला कार्यक्षेत्र गुजरात रहा। ये पाटन में नगर पालिका के सदस्य बने तथा ठोस कार्य किया। वहां से टंकारा (महर्षि दयानन्द की जन्म भूमि) पहुंच गए। वहां एक आयुर्वेदिक महाविद्यालय की स्थापना करवाई, स्वयं संस्थापक बने तथा उसके व्यवस्थापक भी रहे। सामाजिकता में मनुष्य को भारी संघर्ष करना पड़ता है। संघर्ष में वह महाविद्यालय छोड़ना पड़ा। उस स्थान को छोड़ने पर उस स्थान का दुर्भाग्य था कि वह महाविद्यालय ही बन्द हो गया।

अब इनका कार्यक्षेत्र देश की राजधानी दिल्ली बन गया। आर्य जगत में "जनज्ञान" पत्र से कौन अपरिचित है। मूल में इसके संस्थापक श्री आचार्य ही थे। कालान्तर में स्व० श्री भारतेन्द्रनाथ जी जैसे योग्य व्यक्ति को पाकर उसके संचालन व सम्पादन का भार उन्हें सौंप कर स्वयं आर्य समाज के कार्य में संलग्न हो गए। अनवर श्रमत

जो ग़लती कर नहीं सकता उसे भगवान् कहते हैं।
जो ग़लती कर सुधारता उसे इन्सान कहते हैं॥

करने वाला यह व्यक्ति मौन रहकर नहीं बैठ सकता था। नागालैण्ड, ईसाई मिशनरियों का गढ़ है, उस क्षेत्र में जाकर वहां के आदिवासियों में कार्य किया। अनेक वर्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमंत्री रहे।

मारिशस में हुए अन्तर्राष्ट्रीय सार्वदेशिक आर्य-महा-सम्मेलन में सम्मिलित होने वालों के लिए जलपोत की व्यवस्था भी आपने की। विचित्रताओं से भरे इस व्यक्तित्व का एक पक्ष और भी है। आपकी योगासनों में विशेष अभिरुचि रहे। योगासनों पर आपने एक सचित्र पुस्तक लिखी जिसके प्रकाशन से जन-जन को लाभ हुआ। योग के माध्यम से आपने अनेक लोगों को आर्य समाज की ओर भी आकृष्ट किया। इन आकृष्ट होने वालों में दिल्ली के प्रसिद्ध फाइनेंसर श्री सेठ दौलतराम जी गुप्ता का नाम उल्लेखनीय है। आर्य समाज जन्मगत जाति व्यवस्था का विरोधी है। उसका लक्ष्य वैदिक वर्ण-व्यवस्था की पुन: स्थापना करना है, जिसमें वर्ण का विचार गुण, कर्म और स्वभावानुसार होता है। आपने गुण-कर्म-स्वभावानुसार अन्तरजातिय विवाह करके आर्य समाज के सिद्धान्त [illegible] आदर्श प्रस्तुत किया।

अपने इसी कठोर अध्यवसायी व्यक्तित्व के कारण आप महत्त्वाकांक्षी भी रहे। आज का सारा चिन्तन राज-नीति से प्रेरित है अत: कुछ और भी कर गुजरने के लिए राजनीति में प्रवेश किया। वर्तमान में आप सत्ता-पक्ष के संसद-सदस्य हैं तथा राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान में आपका चिन्तन राष्ट्रीयता से ओत प्रौत है। पंजाब की वर्तमान समस्या को आपने संसद में बड़ी दूरदर्शिता तथा गम्भीरता से प्रस्तुत किया। आज का सामाजिक कार्यकर्ता जन-समाज की या विरोध पक्ष की आलोचना-प्रत्यालोचन से नहीं बच सकता। श्री आचार्य इन आलोचनाओं विरोधों, आक्षेपों और आरोपों से निरपेक्ष रहकर स्व- द्वारा निर्धारित मार्ग पर अव्याहत गति से चलने वाले हैं। इन सब बाधाओं से उनके उत्साह, साहस और धैर्य में कोई अवरोध उत्पन्न नहीं होता।

आर्य समाज और राष्ट्र को उनसे अनेक आशाएं हैं।

महर्षिदयानन्द की जन्मभूमि टंकारा में आश्रम अध्यक्ष आचार्य भगवानदेव

दीन सबको लखत है, दीनहि लखे न कोय।
जो रहीम दीनहि लखे, दीन बन्धु सम होय॥

मानवीय गुणों से सम्पन्न व्यक्तित्व :
आचार्य भगवान देव

डा० कुसुम कुमार
नाटककार—कवियत्री

लंदन में भारतीय जवानों को क्रान्ति का संदेश देते हुए आचार्य भगवान देव

बात अगस्त १९८० की है। ऐडिनबरो थियेटर फैस्टिवल देखने के दौर में उन दिनों लंदन में थी। आचार्य भगवानदेव भी आर्यसमाज के अपने एक सदस्य मण्डल के साथ अनेक पश्चिमी देशों की यात्रा पर निकले कुछ दिनों के लिए लंदन रुके हुए थे। हाई कमिश्नर द्वारा आपके सम्मान में जो पार्टी दी गई थी उसमें मैं शामिल जरूर हुई थी किन्तु भगवानदेव जी से प्रत्यक्ष परिचय तब भी न हो सका था। हाँ, बहुत से पत्रकार मित्रों द्वारा आपकी वाग्-शक्ति-वाक्शक्ति और यशस्विता की चर्चा अवश्य सुनी थी। शाम के समय जब भी मैं लंदन के स्ट्रैंड स्थित "इंडिया क्लब" जाती तो कभी कोई बी. बी. सी. का अधिकारी आचार्य जी द्वारा लिखित योगसाधना की किताब हाथ में लिए आपके प्रभावशाली व्यक्तित्व की बात कर रहा होता, तो कभी कोई महिला जो तमाम उम्र भारत से बाहर रहकर एक ही दिन में (भगवानदेव जी के विचार सुनकर उनका सान्निध्य पाकर) भारत के प्रति प्रेम और ममता से भर उठती थी।

किसी व्यक्तित्व का ऐसा जादुई प्रभाव देखकर मुझे

जी चाहता है फिर वुही फुरसत के रात दिन।
बैठें रहें तसव्वुरे जानां किये हुए॥

मन ही मन आश्चर्य भी होता था कि ये सब प्रवासी लोग आचार्य जी से इतने प्रभावित हुए हैं, यहाँ रहकर, जबकि मैं, जो दिल्ली से आई हूं, मुझे भी खबर तो होनी चाहिए थी—इन सद्जन के बारे में।

खैर, लंदन में मेरी आपसे भेंट न हो सकी और यह परिचय उनके गुणों की प्रशंसा तक सीमित रहा। एक दिन किसी एक भारतीय परिवार के यहाँ खाने पर बुलाई गई तो पता चला कि उस दिन आचार्य जी भी वहीं थे, लेकिन अब चले गये। आपको उसी दौर अमेरिका आदि भी जाना था।

भारत लौटने पर एक सुखद संयोग पुनः हुआ। मैं अपने पति कुमार से आचार्य भगवानदेव के बारे में बात कर रही थी कि अचानक वे हंसने लगे। बोले, भगवानदेव जी से मेरा पुराना परिचय है। संसद सदस्य तो वे अब बने हैं। मैं उन्हें बहुत पहले से जानता हूं। ऐसे समाजसेवी लोगों का राजनीति में आना बड़ा सुखद लगता है।

१९८१ में जब भगवानदेव जी से मेरा प्रत्यक्ष परिचय हुआ तो उनके बारे में ये सारी सुनी सुनाई प्रशंसा मुझे उपयुक्त जान पड़ी। बहुत खुले स्वभाव के, बिल्कुल साफगोई, कोई स्वांग नहीं, दिखावा नहीं सदा सबकी सहायता करने को तत्पर! कठिन से कठिन परिस्थिति में भी माथे पर तेवर नहीं!

योगसाधना पर उनके द्वारा लिखी अनेक पुस्तकें उनकी सामाजिक-चिन्ता की द्योतक हैं। कभी-कभी तो मुझे यह आश्चर्य होता है कि इतने मानवीय गुणों से सम्पन्न आप राजनीति में आ कैसे गये? या फिर अभी आप इस विकट क्षेत्र में नये हैं? मेरी कामना है आप इस क्षेत्र में चाहे जितनी प्रगति करें, अपने सद्गुणों और चारित्रिक विशेषताओं को बनाए रखेंगे।

"विश्व हिन्दी सम्मेलन" के दिनों में मैंने उन्हें लोगों की तकलीफात पूछते बड़े धैर्यपूर्वक सबकी बात सुनते विचार करते बार-बार देखा। सिन्धी-भाषी होते हुए भी आचार्य जी का हिन्दी से अपरिमित लगाव है। अब तक आपने जितनी पुस्तकें लिखी हैं, सब हिन्दी में। "योग-मन्दिर" नाम से एक हिन्दी पत्रिका भी निकाले आए हैं जिसके कुछेक अंक पढ़ने का सुयोग मुझे मिला है।

आपके व्यक्तित्व का सबसे विरला गुण आपके व्यवहार की अनौपचारिकता। आज आप किसी भी संसद सदस्य जिसने लोक-जीवन, जन-जीवन में नाम कमाया है, फोन करें और कहें कि आप किसी काम से मिलना चाहते हैं, काम की आपतकालीनता भी आप बतला डालते हैं, तो भी उधर से डायरी देखकर आपको जो बतलाया जाता है वह दो दिन, चार दिन या एक सप्ताह से पहले का समय नहीं होता है (अब इसे दिखावा समझा जाये, दंभ अथवा दर्प, स्थिति का पूरा-पूरा जायजा लिए बिना कुछ नहीं कहा जा सकता)। भगवानदेव जी से फोन पर बात कर आप मिलना चाहें, वे उसी समय मिलने को तत्पर। समय निकालने में उन्हें कभी कोई तकलीफ नहीं होती। उनके व्यवहार की यह सरलता और कृतसंकल्पता मन को बहुत छूती है। आपके मृदुभाषी स्वभाव में इरादों की दृढ़ता किसी योद्धा जैसी होती है।

राजनीति से कोसों दूर, बुद्धिजीविता की अपनी एक दुनियां में रहने वाली मुक्त लेखिका को भी जब आचार्य जी अपनी अद्भुत तर्कशक्ति और कर्मठता द्वारा प्रभावित करते हैं तो क्या यह मानना नहीं पड़ेगा कि राजनीति जैसे विकट क्षेत्र में भी अभी अपवाद हैं? मैं आचार्य जी के स्वास्थ्य और उनके चिर आयुष्मान होने की कामना करती हूं।

"रांझा-रांझा कहिन्दयां में आपे रांझा होई।
लोको मैंनूं रांझा आखो, हीर कहे न कोई॥

आचार्य भगवान देव

एक विशिष्ट संस्था

डा० कान्ता गुप्ता
M. A. Phd.
नई दिल्ली

मोरिशस आर्य सभा के पदाधिकारियों के साथ आचार्य भगवान देव जी

**"एकेनापि हि शूरेण,
पदाक्रान्तं महीतलम्।
क्रियते भास्करेणेव
स्फारस्फुरिततेजसा॥"**

भर्तृहरि ने ठीक ही कहा है—"कि जिस प्रकार सूर्य अकेला ही अपनी किरणों से समस्त संसार को प्रकाशित करता है उसी प्रकार एक ही वीर अपने शौर्य और पराक्रम से पृथ्वी को अंपने वश में कर लेता है।"

यदि बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न, ओजस्वी, समाजसेवी, प्रभावशाली वक्ता, सच्चा साथी लेखन कला में अत्यन्त प्रवीण, यौगिक शिक्षा में पूर्ण दक्ष, देश के हित एवं उत्थान के लिए सर्वदा प्रयत्नशील, सौहार्द भाव से परिपूर्ण, दुःखियों का वास्तविक मददगार व मानवता की भलाई के लिए ही कार्यरत व उद्यमशील व्यक्ति को ढूंढना हो तो मिलिये "आचार्य भगवानदेव" से। ये अकेले होते हुए भी अनोखी संस्था हैं, जिन्होंने अपने नाम को पूर्ण सार्थक करने का बीड़ा उठाया है। उपनिषदों में वर्णित श्रेयस् (कल्याणकारी) और प्रेयस् (प्रिय लगने वाला) मार्ग में से—"श्रेयस्" मार्ग को ही अपने जीवन का लक्ष्य बनाया है।

जीवन की अथक यात्रा में अनेक रिश्तेदार, साथी एवं प्रियजन मिलते हैं, जिनसे विभिन्न परिस्थितियों में मुलाकात व सम्पर्क बनता है। बात काफी पुरानी है। अगस्त, १९७३ में अपनी माँ तथा मामाजी के साथ मॉरिशस यात्रा पर गई थी। उस समय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमंत्री श्री भगवानदेव जी भी हमारे साथ थे वहाँ भगवानदेव जी द्वारा लिखित अत्यन्त रोचक पुस्तकें 'कर्मवीर की कहानी' व "अष्टांग योग प्रकाश" पढ़ी। पुस्तकों के अध्ययन से तथा विस्तृत व्याख्या और विचार विनिमय ने साहित्य प्रकाशन तथा योग से हमारी रूचि को जाग्रत किया, और इस दिशा में आचार्य भगवानदेव की सराहनीय प्रेरणा रही। यात्रा से वापिस आकर आचार्य जी ने हमारे श्वसुर पू० मास्टर शिवचरण दास जी, जो आर्य-समाज के कर्मठ एवं जाने-माने कर्णधारों में से थे, के अभिनन्दन ग्रंथ "ज्योतिर्मय जीवन" को अत्यन्त अल्प काल में तैयार किया, जो न केवल वर्तमान अपितु भावी संतति के लिए प्रेरणादायक है। इनकी प्रेरणा से हमने आचार्य जी द्वारा लिखित "अष्टांग योग प्रकाश" का अंग्रेजी में अनुवाद अपने पति श्री राजीव जी की सहायता से पूरा किया। यह पुस्तक "Light of Spiritual" के नाम से प्रकाशित भी हो चुकी है।

आचार्य जी अपने व्यस्त जीवन में से लिखने-पढ़ने के लिए न जाने कैसे, कहाँ से इतना समय निकाल पाते हैं। इन्होंने योग विषयक विभिन्न अनेक पुस्तकें लिखी हैं। भारत के अनेक शहीदों की जीवनी को कलमबद्ध करने का श्रेय भी इन्हीं को है। महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के अन्य प्रतिष्ठित महानुभावों के जीवन पर भी इन्होंने

विस्तृतरूप से प्रकाश डाला है। अत्यन्त सरल, धाराप्रवाह तथा हृदयावर्जक शैली में लिखी गयी ये पुस्तकें पाठक के मानस पटल पर स्थाई छाप छोड़ती हैं। इसके अलावा अपनी अनोखी सूझबूझ, योग्यता, सामर्थ्य, शक्ति एवं कुशलता से आचार्य जी "योग मन्दिर" नामक मासिक पत्रिका के मुख्य संपादक के रूप में प्रकाशन करवा रहे हैं। और इस पत्रिका की योगिक, आध्यात्मिक तथा शैक्षणिक उपादेयता को बढ़ाने में निरन्तर प्रयत्नशील हैं।

भौतिक सम्पत्ति नश्वर है—सब जानते हैं, समझते हैं परन्तु कोई विरला ही इसकी चकाचौंध से अंधा नहीं होता। इनकी कथनी व करनी में अन्तर नहीं है—

"यथा मनसि तथा वाचा, यथा वाचा तथा कर्मणि"—

जैसा है मन में वैसा वाणी में, जैसा वाणी में वैसा कर्म में। मन, वाणी और कर्म का तादात्म्य नामुमकिन नहीं तो कठिन अवश्य है।

आज के स्वार्थमय, षड्यन्त्र युक्त राजनैतिक, सामाजिक एवं धार्मिक परिस्थितियों में प्रत्येक व्यक्ति "स्वसिद्धि" में तत्पर है। परन्तु आचार्य जी अपने आदर्शों से कभी नहीं हटते शायद भगवद्गीता का निम्न उपदेश ही उनकी प्रेरणा है।

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत् प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते॥

अर्थात् श्रेष्ठ पुरुष जो जो करता है अन्य पुरुष भी उनके अनुसार व्यवहार करते हैं।

यही कारण है कि युवा वस्था से ही विभिन्न धार्मिक, सामाजिक तथा अन्य संस्थाओं के प्राणाधार होने के बावजूद अतुल सम्पत्ति की देख-रेख करते हुए भी इन्होंने कभी आर्थिक दृष्टि से कोई लाभ नहीं उठाया। और १९८० के चुनाव में पार्लियामेन्ट के मेम्बर चुने जाने के बाद भी इनकी आर्थिक स्थिति में अन्तर नहीं आया है जहाँ ५ वर्ष की सीमित अवधि में प्रायः दूसरे मेम्बर कोठी, बंगला, गाड़ी, नौकर-चाकर तथा धनदौलत व अन्य सुविधाएं बटोरने में लग जाते हैं—ये आज भी निजी सम्पत्ति—मकान जायदाद, मोटर, गाड़ी आदि के चक्कर में नहीं पड़े हैं। अपने सामाजिक तथा राजनैतिक जीवन के अनेकानेक तथा विविध कार्यों में हमेशा खुशी-खुशी योगदान देते हैं। निश्चित स्थान पर समय पर पहुंचने के लिए चाहे स्कूटर लेना पड़े या टैक्सी—यथासंभव पहुंचने का प्रयास करते हैं। अन्तर्देशीय ख्यातिप्राप्त आचार्य जी के पास एक ... वस्थित आफिस के लिए स्टेनो, टाइपिस्ट, चपरासी ... भी नहीं। अंदाज लगाइये कि दो हाथ-पैर वाला यह ... वित किस तरह प्रत्येक पल का उपयोग करता है ... माथे पर शिकन लाये बिना मस्ती से हर कार्य को ... लक्ष्य तक पहुंचा कर ही दम लेता है। ऐसा लगता है ... आध्यात्मिक तथ्यों को जीवन में ढालने वाले आचार्य ... भर्तृहरि के इस रहस्य को जीवन का लक्ष्य मानते हैं:—

"निन्दन्तु नीतिनिपुणाः यदि वा स्तुवन्तु,
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव मरणमस्तु युगान्तरे वा,
न्यायात्पथः पदं न चलन्ति धीरा॥

अर्थात् – नीति में निपुण मानव निन्दा करें या प्र... लक्ष्मी रहे या जाए, मृत्यु आज आये या युगान्तर में— इसकी चिंता न करते हुए धीर मानव सदा न्याय ... पर दृढ़ रहा करते हैं।

ऐश्वर्य, शक्ति, धन-दौलत की तृष्णा से परे, ... बन्धनों से मुक्त "आत्मिक बल" व "योग" की शक्ति ... मानवता की भलाई में तत्पर, आचार्य जी, "जीवन ... प्रत्येक पल सार्थक हो—इसी चेष्टा में—अनवरत रात-दि... सोते-बैठते, विभिन्न गतिविधियों में संलग्न और ... रहते हैं अक्सर कहा करते हैं—

"One Crowded hour of glorious life ...
Worth an age without a name"

अर्थात् गौरवपूर्ण जीवन का एक सार्थक घण्टा ... रहित युगों से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। और फिर ... कितना ही सुखद क्यों न हो क्या भरोसा? ठीक ही तो है—

कल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में प्रलय होयेगी, बहुरि करोगे कब?

आज इस शुभ मांगलिक दिवस पर, जब आचार्य ... वानदेव जी अपने सक्रिय एवं सार्थक जीवन के ... पूरे करके ५१ वें वर्ष में पदार्पण कर रहे हैं—ह... परमपिता परमात्मा से यही हार्दिक प्रार्थना है कि ... शक्तिमान सर्वव्यापक ईश्वर अपने "वरदपुत्र भगवान... पर अपने शुभाशीषों की वर्षा करें; तथा दीर्घ ... प्रदान करे; ताकि वे मानव, समाज, देश तथा संसार ... कल्याण कार्य में हमेशा रत रहें।

दिल के आईने में है तस्वीरे यार।
जब जरा गर्दन झुकाई देख ली॥

दो राजदूतों के पत्र

HIGH COMMISSIONER
OF INDIA

Port Louis
Mauritius
तिथि १० अक्तूबर ७३

प्रिय श्री भगवानदेव जी,

आपका कृपा पत्र मिला। आपने जो शुभ विचार अपने पत्र में प्रकट किया है उसके प्रति आभार प्रकट करता हूं।

आपकी पुस्तक "अष्टांग योग प्रकाश" मैंने आद्योपान्त पढ़ी। वास्तव में आपने इस क्षेत्र में बड़ा ही सराहनीय कार्य किया है। इस पुस्तक में इतने महत्त्वपूर्ण और उपादेय विषय का सुन्दर विवेचन है और सर्वसाधारण को इससे अत्यधिक लाभ पहुंचेगा।

मैं आपके रचना कौशल की प्रशंसा करता हूं।

आपका
कृष्णदयाल शर्मा
भारतीय उच्चायुक्त

श्री आचार्य भगवान देव
उपमंत्री सार्वदेशिक सभा
महर्षि दयानन्द भवन
रामलीला मैदान
नई दिल्ली-1

HIGH COMMISSIONER FOR INDIA
P. O. Box 30074,
NAIROBI.

No. HC/PS/78,

November 1, 1978.

Dear Shri Bhagwan Devji,

I thank you for your letter dt. 19th October, 1978. it gave us great Pleasure to meet you during your recent visit to Nairobi. I am grateful to you for explaining the yogic exercises to us. I have also persuied your book on this subject with utmost interest. I hope it can be possible to have a suitable yoga centre established here with the cooperation of interested persons,

With kind regards
Yours sincerely,
(A. N. D. Haksar)

नजर मेरी जाती है 'आरिफ' जिधर भी।
खुदा को मैं हाजिर वहीं देखता हूं॥

पहली झलक में प्रभावित करने वाले

आचार्य भगवान देव

अशोक किशोराणी
सम्पादक—"आर्य मार्ग"
बम्बई ४०००८२
संचालक-आर्य सिन्धु आश्रम,
बम्बई-८२

सिंधियों की सभा में बोलते हुए आचार्य भगवानदेव जी

वैसे स्वतन्त्रता प्राप्ति समय से ही संसद अथवा राज्य सभा में कोई न कोई सिंधी रहा ही है। लेकिन जब आचार्य भगवानदेव शासकदल के टिकट पर और सिंधियों के वोटों के विशेष आधार के सिवाय चुनकर पार्लियामेंट में पहुंचे तो सिंधियों में विशेष उत्साह एवं हर्ष और लहर सी-उमड़ पड़ी थी और सिंधियों के उस प्रेम और उत्साह के कारण ही आचार्य भगवानदेव ने सिंधियों के अभूतपूर्व विशाल अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का सफल एवं उल्लेखनीय आयोजन किया जबकि अनेक वयोवृद्ध सिंधी नेता एवं धनवान लोग मिलकर भी नहीं कर पा रहे थे। उस अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के सम्मेलन में आचार्य भगवानदेव जी न कई अपने साथी संसद सदस्यों को लाये, बल्कि यहां तक कि अपने व्यक्तिगत प्रभाव से मान्य राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैलसिंह जी एवं माननीय प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को भी लाने में सफल हुए एवं उन्हें विश्व के सिन्धी वर्ग से परिचित करवाया।

महर्षि का एक वार सिपाही आर्य समाज का एक साधारण कार्यकर्ता आर्यसमाज की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक का उपमन्त्री बनने के बाद संसद तक भी पहुंच जाता है तो यह उल्लेखनीय सफलता अनेक विशेष गुणों का परिणाम ही मानी जाएगी। स्फूर्ति, सुडौल, स्वास्थ्य, आत्मविश्वास, संघर्षमय सफल जीवन की प्रत्यक्ष प्रतिमा आचार्य भगवानदेव के व्यक्तित्व में दृष्टिगोचर होती है।

पहली ही झलक में प्रभावित करने वाला यह व्यक्ति न केवल आर्य समाज में बल्कि आर्यसमाज से बाहर भी काफी लोकप्रिय हैं जिससे देश और धर्म के कल्याण की बड़ी आशायें की जा सकती हैं।

आचार्य जी के कई गुणों में उनके जिस एक गुण ने मुझे एक प्रकार से कहूं कि सामाजिक जीवन की ओर उत्साहित किया वह गुण है औरों को उत्साहपूर्वक प्रेरित करके आगे आने का अवसर देना।

आचार्य जी न केवल एक प्रभावशाली वक्ता हैं परन्तु एक अच्छे खासे लेखक भी हैं। आध्यात्मिक विषयों के विशेषज्ञ हैं इस प्रकार के विषयों से सम्बन्धित उनकी अनेक पुस्तकें लिखी हुई हैं।

प्रातः स्मरणीय महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज जब भी योग प्रशिक्षण शिविर लगाते थे तो शारीरिक योगाचार्य के रूप में आसन, प्राणायाम, व्यायाम सिखाने का कार्य प्रायः आचार्य भगवान देव जी को ही सौंपते थे।

खुदा की कसम खा के मैं कह रहा हूं। खुदा के सिवा कुछ नहीं देखता हूं॥

दो आर्य रत्न

राजनीति के उज्ज्वल नक्षत्र

श्री अयोध्यानाथ बल
पत्रकार हिन्दुस्तान समाचार
समिति, नई दिल्ली

आचार्य भगवान देव तथा श्री ओमप्रकाश त्यागी जी का आर्य समाज द्वारा सम्मान

राजनीति हमेशा ही जीवन पर हावी रही है। कोई भी युग हो, कोई भी दौर हो, कोई भी समय हो, राजनीति जीवन के हर पहलू को प्रभावित करती आई है। महज आंखें मूंद लेने से उनकी सत्यता से बचा नहीं जा सकता। देर-सबेर उसका सामना करना ही पड़ता है। यूनान, मिस्र और रोम ने इस हकीकत को बहुत पहले समझ लिया था। हमारे वेदों में भी इसका भरपूर चिन्तन-मंथन किया गया है लेकिन हम हैं कि इस तथ्य को चकाचौंध मान बैठे और इसे निखार देने की बजाय उदासीनता-उपेक्षा की स्थिति में आ गये। कभी-कभी जरूर बीच में बिजली कौंदती रही किन्तु इस बात को नकारा नहीं जा सकता कि हम पूरे ९०० साल सोये रहे, सोये नहीं नेत्र मूंदे पड़े रहे, जैसे विपदा स्वयं टल जाएगी और हमें वैसे का वैसा ही छोड़ जाएगी।

इतिहास साक्षी है कि ऐसी सोच से कभी कुछ नहीं हुआ। अगर यही सोच ठीक होती तो बीच-बीच में कौंदने वाली बिजलियों का वज्र प्रकाश कभी देखने को न मिलता और गिर-गिरकर फिर-फिर हमारा राष्ट्र फिर से गौरवमान उच्च शिखरों की ओर न चल पाता।

यह महान दर्शन, यह श्रेष्ठ मीमांसा-चेतना, यह प्रखर-प्रेरक जीवन धारा, यह सरस-सरल जीवन सारिणी, यह उमंग-उत्कंठा, और यह विवेक-विवेचन अगर किसी ने पूरी तरह अपनी जिन्दगी में घोल लिया है तो वह और कोई नहीं आचार्य भगवानदेव ही हैं। आचार्य का विषय तो यह है कि वह इतनी छोटी उम्र में ही आचार्य कैसे हो गए। यह कोई गलत बात नहीं कि वह अभी ३० के भी नहीं थे तो लोग उन्हें आचार्य कहने लग गए थे। आचार्य जात से नहीं, काम से।

मुस्कान की सौम्यता, व्यवहार की सहजता, कर्म की व्यग्रता, संघर्ष की आतुरता, और बेमिसाल जिज्ञासु मन ने ही उन्हें आचार्य की श्रेष्ठ पदवी दिलाई है। यही कारण है कि उनके निकट जाते ही ऐसा महसूस होने लगता है कि निराशा-हताशता कहीं खो सी गई है, कहीं भाग सी गई है और आशा-विश्वास के नर्म स्वर झनझनाने लगे हैं।

२३ फरवरी १९३५ को जन्मे आचार्य भगवानदेव के परिवार के स्वप्न में भी न आया होगा कि यह बालक बड़ा होने से पहले ही कुछ ऐसा कर दिखाएगा जिससे उसकी

हर जगह चर्चा होने लगेगी। उसे नहीं मालूम था कि हजारों वर्षों से सुप्त हड़प्पा-मोहनजोदड़ो सभ्यता ने एक नई अंगड़ाई ली है—ऐसी अंगड़ाई जो उसे फिर से जगाने, मुस्काने, फिर से उद्वेलित करेगी।

सिन्ध के जिला नवाब शाह में तालुका शेहदादपुर का बबरानी गांव तो उनके जन्म से गौरवान्वित हुआ ही पर आज जब वह ५० के होने चले हैं पूरे सिन्धी समाज ने इन्हें अपने बीच पाकर एक नई दिशा प्राप्त कर ली है, ऐसी दिशा जो उसे राष्ट्र में बहुत ही ऊंचा स्थान दिलाने ले जाने को क्रियाशील है।

आचार्य भगवानदेव अल्पायु में ही घर को खैरबाद कहकर जीवन के रहस्यों की खोज करने निकल पड़े थे। यह खोज उन्हें अनेक मठों और धर्म स्थलों पर ले गई। वेद-उपनिषद-दर्शन के पठन-अध्ययन-मनन और चिन्तन ने उन्हें सन्तों के जीवन की ओर प्रेरित किया परन्तु जब उन्होंने अनुभव किया कि जिन्दगी बिना कर्म के शून्य हो जाती है तो वह आर्य समाज के क्षेत्र में कूद पड़े। उनके आर्य वीर बनते ही आर्य समाज के संघर्ष को नया उत्साह और नया जीवन मिला। उन्होंने वह काम कर दिखाये कि छोटी सी आयु में ही उन्हें सार्वदेशिक सभा के सचिव पद पर आसीन किया गया।

इस बीच उन्होंने लेखन और सम्पादक का कार्य भ प्रारम्भ कर दिया। योग स्वास्थ्य और स्वतन्त्रता संग्राम पर ४० पुस्तकें लिखीं।

लेकिन इससे भी उन्हें सन्तोष नहीं हुआ। पारे से बेचैनी उन्हें कैसे सन्तोष करने दे सकती है।

जहां भी आततायी उभरे, वह उनसे टक्कर लेने दौड़ पड़े। पंजाब में हिन्दी पर प्रहार हुआ तो वह जेल गये। सेना में स्वतन्त्रता संग्राम की दुंदुभी बजी तो वह वहां भी कूद पड़े। कुल मिलाकर १२ बार जेल यात्रा की। महर्षि दयानन्द योगाश्रम महासचिव पद पर आये तो आचार्य कहलाये। १९७६ में अखिल भारतीय योग जीवन परिषद के महासचिव बने। फिर गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा के उपाध्यक्ष हुए। इसके बाद अनेक सामाजिक और धार्मिक संस्थाओं ने उन्हें अपने उच्च पदों पर ला बैठाया। परन्तु सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, पिछड़ा वर्ग सेवा संघ, महर्षि दयानन्द आश्रम टंकारा, अखिल भारतीय स्वामी दयानन्द स्मारक ट्रस्ट और महात्मा आनन्द स्वामी स्मारक निधि में उन्होंने जो काम किया है उसे कोई भुला नहीं सकता।

इतना कुछ करने पर भी आचार्य जी की बेचैनी दूर नहीं हुई। उल्टे उन्हें अहसास हुआ कि जब तक सक्रिय राजनीति में नहीं आएंगे, जो कुछ कर भी पाए हैं, वह अधिक समय तक टिका नहीं रह पाएगा क्योंकि जीवन के हर पहलू पर उसका दबदबा है। अतः राजनीति में भरपूर ढंग से कूद पड़े। चुनाव लड़ा और संसद में पहुंच गये। यह घटना किसी चमत्कार से कम नहीं थी। १९८० से पहले कोई यह सोच भी नहीं सकता था कि यह युवक इतनी जल्दी सांसद बन सकेगा।

संसद में पहुंचते ही उन्होंने अपने सिन्धी समाज की ओर विशेष ध्यान दिया। विश्व सिन्धी सम्मेलन के आयोजन से इस समाज ने राष्ट्र में विशेष गरिमापूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया है और अब वे राजधानी में सिन्धी भवन बनाने की योजना को पूरा करने में जीजान से जुटे हुए हैं।

संसदीय राजभाषा समिति के संयोजक के रूप में उन्होंने विदेशों में भारतीय दूतावास में हिन्दी को उच्च स्थान दिलाने का शानदार काम किया है लेकिन इनका कहना है कि जब तक हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र संघ में उसका उचित स्थान नहीं दिला लेंगे, चैन से नहीं बैठेंगे।

आचार्य भगवानदेव तपते रेगिस्तान में शीतल छाया वाले वट वृक्ष से हैं। वह स्वयं अशान्त रहते हैं परन्तु हर किसी को शांति और राहत उपलब्ध कराते हैं। स्वयं अशांत इसलिए हैं कि यद्यपि बहुत कुछ कर पाये हैं तथापि बहुत कुछ करना बाकी है। वह हर जुल्म के खिलाफ जूझते रहते हैं। लेकिन जुल्म खत्म नहीं हो पा रहे हैं। सार्वजनिक और राष्ट्रीय जीवन के महत्वपूर्ण स्थान पर पहुंच कर ही वह मानव अभियान के कर्म से दूर हैं राजनीति से फिल्मी दुनिया में प्रवेश के बावजूद दम्भ उन्हें छू नहीं गया है और वह बराबर यह जयघोष करते हुए आगे बढ़ते चले जा रहे हैं कि "बढ़े चलो के मंजिल अभी नहीं आई।'

उस बस्ती में कितने घर थे, कितने दर थे, कितने लोग।
एक उसी के दर पे पहुंचा, ऐसा होश दीवाने में॥

आचार्य भगवानदेव संसद सदस्य :

एक सर्वतोन्मुखी प्रतिभा

—आनन्द मोहन शर्मा, (अध्यक्ष);
राष्ट्रीय मिल मजदूर संघ, ब्यावर (राज०)

केन्द्रीय वाणिज्य मंत्री श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह से पं० ब्रजमोहन जी शर्मा तथा ब्यावर इंटक के अध्यक्ष श्री आनन्द मोहन शर्मा के साथ आचार्य भगवानदेव सांसद "कृष्णा मिल" की समस्या पर बात करते हुए।

यह मेरे लिए परम हर्ष की बात है कि संसद सदस्य आचार्य श्री भगवानदेव जी के जन्म की स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष में अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित हो रहा है। ऐसा करना एक समाजसेवी, प्रभावशाली व्यक्तित्व, त्यागी, निष्ठावान नेता अभिनेता और कर्मयोगी को अभिमति प्रदान करना है। समाज की रचना और परिवर्तन आचार्य जी जैसे कर्मयोगी, त्यागी और क्रान्तिकारी पुरुषों द्वारा ही सम्भव है। उनके व्यक्तित्व के अनेक रंग-रूप और आयाम हैं।

उनके जीवन के कतिपय पहलू प्रत्येक व्यक्ति के लिए

संत, समागम, हरि कथा, तुलसी दुर्लभ दोए।
सुत, दारा और लक्ष्मी, पापी गृह भी होए॥

अनुकरणीय है। बहुत ही सामान्य स्थिति से संसद भवन तक की इनकी यात्रा इनके जीवन की एक शानदार उपलब्धि है। सन् १९८० में होने वाले निर्वाचन में जहां उन्हें अजमेर की लोकसभा सीट के लिए कांग्रेस का टिकट मिला तो इस क्षेत्र के लोग उनकी विजय के मामले में संदिग्ध स्थिति में थे किन्तु निर्वाचन की रणनीति और अपनी अनोखी सूझबूझ से उन्होंने विजय श्री प्राप्त की और उसके पश्चात् अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हुए अजमेर जिले के चहुंमुखी विकास में जुट गए तथा किसी भी व्यक्ति की कोई भी समस्या का निदान करने के लिए सदैव तत्पर रहे।

सामाजिक कार्यक्षेत्र में विशेष रूप से वे आर्यसमाज जैसी महान संस्था से सम्बद्ध रहे। बचपन से ही स्वामी दयानन्द जी को अपना आदर्श मानते हुए घरबार त्यागकर के वर्षों इधर-उधर भटकते रहे तथा वेदों, उपनिषदों का गहन अध्ययन किया। प्रारम्भ में आपका कार्य क्षेत्र गुजरात व पंजाब रहा तदनन्तर दिल्ली। इस महान् संस्था के भी विभिन्न पदों पर आसीन रहते हुए जन सेवा में लगे रहे। इन्होंने आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के लिए कई रचनात्मक कार्य किए। वे दयानन्द जी को अपने गुरु और धर्म-पिता मानते हैं। आर्य समाजी होने के नाते आचार्य जी की रुचि सदैव ही समाज के अन्ध विश्वासों, कुरीतियों और पाखंडों को मिटाने में रही है। इस सन्दर्भ में उन्होंने 'स्वामी दयानन्द और उनके अनुयायी 'नामक' पुस्तक की भी रचना की है।

उनका राजनैतिक जीवन देश की राजधानी दिल्ली से ही प्रारम्भ हुआ। श्री आचार्य की कार्यशैली, व्यवहारिक निपुणता एवं राजनैतिक प्रतिभा इन्दिराजी की पैनी दृष्टि से छिप न सकी और इन्होंने आचार्य जी की सेवा भावना को मध्य नजर रखते हुए तथा उसका सदुपयोग करते हुए उनको सेवादल बिरादरी का अध्यक्ष नियुक्त किया। वस्तुतः यह सेवाभामी युवक सेवादल के उत्तरदायित्व का निर्वाह करते हुए योग्य पात्र चुना गया। इतना ही नहीं हिन्दी के प्रति आचार्य जी का प्रेम व रुचि को देखते हुए उन्हें संसदीय राजभाषा समिति का भी अध्यक्ष नियुक्त किया गया। अंग्रेजी आज भी राष्ट्रभाषा हिन्दी की बेटी के समान है जबकि संविधान उसे राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन कर चुका है। इस क्षेत्र में हिन्दी को उसका उचित स्थान प्राप्त कराने में आचार्यजी सदैव से ही संघर्ष करते आ रहे हैं और पंजाब में हुए हिंदी रक्षा सत्याग्रह में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसीलिए इस क्षेत्र में राष्ट्र को आचार्य जी से अनेक आशायें हैं।

इसी प्रकार केन्द्रीय रेल समिति के भी आप सदस्य हैं और अपने इस पद का सदुपयोग करते हुए अपने क्षेत्र के लोगों को राहत पहुंचाने की दृष्टि से आपने पिंक सिटी एक्सप्रेस जो दिल्ली से जयपुर तक ही चलती थी उसे अजमेर तक चलवाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। अजमेर में टी० वी० टावर लगाने, पिंक सिटी को गरीब नवाज एक्सप्रेस के नाम से अजमेर तक बढ़वाने, दिल्ली अहमदाबाद सुपर फास्ट एक्सप्रेस चलवाने, विश्व बैंक द्वारा हैंड पम्प लगवाने हेतु ऋण दिलवाने, अजमेर में रेलवे कमीशन का आफिस स्थापित करवाने, एच० एम० टी० कारखाने को केन्द्र द्वारा आर्थिक सहायता दिलवाने में आचार्यजी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। सम्पूर्ण अजमेर जिला स्थायी रूप से जलाभाव का शिकार है। रहीम के अनुसार 'बिन पानी सब सून' वाली स्थिति थी। अतः आचार्य जी ने सरकार के समक्ष एक योजना 'बीसलपुर योजना' के नाम से प्रस्तुत की है यदि यह योजना कार्यान्वित हो गई तो अजमेर जिला ही क्या उसके आसपास के क्षेत्र भी इस योजना से लाभान्वित होगा।

व्यावर में कुछ समाज कंटकों के कुप्रयास से अल्पसंख्यक गरीब बेसहारा मसीही समाज की भूमि विवादास्पद स्थिति में पहुंच गई थी इन भूस्वामियों के साथ होने वाले अत्याचारों के बारे में मैंने जब आचार्य जी को अवगत कराया। वे तुरन्त ही दिल्ली से व्यावर आकर मसीही समाज के हजारों स्त्री-पुरुषों तथा बच्चों के मध्य स्वयं जाकर सारे मामले को समझा तदुपरान्त बड़ी ही निर्भीकता से बिना किसी संकोच के पूर्ण रूप से मसीही समाज का साथ देकर उनका मनोबल बढ़ाया तथा इन गरीब, नौकरी पेशा, अल्पसंख्यक समुदाय के सैकड़ों परिवारों को बे-

संत सभा झांकी नहीं, कियो न हरि गुण गान।
नारायण फिर कौन विधि, तू चाहत कल्यांण॥

होने से बचा लिया। इस घटना से हजारों गरीबों ने तो दुआएं दी ही हैं साथ-साथ आचार्य की छबि भी इस क्षेत्र में काफी उभरी तथा सभी ने आचार्य जी के इस कार्य की तहेदिल से प्रशंसा की।

श्री आचार्य जब जनजीवन के साथ जुड़ते हैं तो यह बात भूल जाते हैं कि वे संसद सदस्य हैं या सिन्धी समाज व आर्य समाज के अन्तर्राष्ट्रीय नेता हैं। इस सन्दर्भ में आचार्य की कई घटनाएं हैं उसी कड़ी में हाल ही में ताजा घटित घटना लिखना मैं नहीं भूल सकता। तेजाजी महाराज नाम का ऐतिहासिक पुरुष हुआ है जिसकी स्मृति में प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ला दसमी में व्यावर में एक विशाल मेला लगता है जिसमें व्यावर के तथा आसपास के सहस्रों सभी गांवों के लोग एकत्रित हो, तेजाजी के स्थान पर झंडा चढ़ाते हैं। ये लोग सारे नगर में हर्षोल्लास के साथ नाचते गाते चलते हैं। इस झंडा पर्व का आयोजन हमारी संस्था राष्ट्रीय मिल मजदूर संघ (इन्टक) करती है उक्त अवसर पर मैंने आचार्य जी को भी आमन्त्रित किया। आचार्य जी अपने पूर्व निर्धारित कार्यक्रमों को भी स्थगित कर दिल्ली से व्यावर पधार गए किन्तु प्रकृति की ऐसी बिडम्बना थी कि वर्षा ऐसी हुई कि रुकने का नाम ही नहीं लेती। मैं बड़ा संकुचित था कि क्या इतनी वर्षा में आचार्य जी को मेले में ले जाना उचित है उसी वक्त स्वयं आचार्यजी बोल पड़े कि आप तैयारी करो और इस भीषण वर्षा में भी अपना जुलूस निकलेगा तथा मैं भी साथ चलूंगा। जुलूस निकला तथा आचार्य जी इन हजारों ग्रामीणों तथा नागरिकों में इतने घुलमिल गए कि सारे मार्गों पर भावविभोर होकर नंगे पांव भीषण वर्षा में नाचते हुए इन श्रमिकों के साथ चले। उनकी इस सहज सार्वजनिकता ने जन मानस का हृदय जीत लिया। यह उनकी लोकप्रियता व जिंदादिली का ही एक उदाहरण है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि संसद सदस्य पहली बार नाचते-गाते जुलूस में गया।

श्री आचार्य जी की वाणी बहुत ही प्रभावशाली है जब वे प्रभावशाली व्यक्तित्व के साथ मंच पर जनता को सम्बोधित करते हैं तो अपनी बात को जन सामान्य तक पहुंचाने में तत्कार्य ही होते हैं श्री आचार्य जी विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य व चट्टान के समान दृढ़ रहने वाले व्यक्तित्व के धनी हैं। अपनी निन्दा व आलोचना से भी वे विचलित न होकर अपने कर्त्तव्य पथ पर अग्रसर होने वाले हैं उनसे सम्पर्क के बाद यहां तक मैंने पाया है उन्हें मांस, मदिरा, भ्रष्टाचार, झूठ से बेहद नफरत है। ऐसे अनेक गुणों से सम्पन्न श्री आचार्य जी के पांचवें दशक की पूर्ति के शुभावसर पर उनके चिरायु होने की शुभकामना करता हूं।

एक साहित्यकार के रूप में एक लम्बे समय में साहित्य की विभिन्न विधाओं पर लिखते रहे हैं। उन्होंने कई पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन किया है। योग, आर्य समाज और क्रान्तिकारियों के सम्बन्ध में कई पुस्तकों की रचना की है तथा कई भाषाओं के ज्ञाता हैं। उनकी रचनाओं के लिए साहित्य उनका ऋणी है।

एक समाजसेवी के रूप में मैं उन्हें पिछले कई वर्षों से जानता हूं उनका सारा जीवन ही जैसे पीड़ित मानवता को समर्पित है। जब भी कोई दुःखी व्यक्ति किसी समस्या को लेकर उनके पास आता है तो वे उसके समाधान हेतु अपनी ओर से पुरजोर सहयोग देते हैं।

आचार्य जी एक स्पष्टवादी व्यक्ति हैं उन्हें जो काम करना होता है उसके लिए वे स्पष्ट रूप से बिना किसी लाग-लपेट के सभी को बता देते हैं। कई बार उनकी इस स्पष्टवादिता से लोगों को परेशानी भी हो जाती है।

एक राजनेता के रूप में उन्होने न केवल अपने संसदीय क्षेत्र में वरन् भारत और विदेशों में भी लोगों का मार्ग-दर्शन एवं नेतृत्व किया है, उनकी कठिनाईयों को समझा और सुलझाया है।

आज की इस राजनैतिक आपा-धापी एवं भ्रष्टाचार में जहां कई नेताओं पर विभिन्न आक्षेप लगाये गए हैं वहां आचार्य जी का राजनैतिक जीवन बेदाग और निर्विवाद है। उनकी स्थिति वैसी ही है जैसे जल में रहते हुए भी कमल जल से निर्लिप्त होता है। एक राजनेता के रूप में उन्होंने न केवल अपने क्षेत्र की वरन् भारत के विभिन्न क्षेत्रों का भ्रमण कर वहां की समस्याओं का निराकरण

कहा करूं बैकुण्ठ ले, कल्प बृच्छ की छांह।
रहिमन ढाक सुहावने, नहं प्रीतम गल बांह॥

ढूंढा। उदाहरण के लिए अण्डमान निकोबार के गोदी कर्मचारियों की समस्या, आसाम और पंजाब की समस्या सुलझाने में आचार्य जी ने प्रभावी भूमिका निभायी है। यही नहीं इंग्लैण्ड में इन्होंने क्रान्तिकारी भारतीयों का एक संगठन भी खड़ा किया है जो भारतीयों पर अंग्रेजों द्वारा किये जाने वाले दमन एवं शोषण का विरोध करता है।

आचार्य जी विश्व सिन्धी समाज के वर्तमान में अध्यक्ष हैं और समय-समय पर सिन्धी समाज को संगठित करने उनमें व्याप्त बुराईयों को दूर करने के लिए विभिन्न सम्मेलनों का आयोजन भी करते रहे हैं। १९८३ में ही उन्होंने दिल्ली में विश्व सिन्धी सम्मेलन का आयोजन किया तथा जून १९८४ में जयपुर में सिंधी समाज का दहेज विरोधी सम्मेलन बुलाया। सिन्धी समाज ने आपकी बहुमुखी प्रतिभा को समझा और इन्हें सिन्ध-रत्न की उपाधि से विभूषित किया व सिन्धी समाज के हृदय सम्राट के रूप में जाने जाते हैं।

आचार्य जी एक ओजस्वी वक्ता हैं। वे अपनी बात को कलात्मक रूप से लोगों के सम्मुख रखने में सक्षम हैं। अपने जोशीले भाषणों से वे लोगों की भावनाओं को जागृत कर उन्हें सही दिशा प्रदान करते हैं तथा नव चेतना का संचार करते हैं।

भगवानदेव जी एक योगी पुरुष भी हैं। उन्होंने योग की साधना की है और लोगों को योग का मार्ग बताया है। योग से सम्बन्धित कई पुस्तकों एवं लेखों के स्वयं रचयिता हैं। योग पर उनकी प्रमुख पुस्तकें हैं—योग पुरुषों के लिए योग स्त्रियों के लिए, योग और स्वास्थ्य, योग से रोग निवारण, योग और सैक्स आदि जिन्हें डायमण्ड पाकेटबुक्स ने प्रकाशित किया है।

आचार्य जी अतिथि सत्कार की भारतीय परम्परा को पूरी तरह निभाते हैं और "मेहमा जो हमारा होता है, वो जान से प्यारा होता है" पंक्ति को चरितार्थ करते हैं। अपने क्षेत्र का या कोई भी परिचित व्यक्ति आचार्य जी के निवास स्थान पर जाता है तो कई बार वे अपने परिवार के सदस्यों की उपेक्षा करके भी मेहमानों की पूरी आवभगत करते हैं।

एक कर्मयोगी के रूप में आचार्यजी ने सदैव ही सामाजिक कार्यों को अपने परिवार, पत्नि बच्चों की उपेक्षा करके भी प्राथमिकता दी है। कई बार तो वे लोगों के काम के लिए इतने व्यस्त हो जाते हैं कि परिवार में पति, पिता, मुखिया और संरक्षक के रूप में पूरी भूमिका नहीं निभा पाते। ऐसा लगता है जैसे इनका जीवन अपना जीवन नहीं वरन् सारे समाज का जीवन है। वे व्यक्तिगत और पारिवारिक हितों की अपेक्षा सामाजिक हितों के लिए अपने को सर्मपित करते रहे हैं।

विभिन्न प्रतिभाओं के धनी, सर्वगुण सम्पन्न श्री आचार्य जी के ५०वें वर्ष में प्रवेश के अवसर पर मैं ईश्वर से उनके मंगलमय भविष्य की प्रार्थना करता हूं। वे सुखी सम्पन्न एवं चिरायु हों तथा समाज और देश को मार्गदर्शन एवं रोशनी प्रदान करते रहें तथा लोगों के प्रेरणा स्त्रोत बनें। उनका व्यक्तित्व हमें यही सन्देश देता है:—

खुदी को कर बुलन्द इतना कि हर तदबीर से पहले,
खुदा बन्दे से यह पूछे, बता तेरी रजा क्या है?

तस्मै जेष्ठाय ब्रह्मणे नमः ॥ अ० १० । ८ । १
उस सबसे बड़े परमात्मा के लिए नमस्कार हो।

हिरण्यमयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् ॥ य० ४० । १७
सत्य का स्वरूप सुनहरे चमकीले ढ़कने से ढका हुआ है।

न यस्य हन्यते सखा न जीयते कदाचन ॥
ऋ० १० । १५२ । १
ईश्वर के भक्त को न कोई नष्ट कर सकता न जीत सकता है।

तस्य ते भक्तिवांसः स्याम ॥ अ० ६ । ७९ । ३
हे प्रभो हम तेरे भक्त हों।

श्रद्धितं ते महत इन्द्रियाय ॥ ऋ० १ । १०४ । ६
हे प्रभो तेरी शक्ति में हमें श्रद्धा है।

मा भूम निष्टया इव ॥ अ० २० । ११६ । १
हम तुमसे बेगानों की तरह न रहें।

सः न पर्षद् अतिद्विषः ॥ अ० ६ । ३४ । १
ईश्वर हमें द्वेषों से पृथक् कर दे।

ओ३म् का सिमरन नित्य करो, जिस विधि सिमरा जाय।
कभी तो दीन दायल जी, बोलेंगे मुसकाय ॥

आचार्य भगवानदेव : एक प्रभावशाली व्यक्तित्व

ले० बलभद्र कुमार हूजा, कुलपति
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

आचार्य भगवानदेव का व्यक्तित्व एक साधक का है जो जीवन के सभी क्षेत्रों में कर्म एवं ज्ञान के योग का अनुकरणीय तथा जागृत उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। सकल जीवन को संघर्ष के पथ पर प्रशस्त करते हुए पुरुषार्थ के साधनों से आपने अपना योग और क्षेम के सौरभ से सुरभित कर रखा है।

संसद में आपकी भूमिका एक प्रतिभावान सदस्य के रूप में उजागर हुई। आपके कथोपकथन की प्रांजुल शैली जीवन के तत्वों से भरपूर रहती है। आपने अपने जीवन दर्शन में प्रवृत्ति एवं निवृत्ति, भोग एवं त्याग तथा संघर्ष शान्ति का संतुलित समीकरण प्राप्त करने का प्रयास किया है। दयानन्द के ज्योतिर्मय व्यक्तित्व को एक फिल्म के रूप में सिनेमा स्कोप के रूपहले पर्दे पर उतारने का आपका संकल्प अब आपकी क्रियाशीलता से क्रियान्वित हो रहा है। देश-देशान्तर की सुदूर यात्राओं से आपके व्यक्तित्व में व्यापकता आई है और आपकी संवेदनायें मानव-मात्र से जुड़ी हैं। जीवन को सही मायने में साधना का क्रीड़ा केन्द्र बनाकर आपने जन-जीवन में योग और स्वास्थ्य का एक सुन्दर समन्वय उपस्थित किया है।

आपका जीवन के प्रति यह सन्देश युवा वर्ग के लिए ग्राह्य है। उनका कहना है कि असंख्य वासनाओं से चित्रित हुआ चित्र भी संहत्यकारी होने के कारण अन्य के लिए है। आपका यह चिन्तन दार्शनिक रूप से कितना परिपूर्ण है कि द्रष्टा एवं दृश्य से रंगा हुआ चित्र सब आकारों वाला होता है। आपने अपनी पुस्तक स्वास्थ्य एवं योगासन में एक योगाभ्यासी के दैनिक जीवन को अत्यन्त सजीव रूप में प्रस्तुत किया है। योग एवं साधना पर लम्बी-लम्बी आख्यायें हमें बहुत से ग्रन्थों में देखने को मिल सकती है लेकिन योगी के दैनिक जीवन को शब्द चित्रों के माध्यम से अंकित करने की आपकी शैली सीधे मन-मस्तिष्क को सजाती है। आपकी आस्था का जीवन प्रात: ४ में ब्राह्म मुहुर्त की मंत्र विमोहित आभा में मुस्कराता है तथा फिर प्रारम्भ होती है जीवन की रंग वसन्त कर्मशीलता जो रात्रीकालीन १० बजे तक जीवन को जुझारू बनाए रखती है। मन, कर्म और भक्ति का ऐसा सम्पूर्ण योग भारतीय नवयुवकों का प्रेरणास्रोत होना चाहिए।

आचार्य भगवानदेव जैसे मनीषी के लिए यह असम्भव है कि निजी स्वार्थों से जकड़े भौतिक जीवन के ही पक्षधर हो। उनका दृष्टिकोण एक विकासमान स्तर लिए हुए है। उनका आदर्श जीवन निरन्तर गतिशील रहता है। उनके जीवन की लक्ष्यधारा कर्म एवं ज्ञान के अनवरत संसर्ग से प्रभावित है। उनके जीवन की अजस्र शक्ति विचारों के अबाध्य आदान-प्रदान से निरन्तर पुष्ट है।

आचार्य भगवानदेव का कर्मशील जीवन चिंतन, लेखन एवं ओजस्वी भाषणों से ओतप्रोत हैं जिससे वे जन-समुदाय की वैदिक आलोक की प्रभा से उद्दीप्त करने का प्रयास कर रहे हैं।

ऋषि दयानन्द के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से वे बहुत प्रभावित हैं। वे नतमस्तक हैं ऋषि दयानन्द के विचारों के वैभव को देखकर एवं आंदोलित हैं वैदिक सिद्धान्तों का जन-जन में प्रचार करने हेतु उनका अन्तरतम अनुभव आकुल है ऋषि दयानन्द के मत को जीवन की गहराई तक उतारने के लिए। इस हेतु वह सतत प्रयत्नशील रहते हैं। भगवान उन्हें शक्ति दे कि यह इस पथ से विचलित न हों। मैं उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूं। □

जिह्वा तो तब ही भली, जपे जो हरि का नाम।
नहीं तो काट निकालिये, मुख में भलो न चाम।।

आचार्य भगवानदेव सांसद एक प्रेरणादायी व्यक्तित्व

डा० भवानीलाल भारतीय
प्राफेसर व अध्यक्ष-दयानन्द शोधपीठ,
पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़

आर्यसमाज के मूर्धन्य नेता तथा युवा कार्यकर्ता आचार्य भगवानदेव से मेरा प्रथम सम्पर्क और परिचय १९६१ में उस समय हुआ, जब मैं आर्य महा सम्मेलन में भाग लेने दिल्ली आया था। उसके बाद तो महर्षि दयानंद जन्मस्थान टंकारा के आयोजनों सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिवेशनों तथा अन्यत्र भी उनसे मिलने, विचार-विमर्श करने तथा आर्य समाज को प्रगति देने वाले कार्यक्रमों पर विचार करने के अनेक अवसर मिले। वे आर्यसमाज की युवा शक्ति के प्रतीक हैं। उन्होंने गुजरात, राजस्थान तथा दिल्ली को अपना विशिष्ट कार्यक्षेत्र बनाया तथा सामाजिक गतिविधियों में बढ़-चढ़कर भाग लिया। जिस समय वे महर्षि महालय टंकारा के अधिवक्ता पद को सुशोभित कर रहे थे, उस समय उन्होंने स्वामी दयानन्द के जन्म स्थान इस छोटे से ग्राम को आर्य समाज की सर्वविध गतिविधियों का केन्द्र बनाकर अनेक सांस्कृतिक, साहित्यिक तथा सामाजिक गतिविधियों का सूत्रपात किया।

आर्य समाज और ऋषि दयानन्द के प्रति अनन्य निष्ठा रखने वाले आचार्य जी राजयोग के परम अभ्यासी तथा व्यावहारिक योगिक क्रियाओं के कुशल प्रशिक्षण भी हैं। उन्होंने हरिद्वार आदि अनेक स्थानों में समय-समय पर योग शिविरों का संचालन किया तथा सामान्य जनता में योग विषयक रुचि को बढ़ाया। वे एक सफल लेखक भी हैं। स्वामी दयानन्द का जीवन चरित्र लिखकर उन्होंने आर्य-समाज स्थापना शताब्दी के अवसर पर प्रकाशित कराया। इसी प्रकार अष्टांग योग वि षयक अनेक ग्रन्थ तथा क्रान्तिकारियों के जीवन चरित्र आदि लिखकर उन्होंने आर्य साहित्य को समृद्ध किया है। उनके द्वारा लिखी गई जीवनियों में सेठ दौलतराम गुप्त का जीवन चरित, श्याम जी कृष्णा वर्मा की जीवनी आदि उल्लेखनीय हैं। आचार्य जी बहु भाषा विज्ञ हैं। राष्ट्रभाषा हिन्दी के अतिरिक्त सिन्धी गुजराती आदि प्रांतीय भाषाओं पर उनका असाधारण अधिकार है और वे इन भाषाओं में अपने विचारों की धारा प्रवाह व्यक्त करते हैं।

आचार्य भगवानदेव ने आर्य समाज में अपने कार्यक्षेत्र को धीरे-धीरे विस्तृत किया। गुजरात प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के पश्चात् वे सार्वदेशिक सभा में आये और वर्षों तक इस सभा के उपमंत्री पद को सुशोभित किया। उन्होंने सभा के दैनन्दिन कार्यों को परिश्रम पूर्वक निपटाने में तत्परता दिखाई तथा सभी की सभी गतिविधियों का सफल संचालन किया। वे एक उत्कृष्ट वक्ता, अनथक कार्यकर्ता तथा सफल उपदेशक भी हैं। आर्य महासम्मेलन के मारिशस अधिवेशन में भाग लेने के पश्चात् ये केनिया तथा इंग्लैण्ड में आयोजित किये गए अन्तर राष्ट्रीय आर्य सम्मेलनों में भी गये तथा वहां जाकर आपने वैदिक सिद्धांतों की दुंदुभि बजाई। आचार्यजी संसद सदस्य के रूप में राज भाषा आयोग के सदस्य बनकर अनेक देशों की यात्रा कर चुके हैं।

विगत गई वर्षों से उन्होंने देश की राजनीति में अपनी प्रतिभा प्रदर्शित की तथा १९८० के चुनाव में भाग लेकर अजमेर से भारतीय लोकसभा के लिए चुने गए। आपकी संसदीय प्रवृत्तियां भी अत्यन्त सक्रिय, स्वागतमक तथा प्रगतिशील रही हैं। समय-समय पर आपने लोकहित के अनेक मामलों को संसद में उठाकर उनके सम्बन्ध में अपना सशक्त विश्लेषण प्रस्तुत किया है। अब वे अपने जीवन के ५० वर्ष पूरे कर रहे हैं। आशा है आर्यसमाज के प्रति समर्पित व्यक्तित्व वाले आचार्य भगवानदेव अपने जीवन में अधिकाधिक यश, कीर्ति एवं प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे इससे देश जाति और समाज को अधिकाधिक लाभ पहुंचेगा।

उठ "फ़रीदा" सुत्तिया, तू झाड़ू दे मसीत।
तू सुत्ता रब्ब जागदा, तेरी डाढ़े नाल प्रीत॥

आचार्य भगवानदेव

एक विलक्षण व्यक्तित्व

श्री नरेन्द्र अवस्थी 'पत्रकार'

कोई व्यक्ति एक विषय में पारङ्गत होता है और उसमें उसे ख्याति उपलब्ध होती है मगर आचार्य जी तो सुलझे हुए लेखक, प्रभावशाली ओजस्वी वक्ता, आर्यसमाज के कर्मठ नेता, सिन्धी समाज को विश्व स्तर पर एक सूत्र में पिरोने वाले संगठन कर्ता, योग साधना में रत होकर योगाचार्य ही नहीं इस महत्वपूर्ण विषय पर दुर्लभ पुस्तकें लिखकर एक नया कीर्तिमान भी स्थापित किया है। सच यह है कि आचार्य जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं।
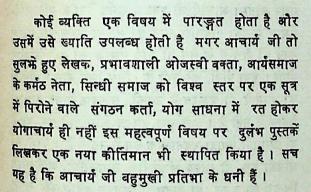
लेखक व पत्रकार—जो लोग उन्हें लेखक के रूप में ही जानते हैं वो स्वास्थ्य व योग पर उनकी पुस्तकें पढ़कर उन्हें मात्र योग के विशिष्ट लेखक ही न मानें। स्वाधीनता हेतु अपनी हरी-भरी तरुणाई न्योछावर करने वाले, फांसी के रज्जू सावन का झूला समझकर झूल जाने वाले क्रान्तिकारियों पर उनकी कई पुस्तकें हैं जो काफी प्रेरणा देती हैं। आर्यसमाज के चिन्तन व महर्षि दयानन्द तथा अन्य आर्यसमाज की महान् विभूतियों पर भी उनकी पुस्तकें आर्यसमाज के साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इसके अतिरिक्त भी उन्होंने कई विषयों पर लेखनी उठाई है। राष्ट्र की अखण्डता व भावात्मक एकता के लिए बलिदान होने वाली श्रीमती इन्दिरा गांधी के जीवन पर उनकी पुस्तक की बुद्धिजीवी वर्ग ने काफी प्रशंसा की है। देश के प्रतिष्ठित दैनिक, साप्ताहिक, मासिक-पत्र-पत्रिकाओं में ज्वलन्त समस्याओं पर व सामयिक लेख प्रकाशित होते रहते हैं। गत १२ वर्षों से आप 'योग मन्दिर' मासिक पत्रिका का कुशलतापूर्वक सम्पादन कर रहे हैं जिसमें आर्य समाज के चिन्तन, योग व राष्ट्रीय समस्याओं पर दिशाबोध वाले लेख देकर 'त्रिवेणी' के स्वरूप की स्मृति दिला रहे हैं।
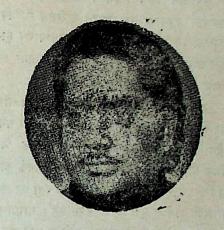
आर्यसमाज की सेवायें—अभाव, अज्ञान, शोषण के खिलाफ संघर्षरत व शाश्वत मूल्यों के स्थापनार्थ, वैदिक सिद्धान्तों का विश्व भर में प्रचार का संकल्प संजोने वाला आर्यसमाज वास्तव में एक जन-आदोलन है। कुछ कम सूझ-बूझ के नेताओं मिश्रित व्यापारियों ने उसे बड़े-बड़े भवन निर्माण कर अथवा पूर्ण अंग्रेजी पद्धति पर स्कूल-कालेज स्थापित करके विशुद्ध व्यावसायिक फर्म बनाकर रख दिया है। इन नेताओं की कथनी और करनी में अन्तर पाकर अनायास ही यह शेर गुनगुनाने को मन चाहता है।

इकबाल बड़ा मनमोहक है,
मन बातों से हर लेता है

गुफ्तार का गाजी बन तो गया,
करदार का गाजी बन न सका।

मगर भाई भगवानदेव की आस्था काम करने पर ज्यादा है थोथी भाषण बाजी पर कम, टंकारा में वर्षों रहकर महर्षि की जन्मभूमि को ऐतिहासिक स्मारक रूप देने में उनकी भूमिका सराहनीय रही है। आपने कई आर्यसमाजों की स्थापना की, कई आर्यसमाजों की समस्याओं

तुलसी अपने राम को, रीझ भजो या खीज।
भूमि पड़े उपजेंगे, उल्टे-सीधे बीज॥

का समाधान किया। देश में अन्तर्राष्ट्रीय "आर्य महा-सम्मेलन" करना व लघु भारत मारीशस में "विश्व आर्य सम्मेलन" में उनकी सक्रियता व असाधारण सूझबूझ की सभी आर्य नेताओं ने मुक्त कण्ठ से सराहना की। आर्य समाज के लिए आपका जीवन समर्पित है।

सांसद के रूप में जनसेवा—अजमेर से लोकसभा में निर्वाचित होने पर अजमेर की समस्याओं के समाधान में सदैव प्रयत्नशील रहे। वहां के पत्र दैनिक 'नवज्योति' दैनिक 'दलित पुकार' दैनिक 'न्याय' में इनके कार्यकलापों का विवरण पढ़कर बिना लगाव-लपेट कहा जा सकता है। कि अपने क्षेत्र से पूरा न्याय करते रहे। सामाजिक कार्यकर्ता व आर्यसमाज का सेवक होने के नाते एक बार श्री निवासपुरी के सज्जन मेरे पास आए कहने लगे—"मेरी अजमेर सम्बन्धी एक जटिल समस्या है, वहां के सांसद आचार्य जी आर्यसमाजी हैं—शायद आपकी सिफारिश काम आ जाए।" मैंने मात्र इतना कहा पहले आप जाकर अपनी समस्या बतावें। मुझे आशा है वो आपका काम कर देंगे। यदि ऐसा सम्भव न हुआ तो मेरा परिचय दे देना। उनका काम मात्र बताने से ही हो गया। मगर उनसे एक शिकायत भी है कि हर पत्र का उत्तर देने का गुण भी अपने सद्गुणों की माला में एक मनके के रूप में जोड़ लेवें।

फिल्म का विवाद और एक निवेदन

योगमन्दिर के जनवरी 1985 अंक में आपने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का महर्षि दयानन्द पर फिल्म बनाने सम्बन्धी परिपत्र व उसके लिए प्रयास छाप कर उन नेताओं की कलई खोल दी है जो आज विरोध के लिए विरोध का नारा लगाकर गलतफ़हमी पैदा कर रहे हैं। यदि पत्रिका में इन पत्रों की प्रतिलिपियां गलत छपी हैं तो क्यों नहीं इसका खण्डन करते हुए आर्य पत्रों में स्पष्टीकरण दिया जाता है।

आर्यसमाज ने स्कूल व कालेज तो बहुत स्थापित कर लिए उन्हीं स्कूलों-कालेजों में कितने प्रतिशत आर्यसमाजी बना पाए हैं। यदि एक प्रतिशत भी होते तो आर्यसमाजों के साप्ताहिक सत्संगों में सफेद बालों वालों का बहुमत न नजर आता। आचार्य जी युवा व कर्मठ नेता हैं यदि आर्यसमाज में युवा पीढ़ी को लाने का संकल्प करके इस महान कार्य को हाथ में ले लेते तो आर्य समाज का बड़ा उपकार होगा। युवा पीढ़ी को लाने के लिए जिन ठोस कार्यक्रमों को अपनाने की जरूरत है उनकी सूझबूझ शायद वर्तमान नेतृत्व में नहीं है। जो युवा संगठन काम भी कर रहे हैं वो छपास में ज्यादा रचनात्मक रूप में नगण्य है। परमात्मा आपको ऐसा ही स्वस्थ, संघर्षशील, समाजसेवी, आर्यसमाज चिन्तन का जनून या पावन पागलपन बनाए रखे ताकि "तहरीर" व "तकरीर" से राष्ट्र सेवा में जुटे रहें।

अखिल भारतीय सिन्धी साहित्य विद्वत्परिषद
१/५ सरस्वती सोसायटी
८१९, अ. भवानी पेठ पुणे, ४११००२

६-१-८४

शुभकामनाएं

सांसद आचार्य श्री भगवानदेव जी का ता. ३ फरवरी १९८४ को ५१ वर्ष में पदार्पण करने के अवसर पर अ० भा० सिन्धी साहित्य विद्वत्परिषद्-पुणे की ओर से हम शुभकामनायें अर्पित करते हैं और यह अभिलाषा रखते हैं कि विश्व भर में बिखरे हुए सिन्धी समाज को एकजुट करने में आप पूर्ण रीति से प्रयत्न करेंगे एवं हर प्रकार से भारत माता की सेवा में सतत प्रयत्नशील रहेंगे।

आपका
कृष्णचन्द्र जैतली

फुरसत के वक्त में न, सिमरण का वक्त निकला।
उस वक्त वक्त मांगा, जब वक्त तंग आया॥

आचार्य भगवानदेव
एक
विरल तेजस्वी व्यक्तित्व

सुश्री प्रतिभा पंडित आचार्या आर्य कन्या संगीत महाविद्यालय बड़ोदा (गुजरात)

नैरोबी आर्य महा सम्मेलन में आचार्य भगवानदेव, स्वामी सत्यप्रकाश जी तथा प्रतिभा पंडित।

आचार्य भगवानदेव जी से वर्षों पुराना परिचय मेरे पूज्य पिता पंडित आनन्द प्रिय जी के सानिध्य में उनके सार्वजनिक सामाजिक जीवन का उषाकाल जो बीता तभी से है।

आरम्भ से ही भाई भगवानदेव जी के मन में एक लगन, तमन्ना और समाज व देश की उन्नति के लिए कुछ करने की उत्कट आकांक्षा उनके कार्यों में सदा बनी रही।

"तवा जल रहा है पर आटा नहीं दो दिन बाद खा लेंगे" ऐसा किसी कवि ने कहा है। भगवानदेव जी ने स्वयं को कितनी ही बार स्वयं को बहुत ही फाका किसी में रखा हो पर उनकी लगन उनका ध्येय कभी नहीं छुटा।

अनेक मंजिलें पार कर आज लोकसभा में सदस्य पद पर पहुंचने पर उनका कार्य क्षेत्र और भी विशाल हो गया है। सार्वजनिक क्षेत्र में हर अंग में उन्होंने अपने कार्य की विशेष छाप खड़ी की है।

परिवार में उनकी चारूशीला पत्नी श्रीमती पद्मा देवी व दो बालक तथा स्वयं ऐसे हैं कि उनका आतिथ्य और उदारता सरलता और स्नेह भावना किसी का भी मन हर ले।

उनकी हर कार्य की लगन अद्भुत है। अनेक संस्थाओं को जन्म देकर उन्हें विश्व का स्वरूप दिया है। निर्भयता निडरता कार्य की धुन और एक लक्ष्य उनके विशेष गुण हैं।

उन्होंने अपनी लेखनी द्वारा आर्य समाज, योग साधना, राष्ट्रीयता की भी परम सेवा की है।

आचार्य जी का सम्मान हो रहा है यह बहुत ही आनन्द की बात है व अभिनंदनीय है। आचार्य जी के कार्य विश्व-व्यापी हैं। वे जीवन की बुलन्दियों पर पहुंचे यही अभ्यर्थन है।

महे चन त्वामद्रिवः परा शुल्काय देयाम्॥ ऋ० ८।१।५

हे ईश्वर! मैं तुझे किसी कीमत पर भी न छोड़ूं।

हिमालय की तरह ऊँचा

□ श्री रमेश लालवाणी
महामंत्री—सिन्धी सेन्ट्रल पंचायत वाराणसी (उ० प्र०)

विगत २१ व २२ अगस्त सन् ८३ मात्र दो दिन के उत्तर प्रदेश में दो प्रमुख नगरों में आप के आगमन के दौरान मुझे आपके साथ-साथ रहने और आपके व्यक्तित्व के बहुमुखी दृष्टिकोण का अध्ययन करने का जो सौभाग्य प्राप्त हुआ वह मुझ जैसे अज्ञानी युवक के लिए अहोभाग्य था जो कुछ देखने सुनने का अवसर प्राप्त हुआ वस्तुत: वह मेरे जीवन दिशा को मार्गदर्शन करता रहेगा ऐसी मेरी धारणा ही नहीं अपितु विश्वास है। जिस निस्वार्थ भावना से आप सिन्धी समाज का मार्ग दर्शन कर रहे हैं वह अतुलनीय अनुकरणीय है।

वास्तव में देश एवं विश्वास की वर्तमान परिस्थितियों के अनुकूल आपने सिन्धी समाज को एक मंच पर आने का एक सूत्र में पिरो करके सुसंगठित करने हेतु कारवां आगे व निरन्तर आगे ले चलने का पथ-प्रदर्शन करने का जो बीड़ा आपने उठाया है वह अपने आपमें सराहनीय महत्वपूर्ण एवं अद्वितीय स्थान रखता है। कहना न होगा कि सिन्धी समाज व संस्कृति कल्याण हेतु इस महत्वपूर्ण कार्य को संवादित करने में अनेक कठिनाईयां सामने आएंगी ; किन्तु आपका उच्च मनोबल जो हिमालय की तरह ऊंचा व चिरस्थिर है स्वत: कठिनाईयों को दूर हटाता जा रहा है। आपके मन में सिन्धी समाज को अन्तर्राष्ट्रीय छवि की कल्पना है वह अत्यन्त दूरगामी परिणाम देगी और हमारे समाज को निरन्तर ठोस व महत्वपूर्ण उपलब्धि प्रदान करती रहेगी। समस्त विश्व के कोने-कोने से सिन्धी समाज के रत्न व विभूतियां एक स्थान पर एकत्रित होकर एक नए आभूषण का रूप ग्रहण करेगी जिसकी सुखद कल्पना विश्वविख्यात कोहनूर हीरे को मात कर देगी ऐसी सुखद कल्पना सपनों में नहीं यथार्थ में परिणत करने का श्रेय यदि किसी व्यक्ति को है तो मात्र आचार्य भगवानदेव को। यह अभिव्यक्ति मैंने भावावेश में नहीं लिखी है बल्कि मात्र २ दिन के सहवास में जो कुछ यथार्थ देखा है उसका चित्रण शब्दों से करने का प्रयास कर रहा हूं।

२२ अगस्त को कानपुर में झूलेलाल महोत्सव के शुभ अवसर पर एकत्रित जनसमूह एवं मुख्य अतिथि उ० प्र० सरकार के मुख्य मन्त्री श्री श्रीपति मिश्र के समक्ष आपने जिस जोरदार ढंग से सिन्धी समाज की वकालत करते हुए उ० प्र० में सिन्धी साहित्य अकादमी के गठन की मांग की थी और आपके व्यक्तित्व के प्रभाव से माननीय मुख्य मंत्री जी ने इसे आज्ञा मानकर लागू किए जाने की घोषणा की वह हम उत्तर प्रदेश के रहने वाले सिन्धी समाज के लिए एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है जिसका एक मात्र लोकप्रिय व्यक्तित्व आचार्य भगवानदेव को है। यह ऐतिहासिक घोषणा उत्तर प्रदेश सिन्धी समाज के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण कड़ी है जिसके लिए उत्तर प्रदेश सिन्धी समाज का समस्त बुद्धिजीवी वर्ग आपका सदैव आभारी रहेगा।

निन्दा स्तुति दोउ तजो, खोजो पद निर्वान।
नानक खेल ये कठिन है किन गुरुमुख बिरले जाना।।

एक युवक : एक संस्मरण

डा० रवीन्द्र अग्निहोत्री,
२५ जयश्री, ७५ वरली सी फेस, बम्बई-४०० ०२५

आचार्य भगवानदेव प्रो० राम पंजवाणी तथा श्री बलदेव गाजरा बम्बई के समारोह में

बात लगभग चार वर्ष पुरानी है, कन्याकुमारी में एक मित्र ने जब गौर वर्ण, काले घुंघराले बाल, सुगठित शरीर, अत्यन्त आकर्षक व्यक्तित्व वाले एक 'युवक' से मेरा परिचय कराते हुए मेरे बारे में यह बताया कि इन्होंने वनस्थली विद्यापीठ में अनेक वर्षों तक अध्यापन कार्य किया है तो वह 'युवक' एकाएक बोला कि मेरी पत्नी भी वनस्थली की पढ़ी हुई हैं, पूछने पर नाम बताया 'पद्मा भारती' एकाएक पुरानी स्मृतियां जाग उठीं, पद्मा बी. एड. में मेरी छात्रा रही थी, पर वह तो अब से लगभग २० वर्ष पुरानी बात है, यह 'युवक' तो लगभग ३० वर्ष का होगा, इस विषय में अपने मित्र से पूछा तो वास्तविकता से अनभिज्ञता व्यक्त करते हुए उन्होंने मेरे अपमान की पुष्टि की, अब जेहन में एक दूसरा नाम उभरा 'पुष्पा भारवि' जिसने ५-६ वर्ष पहले ही बी. एड. किया था सोचा शायद सुनने में भ्रम हुआ है 'पद्मा भारती' नहीं 'पुष्पा भारवि' कहा होगा, पर कानों पर सहसा अविश्वास भी नहीं हो रहा

अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥ ऋ० १।९४।४
परमेश्वर हम तेरे मित्र भाव में दुःखी और विनाश वाले न हों।

था, तो मन में द्वन्द्व चलता रहा, थोड़ी देर बाद कन्याकुमारी और उसके आस-पास के दूसरे मन्दिर देखने साथ-साथ ही जाना हुआ, दक्षिण में परम्परा है कि मन्दिरों में पैंट आदि पहनकर नहीं जा सकते, बनियान तक नहीं, केवल धोती पहनकर ही जाना होता है। अधिक से अधिक उत्तरीय ओढ़ा जा सकता है, यहां उस युवक का नग्न वदन देखा तो आयु सम्बन्धी अनुमान को और बल मिला। विदा के समय जब मैंने कहा, 'पुष्पा को मेरा आशीर्वाद कहें' तब उसने जिस तरह से प्रश्न किया 'कौन पुष्पा ?' तो मेरा तो सारा समीकरण ही गलत साबित हो गया और 'पद्मा से 'पुष्पा' तक की यात्रा ही अकारथ चली गयी। यह युवक और कोई नहीं आचार्य भगवानदेव ही थे।

इस नाम से पहला परिचय कब हुआ था, सो तो ठीक ठाक याद नहीं, पर यह अवश्य याद है कि कई वर्ष पहले जयपुर के रेलवे स्टॉल पर योगासन सम्बन्धी एक पुस्तक पर लेखक के रूप में आचार्य भगवानदेव नाम पढ़कर वह पुस्तक यह सोचकर तुरन्त खरीद ली कि यह इस विषय के एक अधिकारी विद्वान् की लिखी पुस्तक है। योगासन के सम्बन्ध में अधिक जानने की इच्छा बराबर रही है। शरीर को स्वस्थ रखने में अनेक रोगों के निवारण में योगासनों की महत्वपूर्ण भूमिका पर भी मेरा विश्वास रहा है, पर नियमित योगासन करने से शरीर पर ऐसा अधिकार प्राप्त किया जा सकता है कि आयु अपने चिह्न अंकित ही न कर पाए, इसका साक्षात् अनुभव आचार्य भगवानदेव से हुई उपर्युक्त भेंट में ही हुआ, और जब यह पता चला कि दिल्ली जैसे महानगर से रहते हुए भी उन्होंने घर पर गाय रखी हुई है ताकि शुद्ध गोदुग्ध नियमित रूप से मिल सके तो ऐसा लगा कि जैसे सोने में सुहागा मिल गया हो।

पहली ही भेंट में आचार्य जी का एक और भी गुण देखने को मिला। ट्रेन देर से पहुंची थी, दोपहर का लगभग एक बज चुका था। भोजन तो सभी को करना था फिर अधिकांश लोगों को स्नान भी करना था। फिर कोई चाय-कॉफी की फरमाइश कर रहा था, कोई जूस की, कोई हिन्द महासागर, बंगाल की खाड़ी और अरब सागर के संगम को तुरन्त देखना चाहता था तो कोई गांधी स्मारक, विवेकानन्द स्मारक आदि। गरज यह है कि जितने लोग उतनी इच्छाएं। निश्चय यस किया गया कि पहले स्नान और भोजन किया जाए, फिर मीटिंग और तब घूमने-फिरने का कार्यक्रम, ऐसे अवसरों पर समय की पाबन्दी करना कितना कठिन होता है इसे हर ऐसा व्यक्ति अनुभव कर सकता है जो पन्द्रह-बीस लोगों के समूह में यात्राकर चुका हो। फिर भी अध्यक्ष के रूप में आचार्य जी ने घोषणा की कि मीटिंग के लिए तीन बजे सभी लोग हॉल में आ जाएं, मेरा अमुमान था कि तीन से चार तो बजेंगे ही, पर हैरानी तब हुई जब देखा कि तीन बजने में दस मिनट पर आचार्य जी स्वयं तो यथास्थान आ ही गए। दूसरे लोगों को भी संदेशा भेज-भेजकर तीन बजने से पहले ही बुला भी लिया। आप शायद जानना चाहें कि वे 'दूसरे लोग' थे कौन, तो बता दूं कि ये थे विभिन्न राजनैतिक दलों के संसद सदस्य, जिनमें से कुछ आचार्य जी से आयु में बड़े थे और कुछ संसदीय अनुभव में। आज इस समय की पाबंदी का गुण छोटे-बड़े हर सामाजिक कार्यकर्ता के जीवन से गायब होता जा रहा है तब समय का पालन न केवल स्वयं करना, बल्कि दूसरों से भी करा लेना केवल गुण ही नहीं, विशेष योग्यता भी है।

जीवन के पचास बरस पूरे करने के अवसर पर हमारी शुभकामना है कि आचार्य जी 'भूयश्च शरदः शतात्' के वैदिक आदर्श को साकार करें। सामाजिक जीवन में आदर्श नेता के गुणों को प्रतिष्ठापित करें और आजीवन समाज का मार्गदर्शन करते रहें। □

⟷

पांच दिना जीवन भला, विमल ज्ञान के साथ।
लाख वर्ष जीवन वृथा, बिके पाप के हाथ॥

निर्भीक-कर्मठ-सच्चरित्रवान व्यक्तित्व

—प्रो० दयाल परमार
आयुर्वेद विश्वविद्यालय जामनगर (गुजरात)

आर्य समाज टंकारा के प्रधान आचार्य भगवानदेव जी वहां के आर्यजनों के साथ। लेखक प्रो० दयाल प्रमार आचार्य जी के पीछे हाथ बांधे खड़े हैं।

मनुष्य के जीवन में, कोई व्यक्ति ऐसी कल्पना भी नहीं कर सके, ऐसा विचार भी कभी न आ सके और न कभी ऐसा स्वप्न भी आ सकता है—ऐसे परिवर्तन के प्रसंग भी बन जाते हैं। ऐसी भाग्य से बनती घटनाओं में कोई व्यक्ति प्रेरणादायक बन जाती हैं।

ऐसी ही घटना मेरे जीवन में श्री भगवानदेव जी की प्रेरणा से बनी है।

जब उस घटना की स्मृति को झकझोर कर जागृत करता है, तब सन् १९७३ के दिसम्बर मास की २३ ता० का वह सायंकाल का दृश्य मेरी आंखों के सामने खड़ा हो जाता है।

मैं महर्षि दयानन्द की जन्मभूमि टंकारा में अपनी दर्जी की दुकान पर सिलाई का कार्य कर रहा था, तब श्री भगवानदेव जी दुकान पर आए और गम्भीर स्वर में बोले—'कब तक यह मशीन पर कपड़े सीने का कार्य करते रहोगे ?"

भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम ॥ य० २५।२१
हम कानों से सदा भद्र मंगलकारी वचन ही सुनें।

मैंने कहा—"यह तो मेरी रोटी का साधन है। जीवन भर यही कार्य करना है। खानदानी पेशा चला आ रहा है।"

श्री भगवानदेव जी ने प्रेरणा के तीर समान शब्दों में कहा—"अब बन्द करो यह मशीन चलाना और इस वर्ष आयुर्वेद कालेज जो हमने खोला है—उसमें दाखिल हो जाओ।"

मैंने तुरन्त प्रतिकार स्वरूप उत्तर दिया—"पांच कक्षा तक पढ़ाई करके २० वर्ष से दर्जी का काम करते हो गए अब तीस वर्ष का हो गया हूं, अब पढ़ाई नहीं हो सकती।"

तुम लिखने का काम करते हो, साहित्य में तुम्हें रुचि है साथ में कपड़े सीने का काम भी करते हो—"क्या यह सुमेल नहीं है ?" श्री भगवातदेव जी ने प्रेरणा देते हुए कहा—"यह समय हैं आयुर्वेद कोर्स कर डालो—यह अच्छा अवसर है।"

परन्तु छोटी आयु वाले विद्यार्थियों के साथ मेरे जैसा बड़ी आयु वाले का मेल कैसे हो सकेगा? मेरा छोटे विद्यार्थियों के बीच में बैठना—मानसिक दृष्टि से ठीक नहीं लगता, मैंसे अपनी असमर्थता दिखाई।

प्रारम्भ में कुछ समय ऐसा लगेगा, परन्तु धीरे-धीरे अभ्यास हो जाएगा। जीवन में कुछ प्राप्त करने के लिए कुछ छोड़ना भी पड़ता है ? श्री भगवानदेव जी ने मुझे बड़े प्यार से समझाते हुए कहा।

"परन्तु कालेज में प्रवेश करने से पारिवारिक निर्वाह के लिए आर्थिक समस्या खड़ी होगी—उसका क्या होगा ?" मैंने अपनी कठिनाई उन्हें बताई।

"ईश्वर पर विश्वास रखो—सब ठीक हो जाएगा। कल से कालेज जाना शुरू कर दो। ऐसे आदेशात्मक शब्द कह कर वे चले गए।

महर्षि दयानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना दस रुपयों में कैसे की गई और उसकी परीक्षाएं कैसे मान्य कराई गईं—उसका चमत्कारी इतिहास एक अनोखा प्रसंग है। पांच परीक्षाएं शुरू की गईं। पांचवीं परीक्षा 'पारंगत' को आयुर्वेद कोर्स के लिए मान्य कराने का कार्य श्री भगबानदेव जी के प्रभाव का प्रताब था। मैंने 'पारंगत' परीक्षा पास कर ली। श्री भगवानदेव जी के प्रेरणा पूर्वक विचार पर मैं विचार कर रहा था मानसिक दृष्टि से तैयारी कर रहा था—इतने में पता लगा कि श्री भगवानदेव जी ने मेरी फीस कालेज में जमा कराकर मेरा नाम रजिस्टर में लिखा दिया है।

बीस वर्ष दर्जी का काम करके बड़ी आयु में मैं आभ[illegible] कर सकूंगा ? परीक्षा में मुझे सफलता मिलेगी ? इ[illegible] शंकाओं और कुशंकाओं के बीच मैंने कालेज में प्रवेश कि[illegible] पुरुषार्थ का फल मिलता ही है। प्रथम वर्ष की परीक्षा मैं अपने कालेज में प्रथम आया और गुजरात भर में मे[illegible] चौथा नम्बर आया। उत्साह में वृद्धि हुई।

श्री भगवानदेव जी ने दूसरे वर्ष में प्रवेश पर स्मार[illegible] ट्रस्ट द्वारा संचालित—"महर्षि दयानन्द हाईस्कूल में मुझे पार्टटाइम के लिये संस्कृत शिक्षक के रूप में मेरी नियुक्ति कराकर मेरी आर्थिक स्थिति की समस्या कुछ हद तक ह[illegible] कर दीं।

इस प्रकार जीवन का प्रवाह एक साथ तीन दिशाओं में कार्य करने लगा एक विद्यार्थी के रूप मैं दूसरा शिक्ष[illegible] के रूप में वह भी पांचवीं कक्षा की पढ़ाई करने के बाद स्कू[illegible] में मैट्रिक की कक्षा के विद्यार्थियों को संस्कृत का शिक्ष[illegible] के रूप में तीसरा दुकान पर दर्जी का काम करने लगा।

काल अति सूक्ष्म है। उस अनुसार पांच वर्षों [illegible] अभ्यास करके 'आयुर्वेदाचार्य" B. S. A. M. बनक[illegible] आयुर्वेद विश्वविद्यालय जामनगर में अध्यापक के रूप [illegible] कार्य पर नियुक्त किया गया।

आयुर्वेद साहित्य में सात दिलदार ग्रन्थ लिखे जो [illegible] पाठ्यक्रम के रूप में चल रहे हैं। अनुसंधान (रिसर्च) पेपर तथा अन्य आर्य साहित्य भी लिखा है और अब विश्व[illegible] विद्यालय में प्रोफेसर एवं 'कार्य चिकित्सा' विभागाध्यक्ष पद तक पहुंच गया हूं।

जब मैं बाईस (२२) वर्ष पूर्व के भूतकाल में झांक[illegible] की कोशिश करता हूं और पुराने संस्मरणों को जागृ[illegible] करता हूं तब उसके पीछे श्री आचार्य भगवानदेव की प्रेरणा और प्रोत्साहन आज भी प्रेरक बल के रूप में मेरे साम[illegible] मूर्तिमान होता रहता है।

टंकारा (महर्षि दयानन्द की जन्मभूमि) में आच[illegible] भगवानदेव जी के साथ लगभग १० वर्षों तक का सम्ब[illegible] जो रहा है उसके संस्मरण यदि लिखने बैठ जाऊं तो ए[illegible] पुस्तक बन जाएगी। अन्ततः आचार्य भगवानदेव जी [illegible] निर्भीकता, कर्मठता, और सच्चरित्रता के साथ ऋषि दया[illegible] के दीवाने भक्त के रूप में मेरे हृदय पटल पर सदा अं[illegible] रहेगी।

लेत तत्त्वज्ञानी पुरुष, बात विचार विचार।
मथनी तजकर छाछ को, माखन लेत निकार॥

मस्ताना योगी

पं० विद्याप्रसाद मिश्र

पुरोहित, आर्य भवन

जोर बाग,
नई दिल्ली-110003

जकार्ता में आचार्य भगवानदेव भारतीय राजदूत जनरल मल्होत्रा के साथ।

सौम्य : सामाजिक जीवन में यों तो हरेक को खट्टे-मीठे अनुभव होते हैं। कोई भी कुशल सामाजिक कार्यकर्ता या नेता जल्दी हिम्मत नहीं हारता। किन्तु एक ऐसा ही विचित्र पर एकदम पूर्ण आत्म-विश्वासी व्यक्तित्व हमने निकट से देखा जो कि हर हालत में एक समान दिखाई पड़ते हैं। परिस्थिति चाहे अनुकूल हो या प्रतिकूल, अभाव हो या सम्पन्नता— कभी उनके चहेरे पर चिन्ता के चिह्न नहीं देख। वे हैं—श्री आचार्य भगवानदेव जी।

ऋषिभक्त : लगभग 12 वर्ष से मैं आर्य समाज का पुरोहित हूं। इस अवधि में नीचे से ऊपर तक (शिरोमणि सभा में भी) कार्य करने का अवसर मिला। जोरबाग, में रहने के कारण कई राष्ट्रीय स्तर के नेताओं और व्यापारियों को भी देखा। महात्माओं और विद्वानों के संतसंग में सम्मिलित हुआ। लेकिन भगवानदेव जी के अतिरिक्त किसी को भी मंच पर कभी ऋषि दयानन्द के साथ घटी गंगा के किनारे वाली घटना को सुनाकर रोते और आंसू पोंछते हुए नहीं देखा। ऋषि भक्त का और दूसरा ज्वलंत प्रमाण क्या हो सकता है ?

स्वजनप्रेमी : द्वापर की कहानी हमने पढ़ी है। यह बात सत्य भी होगी कि भगवान कृष्ण ने सुदामा के साथ मित्रता निभाई पर आधुनिक युग में भी यह आदर्श आचार्य जी ने कायम रखा। वह मैंनें आंखों से देखा। एक शासक दल का एम. पी. बनने पर भी करोड़पतियों के साथ वाली पार्टी की परवाह किए बिना अपने पुरोहित और सेवक की टूटी खाट पर बैठकर कुशल क्षेम पूछते हमने देखा है।

आर्यनेता : अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सन् 1975 में आर्य समाज स्थापना शताब्दी समारोह आयोजित किया गया, उन दिनों भगवानदेव जी सार्वदेशिक सभा के

एष इन्द्रो वरिवस्कृत्॥ ऋ० ८।१६।६
यह इन्द्र ही बल का देने वाला है।

सक्रिय उपमन्त्री थे। आज भी आपके मधुर व्यवहार से सभा के कार्यकर्ता और कर्मचारी आपके प्रति अगाध श्रद्धा रखते हैं। मारिशस का आर्य महासम्मेलन भी आचार्य जी के मस्तिष्क की उपज थी। मथुरा में सम्पन्न दीक्षा शताब्दी में स्वामी के साथ आप दिन रात जुटे रहे। और तो और 12 वर्ष तक लगातार महर्षि दयानन्द की जन्मभूमि टंकारा में आश्रम के अध्यक्ष रहे। आजकल महर्षि की अलौकिक जीवनी के प्रसार का उद्देश्य लेकर दयानन्द फिल्म के निर्माण में जुटे हैं।

राजनीतिज्ञ : लोकसभा में जब कभी आप विपक्ष का उत्तर पूरे तर्क के साथ इन्दिरा जी की नीतियों के समर्थन में देते तो अच्छे, पुराने और अनुभवी सांसद भी चकित रह जाते। पंजाब में जब उग्रवादियों ने ऊधम मचाया तो आचार्य जी ने निडरता-पूर्वक अपने ओजस्वी भाषण में लोकसभा के अन्दर उग्र वादियों की तीव्र भर्त्सना की जो सर्वत्र सराहा गया।

यशस्वी लेखक : आचार्य जी की यह मान्यता है कि जो कुछ हम व्याख्यान व प्रवचन द्वारा लोगों को बताते हैं उसका प्रभाव सीमित और सामयिक होता है पर लेख के माध्यम से बताए गए वेद के पहलू, योग के अंग और समाज के मन्तव्य दीर्घकालीन और व्यापक असर रखते हैं—इसीलिए इन्होंने लिखना शुरू किया। उनकी लिखी हुई अनेक पुस्तकें विदेशों में प्रचलित हैं। भारत के तो लगभग हर रेलवे स्टेशन के बुकस्टाल पर आपके द्वारा प्रणीत पुस्तकें देखी जा सकती हैं। वे भी तो लोग हैं जो कि अश्लील और ओछे साहित्य, उपन्यास लिखकर पैसा ऐंठ रहे हैं किन्तु इन्होंने 'योग' और 'इतिहास' पर लगभग ४०-५० पुस्तकें लिखकर उन्हें छपवाकर सराहनीय कार्य किया। "योग मंदिर" मासिक पत्रिका भी निकालते हैं।

अथक परिश्रमी : हमें एक ही भवन (आर्य भवन जोरबाग) में आचार्य जी के साथ रहने का मौका मिला है। हम यह देखते थे कि वे कभी अपना समय व्यर्थ की बातों में नहीं बिताते। सवेरे अपना ब्रीफकेस लेकर एक "मस्ताने योगी" के सदृश निकल पड़ते—समाज की पत्रिका की—लोगों की समस्या समाधान का काम करते। शाम को लौटकर रात 11 बजे तक पुस्तकें लिखते। प्रातःकाल पुनः ४ बजे उठ जाते। कड़ाके की ठण्डी में भी बगीचे के फूलों की देख रेख करते। योग का क्लास लगाते, व्याख्यान देते, शंका समाधान भी करते। आम आदमी को विश्वास नहीं होता कि इतना मानसिक और शारीरिक दोनों परिश्रम कोई कर सकता है।

दयालु : एक बार इनके घर में चोरी हुई, कुछ सामान चोरी चला गया। एक कम्बल एक व्यक्ति के पास पहचान में आ गया। मैंने कहा, आचार्य जी! उस आदमी के गांव का पता मिल गया है, चलो रिपोर्ट लिखवा दें, तो उन्होंने कहा, 'अरे विद्या, क्या तुम स्वामी जी की अनूपशहर वाली घटना नहीं जानते पान में जहर देने वाले को भी उन्होंने छुड़वाया। आखिर बुरे बुराई नहीं छोड़ते तो हम (अच्छे) अच्छाई क्यों छोड़ेंगे?" उत्तर सुनकर मैं दंग रह गया साथ ही श्रद्धा में भी बढ़ोत्तरी हुई।

मेरे मस्तिष्क में आचार्य जी की दर्जनों विशेषताएं नाच रही हैं किन्तु लेख लम्बा न हो जाए इस भय से केवल कुछ बातें पंक्तियों में आबद्ध करता हूं।

सुख के शिरपर शिल पड़े, जो हरिको विसराय।
बलिहारी उस दुःख को, जो पलपल नाम जपाय॥

विश्व सिन्धी नेता

आचार्य भगवान देव

श्री० टी० एम० रामचन्द्रन—बम्बई

नई दिल्ली में पहले विश्व सिन्धी सम्मेलन के आयोजन करने और उसको भारी सफलता दिलाने की पूर्ण बधाई कांग्रेस (आई) लोक सभा सदस्य आचार्य भगवान को मिलनी चाहिए, उन्होंने अपने शक्तिशाली नेता होने के लक्षण बड़े ही प्रतिभावान ढंग से प्रकट किये हैं। यद्यपि उनका सुझाव ऐसे जेड किस्म के कार्य स्वयं करने की तरफ रहा है, सिन्धी समाज के आम रवाजी कार्य के योजना पर अपने समुदाय के लोगों को कार्य करने में अभिरुचि उत्पन्न करने की क्षमता का स्वयं में होने की सदा उसको विश्वास रहता रहा है। वह अपनी पूर्ण शक्ति स्वयं के आत्मिक शक्ति के बिना किसी खुद के फायदे को अपने समुदाय के लोगों की सेवा में लगाता रहा है। विश्व सिंधी सम्मेलन जिसका कि वे अध्यक्ष थे बुलाने से भी बहुत पहले उसने अपने बंगले का दरवाजे अपने समुदाय के लोगों के लिए खोल रखे थे जिनको उनकी तरफ से अच्छी संवेदना और अच्छा सत्कार मिलता था, दूर-दूर से सम्मेलन में शामिल होने के लिए लोग दिल्ली खिचे चले आए थे और वे उस अवसर पर आपस में बड़े ही प्रेम से एक परिवार के सदस्य के रूप में रह रहे थे। और यह एक ही अपने तरह का शानदार उदाहरण था दूसरे समुदायों के लिए। इस सम्मेलन के अवसर पर सिंधी समुदाय के सदस्यों ने जिस आत्मिक शक्ति का परिचय दिया उसका सीधा संबंध आचार्य भगवानदेव के शानदार दिल व दिमाग से है। विश्व सिन्धी सम्मेलन की सफलता जो कि उत्साहक व संतोषप्रद साबित हुई उसकी हर विवेक बुद्धि आचार्य जी के पास है। जनता को एक स्थान पर बुलाना कोई हंसी-मजाक का कार्य नहीं है। इसके लिये वास्तविक आत्मिक शक्ति का होना अति आवश्यक है। और आचार्य जी ने यह अत्यन्त बलशाली शक्ति बहुत ही दुष्कर प्रयासों के बाद प्राप्त की है। स्पष्ट रूप से यह सब उसके अल्प से हाथ में जादू की लकड़ी का होना लगता था। प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी से सम्मेलन का शुभारम्भ कराना उनके द्वारा तीन वर्षों में किये गये असंख्य सभायें, बिलक्षण व्यक्तियों से मिलना, परिश्रमी संगठनों को अतिगूढ़ सकल्प में लाना व समझाने की पराकाष्ठा की तरफ इंगित करता है, सम्मेलन के बाद मेरे साक्षात्कार के अवसर पर कहा कि वह इसको एक सुन्दर स्वप्न समझता है। आचार्य जी ने सुझाया कि सिन्धियों ने हर कार्य क्षेत्र में शानदार

स्वस्थ हृदय से सदा दमकती, रहती है देह हमारी,
नियमित खान-पान, संयम के, हम सब बनें पुजारी।

सफलता प्राप्त की है। विशेष रूप से उनके परिश्रमी स्वभाव अच्छे नेतृत्व और व्यापार में हानि लाभ की चिंता किए बिना व्यापार में कूद पड़ना। उसने दृढ़तापूर्वक बताया कि सिंधियों ने व्यापार और शिक्षा में स्वयं को अच्छा होशियार बनाया है। सिन्धियों को उनके द्वारा बड़ी संख्या में स्थापित किए गये हास्पिटल व कालेज के लिये भी बड़ी ख्याति प्राप्त है। सिन्धियों को शिक्षा का केन्द्रीय बोर्ड कायम करने (जो कि सम्मेलन का एक मुख्य पद था) का मुख्य कार्य के बारे में आचार्य जी ने बताया कि हर राज्य में सिन्धी छात्रों के लिए अलग-अलग पाठ्यक्रम होने से सिन्धियों के लिये बहुत ही परेशानी का कार्य हो गया है। उन्होंने बताया कि बोर्ड उपायों की सिफारिशें करेगा जो कि स्कूलों में पाठ्यक्रम को एकरूपता देने में कारगर साबित होगी। आचार्य जी ने यही बात उनसे २६ अप्रैल १९८१ को लोकसभा में सिन्धी में भाषण करते हुए कही थी। उन्होंने इसके पश्चात् इस बारे में प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी से परामर्श किया था और उन्होंने विश्वास दिया था कि वे सम्बन्धित राज्यों को इस बारे में लिखेगी। आचार्य ने बताया कि यह कोई बहस करने का आवश्यक विषय नहीं है कि सिन्धी भाषा लिखने के लिये देवनागरी लिपि से काम लिया जाये या अरबी लिपि से लिया जाये। समाज के अध्यक्ष ने आकाशवाणी से रोज रात को ८.४५ से ९.१५ पर सिंधी में प्रोग्राम शुरू कराने के सरकार के कदम पर संतोष प्रकट किया है। १४ अगस्त से पाकिस्तान के सिन्ध प्रांत में हुए उपद्रव की तरफ ध्यान आकर्षित करते हुए उन्होंने पाक सरदार जिया-उल-हक द्वारा सिंध प्रांत में रहने वालों पर किये गये जुल्मों की कड़े शब्दों में निन्दा की। उसने दृढ़तापूर्वक कहा कि जनरल जिया-उल-हक पाक जनता को अपनी आवाज उठाने व अपने अधिकारों की मांग करने का पूरा अधिकार है। उसने आशा प्रकट की कि पाक में लोकतंत्र कायम होगा और राक्षसी शासन नष्ट होगा।

पूर्व जीवनी

आचार्य भगवानदेव के पिता का नाम श्री गोपालदास है, वे २३ फरवरी, १९३५ में गांव बबरानी, तालुका शेहदादपुर, जिला नवाबशाह सिंध में जन्मे थे। नौजवान भगवानदेव ने अपनी शिक्षा मोहम्मद अली मेमोरियल हाई स्कूल ब्यावर, गुरुकुल यूनिवर्सिटी, वृन्दावन और महर्षि दयानंद संस्कृत यूनिवर्सिटी टंकारा गुजरात में प्राप्त की, उन्होंने अपनी जीवन यात्रा पत्रकारिता व लेखन से शुरू की और शुरू से ही वे स्वतन्त्रता से सम्बन्धित रहे। वे १२ बार जेल गए। गोवा को आजादी दिलाने वाले कार्य में भी ने शामिल थे। वे महर्षि दयानंद योग आश्रम में जनरल सेक्रेटरी भी बने जहां से उनको आचार्य की उपाधि मिली। १९७६ से वे अखिल भारतीय यंत्र जीवन परिषद् के जनरल सेक्रेटरी बने इसके बाद वे गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा के वाईस प्रेसीडेण्ट बने। वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त सेक्रेटरी भी बने। बाद में वे पिछड़ा वर्ग सेवा संघ के सहायक अध्यक्ष बने, समकालीन रूप से वे महर्षि दयानंद आश्रम टंकारा अखिल भारतीय स्वामी श्रद्धानन्द स्मारक ट्रस्ट, श्रद्धानंद सेवा संघ, आर्य वीर दल बम्बई और संयोजक महात्मा आनन्द स्वामी स्मारक निधि के अध्यक्ष बने। आचार्य जी को हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू, बंगाली, गुजराती, सिन्धी और मराठी भाषाओं का अच्छा ज्ञान है। उन्होंने करीब ५० पुस्तकें लिखी हैं। जिसमें (हिन्दी में) "स्वतंत्रता की वेदी पर" "महर्षि दयानन्द अष्टांगा योग प्रकाश", "योग और स्वास्थ्य", "योग से रोग मुक्ति", "योग मुक्ति प्रकाश", "योग पुरुषों के लिए", "योग स्त्रियों के लिए", "योग और सेक्स", "आर्य शहीद संस्कार चन्द्रिका" और अन्य दूसरे भी हैं। उन्होंने गुजराती व सिंधी भाषा में भी कई पुस्तकें लिखी हैं। वे योग मंदिर के भी सम्पादक माहवार रह चुके हैं। उनका खासकर लेखन, शिक्षा संस्थाओं व पिछड़े हुए वर्गों की सेवा में कार्य करने की चाह रहती आ रही है। उनको अपने समाज के लिए बहुत ही प्यार है। ★

मानव का उत्कर्ष निहित है, उसके स्वास्थ्य संवार में,
इस धरती को नहीं बहाओ, तुम भूलों की धार में।

आचार्य भगवान देव का दिल्ली के चुनाव में जोरदार प्रभाव

नवीन सम्पादक

दिल्ली के चुनाव के दौरान आचार्य भगवानदेव जी जो राजस्थान में अजमेर क्षेत्र के संसद सदस्य हैं उन्होंने एक प्रमुख भूमिका अदा की। आचार्य जी और मेरे संबंध बहुत पुराने हैं, जबसे हैं जबकि वे शासन में भी नहीं थे। आर्य समाज की सेवा में लगे हुए थे तब से मेरा आचार्य साहब के साथ संबंध है। उन्होंने जो काम आसाम, उड़ीसा, आंध्र, कर्नाटक व तमिलनाडु के जंगलों में जाकर किया वो कोई आम बात नहीं है। यह बहुत कम लोग जानते हैं कि भगवान देव जी बुनियादी तौर पर जनता की सेवा में लगे रहते हैं।

उन्होंने हमेशा यह अपना विचार रखा है कि एक आम आदमी किस तरह सन्तुष्ट हो और उसकी मुश्किलें कैसे दूर हों। उन्होंने कभी इस बात की चिंता नहीं की कि वह अपने काम को पूरा भी कर पायेंगे या नहीं। अगर कोई काम उन्हें दिया गया है तो वह उस काम में ऐसे कूद जाते हैं, जैसे प्रहलाद होलिका की आग में कूद गये थे।

क्योंकि भगवानदेव जी को विश्वास है कि इनकी सचाई इनका संकल्प हर आग को फूल बना देगा। आचार्य भगवानदेव जी ने जो काम दिल्ली के चुनाव के दौरान किया उसे वही समझ सकता है जिसने इनको काम करते हुए देखा है।

हालांकि आचार्य जी कोई धनवान व्यक्ति नहीं हैं। इनके पास मोटर गाड़ी या बहुत रुपया-पैसा नहीं है। हैरानी की बात यह है कि इन्हें इन चीजों में दिलचस्पी भी नहीं है। वो तो सिर्फ काम से मतलब रखते हैं चाहे बस से जाना पड़े या मोटर या स्कूटर या तांगे से, जैसे भी जाना पड़े जाना है।

लेकिन इन्हें कोई चिन्ता नहीं लोगों से वह मिले उन्होंने कांग्रेस आई के बारे में बताया और जनता से मदद मांगी और मदद प्राप्त भी की। करौलबाग, लाजपतनगर के क्षेत्र में आचार्य जी ने लोगों के घरों में जाकर कांग्रेस आई का परिचय दिया और इस मुतलिक बातचीत वहां के क्षेत्र के नागरिकों से की।

कांग्रेस आई के विरोधियों को भी अपने प्रभाव से उन्होंने अपना बना लिया। सिख भाईयों पर भी उन्होंने अपना प्रभाव जमाया है लेकिन सिन्धी और आर्य समाज क्षेत्र में इनका प्रभाव बहुत ही था जिसका लाभ चुनाव के वक्त कांग्रेस आई को इस क्षेत्र का लाभ इनके प्रभाव से हुआ अगर इस किस्म के व्यक्तियों को जिम्मेदारी दी जाए।

इस किस्म के व्यक्तियों को जिम्मेदारी देने से पार्टी को बहुत बड़ा बल मिलता है तथा फायदा चुनाव के वक्त मिलता है।

कांग्रेस हाईकमान को चाहिये कि ऐसे कार्यकर्ताओं को पहले प्राथमिकता दी जाये ताकि वह देश की व पार्टी की दिल खोलकर सेवा कर सकें। मैं कांग्रेस आई को बधाई देता हूं कि इसके पास ऐसे अच्छे कार्यकर्ता हैं जिनको सिवाय पार्टी व देश के अलावा कुछ भी नहीं दिखाई देता है। ऐसे व्यक्ति ही देश के भविष्य के लिए जरूरी हैं। इनकी हिम्मत को कभी भी पार्टी अनदेखी नहीं करे। ★

मैके में तेरे है क्या जो इस जगह नहीं ?
उस जा खुदा है इनका इस जगह नहीं ?

कुशलता के प्रतीक

दीपक कोडवानी
महामंत्री
अखिल भारतीय सिन्धी समाज

सिंधी समारोह में बोलते हुए आचार्य भगवानदेव

आचार्य भगवान देव वैसे आर्य समाज के क्षेत्र में कई वर्षों से जुड़े हुए हैं किन्तु कुछ समय पूर्व सिन्धी समाज के कार्य में रुचि दिखाकर उन्होंने अपने निष्ठा, लगनशीलता व कार्य करने के तेज गति व कुशलता का जो धमाका पैदा किया है वह आश्चर्यजनक व चमत्कार है। सफल विश्व सिन्धी सम्मेलन बुलाकर उन्होंने न केवल सिन्धी समाज में चेतना पैदा की है परंतु वह विशाल कार्य करके दिखाया है जो गत ३४ वर्षों में किसी सिन्धी नेता ने नहीं करके दिखाया।

किन्तु फिर भी जिस जोश व होश से वह कार्य करते हैं उसके लिये उनका लोहा मानना पड़ेगा। जिस कार्य का वे बीड़ा उठाते हैं उन्हें पूरा व सफल किये बिना चैन से नहीं बैठते। उनके नेतृत्व में सिन्धी समाज ने बहुत कुछ पाया है। विशेषकर कांग्रेस (इ) सरकार व सिन्धियों को एक दूसरे के निकट लाने में पुल बनकर जो सफलता पाई है वह उल्लेखनीय है।

आचार्य भगवानदेव अपने जीवन के ५०वे वर्ष पूरे कर रहे हैं, यह जानकर विश्वास नहीं होता क्योंकि वह अभी भी नवयुवक लग रहे हैं जिस फुर्ती से वह काम करते हैं उसे देखकर ऐसा लगता नहीं कि उन्होंने जीवन की ५० सीढ़ियां चढ़कर पार की हैं।

मेरी प्रभु से प्रार्थना है कि उसे लम्बी आयु, चुस्ती नवयुवक जैसी शक्ति व फुर्ती दे ताकि वह अधिक से अधिक देश व समाज की सेवा करते रहें। मेरी शुभ कामनायें उनके साथ हैं।

□

फिरे भटकते हैं लाखों पंडित, हजारों दाना, करोड़ों स्याने।
जो खूब देखा तो यार आखिर, खुदा की बातें खुदा ही जाने।।

दैनिक दलित पुकार— अजमेर

आचार्य की ऐतिहासिक उपलब्धि

अम्बेडकर जयन्ती अजमेर के समारोह में सम्पादक तथा लोगों के साथ आचार्य भगवान देव

अभी हाल ही में ऐतिहासिक अभूतपूर्व सफलता के साथ सम्पन्न हुआ विश्व सिंधी सम्मेलन आचार्य भगवानदेव सांसद की ऐतिहासिक उपलब्धि है। जिसको सारा विश्व सिन्धी समाज कभी भी नहीं भूल सकेगा। पिछले ७ महीनों का प्रयास जिस पर स्वयं आचार्य जी को भरोसा नहीं था कि क्या यह विश्व सिन्धी सम्मेलन कर पाएंगे या नहीं लेकिन गजब ही हो गया विश्व सिन्धी सम्मेलन में विश्व भर के लगभग २० हजार सिन्धी भाई-बहिनों ने भाग लिया और सम्मेलन भी दिल को छूने वाला ही हुआ। इस सम्मेलन की हर सिन्धी भाई बहन पर गहरी छाप लगी है।

विश्व सिन्धी सम्मेलन में प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी एवं राष्ट्रपति ज्ञानी श्री जैलसिंह जैसी महान् हस्तियों ने भाग लिया जिससे विश्व भर के सिन्धी समाज में एक खुशी की लहर दौड़ गई और जो भी सिंधी भाई-बहन इस विशाल सिंधी सम्मेलन में आये वे इतने खुश थे कि उनकी दिल्ली छोड़ने की इच्छा ही नहीं हो रही थी। इतने बड़े सम्मेलन की तैयारियां करने से पहले आचार्य भगवानदेव के पास एक फूटी कौड़ी भी नहीं थी लेकिन उनकी हिम्मत, आत्मविश्वास, दृढ़ संकल्प, निष्ठा, ईमानदारी, एवं लगन ने उन्हें हारने नहीं दिया। इस दौरान वे विश्व भर के सिंधी समाज से मिले उन्हें विश्व सिन्धी सम्मेलन में आने का निमंत्रण दिया जिससे छोटे से छोटे गांव से लेकर बड़े से बड़े शहरों, तथा देश-परदेश सभी स्थानों में आचार्य के स्वयं दरवाजे से दरवाजे पर जाने से लोगों में एक नई रुचि पैदा हुई और वे सभी इस शेर को धन्यवाद, और बधाईयां देने हेतु दिल्ली चल पड़े।

सम्मेलन की विशालता को देखकर कई सिरफिरों ने अपने-अपने तौर तरीकों से सम्मेलन को फेल करने की पूरी पूरी कोशिशें की, लोगों को भड़काया, एवं भ्रम में डालने की कोशिश की लेकिन सिंधी समाज ने भी इन सिरफिरों की कुछ भी परवाह नहीं की तथा हजारों की संख्या में सम्मेलन में भाग लिया। और जिसने भी इस कुम्भ के मेले में भाग लिया उसकी मनचाही इच्छा पूरी हुई और जिन्होंने इस सम्मेलन में हिस्सा नहीं लिया वे सभी आज पछता रहे हैं।

किसी से तेरा पार जाए न पाया, तू वे अन्त है तेरी बेअन्त माया।
तेरी खूबियां फिर लिखे 'देश' कैसे, स्वयं आप जानो कि हैं आप कैसे॥

सम्मेलन विराट् होने के नाते सभी ने यह सोचा था कि वहां काफी कमियां रहेंगी और सम्मेलन में जाने वाले सिन्धी भाई-बहन परेशानी महसूस करेंगे। लेकिन विश्व भर के हजारों की संख्या में सिन्धी भाई-बहन एकत्रित होने के बावजूद भी वहां पर किसी प्रकार की कोई परेशानी नहीं हुई।

किसी भी बात की कमी नहीं थी, जितना आचार्य ने सम्मेलन से पूर्व लोगों को बताया था उससे भी ज्यादा निकला। प्रधानमन्त्री एवं राष्ट्रपति द्वारा सिन्धी समाज के लेखक, पत्रकार, स्वतंत्रता सेनानी, गायक, सामाजिक कार्यकर्ता, सेठ साहूकार, तपस्वी, कवि, कलाकार एवं सामाजिक सेवाएं अर्पित करने वाले देश भक्तों, विश्व भर के कोने-कोने से आए तो उनका सम्मान, एवं उन्हें शील्ड प्रदान करवाकर एक गौरवमय उदाहरण प्रस्तुत किया है।

अमर शहीद हेमू कालानी की मां, जिसे सिन्धू माता के खिताब से सम्मानित किया जा चुका है उस महान् मां का भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा भव्य स्वागत व सम्मान कराना तथा शहीद हेमू कालानी का डाक टिकट जारी करवाना विश्व भर के सिन्धी समाज के लिए एक ऐतिहासिक मिसाल कायम हुई है।

प्रधानमंत्री एवं राष्ट्रपति का सिंधी समाज के प्रति उमड़ता हुआ प्यार, यह एक सबसे विशाल एवं ओजस्वी सफलता सम्मेलन की रही। इसको पूरे विश्व के सिंधी समुदाय ने हृदय से आभार मानते हुए सराहना की।

विश्व सिन्धी सम्मेलन एक विराट् सम्मेलन और [illegible] महान् कार्य को निष्ठा, लगन एवं रुचि लेकर करने वाला [illegible] ही व्यक्ति आचार्य भगवानदेव जिसने दिखा दिया कि [illegible] भर का प्यार किस प्रकार से पाया जा सकता है। इतना [illegible] कार्य और एक भी पैसा किसी का बकाया नहीं, वास्तव [illegible] गजब की ही हिम्मत है।

विश्व भर के सिन्धी समाज ने भारत की प्रधानमंत्री एवं राष्ट्रपति के सामने आचार्य भगवान देव सांसद [illegible] अपना नेता माना है, और उससे काफी अभिलाषाएं [illegible] अपने समाज को आगे बढ़ाने को रखी है। इस विश्व सि[illegible] सम्मेलन में सिन्धी समाज के अलावा अन्य समुदाय का [illegible] सहयोग आचार्य जी को उनके प्यार एवं मधुर स्वभा[illegible] मेल-जोल, एवं लगन के कारण मिला है। आचार्य भग[illegible] देव सांसद ने उन्हें भी राष्ट्रपति द्वारा उनके सहयोग [illegible] सराहना करते हुए मान-सम्मान करवाया है जिससे उन[illegible] मान-सम्मान सिन्धी समाज के साथ-साथ दूसरे समाज [illegible] भी बढ़ा है। विश्व सिन्धी सम्मेलन पूरी ऐतिहासिक अभू[illegible] पूर्व सफलता के साथ सम्पन्न हुआ है यह आचार्य भगवान [illegible] देव की एक शानदार अभूतपूर्व उपलब्धि है जिस पर इंदिरा [illegible] जी एवं श्री ज्ञानी जैलसिंह ने उन्हें हार्दिक बधाई दी है।

प्रधानमंत्री एवं राष्ट्रपति ने विश्व भर के सिंधी समाज [illegible] की समस्याएं अपनी समस्याएं मानकर उन्हें हर सम्भव [illegible] सहायता देने का प्रयास किया।

राष्ट्रपति जी को भेजी आपकी पुस्तक "अष्टांग योग प्रकाश" प्राप्त हुई; इसके लिए उनकी ओर [illegible] धन्यवाद स्वीकार करें।

—खेमराज गुप्त (सचिव) (राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली)

आचार्य भगवानदेव जी ने "अष्टांग योग प्रकाश"– बड़े परिश्रम, स्वाध्याय और स्व-अनुभव के आधार [illegible] बहुत अच्छी पुस्तक का प्रकाशन किया है। सर्वसाधारण को इससे बहुत लाभ होगा।

—डा० दुःखनराम पद्मभूषण [illegible]

चूकें नहीं, संभल जाएं, सब गरिमा भरे निखार में,
मानव का उत्कर्ष निहित है, उसके स्वास्थ्य संवार में।

"श्रीमान भगवानदेवजी एम०पी० के जन्म दिवस के शुभ अवसर पर हमारा अभिनंदन"

ले० श्री आनन्दप्रियजी पंडित
बी० ए० एल० एल० बी०
म० प्रदेश

मैं श्रीमान् भगवान देव जी से उस समय से परिचित हूं, जबकि वे पाटण आर्य समाज के एक कार्यकर्ता थे। उनकी महर्षि दयानन्द जी के प्रति असीम भक्ति और कार्य करने की शक्ति देखकर मैं अत्यन्त प्रभावित हुआ और जब मैंने महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा के मंत्री के रूप में टंकारा में मोरवी महाराजा का राजप्रसाद खरीदा, उस समय जेतपुर के श्री अंबाला जी पटेल के पश्चात् किसी कर्मठ व्यक्ति की आवश्यकता थी उस समय मैंने श्री आचार्य भगवान देव जी को स्मरण किया और वे बड़ी लगन से उस कार्य में जुट गये। टंकारा में रहते हुए जिस लगन से उन्होंने काम किया, उससे महात्मय का कार्य चमक उठा। और जब टंकारा में महर्षि दयानंद महात्म्य के अन्दर आयुर्वेद कालेज स्थापित किया, उस समय आयुर्वेद के विद्यार्थियों को तैयार करने का काम उनका ही था।

टंकारा से मुक्त होकर वे दिल्ली गये और वहां उन्होंने अपने बल पर अपना सिक्का जमा दिया। इस समय वे अजमेर से एम०पी० पद पर आसीन हैं। श्री भगवानदेव जी की आर्यसमाज के कार्यों में असीम श्रद्धा है और उन्होंने गुजरात के विविध क्षेत्रों में आर्यसमाज का जो कार्य किया है वह प्रशंसनीय है। इस समय लोकसभा में रहकर वे जो सेवा कर रहे हैं। उससे समाज गौरवान्वित रहा है। समाज का संगठन करके देश, जाति और धर्म की सेवा करके वे बड़ा भारी काम कर रहे हैं।

पं० आनन्दप्रिय जी शुद्ध आयुर्वेद महा सम्मेलन में आते समय बस दुर्घटना में घायल होने पर आचार्य भगवान देव उन्हें मिले।

ईश्वर से प्रार्थना है कि ऐसे कर्मठ व्यक्ति को वे उत्तरोत्तर शक्ति प्रदान करें, जिससे वे देश, जाति और धर्म की सेवा करते हुए अपनी कीर्ति में चार चांद लगाएं। स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर हम उनका अभिनन्दन करते हैं। □

व्यावर की तीर्थ यात्रा

— के० नरेन्द्र
१९ जून १९७५
दैनिक वीर अर्जुन नई दिल्ली
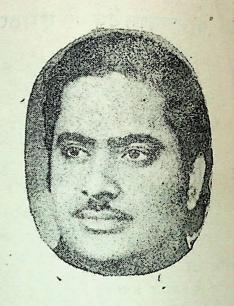
दिल्ली के राजनीतिक मामलों में आजकल हर कोई उलझा हुआ है और एक पत्रकार को तो इन दिनों और कुछ सोचने की फुरसत ही नहीं। इसी कारण मैं अपनी एक तीर्थ यात्रा का उल्लेख न कर सका। आर्यसमाजी विचारों का होने के कारण मैं तीर्थों में अधिक विश्वास नहीं करता। फिर भी मुझे यह कहने में कोई आपत्ति नहीं कि गत शनिवार को मुझे ऐसे ही एक तीर्थ स्थान की यात्रा करनी पड़ी। मेरा संकेत राजस्थान के शहर व्यावर से है। व्यावर राज्य में आधी दर्जन बड़े शहरों में से है और वहां जाने का अवसर मुझे उस समय मिला जब आचार्य भगवानदेव शर्मा ने मुझे राजस्थान प्रान्तीय आर्य समाज स्थापना शताब्दी समारोह में शामिल होने का निमंत्रण दिया। जब उन्होंने मेरा दिन का कार्यक्रम बताया तो मैं घबरा गया। राजस्थान में जून माह में दोपहर को ढाई बजे यदि किसी को बाजारों में शोभा यात्रा में शामिल होना पड़े तो उसकी स्थिति क्या होगी। मैं इसके लिये तैयार न था किन्तु आचार्य जी के आग्रह ने मुझे विवश कर दिया। इसके साथ ही केन्द्रीय आर्य सभा के मालिक रामलाल जी का पत्र मुझे मिला जिसमें उन्होंने कहा कि मैं अधिकांशतः शिकायत करता रहता हूं कि आर्यसमाज में अधिक नवयुवक दिखाई नहीं देते। आपने कहा कि व्यावर एक बार ही आइये और फिर बताइये कि नवयुवक आर्य समाज में हैं या नहीं।

चुनांचे मैं गया और आज मैं यह कह सकता हूं कि मलिक सा[illegible] ने जो कुछ कहा था वह सोलह आने नहीं सवा सोलह आने सही है और यही कारण है कि मैंने व्यावर यात्रा को एक तीर्थ यात्रा कहा है। मैंने व्यावर में [illegible] युवकों, बूढ़ों, पुरुषों, महिलाओं, बच्चों तथा सारे शहर की आर्य समाज के प्रति जो श्रद्धा व निष्ठा देखी उससे मुझे [illegible] अधिक प्रसन्नता हुई। किसी को कड़कती धूप का ख्याल [illegible] न कोई गर्मी से परेशान था और कोई 3 घण्टे में जुलूस [illegible] शामिल रहा। मुझे पता नहीं कि समय किधर गया। [illegible] तो यह है कि सारा शहर ही उस दिन आर्य समाजी [illegible] गया था। सबसे अधिक प्रसन्नता की बात यह थी कि [illegible] के मुसलमानों, जैनियों और इसाईयों ने भी दिल खोल[illegible] आर्य समाज के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त की। उन्होंने [illegible] अपने क्षेत्रों में स्वागती द्वार बना रखे थे। अब कोई [illegible] कि ऐसी स्थिति में व्यावर को एक तीर्थ स्थान कहा [illegible] या न कहने की आवश्यकता नहीं कि व्यावर के इस [illegible] सफल समारोह के लिए आचार्य भगवानदेव और [illegible] अथक साथी बधाई के पात्र हैं।

□

संभलें, घर के काम करें खुद, उन्नति इस पर सारी,
नित व्यायाम, भ्रमण की अथवा, आदत हो सुखकारी।

पर पीड़ा के भागीदार भगवान देव

शंकरलाल जैन
अध्यक्ष, ब्लाक कांग्रेस कमेटी
टाटगढ़-३०५९२४, राजस्थान

आचार्य भगवानदेव आकाशवाणी पर बोलते हुए

महात्मा गांधी के शब्दों में—"वैष्णव जन तो/ तेने कहिए, जे पीर पराई जाणे रे।" आचार्य भगवान देव को वैष्णव जन कहा जाय तो कोई अति शयोक्ति नहीं होगी। सहकारी-विभाग के कुछ कर्मचारियों ने गरीब ग्रामीणों के बर्तन आदि कुर्क कर लिए; ज्यों ही आचार्य जी को यह मालूम हुआ वे मौके पर पहुंचे और कर्मचारियों की बोलती बन्द कर दी, ग्रामीण उपकृत हुए।

टाटगढ़ में पंचायत द्वारा बनाए जा रहे सार्वजनिक प्रतीक्षालय पर सरकार द्वारा रोक लगा दी गई। पंचायत की ओर से सरपंच और हम दौड़ लगा रहे थे। विधायक, मन्त्री और अधिकारी सभी सरकार की ओर झांक कर मौन रह जाते। आचार्य जी को सारी व्यथा सुनाई। उन्होंने तत्काल हमारी व्यथा को समझा और प्रयत्न चालू कर दिया कि हमारा मार्ग सुगम हो गया प्रतीक्षालय आज भी जन-जन का आश्रय बना हुआ है।

जवाजा पंचायत समिति में स्थाई समितियों के चुनाव को लेकर पार्टी को मुंह की खाने जैसी स्थिति बन गई स्थिति से अवगत होते ही भगवान देव जी ने अपना चक्र चलाया कि चुनाव स्थगित हो गए। विरोधियों के मूंग ठन्डे हो गए। पार्टी का संकट टल गया।

तेरापंथ-भवन के उद्घाटन के समय तो हमारे साथियों ने बिना स्वीकृति के ही शिलालेख पर आचार्य जी का नाम अंकित करवा दिया कि वे मित्रों की बात कभी नहीं टालेंगे। उन्हें अन्यत्र जाना था किन्तु फोन पर हमारी बात सुनकर उन्होंने केवल यही कहा "मैं पहुंच रहा हूं" आत्मभाव का इससे बढ़कर कोई उदाहरण हो नहीं सकता।

टाटगढ़ जैसे छोटे से कस्बे के गरीब नागरिकों के कहने पर वे केन्द्रीय मन्त्रियों को वहां ले आए और टाटगढ़ के इतिहास में स्वर्णिम कड़ी जोड़ दी।

हंसता चेहरा, विशाल मस्तक, स्वस्थ सुडौल शरीर, स्फूर्त चाल और शेर सी आवाज ये हैं उनके व्यक्तित्व की विशेषताएं जो प्रथम परिचय ही में व्यक्ति को लुभा लेती हैं। उनमें औपचारिकता कम और आत्मोपम्य अधिक हैं। जब-जब मैं दिल्ली गया उन्होंने मुझे साथ बिठाकर भोजन करवाया, कुशलक्षेम पूछा और मेरी समस्या को सुलझाने की सचेष्ट हुए। कुर्सी का अहं उनसे अब भी भी बहुत दूर है।

आचार्य जी के अभिनन्दन की बात उर्वर मस्तिष्क की देन है। इस प्रसंग पर मैं उनके सहस्रायु होने की कामना करता हूं।

**शहीदों की मजारों पर लगेंगे हर बर्ष मेले।
देश पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा॥**

आचार्य भगवान देव

एक कर्मठ कार्यकर्ता

श्री देवदत्त वाली
देहरादून
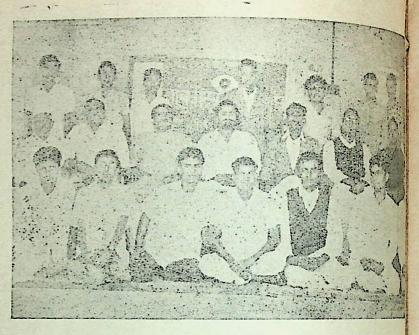
आचार्य भगवान देव महर्षि दयानन्द की जन्मभूमि टंकारा में आयुर्वेद कालेज के प्रथम स्नातकों के साथ

**ओइम् इडा सरस्वती मही तिस्रो देवीर्मयो भुव: ।
बर्हि: सीदन्तु अस्रिध: ।।**

आचार्य भगवान देव मुझे इसलिए प्रिय हैं कि वे 'प्रथमा विश्ववारा संस्कृति' को मानने वाले हैं। इसलिए नहीं कि वैदिक संस्कृति एक सम्प्रदाय-विशेष हो जिससे मैं भी और भगवान देव भी प्रेरित हों, प्रत्युत् इसलिए कि वह 'प्रथमा विश्ववारा' संस्कृति मानव-धर्म का उपदेश देती है और वही न केवल हमारी राष्ट्रीय समस्याओं का सच्चा समाधान प्रस्तुत करती है अपितु विश्व-मानवों के शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नयन का मार्ग दिखा कर, उनमें अज्येष्ठ-अकनिष्ठ भाव पैदा करते हुए सच्चे भ्रातृभाव का सृजन कर सकती है।

इडा (वाणी) सरस्वती (प्रवाहमयी संस्कृति) और मही (विशाल मातृ भूमि), इन तीनों देवियों को भगवान देव अपने हृदयासन पर सदा आसीन रख सकें, यही प्रभु से प्रार्थना है।

कई बार सोचा है कि संस्कृति के सांचे में ढले हुए भगवानदेव जैसे व्यक्ति को यदि सरकार में अधिकार का कोई पद मिल जाय तो वह अधिक उपयोगी काम कर सकें। दूसरे ही क्षण विचार आता है कि यदि भगवान देव सरकार में मंत्री बना दिए जाएं तो कहीं ऐसा न हो संसद सदस्य रहते वे जन-समस्याओं से जितना जूझते रहते हैं, फिर उनसे उतना ही दूर हो जाएं। अभी तो जो भी व्यक्ति उनके घर पर पहुंच जाता है वे उसकी योग्य सहायता तत्परता से करते हैं परन्तु यदि वे मंत्री बन जावें तो शायद आम व्यक्ति की पहुंच से परे न हो जाएं। मेरा अनुभव है कि हमारे देश के मन्त्रियों को 'चमचे' ऐसे घेरे रहते हैं कि उनसे मिलना और दो मिनट आराम से बात करना भी कठिन हो जाता है। इसीलिए आवश्यक सामाजिक हेतु से भी किसी मंत्री से मिलना मुझे तो प्राय: अरुचिकर ही लगता है। 'चमचों' से और ऐसे लोगों से मंत्री के घिरे रहने के कारण जिनकी उपस्थिति का लक्ष्य मंत्री जी के निकट पास मंडराते रहना मात्र होता है, जो व्यक्ति किसी अत्यन्त आवश्यक कार्य से मंत्री जी से मिलना चाहे

**उत्तम सुत साई जानिये जो देश भगत सुजान ।
मातृ-पितृ कुल तारि दे, करै विश्व कल्याण ।।**

हों, कई घंटे समय नष्ट करने के बाद ही शायद मंत्री जी से भेंट करना उनके लिए सम्भव हो सके।

भगवानदेव जैसा व्यक्ति जो सबकी उचित बातों को पूर्ण करने को तत्पर रहता है, मंत्री बना दिए जाने पर जन-सामान्य से छिन न जाए, यह आशंका पैदा होने लगती है। मुझे याद है जब वे गढ़वाल लोक-सभा क्षेत्र के उपचुनाव में अपने दल [कांग्रेस इ.] के लिए समर्थन जुटाने देहरादून आए हुए थे और मेरे पास ठहरे थे। उनके दल के कार्यकर्ता उनके पास आते थे और बताते थे कि अमुक क्षेत्र या अमुक वर्ग के लोग हमें समर्थन देने को तैयार नहीं हैं क्योंकि उनकी कुछ शिकायतें हैं। भगवानदेव तुरन्त उन कार्यकर्ताओं के साथ, सम्बन्धित लोगों के पास जाते थे और उन्हें बताते थे, "यहां से चुनाव में कोई जीते या कोई हारे, इस बात से चिन्तित हुए बिना आप मुझे लोक-सभा में अपना प्रवक्ता मान सकते हैं। जो भी आप की समस्या होगी उसके न्यायपूर्ण समाधान के लिए मैं सदा प्रयत्न करूंगा।

मैं देखता था कि भगवानदेव का जादू काम करता था और इससे उनके बल के लिए समर्थन बढ़ा भी। मुझे यह नहीं मालूम कि उनके दल के स्थानीय कार्यकर्ताओं ने अपने क्षेत्र के कितने लोगों की समस्या उन तक पहुंचाई और भगवानदेव जी ने उनमें से कितनी समस्याओं का समाधान कराया परन्तु इतना जानता हूं कि जब कोई व्यक्ति उनके घर पर अपनी समस्या लेकर पहुंच जाता है तो हो नहीं सकता कि वे उस पर उचित ध्यान न दें। मुझे याद है कि एक विपक्षी दल के, जिसने कभी कांग्रेस का साथ नहीं दिया था, एक स्थानीय पदाधिकारी को अपने सौजन्य और उदार भ्रातृ-भावना के प्रदर्शन से भगवानदेव जी ने कैसे इस बात पर सहमत कर लिया था कि वह तथा उसका दल उपचुनाव में कांग्रेस का विरोध न करें। यह कोई छोटी बात नहीं है। मैं सोचता हूं कि यदि हमारे देश के विभिन्न राजनीतिक दलों के लोग एक-दूसरे दल के लोगों के प्रति परस्पर सम्मान का भाव रखते हुए बरत सकें तो कई विषयों पर उनमें सहकार्य सम्भव हो सकता है। परन्तु मानना पड़ेगा हजार में से ९९९ राजनीतिक कार्यकर्ता अपने से भिन्न दल के कार्यकर्ता के प्रति भ्रातृत्व के भाव से शून्य देखे जाते हैं।

ग्रीष्म की ऋतु थी। हम लोग देहरादून में मच्छरों से बचने के लिए रात को कमरे में छत का पंखा चला कर सोते थे। मेरे गृह पर अतिथि के रूप में भगवानदेव जी के लिए एक कमरे में ऐसी व्यवस्था थी अचानक मैं दूसरी मंजिल के उस कमरे की ओर जानने के लिए गया कि भगवान जी को कोई असुविधा तो नहीं है। क्या देखता हूँ कि महाशय कमरे से बाहर फर्श पर एक चटाई मात्र बिछाकर कपड़े उतार कर कमर में केवल एक तह-बन्द लपेटे पड़े हैं। मेरे पूछने पर कि पलंग मैट्रेस आदि छोड़कर आप बाहर फर्श पर क्यों लेट गये, कहने लगे कि इसमें बहुत आनन्द है और मैं इस प्रकार खुले में कठोर फर्श पर सोने का आदी हूं। मेरे लाख कहने पर भी पलंग या गद्दा नहीं बिछाने दिया। इससे उनके तपस्वी जीवन का पता लगता है।

मुझे एक और संस्मरण याद है। गढ़वाल लोकसभा उपचुनाव के समय उस समय के केन्द्रीय गृहमंत्री ज्ञानी जैलसिंह (वर्तमान राष्ट्रपति) देहरादून आए तो साथ में आचार्य भगवानदेव जी को भी लाए। ज्ञानी जी को सम्भवत: बताया गया था कि मैं इस क्षेत्र में आर्यसमाज के प्रमुख कार्यकर्ताओं में हूं और कि मेरे विचारों के अनुरूप मेरे व्यापक प्रभाव-क्षेत्र के कारण देहरादून के आर्य समाजी क्षेत्रों के हजारों वोट कांग्रेस के विरोध में जाते हैं। वास्तव में इसमें सत्यता इतनी है कि मैंने चुनावों में प्राय: कांग्रेस का विरोध किया क्योंकि मैं मानता आया हूं कि कांग्रेस ने सम्प्रदायिवादियों के तुष्टीकरण की अपनी नीति के कारण देश को अमित हानि पहुंचाई है और देश का विभाजन भी इसी कारण हुआ है और देश का एक बार बंटवारा करा चुकने के पश्चात् भी उसकी नीतियों के कारण पृथकतावादी शक्तियों और साम्प्रदायिकता को बढ़ावा मिलता जा रहा है। आर्यसमाज में हमने सदा दलगत राजनीति को दूर रखने का प्रयास किया है। बतौर आर्यसमाजी उस

सतत हृदय में जो जले-वह आग चाहिए।
उर में स्वदेश के लिए-अनुराग चाहिए॥

क्षेत्र में कभी इस बात की चर्चा नहीं की कि आर्यसमाजियों को किसे वोट देना चाहिए। यह बात पृथक है कि मेरे ही विचारों के अनुकूल मेरे मित्र वोट डालते रहे हों।

भगवानदेव जी हेलीकाप्टर से ज्ञानी जी को सर्कट-हाउस में छोड़कर वे मेरे पास आ गये और कहने लगे 'ज्ञानी जी आपसे मिलना चाहते हैं।' मैंने कहा कि ज्ञानी जी मुझसे परिचित नहीं, मैं उनसे परिचित नहीं, ऐसी स्थिति में वे मुझसे क्यों मिलना चाहते होंगे। अस्तु। भगवान देव जी के आग्रह पर मैंने अपना स्कूटर निकाला और उस पर उन्हें बिठाकर सर्कट-हाउस पहुंच गया। ज्ञानी जी से मेरा परिचय कराकर भगवानदेव जी ने उनसे मेरी भेंट करा दी। ज्ञानी जी के पूछने पर मैंने स्पष्ट कह दिया, 'ज्ञानी जी, मैंने आज तक प्राय: आपके दल का विरोध किया है और मंचों पर उसके विरुद्ध भाषण भी बहुत किए हैं। कारण, कि मैं समझता हूं कि आपके दल ने पृथकतावादियों की चापलूसी करते करते देश को बहुत हानि पहुंचाई है परन्तु इस समय आपके मुकाबिले में जो प्रत्याशी खड़ा है उसके बारे में मेरी मान्यता है कि सम्प्रदावादियों की चापलूसी में वह आपके दल से भी चार कदम आगे हैं इसलिए मैं उसकी जीत नहीं चाह सकता। इस पर ज्ञानी जी कहने लगे —'आप जैसे साफ बात करने वाले व्यक्ति से मैं क्या कह सकता हूं। आप जैसा उचित समझेंगे करेंगे।' मैं ज्ञानी जी को नमस्ते करके चला आया। भगवान देव भी मेरी स्पष्टवादिता पर मौन रहे।

मैंने निश्चय कर रखा है कि राजनीतिकदल का सदस्य न बनते हुए देशहित में वोट करने का अपना अधिकार सुरक्षित रखना है।

भगवानदेव जी से मुझे शिकायत है, और सम्भवत: अन्य लोगों को भी हो, कि वे पत्रों के उत्तर नहीं देते।
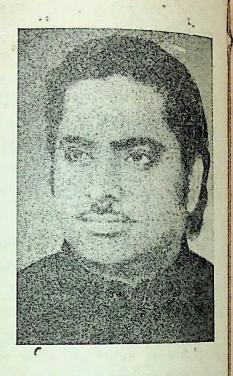
वैसे उन्होंने हमारे मित्रों की एक गोष्ठी में साफ क[illegible] भी दिया था कि 'पत्रों के उत्तर प्राय: मैं नहीं दे[illegible] क्योंकि मेरे पास इतना डाक-व्यय करने को धन न[illegible] है परन्तु आप निश्चिन्त रहें कि आप मेरे पास जो माम[illegible] भेजेंगे उस पर कार्रवाई अवश्य करूंगा।' परन्तु मैं[illegible] अनुभव किया है कि वे अपनी पूरी डाक शायद पढ़[illegible] न पाते हों। उन्हें एक कार्यश्रम निजी सचिव त[illegible] सुसज्ज कार्यालय की आवश्यकता है परन्तु इसके लि[illegible] वे धन कहां से लाएंगे जबकि पोस्टेज के लिए उनके [illegible] धन की कमी है। तब सोचता हूं कि मंत्री बन जावें [illegible] उन्हें कार्यश्रम कार्यालय तो मिलेगा ही। परन्तु [illegible] समस्या होगी बेकार में चिपके रहने वाले चमचों [illegible] बचने की।

□□

अपनी आवाज उठाए चल, जगकी अगणित आवाजों में।
आवाज तुम्हारी सुन शायद, युग की आवाज बदल जाए।।

सिन्ध हिन्दू नौजवान नेता

आचार्य भगवान देव

दयालसिंह बेदी
जनरल सेक्रेटरी
दिल्ली प्रदेश सिंधी समाज
नई दिल्ली

●●●
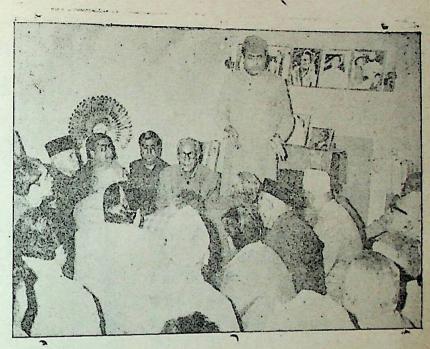
आचार्य भगवान देव, दिल्ली प्रान्त के सिन्धी भाइयों में बोलते हुए।

सिन्ध ने कई नेता दिए परन्तु निशकाम व चुस्त लीडर सिर्फ गिनती के हुए। होशियार भी बहुत हुए परन्तु दौड़ धूप कोई कोई ही करता रहा है। डाक्टर चोइथराम गिदवाणी के बाद हर जगह पहुंच कर कौन हर सिंधी तक पहुंच कर उसके दुख : दर्द को बांटे ? जिनके पास न अपना वतन [प्रान्त] न शहर, न पड़ोस न सरकारी आफिस या दूसरे किसी स्थान पर भाषा के लिए लिखा पढ़ी या उनकी संस्कृति सलामती व रिहायश के लिए कौन आवाज उठाए ?

इन काले बादलों के बीच जब एक नौजवान अजमेर से पार्लियामेंट के लिए चुन कर आया तब बिजली चमकने लगी कि सिंधियों का सितारा आचार्य भगवान देव ईश्वर ने भेजा है। आते ही वे सुख से नहीं बैठे। भारत के कोने-कोने पहुंच कर सिंधियों के दुख दर्द को सुना। विदेशों में भी सिंधी भाईयों से जा मिले। बहुत ही थोड़े समय में उनकी मेहनत रंग लाई वे सभी जगह जाने माने हो गये।

उन्होंने अपनी कोशिशों से महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश व राजस्थान में सिंधी अकादमी कायम कराई। गरीबों के ऋण माफ कराए। सिंधियों के मन्दिरों व धर्म स्थानों को अकालियों के चुंगल से बचाया। पार्लियामेंट में पहली बार सिंधी में भाषण दिया। शहीद हेमू कालाणी की याद में पोस्ट स्टैम्प जारी कराई। रेडियो से सिंधी प्रोग्राम का टाईम बढ़वाया।

सबसे बढ़कर दुनिया भर के सिन्धियों का सम्मेलन बुलाकर भारत के राष्ट्रपति व प्रधान मंत्री को इसमें निमंत्रण देने की हिम्मत की सभी दाद देते हैं। अपने अजमेर क्षेत्र की हर समस्याओं को दूर करने की वे हर मुस्कील कोशिश करते हैं। पिंक सिटी रेलगाड़ी दिल्ली से अजमेर तक कराने रेलवे वर्क शाप का विस्तार कराकर कई बेरोजगारों को रोजगार दिलाने स्कूल अस्पताल नए दुकान गांवों में पानी पहुंचाने और दूसरी समस्याओं के पीछे पड़कर अच्छा नाम अर्जित किया है। यह नौजवान दूसरे नौजवानों को इकट्ठा करके देश सेवा के कार्य में लगा रहा है।

ऐसे नौजवान नेताओं पर हिन्दुवासियों, खास कर सिंधियों को नाज है और उम्मीद है कि और भी बड़े पद पर पहुंच कर देश व जाति की ज्यादा सेवा करेगा यही मेरी शुभ कामना है।

तेरे करम से बेन्याज़ कौन सी शै मिली नहीं।
झोली ही अपनी तंग है तेरे यहां कमी नहीं॥

हमारे प्रेरणा स्त्रोत

—श्रीमती दिव्या लाल

५-ए मेघदूत १२, रोलेन्ड रोड कलकत्ता-२०

यदा कदा ही एक ऐसा आदर्श व्यक्ति देखने व सुनने में आता है जो मानव जाति और परमात्मा के प्रति सम-रूप भक्ति, आस्था और क्रियात्मकता से परिपूर्ण भावनाओं से ओतप्रोत हो। ऐसा व्यक्ति और कोई नहीं, हमारे अंकल भगवानदेव हैं, जो हम सबों को शारीरिक शक्ति, बौद्धिक विकास एवं कर्त्तव्य की प्रेरणा देते हैं।

बाल्यकाल में जब मैं केवल १२ वर्ष की थी, तब से मैंने अंकल जी को योग और शारीरिक विज्ञान के विशेषज्ञ के रूप में देखा। कभी-कभी शरारत से हम बहन भाई उनसे बहुत कठिन योग के आसनों को सिखाने के लिये अनुरोध करते तो वे भारी शरीर होते हुए भी उन आसनों को बड़ी आसानी से करके दिखाते और हमें सिखाया करते थे।

जब से इन्होंने होश सम्भाला ये चौबीसों घंटे, हर पल, हर क्षण का सदुपयोग करते हुए विभिन्न कार्यों में लीन रहते हैं। कार्लाइल के कथनानुसार—

Like a star,
That maketh not haste,
That taketh not rest,
Be each one fulfilling,
His God given hest.

अर्थात् एक नक्षत्र की भांति जो न तो जल्दी करता है और न ही विश्राम लेता है, प्रत्येक मनुष्य को ईश्वर प्रदत्त आशाओं का पालन करते हुए कार्यरत रहना चाहिए।

जीवन के रास्ते में अनेक कठिनाइयों का बड़ी समझ-दारी तथा सूझबूझ से मुकाबला करते हुए अंकल जी हमेशा सफलता की ओर बढ़ते गये। आज जिस सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक बुलन्दी पर पहुंचने में ये सफल हुए हैं—इसका सम्पूर्ण श्रेय इनकी मेहनत, ईमानदारी, बुद्धिमत्ता तथा अथक परिश्रम को ही है। इन्होंने कभी अपने पर का अनुचित लाभ नहीं उठाया। इसके विपरीत हमेशा जरूरत-

आचार्य भगवानदेव ब्यावर नगर परिषद में बोलते हुए

मन्दों और गरीबों की सहायता के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। ये पिछड़े वर्ग तथा हरिजनों के प्रति सेवा भाव रखते हैं तथा उन्हें हमेशा ऊपर उठाने का प्रयास करते रहते हैं।

इतने व्यस्त कार्यक्रम में भी प्रकृति के साथ विचरण अत्यन्त सुखद लगता है। ये तरह-तरह के फूलों एवं पौधों के लगाने एवं उनकी बढ़ोतरी में बहुत रुचि रखते हैं। विभिन्न फूलों का प्रेम विशेषतया तरह-तरह के रंग-बिरंगे गुलाबों को उगाने में बहुत रुचि रखते हैं यह भी इनके व्यक्तित्व का अनूठा पहलू है। यही कारण है कि अंकल जी का जीवन रूपी चमक अपनी खुशबू से सब को मदहोश करता है।

इनका सारा जीवन तथा विभिन्न घटनाएं हमारे हर के लिए एक ऐसा आदर्शमय जीवन को झांकी प्रस्तुत करता है जो हमारे द्वारा वरणीय एवं अनुकरणीय है। मैं भगवान से यही प्रार्थना करती हूं कि हमारे अंकल भगवानदेव जी चिरकाल तक हम सब का मार्गदर्शन करें।

दुर्लभ है तन्दुरुस्ती, अति भोजन से न गँवा।
न जी तू खाने के लिए, जीने के लिए ही खा॥

आचार्य भगवानदेव :
भारत मां का सपूत

राजीव लोचन एडवोकेट,
२, पार्क एवन्यू महारानी बाग, नई दिल्ली-65

Give up the half living life. Live a complete, virtous and beautiful life.

अर्थात् मुर्दादिली को छोड़ दो। पूर्ण सदाचारयुक्त एवं सुन्दर जीवन व्यतीत करो।

आचार्य भगवान देव त्याग, तपस्या तथा अथक परिश्रम का एक जीता-जागता नमूना है। जब से मैं उनके सम्पर्क में आया मैंने देखा उन्हें प्रत्येक छोटे, बड़े कार्य करने के लिए तत्पर देखा। समय व स्थान कभी कार्य क्षमता में बाधा नहीं बने।

महर्षि दयानन्द के जीवन से प्रेरित आचार्य भगवान देव ने बाल्यावस्था में घर छोड़ दिया और सत्य की खोज में जंगलों में पहाड़ों पर जगह-जगह घूमते हुए देश के कोने-कोने में भटकते रहे तथा इन्होंने अपने जीवन का काफी समय गुजरात तथा सौराष्ट्र में, जो स्वामी जी का जन्म स्थान एवं कार्य क्षेत्र था, व्यतीत किया। इन्होंने स्वामी जी के बताये हुए मार्ग तथा आदर्शों को अपने जीवन में पूर्ण रूप से ढालने का प्रयास किया है और वे इस उद्देश्य में सफल भी हुए। विभिन्न स्थानों एवं परिस्थितयों में उपार्जित बुद्धिमता एवं ज्ञानवर्धन ही उनके जीवन की असली शिक्षा सिद्ध हुई।

आचार्य जी दलित, हरिजनों तथा समाज के संतृप्त वर्ग के उत्थान के लिए प्रयत्नशील रहते हैं तथा उनके दुःख, तकलीफ आदि के प्रति न केवल संवेदना रखते हैं परन्तु उसे हटाने की पूर्ण कोशिश भी करते हैं। वो मानव वाकई महान है जो दूसरों के दुःख-दर्द को अपना समझे क्योंकि आज के भौतिक युग में प्रत्येक व्यक्ति निजी स्वार्थ पूर्ति तथा धन-दौलत में लगा हुआ है। भगवानदेव जी जैसे मानव दुर्लभ हैं जो अपने सुख, ऐश्वर्य की चिन्ता न करते हुए परोपकार एवं परहित में रत हैं।

सत्य की खोज में भ्रमण करते हुए आचार्य जी ने योग-विज्ञान के रहस्य को समझकर अनवरत अभ्यास के बाद दक्षता प्राप्त की। जन कल्याण के लिए इन्होंने देश और विदेशों में अनेक स्थानों पर योग के कैम्प लगाए

फूलों से हम हँसना सीखें, भंवरों से नित गाना।
धुएं से सब कोई सीखें, ऊँची ओर को जाना॥

राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह जी के साथ आचार्य भगवानदेव

और असख्य नर-नारियों ने योग का ज्ञान प्राप्त किया और शारीरिक कष्टों को दूर किया। योग के प्रचार हेतु अनेक संस्थाएं स्थापित कीं। अनेक प्रकार की कठिनाईयों के बावजूद 'योग मन्दिर' नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन कर रहे हैं जो देश विदेश में शौक से पढ़ी जाती है।

आचार्य जी कुशल एवं प्रभावशाली लेखक भी हैं जिन्होंने न केवल अष्टांग योग एवं तत्सम्बन्धी यौगिक प्रणालियों पर रचनाएं लिखीं अपितु भारत के अनगिनत महापुरुषों की जीवनी पर भी समुचित प्रकाश डाला। भारत की आजादी के दीवाने शहीदों की याद में भी स्वतन्त्रता सेनानियों का जीवन भी प्रकाशित किया।

आचार्य जी का जीवन का लक्ष्य है—'चरैवेति' अर्थात् 'चलते रहो'—वो हमेशा कहा करते हैं—'जो सोता है उस की किस्मत भी सो जाती है, जो चलता है उसकी किस्मत भी आगे बढ़ती है।

मैंने आचार्य जी के जीवन में अनेक दृष्टांत देखे जब ये अपने सामाजिक, राजनैतिक पद की चिन्ता न करते हुए छोटे से छोटे और बड़े से बड़े काम करने में लेशमात्र भी संकोच नहीं करते क्योंकि इनका लक्ष्य-कार्य की सफलता में है।

अथाह धन सम्पत्ति के स्वामी न होने पर भी हमेशा दूसरे व्यक्ति की आवश्यकताओं को देखते हुए उसकी मदद करना अपना धर्म समझते हैं और अपने सीमित साधनों के बावजूद उसकी सहायता करते हैं यही उनका बड़प्पन और दरियादिली है।

सन् १९७९-८० में इलेक्शन के दौर पर सुबह बहुत जल्दी निकल जाते थे और आधी-आधी रात गए वापिस आते। भूख, प्यास, नींद आदि किसी चीज की चिंता किए बगैर दौरों का ही परिणाम था कि वे अपने सब वोटरों से निजी सम्पर्क स्थापित कर पाए और इलेक्शन में विजयी हुए।

पार्लियामेंट में चुने जाने के बाद आचार्यजी ने दुनिया के विभिन्न देशों का भ्रमण किया। जहां भी वे गए, वहां इनके अनेकों प्रेमी, भक्त एवं अनुयायी बन गए और जो इनके सम्पर्क में आया वो ही इनका प्रशंसक बन जाता है।

ऐसे ही कर्मठ व्यक्ति जीवन की उच्चतम ऊंचाई को प्राप्त करते हैं। मेरी हार्दिक कामना है कि भगवान उन्हें स्वास्थ्य, दीर्घायु, ऐश्वर्य तथा बुद्धि प्रदान करें ताकि वे मानव जाति की, देश तथा समस्त संसार की सेवा करें।

* *

सकल तरु की लेखनी, मसि करूं जल राई।
सकल धरा कागज करूं, प्रभु गुण कहा न जाई॥

सिन्धियों के विकास में आचार्य भगवान देव का योगदान

आचार्य झमट मल टिलवानी
आदर्श कालेज—अजमेर

देश के विभाजन के फलस्वरूप सिंधी भारत के कोने कोने में बिखर गये। कठोर परिस्थितियों में विभाजन के कारण जिसे जहां भी सिर छिपाने का स्थान मिला वह वहीं रुक गया। लगभग २५/३० लाख सिंधी इस प्रकार भारत के विभिन्न प्रदेशों में फैल गये। किसी भी विशेष स्थान पर इनकी संख्या इतनी नहीं रही कि वे अपने बल बूते पर अपना एक भी प्रतिनिधि राज्य विधान सभा या लोकसभा में चुन सके। केवल कुछ ही नगरों जैसे कि उल्हासनगर, गांधीधाम, अजमेर आदि की नगरपालिकाओं में अवश्य ही कुछ सिंधी प्रतिनिधि निर्वाचित हो सके। इसके सिवा कुछ इने गिने सिंधी प्रतिनिधियों को कुछ राजनैतिक दलों की टिकट पर विधान सभाओं या लोक सभा पर निर्वाचित होने का अवसर प्राप्त हुआ। कुछ सिंधी मंत्रीमंडलों में मन्त्री भी लिए गए किन्तु उन्होंने स्वयं को केवल राष्ट्रीय नेता मानकर एवं अपनी पार्टी एवं निर्वाचन क्षेत्रों को प्रसन्न रखने हेतु सिंधियों की उचित मांगों की ओर अपना ध्यान तक नहीं दिया न केवल इतना ही बल्कि इनमें से कुछ तो स्वयं को सिंधी कहने या कहलवाने से भी कतराने लगे। यद्यपि डाक्टर चोइथराम गिदवानी जो अपने निजी सामर्थ्य एवं प्रभाव पर संसद में निर्वाचित हुए वे सिंधी जाति के पुर्नर्वासित एवं उनकी समस्याओं को हल करने में अत्यधिक परिश्रम करते रहे। उनके स्वर्गवास के पश्चात् ऐसा प्रतीत हो रहा था कि सिंधियों का कोई रक्षक नहीं होगा। परन्तु सिंधी भाग्यशाली हैं कि ऐसी परिस्थितियों में आचार्य भगवान देव जैसे एक कुशल लगनशील दृढ़ विश्वासी, उत्कृष्ट वक्ता परिश्रमी एवं सिंधी नवयुवक को शासक दल कांग्रेस आई की टिकट पर १९८० में लोक सभा में अजमेर निर्वाचन क्षेत्र से उम्मीदवार के रूप में खड़ा किया गया। यद्यपि इस निर्वाचन क्षेत्र में सिंधियों के मत बहुत कम है तथापि वे सफल हुए। बड़े हर्ष की बात है कि उन्होंने अपने निर्वाचन क्षेत्र के अजमेर एवं अन्य जातियों के साथ पूरे भारत के सिंधियों की अत्यधिक सेवा की है एवं कर रहे हैं।

आचार्य जी किस तरह अपनी सूझ-बूझ से किसी बहाने प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी एवं अन्य मन्त्रियों को अपने निर्वाचन क्षेत्र अजमेर में लेकर आते रहे हैं एवं उन्हें इस निर्वाचन क्षेत्र की कठिनाईयों एवं समस्याओं से अवगत करा कर जनता को राहत दिलाते आये हैं। इनके प्रयत्न जारी हैं। उनकी सफलताओं में

तुलसी जग में यूं रहो, ज्यूं रसना मुख मांही।
घी तेल रोज खात है, फिर भी चिकनी हो नांहीं॥

सक्रिय लोकसेवक

श्री लक्ष्मीचन्द टी. रूपचन्दानी
पत्रकार दिल्ली

विश्व सिंधी समाज के प्रधान आचार्य भगवानदेव अपने जिन्दगी के ३४ वर्ष देश और जाति के कुछ ठोस कार्यों में पहले ही लगा चुके थे। लोकसभा में जाने के बाद उन्हें विचार आया कि मैं सिंधियों को संगठित करने का काम करूं शीघ्र ही बुजुर्ग सिंधी कांग्रेसी नेताओं का ध्यान इस जवान की तरफ गया और आल इण्डिया सिंध कांग्रेस समिति के प्रधान चुन लिए गये।

आचार्य जी आर्यसमाज में कर्मनिष्ठ कार्यकर्ता रहते हुए सादे जीवन और लोकसेवा के जलवे से भरे हुए थे ही वे हर एक बुलावे पर भारत के कोने-कोने में पहुंचने लगे और अपने जोशीले भाषण और सिंधियत मय कोशिश से बहुत से सिंध संस्थाओं में अपना स्थान बना लिया। बिगड़े हुए सिंधी समाज को एक बार ही प्लेटफार्म पर लाने की कोशिश में वे यह संकल्प कर बैठे कि मैं विश्व सिंधी सम्मेलन बुलाकर ही दम लूंगा फिर तो उन्हें इण्डियन ओवरसीज एसोसिएशन के माने हुए प्रधान श्रीनरसिंह गौतम जी का साथ मिल गया। बहुत सी सिंधी पत्रिकाओं ने भी आचार्य की हिम्मत की दाद दी इस तरह विश्व सिन्धी सम्मेलन १८ और १९ अक्तूबर १९८३ में देश की प्रधान मंत्री और राष्ट्रपति जी की उपस्थिति में विशाल इन्द्रप्रस्थ स्टेडियम में हुआ जहां श्रीमती इंदिरा गाधी और ज्ञानी जैलसिंह ने खुलकर सिंधी समाज की सराहना की।

एक बड़ा काम पिछले ३५ वर्ष के बार-बार कहने पर भी न हो सका था वह आचार्य भगवानदेव जी ने कर दिखाया। शहीद हेमू कालानी की यादगार में डाक टिकट सम्मेलन में खुद प्रिंसीपल श्री गाडगिल ने आकर पेश किया जिसका उद्घाटन स्वयं इन्दिराजी ने किया। सिंधी शहीद की वयोवृद्ध माताजी बाई पेसूमल का भी भरपूर स्वागत किया गया। राजस्थान में सिंधी साहित्य अकादमी वर्ष होने के पश्चात् आचार्य जी की कोशिश से महाराष्ट्र मध्यप्रदेश में अकादमी कायम हो गई।

तीन फरवरी १९८४ को यह एम० पी० अपने जी के ५०वें साल में प्रवेश करते हुए अब भी इस संकल्प पर डटे हुए हैं कि वह भारत की राजधानी दिल्ली में एक विशाल सिंधी भवन की स्थापना करवायेंग।

सिंध, सिंधी और सिंधियत जैसे अमूल्य मुद्दों पर भगवानदेव की बुलन्द आवाज सभी ओर पहुंच चुकी

सिंध में आजादी की लहर उठ खड़ी हुई तो स्तानी डिक्टेटर आचार्य भगवानदेव के बुलाए हुए सिंधी सम्मेलन को शक्की निगाहों से देखने लगे। ने काफी वर्ष टंकारा अभ्यास पर राजस्थान में इन्होंने अनेक पुस्तकें योग पर लिखी हैं। और देश के के जीवन चरित्र भी आचार्य जी की कलम से लि अब तो सिंधी भाषा में ही उपलब्ध हैं। योग मंदिर मासिक पत्रिका वर्षों से निकालते रहे हैं वह हिं संस्कृत के अच्छे जानकार हैं। अलबत्ता इनके में जोश और चिंगारियाँ देखकर यह समझा जाता वह गर्म मिजाज हैं। परंतु जिस रफ्तार से यानि के अंदर तीस वर्ष से भी ज्यादा समय जैसा कार्य कर दिखाया है ऐसे जोश-खरोश से चलने वाली तो छोड़ेगी और सीटी भी बजाएगी। आचार्य भ जैसे लोक सेवक सिंधी समाज को और भी चाहिए

कुविचार दुर्व्यसन की, झाड़ दीजिये धूल।
ठीक समय पर कीजिए, भोजन ऋतु अनुकल॥

एक कर्तव्यनिष्ठ आर्य समाजी नेता आचार्य भगवान देव

श्री रासा सिंह जी
आचार्य विरजानन्द विद्यालय अजमेर

अपने आपको आर्य समाजी कहने वाले तो बहुत से आर्य जन मिल जायेंगे परन्तु उनके जीवन में आर्य समाजी होने की कोई विशेषता नहीं झलकती और न ही आर्य समाज के प्रति उनकी निष्ठा होती है परन्तु आचार्य भगवानदेव जी सही अर्थों में एक सच्चे एवं कर्तव्य निष्ठ आर्य समाजी हैं। उन्होंने स्वयं महर्षि दयानन्द की जन्म स्थली टंकारा में उपदेश विद्यालय में रहकर आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के सम्बन्ध में गहन अध्ययन किया और उसके बाद उनका जीवन आर्य समाज के लिए समर्पित हो गया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आचार्य भगवान देव जी नागालैंड, आसाम, उड़ीसा तथा दक्षिण भारत की ओर महर्षि दयानंद और आर्य समाज का जन-जन तक संदेश पहुंचाने के लिए तथा सेवा केन्द्र स्थापित करने के लिए गए थे उन सुदूर प्रदेशों में आपने दयानंद के एक मिशनरी के रूप में जो ठोस सेवा कार्य किया यह सर्वथा अनुकरणीय है। आर्यसमाज के संगठन की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक सभा में आप वर्षों तक उपममंत्री पद पर अधिष्ठित रहे और फिर दिल्ली ही आपका कार्यक्षेत्र बन गया। वहां रहकर आपने आर्यसमाज की यश वृद्धि हेतु सतत प्रयास किया। डी० ए० वी० संस्थाओं, विभिन्न आर्य समाजों, केन्द्रीय सभा, सार्वदेशिक सभा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा महात्मा आनन्द स्वामी स्मारक समिति आदि से आपका घनिष्ठ सम्बन्ध रहा। आर्य नेताओं की श्रेणी में आने पर भी आप सर्वथा निरभिमानी रहे और सामान्य कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहित करने में अग्रणी रहे। यही कारण है कि आप जनसाधारण आर्यजनों में पर्याप्त लोकप्रिय हैं। वर्तमान में भी आप आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के उप-प्रधान तथा सार्वदेशिक सभा के सभासद तथा अन्य कई आर्यसमाज के संगठनों के विभिन्न पदों पर हैं। राष्ट्रीयता और देश भक्ति आप में कूट-कूट कर भरी है।

आज वे अजमेर क्षेत्र से सांसद हैं तथा कांग्रेस आई पार्टी से चुनकर गये हैं परंतु संसद सदस्य बनने के बाद भी अत्यन्त व्यस्त प्रकाश शताब्दी होते हुए भी आप संसद में और संसद के बाहर आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के प्रति अपने कर्त्तव्य को नहीं भूले। १९८१ में उदयपुर में आयोजित सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी १९८२ में आर्यसमाज अजमेर की स्थापना शताब्दी तथा नवम्बर ८३ में महर्षि दयानंद निर्वाण शताब्दी अजमेर में आयोजित समस्त आयोजनों में आपने सक्रिय भाग लिया। माऊण्ट आबू पर आप ही की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में आर्य समाज का भव्य भवन बन गया है।

मातृभाषा सिंधी होते हुए भी आप राष्ट्रभाषा हिंदी के अनन्य भक्त हैं आपने स्वयं महर्षि दयानंद की जीवनी एवं

सुई और धागे से सीखें, बिछड़े गले लगाना।
पत्ते झड़ पेड़ों से सीखें, दुख में धीर बँधाना॥

योग विषकों पर हिंदी में कई सुन्दर और प्रेरणादायी पुस्तक लिखी हैं। योग से सम्बन्धित आप स्वयं एक पत्रिका का प्रकाशन करते हैं। और भारत की राष्ट्रभाषा के प्रति आपके अनन्य प्रेम को देखकर भारत सरकार ने आपको राज-भाषा समिति का अध्यक्ष बनाया है। आपने विश्व सिंधी सम्मेलन आयोजित कर तथा हेमू कालानी जैसे महान् देश-भक्त की जयन्ती तथा भारत सरकार से टिकट जारी करा कर भी आपने पर्याप्त यश अर्जित किया है।

आप एक ओजस्वी वक्ता एवं राष्ट्रीयता के प्रवल पोषक हैं। आज भी आपको जव कभी आर्य समाज के उत्सवों पर सम्मिलित होने के लिए आमंत्रण पत्र मिलते हैं अथवा आर्यजन कोई कठिनाई लेकर आपकी सेवा में उपस्थित होता है तो आप सदैव उनकी सहायता को तत्पर रहते हैं। आर्यसमाज अजमेर तथा उसकी संस्थाओं के प्रति आपकी सदैव सहयोग की भावना बनी रहती है।

मुझे स्वयं आचार्य भगवानदेव जी के संसद के चुनाव के दिनों में ब्यावर से लेकर टाटगढ़ तक विभिन्न ग्रामों तथा कस्बों में जाने का अवसर प्राप्त हुआ था तब आचार्य जी का जो ग्रामीणजनों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार विनम्रता उनके समस्याओं के निवारण की ललक—उनमें विद्यमान थी उनमें वही माधुर्य एवं कर्त्तव्यपरायणता के दर्शन होते हैं।

अपने आपको दयानन्द का सिपाही कहने के लिए यह गौरव की बात है परमात्मा उन्हें शतायु करें। इन्ही शुभ-कामनाओं के साथ। □

टंकारा की कुंज गलियों में
भगवान देव जी का नाम गुंज रहा है

श्री हंसमुख परमार—उपमंत्री आर्य समाज टंकारा गुजरात

आचार्य भगवान देव टंकारा में लगभग १० साल रहे। सन् १९५९ में आर्य समाज टंकारा में आयोजित बम्बई प्रदेश आर्य धर्म परिषद् के व्यवस्थापक के रूप में पधारे थे। उनके जीवन का दर्शन टंकारा निवासियों को उसी समय देखने को मिला। वे क्रांति दृष्टा, युवकों के प्रेरणा स्रोत, अन्याय के प्रति आक्रोशकर्ता और प्रखर वक्ता रहे और टंकारा निवासियों का दिल जीत लिया।

महर्षि दयानन्द रमा ट्रस्ट टंकारा के व्यवस्थापक के स्थान पर रहकर आश्रम को नवजीवन दिया, प्रदूशियों को पिकसाया। आम-जनों में सहयोग वढ़ाकर संस्था का प्रत्यक्ष स्थापित किया टंकारा ऋषिजन्म भूमि होने से यात्रियों के लिए आकर्षण केन्द्र है सौराष्ट्र अतिथि सत्कार के लिए प्रसिद्ध है। आचार्य जी ने सौराष्ट्र की संस्कृति को पहचाना। आने वाले यात्रियों का पूरा-पूरा आतिथ्य वैयक्तिक रूचि लेकर करते रहे।

आचार्य जी की कर्मभूमि केवल टंकारा न रहकर पूरा गुजरात बन गई। गुजरात में उन दिनों सायं सांई बाबा आने वाले थे, और अपने मायाजाल में लोगों को फंसाने वाले थे लेकिन श्री भगवान देव ने उनके प्रपंच के विरुद्ध में आंदोलन चलाया और पूरे गुजरात में हलचल मचादी। नगर-नगर में आर्य समाज का नाम गूंज उठा। समाचार पत्रों ने भी पूरा साथ दिया।

टंकारा में आयुर्वेद कालिज स्थापित कराने का श्रेय भी आचार्य भगवान देव को है।

मैं जब बचपन से जवानी की ओर अग्रसर था, तब पं. भगवान देव का आगमन टंकारा में हुआ था। सन् १९६३ से १९६८ तक उनके चरणों में बैठकर जीवन बनाने का मौका मिला। मैंने अपने जीवन का आदर्श आचार्य जी को चुनकर अपने को धन्य माना। आज भी उतना ही लगाव बना रहा है।

आज भी टंकारा की कुंज-गलियों में भगवानदेव का नाम गुंज रहा है।

हम उनकी प्रगति के लिए अपनी शुभकामना करते हैं। परमात्मा उनको शतायु बनाये। □

पड़ी अपने गुनाहों पै जब कि नजर।
तो नजर में कोई भी बुरा न रहा॥

सिन्धी सपूत
आचार्य भगवान देव

डा० गोविन्द राम लखवानी

देश भक्त व समाज सेवक आचार्य भगवान देव विश्व सिंधी समाज के अध्यक्ष का जन्म सिन्ध पाकिस्तान के एक छोटे से गाँव बेलानी जिला नवाबशाह में हुआ था एवं दुर्भाग्यपूर्ण बंटवारे के पश्चात् वे ब्यावर जिला (अजमेर) में रहकर समाज सेवा के कार्यों में लग गये। तथा अजमेर में ही लोकसभा चुनाव लड़े और सफलता प्राप्त की। संसद बनने के पश्चात् इस निडर नेता ने लोकसभा सांसद की शपथ लेने के पश्चात् सिन्धी भाषा में तकरीर करके सिंधी समाज का शानदार रिकार्ड कायम किया। इसके अलावा सिन्धी समाज में सांस्कृतिक एवं राजनैतिक चेतना को जागृत करने के लिये सिंधी भाषा में अनेक पुस्तकें लिखीं एवं सुन्दर साहित्य की रचना तथा हर दिशा में सिन्धी समाज की समस्याओं व कठिनाईयों को सरकार से पूरी कराने के लिए प्रयत्न करते रहे। आचार्य भगवानदेव स्वामी दयानंद की जन्म भूमि टंकारा गुजरात के आर्यसमाज में रहकर सत्यार्थ प्रकाश, चारों वेदों, एवं अनेकों ग्रंथों का अभ्यास करने के पश्चात् वे त्याग और तपस्या की सच्ची मूर्ती बने। सिन्धी समाज के उत्थान के लिए लगनशील होकर देश-विदेश का भ्रमण किया एवं विश्व के सिंधियों में राजनैतिक जागृति उत्पन्न की। आचार्य भगवानदेव कांग्रेस (आई) के सच्चे सैनिक हैं। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन सिंधी समाज व देश को अर्पित किया है। इसलिये उनका नाम सिन्धी सपूतों के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जायेगा। १० वर्ष पहले मैंने सिंधी समाज के उत्थान के लिए २३ मांगें भारत सरकार से की थी तथा उन मांगों को पूरा कराने के लिये मैंने अपनी 'लोक सेवक' अंग्रेजी व 'जन आजादी' साप्ताहिक पत्रिकाओं में संपादकीय भी लिखे थे। उन मांगों में से कुछ मांगें सरकार ने पूरी की तथा एक मांग शहीद हेमूकालानी पर डाक टिकट छपवाने की आचार्य ने पूरी करवा करके यश के भागी बने हैं। आचार्य भगवान देव कर्म योगी हैं इन्होंने विश्व के सिंधियों को एक मंच पर एकत्रित करके विश्व सिंधी सम्मेलन को आयोजित करने से पहले वे लागोस, मलेशिया, हांगकांग, दुबई, लन्दन व अन्य देशों का भ्रमण करके वहां के सिंधियों को विश्व सिंधी सम्मेलन का निमंत्रण देने के पश्चात् भारत के हर प्रांत का भ्रमण किया तथा १८-१९ अक्तूबर ८३ को भारत की राजधानी दिल्ली में विश्व के सिंधियों को विश्व सिन्धी

सूक्ष्म से सूक्ष्म तू है स्थूल इतना।
कि जिस में यह ब्रह्माण्ड सारा समाता॥

सम्मेलन में एकत्रित करके विश्व को आश्चर्यचकित कर दिया। उस सम्मेलन में भारत के श्री रापंजवानी नरसिंह गोलानी, श्री धर्मदास शास्त्री सांसद व श्री नारी गुरसिहानी अध्यक्ष इण्टरनेशनल सिन्धी पंचायत की उपस्थिति में भारत की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी से विश्व सिंधी सम्मेलन का उद्घाटन कराया। जिसने सिन्धु माता के चरण छूकर आशीर्वाद मांगा। तथा शहीद हेमू कालानी के डाक टिकटों का एलबम उनको भेंट किया। प्रधानमंत्री ने मुक्त कण्ठ से सिन्धी समाज की प्रशंसा करते हुए कहा कि सिन्धी शब्द से ही हिन्दी शब्द बना है इसलिए हम सभी हिंदी नहीं लेकिन सिन्धी हैं। तथा भारत के राष्ट्रपति श्री जैलसिंह ने विश्व सिन्धी सम्मेलन के समापन समारोह में दिल खोलकर सिंधी समाज की प्रशंसा की।

प्रधानमंत्री ने सिंधी समाज की मांगें पूरी करने का आश्वासन दिया। इस तरह प्रांतीय सरकारें व केन्द्रीय सरकार और सिंधी समाज को एक-दूसरे के सम्पर्क में लाने का श्रेय आचार्य जी को है। वे क्रांतिकारी समाज सुधारक हैं उनके मन में शोषित एवं पीड़ित जनता के प्रति सहानुभूति है। सत्य के लिये मरो और जिओ यही उनके संघर्ष मय जीवन का मूल मंत्र है। उनके तकरीर में बिजली जैसा असर है। व दूसरों को आकर्षित करने के लिये चुम्बक जैसी शक्ति है। मैंने अपनी साप्ताहिक पत्रिका 'जन-आजादी' में आचार्य भगवानदेव के हर कार्य का समर्थन किया तथा उनके विश्व सिंधी सम्मेलन को सफल बनाने के लिये भरपूर सहयोग दिया। मुझे विश्वास है कि अब आचार्य भगवानदेव समाज की लोकप्रियता प्राप्त कर चुके हैं तथा वे अब भारत के किसी भी प्रांत से लोकसभा का चुनाव लड़कर जीत सकते हैं।

आचार्य भगवानदेव अखिल भारतीय सिन्धी पत्रकार परिषद व अखिल भारतीय आयुर्वेदिक ऐलोपैथिक, होम्योपैथिक, यौगिक, नैंचरोपैथिक, मैंडीकल प्रेक्टिशनर्स संघ रायपुर (शासन द्वारा मान्यता प्राप्त) के आजीवन सदस्य हैं तथा कई अन्य संस्थाओं के पदाधिकारी व संरक्षक हैं। अब चाहते हैं कि भारत की राजधानी दिल्ली में स्थाई सिंधी समाज कार्यालय स्थापित करके सिन्धी समाज के कार्यों का सुचारु रूप से संचालन करते रहें। अंत में ऐसे निष्ठावान, कर्मयोगी नेता को उनकी ५०वें जन्म दिन पर दीर्घजीवी होने का आशीर्वाद देते हुए भगवान से प्रार्थना करता हूं उनको हर कार्य में सफलता देने की शक्ति दे। □
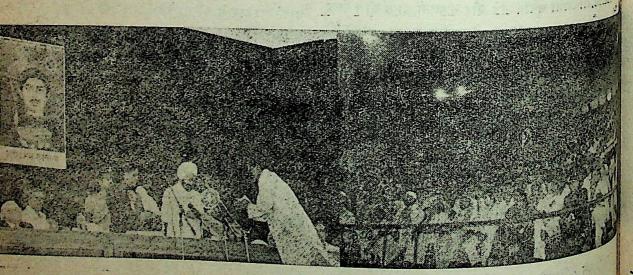
राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह विश्व सिन्धी सम्मेलन में पत्रकारों का सम्मान करते हुए।

न थी हाल की अपने हमें जब खबर।
रहे देखते औरों के एबो हुनर॥

आचार्य भगवान देव

एक

शक्तिशाली व्यक्तित्व

डा० मोहन लाल शर्मा दिल्ली

हमारे कौमी नेता श्री जयराम दास दौलतराम के स्वर्गवास होने के बाद हमारा सिंधी समाज बेवा समान हो गया। डा० चोइथराम गिदवाणी के स्वर्गवास होने के बाद स्वर्गवासी श्री जयरामदास ही एक ऐसे महान् नेता थे जिन्होंने समाज की समस्याओं को पुरजोर आवाज में उठाया हम उनके द्वारा सिंधी समाज के लिए सुलझाए गये दो मुख्य समस्याओं हमारी भाषा को संविधान में आठवीं शेड्यूल में रखना और शब्द 'सिंध' को कौमी गति में धारण कराने के लिए तहे दिल से आभारी हैं। पंडित जवाहर लाल नेहरू ने कुछ लोगों द्वारा सिंध शब्द को कौमी गति में से इस तर्क पर निकालने कि सिंध अब हिन्दुस्तान में नहीं है की सलाह को नामंजूर कर दिया था और साथ ही उनको डांटकर कहा था कि अगर हिन्दुस्तान में नहीं है तो क्या हुआ सिंधी तो हमारे साथ हैं और इसीलिए सिंध शब्द हमारे कौमी गीत के साथ कायम रहेगा इतना होते हुए भी कुछ दुराग्रही लोग कौमी गीत गाते वक्त सिंध शब्द का उच्चारण नहीं करते थे। जिसके लिए श्री जयरामदास ने श्री नेहरू का ध्यान आकर्षित किया जिसके लिए श्री नेहरू ने सम्मानजनक कदम उठाया। श्री जयरामदास आखिरी दम तक सिंधी भाषा को आठवीं शेड्यूल में लाने की कोशिश करते रहे और आखिर मौजूद प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने इस मांग को बिना किसी हिचक के स्वीकार किया। देखा जाये तो श्री जयराम दास के लिए समस्त केबिनेट से यह मांग मन्जूर कराना अति दुष्कर कार्य था।

जैसे कि मैंने ऊपर कहा है कि श्री जयरामदास के स्वर्गवासी होने से सिंधी समाज को भारी हानि हुई है और वह प्रायः अनाथ सा हो गया था। इसीलिए ईश्वर की सिंधी समाज पर भारी कृपा हुई कि आचार्य भगवान देव को अजमेर क्षेत्र से लोकसभा के लिए कांग्रेस टिकट दी गई और यह एक ईश्वरीय चमत्कार था कि वे जनवरी १९८० में इस क्षेत्र से जीते। आचार्य जी ने हर एक सभा में स्पष्ट किया हालांकि वे किसी प्रधान सिंधी सभा से नहीं चुने गये और न ही उनको कांग्रेस टिकट दिलाने में किसी सिंधी विद्वान् का हाथ था। परन्तु उसको सदा यही याद रहा कि वे सिंधी परिवार में जन्मे हैं और सिंधी समाज से सम्बन्धित हैं। उसने हर उस सिंधी सभा जहां कहीं भी उनको अपने विचार प्रकट करने के लिए आमंत्रित किया गया। उसने घोषणा की कि वे सिंधी समाज की ईमानदारी से सेवा करेंगे और समाज में

नाम जिन्दों में लिखा जायेंगे मरते मरते।
देश भारत को जगा आयेंगे मरते मरते॥

उत्पन्न खराबियों को दूर करने की हर मुमकिन कोशिश करेंगे और साथ ही सिंधी समाज की बेहतरी के लिए अपना सर्वस्व लुटा देंगे। इसी घोषणा की सिन्धी समाज के हर एक तत्व ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की। सिन्धी समाज को आचार्यजी की घोषणा ने यह जता दिया कि उनको, स्वर्गवासी श्री जयरामदास के कदम चिन्हों पर चलने वाला एक आला दिमाग का नेता मिल गया है और इसी सोच ने सिंधी समाज ने आचार्यजी को सर आंखों पर लिया है। यह कम महत्व की बात नहीं है कि आचार्यजी चुनाव लड़ने तक सिंधी समाज के लिए एक नावाकिफ शख्स थे। कुछ मुख्य घटनाएं जो उसके राजनीतिक जीवन से पहले से जुड़ी हुई हैं उसके हर क्षेत्र में निर्भीक होना प्रकट करती हैं। आचार्यजी शुरु से आर्य समाज जैसी उच्च कोटि की संस्था से जुड़े रहे जिसने लाला लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानन्द, पण्डित लेखराम जैसे विद्वान् और महान् देशभक्त राष्ट्र को दिये।

जब आचार्य जी बहुत छोटे थे तो उनको आंतरिक आवाज ने अपना घर बार छोड़ने को प्रोत्साहित किया और वे अन्जान स्थानों की खोज में निकल पड़े। आपने बड़ी गहराई से सम्राट अशोक, राणा प्रताप और शिवाजी की जीवनियों का अध्ययन किया और महान् गुरु रामदास व स्वामी दयानन्द के त्याग से शिक्षा ग्रहण की। उसके स्वप्न में सदा संत और सम्राट आते रहे और हम उनमें दोनों के गुण पाते। आचार्यजी कई वर्षों तक वीरानों में घूमते रहे इसी दौरान वे जुदा-जुदा आश्रम, मठ और दूसरे ज्ञान अर्जित करने वाले स्थानों में गये। इन्हीं स्थानों पर उन्होंने बड़ी गहराई से वेद, उपनिषद् और योग विज्ञान का अभ्यास किया। वे आंतरिक आवाज से वापस लौटे और आर्य समाज के जरिये लोक सेवा करने का पक्का विचार किया। वे गुरुकुल टंकारा में महर्षि दयानन्द सरस्वती मेमोरियल ट्रस्ट के १२ वर्ष तक प्रधान रहकर अपनी सेवायें दी। आर्य समाज के नेताओं ने आचार्य जी की योग्यताओं का बड़े कार्यक्षेत्र में लाभ पहुंचाने का फैसला लिया और उन्होंने श्री आचार्य जी को दुनिया भर के आर्यसमाज की सेवा करने की जवाबदारी अपने कंधों पर लेने के लिए कहा और वे ... वर्ष सैक्रेट्री के पद पर रहे। उन्होंने बड़ी लगन, बहादुरी, होशियारी से आर्यसमाज के कार्यों को देश के लोगों के सामने रखा और उनमें सेवा भाव की चाह पैदा की। उसने टंकारा में संस्था के ऊपर अनाधिकृत प्रवेश का कड़े शब्दों में विरोध किया और दुश्मनों का साहस से मुकाबला किया उन्होंने सैकड़ों नौजवानों को इस्लामी धर्म कबूल न करने के लिए प्रोत्साहित किया। देश भर में आर्य धर्म की सेवा करने की भावना जगाई। उन्होंने विरोधी भावना रखने वालों का साहस से मुकाबला किया और आखिर उन पर विजय पाई। जब पाटन में वे गुजरात बंटवारे आंदोलन में सम्मिलित हुए और इसमें उनको लोगों की इतनी प्रशंसा मिली कि उनको पाटन म्युनिसि-पल के चुनाव लड़ने की टिकट दी गई और उन्होंने दो वार्डों से भारी विजय हासिल की। एक वार्ड में ... मुस्लिम उम्मीदवार को मुस्लिम वोटरों का बहुमत ... था फिर भी उन्होंने उसको भारी मतों से हराया। ... पंजाब में हिन्दी रक्षा सत्याग्रह आंदोलन में शामिल होने की वजह से जेल भी गए। उन्होंने कामयाबी के ... लन्दन, नैरोबी और मारीशस में हुए इन्टरनेशनल आर्य कांफ्रेंस का प्रतिनिधित्व किया। दिल्ली में वे कांग्रेस नेताओं के सम्पर्क में आये और उनको अजमेर क्षेत्र ... लोकसभा की टिकट दी गई। उनकी अजमेर क्षेत्र ... जीत एक बेमिसाल वाकिया है और इस जीत के ... आचार्य जी का पूरा ध्यान सिंधी समाज की बेहतरी ... उनकी समस्याओं की तरफ आकर्षित हुआ और वे ... दिन सिंधी समाज के भले के बारे में सोचते रहे। ... अप्रेल १९८२ को उनके द्वारा पार्लियामेंट में सिंधी भाषा में भाषण करना सिंधी समाज के लिए नाज की ... है। उन्होंने अपने इस वक्त के सिंधी भाषण में ... समाज की समस्याओं को जिन सुन्दर शब्दों में ... के सामने रखा उनका सभी वर्गों के सदस्यों पर ... प्रभाव पड़ा और इसी का नतीजा यह निकला कि ... आदरणीय प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिराजी ने आचार्य ... को लिखा कि उन्होंने उनके द्वारा दर्शाई गई समस्याओं ...

वृक्षों की डालों से सीखें, फल पाकर झुक जाना।
वायु के झोकों से सीखें हिलना और हिलाना॥

को हल करने के लिए उन्होंने संबंधित अधिकारियों को लिखा है।

यह एक काम की बात है कि श्री आचार्य जी को राज्य भाषा समिति का संयोजक बनाया गया है और इसी संदर्भ में वे कई विदेशी देशों में हिंदी को भारतीय दूतावास में प्रचलित कराने के ख्याल से गये और यहां भारत में भी हिंदी को सरकारी विभागों में प्रचलित कराने के मकसद से कई शहरों में गये। आचार्य जी खुद एक हिंदी के विख्यात लेखक हैं और उन्होंने करीब ४० पुस्तकें योग विषय पर लिखी हैं और उनकी हर पुस्तक कई संस्करण में छपी है। हमारा समाज हमेशा उनके द्वारा किये गये कार्यों को याद रखेगा। सिंधी साहित्य अकादमी को देश भर में कायम करने का उन्होंने पक्का इरादा किया है और उनको महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश सरकार ने उनके राज्य में सिंधी साहित्य अकादमी कायम करने की इजाजत दे दी है और उत्तर प्रदेश सरकार ने भी ऐसा वायदा किया है। गुजरात सरकार और दिल्ली सरकार से भी उन्होंने इस बारे में निवेदन किया है। सिंधी भाषा के लिए निदेशालय खोलने के लिए भी वे प्रयत्नशील हैं। हमारे सिंधी समाज के स्वतंत्र सेनानी शहीद हेमू कालानी की पोस्ट स्टैम्प जारी कराने में भी श्री आचार्य जी का हाथ रहा है और शहीद हेमू कालानी की माता को माहवार ५००/- पेन्शन दिलाने का श्रेय श्री आचार्यजी को ही जाता है। अन्य सिंधी स्वतन्त्रता सेनानियों को पेंशन दिलाने की कोशिशें भी वे कर रहे हैं। हर रोज रात को ९.१५ से ९.४५ बजे तक सिंधी में कार्यक्रम चालू कराने का भी श्रेय श्री आचार्य जी को जाता है। बम्बई दूरदर्शन पर सिंधी कार्यक्रम का होना भी इनकी कोशिशों का नतीजा है। सिंधी गुरुद्वारों की गुरुद्वारा संशोधित बिल के दायरे से बाहर रखने के मकसद से वे सिंधी पंचायत के सदस्यों को लेकर राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, गृहमन्त्री से मिले जिन्होंने उनको विश्वास दिलाया कि सिंधी समुदाय के गुरुद्वारों को इस बिल के दायरे में नहीं आने दिया जाएगा। श्री आचार्य जी ने समाज सेवी संस्थाओं को उनके द्वारा दवाखाना, स्कूल की इमारतें बनवाने के लिए सीमेंट की आवश्यकता को पूरा करने के लिए सरकार की मंजूरी दिलाई। श्री आचार्य जी के दिमाग में सिंधी समाज के कल्याण के लिए बहुत ही सुन्दर योजना है और इसी मकसद से उन्होंने विश्व सिंधी समाज का गठन किया है और उनका दिल्ली में एक सिंधी भवन बनवाने का विचार है जिसकी नींव भी रखी जा चुकी है। इस भवन में लाइब्रेरी, आर्ट गैलेरी, विधवा आश्रम और प्रौढ़ आश्रम, कालेज और दवाखाना बनवाने की योजना है। हमको उनकी हिम्मत में विश्वास है और पूरी आशा है कि उनका यह सपना पूरा होगा। जरूर सर्व शक्तिमान के आशीर्वाद की बौछार हमारे सिंधी समाज और श्री आचार्य जी के ऊपर होगी और हमारे सुझाये गए रास्ते पर मकसद पूरा होने तक चलते रहेंगे।

* *

विन खून के हमारे यारों न भूल जाना।
सूनी पड़ी कबर पै इक गुल खिलाते जाना॥

वक्त आने पर बता देंगे, तुझे ओ आसमां।
हम अभी से क्या बताएं, क्या हमारे दिल में है।

आचार्य भगवान देव से भेंट वार्ता
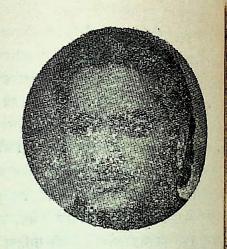
आचार्य भगवान देव से भेंटवार्ता लेने जब मैं उनके निवास स्थान १३ लोधी एस्टेट पहुंचा, तब वे आगन्तुकों से घिरे बैठे थे। पांच-दस मिनट बाद उन्होंने मुझे अपने स्टेडी-रूम में बुला लिया। २७ अगस्त का दिन था। मैं प्रातः काल सवा आठ बजे के लगभग पहुंचा। साढ़े नौ बजे कांग्रेस (इ) संसदीय दल की बैठक थी। इसके बावजूद आचार्य जी दस बजे तक मेरे प्रश्नों के उत्तर देते रहे। (ये प्रश्न जन-ज्ञान के मई अंक में प्रकाशित हो चुके हैं, इसलिए उन्हें दोहराने की आवश्यकता नहीं। केवल प्रश्न संख्या और उसके विषय का संकेत ही पर्याप्त है।)

पहले प्रश्न का सम्बन्ध सेक्युलर स्टेट के नारे से था। आचार्य जी ने कहा कि राजनीति धर्म से प्रभावित होनी चाहिए। उन्होंने स्वर्गीय आचार्य नरदेव शास्त्री के इस कथन से सहमति प्रकट की कि राजनीति धर्ममय होनी चाहिए। उन्होंने जोर देकर कहा कि धार्मिक नेताओं की पदवी राजनेताओं की पदवी से ऊंची है। उदाहरण स्वरूप उन्होंने कहा कि प्राचीन काल में वशिष्ट, विश्वामित्र आदि ऋषि-मुनि अपने-अपने समय के राजा-महाराजाओं पर नियन्त्रण रखते थे। डंडे के डर से अपराध नहीं रुक सकते। इसके लिए तो धार्मिक शिक्षा ही कारगर उपाय है। धार्मिक शिक्षा के बिना समाज में सुख, शान्ति सुव्यवस्था स्थापित नहीं हो सकती। जब मैंने उनसे पूछा कि जब आपके ये विचार हैं, तब आप कांग्रेस की धर्मनिरपेक्षता की नीति का समर्थन कैसे करते हैं ? यह तो विदेशों से आयातित की गई है। वे बोले कि धर्मनिरपेक्षता तो बहुत बाद की चीज है। इस शब्द के प्रचलित होने से पूर्व से ही हमारे देश में सर्व—धर्म—समभाव था। वस्तुतः धर्म तो है ही एक-मानव धर्म, जिसकी शिक्षा वेद ने 'मनुर्भव' कह कर दी है। इसलिए मैं तो सर्वधर्म समभाव का अर्थ भ्रातृभाव लेता हूं। धर्मनिरपेक्षता और सर्वधर्म समभाव एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। आप अपने धर्म का पालन कीजिए और अपने-अपने धर्म का पालन करने वाले अन्य लोगों से भ्रातृभाव के साथ बरतिये। लेकिन मैं एक बात स्पष्ट कर दूं। जब मैं कहता हूं कि राजनीति धर्ममय होनी चाहिए, तब मेरा मतलब यह नहीं कि धार्मिक क्षेत्र के लोग राजनीति का धन्धा करें। वे अपना वरदहस्त राजनेताओं की पीठ पर रखें, लेकिन संसद आदि में जाने का लालच न पालें। यह काम क्षत्रियों का है— ब्राह्मणों का नहीं। मैं इस कथन से सहमत नहीं कि धर्मनिरपेक्षता से अपराधों को बढ़ावा मिलता है। अपराध गुंडे करते हैं। राजनीतिक लोग अपने स्वार्थ के लिए उनका इस्तेमाल करते हैं। इसका दोष धर्म-निरपेक्षता के माथे नहीं मढ़ा जा सकता। इसी प्रसंग में

जब मैं सर-बसजदा हुआ कभी तो, जमीं से आने लगी सदा।
तेरा दिल तो है सनम आशना, तुझे क्या मिलेगा नमाज से॥

उन्होंने साम्प्रदायिक दंगों की भी चर्चा की और अकबर इलाहाबादी का यह शेर पढ़ा-'आये हंसी क्यों न हमें इस जिद के सामने, बाजा बजे न भूलकर मस्जिद के सामने' उन्होंने यह भी कहा कि धार्मिक विश्वास की सीमा में प्रत्येक व्यक्ति स्वतन्त्र है, लेकिन मजहब के आधार पर सीटें मांगना गलत है धार्मिक विश्वास सब दल कर सकते हैं, लेकिन लोभ-लालच से किसी का धर्म बदलना अनुचित है। वैसे मैं हिन्दू धर्म को संसार का सर्वश्रेष्ठ धर्म मानता हूं, क्योंकि यह वेदों पर आधारित है। वैदिक धर्म को छोड़कर अन्य धर्मों के प्रवर्तक आखिर इन्सान थे। स्वाभाविक है कि उनमें और उनके विचारों में मानव सुलभ दुर्बलताएं और कमजोरियां हों। फलस्वरूप ये दुर्बलताएं और कमजोरियां उनके अनुयायियों में भी आना सम्भव है। दूसरी ओर वैदिक धर्म का स्त्रोत वेद है, जिनका ज्ञान स्वयं परमात्मा ने दिया।

दूसरा प्रश्न था कि भारत धर्मराज्य बनाने में क्या लाभ या हानि है? आचार्य जी ने प्रति प्रश्न किया कि 'धर्मराज्य से आपका आशय क्या है?' जब मैंने कहा कि 'धर्मराज्य से मेरा आशय है हिन्दूराज्य' तब आचार्य जी ने अस्वीकृति में सिर हिलाया। इस प्रसंग में उन्होंने हिन्दू रक्षा समिति के अध्यक्ष महात्मा वेदभिक्षु: जी का नाम लेकर कहा कि वे पथभ्रष्ट हैं। जिस प्रकार का प्रचार वे कर रहे हैं, उससे सरकार नाराज होगी और फलस्वरूप हिन्दू हितों की क्षति होगी आचार्य जी ने कहा कि कितने आश्चर्य की बात है कि कल तक महात्मा वेदभिक्षु: जी वेद और दयानन्द के विरुद्ध एक शब्द सुनने को तैयार न थे, लेकिन आज कहते हैं कि 'हम सब हिन्दू हैं'। वेद में कहां लिखा है कि मैंने [परमात्मा ने] शासन का अधिकार हिन्दुओं को दिया है। वहां तो लिखा है कि अहंभूमिमददामार्याय। (मैंने यह भूमि मुनि आर्यों के लिए दी है।)

महर्षि दयानन्द सरस्वती जीवन भर हिन्दू शब्द का खंडन करते रहे। लाला लाजपतराय, भाई परमानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द हिन्दू संगठन के लिए प्रयत्नशील रहे, लेकिन असफल रहे। उनके प्रयत्नों से हिन्दू हितों को क्षति पहुंची-इस रूप में कि मुल्लका-मौलाना पहले से भी अधिक उग्र हो गये। मैं तो कहता हूं कि जो कुछ करना है, वैदिक धर्म का आधार लेकर करो। हिन्दू शब्द पर आग्रह कर के समाज को पीछे मत ले जाओ। हरिजन आर्य बनने को तैयार हैं। लेकिन हिन्दू शब्द से वे भड़क उठते हैं क्योंकि हिन्दू पोगापन्थियों ने उन पर लोमहर्षक अत्याचार ढाये हैं। आप इस तथ्य से इन्कार नहीं कर सकते। मेरा निश्चित मत है कि यदि हरिजनों पर अत्याचार न होते तो वे कभी इस्लाम ग्रहण न करते। आज भी क्या हालत है? मीनाक्षी-पुरम् में १,००० हरिजन हिन्दुओं को मुसलमान बनाया गया, लेकिन आर्य [हिन्दू] समाज ने जुलाई के अन्तिम सप्ताह में वहां एक सम्मेलन आयोजित करने के सिवा और क्या किया? मुस्लमानों ने वहाँ डेरे डाल रखे हैं। वे उनकी भरपूर आर्थिक सहायता कर रहे हैं। लेकिन हिन्दू राज्य का स्वप्न लेने वाले हिन्दू संगठनों ने धर्मान्तिरण के विरुद्ध राजधानी की दीवारों पर पोस्टर और अखबारों में समाचार व विज्ञापन प्रकाशित करने के अतिरिक्त क्या किया? सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने बम्बई के वनिकों से काफी धन जमा किया है क्या मैं जानना चाहता हूं कि उसका इस्तेमाल किया गया है? पोस्टर-बाजी से छापाखानों को लाभ होगा हरिजनों को नहीं। अखबारों में समाचार और विज्ञापन प्रकाशित करवाने से हरिजनों का पेट नहीं भरेगा। मैं पूछता हूं कि क्या धर्मन्तिरण के विरुद्ध शोर मचाने वाले हिन्दू संगठनों में से किसी ने भी प्रांच हरिजनों को भी भोजन करवाया? इसलिए मैं कह सकता हूं कि हम लोग अपनी सारी शक्ति वैदिक धर्म का प्रचार करने में लगाएं। हम जड़ों को सीचें शाखाओं को नहीं। शाखाओं को पानी देने से क्या होगा? हमारे आदर्श हैं—अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सम्भ्रांत ए वावृपुः सोभागाय•••समानी प्रथा सह वो अन्न भाग•••मित्रस्य चक्षुणा सर्वाणि भूतानि समीक्षा महो। हमें तो सारे संसार को आर्य बनाना है क्योंकि यह काम कठिन है, इसलिए कुछ लोगों ने यह

पकड़ते हैं वह उसका हाथ आये यह यकीं जिसको।
पकड़ लें हाथ वह जिसका उसे छोड़ा नहीं करते॥

सरल मार्ग अपना लिया है। हिंदू संगठन किस मुंह से हिंदू राज्य की मांग करते हैं, जबकि संसद के दोनों सदनों में से एक में भी इनका कोई प्रतिनिधि नहीं चुना गया। हमारे देश में लोकतंत्र है। जनता की आवाज सुननी पड़ेगी। जब जनता सांप्रदायिक राज्य के विरुद्ध है, तब आप धर्मराज्य के नाम से उस पर सांप्रदायिक राज्य क्यों ठूंसना चाहते हैं? मानव समाज केवल दो वर्ग हैं- आर्य और दस्यु। मैं अन्य किसी भी प्रकार के वर्गीकरण के विरुद्ध हूं।

तीसरा प्रश्न समाजवाद के संबंध में था। आचार्य जी ने कहा कि 'समाजवाद', और 'त्यागवाद' में कोई अंतर नहीं। जब मैंने कहा कि 'समाजवाद' तो सरकारी पूंजीवाद ही है—इसमें सरकारी अधिकारी का व्यापार में पूंजी पर नियन्त्रण रहता है, तब आचार्य जी ने स्पष्ट किया कि बात ऐसी नहीं। एक सरकारी अधिकारी के ऊपर दूसरा है—उसके ऊपरऔर फिर और। सरकार पर नियन्त्रण के लिए लोक सभा है। लोकसभा की गलत नीतियों का पुनरावलोकन करके उनके सुधार के लिए 'राज्यसभा' है। संसद और राष्ट्रपति का स्वीकृति से बने कानूनों पर विचार के लिए उच्चतम न्यायालय है इस प्रकार लोकतंत्रीय प्रणाली में कोई मनमानी नहीं कर सकता। यदि निर्वाचित प्रतिनिधि अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं करता, तो मतदाता अगली बार उसे चुनकर नहीं भेजते। लोकतंत्रीय समाजवाद [डेमोक्रेटिक सोशलिज्म] का मतलब ही है लोकतंत्र और समाजवाद के लिए 'समान आदर' में अपरिग्रह का पक्षपाती हूं। उन्होंने एक दोहा सुनाया-पानी बाढो नाव में घर में बाढ़ो दाम दोनों हाथ उलीचिये यही सुधी को काम।' "तेन त्यक्तेन मुंजीथा:" की भावना यही है कि पूंजी को भोग विलास सदृश बुरे कामों में व्यय न करके धर्म के कामों में लगाया जाये। भोग विलास का परिणाम हम पूंजीपतियों के अनुभवहीन और अय्याश वोटों के हशर के रूप में देखते हैं। मैं कम्युनिस्टों की इस मान्यता से सहमत नहीं कि धन का समान वितरण हो। पूर्ण समानता कभी नहीं थी और कभी नहीं होगी। क्या रूस और चीन में राष्ट्रपति व निचले दर्जे के किसान-मजदूर का जीवन स्तर एक जैसा है? फिर हम तो इसके कर्म फल पर विश्वास करते हैं। मेरी आस्था उस मध्यमार्ग पर है, जिस पर कांग्रेस चला रही है। वेदों में जिस समाजवाद का प्रतिपादन किया गया है, कांग्रेस ने उसे ही अपने कार्यक्रम में शामिल किया है।

चौथा और पांचवां प्रश्न लघु उद्योगों और आत्म-निर्भरता पर जोर देने से संबंधित था। एक तो इस बारे में मतभेद की गुंजाइश कम थी और दूसरे आचार्य जी को दल की बैठक में जाने की जल्दी थी, इसीलिए उन्होंने दोनों बातों पर सहमति प्रकट की, लेकिन इतना अवश्य कहा कि समाजवादी अर्थव्यवस्था में भी आत्म-निर्भरता संभव है। विदेशी ऋण तो सभी विकासमान देश लेते हैं। रोजगार मुहय्या करने के लिए बड़े उद्योग भी प्रारंभ करने पड़ते हैं और उनके लिए विदेशी ऋण भी लेने पड़ते हैं। हमारा देश भी तो अपने से अपेक्षाकृत छोटे देशों की सब प्रकार से सहायता करता है; ताकि वे अपने पैरों पर खड़े हो सकें।

छठे प्रश्न के उत्तर में आचार्य जी ने सांप्रदायिकता को अभिशाप माना। उन्होंने कहा कि धर्म एक ही हो सकता है। संप्रदाय अनेक हो सकते हैं। साम्प्रदायिकता बुरी है, चाहे वह हिंदुओं की हो और चाहे मुसलमानों की। उनका जोर इसी बात पर रहा कि इंदिरा कांग्रेस का मार्ग ही ठीक है।

अन्तिम प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि सब नागरिकों के लिये समान अधिकार होने चाहिए, लेकिन हरिजनों के लिए आरक्षण जारी रहना चाहिए क्योंकि हम लोगों ने उन पर बहुत अत्याचार किए हैं, जिनके न्याय प्राप्ति के लिए हमें उन्हें विशेष सुविधाएं देनी ही चाहिए।

इतने प्रश्नोत्तरों के बाद मैंने आचार्य जी का अधिक समय लेना उचित न समझा और मैं उन्हें धन्यवाद देकर विदा हुआ। ★

तुम खुदा के नाम पर मझधार किशती छोड़ दो।
देख लेना फिर खुदा ही नाखुदा बन जायेगा॥

महान् नेता, कर्म-योगी

आचार्य भगवान देव

श्री गोर्धन कृष्णाणी
पत्रकार उज्जैन (म० प्र०)
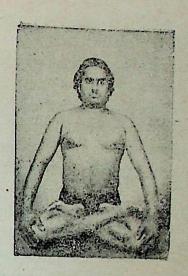
आचार्य जी

भारत देश के दुर्भाग्य पूर्ण बंटवारे को लगभग ३५ वर्ष हो गये हैं। जब बंटवारे के कारण सिन्धी भाई सिन्ध छोड़कर भारत में आये तो सभी के दिल व दिमाग में यही एक बात थी कि इस पराये देश में हमारा कौन होगा जो हमारे दुख सुख की बात सुनेगा और उसे सरकार तक पहुंचायेगा। क्योंकि सिन्ध को पाकिस्तान में मिलाने के निर्णय के वक्त किसी भी सिंधी नेता ने उसके विरुद्ध आवाज बुलंद नहीं की थी। इससे ऐसा स्पष्ट लग रहा था कि सिंधियों का कोई नेता ही नहीं है। और यह विशाल समाज विना किसी के है। ऐसे केठिन समय में शेरे सिंध डा. चौइथराम गिदवानी मैदान में कूद पड़े और उन्होंने भारत की संसद में पहुंचकर सिंधी भाइयों के पुनर्वास हेतु अपनी आवाज बुलंद की। इससे मायूस सिंधियों में आशा की एक किरण दिखाई दी। और उन्हें लगा कि हमारे दुख दर्द को समझने वाला और उसकी आवाज बुलंद करने वाला हमारा भी कोई नेता है। और डा० गिदवानी सिंधियों में काफी लोकप्रिय हो गये। उन्होंने भी रात-दिन नगर-नगर में घूम सिंधी भाईयों की महान् सेवाएं की। उस समय एक और नेता भी मैदान में थे वे थे आचार्य कृपलानी किंतु वे स्वयं को केवल राष्ट्रीय नेता के रूप में रखने की कोशिश करते रहे। आचार्य कृपलानी कभी भी सिंधियों के बीच में नहीं गए और इस कारण सिंधियों ने उन्हें कभी भी अपने नेता के रूप में नहीं स्वीकारा—यह सही है कि आचार्य कृपलानी ने जिस लगन उत्साह परिश्रम एवं निष्ठा से देश की सेवाएं की वे भारतीय इतिहास में सुनहरी अक्षरों में लिखी जाएंगी उनकी तपस्या से सिंधियों का नाम अवश्य उज्ज्वल हुआ पर फिर भी वे सदैव सिंधियों से दूर रहे। इसके साथ ही जयराम दास दौलतराम भी स्वयं सिंधियों के नेता कहलाते थे पर वे सिर्फ लिपि के मामले की पकड़कर सिंधियों के नेता कहलाते रहे उन्होंने सिंधी समाज की कठिनाईयों पर कभी ध्यान नहीं दिया। वे हमेशा सत्ताधारी दल के चमचे के रूप में चलते रहे। समाज की तरफ उनका कोई ध्यान नहीं था। इन नेताओं के कार्यों की तरफ जिम्मेदारियों की तरफ जब हम नजर डालते हैं तो हमें सिर्फ डा. गिदवानी ही एक मात्र देश सेवक होने के साथ सिंधियों के भी महान् सेवक के रूप में दिखाई देते हैं। चूंकि अब हमारे यह नेता इस संसार में नहीं हैं इस कारण हम भूतकाल को छोड़कर वर्तमान में हमारे चार संसद सदस्य मैदान में हैं। दो सत्ता पक्ष के एवं दो विपक्ष के। विपक्ष के श्री लालकृष्ण अडवानी भारतीय जनता पार्टी के महामंत्री हैं। उन्होंने अपनी लगन परिश्रम सूझ-बूझ से भारतीय जनता पार्टी का काफी नाम रोशन किया है वे ईमानदार तथा देशभक्त हैं। उन्हें देश के लिये काफी चिंता रहती है। उन्होंने ईमानदारी के

डूबने का खौफ़ मुझ को हो तो फिर क्या ख़ाक हो।
मैं तेरा, किश्ती तेरी, दरिया तेरा, साहिल तेरा॥

साथ अपने दल की सेवाएं की हैं। सिंधी होने के नाते उनकी सेवाओं के कारण सिंधियों में नाम ऊंचा हुआ है किन्तु उन्होंने सिर्फ पार्टी का हित व देश के हितों की तरफ ही ध्यान दिया है वे सिंधियों के नेता नहीं माने जाते। विपक्ष के दूसरे नेता हैं श्री जेठमलानी जो कि भारतीय जनता पार्टी के उपाध्यक्ष हैं। सिन्धियों से कोसों दूर हैं। सत्तापक्ष के एक सांसद हैं श्री धर्मदास शास्त्री जो हैं तो सिन्धी पर उन्हें सिन्धियों की समस्याओं कठिनाईयों के बारे में शायद कुछ ही जानकारी होगी। वे आज तक सिंधियों में आये ही नहीं। इस प्रकार श्री धर्मदास शास्त्री को सिन्धियों का प्रतिनिधि नहीं कहा जा सकता। अब रहे अजमेर संसदीय सीट से विजयी होकर आये आचार्य भगवान देव जी। चुनाव समय व बाद में जब हम अजमेर से प्रकाशित कुछ समाचार पत्रों को देखते थे तो लगता था आचार्य भगवान देव घमण्डी हैं। और उनकी जीत से न सिर्फ सिन्धियों का नाम बदनाम होगा पर कांग्रेस एवं श्रीमती इन्दिरा गांधी का नाम भी बदनाम हो जायेगा। इससे हमें चिन्ता रहती थी कि आचार्य भगवान देव सचमुच में इतने जिद्दी हैं कि उनकी भारी आलोचनाएं की जा रही हैं। परन्तु ज्यों-ज्यों समय बीतता गया पत्रकारिता का मुंह बंद होता गया। और यह सच भी है कि सूर्यदेव की रोशनी को हाथ की हथेली से नहीं ढांका जा सकता। इस प्रकार आचार्य भगवानदेव की निष्ठा, लगनशीलता, निडरता, देश भक्ति, समाज व कौम के लिये स्नेहशीलता ने सत्यता को उजागर कर दिया है यही कारण है कि उन जलने वाले लोगों की तूती अब वन्द हो गई। विश्व सिन्धी सम्मेलन बुलाकर व उसे सफल बनाकर जो सेहरा बांधा उसके लिए सिन्धी समाज उनकी वर्षों तक कर्जदार रहेगी। इस महान् आयोजन में उन्होंने देश की प्रिय दर्शनी महान् नेता प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को लाकर सिन्धियों का जो सिर ऊंचा किया है वह आज तक अन्य किसी भी सिन्धी नेता ने नहीं किया। हां कुछ नेताओं ने नेहरूजी को सिन्धियों के बीच लाने की कोशिश की थी पर वे उन्हें लाने में कभी सफल नहीं रहे।

आचार्य भगवानदेव ने श्रीमती गांधी को सिन्धियों के बीच में लाकर हम सिन्धियों के ऊपर बहुत उपकार किया है। संसद में सिन्धी भाषा में सिन्धियों की मांग रखना, सिन्धी भाषा व साहित्य के प्रति उनका आभार प्रेम प्रकट करता है। मुझे पूरी तरह से याद है कि जब अखिल भारतीय सिन्धी समाज के कार्यकारिणी की बैठक दिल्ली में रखी गई थी तब मैं भी उस बैठक में भाग ले रहा था, तब आचार्य जी सांसद नहीं बने थे, उन्होंने बैठक में भाग लेने आये भाईयों की काफी सेवा की थी। ऐसे महान् सेवक, निष्ठावान, लगनशील, समाज के सच्चे सुधारक, विश्व सिन्धी समाज के अध्यक्ष, ओजस्वी नेता, यशस्वी साहित्यकार (आचार्य भगवान देव जी ने योग पर कई पुस्तकें लिखी हैं, व देश भक्तों की जीवन गाथाएं लिखी हैं, दिल्ली से प्रकाशित हो रही आर्य समाज की कई पत्रिकाओं के प्रधान संपादक हैं। व पत्रकार उत्साही व निडर देश भक्त एवं ओजस्वी नेता के जीवन पर निकलने वाली पुस्तक सचमुच एक सराहनीय कार्य है। मैं तो चाहूंगा कि आचार्य भगवानदेव के जीवन, कार्यों, तपस्या पर एक बार नहीं, बार-बार पुस्तकें व पत्रिकायें निकलनी चाहिए। हमारी तो प्रभु से प्रार्थना है कि आचार्य भगवानदेव को इतनी शक्ति दे कि वे निरोग रहकर उत्साह उमंग व महान् सेवा कर महान् नेता इन्दिरा गांधी के महान् उद्देश्यों, कार्यों को पूरा करने में पूरा-पूरा सहयोग कर सकें। मैं इस महान् सिन्धी सपूत के चरणों में नमन करता हूं। और उनकी प्रगति की कामना करता हूं।

जा को राखे साईयां मार न सकि है कोय।
बाल न बांका करि सके, जो जग वैरी होय॥

वो पांच दिन

धर्मप्रकाश-नवीनजोशी

दिल्ली में महर्षि दयानन्द फिल्म के महूर्त के अवसर पर लिया गया चित्र आचार्य भगवान देव "गृह त्याग" का शार्ट देते हुए।

ऐसी वस्तु जिसके स्पर्श मात्र से पत्थर भी सोना बन जाता है यानि कि पारसमणि !

जी हां मैं ऐसे पारसमणि की बात बताने जा रहा हूं जिसके बारे में कुछ कहना सूरज को दीया दिखाने वाली बात है···

फिर भी मैं अपने जजबात को रोक नहीं सकता हमारी मुलाकात कोई लम्बी नहीं है, फिर भी

हाथ कंगन को आरसी क्या···

एक सप्ताह भी नहीं सिर्फ पांच दिन में हमने जो अनुभव किया वो आपके सामने रखता हूं···

प्रसिद्ध गायक एवं कलाकार बंधुवंर मोती सागर के घर पर एक व्यक्ति से छोटी सी मुलाकात हुई···

वे ऐसे व्यक्ति हैं, जिनके अन्दर मैंने कभी गुस्सा पाया ही नहीं सिर्फ जुस्सा ही जुस्सा पाया-जिनकी डिक्शनरी में

गुस्सा शब्द ही न हो-वो कैसे गुस्सा करे, उनको सदा हमने सन्मुख पाया, वे सबका बहुत आदर करते हैं-कोई भी व्यक्ति हो, जानी चाहे अन्जानी उन के आदर सत्कार हमने मैंने कभी ओट नहीं पायी।

हम हैरान हो जाया करते थे कि यह व्यक्ति जो इतना व्यस्त है, जिसे भोजन तक की फुर्सत नहीं है, फिर भी अपने कार्यों को सम्हालते हुए घर के प्रति फर्ज को, किस खुशी से निभा रहा है-बच्चों के साथ खेल भी लेता है और प्यार की बातें भी करता है—ऐसे व्यक्ति जो अपने नौकर को भी नौकर नहीं माना बल्कि अपने बेटे से भी अधिक मानता है, उनके कार्य और सेवायें इतने हैं जो हम लिख नहीं सकते अगर लिखना चाहें तो महाभारत जैसी तीन पुस्तकें बन सकती हैं।

अगर इस व्यक्ति माफ कीजियेगा, महान् व्यक्ति की पहचान, कोई गलती से भी पूछे, तो मैं यही कहूंगा।

सौम्य, सन् मुख शांत, कार्यशील, जुस्सा, लगन निष्ठावान, परोपकारी, शुद्ध शाकाहारी, मितभाषी···

मेरा यह दावा है कि वह गलती करने वाला इन्सान सीधे उनके पास पहुंचेगा, जिनका नाम है···

आचार्य भगवान देव—

खुदाया खुद को तूने इक तमाशा ही बनाया है।
कि जर्रे जर्रे से अयां होकर निहां होना॥

सफल संयोजक आचार्य भगवानदेव

टहलराम आजाद, बम्बई

सिन्धी" विश्व नागरिक हैं। अपनी सहज बुद्धि स्वांवलंबी स्वभाव, कर्मठता के कारण देश विभाजन की विषमता को भी पचाकर खुद को पुनर्स्थापित किया वरन् भारत स्वतंत्र भारत के नव निर्माण में भी उल्लेखनीय योगदान किया, जिस सत्य की मुक्त कंठ से सब प्रशंसा करते हैं।

प्राय : सिंधी व्यवसायी-समुदाय के रूप में मान्य हैं परन्तु सिंधी लक्ष्मी के साथ सरस्वती के भी आराधक हैं। सिंधु संस्कृति (मोहन जोदड़ो) हड़प्पा समस्त भारती उपमहाद्वीप की संस्कृति के रूप में मान्य हो चुकी है, जिस पर बजा तौर पर गर्व किया जा सकता है यह सच है कि राज्य हीन सिंधी व्यवसायी विश्व के कोने-कोने में फैल गये और आज उनका व्यवसाय जगत में 'एक छत्र साम्राज्य' है जिस पर कभी सूर्यास्त नहीं होता।

लेकिन सिंधुमात्रा रत्न-गर्भा है एक से एक रत्न देकर उसने अपनी गरिमा को बढ़ाया है। उसने कलावंत, साहित्यकार, देश भक्तों को भी जन्म दिया है समाज सेवा में भी कीर्तिमान स्थापित करने वाले यशस्वी सिंधु पुत्रों पुत्रियों को भी अपनी कोख से जन्म दिया है।

विभिन्न क्षेत्रों में प्रतिष्ठित सिंधी महानुभावों का आज भी यत्र-तत्र सर्वत्र वर्चस्व है।

कुछ ऐसी प्रतिमाएं भी हैं जिन्हें सुअवसर मिलने पर ही प्रकाश में आने का सौभाग्य प्राप्त होता है उनमें से एक हैं भारत माता का एक समर्पित सेवक, सिंधु पुत्र श्री आचार्य भगवान देव संसत्सदस्य !

जो पंचासवें वर्ष में पदार्पण करने पर भी उत्साही युवक सम लगते हैं। जो अपने अनूठे ढंग से देश सेवा में तल्लीन रह कर, नाना प्रकार की भूमिकाओं को निभाते हुए, संकल्प को लेकर सिंधी समाज में अपनी एक अलग पहचान लेकर आए और छा गये !

सिंधी समुदाय के इतिहास में एक अपूर्व घटना थी "विश्व सिंधी सम्मेलन' जो 18-19 अक्तूबर, 1983 को भारत की ऐतिहासिक राजधानी दिल्ली के वैभवशाली इंद्रप्रस्थ स्टेडियम में आयोजित हुआ था।

यह उनकी सूझ बूझ एवं लग्न निष्ठा और दृढ़ता का श्रीफल था जो इतिहास में प्रथम बार विश्व नागरिक सिंधी एक मंच पर इकट्ठे हुए और पहली बार राष्ट्र के अंग्रेज महा महीम राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैल सिंह जी तथा भारत की लाडली प्रधान मंत्री राष्ट्रदेवी श्रीमती इंदिरा गांधी ने सिंधियों की विशाल सभा को संबोधित करते हुए उनके सुकर्मों, राष्ट्र निर्माण में सुयोगदान और सद्गुणों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। देश की अखंड़ता, एकता, राष्ट्र प्रेम, विश्व बंधुत्व, विश्वशांति, भाईचारा, धर्म निरपेक्षता के लिए सिंधियों को "आदर्श" बताया। एक जाति के लिए इस से ज्यादा गौरव की बात क्या हो सकती है? न सिर्फ इतना बल्कि, सिंधु समाज के अनेक कर्मठ सेवकों का उनकी सतत् सेवाओं के लिए महामहीम राष्ट्रपति के मुबारिक हाथों द्वारा अभिनन्दन कराते हुए उन्हें पुरस्कारों से विभूषित किया गया ! आजादी के ३७ वर्षों के बाद सिंधी जाति के इतिहास में यह प्रथम सुवर्ण अवसर था।

आचार्य भगवानदेव ने इस प्रकार सिंधियों को एक सूत्र में बांधने का सफल प्रयास किया, उनके सामने मार्ग प्रशस्त किया, जिससे वे अपनी सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक समस्याओं को सामूहिक ढंग से सुलझाने के लिए एक 'सक्षम-सबल" मंच उपलब्ध कराया ! सूत्रधार की तरह सूत्रपात किया पुरानी और नई पीढ़ी का संगम ! जो आज की सब से बड़ी आवश्यकता है। आचार्य भगवान देव ने एक सपने को हकीकत में बदलकर समाज को नई दिशा दी। यह उनके जीवन की सब से बड़ी उपलब्धि है ! ★

तेरी महिमा तू ही जाने, होर ते वडियाईयां।
क्षुद्र जन्तु आखे सोई, मन विषय जो आइयां ॥

जैसा मैंने देखा

मोहन किशन कौल
रेलवे अधिकारी—कोटा
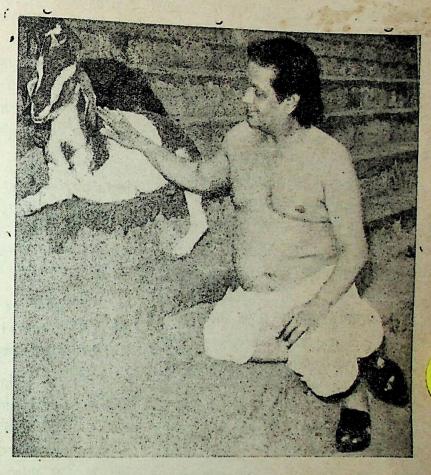
आचार्य भगवादेव जानवरों से प्यार करते हुए।

२१ दिसम्बर की सुबह जब मैं अपने दो-तीन साथियों के साथ लोदी ऐस्टेट आचार्य के घर पहुंचता हूं। तो देखता हूं कि ठिगना कद, चेहरे पर खुशी, आने वाले मेहमानों को देखते ही प्रसन्नता, मेरे व मेरे साथियों के साथ वही घुलमिल जाना उन्हें आलयिता से बैठाना और समस्या का पूछना ऐसा लगा जैसा यह एक समाजसेवी है जैसा लोग कहते हैं वैसा ही पाया।

मेरा दिल गदगद हो गया। सोचता हूं क्या मैं एक स्वप्न देख रहा हूं। या वास्तव में आचार्य जी के साथ बैठा हूं और वह मुझसे समस्या पूछ रहे हैं। मैं समस्या बताते हुए घबरा रहा हूं और वे समस्या को सुनकर हाथोंहाथ निदान कर रहे हैं।

जैसा कि मैंने पहले बताया कि २१ दिसम्बर को मैं उनके साथ उससे पहली बार दिल्ली में उन के निवास पर मिला। मैंने उन्हें बताया कि हम विद्यार्थी एक रैली लेकर आपको दिल्ली में श्रीमती गांधी व अन्य नेताओं को हमारी आवाज सुनाने आये हैं।

थोड़ी देर के लिए आचार्य जी असमंजस्य में पड़ गये मैंने पूछा क्या बात है? हमारी बात जची नहीं। तो वे बोले ऐसी बात नहीं है। कल मेरा एक परम मित्र मृत्यु को प्राप्त हो गया है और कल उसका दाहसंस्कार है। बड़ी मुश्किल बात थी कि एक ओर परम मित्र का दूसरी तरफ विद्यार्थियों को रैली को सम्बोधित करना। आचार्य जी ने बड़ी ही सूझबूझ से दोनों कार्यों को बड़ी

**मंझदार में जब हो नैया अपनी, और तूफानों ने घेरा हो।
बिजली भी चमकती हो सिर पर, और चारों ओर अंधेरा हो॥**

ईमानदारी से निपटाया कि हम मान गये कि वास्तव में इस समाज सेवी में इन्सानियत, मानवता हर जगह मौजूद है। हमें श्रीमती इन्दिरा गांधी से तुरन्त मिलवा दिया जबकि श्रीमती गांधी से मिलने के लिए कई बार २ दिन तक इन्तजार करना पड़ता है परन्तु हमारा अहो-भाग्य कि हमें आचार्य भगवान देव जी जैसा सांसद मिल गया जिसने हम विद्यार्थियों की पूर्ति की और हमें श्रीमती गांधो से मिलवा दिया। आचार्य जी ने श्रीमती गांधी के सामने हमारी भावना को इस तरह व्यक्त किया कि श्रीमती गांधी द्रवित हो गईं।

महान् आचार्य जी जिन्होंने विद्यार्थी वर्ग पर एक अहसान कर दिया। आज हर विद्यार्थी में आचार्य की एक महान् मूर्ति स्थापित है व उन्हें अपने नेता के रूप में मानता है।

आचार्य भगवान-एक प्रेरक व्यक्तित्व

योगाचार्य भगवानदेव जी की विरचित योगविद्या से सम्बन्धित अनेक पुस्तकें मुझे पढ़ने का अवसर मिला। स्वास्थ्य रक्षा के उपाय और नियमों का इन पुस्तकों में विषद वर्णन है। अनुकूल विचारधारा के कारण अत: मैं इस प्रबुद्ध लेखक से पुस्तकों के माध्यम से वहुत पहले ही जुड़ चुका था। परन्तु प्रत्यक्षरूप से आचार्य जी से मेरा प्रथम परिचय मुजफ्फरपुर में हुआ। अखिल भारतीय रेल हिन्दी सप्ताह समारोह के सिलसिले में मेरा वहां जाना हुआ था। रेल हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य की हैसियत से श्री आचार्य जी बैठक में भाग लेने मुजफ्फरपुर पधारे थे। अपने संस्थान में मुख्य राजभाषा अधिकारी के नाते मुझे बैठक में सम्मिलित होना था। माननीय रेल मंत्री श्री केदार पाण्डे ने इस बैठक की अध्यक्षता की थी। चुस्त परिधानधारी, हृष्ट-पुष्ट, प्रफुल्ल मन और आत्मविश्वासी व्यक्ति की ओर मेरा ध्यान सहज रूप में गया, बैठक की सीट समीप में ही थी। सहज परिचय से प्रारम्भ होकर थोड़े ही समय में लगा कि अपने ही किसी आत्मजन से बात हो रही है। हिन्दी का प्रशंसनीय कार्य करने के लिए मुझे इस अवसर पर स्वर्ण पदक मिला था। मैंने आचार्यजी को बड़ोदरा आने का आमन्त्रण दिया। सेवादल तथा आर्यसमाज के कार्य से उन्हें बड़ोदरा अक्सर जाना होता है, यह जानकर मुझे वास्तविकरूप से प्रसन्नता हुई। त्यागी, राष्ट्रप्रेमी, गौरव-शाली व्यक्तित्व वाले महापुरुष से पुनः मिलने की सम्भावना से अत्यधिक तुष्टि हुई।

बड़ोदरा आगमन के अवसर पर उन्होंने मेरा स्मरण किया। वे आर्य समाज की संस्था में ठहरे थे। प्रात: ११ बजे के आस-पास मैं पहुंचा तो सहज भाव से अखवार देख रहे थे नजर मिलते ही प्रसन्न मुद्रा से स्वागत किया कितनी आत्मीयता की भावना थी? मन गदगद हो गया।

मेरे निवेदन पर घर जाने का निमन्त्रण सहज भाव से उन्होने स्वीकार किया। सायंकाल लगभग ६ बजे वाहन भेजने के लिए कहकर मैं वापिस आ गया।

उनके ठहरने के लिए अलग से कमरे की व्यवस्था थी। लगभग एक सप्ताह से वे बाहर थे उनके वस्त्रादि धोबी से धुलवाने की मैंने व्यवस्था करनी चाही। कहने लगे आप भी कमाल करते हैं। यह काम तो मनुष्य को स्वयं कर लेना चाहिए। अन्यों पर आश्रित रहने की वृत्ति को जितना कम किया जा सके उतना अच्छा। आपकी मातृ भाषा हिन्दी नहीं है। परन्तु, स्वामी दयानन्द के विचारों के अनुयायी आचार्य जी को हिन्दी से अत्यधिक अनुराग है। आपने हिन्दी में अनेक ग्रन्थों की रचना की है, यह जानकर मुझे भी प्रेरणा मिली मेरी लेखनी को बल मिला। अपने ही विभाग के उपयोग की एक पुस्तक मैंने हिन्दी में लिख डाली। इसका श्रेय मैं प्रेरणास्रोत आचार्य जी को देना चाहूंगा।

सरलतापुंज, मनमस्तिष्क से स्पष्ट, हिन्दी प्रेमी, प्रभावशाली वक्ता, राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत आचार्य जी की दीर्घायु के लिए मैं हृदय से कामना करता हूं।

★★

वतन हमेशा रहे शाद, काम और आवाद।
हमारा क्या है, अगर हम रहें—रहें न रहें।

सर्व सिन्धी समाज के प्राण

आचार्य भगवान देव

कवि फतहचन्द शर्मा
रिटायर्ड आचार्य सिंधी स्कूल कलकत्ता
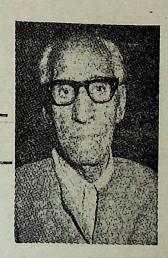
सर्व-गुण श्रेष्ठ प्रिय मित्र, श्री मान अभयसिंह मुख्य सम्पादक हिन्दी दैनिक दलित पुकार अजमेर हार्दिक नमस्कार स्वीकार किया जायेगा। आप हमारे सिंधी जाति के महान् ग्यानमान श्रीमान आचार्य भगवान देव एम. पी. साहब का जन्म दिन को मनाने के उपलक्ष में एक किताब छापने जा रहे हैं जानकर बहुत ही खुशी हुई इसी महान् पुरुष की कोशिशों से ही विश्व सिंधी सम्मेलन के बुलाने के सिवाय, और अपने सिंधी समाज और सिंधी संस्कृति को हर प्रकार से कायम रखना, एक सच्चे सिपाही की तरह अपने हाथ दूसरों को भी उत्साहित बना कर आगे कदम बढ़ाना, इस सजन के जीवन का मुख्य हिथेय समझा जाता है। उसके उत्साहिक विकास के ऐतिहासिक लेख में अक्सर अहमदाबाद के श्री गंगाराम सम्राटजी के माहवार अंकों में बड़ी चाह से पढ़ता हूं और उसके अनमोल विचार व सेवाओं का जिकर श्री बलदेव टी. गजरा के साप्ताहिक भारतवासी एक सिन्धी पत्रिका में भी अक्सर पढ़ता रहता हूं। ऐसे महान् पुरुष की प्रशंसा करना और लिखना गोया सूरज को दीपक दिखाना है। ऐसे लोकप्रिय देश सेवक पुरुष कभी भी छुपे नहीं रहते। मैं अठहत्तर (७८) वर्ष का ब्रहमन इस साहब के पचासवे जन्म दिन पर इसे हार्दिक आशीर्वाद करता हूं और सर्वेशक्तिमान पिता परमेश्वर उसे अच्छी सेहत व बड़ी आयु दे, कियूंकि ऐसे सच्चे वफादार समाज सेवक कप्तान ही समाज के डगमगाते हुए डगर को गतिशील बना सकते हैं। धन्य हैं वे माता पिता जिन्होंने इस वीर बालक को जन्म दिया और धन्य है वह जाति जिसमें इस महान् पुरुष ने जन्म लिया है। जय सिन्ध-जीवे सिन्ध।

□□

नाविक के चप्पू टूटे हों, सागर का दूर किनारा हो।
ऐसे में हिम्मत बंधी रहे, और तेरा एक सहारा हो॥

पहली नज़र में प्यार

—श्री वासुदेव झा

सह-सम्पादक नवभारत टाइम्स नई दिल्ली,

'पहली नजर में प्यार' की कहावत बहुत पहले सुनी थी। प्रायः सभी भाषाओं में इस तरह की अभिव्यंजना मिलेगी। मेरे दिमाग में बात जरा देर से ही धंसती है और अब तक मैं इसे शायरों और कवियों की दिमागी उड़ान ही मानता था।

बात १९७९ की है। अपने दफ्तर के जिस कमरे में बैठता हूं, उसमें तब भाई डा० वेद प्रताप वैदिक भी बैठा करते थे। अखबार में आचार्य भगवान देव का नाम कई बार देखा था। योगी हैं यह भी जानता था। वैदिक जी बराबर ही आचार्य जी की चर्चा करते थे। एक दिन एक व्यक्ति वैदिक जी से मिलने आया। दोनों में काफी देर तक बात होती रही। मैंने अपने काम में व्यस्त होता हुआ भी कान उधर ही साध रखा था। वह व्यक्ति फिर चला गया।

भाव अभिभूत अपनी जिज्ञासा वैदिक जी के सामने रखी। अरे आप इन्हें नहीं जानते ? यही आचार्य भगवान देव हैं। मंत्रविद्ध-सा मैं सकते में आ गया।

मैंने वैदिक जी से कहा – यह शख्स वास्तव में क्या है, कैसा है यह तो नहीं जानता, पर इनकी उन्मुक्तता, इनकी वाचा-शक्ति का मैं कायल हूं। और भी ढेर सारी बातें अनायास मैं कह गया।

आचार्य जी फिर आए, तो वैदिक जी ने विधिवत् परिचय कराया। और हर मिलन के साथ मैं आचार्य जी की ओर खिंचता चला गया।

चुनाव के सिलसिले में अजमेर जाने से पहले वह मिले थे। चुनाव जीतने के बाद मिठाई लेकर आए और हम सभी साथियों के दिलों पर अपना कब्जा पक्का करके चले गए।

राजनैतिक जीवन की अपनी बाध्यताएं, विवशतायें होती हैं। आचार्य जी का हमारे दफ्तर में आना इधर प्र[illegible] नहीं हुआ। दो-तीन साल कुछ थोड़ा समय नहीं हो[illegible] व्यक्तिगत सम्पर्क प्रायः टूट गया। पर लोकसभा की [illegible] अखबारों से पढ़ते हुए उनका नाम बराबर देखने को मि[illegible] रहा और वह नजर से दूर होते हुए भी दिल के पास [illegible] ही रहे।

उस दिन विश्व हिन्दी सम्मेलन में अचानक [illegible] मुलाकात हो गई। मुझे हैरत हुई कि यह आदमी [illegible] व्यवस्त होते हुए भी अपनों से टूटा नहीं है।

फिर जो बात हुई उसने तो मुझे निर्वाक ही कर दि[illegible] आचार्य जी ने पूछा—

"आज आप खाली हाथ कैसे ? यानि आपका [illegible] कहां है ?"

"प्रदर्शनी देखने आया था। सोचा बैग कहां [illegible] फिरूंगा।"

"यह कैसे हो सकता है। क्या यह बैग (जो उनके [illegible]) में था) आपको भेंट कर सकता हूं ?"

मैं तो हक्का-बक्का रह गया। आचार्य का दिया [illegible] बैग अब भी मेरे पास है।

इस फरागदिली पर कौन नहीं मर मिटेगा। आ[illegible] जी राजनीति में हैं। सम्भव है उस क्षेत्र में उनके [illegible] भी हों। पर, मेरे ख्याल में व्यक्तिगत सम्बन्धों के [illegible] वह अजातशत्रु हैं। उनकी कई किताबें देखने का [illegible] मिला है। स्वास्थ्य और सेक्स पर भी। जिस किसी [illegible] को उठाया है, उसे खुले दि[illegible] से उठाया है और जो [illegible] कहा है साफ-साफ कहा है।

यह तो आपसे ही मालूम हुआ कि वह अब [illegible] साल के हो रहे हैं। उन्हें पचास साल की भरी-पूरी [illegible] मिले, और इसी कामना के साथ।

कुछ कर के सो, कुछ लिख पढ़ के सो।
जिस जगह से जागा सवेरे, उस जगह से बढ़ के सो ॥

संसद सदस्य आचार्य भगवानदेव

एक कर्मठ और तेजस्वी व्यक्तित्व

—श्री पं० विश्वम्भर प्रसाद शर्मा
महामन्त्री, भारत गोसेवक समाज दिल्ली।

आचार्य भगवान देव जी सांसद के साथ हमारा परिचय २० वर्ष पहले सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से हुआ। वह एक अच्छी स्थिति के सिंधी परिवार में जन्मे लेकिन बाल्यावस्था में ही वह एक उदीयमान समाजसेवक सिद्ध हुए। छोटी अवस्था में गृह त्याग कर कुछ बनने की भावना ने निकल पड़े। महर्षि दयानन्द की निर्वाणस्थली अजमेर से उनका सम्बन्ध रहा और महर्षि दयानन्द की जीवनी तथा उनके अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश से आर्य समाज के साथ सम्पर्क बढ़ा और एक आर्यवीर के रूप में वह धीरे-धीरे आर्यसमाज के प्रचार कार्य में योग देने लगे। आचार्यजी का आरम्भिक मुख्य कार्यक्षेत्र गुजरात रहा। वे वर्षों तक महर्षि की जन्मभूमि टंकारा में कार्यरत रहे और आर्यसमाज का प्रचार करते रहे। आप कई वर्षों तक आर्य समाज टंकारा के सक्रिय प्रधान रहे और उसके प्रतिनिधि के रूप में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा में गुजरात का प्रतिनिधित्व करते रहे। आर्यसमाज के प्रचार के साथ गोरक्षा प्रचार में भी आपने योगदान किया। भारत गोसेवक समाज ने जब गुजरात में गोहत्याबन्दी का १९५५ में आंदोलन किया तो आचार्य भगवानदेवजी ने उत्साह के साथ भाग लिया। सरकार का गोहत्या बन्दी की ओर उनका ध्यान आकृष्ट किया।

आचार्यजी, कई वर्षों तक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री रहे। इन्द्रप्रस्थ गुरुकुल के विवाद को सुलझाने में भी आपने सक्रिय भाग लिया। आर्यसमाज और कांग्रेस दोनों ही आपके कार्यक्षेत्र रहे हैं। आर्यसमाज के हिन्दी रक्षा आन्दोलन में आपने बहुत काम किया—जेल गए। आर्यसमाज की स्थापना शताब्दी के अवसर पर आचार्यजी ने महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की, महर्षि स्वामी दयानन्द की जीवनी लिखी जो सुप्रसिद्ध प्रकाशन प्रतिष्ठान राजपाल एण्ड संस ने लगभग १ लाख की संख्या में प्रकाशित की।

श्री भगवानदेव जी योगाचार्य हैं—आपने योगासनों के सम्बन्ध में दक्षता प्राप्त की है। दिल्ली में कई वर्ष तक योगासन प्रशिक्षण केन्द्र चलाते रहे हैं। योगासनों के केन्द्र भी अनेक स्थानों पर सुनियोजित ढंग से चलाये। महात्मा

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है॥

आनंद स्वामीजी के सान्निध्य में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से भी हरिद्वार में एक विशाल कैम्प का संचालन आपने किया। आपने योगासनों के सम्बन्ध में कई पुस्तकें प्रकाशित की और "योग मन्दिर" नामक एक सुन्दर मासिक पत्र भी प्रकाशित किया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में मारीशस में आयोजित "आर्य महासम्मेलन" में आपने अपने योगाभ्यास और तत्सम्बन्धी प्रवचनों से आर्यबन्धुओं को मुग्ध करा दिया था।

आचार्य भगवानदेव १९८० के मध्यावधि चुनाव में अजमेर निर्वाचन क्षेत्र से भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी श्री श्रीकरणजी शारदा को पराजित करके लोकसभा के सदस्य निर्वाचित हुए। आप कांग्रेस के एक निष्ठावान सदस्य हैं और प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के बीस सूत्री कार्यक्रम को क्रियान्वयन करने में पूर्ण सहयोग दे रहे हैं। श्रीमती गांधी के कनिष्ठ पुत्र श्री संजय गाँधी के निधन पर आपने "संजय दर्शन" शीर्षक एक सुन्दर सचित्र स्मृति ग्रन्थ निकालकर अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की थी। आप लोकसभा की कई कमेटियों के सदस्य हैं और उनके सिलसिले में अनेक देशों का भ्रमण कर चुके हैं। आपने राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार के लिए सरकार को अनेक मूल्यवान सुझाव दिए हैं, आपके प्रयास से मध्य प्रदेश में सिंधी साहित्य अकादमी की स्थापना हुई। आप मूलतः सिंध से सम्बन्धित हैं। सिंधियों के संगठन और सिंधी संस्कृति के परिष्कार के लिए आपने काफी कार्य किया है। आपने दिल्ली में १८-१९ अक्तूबर ८३ को "विश्व सिंधी सम्मेलन" का आयोजन किया जिसका उद्घाटन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने किया। इसमें विश्व भर से हजारों सिंधी पधारे थे। सम्मेलन दो दिन चला। सम्मेलन का समापन अधिवेशन राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। आचार्य भगवानदेव ने सिंधी समाज को एक सूत्र में संगठित करके भारत की राष्ट्रीय विचारधारा का एक महत्त्वपूर्ण घटक बनाने का प्रशंसनीय कार्य किया। सिन्धी भाइयों ने देश के स्वधीनता आंदोलन में भी सक्रिय योगदान किया है। उक्त सम्मेलन के आयोजन से सिंधी बन्धु राष्ट्रसेवा की ओर और अधिक प्रवृत्त हुए हैं। आचार्य भगवानदेव जी ने प्रधानमन्त्री श्रीमती गांधी से अनुरोध किया है कि दिल्ली में "सिंधी भवन" की स्थापना की जाय जिसके माध्यम से सिंधी समाज भारत के चहुंमुखी अभ्युत्थान में और अधिक सहभागी बन सके।

आचार्य भगवान देव जी धार्मिक और सामाजिक प्रवृत्तियों में सदा सक्रिय रुचि लेते रहे हैं। गोरक्षा और गोसंवर्धन का कार्य करने वाली सबसे वरिष्ठ संस्था भारत गोसेवक समाज के काम में अनेक वर्षों तक मन्त्री रहे और इस समय उसके उपाध्यक्ष हैं। आचार्य जी देश के एक कर्मठ जनसेवक हैं जिनका जीवन राष्ट्र सेवा के लिए समर्पित है। आपकी प्रेरणा से हजारों कार्यकर्त्ता समाज सेवा के कार्य में प्रवृत्त हुए हैं। यह हर्ष की बात है कि ५०वें वर्ष में पदार्पण पर आपकी स्वर्णजयन्ती मनाई जा रही है और इस शुभ अवसर पर उन्हें एक अभिनन्दन ग्रंथ भेंट किया जा रहा है। हम इस मंगल प्रसंग पर प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि आचार्य भगवानदेवजी शतायु हों और राष्ट्र को उनकी मूल्यवान सेवाओं का अधिकाधिक लाभ मिलता रहे।

पसीना मौत का माथे पर आया आइना लाओ।
हम अपनी जिन्दगी की आखिरी तस्वीर देखेंगे॥

नियम :—
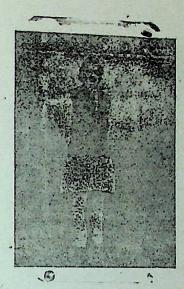
- सौच
- सन्तोष
- तप
- स्वाध्याय
- ईश्वर प्रणिधान

Like tons of grass destroyed by a spark, the accumulated actions of hast lives are destroyed by the spark of knowledge.

जैसे एक चिनगारी घास के गट्ठर खाक कर देती है, वैसे ही ज्ञान-चिनगारी से अनेक जन्मों के कर्म जल जाते हैं

मिला जन्म उत्तम तुझे करले कुछ उपकार।
समय न यह फिर मिल सके, जीता दाव न हार ॥

यम :–
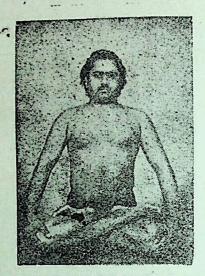
* अहिंसा
* सत्य
* अस्तेय
* ब्रह्मचर्य
* अपरिग्रह
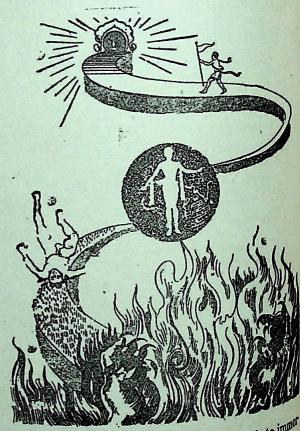
The path of knowledge on from death to immortality. The path of ignorance leads one from death to death.

ज्ञान का पथ मनुष्य को मृत्यु से अमरता की ओर ले जाता है, परन्तु अज्ञानता मृत्यु से आगे मृत्यु की ओर धकेल रही है।

मौत से क्यों इतनी दहशत––जान क्यों इतनी अजीज।
मौत आने के लिए और जान जाने के लिए॥

आचार्य जी हमारे हैं
इन्दिरा के सिपाही
—राष्ट्र कवि सनम गोरखपुरी

आदरणीय

आचार्य भगवानदेव जी,
आप से जन्म दिवस पर हम सब, श्रद्धा
भक्ति और प्रेम शब्द की माला भेंट चढ़ाते हैं।
आप तपस्वी बनकर निकले,
सब तीर्थों का भ्रमण किया,
इसलिये अजमेर के मालिक ने
दिल्ली का तख्ता आप को दिया।

आचार्य जी हमारे हैं, इन्दिरा के सिपाही
हमदर्द हैं दुखियों के दुखियों के हैं भाई।

सन्तों की थे सोहबत में, फकीरों में मलंग में,
ये तीर्थ में निकले थे, मगर थे जंग में,
इनके दिलो दिमाग में स्वामी हैं दयानन्द
ये क्रांतिकारियों में खेले अपने रंग में,
गंगा की तरह धोते हैं दुनिया की बुराई,
आचार्य जी हमारे हैं, इन्द्रा के सिपाही

है इनके धर्म ग्रन्थ में सेवा की भावना
दुनियां के लोग चैन से किये ये हैं कामना
लिखते हैं ओढ़ते हैं बिछाते हैं प्यार की
हमसे जो पूछिये तो ये यारों के यार ये
दुख झेलते हैं तन्हा मेरे यार दुहाई
हम दर्द हैं दुखियों के हैं भाई—

आसन मिले मन चाहा "सनम" की ये दुआ है
अपनों की दुवा है यही गैरों की दुवा है
दुनियां में जो इज्जत मिली है और मिलेगी
महकें आप भायनात् में ये ही लिखा है,
होती रहेगी आप के हाथों से भलाई,
हम दर्द हैं दुखियों के दुखियों के हैं भाई

किये कर्म का फल मिले, धर धर अपना रूप।
कर्म फांस नहिं कट सके, रंक होय या भूप॥

आचार्य भगवान्देवो विराजते

आचार्य पं० रामानन्द शास्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा पटना-४

अयं हि भगवान् देवः
सर्व भाषा रिदांवरः,
योगी च कर्म योगी च,
आचार्यः कुशलोमहान् ॥१॥

आर्य शील गुणो वेतः,
वाग्मी योद्धा तथैव च ।
धेनो राष्ट्रस्य रक्षार्यं
सर्वदा कार्यतत्परः ॥ २ ॥

दयानन्दस्य ब्रह्मर्षेः
वाणीं ज्ञान मयीं सदा,
प्रसारयति लोकेषु
वचसा कर्मणा च वा ॥३॥

संसदि रोचते नित्यम्,
सभा-मध्ये विराजेत ।
सेवया मातृभूमेश्च
मातृभाषा सुतो वरः ॥ ४ ॥

प्रवले भौतिके वादे,
आसुरि वाद नास्तिके,
एकाकी वैदिकं दीपम्,
हस्ते नीत्य प्रधाबति ॥ ५ ॥

प्रकाशः सर्वशास्त्राणाम्,
ज्ञान विज्ञान शीलवान् ।
गौरव आर्य जातेश्च,
जीबतात् शरदः शतम् ॥ ६ ॥

**तुलसी जग में यों रहो, ज्यों रसना मुख मांय ।
खाती घी लवण नित, फिर भी चिकनी नांय ॥**

आचार्य भगवानदेव जी
का
अभिनन्दन

पंडित जोरावरसिंह जी आर्योपदेशक
वरसाना (मथुरा)

देशभक्त जो पखर और जीवन है सच्चे आर्य का ।
हार्दिक अभिनन्दन है उस भगवानदेव आचार्य का ॥

आर्यजाति में जिसने जीवन ज्योति जगाई,
ओम पताका जगह जगह जिसने फहराई,
नगर-नगर में वेदों की दुंदुभी बजाई,
सोई हुई आर्य जनता झकझोर जगाई,
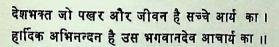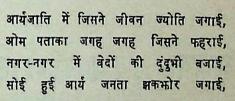
देशभक्त जो प्रखर और जीवन है सच्चे आर्य का ।
हार्दिक अभिनन्दन है उस भगवानदेव आचार्य का ॥

दयानन्द गांधी दोनों का अनुयायी बन,
किया नैष्ठिक ब्रह्मचर्य व्रत को भी धारण,
आसन प्राणायाम योग का करके पालन,
संयम सदाचार से उच्च उच्च बनाया जीवन,

देश भक्त जो प्रखर और जीवन है सच्चे आर्य का ।
हार्दिक अभिनन्दन है उस भगवानदेव आचार्य का ॥

समाज सेवी सच्चा उच्च क्रियात्मक का जीवन,
जन सेवा में किया सकल निज जीवन अर्पण,
जात पांत के और प्रान्त के तोड़े बन्धन,
निष्ठावान तपस्वी त्यागी शुद्ध आचरण,

हरि जाना हरिद्वार में, हरि है हृदय माय ।
लागी टाटी कपट की, तासे दीसत नाय ॥

देशभक्त जो प्रखर और जीवन है सच्चे आर्य का ।
हार्दिक अभिनन्दन है उस भगवानदेव आचार्य का ।।

अनेक भाषाओं का भी जो जानकार है,
प्रभावशाली वक्ता है साहित्यकार है,
आर्य जाति का नेता है औ पत्रकार है,
इसलिये जनता से पाया सदा प्यार है,

देश भक्त जो प्रखर और जीवन है सच्चे आर्य का ।
हार्दिक अभिनन्दन है उस भगवानदेव आचार्य का ।।

सिन्धी समाज में भी स्वर फूंका सुधार का,
दयानन्द औ गांधी के ऊंचे विचार का,
दयानन्द पढ़ाया नवयुवकों को सदाचार का,
सिन्धी जग में हुआ असर जिसकी प्रचार का,

देशभक्त जो प्रखर और जीवन है सच्चे आर्य का ।
हार्दिक अभिनन्दन है उस भगवानदेव आचार्य का ।।

युवक हृदय सम्राट

स्नातिका प्रभावशाली देवी "वेद भारती"
आर्योपदेशिका, बरसाना मथुरा

जबकि सैकड़ों साल ये धरती करती है फरियाद ।
होता इक भगवानदेव तब पैदा उसके बाद ।।

देख रही थी सिन्धी जनता कब से जिसकी वाट ।
मिला उसे भगवानदेव दृढ़ युवक हृदय सम्राट ।।

कुशल और निर्भीक सांसद सेवा दल के प्राण ।
लोक सभा में गूंजते हैं जिसके व्याख्यान ।।

आर्य जाति का सच्चा नेता सच्चरित्र विद्वान् ।
आर्यसभा देते रहे जिसको उच्च स्थान ।।

बीती ताहि बिसार दे, आगे की सुध लेय ।
जो बन आवे सहज में ताही में चित देय ।।

आचार्य भगवानदेव

—अनूप कौशल

जन्मदिवस के सुअवसर पर हार्दिक शुभ कामनाओं सहित
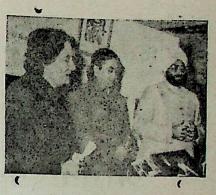
गति को अपने जीवन की संगिनी मान कर चलने वालों के लिये प्रेरणा गीत :—

"अपनी गति से आदित्य की तीव्र किरणों की
ताप-शक्ति का शमन करके दिन प्रति दिन
समस्त चराचर लोक को चलाता हुआ
सदागति पवन सर्वत्र मंगल मंगल फैलात है ।

घोर अंधकार के साथ बिना संधि किये
निरंतर युद्ध करते हुए, दुखियों को संभालते हुए, दिन रात
सुन्दर प्रकाश देते हुए खड़े रहते हैं—जगत के
सेवकोंत्तंसं, सूर्य चन्द्र आदि ।"

भगवानदेव महान्

—विद्या प्रसाद मिश्र, नई दिल्ली

भयंकर विरोध से निपटते रहे
पर कभी न उनसे डरते देखा

गरिमा योग की सगर्व बढ़ाते
गम खाकर भी उभरते देखा ।

वास्तविक प्रेम देश से करते
स्वार्थ में नियम से न टलते देखा ।

नए-नए नित्य कार्य सम्भालते
किसी घड़ी घमण्ड न करते देखा ।

देव स्थान द्रोह के केन्द्र बनते
तो संसद में खूब गरजते देखा ।

वक्त जब भी कहीं सेवा का पाते
तो सफलता के लिए मचलते देखा ।

जीना एक कला है सुन्दर
यह सीख लिया आनन्द स्वामी से ।

शक्ति सम्पन्न स्वार्थी कभी
कब जीते पाते सत्यपथगामी से ।

तारीफ नहीं यह हकीकत है
रंग रंग में समाया आर्य समाज

युग नया ला सकता क्योंकि
केवल यही संगठन आज ।

हों शतायु सुखी और स्वस्थ
श्री आचार्य भगवानदेव ।

फैले वसुधा में वैदिक विद्या
मानो प्रभो अर्चन अतएव ।।

मैले मेरे वस्त्र हैं, मैले मेरे केश ।
फिरूँ पाप से मं भरा, लोग कहें दरवेश ।।

लोक प्रिय सांसद आचार्य भगवानदेव

के

५० वें शुभ जन्म दिवस के अवसर पर

अभिनन्दन-पत्र

—कवि सुधीर सुधि
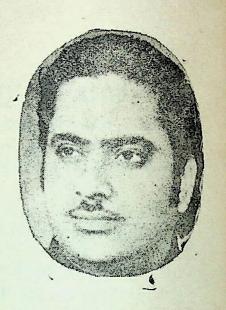
इंसानियत की जागती मिसाल,
आप दीन दुखियों के रक्षक,
परोपकार ही ध्येय आपका,
हर पल करते श्रम अनथक.

विश्व सिन्धी सम्मेलन को,
आपने ही मंच दिया.
चाहे ईर्ष्यालुओं ने भी,
विरुद्ध आपके प्रपंच किया.

गहराई पाई समन्दर जैसी,
महुए जैसा मन आँगन पाया,
पांव धरे आपने जहां भी,
उधर मुसकाता चमन आया,

राजनीति में पारंगत,
समस्याओं का करते स्वागत,
विरोधियों के भी होते,
आपके सामने हौंसले पस्त,

चेहरे से तेज टपकता,
बातों से मधु बरसता.
सुन ले जो वाणी आपकी,
वो सुनने को फिर तरसता.

हैं तो आप लोकसभा के,
बहुर्चचित सदस्य.
पर मिलन सरिता से,
बन चुके मन के सदस्य.

आशा का दीप जलाकर,
करते उजाला चारों ओर.
दोषित, पीड़ित लोगों को,
अन्धकार न दीखती भोर,

५०वें शुभ जन्म दिवस की,
वर्षगांठ पर आपका अभिनंदन,
प्रभु आपको करे शतायु,
यही कहे 'सुधि' का मन.

यह शरीर नहिं आपनो, समझ परी अब मोय।
इसका मोह न कीजिये, कष्ट व्यापे तोय ॥

मेरे भगवानदेव

कविराज पं० इन्द्रसेन 'विश्वप्रेमी"
के० एच० २४५ न्यू कविनगर
गाजियाबाद (यू० पी०)
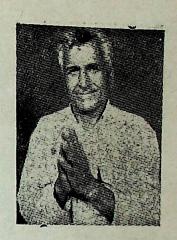
भगवान को आज्ञा निभाते हैं मेरे भगवान देव।
गुण सदा ईश्वर के गाते हैं, मेरे भगवान देव ॥१॥

वेद के अनुसार चलते और चलाते भगवान देव।
पीछे ना हटते-हटाते हैं, मेरे भगवान देव ॥२॥

उपकार करते और कराते हैं, मेरे भगवानदेव।
दुःख दर्द दूसरों का बटाते हैं, मेरे भगवानदेव ॥३॥

खुद हंसते रहते और हंसाते हैं मेरे भगवानदेव।
गिरतों को ऊंचा उठाते हैं, मेरे भगवानदेव ॥४॥

बिछडों को फिर से मिलाते हैं, मेरे भगवानदेव।
चल चित्र ऋषिवर का बनाते हैं, मेरे भगवानदेव ॥५॥

सच्ची मित्रता करते-कराते हैं मेरे भगवानदेव।
प्रीतिरीती को निभाते हैं, मेरे भगवानदेव ॥६॥

गऊ की भक्ति देश सेवा को, निभाते हैं, मेरे भगवानदेव।
वचन पूरा कर दिखाते हैं मेरे भगवानदेव ॥७॥

हर कदम अपना आगे बढ़ाते हैं, मेरे भगवानदेव।
"विश्व प्रेमी" विश्व में यश कीर्ति पाते हैं मेरे भगवानदेव ॥

मंगलकामना

स्वामी ब्रह्मानन्द आर्य चाण्दोर (नर्बदातट)

दोहा—विश्व वन्द्य गुरुदेव जो दयानन्द मतिधीर।
उनके ऐसे सद्गुणी बने तपस्वी वीर ॥१॥

श्री युत भगवानदेव जी धर्म निष्ठ आचार्य।
यश बल आयु पूर्ण हो, बने सभी गुण आर्य ॥२॥

अद्भुत विद्या बुद्धि हो, मिले शांति सुख श्रेय।
ईश्वर भक्ति अनन्य हो, योग यज्ञ यह धेय ॥३॥

शतं जीवि आरोग्य मय, होवे बल विचार।
राष्ट्र हितैषी कार्य हो, करें शांति विस्तार ॥४॥

परोपकार मय प्रेम रत, करें विश्व कल्याण।
आखिल विश्व में आर्यता फैली, हो यही ध्यान ॥५॥

सभी सुखी शांति मय, हो निरोग आरोग्य।
सभी कलह से रहित हो सभी शुभ मंगल योग्य ॥६॥

**एक भरोसा आस इक, हरि भजे दिन रात।
काम क्रोध अरु लोभ मद, पास न उसके आत ॥**

शेरे सिन्ध

प्रि० फतहचन्द शर्मा
कलकत्ता

नाज़ है इस "शेरे-सिन्ध" आचार्य भगवान देव पर।
तैयार है मर मिटने को, शैदाई सिन्धियत आन पर॥

रोह खिज़मत कौम की, सुनते गिला और गालियां।
फर्ज़ का पावन्द मगर, लाते उन्हें नही ध्यान पर॥

कहते हैं आवाज ऊंची, अै मेरे हमदम बशर।
कर वफा होकर निडर, इंसान बन इंसान पर॥

गम नहीं करते अगर, गिर भी गए हारे किन्हें।
सम्भल लेते हैं कि हैं, खुद में यकीं अभिमान पर॥

क्या सूर्य का सामना कर सकता छोटा चिराग?
डालता है रोशनी जो, महल और बीरान पर॥

बढ़ता है आगे ज़माना, साथ पड़ोसी तुम बढ़ो।
राह अपना ले यही निज, बुज़ुर्गों के ज्ञान पर॥

एक भावांजलि

डा० मोतीलाल जोतवाणी

प्रश्नाकुल अर्जुन पूछता रहा, पूछता रहा,
और कृष्ण ने उसे अपना बिराट् रूप दिखा दिया।
सिन्धी जन भी सोचता रहा, सोचता रहा—
यह सब कैसे होगा ?
और भगवानदेव ने विश्व-सिन्धी सम्मेलन कर दिखाया।
उसके पश्चात् उसी स्थल पर
विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन भी हुआ
और अन्य स्थलों पर और कई सम्मेलन हुए।
परंतु क्या उन्हें सिधी सम्मेलन की-सी सफलता मिली ?
अर्जुन जान गया था
कि कृष्ण व्यक्ति नहीं, अपितु देवयोग-यंत्र है।
पर सिन्धी-जन कब जानेगा
कि यह व्यक्ति, व्यक्ति तो है
(उस में व्यक्ति-सुलभ सबलताए और निर्भलताएं दोनों हैं)
पर यह अपने में ही एक बड़ी संस्था भी है।

मूरख के सुन्दर वचन, हो रहिये चुपचाप।
उसकी समता जो करे, नोच कहावे आप॥

कोश :—

* अन्नमय-कोश
* प्राणमय-कोश
* मनोमय-कोश
* विज्ञनमय-कोश
* आनन्दमय-कोश

By introverting the years within, The inner vision is illumined.

बाहर की आंख बंद होती है, तभी भीतर की आंख खुलती है

मेरा मुझ में कुछ नहीं, जो कुछ है सब तोर।
तेरा तुझ को सौंपते, क्या लागे है मोर॥

ध्यान के स्थान :—

- नासिकाग्र भाग
- नाभि
- भृकुटि
- हृदयकमल
- ब्रह्मरन्ध्र

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए!

BR bharat ratna international magazine for the elite

International Publishers Ltd.

t.s.t. p.o. box 96410, kowloon, hong kong
201-205 kowloon centre, 29-43 ashley road,
kowloon, hong kong. tel : 3-692117

Dear Shri Bhagwandev

Please accept my sincerest congratulations and felicitations on the occasion of a very successful World Sindhi Conference.

You have done exceedingly well and this first gathering will not only set the pace for many more conferences to follow, but augurs well for further unity amongst our people at home and abroad.

The credit, needless to say, goes entirely to you and your great organisational abilities. You have made each one of us in the community truly proud of such a singular effort.

I am sure you will have received a copy of the Bharat Ratna, but I am once again enclosing herewith yet another, wherein we have featured the World Sindhi Conference as our cover story. I do hope you are pleased with the write up.

I will be happy to be of any assistance to you in featuring any further news on the Sindhi Samaj if you will kindly provide the same. In fact, why don't you devote one page specially to the progress that you are making, as you are aware the Bharat Ratna reaches out to our community all over the world, in 80 countries, they will be particularly interested in reading about the Sindhi Samaj.

Once again, my Brother Hari joins me in sending you our heartiest congratulations on having organised such a successful conference, a truly outstanding and memorable event, which we were sorry we missed attending.

With best regards,

Yours sincerely,
Bob N. Harilela

सब जीवों पर कर दया, समझो आत्म समान।
मन-वानी अरु कर्म से, दुःख न दे मतिमान्॥
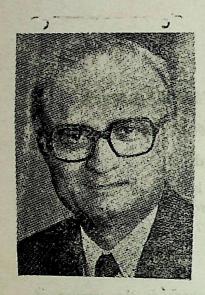
HMT LIMITED
36, Cunningham Road, Bangalore-560 052 India
Phone : 77450 29235 Telex : 0845-311 Grams : Hindmachin
TV Mansukhani
Chairman & Managing Director

February 8, 1984

MEMOIR

I have had the privilege of knowing Acharya Bhagwandevji for so many years. His versatility as a profound writer, eloquent speaker, linguist, ascetic and a yogacharya are indeed unique. As a leader of exceptional qualities, he has championed a number of laudable causes. He is responsible for bringing different segments of the society into the mairstream of the national life in the larger national interests all the time.

What puts Acharyaji as a class apart in today's public life is his rare quality of complete humility and the spirit of placing service before self. His is a long, inspiring record of dedicated and selfless service in the country as well as abroad. Whether associated with individual institutions or the government he has invariably opted for positions which would enable him to render his best of services. He was never attracted to the charms of pelf or power.

It is in the fitness of things, therefore, that an Abhinandan Granth is being presented to Acharyaji as part of the Golden Jubilee Celebrations coinciding with his 50th year. I joint his innumerable admirers in wishing Acharyaji a long, healthy and rewarding life in the service of humanity.

(T.V. Mansukhani)

मैं जाना दुःख मुझी को, दुःख भरा ही जग्ग ।
ऊँचे चढ़के मैं देखिया, घर घर एही अग्ग ॥
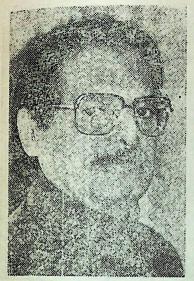
Lachmandas
Chairman
All India Linguistic Minorities
6-3-1089/A-3-1
Gulmohar Avenue,
Somajiguda,
Hyderabad-500 482
Phone : 224311
4th Jan. '84

My dear Respected Leader,

Hon'ble Madam Smt. Indira Gandhi

On behalf of the All India Linguistic Minorities of which I happen to be the existing Chairman, I am taking the liberty of writing to you commending the merits and suitability of Sri Bhagwandev Acharya for inclusion in the Union Cabinet.

This is the opportune time to elevate him, as the news getting broadcast all over the World wherever Sindhi Community is spread over, would get wide publicity of the factum of your serious concern for the minorities in India, irrespective of colour, caste, creed and regional considerations and would win over enormous Sindhi electorates to Congress-I, still further brightening the chances of landslide victory for the party in the General Elections, just 14 months ahead.

And believe me, Honourable Madam, by assigning to him a ministerial and administrative role, you will be strengthening his hands immensely to muster even such Sindhi voters for Congress-I, which presently may be aligned to opposite camp. More-over, such a step would go a long way to counteract the public image of such Sindhi political figures who are actively associated with the opposition camp *i.e.*, of Shri L.K. Advani and Shri Hashu Advani former of whom during Janata regime held the portfolio of Information and Broadcasting in the Union Cabinet and the latter was Cabinet rank Minister in the Government of Maharashtra during the same period.

Kindly give these matters your serious thought and lift Sri Acharyajee's position and status by bestowing on him ministerial rank to enable him to win over Sindhi electorate spread over the country to Congress-I fold well ahead of the General Elections. This is the most appropriate time to induct him into Cabinet to catch votes for the party.

With respectful regards,

Yours sincerely,
Sd/=
Chairman

घटती बढ़ती सम्पदा, गति अरहट को जोय।
रीती घटिका भरति हैं, भरी त्यों रीती होय॥

Phones : Office : 27 46 33 / 27 07 72
Res. : 812 3521 / 822 4516

S. C. Israni

Ex. M.L.A.
.PRESIDENT
ALL INDIA SINDHI CONRESS (I) WORKERS' COUNCIL
12, MONT BLANC, 67-A, NEPEANSEA ROAD,
BOMBY-400 006.

2nd January, 1984.
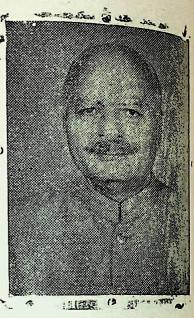
I am very happy to learn from your circular letter that your organisation is going to celebrate the 50th Birthday of Acharaya Bhagwandev, a member of Lok Sabha in recognition of the valuable services to Arya Samaj rendered by him for 34 years.

I have had the good luck of knowing Acharaya Bhagwandev after his entry into the Lok Sabha since 1980.

He is an enthusiastic and energetic youngman with burning desire for the service of our Motherland.

He is very courageous M.P. who does not tolerate wrong attacks by the opposition, on the government and our worthy Prime Minister Smt. Indira Gandhi and rises to give a fitting reply to them.

He is an intelectual who has very good command on Hindi and other languages due to which his speeches in the Lok Sabha and outside it are very impressive.

He is a good asset to the All India Congress (I) and to the government as a member of Parliament.

Our Prime Ministers should think of making better use of his tal nts.

I wish Acharaya Bhagwandev long life, radiant health and success and also your function all success.

Thanking you,

Yours faithfully,

(S.C. Israni)

सच्चे आत्मज्ञान बिन, दुःख नहिं कभी नसाय।
कोटि यत्न करते रहो, तम बिन दीप न जाय ॥

Sindhi Merchants Association

(Registered Office : 795, Mountbatten Road, Singapore, 15)
Colombo Court P.O. Box 119
SINGAPORE 9117

Mrs. Indira Gandhi,
Honourable Prime Minister.
New Delhi (India)

September 23RD, 1983

Dear Prime Minister,

Acharya Bhagwandev has just visited us. He has personally invited me and members of our Association to attend the first ever World Sindhi Conference on the 18th and 19th of October, 1983. It gives us immense pleasure to know that you have kindly consented to inaugurate this conference.

We still remember the year 1947 with sad memories. The country was partitioned. Thousands were killed and millions made homeless. Punjabis and Bengalies were somewhat in better position than Sindhies. They at least got part of their states to stay on. We were the worst sufferers. We were completely uprooted. It is very very sad to leave the land, where your fore-fathers lived and died.

Were it not for your late lamented father, our dear Panditji, and now yourself, who took special interest to resettle Sindhis, we would have still remained in pitiable state.

We are now mostly well settled. You will find Sindhis in every nook and corner of the world. In India, Sindhies have done well in every business, every industry, every profession, and even in civil service. From refugees in 1947, we have now turned philanthropist. We have opened hospitals, colleges, religious institutions and what not ?

This has all been possible because of your kind consideration for us. Your recognizing Sindhi Language in Schedule 8, is worthy of praise. We will ever remain grateful to you for all that you have done for us. We are now able to raise our heads in pride that we are a Community, who is doing a little bit for the Nation.

Our Mr. Acharya Bhagwandev has done a magnificent job to unite Sindhis scattered all over the world. He is ably looking after the interests of Sindhis in LOK SABHA. To organise first ever World Sindhi Conference is no easy job. He is a dynamic man. Under your Leadership and guidance, he will do still better.

Yours Very Truly,
Rupchand Jashanmal Bhojwani
President

मुस्लिम कहलाए मगर भूल गया इस्लाम ।
नहीं समर्पण शान्ति है, केवल थोथा नाम ॥

आयुर्वेदचक्रवर्त्ती वैद्यरत्न

पण्डित शिव शर्मा

मानद निजी आयुर्वेदिक चिकित्सक, श्री राष्ट्रपति महोदय मानद आयुर्वेदिक परामर्शदाता, लंका तथा महाराष्ट्र शासन। अध्यक्ष, केन्द्रीय भारतीय चिकित्सा परिषद्
अध्यक्ष, साइण्टिफिक एडवाइजरी बोर्ड (आयुर्वेद), नई दिल्ली।

बहारिस्तान, बोमनजी पेटिट रोड, कंबाला हिल, बंबई-३६
दूरभाष ३६४३७७

करमानी बिल्डिंग, २७, फिरोजशाह मेहता रोड, बंबई-१, दूरभाष २५४६०५ "धन्वन्तरि", बी ४/५३ सफदरजंग एन्क्लेव, नई दिल्ली-१६, दूरभाष ७४१४१

पं० शिव शर्मा लेखक का स्वागत करते हुए

My dear Shri Acharya Ji, 1st February 1975

Thank you for your kind letter of the 9th January and your excellent and very useful publication, LIGHT OF SPIRITUAL DISCIPLINE (Ashtangyoga Prkash) which accompanied it.

I have liked your book immensely. Obviously, both its conception and execution are backed by clear and earnest thinking on the part of the author. It also reveals your intimate knowledge of the subject. The clarity and lucidity of the language make it an easy reading for the common man without his needing any guidance from an expert. You have, in writing this book, rendered a great service to the cause of Yoga and facilitated its popularisation. I congratulate you on the successful achievement of a very scholarly project of high erudition and utility.

God Bless You and give you a long and healthy life to enable you to continue to serve the science and the society with the same effectiveness with you have been doing it so far. With my warmest regards.

Yours sincerely,
Shiv Sharma

भूखे को भोजन प्यासे को पानी दीजै यथा अधकार।
कठिन समय में होगा साथी तेरा श्रेष्ठ आचार॥

Tel : 01-3770166
Telex : 89511503

Sindhi Association of U.K.

Registered as Charity No. 282447
Globe House 20/22 Cobb Street
LONDON E1 7 LB

6th Oct. 1983

Honourable Madam Prime Minister,

It is a great pleasure to learn that you will inaugurate the first ever World Sindhi Conference on the 18th instant in New Delhi.

Acharya Bhagwandev has recently visited us in London. We have been told of your love and regard for the Sindhi Community. We were also reminded of the esteem your beloved father bestowed upon us. We sincerely hope our community will continue to merit such sentiments in times to come.

Acharya Bhagwandev has done sterling work to improve the lot of Sindhi Cause. We hope the welfare of our Community will not become a political football.

On our part we would like to assure you that we are first Indians and Sindhis later. Whatever we will do will be within the framework of ONE COUNTRY ONE NATION.

We sincerely hope the Overseas Sindhis will not be forgotten.

With sentiments of highest esteem and best wishes for the success of forthcoming Conference, we remain,

In the Service of India,
Sindhi Association of U.K.
Lachu Bharwaney
President

सब की गठरी लाल हैं, सब ही साहूकार ।
गांठ खोल जाने नहीं, तासे भये कंगाल ॥

Markcel Private Limited

Shreeji Bhavan, Lohar Chawl,

P.O. Box No. 2665, Bombay-400 002

30-1-84

Sir,

I am enclosing my greetings on the occasion of 50th Birthday of Shri Acharya Bhagwandev, M.P. I shall be obliged if you will publish the same in the Abhinandan Granth.

"It is a matter of great joy and gratification that the friends and admirers of Acharya Bhagwandev are celebrating his Golden Jubilee at New Delhi with great eclat in February 1984. The meteoric rise of the Acharya in public life of the Country in general and of the Sindhis in particular is due to his unparallaled dynamism and dedication to the cause of public welfare. Hs selfless devotion in public life has evoked admiration and appreciation both from the leaders of the Country and common people alike. May the Almighty grant him long and healthy life so that he continues serving the community and the Country with exemplary vigour and courage that have been the hall marks of his public career."

Thanking you,

Yours Sincerely,

(U.N. Raisinghani)
Udho Raisinghani

कहे इसाई स्वयं को, करे रार तकरार।
कहाँ गंवाया बावरे! वह ईसा का प्यार॥

ACHARYA BHAGWANDEV– A Unique Dynamic Personality

Baldev T. Gajra,
Editar Bharatvasi, Bombay

I deem it my great fortune to have come in contact with a unique dynamic personality like Acharya Bhagwandev. I have had the privilege of having been very close to him for more than two years now and I have been deeply—impressed and inspired by the wonderful story of his life, glimpses of which I could gather from my casual conversations with him and with some friends who have known him from near distance. Some of the anecdotes of his life look like scenes from some film or leaves torn from some epic.

In the same manner perhaps, and impelled by the same inner urge, Acharya Bhagwandev left his parental roof, when he was only 15 years old ; and he never returned, or he returned, if we might say, after wandering about for many many years in search of the goal of his life.

And what goal did he place before his mind's eye. Reading through the stories of valour of Chandragupta, of Ashok, and in modern times of Rana Partab and Shivaji, on the one hand—and going through the lives of sages like Tulsidas, Dyaneshwar, Narsi Mehta and Chetnya Mahaprabhu, Budha Mahavir and Dayanand and others, he resolved within his mind that he should become either a *Samrat* (Emperor) or a *Sant* (Saint). And curiously enough we find in him a combination of both—he is a bit of a saint and he is at the same time a bit of the Warrior. In as much as he has devoted a goodly portion of his youthful life to the study of the scriptures and the Darshanas and has tried to mould his life according to the ten commandments of Yogic Hindu Religion philosophy Ahimsa, Satya, Asteyam, Brahmcharya, Aparigrah (yam) and Dhirya, Tapa, Santosh, Swadhyaya, Ishwar Pranidhans—(Nigana) we may say that he has tried to imbibe the saint in him; and inasmuch as he has bravely and daringly fought against injustice, against goondaism, against communal vagaries, and in places and in times when the odds were severely set against him, we could say that he tended to build the warrior within him.

To fight single handed against nine diabolical goondas in the garb of Sadhus, trying to molest a young damsel would appear more like a scene from some Film rather than a real life story.

तुलसी तनिक न छोड़िए, लेन हरि का नाम।
मनुज मजूरी देत है, क्यों राखेंगे भगवान्॥

While in search of the truth he in the Vallys of Himalyas he rescued a damsle to form the clutches of 9 Goondas in the garb of Sadhu.

Zar (wealth), *Zamin* (land) and *Zan* (woman) they say are the three pitfalls that cause the downfall of a seeker. None of these seems to have been able to cause any erosion in his discipline in the formative years of his life. Acharyaji has the personality of a Film Star. No wonder then that in his youth girls should have been attracted to him. He said a firm "no" to such offers when he was the inmate of an Ashram at Vrindavan or an administrator in the Gurukula at Baroda. "Such a step would bring disrepute to the institution to which I belong and therefore I can not countenance sueh proposals". Securing a roof over your head these days is a very serious problem. To give up one, when you have got it, would be considered by most people stark madness. And yet when he was given a Government quarter as a Member of the Lok Sabha, he gave up the accomodation he had in at the Jor Baug. "Where shall we go, after you cease to be the M.P. ?", asks the wife. "We shall be on the footpath if God does not provide us with alternative accommodation. But I have full faith that he would not forsake us. At any rate we have no right to retain with us a house belonging to a Trudt when we are no longer serving the interests of That Trust," he asserts. Again when the ungrateful sons of a grateful father whom Acharya served and tended in his illness, ask him to vacate the house alloted to him by their deceased father, he does not hesitate for a moment and gives up his abode in the palatial mansion, and leaving his children with his in-laws, spends several months far away from the City, in lonely hutment in a solitary place, quietly waiting for the Almighty to give him alternative residential place. Contrast these happenings with what is going on today in cities like Delhi and Bombay where suits are filed and cases go on in Courts for years and years between parties wanting back their places and parties unwilling to give up the same and you will realize the magnanimity of the man.

Membership today of a State Lagislature or Parliament has become for many an instrumental for making fortune, so low have fallen our moral values now-a-days. For more than three years the Acharya has been in the Lok Sabha serving the people day and night listening to their gireavances and hardships, fighting for redressal of genuine injustices; and not a single voice has been heard from any quarter that he ever fleeced anyone to fill his own coffers. He has scolded his own kith and kin if they ever approached him for any wrongful job or gain ; such is the high standard he has maintained of his conduct and character.

How Acharyaji obtained the Congress ticket for the Parliament in face of tough opposition from the provincial satraps in the Congress is in itself a wonder. But winning the elections when it looked almost impossible is nothing short of a miracle. Without any money, without many workers, and faced with unsympathetic and hostile local Congress friends, he snatched the victory almost from the jaws of his opponent. And the secret of his victory lay in his invincible self-confidence and his disarming oratory coupled with his innate faith in God.

मानुष के गुण जो कथै, सो इच्छित फल पाए।
प्रभुहि भक्ति से जो भजै, सो किमि खाली जाए॥

A story is told how he won over the most powerful Congress leader of Rajasthan, Late Shri Mohanlal Sukhadia, which reveals the generosity of his heart as well as his wisdom and sagacity. A public meeting was arranged in the course of his electioneeing campaign which it was announced would be addressed by Shri Sukhadia. But Shri Sukhadia was in no mood to help Acharya for he had sponsored the candidature of another person, and the Congress ticket had been denied to his protigee. So, Shri Sukhadia refused to come and address the meeting, and Acharyaji went back but not disheartened. And as the campaign was going on in full swing, Acharya happened to go to a place in his constituency which was adjoining the Constituency from where Shri Sukhadia himself was contesting. Hearing the oratorical discourse of Acharyaji there, some people of Sukhadia's constituency approached him and requested him to go over to their Constituency and address the people there. He readily agreed and delivered a thundering speech there for Shri Sukhadia which moved the people greatly. Word reached the ears of Shri Sukhadia about this anecdote and it overwhelmed the great leader. And next time when a public meeting was organized for Acharyaji, Shri Sukhadia volunteered to go there and address it and he thus repaid the favour done to him by Acharyaji.

Before entering the arena of politics, Acharyaji was wedded to the cause of the Arya Samaj, and in that role he occupied various positions of responsibility in the organization and has had several glowing achievements inscribed against his name in his chequered career. He was the head of the Rishi Dayanand Memorial at Tankara for 10 long years ; and when he subsequently shifted his tents to Delhi he was made the Joint Secretary of the International Aryan League which post he held for 7 years. During this period he organized several Conferences, three of them overseas, in Maritius, London and Narobi.

Acharyaji is a born fighter and it is difficult to recount in how many agitations and Satyagrahas he has participated, the Maha Gujarat Andolan and the Hindi Satyagrah to mention for example. His participation in the Mahagujrat Andolan made him a hero overnight ; and when the elections to the Patan Muncipality came up he was persuaded by his friends and admireres to contest the same and he contested the election from two constitutencies and came out with flying colours in both, defeating in one of a big Muslim stalvert in a constituency with majority of Muslim voters.

The Membership of the Lok Sabha has not gone into his head ; he remains the same servant of the people as he was before. He does not stand for ceremonies and does not mind himself going to see people instead of summoning them to his *kothi*. There have been instances when he has himself visited some public societies and institutions in places he has visited when his official work, inquired of the organizers if they have any problems, and tried to get these solved.

Besides being a very eloquent and convincing speaker, Acharyaji is also a prolific writer, and has to his credit nearly forty to fifty books in Hindi and Gujarati on various

---

तेरा तसव्वर कभी इस कदर बढ़ जाता है।
आईना देखं अगर मुंह तेरा नजर आता है।।

subjects—yog, history, biography. health and happiness and the like ; and his books have gone into several editions. His Life of Mahrishi Dayanand, his compilation on the lives of National martyrs—Swatantra ki-Vedi and his work on the Science of Yog are his outstanding works.

Acharyaji's personality is multifaceted, and it is wellnigh impossible to compress the rich and varied experiences of his life story in a brief articles like this. A Boswell was needed to chronicle the life story of Jhonson. Now I yearn I could play the role of Boswell for this our Jhonson : but alas with my imitations, I am afraid I can not do justice to such a tremendous job, which requires abundant time a jobe's patienee and a forceful pen, which virtues I sadly lack in. But I hope and pray that one day, somc devotee of his possessing these qualities and capabilities would come forward to write the life story of this Unique Dynamic Personality which will be a fountain lead of inspiration for or new generation.

A poet has said :

One crowded hour of glorious life
Is worth an age without a name.

To me every hour of Acharya's life appears to be glorious.

महर्षि दयानन्द फिल्म में आचार्य भगवानदेव महर्षि दयानन्द के रूप में

जो ग़लती कर नहीं सकता उसे भगवान् कहते हैं ।
जो ग़लती कर सुधारता उसे इन्सान कहते हैं ।।

e gone
lational
s.
ess the
needed
for this
mendous
l sadly
ies and
onality.

Acharya Bhagwandev– A Dynamic Personality

By.
Dr. Mohanlal Sharma

Soon after the demise of our revered national leader, late Shri Jairamdas Doulatram, a sort of void was being felt in the Sindhi pubiic life, for Jairamdasji was the only Sindhi leader of stature, who after the death of Dr. Choitram Gidwani, had been taking up at the highest level problems confronting the Sindhis here in India. We owe to him a great debt of gratitude for getting solved two basic problems of the Community viz. inclusion of our language in the eighth schedule to our Constitution and retention of Sindh in the National Anthem of the Country. Pandit Jawaherlal Nehru had rejected the proposal of some people to delete Sindh from the National Anthem on the plea that Sind was no more in India, and had snubbed them saying that even if Sind was not in India Sindhis were with us and therefore Sind should continue to be in the National Anthem. Still some perverse people omitted SIND while singing the National Anthem somewhere, and Shri Jairamdas immediately brought this to the notice of Panditji and Panditji stuck to his original stand. Again Jairamdasji laboured very hard for the inclusion of Sindi language in the eighth Schedule and although our present Prime Mininster, Shrimati Indira Gandhi, conceded the demand without hesitation, it was an uphill task for Jairamdasji to get the entire Cabinet to accept the demand.

And as I have said above the Sindhi Communtiy was greatly distressed over the passing away of Jairamdasji and was feeling almost orphaned. It was, therefore, a Godsend blessing for the Communiiy that Acharya Bhagwandev was given Congress ticket for contesting the Parliament seat from Ajmer and it was a miracle that he won the seat in January 1980. Acharyaji made it abundantly clear in his speeches everywhere that although he was not elected from any predominantly Sindhi Constituency nor had the Sindhis any hand in getting him the Congress ticket, yet he could not forget that he was born of Sindhi parents and belonged

मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना।
हिन्दी हैं हम वतन है हिन्दुस्ताँ हमारा॥

to this very community. He declared in every gathering of the Sindhis that he addressed—and he was invited practically to every Sindhi gathering—that he deemed it his duty to serve the Community to which he belonged and strive his utmost to solve their problems. This declaration of his was applauded everywhere and it rekindled in the minds of the people the hope that some one had appeared on the horizon, who might fill in the void created by the passing away of late Shri Jairamdas. And Acharyaji has justified and fulfilled that hope in a large measure.

Before we speak of the efforts made by Acharyaji in fullfilling this self-assigned task of serving the Sindhi Community and evaluate the measure of success he has achieved, it would not be improper if we had a peep into the background of his dynamic personality and got a glimpse of his life before his meteoric appearance on the political horizon. This is all the more necessary as uptil his election to the Parliament, Acharyaji was completely unknown in the Sindhi public life. A narration of some important events and anecdotes connected with his earlier life will reveal the essential characteristics of his personality—his indomitable will, his dauntless courage and his indefatigable strength and energy.

Acharayaji's early life was associated with that great organization—the Arya Samaj—that gave the Nation such great patriots as Lala Lajpatrai. Swami Shradhanand, Pandit Lekhram and the like. When Acharyaji was only in his teens, he was impelled by an inner urge to leave his hearth and home and wander about in quest of some unknown destination. He had read of the heroic deeds of Raja Ashok of yore and of great warriors of modern India like Maharana Pratap and Shivaji as also about the renunciation and spiritual heights attained by Guru Ramdas, Swami Dayanand etc. To become either a saint or a Samrat was his dream, and curiously we find in him a little of both.

Acharya roamed about in wilderness for several years visiting different Ashrams, Maths and places of learning. During his sojourns he studied the Vedas and the Upanishads and mastered the ancient science of Yoga. He ultimately returned to the worldly life imbued with the insatiable thirst to serve the people through the medium of Arya Samaj. For twelve years he worked as the head of the Maharishi Dayanand Saraswati Memorial Trust's Gurukul at Tankara. The leaders of the Arya Samaj decided to utilize the abilities of the Acharya in a larger spehere and he was asked to shoulder responsibilities in the International Aryan League as its Secretary which post he held for another seven years.

His life career in the field of Arya Samaj during these years had been most eventful, crowded with anecdotes that speak volumes for his courage, resourcefulness, and dare—devilry. At Tankara he would not tolerate any encroachment upon the precinits of the Institute and demolished an alien structure in the teeth of protests from a threatening crowd; he rescued several misguided youth from the clutches of Islami zelots; reclaimed thousands, who had strayed away from their religion under duress.

He also participated in many struggles that earned him both recognition and repute. When at Patan he participated in the agitation for separation of Gujrat and this endeared him so much with the people there that he was persuaded to contest elections to the Patan Municipality from two wards and he won in both defeating in one a popular Muslim candidate in the Ward with predominant

Muslim population. He also took part in the Hindi Rakhsha Satyagrah in the Punjab, and was jailed in that connection. He successfully organized three International Aryan Conferences, out of India, in London Nairobi and Mauritius.

While in Delhi. he came in contact with Congress leadership there and he was nominated to contest the parliamentary seat from Ajmer in face of vehement opposition from Rajasthan leaders. His success in that election is also an unbelievably wonderful story.

And as stated above, immediately after being elected to the Parliament. Acharyaji turned his attention to the problems of the Sindhi Community and has been working hard day and night trying to solve them. His address in the Parliament delivered in Sindhi on the 26th April 1982, is a mile—stone in the annals of the Parliament as also in Sindhi public life as it was for the first time that any member of the parliament had spoken in Sindhi on its floors. In his speech, Acharyaji highlighted the problems confronting the Community at large and he received immediate response from the Government inasmuch as the Prime Minister, Shrimati Indira Gandhi, wrote to him saying that the various ministries in the Government had been asked to look into these problems and help the Community.

It is a matter of pride for us that Acharya Bhagwan Dev has been appointed convenor of the Sansadiya Rajya Bhasha Samiti. As its member earlier and its convenor now Acharyaji has visited various foreign countries e. g. America, England, Canada, Egypt, Nairobi, Mauritius in order to assess the progress made in the matter of development of Hindi in Govt. of India's Embassies, and various places here in India in connection with the same purpose.

Acharyaji is a prolific writer in Hindi and he has authored more than 40 books on yoga, health, biography etc. and his books have gone into severed editions.

We could, with pride, recount some of the achievements he has to his credit in various fields concerning our community.

Acharyaji has succeded in persuading the Chief Ministers of Maharashtra and Madhya Pradesh to set up Sindhi Sahitya Akademies in their respective States; has wrested a promise from the Chief Mintister of Uttar Pradesh to set up a similar Board in his State and is trying his best to make the Gujarat Government and the Delhi Administration to follow suit. He has been able to put life into the slumbering Sindhi Advisory Board attached to the Hindi Directorate and is pressing for setting up a separate Directorate for the Sindhi language.

Freedom Fighters

Acharyaji has succeeded in getting the Government of India issue a Memorial Postal Stamp to commemorate the martyrdom of Hemu Kalani, which stamp will be released during the two day World Sindhi Conference. He also got sanctioned a pension of Rupees Five hundred a month for the mother of Hemu. He has also helped in early sanctioning of pensions to some of the elderly veteran Sindhi freedom fighters.

All India Radio

Acharayji has been able to get introduced a half an hour's daily programme from the Delhi station of the All India Radio, which could be heard by Sindhis all over India daily from 9.15 to 9.45 P.M. A beginning is also being made in giving Sindhi programme on the T.V. from Bombay.

कष्टमें, दुख दर्द में, जो गा सके, गायक वही है।
काल की शृंखला में जो चल सके, पायक वही है॥

Honouring Sindhi Men of Letters

Another notable achievement was the honouring of some dozen Sindhi leading men of letters, educationists and social workers at the hands of the Rashtrapati in the Rashtrapati Bhavan on the 25th September 1982, a historic event indeed.

Sindhi Gurdwaras

The Sindhis everywhere were greatly agitated over the proposed Gurdwara Amendment Bill, as a result where of it was feared that hundreds of Sindhi Gurdwaras all over the Country might be taken possession of by the Akalis. Acharyaji led a deputation of representatives of Sindhi Panchayats and some Mahants to the Prime Minister. He also led similar deputations to the Rashtrapati and the Home Minister and secured assurances from all of them that the Sindhi Gurdwaras will not be affected by the proposed Bill.

Besides some of these major achievements, Acharyaji also helped several public bodies to get thousands of tons of cement from the Government for their hospitals, schools etc.

Future Plans

Acharyaji has a very ambitious plan in his mind aimed at the welfare of the Sindhi Community. He has been rightly arguing that for achieving continuous progress of the Community and ensuring their welfare and for setting up a permanent machinery for tackling their problems arising from time to time, it is essential that a Central Body of Sindhis be formed and that be located at Delhi, it being the seat of Governmental Authority, even as there as centres here of Maharashtra, Gujarat, Punjab etc. In case of Sindhis the need for such a centre is all the greater as they have no State or State Government of their own. With this objective in view Acharyaji has formed the Vishwa Sindhi Samaj. And to invest this Body with authority and sanction and to chalk out a programme of action for it, the Word Sindhi Conference has been summoned.

The picture that Acharyaji has in his mind about this Centre is highly ambitious- A Sindhi Bhavan housing a Library, an Art Gallery, a Widows Home and a Home for Elders and later on a College and a Hospital. We are confident that with his indomitable will and dauntless courage, he will be able to make his dream a reality. It is the sacred duty of all of us, who have the good and the welfare of the Community at heart, to put our shoulders to the wheel and help Acharayji in every possible manner to achieve this laudable objective.

May the blessings of the Almighty be showered on our Community and on him, so that we are able to march ahead on the path that we carve out for ourselves till we reach the goal we have placed before us.

अपने लिये तो सभी जीवित रहते हैं।
औरों के जो काम आवे, जीवन वह है ।।

Congratulating Acharya Bhagwandev

May I congratulate Acharva Bhagwandev, M. P., for exerting himself, whole—heartedly for helping the community's causes and problems. As displaced persons, we shall require assistance and sympathies of all political parties to solve our problems for still some time to come irrespective of individual political choices or allignments.

23-1-82

H. G. ADVANI,
Bar-at-law

Youthful, Energetic & Industrious

It has been a matter of great pleasure for me to come in contact with Acharya Bhagwandev, Member of Lok Sabha, on a number of occasions. I feel the Sindhi community is fortunate in having such a youthful, energetic and industrious representative in the Parliament. I have been to his residence in Delhi several times and every time I have found many many Sindhis coming to him for redressal of their grievances: and he tries his best to help them in getting their problems solved. It is gratifying to find that he is very very anxious to do something for the Community.

I wish him all success in life.

24-1-82

Ram Panjwani

A Dynamic & Intellectual Leader

Dear Baldev,

I thank you for your letter dated 1st instant and I am pleased to note that as usual you have planned to print a special issue on 26th January, our Republic Day.

I note with great pleasure that you will be issuing a special supplement on the activities of Acharya Bhagwandev one of our Sindhi members of Lok Sabha and I appreciate your action.

Though I have not had the fortune of coming close to Acharya Bhagwandev but I have met him and heard his speeches on various occasions here in Bombay and last year in Indore.

I admire him for his concern for the welfare of Sindhi Community and his dynamism.

He is young and a highly intellectual person. He is quite courageous in giving expression to his thoughts in public and in Lok Sabha for which I offer him my sincere congratulations.

Sindhi Community was lucky in having stalwarts like late Dr. Choithram Gidwani Prof. Ghanshyam Shivdasani and Dada Jairamdas Daultram as our leaders who did a lot for the displaced Community and who are no more with us.

The void which has been felt can be filled by backing Acharya Bhagwandev by each one of us who are in public life and who mean good for the community.

We have too many leaders and a few followers which is the reason of our community being neglected,

The community needs such persons who are doing their bit in different fields but we need someone who can co-ordinate the efforts of various leaders and lead the community.

We should therefore wholeheartedly support Acharya-jee in his plans and strengthen his hands.

We cannot afford to neglect our other Sindhi M.Ps. of our Congress (I) Party and bring them together to provide greater strength for collective leadership which is the need of the hour in a democratic society.

May God give Acharya-jee long life with radiant health to enable him to execute his plans in the service of Sindhis.

With best wishes.

Bombay
8-1-1982

Yours sincerely,
S. C. ISRANI

Sindhi Leader

ACHARYA BHAGWANDEV

T. M. Ramchandran

The credit for convening the first ever World Sindhi Conference in New Delhi and making it a stupendous success should go entirely to Acharya Bhagwandev, Congress (I) M.P., who has shown his qualities of dynamism and leadership in a brilliant manner. Though he has a tendency to do everything himself —from A to Z—he has no doubt the capacity to motivate his people to carry out any project for a common cause—the cause of the Sindhi Community. He draws his energy and strength from his own spirit of selfless service to the community at large, unmindful of any personal inconvenience to him.

Long befere the commencement of the Vishwa Sindhi Sammelan, of which he was the President, he let the doors of his bunglow open to the members of his community, who had the full run of the house, enjoying its warmth and hospitality. People from far and wide had converged in the capital for the Conference and they all lived like members of one family—the family of Sindhis—providing an object less[on] to be emulated by other communities. T[he] spirit of Camaraderie and bonhomie, which th[e] members of the Sindhi community evince[d] during the Conference, should be attributed, [in] no small measure, to the qualities of head a[nd] heart, displayed by Acharya Bhagwandev.
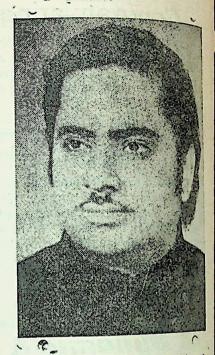
The Acharya has every reason to feel en[-] thused and satisfied over the success of th[e] World Sindhi Conference. It is no joke t[o] bring people together. It is indeed a virt[ue]. And the Acharya gained this virtue after h[ard] lean efforts, though apparently, it all looked simple, like the slight of his hand, wielding magic wand. The inauguration of the Co[nfe]rence by Prime Minister Indira Gandhi ma[rked] the culmination of three years of painsta[king] efforts, innumerable meetings, prodigious r[un]ning around, diligent organisation and u[nflin]king determination put in and demonstrated [by] the Acharya.

"It is the fulfilment of a longche[rished]

ख़ाना-ए दिल में मिले वह जलवा गर।
दर-बदर भटका किए जिस के लिए॥

dream."observed Bhagwandev, in the course of an interview with me after the Conference. "It was high time Sindhis from all walks of life and from all corners of the world shared a common platform to air their views, forward suggestions and thrash out a tangible programme for the future well-being of the community," he emphasised.

The Acharya pointed out that the Sindhis had made tremendous progress iu all spheres of activity, particularly on account of their hard work, initiative and entrepreneureship. They had especially distinguished themselves in business and education, he maintained. He also noted the establishment of myriad hospitals and colleges the community was credited with.

Explaining the main purpose of setting up the Central Board of Education for the Sindhis —as one of the objectives of the Conference—Acharya Bhagwandev asserted that the differing courses followed by Sindhi school in different States had been posing a problem to the Sindhi pupils. He remarked that the Board would evolve recommendations, the implementation of which would help bring uniformity to the school syllabus.

The Acharya mentioned that he had touched upon this issue as far back as on April 26, 1981, in a speech in the Sindhi language he had delivered in Parliament. He had subsequently consulted the Prime Minister on the issue and had received an assurance from her that she would notify the concerned States about it.

According to Bhawandev the Union Government had written off all government loans upto Rs. 2,000 disbursed to Sindhis after Partition. He was currently attempting to urge the Government to bring even those Sindhi debtors, with loans upto Rs. 5,000 outstanding against them, within the ambit of this provision. He was, however, unable to specify the number of Sindhis who had benefited by the Government's action. Nor could he make known the sum of moneys involved by way of financial loss to the national exchequer.

According to the Acharya, the question of using either the Devnagari or Arabic script for the written Sindhi language need not be any cause for controversy. He left that one could opt for either.

The Samaj President also expressed satisfaction at the Government's move, On January 26, 1981, to introduce a daily half-hour programme (from 8.45 to 9.15 p.m.) in Sindhi on All India Radio, Delhi. AIR was already broadcasting news bulletins in Sindhi.

Turning his attention to the internal turmoil afflicting the inhabitants of Pakistan's Sindh Province since August 14, he pledged his support to the movement's bid to overthrow the allegedly despotic regime of President Mohammed Zia-ul-Haq. He averred that Gen. Zia was deceiving the Pakistani public and that the people had the right to raise their voice and demand their rights. He hoped that democracy would be restored soon in Pakistan and this 'rakshasa' (demon) destroyed.

Acharya Bhagwandev recalled that Sindh still remained the original homeland of the Sindhis. He felt that the "time was ripe" for this part of Pakistan to become a part of India, so that the Sindhis of both Pakistan and India could co-habit and work for their common good. He believed that there was a yearning among the Pakistanis, particularly the Sindhis there, for democratic traditions so ruth-

तीर्थ सभी है दिल में बाहर नहीं है जाना।
बहती है ज्ञान गंगा चाहे तू जब नहा ले।।

lessly wrenched from them by the military autocracy.

EARLY LIFE

Son of Shri Gopal Das and born on February 23, 1935 at Babrani village, Shahadapur Taluk, Nawab Shah District, in Sindh (now Pakistan), young Bhagwandev was educated at Mohammad Ali Memorial High School, Beawar, Gurukul Vishwavidyalaya, Vrindavan and Maharishi Dayanand Sanskrit Vishwavidyalaya, Tankara, Gujarat. He started off his career as a journalist and writer and has been associated with the Congress movement for India's freedom right from the beginnig. He was jailed 12 times in connection with various movements including the Goa Liberation Movement. He beeame the General Secretary of the Maharishi Dayanand Yogashram Society, from where he derived the title of Acharya He then became the General Secretary of the Akhil Bharatiya Yoga Vijnan Parishad from 1976, after which he became the Vice-President of the Gujrat Arya Pratinidhi Sabha. He was also the joint Secretary of the Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha. He then became the Acting President of Pichhada Warg Seva Sangh; simultaneously he was the President of Maharishi Dayanand Ashram, Tankara, Akhil Bharatiya Swami Sharddhanada Smarak Trust, Shraddhananda Seva Sangh and Arya Vir Dal, Bombay, and Sanyojak Mahatma Anand Swami Smarak Nidhi.

Well-versed in the Hindi, English, Sanskrit, Urdu, Bangla. Gujrati, Sindhi and Marathi languages, Bhagwandev has written 50 books some of which (in Hindi) are "Swatantrata Ki Vedi Par". "Maharishi Dayanand Ashtanga Yoga Prakash", "Yoga Aur Swasthya", "Yoga Se Roga Mukti". "Yoga Mukti Prakash", "Yoga Purushon ke Liye", "Yoga Stryon ke Liye", "Yoga Aur Sex", "*Arya Shahid Sanskar Chandrika,*" and many more. He has also written books and articles in Gujrati as well as Sindhi and he had been the editor of Yoga Mandir (a monthly). his special interests include writing, running educational institutions and service of the backward classes. His favourite pastime, besides sports, include gardening, yogic exercise, travelling and tourism. In fine, his love for his community and the people at large is boundless.
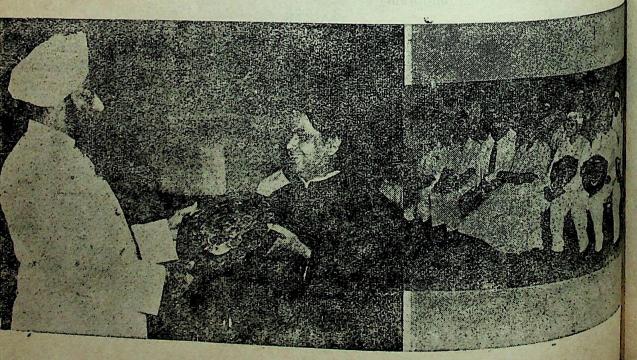
राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह आचार्य भगवानदेव का राष्ट्रपति भवन में सम्मान करते हुए।

Miraculous Young Blood of Sindhi Congressmen's forum

Acharya Bhagwandev M.P.

Shri Assmdas New Delhi.
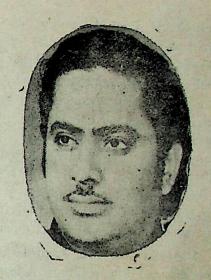
On partition of the Country, and our migration from the Sind the group of we senior Congressmen (with a few exceptions), joined hands with The All India Congress Committee, under the Title of Sind Congress Workers Samiti, under the lead of Padam Vibhushan Professor N. R. Malkani. The work started under the guidance of 2 General Secretaries of the A. I. C. C. (I) Shri Shriman Narayan (subsequently Governor of Gujrat) (2) Shri Balwantrai Mehta subsequently Chief Minister of Gujarat). Duty assigned to us was, to be bridge between Congress and Displaced Persons from Sind, stranded the country over. Our Head, Padam Vibhushan, Professor N. R. Malkani (Member Rajya Sabha) for 3 consecutive Terms. Grown old, he departed from the world for next birth.

2. In the meantime Dada Jairamdas Daulatram on completion of his assignments as First Food Minister of India after Independence, Governor of Bihar, and the Governor of Assam, arrived in Delhi. He was taken up as Member of Rajya Sabha for 2 consecutive Terms. Being Head-quartered at Delhi, he took up his Role (1) Inclusion of Sindhi Language in the 8th schedule of our country's Constitution. Winning sympathies of our Revered Prime Minister Smt. Indira Gandhi, he successfully accomplished the job. At the same time he gathered the scattered forces of we workers under one roof under the Title 'Sindhi Congressmen's Forum'. A good number of our elder Workers was residing in Bombay.

3. As the Displaced Persons from Sind had scattered rather stranded on all the corners of the country it became difficult for our group of Congress Activitists to reach all the pockets of our Displaced Persons. Not to speak of economic strains, our ages advanced disabling our long and frequent tours. This article is matter of hours, but story of 4 decades, during which our elders started departing one after the other for their new-births. We worked to the best of our ability and capability, with all the possible zeal we could. Our only problem and grief was shortage and search for young blood to replace us.

4. After giving the above short background of our Congressmen from Sind, I come to the subject matter of this Article. At this stage it so happened that a brilliant youngmen appeared on the horizon. Resident of Beawa

वीरों के मुख पर सदा, बनी रहे मुस्कान।
खिलाता रहे गुलाब के सुन्दर सुमन समान॥

and elected from Ajmer Constituency, on Congress Ticket, as M.P., and he iw Acharya Bhagwandev, whose name and face we had neither heard nor seen before. He at present is aged 50 years. Accordingly his age at the time of Partition was only 13 years, evidently he is an India-Born Congressmen. His election on Parliament was his independent feat. After taking seat in Parliament he started whirlwind Tours alround the Country tackling the problems of local displaced Persons and earned popularty throughout our community.

5. At this stage Dada Jairamdas Daultram also departed to his new birth. Acharyaji used to visit Bombay very frequently, often times while returning from South. Many of our prominent colleagues were residing at Bombay where they came accross the services rendered by Acharyaji, whereby they were attracted. As aforesaid we all were in search of young blood of All India Capacity and stature. This was found in this youngman M. P. They invited him and decorated him with the Presidentship of our All India Sindhi Congressmen's Forum. Our then President Dr. Gobindram Ex-M.L.A. Sind, (2) Shri Newandram. V. Gurbani Ex-M.L.A. (Elected un-opposed) on Sind Assembly, also M.L.A. Maharashtra Assembly, (3) Shri C.T, Valecha, Advocate, Ex-M. L. A. Sind Assembly (4) Shri Baldev. T. Gajra, Editor Bhartvasi, Bombay, and others unionimously decided, and decorated Acharya Bhagwandev, to be the Head of All India Sind Congressmen's Forum. Only then we felt rested that we have after all spotted the young blood to represent our community to share with Congress the National Duties and responsibilities to the Country. Soon-after the above change, 2 of our colleague Heads (No. 1 and 2 illustrated above having already crossed 85, daparted for their new births. The third one of the eldest trio Shri C.T. Valecha, also having crossed 85, is peacefully breathing at his residence in Bombay.

6. Only the other day I came accross pleasant news piece in Sindhi Daily 'Hindustan' of Bombay, that the 'Rajasthan Sindhi Academy, sponsored by Government of Rajasthan selected from among the intelectuals, in their recent Annual Meeting, decided to decorate Acharya Bhagwandev as 'Sind Ratan'; where the Revenue Minister of Rajasthan Honorable Hiralal Devpuria was also present.

7. Vishav Sindhi Sammelan—He is capable of bidding highest chances. In the mid 1983, he announced Vishav Sindhi Sammelan. Some people felt his success un-certain. Specially as a substantial group of reactionery friends in Bombay, 2-3 years back, had declared World Sindhi Conference, and lavishly expanded on its preparations, but ultimately failed and dropped all their carried activities. But on 18th and 19th October 1983 the success of his Sammelan was so wonderful that it attracted the entire Community, not only in India, but the worldover, inspite of very short period at his disposal and some elements adversely activist. He personally visited important centres abroad, of Sindhies consentration to invite them personally. So did his General Sectrctary and right hand, Shri Golani and visited the Foreign Countries for inviting Sindhi V.I.Ps, to join the Sammelan in the interests of the entire Community, scattered the worldover.

8. He has the guts to do big things. It was his magic feat to see his No. 1 Rival and some other unexpected Sindhi V.I.Ps, present in the Vishav Sindhi Sammelan, which amazed

---

रहो मुस्कराते सदा, आवत लेउ बनाय।
स्वस्थ रहे नीरोग तन, रोग नहीं ठहराय॥

and delighted the entire public, that they used their wisdom, not to avoid such biggest ever function of our Community. Our Revered Prime Minister Behn Indira Gandhi close to them both, must have been glad to see 2 Sindhi Giants together on the same Platform. God bless them both to go together, when the Sindhi Community will be fortunate. Otherwise Acharyaji is racing fast with no parallel.

9. Another Magic Feat of Acharya Bhagwandev was, that Prof. Ram Panjwani, popularly known as Social and Cultural Ambassador of Sindhi Community acted as the Chairman of this biggest congregation of Sindhi Community.

10. Before Acharya Bhagwandev has appeared on the Political scene, Bombay was leading the Sindhies, but that part was played by Reactionery Forces through Parties and Gatherings in Bombay's Biggest Hotels. This aspect has mostly disappeared now, after Acharya's holding alloft the Congress Banner. Acharya's Acts and Services have created jubilation and confidence among the masses of the Community that they have now come accross a Leader who can holdfast steering of the Community and deliver the goods.

11. Acharya Bhagwandev free of selfish motives, is full and far ambitious, for the entire Community the entire Nation, and the entire Country. He has already formed Vishav Sindhi Samaj. Head Quartered in Delhi, and vigourously striving to establish the same.

12. News have recently broken out that Acharya is preparing for a Screen-drama of Rishi Dayanand Sarswati. The news personally delighted me, inspite of my personal opinion that the development of this industry at the present standard, will lead the human race to its peril. Right from our migration from Karachi Sind to Delhi. I have not seen any cinema house of Delhi. During the past 37 years I have seen only 3 or 4 Pictures, at Nagpur, Bombay and Gandhidham. in company and with pressure of my colleagues, with religious name and fame. Not to speak of the rigours of Pictures, T. V. (now coloured) in my own home, daily bringing all the funs, the worldover, I do not remember if ever I viewed T.V's, on complete Picture (from begining to end). Only short glimpses occasionally. But one can not avoid use of Science in this Yug. Acharya Bhagwandev's part in this enterprise will be a landmark in the mission of Rishi Dayanand. If we leave the bad things travelling the speed of Radio, T. V. rather space, the universe will meet its doom. Accordingly if persnality like Acharya Bhagwandev attempt to popularise the Mission of Vedas, knowledge, Charactor, Spirituality, preached by Rishi Dayanand, at the speed of present day world, it ought not to be un-welcomed. Acharya's Body, Tone, Spirit and Oratory make a best copy of Rishi Dayanand.

13. *Yog Vidya*—Acharya has written many books on Yog. Wonderful aspect is, that most of the Assans he has excercised himself, as is evident in the pictures in those books. Evidently his books are not theories but practical knowledge. Yog plus the Cow which Acharyaji owns make really a twin gift of God, I do not knew howmany such cows we can find in India. She is very finely built, Body, Height, Length, Bredth, all very attractive. She delivers 16-17 Kgs. milk daily. Her colour is deep black which in Aurved is considered to be richer in medicinal qualities, than all other

साहस कभी न बिसारिये, लो हिम्मत से काम
पुरुषार्थ करते रहो, है आराम हराम ॥

आचार्य भगवानदेव मोरिशस आर्य महा सम्मेलन में बोलते हुए (1973)

colours of Cows. She is worth seeing. Anybody wishing to see this cow can call at Acharya's Bungalow and see her. She is all the time available in Bungalow :

13, Lodi Estate, Phone ; 616177
(Near Khan Market)

14. *Lastly about his temper*—Some people complain about his rash temper. I am running 81 today with full experience of public life, for the last 54 years, commencing March 1930, when I joined Salt Satyagrah. Voter of our Democracy today is interested many times more in his personal problems than those of Public Utility, struggling for personal ends with their Representatives in Government, Semi-Government, Elected or Appointed Bodies. Acharya is of Frank and Forth-right nature. He knows beforehand what he can do and what he can not. Accordingly he quip-relies every question of problem put to him. Most of the Representatives are weak minded, despite knowing before hand that a particular demand is unreasonable or illegal in itself, which could not be accomplished, however they do not dare to displease anybody, and will feed them false hopes. As such if Acharya's Bold stand and forthright reply is taken his rough deal the complainant should thank himself, instead of Acharyaji, who is handling enormous public problems before him to be solved.

किस तरह दिसवा नहीं परमात्मा।
आत्मा दा साफ़ ते दर्पण करो॥
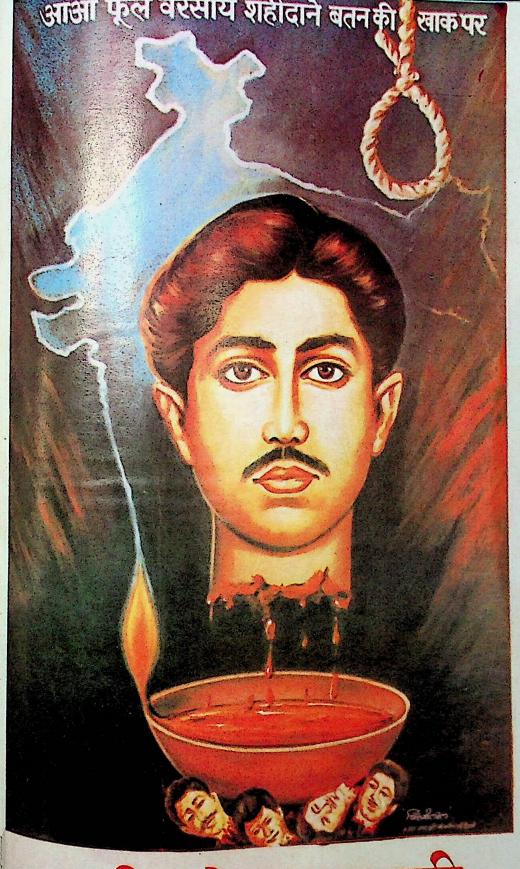
आओ फूल बरसायें शहीदाने वतन की खाक पर
शहीद हेमू कालाणी
जन्मतिथि २३ मार्च १९२३
फांसी २१ जनवरी १९४३
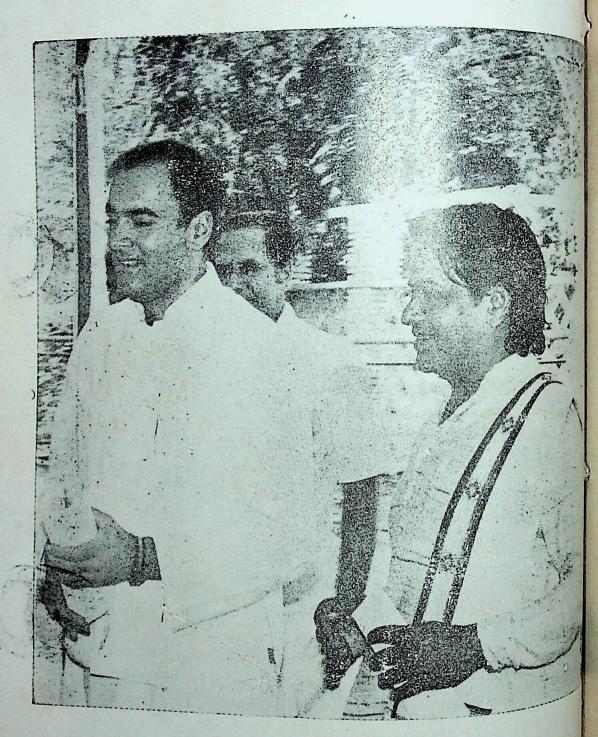
प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी के साथ आचार्य भगवानदेव

आचार्य भगवान देव संसद में :—

देश में रहने वाले गद्दारों से सावधान रहें

श्री भगवान देव (अजमेर) : माननीय उपाध्यक्ष महोदय, गृहमंत्रालय की मांगों की पुष्टि में अपने विचार व्यक्त करने जा रहा हूं।

सर्वप्रथम माननीय गृहमंत्री, श्री जैलसिंह जिस शान, शक्ति और सूझबूझ से गृह मंत्रालय को चला रहे हैं, उस के लिए मैं उन का अभिनन्दन करता हूं। उपाध्यक्ष महोदय, 'गृह' कहते हैं 'घर' को। घर के अन्दर हर व्यक्ति यह चाहता है कि किसी प्रकार की कोई समस्या खड़ी न हो। गृह की मंत्राणी होती है स्त्री, जो घर को चलाती है। उस के सामने बहुत सी समस्याएं होती हैं दाल, आटे, चने और गुड़ की। उसकी पूर्ति घर का मालिक करता है। फिर भी शिकायत व शिकवा रहता है। भाई भाई से लड़ता है, भाई बहन से लड़ता है, बाप बेटे से लड़ता है, पति पत्नी से लड़ता है। वर्तन भी आपस में ठनकते हैं, टूटते हैं, फूटते हैं फिर आपस में प्यार भी होता है। ठीक इसी प्रकार से यह राष्ट्र है जो हमारा घर है और उसकी मालिक प्रधान मंत्री हैं और गृह मंत्री हमारे माननीय जैल सिंह हैं। इनके सामने अनेक प्रकार की समस्याएं आती हैं, झगड़े टंटे की बातें आती हैं। ये बातें आदिकाल से हैं जब से सृष्टि की उत्पत्ति हुई है। यह कर्म-भोग है जो इन्सान को घुमाता रहता है। यह चाहते हुए भी कि समस्याएं पैदा न हों, फिर भी वे पैदा हो जाती हैं क्योंकि कर्म का जो भोग है, वह इन्सान को घुमाता रहता है। ठीक इसी प्रकार से हम भी नहीं चाहते, विरोधी दल के लोग भी नहीं चाहते, परन्तु जिस ढंग से विरोधी पार्टियों के नेताओं ने गृह मंत्रालय की आलोचना की है, मैं उस से सहमत नहीं हूं। क्यों? इसलिए कि उनकी कथनी और करनी में जमीन-आसमान का अन्तर है।

पहले की एक कहावत है, "मुख में राम बगल में छुरी"। विरोधी पार्टियों का जितना भी टोला है, उन के मुख में तो राम है पर बगल में छुरी है इनकी कथनी और करनी में जमीन आसमान का अन्तर है। यह कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं मुझे यदि समय होता, तो मैं एक-एक पार्टी और एक-एक मेम्बर की कलई खोल कर रख देता। (व्यवधान) कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं इस समय इनकी बेंचेज खाली हैं क्योंकि इनकी दुकान का दिवाला निकल चुका है। बागपत की बात करते हैं और बागपत के प्रतिनिधि चौधरी चरण सिंह हाउस में हाजिर नहीं। बागपत की चर्चा हुई और उस पर बोले नहीं। हाउस छोड़ कर के चले गये और बाहर जाकर के प्रेस वालों से मिल करके

बिमारी है नहीं देखती, नेता, धनी, किसान को,
अधिकारी, श्रीमन्त सरीखे, पंडित या विद्वान को।

वे जिस ढंग से प्रोपेगण्डा कर रहे हैं उसके पीछे राजनीतिक स्टन्ट के सिवाय और कुछ नहीं है। ये लोग जो दिल्ली में आगामी चुनाव होने वाले हैं, उत्तरप्रदेश में जो तीन-चार सीटों के लिए, जो कि लोक सभा की खाली हैं, उपचुनाव होने वाले हैं उसके लिए यह सारी स्टन्टवाजी कर रहे हैं। राजनीतिक स्टन्टवाजी इस देश का दुर्भाग्य रहा है, कुछ सूझ-बूझ वाले पत्रकार भी, पता नहीं किसी षड्यंत्र का शिकार हो उनके हाथों में खेल रहे हैं और देश को बर्बादी की ओर ले जा रहे हैं।

आज श्री चन्द्रजीत यादव ने यहां पर कहा कि राष्ट्रीय स्तर पर आन्दोलन चलायेंगे। किस के लिए चलायेंगे? बागपत की घटना के लिए। बागपत की घटना की जो हीरो है उसके बारे में मैं कह सकता हूं कि उस माया को श्री मधु दंडवते जी ने और श्रीमती दंडवते जी ने दो दिन तक अपने घर में रखा और उसके बाद ही वह प्रधान मंत्री तक पहुंचायी गयीं। महिलाओं के सम्बन्ध में आज चौधरी चरण सिंह और दूसरे विरोधी ग्रुप के लोग बात कर रहें हैं, उनके बारे में मैं कहना चाहता हूं। चौधरी चरण सिंह जब उत्तर-प्रदेश में सरकारी पदों पर थे, वहां के मुख्य मंत्री थे तो उन्होंने ये शब्द कहे थे कि हिन्दुस्तान की महिलाओं को घरों में बैठकर खाना बनाना चाहिए। किन्तु जब वे स्वयं विधान सभा में गये तो अपनी पत्नी को भी विधान सभा में सदस्य बनाकर ले गये। जब वे इस लोक सभा में आये यहां भी अपनी पत्नी को लोक सभा का सदस्य बनाकर ले आये। आज ऐसे लोग यह कहते हैं कि श्रीमती इन्दिरा गांधी श्री संजय को प्रोत्साहन दे रही हैं, उन्हें लोक सभा में ले आयी हैं। मैं पूछना चाहता हूं कि चौधरी चरण सिंह अपनी पत्नी को क्यों लाते हैं? मैं पूछना चाहता हूं श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा से उनकी पार्टी के लोगों से कि वे श्रीमती बहुगुणा को मेम्बर बना कर क्यों लाये?

उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से, इस हाउस में कहना चाहता हूं कि ये लोग दिल्ली के अन्दर लोकशाही की बात करते हैं, मेट्रोपालिटन काउंसिल के अन्दर लोकशाही की बात करते हैं। भारतीय जनता पार्टी जिसने कि तीन रंग बदले हैं, शराब वही है, सिर्फ बोतल बदली है, जब उस पार्टी के लोग दिल्ली कारपोरेशन में चुन कर गये तो उन्होंने बिना चुने हुए व्यक्ति श्री हंसराज गुप्त को और उनके बाद उनके पुत्र श्री राजेन्द्रकुमार गुप्त को दिल्ली का मेयर बनाया। आज ये इस बात की शिकायत करते हैं। यह है इनकी कथनी और करनी।

उपाध्यक्ष महोदय, इनके जमाने में महिलाओं की दो महत्त्वपूर्ण घटनाएं हुईं जिनका कि हिन्दुस्तान के अन्दर बहुत बड़ा चर्चा रहा है। एक चर्चा पेपरों में आया था सुषमा और सुरेश का। मैं जनता पार्टी के इन आकाओं से पूछना चाहता हूं कि क्या आपने उस घटना की यहां पर याद दिलायी? सुषमा और सुरेश कांड जो पेपरों में बड़ा प्रसिद्ध रहा, उसका हीरो कौन था? उसका हीरो, मैं इस सदन में कहना चाहता हूं कि वह अनेक रंगों से घिरा हुआ था। उस तत्कालीन स्वास्थ्य मंत्री, राजनारायण के बारे में क्या कहूं जो कि राजनीतिक रंगमंच का जो कहा जाता है, उसका नाम में नहीं लेना चाहता। उस व्यक्ति की कोठी से वह षड्यंत्र चलता था। वह प्रोपेगण्डा, चौधरी चरण सिंह के यहां जो सम्बन्धित लोग आते जाते थे उनसे उस प्रोपेगण्डे को प्रोत्साहन मिलता था। आज इस देश के ये नेता यह चाहते हैं कि इस राष्ट्र के अन्दर अच्छा शासन चले परन्तु उनकी कथनी और करनी में क्या अन्तर है। क्या सुषमा महिला नहीं थी? उस समय क्या इनकी अकल मारी गयी थी? कहां गया था उस समय उनका दिमाग, कहां गयी थी उस समय महिला के सम्मान की बात?

आज बागपत में माया की एक घटना को लेकर वे चलते हैं। पेपरों में इस घटना ने इसलिए महत्त्व प्राप्त किया क्योंकि राजनीतिक व्यक्ति इसके साथ जुड़ गये। मैं पूछना चाहता हूं कि क्या किसी महिला के सामने यदि दो व्यक्ति भी खड़े हों तो क्या उनकी उससे आंख मिलाने की हिम्मत हो सकती है? हजारों आदमियों के सामने क्या पुलिस किसी महिला के साथ बलात्कार करे, यह बात दिमाग में उतर सकती है? दोनों घटनाओं को लेकर एक और भी हीरो बनने चला था और वह

दुर्बल, मोटे धर्मशील या, कैसे भी बलवान को,
चिन्ता, कुण्ठा पनपे जिससे, भूलें उस अज्ञान को।

राजनारायण जी थे। जब गृह मंत्री जी हमारे वहां जांच करने के लिए गए तो वह भी वहाँ पहुंच गए और समझने लगे कि वह भी राजनीतिक रंगमंच के एक हीरो हैं और उनके सामने उन्होंने हुड़दंगवाजी करने को कोशिश की। राजनारायण जी ने कोई ठोस काम जीवन में नहीं किया, कोई रचनात्मक काम महिलाओं के बारे में, हरिजनों के बारे में, नहीं किया। स्टंटबाजी करके झूठा प्रोपेगंडा करके, झूठी बातें और झूठे वक्तव्य अखबारों में देकर वह चौदराहट करते रहे हैं। ये चेयरसिंह बने हुए हैं। कुर्सी की भूख ने इनको इक्ट्ठा किया। यह मेंढकों टोला टांय टांय करता रहा। मैं तो इनको बरसाती मेंढक कहता हूं जब बरसात होती है तब ये टांय टांय करने लग जाते हैं, बाहर निकल पड़ते हैं और बरसात समाप्त होते ही इनका पता नहीं चलता है। अपना उल्लू सीधा करने के लिए ये एक मंच पर आ कर मिलना चाहते थे और एक तराजू पर तुलना चाहते थे। लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि संसार का इतिहास आप देख लें। मेंढकों को कोई तराजू में तोल नहीं सका है। यदि आप दो मेंढकों को एक बार तराजू के एक पलड़े में रख दें और उसके बाद चार और मेंढक उस पलड़े में डाल कर तौलना चाहें तो दो जो पहले से मेंढक आपने रखे हैं वे बाहर निकल जायेंगे। उनका यह स्वभाव है। यही कारण है कि ये लोग अपवित्र गठबन्धन करके, अपने अपने स्वार्थों को साधने के लिए एक मंच पर आने का प्रयास करते रहे परन्तु इनके विचार मिलते नहीं थे इस वास्ते ये एक नहीं रह सके। कहां चौ० चरण सिंह और कहां जगजीवन राम जी, और कहां ये जन संघ वाले और कहां ये मार्क्सवादी। क्या मेल है इन सब में? एक पूर्व है और दूसरा पश्चिम है। इनकी विचारधारायें पूर्व और पश्चिम चल रही हैं। इनका जो भी गठबन्धन था वह बरसाती मेंढकों के माफिक था और स्वार्थ साधने के बाद इन्होंने फिर से एक दूसरे को हिट मारने का प्रयास किया और उस हिट मारने का जो परिणाम निकला वह आपको नजर आ रहा है और आप देख रहे हैं कि वे सारे के सारे उधर बैठे हुए हैं। हरिजनों पर, महिलाओं पर जो अत्याचार होते हैं उनके लिए पुलिस को दोष दिया जाता है। मैं एक बात कहना चाहता हूं। श्री चरण सिंह यहां पर गृह मंत्री थे। कंझावाला के अन्दर बीस सूत्री कार्यक्रम के अधीन हरिजनों को जमीनें दी गईं। वहां पर चरण सिंह जी की जाति के लोगों ने उन पर अत्याचार किया, सत्याग्रह किया, शरारतें कीं, उनको तंग किया। जब राष्ट्र का रक्षक ही भक्षक बन जाए, अगर गांव का कोतवाल ही चोर हो जाए तो गांव की रक्षा कौन करेगा? जिन के ऊपर जवाबदारी थी हरिजनों, महिलाओं के सम्मान की रक्षा की, वे तब कहां गए थे।

यंत्र नारियस्त पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:

यह हमारे देश की प्राचीन परम्परा रही है। जहां पर नारी का सम्मान होता है वहां देवताओं का वास होता है। एक नारी एक महान् शक्ति दुर्गा स्वरूपा, अध्यक्षा, प्रधान मन्त्री पद पर हैं। आज ये सब मिल कर शम्भु टोला उनका कुछ भी बिगाड़ नहीं पाया और वह यहां पर सिंहासन पर आसीन हैं।

खादी नीकर वाले हमारे भूतपूर्व विदेश मन्त्री,··· इनको में नागपुरी सन्तरे कहा करता हूं, चीन दौड़ते हैं कबड्डी खेलने के लिए खाकी वर्दी पहन कर और सारे चक्कर काटते रहे, लेकिन इनको पूछने वाला कोई नहीं था। लेकिन आज कांग्रेस "आई" के सत्ता में आने के बाद सारे संसार की ताकतें हमारे प्रधान मंत्री श्री मती इन्दिरा गांधी के चरणों में आकर विचार विमर्श करती हैं।

जहां तक कम्युनिस्ट भाईयों का या मार्क्सिस्ट भाईयों का सम्बन्ध है मैं कहना चाहता हूं कि इस देश में कम्युनिस्ट पार्टी को जन्म देने वाले श्री अमृतपाद डांगे थे और उनकी तपस्या साधना का ही यह फल था कि यहां हमारे देश में साम्यवाद की विचारधारा फैली। सारा जीवन उन्होंने साम्यवाद के फैलाने में लगा दिया है। अब बुढ़ापे में आकर उनका तीसरा नेत्र खुला है और उन्होंने कहा है कि, "गरीब जनता का कोई भला

जिधर देखता हूं खुदा ही खुदा है।
खुदा से नहीं चीज कोई जुदा है॥

कर सकता है तो श्री मती इंदिरा गांधी कर सकती है और कोई नहीं कर सकता है।" इनके आका ने जिन्होंने कम्युनिस्ट पार्टी को जन्म दिया और इतना ताकतवर बनाया···उनके ये विचार हैं।

उपाध्यक्ष महोदय, इस देश का दुर्भाग्य रहा है कि संसार की कोई ताकत इस देश को झुका नहीं सकी, परन्तु इस देश में जो रहे हुए गद्दार हैं, उन्होंने इस देश के साथ विश्वासघात कर के इस देश को हानि पहुंचाई है। किसी ने ठीक कहा है—

दिल के फफोले जल उठे,
सीने के दाग से।
इस घर को आग लग गई,
घर के चिराग से।

ये लोग रहते यहां पर हैं, लेकिन इनके दिल और दिमाग मास्को, चीन और पीकिंग की तरफ हैं। खाते-पीते यहां पर हैं, यहां पर पलते हैं और दिमाग अमेरिका, पाकिस्तान और चीन की तरफ चलता है। इन देशघाती, देशद्रोही लोगों से, मैं गृह-मंत्री से कहना चाहता हूं कि ऐसे लोगों से सावधान रहना है कि ऐसे व्यक्ति...

श्री रामावतार शास्त्री : उपाध्यक्ष महोदय, वह देशद्रोही किस को कह रहे हैं ?

Mr. Deputy-speaker : I will go through the proceedings.

श्री रामावतार शास्त्री : ये तमाम विरोधी दल के लोगों को कह रहे हैं, कम्युनिस्ट पार्टी के ऊपर बोलते-बोलते उन्होंने बात कही देशद्रोही की। मैं समझता हूं कि इस तरह की बात नहीं आनी चाहिए, आप इस तरह की बात को प्रोसीडिंग्ज से निकाल दें।

Mr. Deputy- Speaker : your Interests and your party's interests are safe in my hands. I will go through the proceedings and take appropriate action.

श्री भगवान देव : उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपसे प्रार्थना कर रहा हूं कि मैंने कहा है कि यहां रहकर जो दिल और दिमाग उधर रखते हैं, उसमें कोई आपत्ति नहीं है। संविधान के आधार पर और यहां पर जो हम शपथ लेते हैं उसमें भारत के साथ वफादारी के लिए हम प्रतिज्ञा करते हैं। जो प्रतिज्ञा लेकर इस देश के साथ वफादार हैं, उनके लिए कोई दो मत नहीं।

मैं गृह-मंत्री से प्रार्थना करता हूं कि छोटी-छोटी बात तो चलेंगी, चोरी-डाका, मारामरी, खूरेजी, यह कोई नहीं चाहता, न गृह-मन्त्री, न प्रधान मंत्री और विरोधी दल के लोग भी नहीं चाहते। यह तो जो लोग करते हैं वह अपने कर्म-भोग के चक्र के आधार पर करते हैं। प्रयास हर व्यक्ति करता है कि हम मिलकर कुछ करें कि इस देश में इस तरह की बातें न हों, परन्तु उसके लिए रचनात्मक सुझाव होने चाहिए।

आज माया के साथ कोई कांड हुआ है, गृह-मन्त्री ने कोई बात कही है, हमें चाहिए कि जाकर माया को कहें कि तू चल, तेरे साथ किस ने क्या किया है। गृह-मन्त्री ने यहां इस हाउस में यह बात कही है कि आप बताओ हमें, परन्तु इस तरह से आन्दोलन चलाना, दिल्ली, बुलन्दशहर, रोहतक में आन्दोलन चलाना, यह नाटक क्यों हो रहा है ? इस नाटक के पीछे राजनीतिक स्टंटबाजी के अलावा कुछ नहीं है।

उपाध्यक्ष महोदय, देश के अन्दर ऐसी अनेक बातें हर प्रकार की होती हैं जैसे उदाहरण दिया घर का। घर में समस्याएं होती हैं, लड़ाई भी होती हैं, परन्तु राष्ट्र की बड़ी-बड़ी समस्याओं को ध्यान में न रखकर, छोटी-छोटी बातों के पीछे, रोज मैं यह देखता हूं कि इस हाउस के शुरू होते, शून्य काल में यह टोला नियम की बात करता है, नियम आपको दिखाते हैं। नियम यह है कि अध्यक्ष की परमीशन लेकर आराम से बात कहनी चाहिए परन्तु यह टोला खड़ा हो जाता है। (व्यवधान)

शास्त्री जी, मैं नहले पर दहला तभी मारता हूं जब आप नियमों का उल्लंघन कर के खड़े हो जाते हैं। मैं कभी खड़ा नहीं हुआ। जब आपको देखता हूं कि संसद, जो हमारा सर्वोच्च स्थान है, यहां देश और विदेश की समस्याओं को लेकर हमें गंभीरता से विचार करना चाहिए।

नहीं संचय, नहीं साधना, नहीं तीर्थ, व्रत, दान।
मात भरोसे रहत है ज्यों बालक नादान॥

छोटी-छोटी बातें पेपर पर लेकर खड़े हो जाते हैं, वह दिखाकर इस सर्वोच्च स्थान का समय वर्वाद करते हैं ५,७ आदमी। इस पर नियन्त्रण भी रहना चाहिए, आपको इस पर विचार करना चाहिए।

मैं गृह-मन्त्री से प्रार्थना करता हूं कि छोटी-छोटी बातें आती हैं; ध्यान देना चाहिए, परन्तु जानबूझकर जो शरारत करता है, उस पर हमें किसी को छेड़ना नहीं चाहिए, परन्तु हमें कोई छेड़े तो उसको छोड़ना नहीं चाहिए। आपको यह नीति बनाकर चलना चाहिये।

मैं प्रार्थना करता हूं कि अत्याचार करने वाले से अत्याचार सहने वाला अधिक पापी है, मेरी दृष्टि में। क्यों सहन करते हैं जो पाप होता है, अत्याचार होता है? परन्तु जो प्रोत्साहन दे रहे हैं, उस पर भी दृष्टि रखनी पड़ेगी ऐसे तत्वों को प्रोत्साहन क्यों देते हैं। विदेशी ताकतें, बाहर से हमारे देश के लोगों को गुलाम बनाकर आर्थिक मदद देकर, कुछ और लोभ लालच देकर इस देश में तोड़-फोड़ करने का प्रयास कर सकती हैं, परन्तु इस देश में डर है, देश के अन्दर रहने वाले गद्दार और दुश्मनों से। उसके ऊपर आपको विशेष ध्यान देना पड़ेगा।

असम की बात है, झारखंड की बात है। झारखंड में क्या हो रहा है? छोटा नागपुर और सिंहभूम की तरफ कौन आन्दोलन कर रहे हैं। विदेशी तत्व, विदेशी मिशनरी काम कर रहे हैं। हम किसी को निकालने के पक्ष में नहीं हैं, परन्तु देशद्रोह का काम कर के, देश में बगावत करना चाहते हों, तो सिर उठाने के पहले दिन ही उसको कुचल देना चाहिए। ऐसे तत्वों को राष्ट्र से निकालना भी पड़े तो हमें उनको निकालना चाहिए।

मैं कुछ महत्वपूर्ण बातें गृह-मन्त्री जी से करना चाहता हूं कि इस देश के अन्दर और गृह-मन्त्रालय को सुचारू रूप से चलाने के लिए जो कुछ समस्याएं हैं, वे मैं आपके सामने पेश करता हूं :

आपको इस देश में तोड़-फोड़ बन्द करानी है, इस देश में शोषण को दूर करना है। स्मगलरों, डाकुओं, संग्रहखोरों, बदमाशों और गुंडों को तुरन्त गिरफ्तार कर के उन्हें जेल में ठूंस देना चाहिए, जैसा कि इमर्जेन्सी के समय किया गया था। अगर एक काम यह कर लिया, तो राष्ट्र का बहुत बड़ा कल्याण होगा।

जनता पार्टी के राज में स्मगलरों को लाकर श्री जयप्रकाश नारायण के सामने हाजिर किया गया। सर्टिफिकेट दे दिया गया कि देवता लोग हैं। जिन्होंने सारा जीवन इस धंधे में बिताया हो, उनके हाथ साफ कैसे रहेंगे? उन स्मगलरों को सर्टिफिकेट मिल गया कि ये लोग श्री जयप्रकाश नारायण के यहां हाजिर हो गये, अब उन्होंने सब पाप-कर्म, सोने-चांदी की चोर-बाजारी छोड़ दी होगी। उन लोगों को प्रोत्साहन मिला। उन्होंने काला-बाजारी के पैसे के आधार पर इस देश में अराजकता पैदा करने का प्रयास किया। राजनैतिक पार्टियों को मदद दे कर जो आन्दोलन और शरारतें की जा रही हैं, उनकी भी तहकीकात कीजिए और उन लोगों के खिलाफ कठोर कार्यवाही कीजिए।

जैसा कि कहा गया है, अति वर्जित है। गृह मन्त्री ने, और परम् आदरणीय प्रधान मंत्री जी ने भी, आसाम के सम्बन्ध में, और समस्याओं के सम्बन्ध में, बहुत ढील दे दी है। परन्तु अब तो पानी सिर के ऊपर से बहने लगा है। इन शरारती तत्वों को कुचलने के लिए आप को दंड का सहारा लेना चाहिए, क्योंकि राज्य तो दंड-व्यवस्था के बिना नहीं चल सकता है। जो बलात्कार करता है, उस के हाथ काट दीजिए, उसकी आंखें निकाल दीजिए; तो दूसरे किसी को साहस नहीं होगा। सख्ती से कानून का पालन कराइये।

पुलिस तथा अन्य तमाम सरकारी विभागों में कुछ ऐसे विदेशी तत्व भरे हुए हैं, जो मदद कर रहे हैं देश में रहने वाले कुछ लोगों को। आपको उनका भी सफाया करना पड़ेगा। आज देश में टेलिफोन खराब हैं, बिजली खराब है, पानी की व्यवस्था नहीं है, गाड़ियां टाइम पर नहीं आ रही हैं। ये समस्यायें क्यों हैं? उसका कारण यह है कि वहां गद्दार बैठे हुए हैं, आर एस एस के लोग बैठे हुए हैं, कम्युनिस्ट लोग, जो जान-बूझ कर शरारत

संग सखा सब तज गए कोई न निभयो साथ।
कह नानक इस विपति में, एक टेक रघुनाथ॥

कर के लाइनों को खराब करते हैं और जनता में सरकार को नीचा दिखाने का षड्यंत्र करते हैं। ऐसे तत्वों की जांच कर के उनके खिलाफ सख्ती से कदम उठाना पड़ेगा।

आज यहां पर बागपत की बात करते हैं, या दिल्ली में कोई घटना होती है, उसकी बात करते हैं। कम्युनिस्ट पार्टी, मार्क्सिस्ट या भारतीय जनता पार्टी के लोगों के सामने ऊंट निकल जाये, तो नजर नहीं आता है, पर चींटी नजर आ जाती है। पता नहीं, इन्होंने कैसे चशमे लगा रखे हैं। त्रिपुरा में सैकड़ों आदमी मर गये, वहां के गरीब आदिवासियों का कत्ले-आम किया गया, उनके घरों को जलाया गया। परन्तु उन पर जूं तक नहीं रेंगी। कोई लोक दल का व्यक्ति नहीं बोला; कोई मार्क्सिस्ट नहीं बोला, कोई भारतीय जनता पार्टी का व्यक्ति नहीं बोला। यदि चौ० चरण सिंह ने सत्याग्रह करना है, तो उनसे प्रार्थना है कि त्रिपुरा में जा कर सत्याग्रह करो। इस बहन के सम्मान की रक्षा की जिम्मेदारी गृह मन्त्री और सारे देश ने ले रखी है। उसकी तो जांच होगी, जो दंड देना होगा, देंगे। परन्तु सत्याग्रह वहां करो, जहां कत्ले-आम हो रहा है, गरीबों पर जुल्म हो रहे हैं।

और ये गृह राज्य मन्त्री जो थे धनिक लाल मंडल, इन को सी आर पी के नौजवानों ने गिरफ्तार किया और ये दूसरे व्यक्ति जिन के मैंने नाम लिए उन के खिलाफ दफा ३०७, ३७९ और १४७ के अधीन केस दायर किए गए। ये रक्षक रोज हरिजनों की बात अखबार लेकर दिखाते हैं। इन्होंने आइने में अपना चेहरा देखा है कि इन की करतूत क्या है? मैं गृह मन्त्री से प्रार्थना करना चाहता हूं कि आप इस बात पर विचार कीजिए कि जो हरिजनों पर अत्याचार करते हैं वह अत्याचार करने वाले कौन सी जाति के लोग हैं? मैं निश्चित तौर से कहता हूं कि ये लोग जो रोज यहां खड़े होकर हुड़दंगबाजी करते हैं इन लोगों की जाति इन लोगों से प्रेरणा लेकर के जरायम कर रही है। अत्याचार स्वयं करते हैं, आग भी लगाते हैं और फिर चिल्लाते भी हैं कि आग लग गई, आग लग गई। चोर को कह गए कि चोरी करो और साधु को कह गए कि सावधान रहो।

मैं गृह मन्त्री से प्रार्थना करता हूं कि भिन्डर जैसे पुलिस कमिश्नर को कोई ताम्रपत्र या और कोई ऊंचा पद दे सकते हैं तो जरूर दें।

पुलिस के अंदर उनकी आवश्यकताएं बहुत हैं। वह आप को भी पता है। मुझे कुछ कहना नहीं है। उनके आवास के बारे में उनकी और अनेक समस्याओं के बारे में, आप को सारा पता है। उस का आप ध्यान रखेंगे।

19-7-1980

साईं से सब होत है बन्दे से कछु नांहि।
राई से पर्वत करे, पर्वत राई मांहि॥

आचार्य भगवानदेव संसद में :—

जनहित का कार्य न करने वाले ट्रस्टों की सम्पत्ति जब्त करें
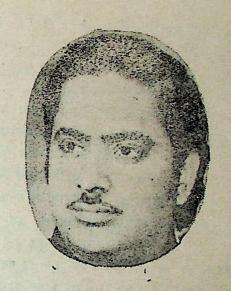
आचार्य भगवानदेव (अजमेर) उपाध्यक्ष महोदय, मैं माननीय वित्त मन्त्री जी को बहुत ही सुन्दर बजट पेश करने के लिए बधाई देता हूं। कहते हैं :

"चमन हरा हो,
फिर भी नजर न आया
तो यह चमन का दोष नहीं,
यह देखने वालों की दृष्टि का दोष है"

विरोधी दल के लोगों ने जो बातें कही हैं, मुझे उनकी बुद्धि पर तरस आता है। ऐसा लगता है कि उनकी बुद्धि का दिवाला निकल गया है और आज उनकी दुकान भी दिवालिया सी नजर आ रही है, कोई भी मैदान में नजर नहीं आ रहा है।

कुछ समय पूर्व मैंने आठ नौ देशों का दौरा किया और वहां मैंने गहराई से अध्ययन करने का प्रयास किया। मैंने यह देखा कि सारे संसार में अर्थ-व्यवस्था की दृष्टि से कोई भी देश हमारे देश का मुकाबला नहीं कर सकता है। यदि मैं किसी बात की चर्चा करूं लेकिन उसकी व्याख्या करने के लिए आप इतना समय आप मुझे नहीं देंगे। एक बात मैं जरूर कहना चाहता हूं, उसी से आप यह महसूस करेंगे—हमारे विरोधी पार्टी के बहुत बड़े आका, चौधरी चरण सिंह, अमरीका गए थे। वहां से लौटकर हजामत कराने के लिए उन्होंने एक हज्जाम को बुलाया तथा उनके मित्रों ने पूछा कि आपने बाल क्यों इतने बढ़ा लिए, क्या अमरीका में हज्जाम नहीं मिला ? तो उन्होंने जवाब दिया कि वहां हजामत कराने के लिए ४५ डालर लिए जाते हैं। अब हजामत के लिए ४५ डालर लिए जाते हैं, यह सोचकर के हमारी अर्थ-व्यवस्था के ठेकेदार, हमारे भूतपूर्व, जो कि भूत बनकर चले गए, मुझे उन लोगों की बुद्धि पर तरस आता है जो यह सोचकर चलते हैं कि भारत में नाई पैसे कम लेता है, इसलिए भारत में बाल कटवायें। यह तो ऐसी बात हुई कि यदि मकान बनाना हो, तो यह सोचें कि मकान पर खर्च हो जाएगा, इसलिये मकान नहीं बनाना चाहिए—तो भैया चौराहे पर बैठना पड़ा और आज वही हालत विरोधी पार्टी की हो गई है कि चौराहे पर बैठ गई है।

जो व्यक्ति खर्चा करना न जानता हो, वह पैदा भी नहीं कर सकता। यह प्रकृति का नियम है—एक बीज की जब तक कुर्बानी नहीं की जाती, खर्च नहीं किया जाता, धरती में डाला नहीं जाता, तब तक हमें उसका फल प्राप्त नहीं हो सकता। जब विरोधी पार्टियों के नेताओं का यह हाल हो तो उनकी पार्टी का क्या हाल होगा, वे लोग देश की अर्थ-व्यवस्था के बारे में क्या सोच सकते हैं।

आयेगो खुद ही बन्धी लक्ष्मी बांधे हाथ।
तू लक्ष्मी पति के चरण, पकड़ प्रेम के साथ॥

हमारे माननीय सदस्य—कम्युनिस्ट पार्टी के नेता—श्री इन्द्रजीत गुप्त ने कल अपने भाषण में इस बजट को "जुआ" बताया। किसी ने इसको सपना बताया, किसी ने दिल बहलावा बतलाया। मुझे तो अपने उन कम्युनिस्ट मित्र पर दया आती है कि जिसको इतना बड़ा उदार, इतना बड़ा भला दिखाई नहीं दिया, जब कि उन्होंने स्वयं स्वीकार किया कि इसके द्वारा २५ लाख मध्यम-वृत्ति लोगों को बहुत बड़ी राहत पहुंची है, लेकिन उन्होंने साथ ही कह दिया कि सरकार ने यह काम भय के कारण किया है। यह तो उपाध्यक्ष महोदय, ऐसी बात हुई—एक दफा एक हाथी बड़ी मस्ती से जा रहा था, कुछ कुत्ते उसको देख कर भौंकने लगे। जब वह काफी आगे बढ़ गया तो उसके मन में दया आई, सोचा कि बेचारे भौंकते-भौंकते थक गये होंगे, उसने मुंह फेरकर उन कुत्तों की तरफ देखा और कहा कि अब तो बहुत थक गए होगे। इस पीठ पर बड़े-बड़े नक्कारे बजे है, तुम्हारी इस तूती की आवाज को कौन सुनता है ? जिस श्रीमती इन्दिरा गांधी ने बंगला देश की मुक्ति के लिए काम किया, प्रीवी-पर्स को समाप्त किया, देश की अर्थ व्यवस्था को सुधारने के लिए बैंको,का राष्ट्रीय-करण किया, उसको आप कहते हैं कि मध्यम-वृत्ति लोगों के भय के कारण किया ? मैं पूछना चाहता हूं—क्या मध्यम-वृत्ति लोगों ने कोई आंदोलन चला रखा था जिसके कारण उनको परेशानी थी ? बड़े-बड़े आंदोलन चले, बड़ी-बड़ी शक्तियों के सामने हमारी नेता ने टक्कर ली, कभी नहीं घबरायीं, आज ये तूती बजाने वाले, डुगडुगी बजाने वाले विरोधी पार्टियों के लोग कहते हैं कि डर के कारण २५ लाख लोगों की राहत दी गई है। वे यह तो मानते हैं कि २५ लाख लोगों को राहत दी है, इस तरह की स्वीकारोक्ति के बाद भी उनका यह कह देना कि यह "जुआ" है, इस तरह की थोथी दलीलें देकर वे अपनी बात को यहां रखना चाहते हैं, परन्तु जनता अब बेवकूफ नहीं है, वह सब समझती है।

उपाध्यक्ष महोदय, इस देश के अन्दर जो रोशनी और प्रकाश देश को सरसब्ज बनाने की योजना, कांग्रेस पार्टी ने श्रीमती इन्दिरा गांधी के नेतृत्व में शुरू की है, जो बड़ी-२ योजनाएं बनाकर देश के सामने रखी गई हैं—ये अपना रंग लायेंगी, प्रभाव डालेंगी। मैं विस्तार में जाकर उनकी व्याख्या नहीं करना चाहता, लेकिन एक बात कह देना चाहता हूं—इस देश को यदि कोई खतरा है तो विरोधी पार्टियों के लोगों से, उनकी कुचेष्टाओं से है, जो देश को बरबाद करने के लिए तुले हुए हैं। सरकार को उनकी तरफ ध्यान देना चाहिए। यह प्रकृति का नियम है कि किसी भी चीज को पैदा करना हो, निर्माण करना हो तो उसके लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है, लेकिन यदि बरबाद करना हो तो बरबाद करने में देर नहीं लगती है।

आज मैं जार्ज साहब से पूछना चाहता हूं--जिन्होंने त्रिवेन्द्रम में कहा था कि बैंकों में जाकर छीना-झपटी करो, दूसरी तरफ ये भारतीय जनता पार्टी के लोग हैं—जो अब तक तीन रंग बदल चुके हैं। आर, एस. एस. के ये आका जो बड़े सिद्धान्तवादी कहलाते हैं, इन्होंने तीन रंग बदले—जनसंघ, जनता पार्टी और उसके बाद भारतीय जनता पार्टी। शराब वही है, लेकिन बोतल का रंग बदला है। ये लोग भी कोशिश कर रहे हैं---आसाम के आन्दोलन की बात करते हैं, चाहते हैं कि पेट्रोल और डीजल न आने दिया जाये। इस प्रकार की जो कुचेष्टायें हैं—यह अर्थव्यवस्था को बरबाद करने का प्रयास है। इनकी तरफ सरकार को ध्यान देना पड़ेगा। इस प्रकार के जो ठेकेदार लोग हैं जो राष्ट्र की सेवा करने का बहाना करके देश के चमन को बरबाद करना चाहते हैं, उनकी तरफ कड़ाई से कदम उठाना पड़ेगा।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं अपने पेट्रोलियम मंत्रालय को बधाई देना चाहता हूं—अभी परसों उन्होंने एक चोर-अरोड़ा को अपने डिपार्टमेंट में गिरफ्तार किया क्योंकि वह विदेशी लोगों के साथ मिला हुआ था।

इस तरह के जो चोर लोग बैठे हुए हैं डिपार्टमेंटों में उनको सख्ती से दबाना पड़ेगा। जो विरोधी पार्टियों के इशारे पर अराजकता लाना चाहते हैं उनके खिलाफ सख्ती से काम लेना चाहिए।

अधिक विस्तार में न कहते हुए, मैं चन्द बातें कहूंगा क्योंकि आप घंटी दबा देंगे। जो मुख्य प्वाइंट्स हैं, वे मैं

अगर कुछ मांगना हो तो खुदा से मांग ऐ अकबर।
यही वह दर है कि जिल्लत नहीं सवाल के बाद॥

आपके सामने पेश कर रहा हूं। एक प्रार्थना मैं अखबारी कागज के सम्बन्ध में करूंगा। जो प्रादेशिक भाषाओं के पेपर हैं, उनकी स्थिति बड़ी दयनीय है। बड़े-बड़े तवंगरों के जो पेपर निकलते हैं, जिनकी कम्पनियां हैं और जिन्हें काफी एडवरटाइजमेंट्स मिल जाते हैं, उन पर तो इसका प्रभाव नहीं पड़ेगा परन्तु प्रादेशिक भाषाओं के जो पेपर हैं, उनकी स्थिति बड़ी दयनीय है। उनके सम्बन्ध में माननीय मंत्री बड़ी गहराई से सोचें कि उनके लिए क्या किया जा सकता है और उन पर जरूर दया-दृष्टि रखें कागज की दृष्टि से।

एक बात मैं यह कहना चाहता हूं कि इस देश में साधू के भेष में शैतान बहुत बैठे हुए हैं। ट्रस्टों की जो बात कही गई है, तो उसके बारे में मैं यह कहना चाहता हूं कि उनके पास बहुत-सी सम्पत्ति है। आपने काले धन को निकालने की जो योजना रखी है, उससे भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण बात यह है कि आज धर्म के नाम पर, जनता के हितों के नाम पर कुछ लोगों ने ट्रस्टों की स्थापना की हुई है और उनके अन्दर ये शैतान बैठे हुए हैं साधु के भेष में और उनके बारे में आपको गम्भीरता से विचार करना पड़ेगा। आज कई तवंगर लोगों ने धर्म के नाम पर और जनता के हित के नाम पर ट्रस्ट बनाकर बहुत बड़ी सम्पत्ति पैदा कर ली है और उस लक्ष्मी पर सांप की तरह बैठे हुए हैं। ऐसे अनेक ट्रस्ट हैं, जिनमें धूर्त लोग साधु के भेष में शैतान बनकर बैठे हुए हैं, जो वहां पर चौधरी हैं और उनसे पैसा लेकर अपनी कम्पनियों में लगा देते हैं और उन ट्रस्टों को उन्होंने एक पैसा भी नहीं दिया है। इसके एक-दो उदाहरण मैं यहां पेश करना चाहता हूं और प्रार्थना करूंगा कि माननीय मंत्री जी और भारत सरकार इस पर सोचे। आप अरबों रुपया इन ट्रस्टों से प्राप्त कर सकते हैं, जो ट्रस्ट जनहित का कोई काम नहीं कर रहे हैं। उन ट्रस्टों का नाम मैं माननीय मंत्री को और सरकार को देना चाहता हूं।

इन ट्रस्टों के जो आका हैं, अधिकारी हैं और जो प्रेसीडेंट और सेक्रेटरी बने हुए हैं, उनका सम्बन्ध है।

ये कम्पनियां इन ट्रस्टों के पैसों को लेकर दूसरी कम्पनियों में डाल देती हैं और मेरठ के अन्दर एक कम्पनी है।

Mr. Deputy-Speeker : You have mentioned some names. But you have not given prior notice. Therefore, I will go through the proceedinges. He is not a Member of this House.

आचार्य भगवानदेव : मैं किसी का नाम नहीं ले रहा हूं, ट्रस्ट का नाम ले रहा हूं।

Mr. Deputy-Speaker : I will go through it.

आचार्य भगवानदेव : बहुत से ट्रस्ट्स हैं, जो जनहित में नहीं हैं। आर्य समाज के ट्रस्ट हैं या धार्मिक ट्रस्ट हैं और इन ट्रस्टों के आका, इनके हैड।

जिन्होंने इन ट्रस्टों में एक पैसा दान नहीं दिया है और इन ट्रस्टों के पैसों को अपनी कम्पनियों में लगाया है और वहां पर अपने बेटों और कम्पनियों को बांट दिया है।

Mr. Deputy-Speaker : Do not mention names.

आचार्य भगवानदेव : इनका जो पैसा है उसका दुरुपयोग किया जा रहा है शराब बनाने पर। इन ट्रस्टों के ऊपर सरकार को ध्यान देना चाहिए। जो ट्रस्ट जनहित का काम न करते हों, गुजरे हुए तीन साल के अन्दर काम न किया हो, उन ट्रस्टों की सम्पत्ति का राष्ट्रीयकरण किया जाए और उसको जब्त किया जाए। यह मैं सरकार से मांग करता हूं।

उपाध्यक्ष महोदय, मुझे बातें तो बहुत कहनी थीं लेकिन समय न होने के कारण मैं सरकार से प्रार्थना करता हूं कि जिन बातों का मैंने उल्लेख किया है, उस पर वह ध्यान दें और पुनः मैं बधाई देता हूं हमारे वित्तमंत्री को और प्रधानमन्त्री जी को। उन्होंने बहुत सूझबूझ से बजट पेश किया है और हम यह चाहते हैं कि हमारी आयु उनको लग जाए और वे राष्ट्र की खूब सेवा करें।

12-3-1981

□

फैलाए क्या कोई मेरे परवरदिगार हाथ।
बन्दे का एक हाथ है, तेरे हजार हाथ॥

आचार्य भगवान देव संसद में :

अल्प संख्यक लोगों की रक्षा करें

आचार्य भगवानदेव (अजमेर) : माननीय उपाध्यक्ष महोदय, यह देश का दुर्भाग्य है कि एक प्रांत के व्यक्ति दूसरे प्रान्त के व्यक्तियों पर वार करते हैं और हमला करते हैं। जहां तक हमारा अनुभव है लड़ाई सामान्य व्यक्ति नहीं करता है, तोड़फोड़ करने वाले व्यक्ति जो राजनीति में असफल हुए हैं और गुण्डे ही करते हैं, और उनकी मिली-भगत से ही होती हैं।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं बंगलौर गया था, जिस दिन वहां पर एक रैली निकाली गई। पासवान जी चले गये, वे भी थे, जाफर शरीफ साहब भी थे, हम बंगलौर संसदीय राजभाषा समिति के दौरे पर मैसूर जा रहे थे। हमें यह था कि वहां पर किसान रैली है और हम आठ-दस संसद सदस्य चार-पांच कारों में जा रहे थे, इन पर हमला हो जाएगा और पत्थर बाजी होगी। हमने वहां पर एक ट्रक नहीं देखा, जब दूसरे दिन वापिस लौट कर आये तो रिपोर्ट मिली, लेकिन रास्ते में कोई किसान नहीं मिला, तो यह रैली की किसने ? वहां हमको एक ट्रक नहीं मिला, पता यह लगा कि हमारे जो भूततूर्व, अब क्या कहूं श्री देवराज अर्स जी को, असफल राजनीतिज्ञ, पता नहीं क्या-क्या दावा करते थे, उनको हमारी अध्यक्षा के एक सैनिक, श्री गण्डुराव जी, ने ऐसा पछाड़ा कि चारों खाने चित पड़े, तो वह व्यक्ति उनको परेशान करने के लिए इस तरह की बहाने बाजी कर रहा था। उन्होंने वहां के शरारती तत्व और जो बेकार लोग घूमते हैं, उनको इकट्ठा करके वहां पर रैली निकाली और उसके बाद जो आन्दोलन चला, हड़ताल हुई, उसमें भी हमारे मार्क्सवादी और कांग्रेस देवराज अर्स के व्यक्ति थे, उन लोगों ने शरारती तत्वों को ले करके वहां यह हड़ताल कराई और तोड़फोड़ भी करवाई।
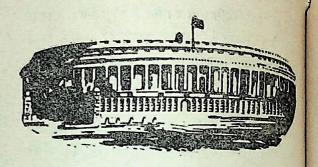
उपाध्यक्ष महोदय, जहां तक पोस्टर का ताल्लुक है, इस देश के अन्दर तीन ऐसे तत्व हैं—एक तो आर० एस० एस०, इन्होंने तो झूठे प्रोपगेंडे में गोवल्स को भी मात कर दिया है—दूसरे नक्सलवादी और तीसरे मार्क्सवादी और हमारे यहां बैठे हुए महारथी, पता नहीं क्या-क्या यहां पर नियम की बातें कहते हैं और बाहर कानून को तोड़ने की बात करते हैं काले धन को जब निकालने की बात आई तो कहने लगे छीना-झपटी करो, यह हमारे जार्ज साहब कहने लगे। हमारे जो असफल राजनीतिज्ञ व्यक्ति हैं, ये गुण्डों का सहारा लेकर इस प्रकार की शरारतें करते हैं और पोस्टर छपवाना और पत्रिकायें छपवाना आदि।

इस संवन्ध में मैं आपको एक जीता-जागता उदाहरण, जो मेरे साथ बीता है, पेश करता हूं। मैं संसदीय राजभाषा समिति के दौरे पर बाहर गया। अमेरिका के अन्दर मेरे संबन्ध में एक न्यूज उड़ाई गई, वहां पर "दीनदयाल उपाध्याय इन्टरनेशनल केन्द्र" है, जिसमें भारतीय जनता पार्टी के लोग हैं। उन लोगों ने वहां पर मेरे संबंध में एक ऐसी न्यूज़ उड़ाई कि "आचार्य भगवान देव वहां शराब पीकर होटल में गिर गया और मुझे लोगों ने उठाकर दूसरे होटल में ले गये। जिस भगवानदेव ने बीसियों किताबें लिखीं व्यसनों के खिलाफ और तामसी पदार्थों के खिलाफ।

तेरे दर को छोड़ कर जायें कहां हम बेनवा।
या बता दे अपने जैसा और कोई घर हमें॥

बीड़ी सिगरेट मैं नहीं पीता तो शराब पीने का तो सवाल ही कहां है। वहां प्रोपेगेंडा उसी दिन यहां दिल्ली के "आर्गेनाईजर" ने फोटो के साथ छापा तथा "न्याय" अजमेर में छपी और देश के जितने जनसंघी पेपर हैं, उनमें फोटो के साथ मेरी न्यूज छपी। नोटिस देने पर उन पत्रों ने खण्डन प्रकाशित किये हैं कि यह समाचार गलत छपे हैं। उन्होंने खेद प्रकट किया है। उन्होंने पश्चाताप किया है, लेकिन अभी भी पकड़ में हैं, मैंने तय नहीं किया है कि क्या करूं।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं एक बात बतलाता हूं—मैं गुजरात गया था, जहां पर ये दंगे और हुल्लड़ हो रहे हैं। मैंने वहां पर जाकर देखा कि एक "साधना प्रकाशन" है जो जनसंघियों और भारतीय जनता पार्टी का है, जिसके सम्पादक विष्णु भाई हैं, जिसका कार्यालय "रिलीफ सिनेमा" के सामने है, वहां से ऐसा साहित्य प्रकाशित होता है जिसको अलग-अलग प्रान्तों में भेज कर बगावत खड़ी की जा रही है। यह सही बात है – ये लोग गलत नामों से पत्रिकायें और पोस्टर छपवा कर कांग्रेस (आई) को बदनाम करते हैं। मैं पूछना चाहता हूं—क्या कोई व्यक्ति अपने घर में तोड़फोड़ कर सकता है? घर में आग लगा सकता है। यह न्याय का तकाजा है—कर्नाटक में कांग्रेस (आई) की हुकूमत है, महाराष्ट्र में कांग्रेस (आई) की हुकूमत है—क्या वे कभी चाहेंगे कि गुण्डों को प्रोत्साहन देकर अपने ही हाथों से अपने घर में तोड़फोड़ करायें, अपने प्रान्त में अराजकता पैदा करें। इस प्रकार की बातें यहां पर करना सदन को गुमराह करना है, पाप स्वयं करते हैं और उससे बचने के लिए इल्जाम कांग्रेस (आई) पर थोपते हैं। आज यह हालत है कि जो बड़े-बड़े गुण्डे हैं, जेब कतरे हैं—जेब काटकर दूर से चिल्लाते हैं कि जेब कतरा है, पकड़ो, जेब कट गई, इस तरह से दूसरों को उल्लू बनाते हैं और जेब काटकर धीरे से खिसक जाते है। यही हालत आज हमारे विरोधी पार्टियों के नेताओं की है। ये स्वयं तोड़-फोड़ करते हैं, झूठी पत्रिका छापते हैं, झूठे पोस्टर छापते हैं और कांग्रेस (आई) पर आक्षेप लगाते हैं। जिनकी वहां पर हुकूमत है, वे कभी तोड़फोड़ नहीं कर सकते हैं। इनकी बातों में कोई सच्चाई नहीं है।

लेकिन मैं इतना जरूर कहूंगा—जैसा हमारे गृह मंत्री जी ने आश्वासन दिया है कि उन शरारती तत्वों को नहीं छोड़ा जायेगा—मैं इस मौके पर अपने दोनों प्रान्तों के बहादुर मुख्य मंत्रियों, श्री गुण्डूराव जी और श्री अन्तुले जी को बधाई देता हूं, जिन्होंने वहां पर सख्ती के साथ कदम उठाया है और किसी पर आंच नहीं आने दी है।

अब जहां तक बम्बई का सवाल है मैं बम्बई के संबंध में भी कह दूं। अभी कहा गया है कि इसमें भी कांग्रेस का हाथ था। मैं शिवसेना की बात को भी साफ कर दूं—शिवसेना के अध्यक्ष बाल ठाकरे, अकाली दल वाले, मार्क्सवादी और नक्सलवादी—इन तमाम तत्वों, जो अराजकता फैलाने वाले तत्व हैं, की शान को यदि कोई ठिकाने लाई हैं तो वह श्रीमती इन्दिरा गांधी लाई हैं वहां पर नगर निगम के अन्दर जनता पार्टी के लोग, भारतीय जनता पार्टी के लोग शिवसेना के साथ मिलकर सांठगांठ करके हुकूमत चलाते थे। इन्हीं लोगों ने इसको प्रोत्साहन दिया। मुझे यह भी बताया गया है कि बाल ठाकरे आर० एस० एस० स्वयं सेवक था, उन्हीं की योजनाओं को लेकर, उन्हीं के गेरुवे झण्डे को लेकर, शिवाजी को सामने रखकर, उसने आन्दोलन शुरू किया। यह आर० एस० एस० की देन है, पुराना आर० एस० एस० वाला है जो तोड़फोड़ कराता है। चूंकि वहां पर मोर्चे आते हैं इसलिए, हमारे मुख्यमंत्री को वहां जाना पड़ता है, क्योंकि उनको वहां शान्ति स्थापित करनी होती है वहां जो तोड़फोड़ हुई है उसके सम्बन्ध में मैं गृह मंत्री जी से कह दूं—आपने कहा है कि ५० हजार का नुकसान हुआ है, कितना नुकसान हुआ है इसको आप देखिये, लेकिन मैं आपको एक सुझाव देना चाहता हूं—जिन लोगों ने अपराध किया है, तोड़फोड़ की है, कानून को तोड़ा है और जो गिरफ्तार हुए हैं यदि यह साबित हो कि वे गुण्डे हैं तो उन गुण्डों की सम्पत्ति को जब्त करके जिनका नुकसान हुआ है उनके नुकसान की भरपाई कराई जाये। हम हुकूमत के कोष से क्यों दें। उन गुण्डों की सम्पत्ति को जब्त किया जाय और उस सम्पत्ति

मांगू मैं क्या किसी से जरूरत है क्या मुझे।
देता है दस्ते गैब से मेरा खुदा मुझे॥

से जिनका नुकसान हुआ है उनको मुवावजा दिलाया जाय। लेकिन इस बात में कोई तथ्य नहीं है कि कांग्रेस (आई) की तरफ से ऐसा हुआ है। ये सारी शरारतें विरोधी पार्टियों के लोग करा रहे हैं।

मैं मंत्री जी से प्रार्थना करूंगा कि अल्प-संख्यक लोगों की रक्षा करने की जवाबदारी कांग्रेस (आई) ने ली है। श्रीमती इन्दिरा गांधी और उनके सैनिक कभी नहीं चाहेंगे कि हमारे किसी भी प्रान्त में दूसरे प्रान्त के किसी भी कौम या भाषा के बोलने वाले व्यक्ति को परेशान किया जाय। क्या आप इस प्रकार के कदम उठाना चाहते हैं कि जिन लोगों का नुकसान हुआ है उनकी भरपाई हो सके और जिन लोगों ने तोड़फोड़ की है उनसे उस नुकसान को वसूल किया जाय।

श्री योगेन्द्र मकवाना : माननीय सदस्य ने जो बातें कही हैं, मैं उनसे सहमत हूं। उनकी काफी बातों में सच्चाई है, लेकिन यह नहीं हो सकता है कि उनकी सम्पत्ति को जब्त करके उससे मुआवजा दिया जाय। मैंने कहा है—३९ लोगों को एरेस्ट किया गया है, उन पर केसेज चलाये जायेंगे और जो हमारे कानून में लिखा हुआ है, इन्डियन पीनल कोड की धाराओं के मुताबिक जो भी दण्ड उनको दिया जा सकता है, वह दिया जायेगा।

13-3-1981

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

महान समाज सेवी, त्यागी, तपस्वी एवं प्रभावशाली वक्ता आचार्य भगवानदेव जी के अभिनन्दन ग्रंथ प्रकाशन का समाचार जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। आचार्य जी इस समय ५० वें वर्ष में प्रवेश करने जा रहे हैं, मैं उनकी दीर्घायु के लिए परमात्मा से कामना करता हूं। उनकी कार्यप्रणाली वास्तव में अद्वितीय है। कुछ दिन पूर्व जो विश्व सिन्धी सम्मेलन बुलाया गया था। उसकी सफलता का सारा श्रेय आचार्य भगवानदेव जी को ही है। गत दिनों हम सार्वदेशिक सभा की बैठक में सम्मिलित होने के लिए १६, १७ एवं १८ दिसम्बर को हैदराबाद गये थे, वहां भी आन्ध्र प्रदेश के सिन्धियों द्वारा आचार्य भगवान देव जी का अत्यधिक सम्मान किया गया। उनका और मेरा सामाजिक कार्य-क्षेत्र में सर्वदा संपर्क रहा है। पीछे जब नैरोजी (केनिया) एवं लन्दन में आर्य महासम्मेलन हुआ था तो, उस अवसर पर आचार्य जी ने जो प्रभावशाली भाषण दिये थे, वे वास्तव में आर्यजनता के लिए एक प्रेरणा के स्रोत थे। अभी निकट भविष्य में इसी प्रकार समाज सेवा के फलस्वरूप काफी पथप्रदर्शन समाज का करेगें।

शुभ कामनाओं के साथ।

आपका
रामनाथ सहगल
सभा-मंत्री

उठो ! उठो ! कि जिन्दगी ही जिन्दगी पे बार है।
बढ़ो ! बढ़ो ! कि चार सू पुकार ही पुकार है।।

आचार्य भगवान देव संसद में :—

आकाशवाणी तथा उनके कर्मचारियों की सुविधाएं बढ़ावें

आचार्य भगवानदेव (अजमेर) : सभापति महोदय, आज सूचना और प्रसारण मंत्रालय की मांगों के ऊपर जो चर्चा चल रही है, उसमें भाग लेते हुए सर्वप्रथम तो मैं माननीय मंत्री जी तथा उनकी सहयोगी बहन कुमुद जी को बधाई देता हूं जिन्होंने जनता पार्टी के बनाने में जो आकाशवाणी एडवानी-वाणी बनी हुई थी, उसको वास्तव में आकाशवाणी बनाया है और उसको क्रियात्मक रूप दिया है।

दूसरी बात—जो मांगें रखी गई हैं—मेरी दृष्टि में ये पर्याप्त नहीं हैं, क्योंकि यह माध्यम है बातों के फैलाव का; विचारों के फैलाव का। अभी मैं ९-१० देशों का दौरा कर के आया हूं। वहां जितना खर्चा इस डिपार्टमेंट पर किया जाता है, उसको देखते हुए हिन्दुस्तान में सूचना और प्रसारण मंत्रालय के लिए जो बजट स्वीकार किया गया है, मैं समझता हूं एक तरह से अनाथालय बना दिया है। मांगें तो हम भी करेंगे, विरोधी पार्टियों के लोग भी करेंगे—हमारे बागड़ी जी जा रहे हैं, मैं क्या कहूं मेरे मित्र हैं...

श्री मनीराम बागड़ी : आप कहते हो तो बैठ जाऊंगा।

आचार्य भगवानदेव : बैठें तो बड़ा अच्छा है। आप शिकायत करते हैं। मैं कहता हूं रोते क्यों हो? चेहरा ही ऐसा है मैं क्या करूं। शिकायतें तो बहुत करते हैं, कहते हैं कि डिपार्टमेन्ट के लोग मेरे बारे में नहीं जानते कि मैं किस पार्टी में हूं। जो इतने रंग बदलता हो तो वे क्या करें। अभी कुछ समय पहले मैं बिहार जा रहा था। एक पेपर निकलता है—"आज" जो बनारस से प्रकाशित होता है। उसमें एक कार्टून छपा था। सम्पादक अपने विशेष संवाददाता से पूछ रहा है, तीन दिन से कहां गैर-हाजिर रहे? तुम तो विशेष संवाददाता हो, विशेष संवाद लाना था। कहने लगा—तीन दिन कोई विशेष संवाद नहीं मिला, इसलिए नहीं आया। साधारण समाचार तो और लोग लाते हैं। आज क्या विशेष समाचार लाये हो? उसने कहा—आज सारा दिन राजनारायण कुछ नहीं बोला, यह समाचार लाया हूं। उस दल के नेता बागड़ी जी हैं, पता नहीं पहले कितने दल बदले गये, लेकिन शिकायत करते हैं—जाति-पाति की। मैं पूछता हूं—वह अपने को बागड़ी जी क्यों लिखते हैं यहां पर शिकायत करते हैं। मैं इस बारे में अधिक नहीं कहना चाहता, बल्कि इस

बेतलब देते हैं जब देने पै आ जाते है वोह।
एक दामन में हजारों नेमतें पाता मैं हूं ॥

डिपार्टमेन्ट के बारे में कुछ बातें कहना चाहता हूं।

पहली बात तो यह है कि अमेरिका और लंदन में मैंने पता किया—वहां हमारी आकाशवाणी का कोई प्रतिनिधि नहीं है। यह एक बहुत बड़ी कमी है। मैंने लंदन में देखा—वहां टेलीविजन पर स्वर्गीय संजय गांधी के संबंध में एक बहुत ही रद्दी रील दिखाई गई, जिसका अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में बहुत बुरा प्रभाव पड़ा मैंने संसद में भी इस बात को उठाया था। इससे साबित होता है कि बी० बी० सी० यहां पर न जाने कितने एजेंट खुले रूप में और कितने गुप्त रूप में रख कर इसके पीछे पैसा खर्च कर रही है।

सभापति महोदय, मैं यह बताना चाहता हूं कि उस दृष्टि से जो हमारा बजट है, वह बिल्कुल एक अनाथालय जैसा ही है। मैं मांग करता हूं कि इस विभाग को अधिक से अधिक पैसा दिया जाए ताकि अच्छे से अच्छे कार्यक्रम वह रख सके हर क्षेत्र में टेलीविजन और आकाशवाणी की स्थापना कर सके।

रंगीन टेलीविजन के बारे में हमारे माननीय बागड़ी जी ने एक बात यह कही थी कि रंगीन टेलीविजन करने के लिए हमारे करोड़ों रुपये खर्च हो जायेंगे, हमारे ३०-३५ करोड़ रुपये खर्च हो जायेंगे। इस संबंध में मैं एक सुझाव साठे साहब को देना चाहता हूं सन् १९८२ में यहां पर एशियाई खेल हो रहे हैं और मुझे पता लगा है कि जापान और बाहर के देशों ने इसकी रंगीन फिल्म लेने के लिए आपसे मांग की है। वे मांग क्यों कर रहे हैं ? वे इसलिए इसकी मांग कर रहे हैं कि रंगीन फिल्म लेकर संसार में उसको बेचें और नफा कमाएं मेरा यह कहना है कि भारत सरकार के लिए यह एक अच्छा चान्स है कि यदि वह रंगीन टेलीविजन की व्यवस्था कर ले। कुछ रुपया खर्च कर के और रंगीन मूवी लेकर संसार को बेचे, तो रंगीन टेलीविजन पर बहुत ज्यादा खर्च होने से जो उसके बजट पर प्रभाव पड़ता है, वह नहीं पड़ेगा और करोड़ों रुपया वह इससे प्राप्त कर सकती है। इससे केन्द्रीय सरकार के बजट पर जो प्रभाव पड़ता, वह नहीं पड़ेगा और अधिक रुपया उसे खर्च नहीं करना पड़ेगा। इस पर सरकार गंभीरता से विचार करे। खेलों की रंगीन फिल्म ले और संसार में उसको बेचे और किसी विदेशी एजेन्सी को फिल्म न लेने दी जाए। इसकी मैं जोरदार मांग करता हूं और भारत सरकार इस बारे में गंभीरता से सोचे क्योंकि यह एक नफे वाली बात है और इसी बहाने रंगीन टेलीविजन भी शुरू हो जायेगा और इस तरह से एक बहुत बड़ा काम होगा।

दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि यहां पर 'समय' की बात कही गई। विरोधी पार्टियों की तरफ से यह कहा गया कि उनको कम समय दिया जाता है। मुझे आपसे यह शिकायत है कि हमें समय नहीं दिया जाता और मैं तो यह कहता हूं अपने माननीय मंत्री जी से कि वे एक जांच कमीशन बैठाएं और वह यह देखे कि हमारी और बागड़ी जी, हमारी और पासवान जी, हमारी और रामावतार शास्त्री जी की कितनी चर्चा होती है। यहां पर इस बारे में खूब चर्चा होती है। मैंने इन विरोधी पार्टियों को, जिनके नाम मैंने लिए हैं, आज तक यह जो पार्लियामेंट चालू हुई है और सातवीं पार्लियामेंट है, इसके अन्दर इन लोगों के नाम कितनी बार लिये गए और मेरा नाम कितनी बार लिया गया। उससे आपको अन्दाजा लग जाएगा कि कितना प्रोत्साहन विरोधी पार्टियों के लोगों को दिया जाता है और अनुपात की जो बात हमारे माननीय शर्मा जी ने कही, मेरा कहना है कि उस अनुपात के आधार पर हमें हक देना चाहिए। हमारा कोई उल्लेख नहीं होता है। शून्य काल के अन्दर कितना समय बर्बाद होता है, एक-एक और दो-दो घण्टे वर्बाद हो जाते हैं और अध्यक्ष महोदय कहते हैं कि 'टू दि प्वाइन्ट बात करिये,' खड़े होकर बात करिये लेकिन ये लोग खूब शोर मचाते हैं और एक घण्टा, दो घण्टे समय बर्बाद करते हैं।

अगस्त में अभी मैं लन्दन में था और वहां पर इण्डिया हाऊस में हमारे माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री बलराम-जाखड़, भी थे और वहां एक प्रेस कांफ्रेंस रखी गई थी। तो वहां पर प्रेस वालों ने पूछा कि आपके हिन्दुस्तान की पार्लियामेन्ट में रोज क्या हो रहा है और एक-एक, दो-दो घण्टे बर्बाद होते हैं और वहां पर बड़ा शोरगुल होता है।

भंवर में जा के फंस जाती है जब इन्सान की किशती।
त्वक्कुल बन के चप्पू पार किशती को लगाता है।।

इसका क्या मतलब है, यह भारत की पार्लियामेन्ट क्या मखौल बनी हुई है। तो उस समय माननीय अध्यक्ष, श्री बलराम जाखड़ ने यह कहा कि इसका जबाव मैं नहीं दे सकता क्योंकि मैं स्पीकर हूं और हमारे साथ ये मेम्बर आफ़ पार्लियामेन्ट आचार्य भगवान देव हैं, जो यहां बैठे हुए हैं, इसका जबाव ये देंगे। मैंने तुरन्त इसका जबाव दिया कि हम लोकशाही की स्थापना किए हुए हैं और जनता पार्टी के शासन में हमारी पार्टी की अध्यक्षा, श्रीमती इन्दिरा गांधी को, इस पार्टी ने तानाशाही अख्तियार करके हाऊस से निकाला था। और ये लोग तीन सेशनों में जो अगस्त तक हो चुके हैं, रोज शोरगुल करते हैं और हमने एक भी विरोधी पार्टी के किसी सदस्य को इस हाऊस में से बहुमत के आधार पर नहीं निकाला और एक घण्टे तक, दो घण्टे तक और डेढ़ घण्टे तक, ये शोरगुल करते हैं। उसकी सूचना लन्दन तक को मिलती है। इससे बढ़-कर लोकशाही क्या हो सकती है। हम आपको मौका देते है कि आपको जो बोलना हो बोलो और यह सारी सूचना सारे संसार में जाती है और पता चलता है कि इनकी क्या कीमत है, इनकी क्या वेल्यू है। आज जब बागड़ी जी बोल रहे थे, तो मैंने बीच में कुछ कह दिया तो हमारे बागड़ी जी का दिमाग उस वक्त तनाव में आ गया और उन्होंने कहा "बैठ जाइए"। मेरा कहना यह है कि "टू दि प्वान्ट" आप बात करके देखें। आपको दुनिया नहीं जानती है, अधिकारी नहीं जानते हैं, आकाशवाणी को पता नहीं कि आप कौन-कौन सी पार्टी बदलते हैं। जब आप इतनी पार्टी बदल चुके हैं, तो वे बेचारे क्या करें।

आप एक स्थान पर हों तो पता लगे। आप लोकदल में हैं, राजनारायण के साथ हैं, चौधरी चरणसिंह के साथ हैं यह तो पता लगना चाहिए। इसलिए किसी कर्मचारी को दोष देना मैं समझता हूं कि उचित नहीं हैं।

श्री मनीराम बागड़ी : मैं एक व्यवस्था चाहता हूं। क्या आप अनुमति दे रहे हैं? क्या यह सही है?

आचार्य भगवान देव : जब अध्यक्ष महोदय, खड़े होते हैं तो ये खड़े रहते हैं, उस समय बैठते नहीं हैं। उस समय भी ये हुड़दंगबाजी करते हैं।

आचार्य भगवान देव : आपने जिस अन्दाज में बात की, उसका आपको अन्दाजा नहीं है। आपका तो चेहरा ही ऐसा है।

माननीय सभापति महोदय, ये तो कुछ बातें विरोधी पार्टियों की थीं। अब मैं कुछ सुझाव देना चाहता हूं। एक तो मैं अपने एरिये के बारे में इस बजट में मांग करता हूं। मेरे क्षेत्र अजमेर में टेलीविजन टावर लगाने की बात थी। उसके बाद पता नहीं इसे क्यों टाला जा रहा है। मेरे पास एक लेटर आ गया कि इसे स्थगित किया जाता है। आप शादी की तारीख निश्चित करने के बाद यह कहें कि शादी नहीं होगी तो यह बड़ा अन्याय है। आप अजमेर क्षेत्र पर ध्यान दीजिये। वहां बहुत बड़े कलाकार हैं। अजमेर एक शिक्षा का केन्द्र है। बड़े-बड़े विद्वान् और कलाकार भी वहां हैं। वहां दरगाह शरीफ है, तीर्थराज पुष्कर है। वहां पर टेलीविजन केन्द्र की स्थापना करें।

आकाशवाणी का भी एक केन्द्र जो कि सभी दृष्टियों से सम्पूर्ण हो, आप वहां खोलें। राजस्थान से वार्डर लगता है। जैसा कि हमारे जैन साहब ने कहा कि वार्डर पर लोग पाकिस्तान का रेडियो सुनते हैं, हमारा रेडियो नहीं सुनते हैं क्योंकि हमारी आकाशवाणी वहां पहुंचती ही नहीं है। इसलिए आपको वहां के लिए एक पावरफुल रेडियो स्टेशन बना देना चाहिए। आप राजस्थान को एक पावर-फुल आकाशवाणी का केन्द्र दे दें जिससे कि वहां के लोग हमारी गतिविधियों को सुन सकें, वे पाकिस्तान की ही गतिविधियों को न सुनें। आशा है आप इस पर ध्यान देंगे और बाड़मेर हो या अजमेर हो, इस पर विशेष ध्यान देंगे।

एक मैं यह सुझाव देना चाहता हूं कि जिस भाषा के कलाकार हों उनको आपको उसी भाषा के प्रान्त में रखना चाहिए। यह न हो कि राथस्थान के कलाकारों को

तवक्कुल नाखुदा के हाथ का चप्पू है ओ नादां।
यही तूफान से किशती को लेकर पार जाता है ॥

आप तमिलनाडु में भेज दें। उससे उन्हें वहां कार्यक्रम नहीं मिल पाते। अगर आपको उनका तबादला करना ही है तो उसी प्रान्त में एक स्टेशन से दूसरे स्टेशन पर कर दें। अभी मुझे राजस्थान के कुछ कलाकार मिले थे, उन्होंने अपनी समस्या मेरे सामने रखी थी।

एक प्रार्थना मेरी सिंधी भाषा-भाषी लोगों के बारे में है। आपके प्रसारण केन्द्रों पर सिन्धी भाषा के कार्यक्रम निश्चित किये हुए हैं परन्तु मैंने दिल्ली में, भोपाल में, इन्दौर में, अहमदाबाद में, बम्बई में और बड़ौदा में यह देखा कि वहां के आकाशवाणी केन्द्रों पर सिंधी अधिकारी न होकर अन्य अधिकारी हैं।। कम से कम आपको सिंधी सैक्सन में तो सिंधी भाषा-भाषी अधिकारी रखने चाहिएं। हो सकता है कि कुछ मजबूरी हो लेकिन आप जानते हैं कि सिंधियों का कोई प्रान्त नहीं है, कोई रेडियो स्टेशन नहीं है। इसलिए सिंधी सेल में सिंधी ही अधिकारी रखने की आप कृपा करें।

मैं इस बजट का स्वागत और समर्थन करता हूं और आशा करता हूं कि जो सुझाव मैंने दिये हैं उन पर ध्यान देंगे

25-3-1981

□

तिलकराज मल्होत्रा

अध्यक्ष विशेष क्षेत्रीय समिति नई दिल्ली क्षेत्र

लाजपत नगर, नई दिल्ली-110024

मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि निर्भीक पत्रकार, ओजस्वी वक्ता, ख्याति प्राप्त लेखक, विभिन्न भाषाओं के ज्ञाता, संसद सदस्य आदरणीय श्री आचार्य भगवानदेव के ५० वें वर्ष में पदार्पण के अवसर अभिनन्दन ग्रन्थ का प्रकाशन किया जा रहा है।

आचार्य भगवान देव के सम्पर्क में आने का विशेष रूप से अवसर मुझे जनवरी ८३ के मास में मिला। उस समय दिल्ली महानगर परिषद एवं नगर निगम के चुनाव हुए थे। उस समय आचार्य जी ने मेरे समस्त चुनाव का कार्य अपने हाथ में संभाला था। चूंकि मेरे क्षेत्र में सिंधी बहुत बड़ी संख्या में रहते हैं। आचार्य जी ने सिंधी व हिन्दी में अपने भाषणों द्वारा जहां अन्य लोगों को आर्कषित किया वहां सिंधी समाज को विशेष रूप से आर्कषित किया। उनके ओजस्वी भाषण और घर-घर लोगों के निजी सम्पर्क के कारण ही मुझे अपने चुनाव में सफलता मिली। यह कहने में मुझे गर्व है। यह कहना भी अतिशयोक्ती नहीं है कि इनके कारण ही मेरे क्षेत्र में १६ वर्ष के बाद कांग्रस (इ) को सफलता मिल पायी है। उनकी समाज सेवा, कांग्रेस (इ) के प्रति आधार निष्ठा से मैं काफी प्रभावित हूं। और उसके लिए कृतज्ञ हूं।

आशा है मेरे उक्त कथन को उनके अभिनन्दन ग्रन्थ में स्थान आवश्यक रूप से दिया जाएगा जिसके लिए आपका आभारी रहूंगा।

सद्भावनाओं सहित।

भवदीय,
तिलकराज मल्होत्रा

मैं क्या जानूं पथ सुपथ, तेरे कर में रास।
जिधर मोड़ता रास तू, उधर 'विदेह' प्रयास॥

सार्वजनक ट्रस्टों का पैसा जनहित में लगे

आचार्य भगवानदेव : अध्यक्ष महोदय, कुछ दिन पूर्व वित्त मंत्रालय की मांगों के ऊपर बोलते हुए मैंने ट्रस्टों का उल्लेख किया था कि कुछ लोग जनहित की दृष्टि से स्थापित किए गए चैरिटी-ट्रस्टों का पैसा जनहित के कामों में प्रयोग न करके कुछ चन्द व्यक्ति स्वयं उपयोग कर रहे हैं। मंत्री महोदय ने इस बात को इस सवाल के अन्दर स्वीकार किया है। ट्रस्ट के जो अधिकारी हैं, उन अधिकारियों का सम्बन्ध यदि कम्पनियों से है या जिन कम्पनियों में वे भागीदार हैं, मैं खासतौर से श्री······जो दीवानचन्द ट्रस्ट के मंत्री हैं और आर० एस० एस० के······नेता हैं और भारतीय जनता पार्टी के नेता है, इस व्यक्ति का अनेक ट्रस्टों के साथ सम्बन्ध है, जिसका उल्लेख मैंने पिछली बार किया था।···(व्यवधान)

Mr. Speaker : Objection is well taken.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मेरी पार्टी से कोई संबंध नहीं है···(व्यवधान)···नाम का जिक्र है।

अध्यक्ष महोदय : यह नाम का जिक्र है, हटना चाहिए।

आचार्य भगवानदेव : यह व्यक्ति आर० एस० एस० का माना हुआ······व्यक्ति है। ···(व्यवधान)···

अध्यक्ष महोदय : जो व्यक्ति हाउस में नहीं है, उसका नाम नहीं लेना चाहिए।

श्री अटलबिहारी वाजपेयी : व्यवस्था का प्रश्न है।

अध्यक्ष महोदय : मैं भी यही कह रहा हूं। (व्यवधान)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : इस तरह की······नहीं करने दी जाएगी।

आचार्य भगवानदेव : नहीं है, यह नहीं है।

(व्यवधान)
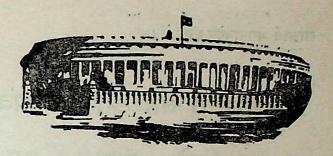
आचार्य भगवानदेव : यह व्यक्ति···मंत्री की हैसियत से

···**अध्यक्ष महोदय** : ट्रस्ट का नाम लीजिए, मैं किसी व्यक्ति विशेष का नाम नहीं लेने दूंगा।

आचार्य भगवानदेव : ···ट्रस्ट के सेक्रेटरी हैं।

अध्यक्ष महोदय : आप ट्रस्ट का नाम लीजिए।

आचार्य भगवानदेव : वे सेक्रेटरी हैं।

आचार्य भगवान देव : मैं यह कह रहा हूं कि दीवान चन्द ट्रस्ट के···

अध्यक्ष महोदय : ठीक है, ऐसा कहिए।

आचार्य भगवान देव : उसमें जो पैसा है, उस पैसे का उपयोग उस ट्रस्ट के जो अधिकारी हैं कम्पनियों में जिसके वे भागीदार हैं, उपयोग कर रहे हैं···।

आचार्य भगवानदेव : उसके अधिकारी कितना गबन कर रहे हैं, क्या इस बारे में सरकार जांच करके उचित कार्यवाही करेगी ?

यह पता लगता है कि कुछ डिपोजिट्स उस कम्पनी के जिसमें आफिस बीयर्रस पार्टनर्स हैं, वह रुपया जमा है और यह शर्तों का उल्लंघन है। जिन शर्तों के आधार पर टैक्स-एक्जम्पशन दिया गया है, उसका उल्लंघन पाया गया है। इसके सम्बन्ध में अवश्य कार्यवाही की जाएगी।

आचार्य भगवानदेव : इसकी जांच करने के बाद यदि सरकार को अनियमितता महसूस हो, तो क्या सरकार जो उन ट्रस्टों के अधिकारी हैं, उनको हटाकर के सुयोग्य व्यक्तियों के हाथों में इस ट्रस्ट की व्यवस्था को सौंपने सम्बन्धी कोई कदम उठाना चाहती हैं ?

27-3-1981 □

(को संसद में दिया गया भाषण)

जाऊं कहां किस से कहूं कोई न सुने पुकार।
तुझ बिन मुझ बलहीन को कोऊ न राखन हार॥

अंतर्राष्ट्रीय षड्यंत्रों को देखते हुए विदेश मंत्रालय का बजट बढ़ावें
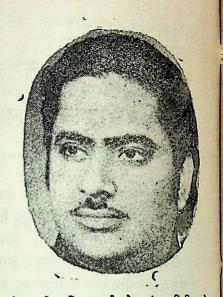
आचार्य भगवानदेव (अजमेर) : उपाध्यक्ष महोदय, विदेश मंत्रालय की मांगों के ऊपर, सारे संसार की समस्याओं को देखते हुए, आप चाहते हैं कि पांच मिनट में भाषण समाप्त कर दूं, गागर में सागर समा दूं। यह बड़ा कठिन है।

हमारे विदेश मन्त्री सीमित साधनों के होते हुए, परम आदरणीय नेता श्रीमती इन्दिरा गांधी के नेतृत्व और मार्गदर्शन में जो कार्य कर रहे हैं, उसके लिए वे अभिनन्दन के पात्र हैं। जहां तक मांगों का सवाल है, संसार की समस्याओं को देखते हुए वह अपर्याप्त हैं, ऐसा मुझे लगता है।

ये मांगें किसी अनाथालय के लिए मांगी गई हैं और स्वीकार की जा रही हैं। संसार में जितनी भी सरकारें और हकूमतें हैं, यदि उनके विदेश मंत्रालयों की मांगों में मैं विस्तार से जाऊं, तो इतना समय नहीं है। उन विदेशी सत्ताओं के आधार पर विभिन्न देशों में हमारे इस देश में जो गतिविधियां चल रही हैं—आनन्द मार्ग, नक्सलवादी और आर० एस० एस०—यदि इनके विस्तार में न जाऊं तो थोड़ा सा मैं दिल्ली के बारे में कहना चाहता हूं। बहादुरशाह जफर मार्ग पर इंडियन एक्सप्रेस की बिल्डिंग जो पेपर के लिए दी गई है, वहां पर तीन महीने से तीस हजार से अधिक विदेशी ठहरे हुए हैं यदि उनके खर्च को ध्यान में रखा जाए, तो मैं समझता हूं कि यह जो बजट पास किया जा रहा है, उससे अधिक खर्च जो वहां पर शिविर योग लगाया है, उस पर हुआ होगा। मैं चाहता हूं कि विदेश मन्त्री और भारत सरकार इसकी जांच करके देखे कि जो विदेशी यहां पर आए हैं, वे कितना पैसा लेकर यहाँ आये हैं और उन पर कितना खर्च रोज हो रहा है – खाने-पीने और कनवेन्स आदि पर। उसी से अन्दाजा लग जायेगा। यह योग शिविर ऋषिकेष में ले जाकर लगाया जा सकता है, इसको यहां लगाने की क्या आवश्यकता थी – यह एक उदाहरण मैंने आपके सामने पेश किया है। अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्र चल रहे हैं। विदेशी बड़ी-बड़ी सत्तायें इस देश के अन्दर बहुत बड़े षड्यन्त्र चला रही हैं। उस पर पैसा खर्च किया जा रहा है, उसको देखते हुए यह बजट पास किया जा रहा है। मैं इसको अनाथालयों का ही बजट कहूंगा। यह ठीक है कि हमारी आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए हमें अपना कदम आगे बढ़ाना पड़ेगा और मैं मांग करूंगा कि विदेश मंत्रालय के लिये विशेष रकम बढ़ानी चाहिए। वित्तमंत्री जी यहां नहीं हैं, मुझे आशा है कि यह बात सरकार तक पहुंचेगी।

आप देखेंगे कि हिन्दुस्तान के अन्दर रशिया, अमेरिका और जर्मनी आदि देशों से हिन्दी में और उर्दू में तथा अन्य भाषाओं में पत्रिकाएं यहां आती हैं। मैं पूछना चाहता हूं कि क्या हमारा विदेश मंत्रालय और देशों में हिन्दी की कोई पत्रिका निकालता है या निकालने की योजना है या

सिफाक चितवनं भी हैं कातिल नजर भी है,
क्या चीज हो गए हो तुम्हें कुछ खबर भी है?

विदेश मंत्रालय कोई पत्रिका प्रकाशित कर रहा है, जिससे वह अपनी और गतिविधियों की जानकारी विदेशों को दे सकें। मैं बोलना नहीं चाहता था, हमारी नेता श्रीमती इन्दिरा गांधी और विदेशमंत्री, जैसे सुयोग्य व्यक्तियों के होते हुए हम कोई बात करें, तो सूरज को दीपक दिखाने की बात होगी।

मैंने ९-१० देशों का दौरा किया है और मैंने वहां के दूतावासों से जानकारी ली और वहां की सुविधाओं को देखा तथा सदन में इस सम्बन्ध में चर्चा भी हुई, विरोधी पार्टियों की ओर से। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए मैं चन्द बातें कहना चाहता हूं। यहां पर सुविधायें नहीं हैं, जितनी पर्याप्त सुविधाएं वहां पर होनी चाहिए, वे वहां पर नहीं हैं। हिन्दी के बारे में मुझे अभी पता लगा, हमारे भूतपूर्व विदेश मंत्री, श्री अटल बिहारी वाजपेयी, जो हिंदी के हिमायती कहलाते हैं, जो कि यू० एन० ओ० में हिन्दी में बोले, क्या विदेश मंत्रालय ने इस सम्बन्ध में कोई जांच की कि आगे काम चल रहा है या नहीं, मैं कहना चाहता हूं कि हिन्दी में काम नहीं हो रहा है। हमने सुना है कि विदेश मंत्रालय ने वहाँ पर टाइपिस्ट भेजे हैं, लेकिन इनसे काम नहीं चलेगा। कहीं पर टाइपराइटर हैं. तो कहीं पर टाइपिस्ट नहीं हैं और कहीं पर टाइपिस्ट हैं, तो कहीं पर टाइपराइटर नहीं हैं। इसलिए इस कमी को भी आपको दूर करना पड़ेगा।

जहां तक विदेश नीति के सम्बन्ध में चर्चा की गई, एक तरफ तो कहा गया कि गुटनिरपेक्ष होना चाहिए और भारत रशिया की तरफ जा रहा है। तथा दूसरी तरफ विरोधी पक्ष के नेताओं ने जो विचार व्यक्त किए, उन सबको देखते हुए मुझे ऐसा लगा कि वह लोग अमरीका, चीन, पाकिस्तान की यहाँ पर वकालत कर रहे थे। उपाध्यक्ष महोदय, एक तरफ हमारे चव्हाण साहब, भूतपूर्व विदेशमंत्री रह चुके हैं, बोल रहे थे और दूसरी तरफ श्री रामजेठमलानी जी बोल रहे थे, यदि इन दोनों की तुलना करूं तो हमारे चव्हाण साहब ने विदेश नीति को बहुत बड़ी हिमायत की और श्री जेठमलानी जी को कुछ नजर नहीं आया, तो मेरे सामने राजा भोज और गंगू तेली की स्थिति सामने आ गई। इसलिये मैं कहना चाहता हूं कि इन गम्भीर परिस्थितियों को देखते हुए भारत सरकार बड़ी सफलता से विदेश नीति को आगे बढ़ा रही है।

जिनको कुछ पता नहीं है, लेकिन जब वह बोल रहे थे तो महसूस हुआ — जब वहां पर इमरजेन्सी थी उन दिनों वे अमरीका भाग गए थे, या तो वहां का जो पानी पिया है उसका प्रभाव है या अमरीका ने उनको विशेष निमन्त्रण पर अपने यहां बुलाया था—इस देश से तीन संसद सदस्य श्रीराम जेठमलानी, श्री जार्जफर्नांडीज और डाक्टर सुब्रह्मण्यम स्वामी वहां पर गये थे—उसका प्रभाव है। उपाध्यक्ष महोदय, इस देश को कभी कोई खतरा सीमाओं से नहीं हुआ, इस देश के अन्दर रहने वालों से ही खतरा रहा है। गौरी और गजनबी से लेकर अंग्रेजों तक यही हुआ है। ये लोग वहां गये थे—क्या सांठगांठ कर आये। भगवान जाने। विदेश मंत्रालय को इस पर गम्भीरता से ध्यान देना चाहिए। ये लोग वहां जाकर सांठगांठ करते हैं, फिर यहां आकर पाकिस्तान की बात करते हैं, हिमायत करते हैं। उनकी जुबान पर लकुवा क्यों नहीं मार गया। ये लोग वहां के सैनिक तानाशाह की वकालत कर रहे हैं —

Shri Jyotirmoy Bosu : On a point of order, Sir.

There are specific rules and conventions which we have been observing in this House. Countries with whom we have friendly relations, countries with whom we have diplomatic ralations, we do not malign them on the floor of the House. That has been the convention and we have rigidly followed it. Thorefore, in all fairness to this House and to those people about my Hon, friend is saying···

आचार्य भगवानदेव : उपाध्यक्ष महोदय, ये वे लोग हैं जिन्होंने सदन में खड़े होकर जनरल जिया की वकालत की है।

Shri Jyotirmoy Bosu : I have not yet finished.

बस यक नजर का धोखा है, बस यक नजरों का पर्दा है।
न मजनूं कोई मजनूं है न लैला कोई लैला है।

आचार्य भगवानदेव : इस देश को खतरा है तो ऐसे ही लोगों से है। चोर की दाढ़ी में तिनका।

Mr. Deputy Speaker : He has not mentioned anything about you.

Shri Jyotirmoy Bosu : This part should not form part of the record.

Mr. Deputy Speaker : I will go through the proceedings. If there is anything, I will see.

आचार्य भगवानदेव : इसमें ऐसी कौन सी बात है जो आपत्तिजनक है। मैं कह रहा हूं।

आज जो विरोधी पार्टियां हैं—उस समय यहाँ पर लोकशाही के होते हुए भी उन्होंने उस सैनिक तानाशाह की बात करके सत्ता में आने का प्रयास किया, आज वही लोग उस·········की वकालत इस हाउस में करते हैं—इनकी जीभ को लकुवा क्यों नहीं मार जाता ? जहां इस तरह की तानाशाही है—जिससे भुट्टो जैसे व्यक्ति को, जिसका इतना बड़ा अपराध नहीं था, फांसी पर लटका दिया। सर्वोच्च न्यायालय ने न्यायाधीशों को निकाल दिया। जो अपने यहां लोकशाही की स्थापना करने नहीं दे रहा है, उसकी ये लोग वकालत करते हैं। हम सच्चाई की बात करते हैं तो भी इनको आपत्ति होती है मैं आज आपको यह बात कह देना चाहता हूं—जहां तक पाकिस्तान का सम्बन्ध है, पाकिस्तान के कंधों पर अमरीका और चीन बन्दूकें रखकर एक बहुत बड़ा बवण्डर खड़ा करना चाहते हैं और एशिया के अन्दर बहुत बड़ा तनाव पैदा करना चाहते हैं ऐसे सैनिक तानाशाह की वकालत हमारे विरोधी पार्टियों के लोग कर रहे हैं।

हिन्द महासागर में एक तरफ अमरीका अपने कदम बढ़ा रहा है। यहां पर डीगोगार्शिया की बात कही गई है। मैं विदेश मन्त्री से प्रार्थना करना चाहता हूं—अभी थोड़े दिन पहले मालद्वीप के अन्दर ऐसी स्थिति पैदा हुई है कि वहां भारतीयों को परेशान करके निकाला जा रहा है—इसमें अमरीका का हाथ है। मैं सिसलीज गया था—वहाँ की स्थिति भी ऐसी ही है—अमरीका वहां अपना जाल बिछा चुका है। मौरिशस के बारे में मैं विशेष कहना चाहता हूं। वहां की स्थिति बड़ी विचित्र रूप धारण कर रही है। काफी समय से वहां भारतीय हाई कमिश्नर नहीं है—मैं जानना चाहता हूं कि उनके वहां न होने का क्या कारण है ? मैं प्रार्थना करना चाहता हूं कि जल्दी ही एक सुयोग्य भारतीय हाई कमिश्नर मौरिशस में नियुक्त किया जाए जो वहां की परिस्थितियों को ध्यान में रखकर काम करे। मौरिशस को आज एक छोटा भारत समझा जाता है। उनकी जो भी समस्या है—चाहे ऐरोप्लेन देने की बात है या जो भी सुविधाएं उन्होंने मांगी थीं, जिनको भारत सरकार ने स्वीकार किया था उसकी पूर्ति करने को कोशिश की जाय। काम चलाऊ भारतीय हाई कमिश्नर से मैं संतुष्ट नहीं हूं, उस व्यक्ति को मौरिशस से तुरन्त हटा देना चाहिये और एक सुयोग्य व्यक्ति को तुरन्त नियुक्त करके वहां भेजा जाना चाहिए।

इन शब्दों के साथ में विदेश मंत्रालय की मांगों का समर्थन करते हुए प्रार्थना करता हूं कि हिन्दी के प्रचार की तरफ ध्यान दें। हिन्दी की परीक्षा जो संस्था लेती आ रही है उनकी फीस कम की जाए। हिन्दी की पत्रिका प्रकाशित की जाय और सांस्कृतिक सम्बन्ध जोड़ने के लिये अच्छे सुयोग्य व्यक्ति विदेश भेजे जायें। आपने देखा होगा बड़ी-बड़ी चोटी लगाकर, धोती पहनकर लोग यहां आते हैं, क्योंकि उनमें आध्यात्मिकता की बहुत भूख है इसलिए अच्छे सुयोग्य व्यक्ति वहां भेजे जाएं।

इतना कहते हुए मैं विदेश मंत्रालय की मांगों का समर्थन करता हूं और यह मांग करता हूं कि इस मंत्रालय का जो बजट है, वह बहुत कम है और उसको बढ़ाया जाए।

31-3-1981

(को सांसद में दिया गया भाषण)

आह ! रो लेने से भी कब बोझ दिल का कम हुआ,
जब किसी की याद आई फिर वही आलम हुआ।

चोरों पर अंकुश लगावें

आचार्य भगवानदेव (अजमेर) : तेल और प्राकृतिक गैस आयोग संशोधन विधेयक का समर्थन करने के लिए मैं खड़ा हुआ हूं। हमारे पैट्रोलियम मंत्री जी का नाम ही प्रकाशचन्द्र सेठी है। प्रकाश और प्रकाश भी कैसा चन्द्रमा जैसा।

जब जनता पार्टी का शासन था उस समय जो पैट्रोल की, डीजल की और किरोसिन की स्थिति थी वह आपके सामने और देश की जनता के सामने है। लाइनें लगी रहती थीं और ऐसे चोरों के हाथ में प्रशासन आ गया था जिन्होंने सोना भी हड़प कर लिया, पैट्रोल भी पी लिया और अनाज का भंडार भी बरबाद करके देश का दिवाला निकाल दिया। मैं बधाई देता हूँ मंत्री जी को बड़ी कठिनाइयों के बावजूद इस देश के अन्दर जो पैट्रोल की, डीजल की और किरोसिन की परिस्थिति थी उसको बड़ी सूझबूझ से आपने संभाला है। एक तरफ इरान और ईराक की समस्या और दूसरी तरफ इस देश के अन्दर रहने वाले गद्दार जो असम के अन्दर चल रहे आन्दोलन का समर्थन करने का प्रयास कर रहे थे उसके कारण तेल, पैट्रोल, गैस और किरोसिन पर जो बुरा प्रभाव पड़ा देश की जनता उस परिस्थिति को जानती है। पंचर हो गई इनकी गाड़ी की हवा निकल गई। फिर भी कहते हैं गाड़ी को मंजिल तक ले जायेंगे। असम आन्दोलन चलेगा। चला कर देख लें। देश की जनता जानती है कि असम आन्दोलन को प्रोत्साहन देने वाले देश के जो गद्दार हैं और देशद्रोही हैं, देशभक्त कभी नहीं कहला सकते। इन परिस्थितियों के बावजूद, असम आन्दोलन, ईरान और इराक की परिस्थिति के बावजूद कठिनाइयों के समय अपने देश की नाव को संभाला है और कमी को पूरा करने का प्रयास किया है। आपने दौरे किये। चोरों पर अंकुश रखा और जो संशोधन आपने रखा है मैं उसका समर्थन करता हूं चोरों पर अंकुश रखनेके लिए। शासन डंडे से चलता है, डंडा उनके सिर पर होना चाहिए। आज मिस्टर अरोड़ा की गिरफ्तारी की है जिससे सारे पैट्रोलियम मंत्रालय के अन्दर हलचल मच गई है कि चोरी करेंगे तो हमें भी जेल में डाल दिया जायेगा। अंकुश रखने के लिए संशोधन परमावश्यक है और मैं इसका पूरा समर्थन करता हूं।। इससे भी और कोई कड़ा कदम आप ला सकते हो तो लाइये। हमें इस देश को चलाना है, प्रोत्साहन नहीं देना है चोरों को।

कौन नहीं जानता है कि जयप्रकाश नारायण जी के सामने जितने चोर और स्मगलर थे, जिनका समर्थन हमारे विरोधी पार्टी के लोग करते हैं; उनके सामने खड़ा करके डाकुओं को...

श्री रामविलास पासवान : सभापति जी, मेरा पौइंट

मिला जन्म उत्तम तुझे, कर ले कुछ उपकार।
समय न यह फिर मिल सके, जीता दाव न हार॥

आफ आर्डर है।

आचार्य भगवान देव : यह बिल्कुल बेहूदी बात करते हैं। चोरों के समर्थक रहे, जिन्होंने डाके डाले, जनता का खून किया। उन चोरों को इन्होंने जयप्रकाश नारायण जी के सामने खड़ा करके देवता बना दिया।

श्री रामविलास पासवान : सभापति जी, मैं आपसे कहूंगा कि आप इस शब्द को निकलवा दें अन्यथा आपके लिए हैडएक हो जायगा। असम से बोलते-बोलते चले गये जयप्रकाश जी के आन्दोलन तक जिसकी धूल के बराबर भी नहीं हैं।

सभापति महोदय : वह मैं देख लूंगा। I will go through it and if necessary I will expunge it.

आचार्य भगवानदेव : मैंने जयप्रकाश नारायण जी के ऊपर कोई आक्षेप नहीं लगाया। मैंने यह बात कही कि जयप्रकाश नारायण जी के सामने उन डाकू स्मगलरों को खड़ा कर दिया गया जो सारे देश का सोना और पैट्रोल पीकर देश को बरबाद कर रहे थे। यह बिना सोचे समझे और सुने खड़े हो जाते हैं तुरन्त। इनका तो काम है गाड़ी को पटरी से उतारना।

सभापति महोदय : आप बिल पर बोलिए, आचार्यजी।

आचार्य भगवानदेव : मैं बिल पर ही बोल रहा हूं। पैट्रोल और गैस के संबन्ध में बात है और चोरों के ऊपर अंकुश रखने की बात है। यह संशोधन जो लाया जा रहा है वह अंकुश रखने के लिए है। तो यह बिना हाथ पैर की बात कर सकते हैं मैं तो बिल्कुल टू दि पौइंट बात कर रहा हूं। इन चोरों पर अंकुश रखने के लिए हमारे माननीय मन्त्री जी ने जो संशोधन यहां पेश किया है, मैं उसका समर्थन करता हूं और अरोड़ा जैसे और भी कोई हो और उन पर आप इससे भी कड़े से कड़ा कदम उठा सकते हैं तो निश्चित रूप से उठाइये, मैं इसका पूरा समर्थन करता हूं।

इन शब्दों के साथ मैं माननीय मंत्री से प्रार्थना करूंगा कि आप गैस और तेल दोनों चीजें निकाल रहे हैं, इसमें आपका डिपार्टमेंट बहुत अच्छा प्रयास कर रहा है, बड़ी मेहनत से आपके मंत्रालय के साथी और कर्मचारी काम कर रहे हैं, इसके लिए आप बधाई के पात्र हैं। गुजरात और मथुरा में जो गैस और तेल निकालने का प्रयास किया जा रहा है, बीच में राजस्थान भी पड़ता है, उसका थोड़ा बहुत ध्यान रखें और वहां पर भी गैस वगैरा पहुंचाई जाये। इन शब्दों के साथ और अधिक न कहते हुए मैं बधाई देता हूं कि यह मंत्रालय बहुत अच्छा काम कर रहा है।

29-4-1981

(को संसद में दिया गया भाषण)

आपका कृपा पत्र प्राप्त हुआ, धन्यवाद, यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप आचार्य भगवानदेव जी सदस्य लोकसभा के आयु के पचास वर्ष पूरे करने पर एक पुस्तक प्रकाशित कर रहे हैं।

आचार्य जी एक ओजस्वी लेखक एवं प्रभावशाली वक्ता हैं। साथ ही उनमें समाज सेवा के लिए लगन तथा उत्साह है। उन्होंने अपने छोटे जीवन में ही बहुत से उतार-चढ़ाव देखे हैं और वे साहस से संघर्ष करते हुए आगे बढ़ते रहे हैं।

वे अभी पचास वर्ष के होनहार युवक हैं। मैं उनके प्रति शुभकामनाएं प्रकट करते हुए ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उन्हें स्वस्थ और चिरायु बनावें।

मुझे विश्वास है कि वे भविष्य में भी जनता की सेवा करके यशस्वी एवं लोकप्रिय बनेंगे।

१७-१-८४

नवाब का बेड़ा

भवदीय

दीपचन्द्र बेलानी

अजमेर

वतन हमेशा रहे शाद, काम और आबाद।
हमारा क्या है, अगर हम रहें — रहें न रहें॥

आचार्य भगवान देव संसद में :

विक्षुबध क्षेत्र

सख्ती से कदम उठावें

आचार्य भगवानदेव (अजमेर) : सभापति महोदय, विक्षुब्ध क्षेत्र (विशेष न्यायालय) अधिनियम, १९७६ का संशोधन करने वाला विधेयक, जो पेश किया गया है, उसका समर्थन करने के लिए मैं खड़ा हुआ हूं।

एक कहावत है कि—"जिसे पीलिये की बिमारी हो जाये, तो उसको चारों ओर पीलिया ही पीलिया नजर आता है। मैं कल से बड़े ध्यान से इस चर्चा को सुन रहा हूं और कल जब श्री सोमनाथ चटर्जी जैसे व्यक्ति ने कहा था कि यह इमर्जेन्सी को लाने का एक प्रयास है, तो मुझे यह कहना पड़ रहा है कि 'एमर्जेन्सी लाने का प्रयास, विरोधी पक्ष के लोग कर रहे हैं, जिनको ५ साल के लिए जनता ने चुनकर भेजा था और ढाई साल में पंचर होकर अपनी पोजीशन खराब करके वे अपने घर पहुंच गये।

जनता ने पुन: श्रीमती इन्दिरा गांधी को सत्ता में ला करके, न केवल लोक सभा में, बल्कि विधान सभाओं में भी बहुमत करके उन्हें जो सत्ता प्रदान की है उससे यह बात साबित हो गई है कि इस देश की जनता एमर्जेन्सी को चाहती है। इस देश के अन्दर किसी प्रकार की कोई अराजकता पैदा न हो, इस देश के अन्दर शान्ति स्थापित करने के लिए, अच्छा शासन चलाने के लिए यह आवश्यक है कि इस तरह के कदम उठाये जाएं जिससे कि देश में अराजकता और अशान्ति उत्पन न हो।

हम लोग इस लोकसभा के अन्दर शून्य काल में देखते हैं कि विरोधी पार्टी के लोग यह शिकायत करते हैं कि कहीं हरिजनों पर अत्याचार हो गये, कहीं अल्पमत के भाइयों पर, मुसलमानों पर अत्याचार हो गये। वहां पर केन्द्रीय सरकार कुछ नहीं कर सकती क्योंकि प्रान्तों का सवाल आता है और केन्द्र उनके मामलों में हस्तक्षेप नहीं कर सकता है। यदि इस तरह का संशोधन करके केन्द्र सरकार को अधिकार मिल गये तो यहां पर विरोधी पार्टियों को भी केन्द्रीय सरकार से जवाब-तलब करने का अवसर मिलेगा क्योंकि तब ये मामले केन्द्रीय सरकार के अधिकार क्षेत्र में आ जायेंगे।
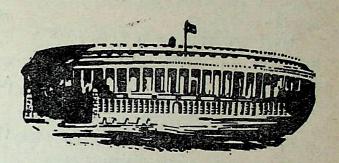
आज जो घटनाएं देश के अन्दर घट रही हैं, वे किसी से छिपी नहीं हैं। आज बंगाल की स्थिति, केरल की स्थिति, कश्मीर की स्थिति आप देख लीजिये। उधर खालिस्तान की बात को देख लीजिये। जो भी ऐसी घटनाएं घट रही हैं उनमें इस बिल को पास करना जरूरी है। सभापति महोदय मेरे सामने 'हिन्दुस्तान' अखबार रखा है। इस हिन्दुस्तान अखबार के अन्दर, यह दो मई का अखबार है, इसके प्रथम पेज पर लिखा है कि...

फिर नवभारत टाइम्स में लिखा...

Mr. Farooq Abdullah : On a point of order. Sir. How can he mention here the chief Minister of a state who cannot defend himself, by just merely quoting a newspaper?

(Dr. Farooq Abdullah-cd.)

How can he do it ? that is a wrong thing

Mr. Chairman : That is all right. You have raised your objection. I think, the name of a person and, particularly the Chief Minister, who

---

तेरे आजाद बन्दों की न ये दुनियां न वो दुनियां।
यहां मरने की पाबन्दी, वहां जीने की पाबन्दी॥

is not a member of the House should not be mentioned. You should not merely go on the basis of a news report.

आचार्य भगवानदेव : मैं बात वह कह रहा हूं जो पेपर के अन्दर लिखा है। (व्यवधान) पेपर के अन्दर लिखा है कि...

(व्यवधान)

सभापति महोदय : आचार्य जी आप आसन ग्रहण करिये।

You please speak on the Bill.

आचार्य भगवान देव : सभापति जी, जो प्रान्तों में स्थिति हो रही है उसका उल्लेख मैं सप्रमाण करना चाहता हूं। वहां जबाबदार लोग और पार्टियां एक दूसरे पर आक्षेप कर रहे हैं कि वहां पर ऐसा हो रहा है। इधर जनता पार्टी कह रही है कि बगाल के अन्दर, केरल के अन्दर अराजकता है, वहां कानून और व्यवस्था नहीं रही है जिसको कि स्थापित किया जाए। दूसरी तरफ भारतीय जनता पार्टी कह रही है कि केरल के अन्दर आर० एस०-एस० और विरोधी पार्टियों के लोगों की हत्याएं की जा रही हैं। इस तरह की परिस्थितियाँ बहुत से राज्यों में हैं।

कुछ दिन पहले हमारे लद्दाख के माननीय सदस्य ने यहां कुछ बातें कही थीं और मिस्टर फारुख जो यहां बैठे हुए हैं उनके ऊपर कुछ चार्जिज भी लगाये थे। इनके ऊपर यह चार्ज था कि ये दो प्रकार के विचार व्यक्त करते हैं। उसका फारुख साहब स्पष्टीकरण करें। मिस्टर फारुख ने हाऊस के अन्दर कोई स्पष्टीकरण नहीं किया है। (व्यवधान)

Farooq Abdullah : I have alreaoby explained. I have said it in the House and I have cleared this point. I have given notice of a privilege motion under rule 222. I have been waiting for the past 4-5 days to get anything out of it from the Hon. Speaker.

Mr. Chairman : You have made your position clear.

Mr. Farooq Abdullah : He is talking irrelevant.

आचार्य भगवानदेव : लद्दाख के मेम्बर ने जो चार्ज लगाये थे उनका स्पष्टीकरण इस हाऊस के अन्दर उन्होंने नहीं किया है। जितने भी आयकर के अधिकारी वहां गये थे, उनके बारे में उन्होंने जो पूछा था और उस मामले को सदन के सामने उन्होंने जो रखा था उसके बारे में... (व्यवधान)

डा० फारुख अब्दुल्ला : मैंने इस हाऊस में कहा है। (व्यवधान)

आचार्य भगवानदेव : आयकर के अधिकारियों की गर्दन काट करके आपने फूल-मालाएं पहनायीं। आयकर के अधिकारी कश्मीर गये। पहले दिन वहां किसी प्रकार का कोई दंगा नहीं हुआ, दूसरे दिन हुआ।

Mr. Farooq Abdullah : I would like to ask him......

Mr. Chaiman : please take your seat.

Mr. Farooq Addullah : How can I tell him? You are not protecting me.

सभापति महोदय : आप इस बिल पर बोलिये।

आचार्य भगवानदेव : मैं इस बिल पर ही बोल रहा हूं।

आचार्य भगवानदेव : अलगाववादी और अराजकतावादी परिस्थितियां प्रांतों में लाई जा रही हैं। तमिलनाडु के मेम्बरों ने कहा है कि वहां पर अत्याचार हो रहे हैं और वहां सरकार सुनियोजित ढंग से यह करा रही है। मेम्बर आफ पार्लियामेंट स्वयं भयभीत हैं। ऐसी अवस्था में केन्द्र का दायित्व हो जाता है कि वह कुछ न कुछ करे और इसी दृष्टि से यह संशोधन लाया जा रहा है यह तो चोर की दाढ़ी में तिनके वाली बात है। आप क्यों परेशान हो रहे हैं? अगर आप सच्चे हैं और ईमानदार हैं तो आपको परेशान होने की जरूरत नहीं है।

कहीं रावलपिंडी का रोड खोलने की बात कही जाती है, कहीं नक्सलवादियों द्वारा अराजकता फैलाई जा रही है। ईस्ट गोदावरी, वेस्ट गोदावरी, विशाखापट्टनम, खम्माम, वेरंगल आदि स्थानों पर नक्सलवादी अराजकता फैला रहे हैं। दीपावली के दिनों मैं सिरीकाकोलम क्षेत्र के जंगलों में घूमा हूं वहां पर "भूमि-भागवतम्" के नाम के नाटक

लाभ क्या है उन करों से, जो न गिरते को उठाएं।
या कि बन दानी जगत् में, कीर्ति न अपनी बढ़ाएं॥

दिखाकर ग्रामीण जनता में विद्रोह पैदा किया जा रहा है। बिहार में छोटा नागपुर के अन्दर विदेशी ईसाई पादरी गतिविधियां चलाकर अलग राज्य स्थापित करने का प्रयास किया जा रहा है। दूसरी तरफ मार्क्सवादी सिंहभूमि क्षेत्र के नाम से झारखण्ड प्रान्त की बात कर रहे हैं।

इन स्थानों पर ला एण्ड आर्डर की स्थापना करने के लिए केन्द्र के सिवाय और कोई कदम नहीं उठा सकता। (व्यवधान) इन सब क्षेत्रों में अराजकता पैदा करने का प्रयास किया जा रहा है। छोटा नागपुर और मणिपुर नक्सलवाद से प्रभावित क्षेत्र है और वहां पर अराजकता है। मुझे तो यह भी रिपोर्ट मिली है कि गुप्त संगठन बनाकर बंगाल, केरल, तमिलनाडु और कश्मीर आदि में अराजकता लाने का सुनियोजित ढंग से प्रयास किया जा रहा है और सरकारी मशीनरी और सरकार के लोग उनको सपोर्ट कर रहे हैं।

अभी कांग्रेस-आई के लोगों ने बंगाल में अहिंसात्मक आंदोलन चलाया और जुलूस निकाला। देश भर के प्रसिद्ध पेपरों में पुलिस के हाथ में पत्थर थे। वे पत्थर लेकर नागरिकों के ऊपर वार कर रहे हैं। पुलिस द्वारा पत्थर मारने वाली बात समझ में नहीं आती। पुलिस जुलूस को रोक सकती है, आंसू गैस के गोले फेंक सकती है और लाठी चार्ज कर सकती है, गोली चला सकती है, परन्तु पत्थर उठाकर शान्तिमय आंदोलन करने वाले व्यक्तियों पर वार करने का यदि कोई प्रयास करती है तो इससे एक बात स्पष्ट हो जाती है कि उन सरकारों के द्वारा पुलिस तंत्र में राजनीतिक पार्टी के लोगों को भर्ती किया गया है और उनके द्वारा जनता पार्टी का दमन करने का प्रयास किया जा रहा है।

इस तरह से रक्षक यदि भक्षक बन जाएं और प्रान्तों की सरकारें अपने ढंग से काम करें और अपनी जवाबदारी महसूस न करें तो केन्द्र का दायित्व हो जाता है कि उसके ऊपर नियन्त्रण रखे।

इन शब्दों के साथ मैं इस संशोधन का हृदय से समर्थन करता हूं। मैं तो चाहता हूं कि इससे भी ज्यादा कड़ा कदम उठाना चाहिए, क्योंकि इस देश की जनता ने चुनाव के अन्दर स्पष्ट बहुमत दे करके इमर्जेन्सी का समर्थन किया है। यह मामूली सी बात है, मैं चाहता हूं कि इसके लिए और कठोर कदम उठाने चाहिएं ताकि जो अराजकता हिन्दुस्तान में फैलाई जा रही है और जो लोग तोड़फोड़ कर रहे हैं और कानून को अपने हाथ में ले रहे हैं, उनका दमन करने के लिए और सबक सिखाने के लिए सख्त से सख्त अगर कोई कानून हो सकता है तो उसको सदन में लाना चाहिए।

इन शब्दों के साथ मैं इस संशोधन का हृदय से समर्थन करता हूं और स्वागत करता हूं।

5-5-1981

दत्तात्रेय वाब्ले

(भू. पू. प्रिंसीपल दयानन्द कालेज)

मन्त्री

आर्य समाज शिक्षा सभा, अजमेर

6 बी, मयूर कालोनी अजमेर

२९-१२-१९८३

आचार्य भगवान देव को हार्दिक शुभकामनायें

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आचार्य भगवानदेव को उनके ५०वें जन्म दिवस पर अभिनन्दन ग्रन्थ प्रस्तुत करने की योजना है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वे दीर्घायु हों और इसी प्रकार देश और समाज की सेवा करते रहें।

प्रिय भगवान देव मेरे निकट स्नेही और परिचित मित्र हैं। सार्वजनिक जीवन में उनके यश, सेवा और उत्कर्ष से मुझे प्रसन्नता होना स्वाभाविक है। आर्य समाज के प्रति उनकी निष्ठा विशेष प्रसन्नता की बात है। मेरी हार्दिक शुभकामनायें उनके साथ हैं।

दत्तात्रेय आर्य

उम्रे दराज माँगकर लाये थे चार दिन।
दो आरजू में कट गये दो इन्तजार में॥

आचार्य भगवानदेव संसद में :—

गांधी शान्ति प्रतिष्ठान
की
जांच हो।

आचार्य भगवान देव (अजमेर) : सभापति महोदय, गांधी शांति प्रतिष्ठान के द्वारा गत चुनाव में महात्मा गांधी की छवि को बिगाड़ने का प्रयास किया गया। सर्वोदय के नाम पर भी कावे में कुफ्र किया गया। और कम्युनिस्ट पार्टी के द्वारा तो आजकल ऐसे चित्र भी निकाले जा रहे हैं, जिनमें गांधी के हाथ में साम्यवाद का झण्डा भी दिया गया है।

चूंकि चर्चा का समय कम है, इसलिये मैं एक पाइंट को आपके सामने पेश करना चाहता हूं। गांधी जी की हत्या करने वाले लोगों ने जब यह बात कह दी कि हम अब गांधीवाद में विश्वास रखते हैं तो इससे हम समझ सकते हैं कि गांधी जी के साथ विश्वासघात करने वाले, धोखेबाज व्यक्ति गांधी जी को किस किस लाइन पर ले जाना चाहते हैं और उसके पीछे क्या षड्यन्त्र है। जो लोग आर० एस० एस० में थे, वे रंग बदल कर जनसंघी बने, जनसंघ से वे भारतीय जनता पार्टी में गए और उसके बाद चौथा रंग बदला। जब भारतीय जनता पार्टी बना कर उन्होंने उस अधिवेशन में गांधीवाद की बात कही, तो इससे पता लगा कि इस देश में बहुत बड़े गद्दार एक बड़ा षड्यन्त्र कर रहे हैं गांधी जी के साथ।

जो लोग आज गांधीवाद की बात करते हैं, उन्होंने गांधी जी की हत्या कराने में सहयोग किया। भारतीय जनता पार्टी के लोगों ने यहां दिल्ली में और बाहर जनता पार्टी के नाम से वोट लिए, और जनता को बिना पूछे नई पार्टी बनाकर, अपने सिद्धान्त ताक पर रख कर, दुनिया के सामने कुछ और रखने का प्रयास किया।

शराब वही थी, रंग बदल दिया बोतल का अन्दर जहर था, उस जहर को अमृत का रूप देकर गांधीवाद का चोंगा पहनकर……

आचार्य भगवानदेव : सभापति जी, गांधी जी के नाम से, उनके साहित्य को, विचारधारा को विकृत करने का जो प्रयास चल रहा है और उसमें भी गांधी जी से संबंधित—गांधी पीस फाउन्डेशन, गांधी संग्रहालय, गांधी स्मारक निधि और सर्व-सेवा संघ—तथा उनसे सम्बन्धित इनके अधीन जो अनेक संस्थाएं चलती हैं, उनमें ही बहुत बड़ा काबे में कुफ्र हो रहा है। इन संस्थाओं के एक बहुत बड़े जवाबदेह अधिकारी है। यह व्यक्ति वास्तव में गांधी जी की आत्मा की हत्या कर रहा है, इन संस्थाओं में रह कर। इन तमाम संस्थाओं के अन्दर और इनके अधीन संस्थाओं में, मैं समझता हूं जैसी कि मैं जांच कर पाया हूं,

सब से प्रिय पुत्र है, पुत्र से प्रिय प्राण।
दसरथ ने दोनों तजे, पर वचन न दीनो जान।।

सौ से ऊपर ऐसी संस्थाएं हैं, जिन संस्थाओं में यह कहीं पर तो चेयरमैन बना हुआ है, कहीं पर सेक्रेटरी है, कहीं पर ट्रेजरार है। इन गांधी जी के नाम से चलती हुई संस्थाओं के अन्दर आजकल गांधीजी से सम्बन्धित विचार धाराओं पर कार्य न करके वह एक अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक षड्यन्त्र का अड्डा बना हुआ है।

जो इन संस्थाओं के सिद्धान्त हैं ये उनके बिलकुल विपरीत कार्य कर रहे हैं। हमें यह मालूम है और आपको भी पता है कि आसाम में जो आंदोलन चल रहा है उस आंदोलन के पीछे जितने भी फार्मूले तैयार किए गये—चाहे श्री मोरार जी फार्मूला हो, चाहे अटल बिहारी वाजपेयी फार्मूला हो, चाहे छात्रों का फार्मूला हो, चाहे गांधी पीस फाउण्डेशन फार्मूला हो—यह सारे फार्मूले इन्हीं संस्थाओं में रहकर बनाए गये हैं। इससे यह साबित होता है कि ये संस्थाएं अपने नियम, उद्देश्य के विपरीत एक अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का अखाड़ा बनी हुई हैं।

दूसरी बात—जयप्रकाश जी का जो आंदोलन चला, उसकी तमाम गतिविधियां यहीं, इन्हीं संस्थाओं से, चलती रहीं और उनका सारा खर्चा···

सभापति महोदय, आपने कुछ लोगों के नाम लिए हैं—क्या आपने पहले से सैक्रेटेरियट को लिखकर भेजा है कि आप उनके नाम लेंगे? अगर नहीं भेजा है तो नाम न लीजिए।

आचार्य भगवानदेव : हमारे मैम्बरों में से किसी ने लिखकर दिया है, शायद श्री फैलीरो जी ने दिया है। मैं भी लिखकर दे दूंगा।

सभापति महोदय : अगर पहले नहीं दिया है, तो उनके नाम नहीं लेंगे।

आचार्य भगवानदेव : सभापति जी, जो सम्बन्धित व्यक्ति हैं, जो चेयरमैन हैं, जो सेक्रेटरी हैं, जो काबे में कुफ्र कर रहे हैं उनका उल्लेख नहीं करूंगा तो कैसे चलेगा?

सभापति महोदय : उल्लेख कीजिए, लेकिन नाम न लीजिए। सेक्रेटरी और चेयरमैन कह दीजिए।

आचार्य भगवानदेव : तब तो यह सारी लिस्ट भी पढ़ कर सुनानी पड़ेगी, जो अलग-अलग संस्थाएं उन्होंने बनाई हुई हैं और क्या-क्या षड्यन्त्र उन में कर रहे हैं।

सभापति महोदय : बस नाम न लीजिए, और सब कुछ कहिए।

आचार्य भगवानदेव : इन संस्थाओं के अन्दर जो गतिविधियाँ चलती रही हैं, उनसे भी यह साबित होता है, जैसे जयप्रकाश नारायण का मैं उल्लेख कर रहा था, उन्होंने जो आन्दोलन चलाया, उसको।

श्री मनीराम बागड़ी : सभापति जी, यहाँ जयप्रकाश जी का नाम लिया जा रहा है। जो लोग स्वर्ग के अन्दर हैं, चाहे नेहरू जी हों, जयप्रकाश जी हों या किसी अन्य विचारधारा के बड़े आदमी हो, उनके बारे में सदन में इस तरह से कहना ठीक नहीं है।

आचार्य भगवान देव : मैं संस्थाओं के नाम ले रहा हूं।

श्री मनीराम बागड़ी : जयप्रकाश जी के आंदोलन का नाम लिया है।

आचार्य भगवानदेव : उनका उल्लेख क्यों नहीं करूंगा? जो राजनीतिक षड्यन्त्र चलता है...

श्री मनीराम बागड़ी : तुम सब हो...

आचार्य भगवान देव : सभापति जी, इनकी जुबान पर लगाम लगाइये, ये बे-लगाम होते जा रहे हैं...

श्री मनीराम बागड़ी : जयप्रकाश जी के बारे में क्यों कहा जा रहा है?

आचार्य भगवान देव : ये मर्यादा तोड़ रहे हैं... सभापति जी।

सभापति महोदय : बागड़ी जी, आप बुजुर्ग आदमी हैं। हम आपसे आशा और उम्मीद करते हैं कि कम से कम...लफ्ज सदन में इस्तेमाल न करें।

श्री मनीराम बागड़ी : ठीक है, नहीं कहना चाहिए था। यह सही बात नहीं है, नहीं कहना चाहिये था। लेकिन इनको भी जयप्रकाश जी का नाम नहीं लेना चाहिये था।

आचार्य भगवान देव : इन संस्थाओं में रहकर इन संस्थाओं के माध्यम से जो आन्दोलन चलाये जा रहे हैं और जिस नाम से आन्दोलन चलाये गये हैं, उनके नाम का

जो और की बस्ती रखे, उसका भी बसता है खिरा।
जो और की चेते बदी उसका भी होता है बुरा॥

उल्लेख कर दिया, तो इसमें मैंने कोई गलत काम नहीं किया। इन संस्थाओं के अन्दर अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्र चल रहे हैं जिस व्यक्ति का मैंने अभी उल्लेख किया, उसके द्वारा जो गतिविधियां चलाई जा रही हैं, अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से, चाहे जर्मन हो, अमेरिका हो, उनसे इनको जो पैसा मिलता है, उन पैसों के आधार पर...

श्री मनीराम बागड़ी : मैं आपकी विचारधारा के खिलाफ नहीं हूं, मैं सिर्फ यह चाहता हूं, कि ऐसे लोगों के नाम मत जोड़ें, आप आन्दोलन कह दो, लेकिन उनके नाम मत लो। मैं जानता हूं, कई ऐसी जगहें हैं...

आचार्य भगवान देव : आप आईने में अपना चेहरा देख लें। मैंने तो सिर्फ जयप्रकाश जी का नाम ही लिया और आप संसदीय मर्यादा से बाहर निकल गये। आप अपना चेहरा आईने में देख लें।

श्री मनीराम बागड़ी : मैंने अगर कहा था, तो मैंने कह दिया था कि मैंने अच्छा नहीं कहा, मुझे नहीं कहना चाहिए था।

सभापति महोदय : इन्हें बोलने दीजिये।

श्री मनीराम बागड़ी : ठीक बात है।

आचार्य भगवान देव : सभापति जी, कल ही मैं इस संस्था में गया। इन संस्थाओं की जांच करने के लिए मैं वहां गया था क्योंकि आज से चार महीने पहले जब मैं बोल रहा था...(व्यवधान)...अरे, बैठो मिर्ची टाइप। (व्यवधान)...फिर बीच में बोल रहे हो।

Dr. Subramaniam Swamy : Is it not unparliamentary ?

Mr. Chairman ; 'Mirchi' type is parliamentary.

आचार्य भगवान देव : सभापति जी, लोकसभा में जब मई में कार्यवाही चल रही थी, तो उस विषय पर बोलने से पहले मैं चाहता था कि मैं स्वयं इन संस्थाओं की तहकीकात कर लूं। मैं वहां गया और मैंने कुछ जानकारी ली। उस समय जो पता लगा था, उसका उल्लेख कुछ मेम्बरों ने किया था और मैंने भी किया था लेकिन उस वक्त चर्चा अधूरी रह गई थी। आज सदन में आने से पहले, मैंने यह सोचा कि इसके पहले कि मैं अपने विचार यहां पर रखूं, मैं पहले उस संस्था की तहकीकात कर लूं कि उसमें पहले से कुछ सुधार हुआ है या नहीं।

(श्री चिन्तामणि पाणिग्रही पीठासीन हुए...15-11)

जब मैं उस संस्था में तहकीकात करने के लिए गया, तो मैंने वहां पर पहले से भी बदतर और बिगड़ी हुई स्थिति पाई। मैंने वहां देखा कि गांधी जी का वहां पर इतना साहित्य नहीं था, वहां पर वह मुझे इतना नजर नहीं आया, जितना अन्य व्यक्तियों का साहित्य मैंने वहां देखा। अब अगर उस में मैं नाम दूं और नाम देने की जरूरत मुझे पड़े, तो फिर आप वहां कहेंगे कि नाम न लो लेकिन मैं यह कहना चाहूंगा कि काबा में कुफ्र हो रहा है। ढाई लाख रुपये का साहित्य है लेकिन गांधी जी के विरुद्ध षड्यंत्रकारी साहित्य मैंने वहां देखा। उस लाइब्रेरी में तो गांधीजी से सम्बन्धित साहित्य होना चाहिए। वहां पर एक किताब ऐसी भी थी जो नाथूराम गोडसे का महत्व बढ़ाने वाली थी और उसमें गांधी जी का मारना उचित साबित किया गया था। वह किताब नाथूराम गोडसे के छोटे भाई गोपाल गोडसे द्वारा लिखी गयी है और शायद गृह राज्य-मन्त्री, श्री मकवाना, उसे लाइब्रेरी से ले आए हैं और वे इसके बारे में स्पष्टीकरण करेंगे कि क्या लाइब्रेरी से वे इस किताब को लाए हैं, क्या इसे उन्होंने मंगाकर देखा है।

गृह राज्य मंत्री (श्री योगेन्द्र मकवाना) : मेरे नाम पर वह इशू हुई है।

आचार्य भगवान देव : आपके नाम पर वह इशू है। मैंने सारी वहां जांच की और यह पाया कि गांधी जी के विरुद्ध, गांधी जी की हत्या करने वाले व्यक्ति का महत्व बढ़ाने वाली पुस्तक वहां है। वहां पर जो पुस्तकें रखी हुई हैं, उनमें अमेरिका का साहित्य आता है वहां पर चीन का साहित्य है और गांधी जी के विरुद्ध साहित्य वहां पर आता है और वहां पर जो सारे के सारे अधिकारी बैठे हुए हैं, वे गांधी जी के सिद्धान्त के विरुद्ध काम करने वाले हैं। आर० एस० एस० के व्यक्ति वहां बैठे हुए हैं, आनन्दमार्गी बैठे हैं जो कि देश के विघटन के लिए और देश में अशान्ति फैलाने और गांधीजी की आत्मा की हत्या करने के लिए योजनाबद्ध तरीके से काम कर रहे हैं। वहां पर जो जवाबदेह व्यक्ति बैठे हैं,

जो और की तोड़े घड़ी, उसका भी टूटे है घड़ा।
जो और को माड़े छ्ड़ी, उसको भी लगता है छ्ड़ा॥

(उपाध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए...15-14)

उनको जो काम करना चाहिए, वे काम वे नहीं कर रहे हैं। मैंने चार महीने पहले देखा था और कल भी देखा है कि गोबर गैस प्लान्ट जो वहां बनाया गया है, वह इसलिए बनाया गया था कि बाहर से लोग आकर उसे देखें और उससे प्रेरणा लेकर ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर काम करें परन्तु उसकी हालत कई वर्षों से, जनता पार्टी के शासन से लेकर आज तक मैं वहां चार-पांच बार हो आया हूं, बहुत बुरी हो गई है और उसकी हालत सार्वजनिक शौचालय से भी गई बीती है और वहां पर कचरा भरा हुआ है। आज जो कार्य वहां पर उनको करना चाहिए, सफाई का जो कार्य वहां होना चाहिए, वहां के निदेशक, वहां के सैक्रेट्री, वहां के चेयरमैन, वह काम नहीं करा रहे हैं बल्कि गांधीजी के विरुद्ध, देश के विरुद्ध एक राजनीतिक षड्यन्त्र में संलग्न हैं और देश के अन्दर अराजकता लाने में लगे हुए हैं और जो सही कार्य वहां पर होने चाहिए, उनके प्रति उनकी प्रवृति बहुत कम है, और उसमें सुचारू रूप और तन-मन-धन से लगे हुए हैं। जिस उद्देश्य के लिए, जिस पवित्र कार्य के लिए उन्हें पैसा दिया जाता है उसको वह न करते हुए वहां से राजनीतिक गतिविधियां चलाई जा रही हैं। यह एक गम्भीर मामला है।

मैंने वहां की लाइब्रेरी में 35 हजार पुस्तकें देखी। उन पुस्तकों की क्या हालत है ? पुस्तकालय में उन पुस्तकों की व्यवस्था करने के लिए पुस्तकालयाध्यक्ष की व्यवस्था नहीं है। देश के गरीब और नंगों के चित्र विदेशियों को दिखाने के लिए ये संस्थायें इतना रुपया बर्बाद कर रही हैं। इसकी सरकार को जांच करनी चाहिए। इस पुस्तकालय की हालत देख कर तो मुझे लगा कि वहां जिन व्यक्तियों की नियुक्ति होनी चाहिए, उनकी नियुक्ति नहीं हो रही है। वहां पर विदेशियों के रूप में षड्यन्त्र चलाये जा रहे हैं। असम में जो कुछ हो रहा है उसको भी वहां प्रश्रय दिया जा रहा है। महाराष्ट्र के तारकुण्डे के लोगों की वहां बैठकें होती हैं। उनकी बैठकों पर उनके चायपानी पर, आदर सत्कार पर हजारों लाखों रुपये बर्बाद किये जाते हैं। यह एक बहुत गम्भीर मामला है।

मैं सरकार से प्रार्थना करना चाहता हूं कि इन तमाम गतिविधियों की जांच करे। जो संस्था अपने उद्देश्य से हट कर, सामाजिक कार्य न करते हुए, राजनीतिक कार्यों में लगी हो, उसकी एक कमीशन के द्वारा जांच करवायी जानी चाहिए। मैं सरकार से यह भी मांग करता हूं कि उस संस्था में एक रिसीवर की नियुक्ति की जाए और वह रिसीवर एक ऐसा पवित्र व्यक्ति हो जो कि गांधी जी के सिद्धान्तों में विश्वास करता हो।

तीसरी बात यह कहना चाहता हूं कि देश के अन्दर गांधी जी की छबि को बिगाड़ने के लिए और उनके स्टेच्यू तोड़ने के लिए जो कार्य किये जा रहे हैं उनको भी सरकार रोके। जनता पार्टी के शासन में मध्यप्रदेश के अन्दर, राजस्थान के अन्दर, दिल्ली और यू० पी० आदि के अन्दर गांधी जी, नेहरु जी और इन्दिरा जी के सम्बन्ध में जो जीवन चरित्र लिखे हुए थे उनको योजनाबद्ध तरीके से पुस्तकालयों में से निकाला गया और ऐसे व्यक्तियों के जीवन चरित्र उनमें रखे गये जिनका देश के लिए कोई गौरव नहीं था, कोई महिमा नहीं थी। सरकार एक ऐसा बिल पेश करे जिनमें गाँधी जी के साहित्य को विकृत किये जाने से सुरक्षा प्राप्त हो और उनका साहित्य और दर्शन विकृत न किया जा सके।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं समाप्त करता हूं।

8-5-1981

दुनिया अजब बाजार है, कुछ जिनस यहां की साथ ले।
नेकी का बदला नेक है, बदि से बदी की बात ले॥

दूरंगी छोड़कर इक रंग हो जा

आचार्य भगवानदेव (अजमेर) : सभापति जी,...

सभापति महोदय : देखने में जोड़ी दोनों की ठीक है। (आचार्य भगवानदेव तथा अटलविहारी वाजपेयी)

आचार्य भगवानदेव : मैं हर दृष्टि से इनके साथ मुकाबला करने के लिए तैयार हूं। यहां भी कर लें, बाहर भी कर लें, जो ताकत आजमानी हो, आजमा लें।

सभापति जी, हमारा रेल मंत्रालय बड़ी सूझ-बूझ के साथ और सक्रिय होकर देश की भलाई के लिए काम कर रहा है। चाहे माननीय रेलमंत्री केदार पांडे हों, जाफरशरीफ साहब हों, मल्लिकार्जुन हों, रेलवे बोर्ड के गुजराल साहब हों या उनके अन्य साथी हों, सब बड़ी ईमानदारी के साथ अपने कर्त्तव्य का पालन कर रहे हैं। इसके लिए मैं उनको बधाई देता हूं।

हमारे विरोधी पक्ष के साथी दुर्घटनाओं की बात करते हैं, मजदूरों के साथ अन्याय की बात करते हैं, टाइम पर गाड़ियां नहीं आती हैं उसके लिए शिकायत करते हैं। दुर्घटनाएं हों—ऐसा कोई नहीं चाहता है। न रेलमंत्री चाहते हैं और न रेलवे बोर्ड के अधिकारी चाहते हैं। दुर्घटना तो दुर्घटना ही है, कोई ड्राइवर कभी नहीं चाहता कि उसकी गाड़ी का एक्सीडेन्ट हो जाय या उसके साथ यात्रा करने वालों की मौत हो जाय। कई दुर्घटनायें राजनीतिक दृष्टि से भी हो जाती हैं, ऐसी दुर्घटनायें विरोधी पार्टियों के घटकों में घटती रही हैं जो व्यक्ति किसी तरफ जाता है, उसको स्वयं भी पता नहीं होता कि उसके साथ भी दुर्घटना घट सकती है। क्या हमारी जनता पार्टी के राज में दुर्घटनायें नहीं हुई? हमारे पास उनके कार्यकाल में हुई दुर्घटनाओं के आकंड़े हैं। मधु दण्डवते जी यहां पर बैठे हुए हैं, जब वह रेलमंत्री थे वह बतलायें कि उनके कार्यकाल में कितनी दुर्घटनायें हुई? वह नहीं चाहते थे कि दुर्घटनायें हों, लेकिन फिर भी हो जाती हैं।
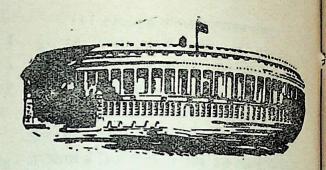
जनता पार्टी के शासन में भूतपूर्व विदेशमंत्री, ब्रह्मचारी श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी संसद की दो सीढ़ियां चढ़ते हुए गिर पड़े, दुर्घटना हो गई, अस्पताल गये। वह नहीं चाहते थे कि दुर्घटना हो, लेकिन फिर भी हो गई...

श्री जगपाल सिंह (हरिद्वार) : अपने शरीर की बात करो, दूसरों की क्या बात करते हो?

आचार्य भगवान देव : देख लूंगा, सामने आकर बात करो।

बाबू जगजीवनराम नहीं चाहते थे, लेकिन फिर भी राजनीतिक दुर्घटना कर डाली। अर्स कांग्रेस के साथ जो दुर्घटना घटी, वह अलग बात है, लेकिन कुछ दिन पहले—वे हमारे आदरणीय संसद सदस्य और वरिष्ठ जननेता रहे हैं—उनके साथ भी दुर्घटना हो गई जिसका उनकी टांग पर असर हुआ। व्यक्ति के जीवन में इस तरह की घटनायें घट जाती हैं, जबकि वह नहीं चाहता कि घटनायें हों। इसलिए इन दुर्घटनाओं का दोष आदरणीय रेलमंत्री जी या रेलवे बोर्ड के चेयरमैन पर डालकर कहा जाय कि वे त्याग.पत्र दें—इसमें कोई तत्व नहीं है। त्याग पत्र देने की कोई आवश्यकता नहीं है। केदार पांडे जी ने रेलवे विभाग में जिस सूझ-बूझ के साथ काम किया है, उसके सम्बन्ध में आंकड़े बतलाते हैं—कितनी नई गाड़ियां चलाई गई, कितनी गाड़ियों की गति तेज की गई, मालगाड़ियों में लोडिंग के काम में तेजी आई जिससे अधिक माल ढोकर उन्होंने नफा दिखलाया। क्या कभी कोई इन

मेवा खिला मेवा मिले, फल फूल दे फल पात ले।
क्या खूब सौदा नकद है, इस हाथ दे उस हाथ ले॥

आंकड़ों की तरफ देखता है ? रेलवे विभाग में कितना नफा हुआ है, कितनी नई गाड़ियां बढ़ाई गई हैं, क्या पिछले आंकड़ों के साथ किसी ने तुलना करके देखा है ? मैं इस समय आंकड़े पढ़कर सुनाना नहीं चाहता, लेकिन मैं आशा करता हूं कि रेलमंत्री जी स्वयं इन आंकड़ों के आधार पर आपको बतलायेंगे कि कितनी नई गाड़ियां चलाई गई हैं, कितनी नई रेल लाइनें चालू की गई हैं, कितनी गाड़ियों की गति बढ़ाई गई है ।

इसलिए, सभापति जी, हमारे विरोधी पक्ष के लोग जो कह रहे हैं उसमें कोई जान नहीं है, कोई दम नहीं है। इन्होंने कहा कि हमारे हौसले पस्त हो गये हैं। मैं अपने साथी ज्योतिर्मय से कहना चाहता हूं—शायद उनकी ज्योति बुझ गई होगी और बस में पंक्चर हो गया होगा। हमारे रेलमंत्री जी के हौसले बहुत बुलन्द हैं। देश के साथ गद्दारी करने वाले चन्द लोग हैं, उनके ऊपर वे ब्रेक लगाने वाले हैं। वे चन्द लोग गाड़ियों को लेट चलाने का प्रयास करते हैं, रेलवे में तोड़फोड़ करना चाहते हैं—ऐसे किसी भी व्यक्ति को माफ न किया जाय, उनको सख्त से सख्त सजा दी जाय।

इस तरह के गद्दार व्यक्तिओं को, जो समय पर गाड़ी चलने नहीं देते और अच्छी तरह से काम नहीं करते, सख्त से सख्त सजा दी जाए। हमें श्री केदार पांड़े जी बताएं कि क्या यह बात सच नहीं है कि—मैं अहमदाबाद की तरफ गया हूं—मेहसाना के पास जो दुर्घटना हुई, उसमें कोई षड्यंत्र नहीं था ? विदेशी शक्तियों के आधार पर, शैतानियत जिनके दिमाग में सवार है, वहां से पैसा मंगा कर इस देश में ये अराजकता लाना चाहते हैं। आवश्यक सेवाओं को बनाए रखने के लिए सरकार ने जो अध्यादेश जारी किया है, मैं तो बधाई देता हूं अपनी प्रधानमंत्री जी को और मन्त्री मण्डल को, जिन्होंने इस प्रकार का अध्यादेश जारी किया। इससे विरोधी पार्टियों के लोगों के हौसले पश्त हो रहे हैं और हमारे जो रेलवे के कर्मचारी हैं, उनमें मुट्ठी भर गद्दार लोगों के हौसले पश्त हुए हैं। मैं तो यह कहूंगा कि ऐसे कुछ लोगों के दिमाग में जो शैतानियत है, उनको जेल में जाना पड़ेगा, नौकरी से जाना पड़ेगा। ऐसे गद्दारों को नौकरी से निकालना चाहिए और जिनका काम, उतना दाम का सिद्धान्त लेकर हमको चलना चाहिए। आज विरोधी पार्टियों के लोग विदेशी धन के आधार पर यूनियनें बनाकर भाड़े के टट्टू लाकर यहां पर जुलूस निकालते हैं और अराजकता लाने की कोशिश करते हैं। आज यहां पर रैली हो रही है। मैंने कई नौजवानों से पूछा कि तुम्हारा क्या सम्बन्ध है इससे ? उन्होने कहा कि खाने को मिलता है और पैसे देकर हमें लाए हैं। हमें रोटी खिलायेंगे और दिल्ली दिखाने के लिए कहा गया है। इस तरह की रैली यहां पर करवाकर अराजकता लाने का प्रयास ये कर रहे हैं और गाड़ियों को लेट चलाने के लिए योजनाबद्ध तरींके से षड्यंत्र करते हैं और फिर इधर शिकायत करते हैं कि गाड़ियां लेट आ रही हैं। जो ड्राइवर शरारत करता है और जानबूझ कर गाड़ी को समय पर चलने नहीं देता, उनके नेता यहां आकर शिकायत करते हैं कि गाड़ियां लेट चलती हैं। यह बात तो ऐसी ही है जैसे एक मूर्ख ने पाजामे में आग लगा दी और चिल्लाने लगा कि बचाओ-बचाओ। आज यही बात ये लोग कर रहे हैं। आप अपने हाथों से अराजकता लाते हैं और अराजकता लाने के बाद जब सरकार ऐसे लोगों को दण्ड देती है, उनको गिरफ्तार करती है, तो ये चिल्लाने लगते हैं कि उनको गिरफ्तार कर लिया, इमर्जेन्सी लाई जा रही है, डिक्टेटरशिप आ रही है। आज डिक्टेटरशिप की बात करने वाले भारतीय जनता पार्टी के नेता श्री जेठमलानी, जनरल जिया की बात करते हैं, पाकिस्तान में जहां लोकशाही की हत्या की गई है, उसकी बात करते हैं। आज लोकदल के उपाध्यक्ष श्री जार्ज फर्नान्डीस, जनरल जिया की रोटियां खाकर और श्री सब्रह्मण्यम स्वामी भी उनकी रोटियां खाकर, पाकिस्तान के बारे में बात करते हैं। लोकशाही की हत्या करने वाले सैनिक तानाशाह की वे बात करते हैं। इनके दिल व दिमाग में क्या है, यह सब जानते हैं।

गृहस्थ ब्रह्मचर्य व्रत वीरों को कभी भुलाना ना चाहिए।
पाकर नर तन रतन सरासर खाक मिलाना ना चाहिए॥

मैं अपने इन दोस्तों से कहना चाहता हूं कि वे कोई ठोस सुझाव दें कि पुरानी जो पटरियां हो गई हैं, उनको कैसे ठीक किया जाए, वे बतायें कि जो अपनी ड्यूटी नहीं करता है, ठीक से अदा नहीं करता है, उसको हटाया जाए परन्तु यह कह देना कि त्यागपत्र दो, यह कहां तक सही है। पंडित जी, आप अपने अनुभव से और अपने साथियों के अनुभव से रेलवे को चलाइए और इसमें पूरा देश आपके साथ है और रेलवे मजदूर आपके साथ हैं। कुछ मुट्ठी भर लोग आपके साथ नहीं हैं और हम नहीं चाहते हैं कि वे हमारा साथ दें।

इन शब्दों के साथ मैं विरोधी पार्टियों के लोगों से कहना चाहता हूं कि—"दूरंगी छोड़कर एक रंग हो जा, या संग हो जा, या सरासर मोम हो जा"।

17-8-1981

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

कृष्णपोल बाजार, जयपुर-३०२००१

२५-२-१९८४

मान्यवर

सादर नमस्ते,

आपके पत्र से यह जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ कि आचार्य भगवानदेव संसद सदस्य के ३ फरवरी, १९८४ को पचास वर्ष पूर्ण होने पर आप एक अभिनन्दन ग्रंथ का प्रकाशन कर रहे हैं।

आचार्य भगवान देव से मेरा उनकी लगभग १८ वर्ष की आयु से ही घनिष्ठ सम्पर्क रहा है। जब वे अपने गृह का त्याग करके जयपुर आए राजस्थान के कार्यालय में इस सभा के तथा उक्त आर्य समाज में सन् १९५४ से १९५६ तक वे बड़ी श्रद्धा व लगन से कार्य करते रहे, जब मैं इस सभा का मन्त्री था।

उपरोक्त काल में श्री भगवानदेव साधारण पढ़े लिखे थे परन्तु वे रात-दिन आर्य समाज के समस्त कार्यों में जुटे रहते एवं वैदिक सिद्धान्तों के स्वाध्याय में संलग्न रहते थे, तब हम इन्हें भगवानदेव के नाम से सम्बोधित करते थे। इसके पश्चात् वे गुरुकुल वृन्दावन अध्ययन हेतु चले गये थे, तब वे भगवानदेव गुरुकुलीय के नाम से प्रसिद्ध हुए।

सन् १९५९ में मैंने इन्हें ऋषि बोधोत्सव पर टंकारा में देखा कि वे बड़ी उन्नति कर चुके थे। गुजरात तथा बम्बई के प्रान्तीय स्तर के आर्य नेताओं, कर्मठ कार्यकर्ताओं में उच्च स्थान प्राप्त करके वे आर्यजगत के प्रसिद्ध वक्ता, अनेक पुस्तकों के प्रभावशाली लेखक, पत्रकार, राजनेता, संसद सदस्य तथा आर्यजगत की शिरोमणि-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली के प्रतिष्ठित सदस्य बने तथा इस समय उक्त सभा के अन्तरंग सभासद् और आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के वरिष्ठ उपप्रधान हैं।

आचार्य भगवानदेव प्रारम्भ में एक साधारण व्यक्ति होते हुए अपनी विलक्षण बुद्धि एवं परम पुरुषार्थ से धार्मिक, सामाजिक व राजनैतिक उन्नति की जिस चरम सीमा पर प्रतिष्ठित हुए हैं, उनका यह जीवन वृत्त आर्य समाज के इतिहास का एक स्वर्णिम पृष्ठ प्रत्येक व्यक्ति के लिए अत्यन्त प्रेरणादायक तथा आर्यसमाज के लिए गौरव की बात है।

इस अवसर पर अनेक शुभकामनाओं के साथ मेरी हार्दिक बधाई एवं उनकी दीर्घायु के लिए परमात्मा से प्रार्थना है।

भगवती प्रसाद सिद्धान्त भास्कर

सुन्दर नारी देख प्यारी मन को लुभाना ना चाहिए।
सत्य धर्म गौरव का नाता कभी मिटाना ना चाहिए॥

आचार्य का संसद में ओजस्वी भाषण

सांसदों की सम्पत्ति का ब्यौरा देश के सामने हो

आचार्य भगवानदेव, सांसद, अजमेर लोक सभा क्षेत्र, ने संसद में अपने ओजस्वी भाषण द्वारा बोलते हुए कहा कि—

संसद सदस्यों की सम्पत्ति आदि का विवरण जनता के सामने और सदन के सामने तथा देश के सामने रहना चाहिए। बहुत ही सुन्दर विधेयक सदन में प्रस्तुत किया है। संसद सदस्य सारे जिले का एक प्रकार का माली है।

इसके चयन में सात-आठ लाख फूल रूपी इंसान होते हैं उसके चरित्र पर उसकी गतिविधियां और उसकी सम्पत्ति का प्रभाव पड़ता ही है हम देखते हैं—प्राय: सांसद बनने के बाद व्यक्ति अपने दायित्व को ढंग से निभा नहीं पाता और अपने स्वार्थ के पीछे लग जाता है परिणाम यह होता है कि 5 साल के अन्दर असमानता उसके जीवन में आ जाती है और जिसका रिजल्ट उसको आगामी चुनाव में मिल जाता है। लेकिन इस तरह का विधेयक यहां पास हो जाता है तो इससे उस पर कुछ नियन्त्रण तो पैदा होगा ही और वह अपने दायित्व को अच्छी तरह से निभा पाएगा।

मैं अपने जीवन के अनुभव की बात बतलाऊं। मेरा कोई कारोबार, फैक्ट्री, उद्योग या पार्टनरशिप नहीं है और न कोई कार है, साढ़े 3 साल संसद सदस्य बने हुए बीत गये सरकार की तरफ से 14 हजार रुपये में मिलिट्री की जीप मिलती है चार बार लिस्ट में नाम आ चुका है लेकिन अभी तक 14 हजार रुपये इकट्ठे नहीं हो पाए हैं। और मैं जीप नहीं ले पाया हूँ लोग खूब कमाते हैं, कार में बैठे घूमते हैं। एक हजार रुपया महीना मिलता है, इतना तो पेट्रोल पर खर्चा हो जाता है। ड्राईवर का खर्चा कहां से आता है मैं पूछना चाहता हूँ?

एक दिन मैं पैदल जा रहा था, बूटासिंह जी कार में जा रहे थे, पास से गुजरे तो गाड़ी रोक दी, और बोले आपके पास कार नहीं है? मैंने कहा मैं तो बेकार हूँ। बोले, आइये आपको घर छोड़ दूंगा मैंने कहा, आप मन्त्री हैं आपके पास कार है आज मुझे छोड़ देंगे लेकिन कल कौन छोड़ने आएगा? हकीकत के आधार पर जीवन जीने की कोशिश की है और यह भी सही है कि एम. पी. बनने के बाद अब हमारी ईमानदारी लड़खड़ा गई है क्योंकि रोज लोग मिलने आते हैं, डाक खर्च होता है, कन्वेएन्स में पैसा लग जाता है। लोग समारोहों में ले जाकर माला तो पहना देते हैं लेकिन स्कूटर का खर्च अपने माथे पर पड़ता है, सब कुछ निभानी पड़ती है। जो सच्चाई पर चलता है उसकी बात छिपी नहीं रहती है। अभी एक भाई ने कहा था अगर कोई हकीकत के आधार पर चलता है तो उसकी हकीकत सामने रहती है छिपती नहीं है। फूलों में खुशबू रहती है तो उसका प्रभाव पड़ता ही है। शमा जलती है तो पतंगे आते ही हैं लेकिन जले तो सही। जो स्वयं बुझे हुए हैं वे प्रकाश क्या देंगे जिन के जीवन का बल्ब फ्यूज हो चुका है उसको प्रकाश कहां से मिलेगा। प्रकाश वहां से मिलेगा, जिनके जीवन में तेल पड़ा है। जिन्होंने अपने जीवन को पवित्र रखा हुआ है। उन की सम्पत्ति का विवरण आना ही चाहिए। इससे पवित्रता सामने आयेगी और लोगों का चरित्र उज्ज्वल होगा।

कई विधान सभाओं के सदस्यों को आज जो सुविधायें मिलती हैं मैंने उनकी तुलना संसद सदस्यों को

फिरे भटकते हैं लाखों पंडित, हजारों दाना, करोड़ों स्याने।
मगर जहां में जो खूब देखा, खुदा की बातें खुदा ही जाने॥

दी जाने वाली सुविधाओं से की है और मैंने देखा है कि कई स्थानों पर संसद सदस्यों के मुकाबले विधायकों को अधिक सुविधायें मिल रही हैं। यह असमानता दूर करनी पड़ेगी। यदि हम चाहते हैं कि संसद सदस्य पवित्र हो कर निष्ठा से चलें। तो सरकार को उनकी सुविधाओं को बढ़ाना होगा। ताकि वे उस दृष्टि से चल पायें अन्यथा वे अपना खर्चा नहीं निभा सकते उन के सामने डाक खर्च है, टाइपिस्ट की सुविधा है, अन्य सुविधायें हैं; उन की तरफ ध्यान देना पड़ेगा तथा इस तरह की भी कोई भूमिका तैयार करनी पड़ेगी।

हमारे एक विरोधी पक्ष के भाई ने हेगड़ेजी का उल्लेख किया कि उन्होंने घोषणा की है कि उनके मंत्रि-मंडल के सभी साथी अपनी सम्पत्ति की घोषणा जनता के सामने रखें। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जब यहाँ पर जनता पार्टी का शासन था उस समय भी जनता पार्टी ने ऐसी घोषणा की थी कि राष्ट्रपति झौंपड़ी में जाकर रहेगा हमारे राजनरायण जी ने तो अपने आफिस में से कुर्सी टेबिल निकालकर गाव तकिए लगा लिए थे दो दिन साइकिल पर भी चले लेकिन बाद में टेबिल कुर्सी पर फिर आ गये। कार में घूमने लगे मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि कथनी और करनी में अंतर नहीं होना चाहिए। वे स्वास्थ्य मंत्री थे अस्वस्थ रहते थे लेकिन वे अण्डे कितने खाते थे मैं उसके विस्तार में नहीं जाना चाहता।

कितनी मिठाई और कितने मुर्गे खाते थे वह बात अलग है स्वास्थ्य के लिए उपवास रखना चाहिए लेकिन वे सब कुछ उपयोग करते थे, क्योंकि स्वास्थ्य मन्त्री थे इसलिए मेरा कहना है कि कथनी और करनी में अन्तर नहीं होना चाहिए।

मुझे कोई जेलेसी नहीं है न मुझे उनकी गद्दी लेनी है और न उनकी प्रापर्टी लेनी है और न इसकी आवश्यकता है 'तेन त्यक्तेन भुंजीथा,' हम तो एक त्याग करके भोगने वाले व्यक्ति है हमारा जीवन खुली किताब है। और हम तो 'इदं न मम' की बात मानते हैं। ऐ प्रभु, यह सब तेरा ही है और तेरे को समर्पित करके ट्रस्टीशिप की भावना से हम दुनियां में विचरण करते हैं सामने आना है तो हमारी खुली किताब है आप हमारी प्रापर्टी की जांच करें और मैं आपकी प्रापर्टी की जांच करूं तो पता लग जायेगा कि किसके पास क्या है। ये साम्य-वाद की बात करते हैं। परन्तु इनकी कलकत्ते में बड़ी-बड़ी कोठियां हैं और कई मोटर साइकिलें हैं और ये समानता की बात करते हैं। अब इस तरह की कोई बात कहने का अर्थ नहीं है। मैं चाहता हूं कि इस बिल का उद्देश्य बहुत पवित्र है, बहुत अच्छा है और सब संसद सदस्यों की सम्पत्ति का हिसाब-किताब हाऊस के सामने आना चाहिए। इससे उनकी पवित्रता का जनता को पता लगता है और इससे आगे के चुनावों पर प्रभाव पड़ता है इसलिए यह बहुत स्वागत योग्य बिल है पर साथ ही साथ मैं यह भी माँग करूंगा, कि संसद सदस्यों की जो आवश्यकताएं हैं उनके बारे में भारत सरकार को जरूर सोचना पड़ेगा।

इन शब्दों के साथ मैं इस बिल की भावना की कद्र करता हूं और भारत सरकार को इस बारे में सोचना चाहिए। और विरोधी पार्टी वाले जो इस समय बढ़-चढ़ कर बातें करते हैं उन्होंने अपने टाइम में तो कुछ नहीं किया घोषणाएं तो बहुत की थीं उनके जमाने में राष्ट्रपति गांव में जाकर नहीं बैठा और रहा और सुविधायें पूरी लेता रहा और इस समय ये हेगड़े जी ने तो यह बात आने वाले चुनाव को जीतने के लिए कह दी है ताकि वे अगले चुनाव में लोगों से यह कह सकें कि मैंने तो यह मांग की थी। चुनावों के बाद वह झौंपड़ी में बैठेगा और अपनी सम्पत्ति का हिसाब-किताब जनता के सामने पेश करेगा, यह तो आगे आने वाला समय ही बताएगा। लेकिन जनता पार्टी के समय में हम देख चुके हैं कि उन्होंने कितना इसको माना था यह सब चुनाव का चक्कर है जिसके कारण यह घोषणा की कि कथनी और करनी में अन्तर नहीं होना चाहिए और जो भी कार्य हम करें, वह ठोस प्लान बना कर करें और उसको क्रियात्मक रूप दिया जाना चाहिए।

इन शब्दों के साथ मैं इस बिल की भावना का आदर करता हूं इस बिल का स्वागत करता हूं। □

सूरज में प्रकाश तू ही है, जल थल अग्नि आकाश तू ही है।
रूप तेरा है कण-कण अन्दर, सारा जग है तेरा मन्दिर ॥

ऐसा लगता है कि पाकिस्तान इस वर्ष भारत के साथ फिर छेड़छाड़ करेगा
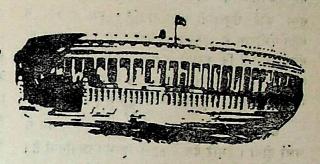
बहुत से माननीय सदस्यों ने यहां हिन्द महासागर की बात कही। बड़ी साम्राज्यवादी ताकतों की बात कही और चिंता व्यक्त की, परन्तु मैं इस सदन के द्वारा भारत सरकार का अरब सागर की तरफ ध्यान खींचना चाहता हूं। पाकिस्तान में जो आज स्थिति है और अमेरिका के इशारे पर जो वह गतिविधियां कर रहा है उससे मुझे लगता है कि वह कासिम बन्दरगाह और करांची के बन्दरगाह से अरब सागर में कच्छ के हमारे समुद्री किनारे पर हमला कर सकता है। इसलिए इस क्षेत्र को हमें नजर में रखना होगा। कच्छ के कुछ भाई कल ही मेरे पास आये थे। पाकिस्तानी लोगों की गतिविधियां कच्छ के गांधीधाम और भुज में बहुत बढ़ रही हैं। वहां रेगिस्तान भी है और समुद्री किनारा भी है। हिन्द महासागर में मालद्वीप की तरफ यहां इशारा किया गया था। लेकिन मैं भारत सरकार से प्रार्थना करना चाहता हूं कि इस बार्डर पर सभी का ध्यान रखें और वहां भी सुरक्षा की अच्छी व्यवस्था रखें।

सन् 1962 में जब चीन ने चढ़ाई की, उसके पश्चात् हम देखते हैं कि रक्षा मंत्रालय के अन्दर निरन्तर सुधार आता जा रहा है। जब पाकिस्तान ने चढ़ाई की तो हमारे नौजवानों ने उसके छक्के छुड़ाये। अभी 26 जनवरी को हमने देखा कि रक्षा मंत्रालय ने प्रगति की है। उस दिन परेड का जो कार्यक्रम रखा गया था और 1962 के पश्चात् से रक्षा मंत्रालय द्वारा की गई प्रगति अब हमारी आंखों से ओझल नहीं हो सकती है।

स्वयं माननीय प्रधानमन्त्री जी इस मामले में गहरी रुचि ले रही हैं और हमारी तीनों सेनाओं के अंगों के नौजवानों और अधिकारियों के जो कुछ कष्ट या कठिनाईयां हैं उनको वे दूर करने का प्रयास कर रही हैं और उन्होंने उनको दूर भी किया है।

जहां तक लोगों ने, आवास स्कूल, पढ़ाई और अन्य दिक्कतों के सम्बन्ध में जो बातें कही है, उसके बारे में भी हम देख रहे हैं कि इन्हें भी निरन्तर दूर करने का प्रयास किया जा रहा है। जो बजट इस साल बढ़ाया गया है, उसका हम स्वागत करते हैं। परन्तु पाकिस्तान ने, एक छोटा सा राष्ट्र होते हुए भी, जिस तरह से अपना बजट बढ़ाया है, और बढ़ा रहा है; वह हमारे लिए एक गम्भीर समस्या है।

यह एक हकीकत है कि वहां एक तानाशाह शासन करता है। वहां का शासन जनता के हाथ में नहीं है। हमारे यहां लोकशाही है और हमारे यहां सरकार में हर कौम और हर मजहब के लोग चुनकर आते हैं और सरकार चलाते हैं। सैनिक तानाशाह अधिक दिन तक सत्ता में नहीं रहे। इतिहास साक्षी है। पाकिस्तान वहां की जनता ने सैनिक तानाशाह के खिलाफ बगावत खड़ी की हुई है। मुझे लगता है कि वे अपने-अपने जुल्मों से जनता को परेशान देखकर और जनता के विद्रोह से घबरा कर यह जानते हैं कि वहां की जनता और सेना को हिन्दुस्तान के खिलाफ किया जाए। इसलिए कुछ दिनों से उन्होंने पाकिस्तान में हिन्दुस्तान के खिलाफ

वेद पढ़ते पंडित थक गए, मुसलमान कुर्राना।
ग्रंथ को पढ़-पढ़ ज्ञानी थक गए, तेरा अन्त न जाना॥

जहर उगलना शुरू किया है कि इस वर्ष वे हिन्दुस्तान के साथ कोई छेड़खानी करने वाले हैं। इस सम्बन्ध में बहुत गंभीरता से हमको सोचना होगा। मुझे यह भी संकेत मिले हैं कि कराची के साथ उन्होंने मोहम्मद बिन कासिम बन्दरगाह बनाया है। उस बन्दरगाह का उपयोग वे लड़ाई की दृष्टि से कर सकते हैं।

छावनी एक्ट आने वाला है। उस पर अलग से चर्चा होगी। हमारे देश में 62 के लगभग छावनियां हैं। उन छावनियों में बड़ी दिक्कतें हैं। छावनी एक्ट 1924 में बना था। मैं बधाई देता हूं कि हमारी सरकार ने उस एक्ट पर ध्यान दिया है और उसमें कई सुधार किये जाने वाले हैं। छावनियों में जो नगरपालिका क्षेत्र में लोग रहते हैं, छावनियों की जो प्रशासन व्यवस्था चल रही है, उनके बारे में बहुत अच्छे सुधार किये जाने वाले हैं। इसके साथ-साथ 1937 में जो भूमि व्यवस्था कानून बनाया गया था उसमें भी भारत सरकार सुधार करने जा रही है। इसके लिए भी मैं उनको बधाई देना चाहता हूं। 1937 में छावनी कर्मचारी राशि निगम बनाया था, उसकी तरफ भी भारत सरकार का ध्यान गया है। ये सारी बातें सैनिकों से संबंधित हैं। इससे उनकी दिक्कतें दूर होंगी और उनका हौंसला और ज्यादा बढ़ेगा। हमारे सिपाहियों का हौंसला बढ़ा हुआ है। इतिहास साक्षी है कि सीमा से यह देश कभी गुलाबी नहीं बना है। मोहम्मद बिन कासिम से लेकर अंग्रेजों तक और चीन पाकिस्तान की लड़ाई तक हमने देखा है कि हमारे सैनिकों ने दुश्मनों के छक्के छुड़ा दिए हैं। हमारी सेनाओं के तीनों अंगों ने बहादुरी का प्रदर्शन किया है।

मुझे एक बात का डर है जिसका मैं पहले भी उल्लेख कर चुका हूं। सीमा पर सैनिक सजग हैं परन्तु देश के अन्दर जो गद्दार हैं उनसे सजग रहने की आवश्यकता है। यह काम गृह मंत्रालय और रक्षा मंत्रालय को मिलकर करना चाहिए ऐसे लोगों पर निगाह रखनी है जो इस देश के नागरिक होते हुए विदेशों से प्रभावित होकर उनको महत्वपूर्ण सूचनाएं देते हैं यह बहुत गंभीर मामला है। न सिर्फ साधारण नागरिक बल्कि कई विरोधी पक्ष के लोग भी इस सदन में ऐसी बातें करके नोजवानों का हौंसला गिराने वाली बातें करते हैं। इसका प्रभाव हमारे सैनिकों पर पड़ता है। कई अपनी लेखनी के माध्यम से यह कार्य करते हैं। कई लोग रिटायर होने के बाद कंपनियों में रख लिये जाते हैं उनसे जो काम लिया जाता है उस पर भी निगाह रखने की आवश्यकता है। इस बारे में रक्षा मंत्रालय को बड़ी गंभीरता से सोचना होगा।

रिटायर्ड सैनिकों की बात यहां पर की गई। मेरे चुनाव क्षेत्र के टाटगढ़ क्षेत्र में मैं भूतपूर्व रक्षा राज्य मंत्री शिवराज पाटिल जी को ले गया था। वहां पर रिटायर्ड सैनिकों का सम्मेलन था। वह एक ऐसा क्षेत्र है जहां पर प्रत्येक परिवार के 4-5 व्यक्ति सेना में हैं। उनकी कई दिक्कतें हैं। माननीय राज्यमंत्री ने बताया कि सैनिकों के लिए जिला सैनिक बोर्ड राज्य बनाए गए हैं। जनरल स्पैरो साहब की अध्यक्षता में एक कमेटी भी बुलाई गई थी सितम्बर में। जिसने तीन महीने के अन्दर दिसम्बर में ही अपनी रिपोर्ट दे दी। इसके लिए मैं उनको बधाई देता हूं। उन्होंने कई सुझाव दिए हैं। पहला केन्द्र हरियाणा हरा-भरा क्षेत्र है वहां पर रिटायर्ड सैनिकों ने जमीन को हरा-भरा कर दिया है और अनाज पैदा किया है। टाटगढ़ क्षेत्र के एक-एक परिवार के चार-चार, पांच-पांच बच्चे सेना में हैं। वहां पर रिटायर्ड सैनिक हैं। शहीदों की विधवाएं हैं और सैनिकों के बच्चे हैं। इन सबके कल्याण के लिए वहां पर कोई केन्द्र खोलना चाहिए मैंने उस वक्त माननीय राज्यमंत्री जी से प्रार्थना की थी। उस समय उन्होंने आश्वासन दिया था, वहां पर कोई सैनिक स्कूल खोला जाए। रिटायर्ड सैनिकों को वहां पर काम देने की कोई योजना बनाई जाए। नहीं तो वे शराब पीने लगते हैं और काम न मिलने की वजह से कई बार लड़ाई-झगड़े करते हैं। रिटायर्ड सैनिकों को काम दिलाने के लिए टाटगढ़ क्षेत्र में कोई केन्द्र खोलना आवश्यक है। शहीदों और वर्तमान सेवारत सैनिकों के बच्चों को भी काम मिलना चाहिये। वहां और कोई कारोबार नहीं है। वह बहुत ही

तेरी सत्ता के बिना, हे प्रभु मंगल मूल।
पत्ता तक हिलता नहीं, खिलता कहीं न फूल ।।

रमणीक पहाड़ी क्षेत्र है और जहां पर कर्मल टाट जैसा व्यक्ति विदेशी होते हुए भी वहां रहा और इसलिए उस गांव का नाम टाटगढ़ पड़ा, जहां श्री शिवराज पाटिल गए थे। वहां पर कोई न कोई केन्द्र आप खोलिए जिससे आपको बहुत बड़ा यश मिलेगा।

मेरे चुनाव क्षेत्र अजमेर में एक नसीराबाद छावनी है। उसके विकास की तरफ कुछ ध्यान देना बाकी है। बिजली, सड़क, मकान आदि की सुविधाएं दी गई हैं। लेकिन अभी कुछ और बाकी है। उस छावनी में बींजावत नाम का एक गद्दार बैठा है जिसके बारे में लिखकर रिपोर्ट दे दी गई है लेकिन उसको अभी तक वहां से नहीं हटाया गया है। इस तरह के व्यक्ति देश में असामाजिक तत्वों के हाथों में खेल रहे हैं। जिसके कारण उस क्षेत्र में बहुत बुरा असर पड़ा है। वहां के गृह राज्य मन्त्री ने भी इस सम्बन्ध में लिखकर दिया है। आपके सैनिक भवन के बाहर कुछ कर्मचारियों की यूनियनें हैं। वहां पर भी बड़ा जहर उगला जाता है। उनकी तरफ आपको ध्यान देना पड़ेगा। भेड़-चाल से काम नहीं चलने वाला है। मैं पूरी ब्यूरोक्रेसी को दोष नहीं देता परन्तु चन्द लोग ऐसे हैं जो सरकारी नीतियां हैं, पॉलिसीज हैं और जो सुविधाएं सरकार देना चाहती है, वह उनको नहीं देते इससे सैनिक और रिटायर्ड सैनिक, दोनों को कब परेशानी का सामना करना पड़ता है। इस बारे में अभी पाराशर जी ने भी बताया, कि साधारण क्लर्क भी सैनिक को परेशान कर देता है। इस तरह के व्यक्ति जिस डिपार्टमेन्ट या ऑफिस में बैठे हैं उनको हटाना पड़ेगा। हमारी तीनों कमाण्ड की तरफ जितना ध्यान अब दिया जा रहा है, उतना पहले कभी नहीं दिया गया।

श्रीमती गांधी को सैनिकों, विधवाओं और उनके बच्चों तथा रिटायर्ड सैनिकों के प्रति बहुत प्यार है। रक्षा राज्य मंत्री तो सेना में से ही आए हैं, वे अगर ध्यान नहीं देंगे तो और कौन ध्यान देगा ? मैं प्रधान मंत्री, रक्षा मंत्री और राज्य मंत्री का आभार मानता हूँ; क्योंकि वे सैनिकों की जो कठिनाइयां हैं, उन पर ध्यान दे रहे हैं।

न केवल हिन्द महासागर बल्कि अरब सागर की तरफ भी ध्यान दिया जाए। यह न हो कि अरब सागर को भूल जाएं। मेरी दृष्टि कासिम बन्दरगाह (समुद्री किनारा) की तरफ है वहां से भी वार (युद्ध) हो सकता है। राजस्थान और कच्छ बार्डर की तरफ भी ध्यान दिया जाना चाहिए। वहां किसी प्रकार की कमी हो तो उसे दूर करना चाहिए। पाकिस्तान के बजट को देखते हुए हमारा बजट बहुत कम है लेकिन फिर भी हमारे जवानों के हौसला बुलन्द हैं। वे देश की रक्षा के लिए हर प्रकार की परिस्थिति में काम करने के लिए तैयार हैं। इन शब्दों के साथ रक्षामंत्रालय का जो बजट बढ़ाया जा रहा है, उसका मैं स्वागत करता हूँ और तीनों कमाण्ड के कमाण्डरों को इसके लिए बधाई देता हूँ।

□□

प्यारे भाई,

सांसद श्रद्धेय आचार्य भगवान देव के सम्मान में आपका विशेषांक प्रकाशित करने जा रहे हैं—यह जानकर प्रसन्नता हुई।

आचार्य जी सदैव समाज के हर वर्ग की निःस्वार्थ सेवा की है। सिन्धी समाज भी उनकी निष्काम सेवाओं को कभी भुला नहीं पाएगी।

विशेषांक की सफलता की कामना करते हुए मैं अपनी कामनाएं प्रकट करती हूँ कि मालिक आचार्य जी को और भी शक्ति एवं दीर्घायु प्रदान करे ताकि वे सदा की तरह समाज के हर वर्ग की सेवा करें, देश के हाथ मजबूत करें।

शुभ कामनाओं सहित
प्रो० सुशीला मोटवाणी
अजमेर

खुदा क्या है 'अकबर' से पूछा किसी ने।
वह बोला ख़ुदा और क्या है ख़ुदा है।

भारत की एक-एक इंच भूमि की कीमत है।

संसद में आचार्य द्वारा छावनी कानून में संशोधन पर भाषण

अजमेर लोकसभा क्षेत्र के सांसद आचार्य भगवान देव ने सरकार द्वारा छावनी संशोधन विधेयक पास कराने पर बधाई देते हुए संसद में कहा कि—

छावनी संशोधन विधेयक जो भारत सरकार द्वारा सदन में पेश किया गया है, मैं उसका समर्थन करता हूँ। यह छावनी कानून सन् १९२४ में बना था, तब से लेकर अब तक कई बार इस पर विचार होता रहा, कुछ सुझाव आते रहे, लेकिन संशोधन नहीं हो पाया यह पहली बार संभव हो सका है कि विस्तृत रूप में यह संशोधन लाया गया है। इसलिए मैं भारत सरकार को बधाई देता हूँ। इसी बीच में सन् १९३७ में भूमि कानून व्यवस्था संबंधी और उसी वर्ष १९३७ में छावनी कर्मचारी राशि निगम भी बनाया गया। इन तमाम समस्याओं के ऊपर अच्छी तरह से चिंतन मनन कर बहुत ही सुन्दर तरीके से संशोधन पेश किये गए हैं।

कल हमारे विरोधी पक्ष के एक सदस्य ने यह कहा कि यह संशोधन बिना अच्छी तरह से विचार किए पेश किया गया है, जिससे सहमत नहीं हूँ। उसी विरोधी पक्ष के माननीय सदस्य ने यह भी स्वीकार किया कि समय-समय पर विभिन्न इकाई द्वारा दिए गए सुझावों को शामिल किया गया है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि भारत सरकार के पास समय-समय पर जो भी सुझाव आते रहे हैं, उनको ध्यान में रखकर ही जो कमेटी बनी, उन्होंने संशोधन करके यह बिल पेश किया है। इसलिए मैं कहना चाहता हूँ कि विरोधी पक्ष के माननीय सदस्य ने जो विचार रखे उन्हीं के शब्दों में उनकी बात कट जाती है। वास्तव में इसमें अनेक प्रकार की खामियां रही हैं देश में लगभग 60-65 छावनियां हैं। उस वक्त इन छावनियों के आस-पास इतनी बस्ती नहीं थी। अब एक-दो दुकानें बढ़ते-बढ़ते नगर बस गये हैं और इस कानून को बने हुए भी 60 साल हो गये हैं।
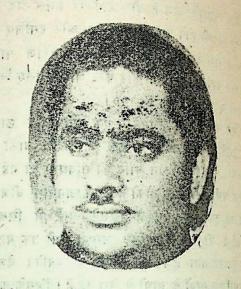
वहां व्यवस्था नागरिकों के लिए करनी है। वहां मिलिट्री छावनी भी है और नागरिकों की बस्ती भी है। जिसके कारण अनेक-प्रकार की कठिनाइयां पैदा होना स्वाभाविक है। मिलिट्री छावनी होने के नाते जो सैनिक लोग और उनके अधिकारी वहां रहते हैं, उनकी सुविधायें उसी के अनुसार की जाती हैं, लेकिन जो नागरिक वहां बस गए हैं उनकी स्थिति बिल्कुल विपरीत है, उनके पास उतनी सुविधायें नहीं हैं। अधिक असमानता न हो इस दृष्टि से इस संशोधन बिल को यहां पर पेश किया गया है। फिर भी बहुत सी ऐसी बातें हैं जिनके बारे में सोचना आवश्यक है, जैसे—स्वास्थ्य और शिक्षा की बात है, इनके लिए प्रान्तीय सरकारों को अधिकार दिए जाने की बात है। मैं समझता हूँ कि इस पर रक्षा

बहुत कोशिशें कीं बहुत सिर खपाया।
समय में न आया कि संसार क्या है॥

मंत्रालय को सोचना चाहिए। केन्द्रीय सरकार और रक्षा मंत्रालय यदि इस पर ध्यान देंगे तो उससे वहां के नागरिकों को न्याय मिल पायेगा, अन्यथा आमदनी का जरिया न होने के कारण अनेक प्रकार की कठिनाइयां खड़ी हो जाती हैं। सड़क, बिजली और पानी की अनेक समस्याएं खड़ी हो जाती हैं।

आपने इस बिल में बोर्ड का समय बढ़ाया है, जो उपाध्यक्ष का पद है, उसकी अवधि ढाई साल की निश्चित की है। मैं समझता हूँ-रक्षा मंत्रालय को इस पर भी सोचना चाहिए जब बोर्ड का कार्यकाल ५ साल का है तो उपाध्यक्ष की नियुक्ति ढाई साल के लिए कहां तक उचित है। विधानसभा और पार्लियामेन्ट की अवधि के आधार पर ही इसको सोचना चाहिए, अन्यथा अनेक प्रकार की अव्यवस्थायें खड़ी हो जायेंगी।

एक निवेदन में यह करना चाहता हूं कि कैन्ट्रनमेंट बोर्ड का चैयरमैन एक ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जो सामाजिक व्यक्ति हो, क्योंकि उसको नागरिकों के साथ भी सम्बन्ध रखने होंगे। हम कई छावनियों में गए हैं, हमने देखा कि चैयरमैन मिलिट्री का अधिकारी होता है और वह मिलिट्री के ढंग से चलता है, सामान्य नागरिकों के साथ उसका सम्पर्क नहीं होता है, मीटिंग के टाइम पर ही जो प्रतिनिधि होते हैं उनके साथ ही उसकी वार्तालाप होती है। मै चाहता हूँ कि इस पर भी विचार किया जाये कि चैयरमैन ऐसा व्यक्ति हो जो लोगों के साथ सम्पर्क रखने वाला हो उनकी समस्याओं में रुचि रखने वाला व्यक्ति हो ताकि लोगों के साथ मिलकर वह व्यवस्था कर सके जिससे आने वाले समय में उनके सामने कोई दिक्कतें खड़ी न हों।

इसी संबंध में एक सुझाव देना चाहता हूं कि जब ये छावनियां बनाई गई थीं। वे शहर से बाहर थीं लेकिन अब जितनी छावनियां हैं वे शहर के बीच में हैं। इससे बहुत सी समस्यायें खड़ी हो गई हैं। जो छावनियां शहर के बीच में आ गई हैं, उनकी जमीनों की कीमतें बहुत बढ़ गई हैं। यदि उन ज़मीनों को बेचकर छावनी को शहर के बाहर ले जायें तो इससे उस जमीन का उपयोग भी होगा साथ ही जिस परपज से वेचेंगे उससे आमदनी का जरिया भी बन सकता है। मिलिट्री को हमेशा शहर से बाहर रखना चाहिए अगर इस तरह की व्यवस्था रक्षा मंत्रालय कर दे तो इससे बड़ा लाभ यह भी होगा कि कभी-कभी नागरिकों के साथ सैनिकों के जो झगड़े हो जाते हैं, वे समाप्त हो जायेंगे। मैं एक उदाहरण आपके सामने रखता हूँ। पुरानी दिल्ली में यूनिवर्सिटी केम्पस की जो जमीनें हैं उनमें बहुत सम्बन्धित हैं और दिल्ली प्रशासन से भी सम्बधित हैं। मैं चाहता हूँ कि इस तरह की जो जमीनें पड़ी हुई हैं जिनका इस समय कोई उपयोग नहीं हो रहा है उन जमीनों को भारत सरकार बेच दे, रक्षा मंत्रालय बेच दे ताकि उनका पैसा भी अच्छा आए और उस जमीन का उपयोग भी हो चाहे दिल्ली यूनिवर्सिटी अपने प्रोफेसर के लिए उसका उपयोग करे या छात्रों के लिए बोडिंग हाऊस स्थापित करे परन्तु शहर के बीच में जो इस तरह की जमीनें पड़ी हैं उनका उपयोग हो सके।

क्योंकि भारत की एक-एक इन्च भूमि की अब कीमत बढ़ती जा रही है। तो इस बात की तरफ ध्यान देना चाहिए। रक्षा मंत्रालय और सरकार ने गत तीन वर्षों में जो छावनियों के विकास पर ध्यान दिया है मैं समझता हूं उसके लिए ये बधाई के पात्र हैं। मेरे क्षेत्र में नसीराबाद में मिलिट्री छावनी है और उस को मैंने देखा है। चाहे वह प्रान्तीय सरकार हो और चाहे वह भारत सरकार हो या उसका रक्षा मंत्रालय हो, वहां पर जो दिक्कतें आती रही हैं। उन पर सरकार ने ध्यान दिया है। वहां पर बीच में जो मैदान है। उसमें रक्षा मंत्रालय द्वारा बहुत कुछ काम किया जा सकता है। वहां पर जो रिटायर सैनिक हैं, उनकी सेवायें ली जा सकती हैं और जो सैनिकों की विधवायें हैं, उनके कल्याण के लिए कुछ किया जा सकता है या सैनिकों के बच्चों के लिए कुछ खड़ा करना है, वह वहां पर बनाया जा सकता है। इस

कोई लखपति है मगर गोद खाली।
कोई भूखा है ग्यारह बच्चों का वाली॥

प्रकार की जो योजनायें हैं उन योजनाओं को साकार करने के लिए भारत सरकार और रक्षा मंत्रालय अगर ध्यान देगा, तो बहुत ही अच्छा रहेगा।

चैयरमेनशिप के बारे में मैंने कहा है कि चैयरमेन ऐसे व्यक्ति को बनाया जाये, जो व्यावहारिक हो और नागरिकों से जिसका सम्बन्ध हो जैसे हमारी भारत सरकार ने एयर चीफ मार्शल श्री मेहरा को उनके रिटायर होने के बाद हमारे राजस्थान का राज्यपाल नियुक्त किया है। उनको हमने देखा है। वे एक सामाजिक व्यक्ति हैं। इसी तरह से मि० लतीफ को महाराष्ट्र का गवर्नर बना दिया है। ऐसे व्यक्तियों को, जिनका नागरिकों के साथ सम्पर्क हो, चैयरमैन बनाया जाए और मैं आशा करता हूं कि रक्षा मंत्रालय मेरे सुझावों पर ध्यान देगा।

नसीराबाद मेरे क्षेत्र में है और वहां पर एक छावनी आपने बना रखी है, जैसा कि मैंने पहले निवेदन किया है, लेकिन वहां पर मकान, सड़क, बिजली और पानी की बहुत-सी समस्याएं हैं। वहां पर एक हैलीपैड भी है, जिसका निर्माण कार्य पूरा कराना चाहिए। कई साल से वह पड़ा हुआ है। आप जानते ही हैं कि इधर पाकिस्तान की कुचेष्टा चल रही है और उसके दिमाग में एक फितूर सवार है और अपनी कमजोरियों को छिपाने के लिए हो सकता है कि वह भारत के साथ युद्ध छेड़ दे। नसीराबाद के पास ही अजमेर में ख्वाजा साहब की दरगाह है। वहां जो हैलीपैड है, वह बहुत अच्छा है और उसको उपयोग में लाया जा सकता है और मैं समझता हूं कि उस हैलीपैड का अच्छी तरह से निर्माण कराकर और उसकी मरम्मत कराकर उसका ठीक कराया जाना बहुत आवश्यक है ताकि किसी भी समय उसका उपयोग हो सके।

हमारे विरोधी पक्ष के माननीय सदस्य ने कल यह कहा था कि यह विधेयक बहुत ही जल्दबाजी में लाया गया है और इसको दोनों सदनों की समिति को वापस लौटाया जाये। मैं इस बात से सहमत नहीं हूं। ६० साल हो गए हैं और अब बड़ी मुश्किल से यह संशोधन विधेयक आया है और यह कुछ विचार लेकर और कुछ सुझावों के साथ आया है। इसलिये इसको वापस भेजने की आवश्यकता नहीं है। लोकसभा और राज्य सभा सर्वोपरि हैं और इसमें समिति के सारे सदस्य हैं। वे मुक्त भाव से यहां पर अपने विचार रखें और जो विधेयक लाया गया है, उसको सर्व सम्मति से पास किया जाए।

इन शब्दों के साथ, जो संशोधन विधेयक माननीय रक्षामंत्री जी ने रखा है, मैं उसका समर्थन करता हूं। □

किशन चन्द रल्हन

प्रेजिडेण्ट सेक्रेटरी

दूरभाष : 626109

जे 35, साउथ एक्सटेंशन।

नई दिल्ली-110049

दिनांक 16-2-84

आचार्य भगवानदेव संसद सदस्य

आचार्य जी महऋषि दयानन्द जी के अनन्य भगत हैं। ऋषि के सिद्धान्तों का प्रचार सारी आयु करते रहे हैं। मैं उन को लगभग 30 वर्ष से जानता हूं, आप साहित्यकार, अनथक समाज सेवी, अनेक भाषाओं के जानकार, प्रभाववाणी वक्ता, आर्यसमाजी नेता, बड़े ही गो भगत, सिन्धी समाज के हृदय सम्राट, पत्रकार, गरीबों के सहायक हैं। यही कारण है कि वह कांग्रेस इन्द्रा की ओर से बड़ी सफलता के साथ चुनाव लड़कर संसद सदस्य बन चुके हैं मैं उनको 50 वर्ष में प्रवेश करने पर बधाई देता हूं। परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि आचार्य जी दीर्घायु होकर इसी प्रकार समाज, देश इत्यादि की सेवा करते रहें।

किशनचन्द रल्हन

अन्तरिग सदस्य कार्य प्रादेशक प्रतिनिधि सभा

नहीं पूछता कोई अपना पराया।
यह संसार कैसा है अद्भुत बनाया॥

संसद में आचार्य जी का जोरदार भाषण

विरोधी दल के नेता जनता को गुमराह करते हैं

आचार्य भगवान देव, सांसद, (अजमेर) : उपाध्यक्ष महोदय, किसी का बल्व फ्यूज हो और फिर भी वह बटन दबाता चला जाये और चाहे कि रोशन हो जाए तो मैं समझता हूँ कि उस व्यक्ति को या तो लोग पागल कहेंगे या मूर्ख। हमारे विरोधी दल के व्यक्ति हमेशा कोई न कोई बेमतलब की बात खड़ी करके न सिर्फ जनता को गुमराह करते हैं परन्तु इस सदन का महत्वपूर्ण समय भी बरबाद करते हैं। अभी हमारे सोमनाथ चटर्जी साहब ने एक बात कही। हमारे वाणिज्य मंत्री जी ने जो 24 अगस्त और 1 अक्तूबर को असाधारण कदम उठाया उसको उन्होंने धर्म निरपेक्षता के आधार पर पाखंड की संज्ञा दी। यह इतनी अज्ञानता की बात इन्होंने कही। इस देश में हर सम्प्रदाय को बड़ी इज्जत से देखा जाता है, हर व्यक्ति को स्वतन्त्रता है, अपना धर्म मानने की, मस्जिद के सामने बैंड-बाजा बजता है, तो उनकी भावनाओं का ध्यान रखा जाता है। गाय हमारी मां है, वह घास खाकर हमें दूध देती है। गाय इस देश की कृषि के लिए, अर्थ के लिए, धर्म के लिए हर दृष्टि से एक महत्वपूण प्राणी है और इसीलिए इस देश में, जिसको कृषि प्रधान देश कहा जाता है, उसकी जनता ने उसे मां का स्वरूप दिया है। यह क्या जानें कि गाय क्या चीज है। इनको गाय देखनी हो तो यहां विरोधी दल के लोग बैठे हैं गाय की पूंछ पकड़कर जैसे वैतरणी पार करते हैं वैसे ही यहां सदन में आये। आन्दोलन किया। गौ हत्या बन्दी के नारे लगाये और वह क्या खाते हैं, माननीय सुब्रह्मण्यम स्वामी ने इस की पुष्टि कर दी। उन्होंने अनशन किया माननीय वाजपेयी और माननीय चरणसिंह ने वोट क्लब पर। मैं पूछना चाहता हूँ क्या मांस खाने वाले व्यक्ति को चर्बी के बारे में बात करने का हक है?
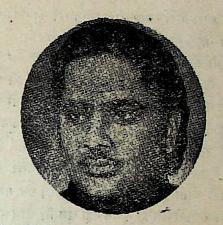
आचार्य भगवान देव: जो व्यक्ति मांस खाता है, हड्डियों के अन्दर जो तत्व होता है, वह खाता है और वही व्यक्ति यहां ढोंग करता है वोट क्लब पर बैठकर अनशन करता है और देश को गुमराह करने की बात करता है तो क्या यह पाखंड नहीं है?

आचार्य भगवान देव : मैं पूछना चाहता हूं, माननीय सुब्रह्मण्यम स्वामी से कि सबसे बड़ी मिलावट जनता पार्टी के टाइम में हुई क्या इसको मिलावट नहीं कहेंगे।

आचार्य भगवान देव : इनके नेताओं ने वोट क्लब पर जो उपवास किया मुझे लगता है कि जो उल्टे-सुल्टे कर्म किए थे उसकी शुद्धि करने के लिए वह अनशन किया था। नहीं तो मांस खाने वाले को चर्बी का विरोध करने का कोई हक नहीं है।

आचार्य भगवान देव: उपाध्यक्ष महोदय, यह कहते हैं मिलावट का कार्यक्रम; यह तो सबसे बड़ा धोखा है। जनता पार्टी के शासन में जो अलग-अलग सिद्धान्तों की पार्टियां मिलीं, यह सबसे बड़ा पाखंड था, यह मेरी मान्यता है, जिसको इन्होंने स्वर्ण युग कहा है। स्वामी जी भूल गये हैं, उस समय प्याज का भाव ५ रु० प्रति किलो था। क्या वह स्वर्ण युग था? वह पैट्रोल पी गये तब कोई ध्यान नहीं आया? सोना

गए दोनों जहान नजर से गुजर।
तेरी शान का कोई बशर न मिला॥

इन्होंने बेच खाया श्री जेठमलानी स्मगलरों की वकालत करते हैं। यह कैसी पार्टी है, क्या इनका सिद्धान्त है।

स्वामी जी ने लौंगोवाल की बात कही कि उन्होंने गाय के बारे में यह बात कही हैं। यहां स्वामी जी श्री लौंगोवाल की वकालत करते हैं, पंजाब में इन्सानों का कत्ल हो रहा है, क्यों नहीं लौंगोवाल जी की जुबान खुलती ? उनकी गाय की बात करने की हिम्मत कैसे होती है ? जब वहां व्यक्ति मर जाते हैं, सिखों को गोली मारी जाती है स्वर्ण मन्दिर के बाहर। उस समय आपकी और लौंगोवाल की जुबान नहीं खुलती? आज आप उनकी वकालत करते हैं और कहते हैं कि मैं वहां गया था, वहां कुछ भी नहीं मिला।

आप इस सदन को भी गुमराह करते हैं। इस तरह की बातें विरोधी दल के लोग करके इस देश को गुमराह करने की कोशिश कर रहे हैं, पर जनता ने इनको पहचान लिया है। अब इनमें दम नहीं है।

हमारे श्री सोमनाथ चटर्जी चले गये। जिन्होंने धर्म निरपेक्षता की बात कर गाय की बात कहते हुए यह पाखंड की बात कही। तो यह पाखंड है। श्री सोमनाथ चटर्जी और उनके साथियों को मैं कहना चाहता हूँ कि इस देश का खा-पीकर रशिया और चीन के सपने देखते हो, यह सबसे बड़ा पाखंड और देशद्रोह है इस तरह की गाय के सम्बन्ध में बातें करना।

हमारी प्रधान मंत्री 3 नवम्बर को महर्षि दयानन्द की निर्वाण शताब्दी पर अजमेर में गई। मैं भी वहां उपस्थित था। उन्होंने कहा कि चर्बी के ऊपर देश को गुमराह करने का जो कुप्रयास चल रहा है, उससे जनता को सावधान रहना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि जो भी कानून तोड़ेगा, उसके खिलाफ सख्त कदम उठाया जाएगा। यही बात हमारे वाणिज्य मन्त्री ने भी कही है। इन्होंने जो असाधारण कदम इस देश की जनता की भावनाओं को देखते हुए उठाया है, इसके खिलाफ इधर विरोध भी करते हैं और इधर डालडा घी वालों से मिलते हैं और चुनाव के लिए पैसा लेते हैं। ये चोर को कहते हैं चोरी कर और साधु को कहते हैं कि सावधान हो जाओ।

विश्व हिन्दू परिषद् ने ३१-१०-८३ को वाणिज्य मंत्री को एक पत्र लिखा है। जो पेपर में आया है, उसमें उन्होंने मंत्री जी को बधाई दी है इस कदम के लिए काजी कुछ कह रहा है और वह मौलाना वहां अनशन कर रहे हैं, वोट क्लब पर बैठकर। क्या नीति है इनकी ये कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं।

ये पठानकोट में अकालियों की वकालत करते हैं। और यहां आकर उसका विरोध करते हैं, क्योंकि इन्हें दिल्ली और पंजाब के वोट लेने हैं। वहां की जनता को ये बेवकूफ बना रहे हैं, लेकिन अब जनता गुमराह होने वाली नहीं है।

गौ-हत्या बन्द करने की बात श्री सुब्रह्मण्यम स्वामी कहते हैं, मैं एक बात बता दूं कि मैं परम गौ-भक्त हूं। गौ-हत्या बन्द करने की बात कहने वाले श्री वाजपेयी और सुब्रह्मण्यम स्वामी, मोरारजी भाई, को मैं चेलेन्ज करता हूँ, अगर इनके घर पर गाय हो तो। लेकिन आचार्य भगवान देव ने गाय रखी हुई है और वह भी काली गाय। वाजपेयी जी और चरण सिंह ने देखा नहीं होगा।

आज हम उस गाय का शुद्ध दूध पीते हैं। हमारी प्रधान मन्त्री जी ने आर्य समाज जैसी संस्था को दिल्ली में आदर्श गौ-शाला के लिए जमीन दी है।

मैं इनसे पूछना चाहता हूं कि गौ-हत्या की बात करने वाला, ढाई साल के अपने शासन में गौ-हत्या बंद क्यों नहीं की, इसके लिए कोई कानून क्यों नहीं बनाया। पूर्ण बहुमत होते हुए भी इन लोगों ने कुछ नहीं किया। जब सत्ता चली गई, तो इन सबका नेत्र खुल गया है। जैसा कि पाण्डेयजी ने कहा है, इसके पीछे क्या राज है कि मोरारजी भाई या धारिया ने अपने टाईम में कुछ नहीं किया। अब सत्ता से हटने के बाद जनता को गुमराह करने के लिए अलग-अलग बातें करके अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं। लेकिन अब जनता सावधान है। वह जानती है कि इनको पांच साल के लिए सत्ता दी थी, लेकिन ढाई साल में ही बोरी-बिस्तर गोल करके चले गए, क्योंकि इनके अलग-अलग सिद्धांत थे। अलग-

तेरी गत-मित तू ही जानी।
'नानक' नाम सदा कुर्बानी॥

अलग पालिसियां थीं। कहां कम्युनिस्ट पार्टी और कहां जनसंघ वाले, कहां चौधरी चरण सिंह और कहां बाबू जगजीवन राम? क्या इनमें कोई मेल है? परन्तु फिर भी ये मिल गए। आज जो चर्बी की मिलावट की चिंता कर रहे हैं, सबसे बड़ी मिलावट उन्होंने की। उन सब पार्टियों ने मिलकर पाप किया।

आज भारतीय जनता पार्टी ने एक नया पाखंड चलाया है, जिसकी ओर मैं सरकार का ध्यान दिलाना चाहता हूं। छः दिन पहले मैं हैदराबाद में था वहां के लोगों ने कहा कि यहां एक बहुत बड़े टैंकर में से बोतलें भरकर एक-एक बोतल गंगा-जल कह कर 11 रुपये से 151 रुपए तक में बेची गई। मैंने पूछा कि क्या वह टैंकर हरिद्वार की हर की पौड़ी से भर कर लाया गया था। मुझे बताया गया कि एक लौटे में भर कर लाये और उसे टैंकर में डाल दिया। मैं वाणिज्य मन्त्री और स्वास्थ्य मंत्री से जानना चाहता हूं कि भारतीय जनता पार्टी वाले जो पानी देकर एक पाखंड च ला रहे हैं और अपने राजनैतिक स्वार्थ-साधन के लि : देश को गुमराह कर रहे हैं, इस मिलावट के बारे में भारत सरकार नया कदम उठाने जा रही है? क्या यह जनता के साथ धोखा नहीं है? क्या यह पाखंड नहीं है? जब कोई किसी पेय में मिलावट करता है, यहां पर विरोधी पक्ष के लोग बड़ी-बड़ी बातें करते हैं और उसके खिलाफ सख्त कदम उठाने की मांग करते हैं। परन्तु वह जो पानी को गंगा जल कह कर 151 रुपये की बोतल बेची जा रही है, भारत सरकार इसके सम्बन्ध में क्या कार्यवाही कर रही है? मैं इतने बड़े पाखंड और मिलावट के बारे में मंत्री महोदय का जवाब चाहता हूं। जनता यह समझ चुकी है कि जो नलों का पानी गंगा जल कह कर बेचा जा रहा है, यह उनको डुबोयेगा, उनकी हस्ती को मिटाएगा। यह पाखंड इस देश में नहीं चल सकता।

जहां तक यज्ञ का सम्बन्ध है, हरिजनों और गरीबों को यज्ञ नहीं करने दिया गया 17 तारीख को यज्ञ का पाखंड खड़ा करके कहा गया कि हम धार्मिक दृष्टि से कर रहे हैं। उनका स्वागत भारतीय जनता पार्टी के लीडरों, श्री अटल बिहारी वाजपेयी, श्री विजय कुमार मल्होत्रा और श्री खुराना, जो मांस खाते हैं, ने किया। उनको यज्ञ करने और यज्ञ की बात करने का क्या हक है? ये राजनैतिक व्यक्ति स्वागत करने के लिए गये और अब वह कहते हैं कि हमारा इनसे कोई सम्बन्ध नहीं है। ये लोग पाखंड करके फंड इकट्ठे कर रहे हैं। इनके खिलाफ सख्त कदम उठाना चाहिए चाहे गृहमंत्री उठाएं या स्वास्थ्यमंत्री उठाएं। अगर ऐसा नहीं किया जाएगा, तो यह पाखंड बढ़ता जाएगा, देश के स्वास्थ्य, विचारों और दिलो-दिमाग पर इसका प्रभाव पड़ेगा और इसका रीएक्शन होगा।

मुझे खुशी है कि मोरारजी देसाई को इस यज्ञ में राजनीति नजर आई और उन्होंने कलश का अभिषेक करने से मना कर दिया। कहीं बवंडर खड़ा न हो जाए इसलिए चन्द लोग इधर-उधर पहुंच गए। पोलोटिकल दृष्टि से यह जो पाखंड चलाया जा रहा है उस पर ब्रेक लगाने के लिए भारत सरकार को यथोचित कदम उठाना चाहिए। मैं मन्त्री महोदय से पूछना चाहता हूं कि 1973-74, 1974-75 और 1975-76 में इसका कितना आयात हुआ और उसके बाद जनता पार्टी के शासन में कितना आयात हुआ।

इसके साथ-साथ क्या यह सही नहीं है कि 1977-78 में जनता पार्टी के शासन में साढ़े 62 हजार टन चर्बी का आयात उन्होंने किया?

दूसरी बात यह है कि जो कम्पनियां वनस्पति घी बनाती हैं उनमें से कितनी कम्पनियों की अभी तक आपने जांच की है और जहां मिलावट का प्रमाण मिला है, वहां उन कम्पनियों के खिलाफ आपने क्या कार्यवाही की है? इसके साथ ही साथ मैं यह भी जानना चाहता हूं कि भटिण्डा, अमृतसर में कितने मामले दर्ज हुए और उनके खिलाफ क्या कार्यवाही हुई। मुझे आशा है कि इन सवालों के जवाब आप देंगे तो जनता पार्टी की कलई खुल जायेगी।

वनस्पति मैन्युफैक्चरर्स की जो एसोसिएशन है उसने वनस्पति की सच्चाई के बारे में एक बुलेटिन सभी

आज बेशक मेरी किस्मत में नहीं फूल मगर।
कल भी कांटों पे बसर हो यह जरूरी तो नहीं॥

मेम्बर्स के पास भेजी है जिसमें उन्होंने स्पष्ट किया है, 50 वर्ष का इतिहास देते हुए, कि वनस्पति में किसी प्रकार की मिलावट नहीं है ? क्या उनकी यह बात सही है ?

मुझ आशा है कि विरोधी दल के लोग पोलिटिकल दृष्टि से जो पाखंड चला रहे हैं, बटन दबा कर रोशनी लाना चाहते हैं यद्यपि उनके बल्ब फ्यूज हो चुके हैं और उनको जनता ने साइड में बिठा दिया है। वे अपने इस पाखंड को बन्द करेंगे, इस सम्बन्ध में मन्त्री जी ने जो असाधारण कदम उठाया है उसके लिए मैं बधाई देता हूं और माननीय प्रधानमन्त्री, जो इस सम्बन्ध में चिंतित हैं, उनके प्रति भी अपनी श्रद्धा व्यक्त करता हूं।

आचार्य भगवान देव : जिनको आपने देखा नहीं है, उनके प्रति श्रद्धा क्यों रखते हो। लेनिन और मार्क्स को आपने देखा नहीं है और उनके प्रति आप श्रद्धा रखते हैं।

□□

संस्थापित 1886 ई० | ओ३म् | फोन-45993

1643 वि० | श्रीमद्दयानन्दाब्द 156

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश

श्री नारायण स्वामी-भवन

5, मीराबाई मार्ग
लखनऊ-पिन-226001
दिनांक 1-1-1984 ई०

संख्या............

संदेश

आचार्य भगवान देव जी आर्य जगत के रत्न हैं और उन पर हम सब को गर्व है। विवेकशील विचार के साथ ही आचार्य जी कुशल अभिवक्ता एवं लेखक हैं। अतः उनके हृदय स्थल में उद्भूत विचार उनके प्रखर मस्तिष्क की उर्जा से स्पन्दित होकर उनके प्रभावी शक्तिपूर्ण लेखनी के माध्यम से हमें प्राप्त होते हैं विगत बहुत वर्षों से आचार्य भगवान देव जी आर्य जगत को नवीन दिशा दे रहे हैं। आर्यत्व का संदेश सुना रहे हैं।

वर्षगांठ के अवसर पर मैं उनका अभिवादन करता हूं और प्रभु से कामना है कि आचार्य जी भविष्य में अधिक वर्षों तक अपनी ओजस्वी शक्ति से आर्य जगत् को जागृत करते रहें। नवीन दिशा देते रहे। इतिशम्।

कैलाशनाथ सिंह
प्रधान
आ. प्र. सभा, उ. प्र.

रन, वन, व्याधि, विपत्ति में रहिमन परयो न रोय।
जो रक्षक जननी जठर, सो प्रभु गयो न सोय ॥

संसद में आचार्य जी का भाषण

अर्थ व्यवस्था को न समझने वाले बुद्धि के ब्रह्मचारी

नई दिल्ली । आचार्य भगवानदेव (अजमेर) माननीय सभापतिजी, माननीय वित्त मंत्री जी ने जो बजट प्रस्तुत किया है, उसके लिए मैं उन्हें बधाई देना चाहता हूं। बिगड़ती हुई अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा स्थिति को देखते हुए जो सुन्दर, श्रेष्ठ और सन्तुलित बजट पेश किया गया है, उसके लिए वे बधाई के पात्र हैं ।

श्री रवीन्द्र वर्मा, माननीय वित्त मन्त्री जी को बधाई देते हुए स्वयं, 'परन्तु और लेकिन' के चक्कर में पड़ गए।

उन्होंने एक बात कही कि आय और व्यय का चित्र अच्छी तरह पेश नहीं किया जब कि स्वयं ही आंकड़ों का उल्लेख करते हुए जो कहना था कह दिया । यह तो एक ऐसी बात हुई कि हरियाली सामने हो फिर भी किसी को नजर न आए । इसमें हरियाली का दोष नहीं है देखने वालों का दोष है। ये विरोधी पार्टी के लोग निराश और हताश हो चुके हैं । इन्होंने अपने काल में क्या नहीं किया ? ये आइने में चेहरा देख लेते ।

इन्होंने आक्षेप लगाया है कि मंहगाई बढ़ गई है। क्या यह सच नहीं है कि जनता पार्टी के टाईम में जब यह मेंढ़की टोला और एक विचारधारा के लोग बनकर मंच पर खड़े हुए थे तो प्याज पांच रुपये किलो था और बाद में चीनी 14 रुपये किलो इनके टाईम में हुई। चीनी का बेड़ा गरक इन्होंने किया । यदि आप सुनना चाहते हैं तो आंकड़े देकर हम दलील करने के लिए तैयार हैं। आपकी अर्थ व्यवस्था को न समझने वाले बुद्धि के ब्रह्मचारियों ने चीनी का भाव गिराया और उसी की वजह से गन्ने का भाव मिट्टी में मिल गया और किसान को पैसा नहीं दिया, उसके लिए दोषी आप लोग हैं। 14 रुपये किलो चीनी और पांच रुपये किलो प्याज आपने किया। पैट्रोल को पी गए । पैट्रोल और डीजल लोगों को नहीं मिलता था। लम्बी लाइनें लगती थीं। आपकी व्यवस्था का दिवाला जनता देख चुकी है और इसलिए आप अपने घर पर जाकर बैठ गए, जनता ने आपको घर पर पहुंचा दिया ।
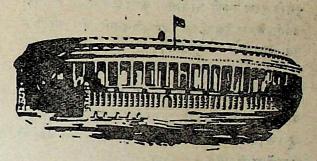
अंतर्राष्ट्रीय मुद्रास्फीति को देखते हुए संतुलित बजट रखा गया है । श्री रवीन्द्र वर्मा ने भी स्वीकार किया है कि बड़ी कुशलता से और बहुत अच्छा बजट रखा गया है। लघु उद्योग की उन्होंने बात कही। गत वर्षों में लघु उद्योगों का बहुत विकास हुआ है। बड़े-बड़े उद्योग पनप न जायें इसका ध्यान रखा है और ग्रामीण क्षेत्रों में लघु उद्योगों को प्रोत्साहन देने के लिए प्रयत्न किए गए हैं। ग्राम विकास बैंक योजनायें बनाई गईं और उनमें अधिक पैसे रखे गए हैं। नौजवान शहर की ओर न बढ़ें इसका ध्यान रखा गया है जिससे यह गांव में रहकर वहां पर विकास कर सकें। लघु उद्योग करने की बात आपने कही। सभापति जी वह लघु उद्योग बंद होता है जो बैंकों से लेकर शराब पीता है, जो मेहनत नहीं करता। जो नौजवान व्यक्ति मेहनत नहीं करता है वह कम ही उत्पादन पाता है जो बीज डालता है उसको कई गुना बीज मिलते हैं। यह प्रकृति का नियम है। उनको बहकाने वाले और कार्य न कर सके इसलिए झोंकने का प्रयास करते हैं। इसके लिए जवाबदार विरोधी पार्टी के नेता हैं। (व्यवधान) जो गत वर्षों में स्मगलरों और चोरों की वकालत करते रहे हैं और आप चाहते हैं कि यहां की व्यवस्था ठीक हो जाए। क्या यह सही नहीं है कि मधुदंडवते जी और राम जेठमलानी जी दोस्त हैं। एक-दूसरे को इन्होंने सहयोग दिया है। एक तरफ स्मगलरों को बचाने के लिए वकालत करते हैं और

राजी हैं हम उसी में जिस में तेरी रजा है ।
यां यूं भी वाह-वाह है, और वूं भी वाह-वाह है ॥

दूसरी तरफ उनकी आलोचना करते हैं। आइने में थोड़ा अपना चेहरा देख लें कि आपकी कथनी और करनी में क्या अंतर है ?...व्यवधान)

दो प्रतिशत बिजली का विकास हुआ है। सीमेंट 10.2 और फर्टिलाईजर 9.6 प्रतिशत बढ़ा है। रेलवे, कच्चा तेल, लघु उद्योग, के सम्बन्ध में कितना काम हुआ है। ग्रामीण क्षेत्रों में हजारों की संख्या में सस्ते भाव की दुकानें खुली हुई हैं।

हर व्यक्ति यह चाहता है कि उसके क्षेत्र का विकास हो और दूसरी तरफ कहते हैं कि टैक्स लगाये जा रहे हैं। यदि कोई आमदनी का जरिया नहीं होगा तो देश के अन्दर जो हर मेम्बर चाहता है कि उसके क्षेत्र का विकास हो वह कभी नहीं हो सकता है। उसके लिए आवश्यक है कि करों को बढ़ाया जाना चाहिए ताकि देश का विकास हो। पेयजल, सूखे की व्यवस्था ठीक की जाय यह सब बिना पैसे के कैसे हो सकता है।

एक बात मैं धार्मिक ट्रस्टों के बारे में कहना चाहता हूं कि काले धन की बात माननीय रवीन्द्र वर्मा ने की। मैं बताना चाहता हूं कि इस देश के अन्दर काला धन कैसे लगाया जाता है अपने लाभ के लिए। जितने धार्मिक ट्रस्ट बना रहे हैं। बड़े-बड़े उद्योगपति उन कम्पनियों में भी डायरेक्टर और पार्टनर हैं और इधर ट्रस्टों के अन्दर भी कुछ न कुछ देकर पद लिए हुए हैं। धर्म के नाम पर अधर्म का जो काम कर रहे हैं। मैंने पहले भी कहा था और वित्त मन्त्री जी यहां बैठे हुए हैं बाहर की बात छोड़ दीजिए, इसी दिल्ली के अन्दर दिल्ली के भूतपूर्व मेयर ने आज भी कई ट्रस्टों की संपत्ति पर अधिकार कर रखा है। जो लोग खाकी निक्कर पहन कर यहां आ गए हैं उन्होंने भारत गौ सेवक के लाखों रु० श्रद्धानन्द ट्रस्ट में लगा रखे हैं। आपको अगर काला धन निकालना है और धर्म के नाम पर जो चोर बाजारी हो रही है उसको मिटाना है तो उस श्रद्धानन्द ट्रस्ट, जोरबाग, भारत गौ सेवक समाज, सदर, थाना रोड दिल्ली, (स) मुखर्जी ट्रस्ट पिछड़ा वर्ग सेवा संघ, जोरबाग दीवान चन्द ट्रस्ट, नई दिल्ली, राधोमल आर्य ट्रस्ट, की सम्पत्ति के, इस व्यक्ति ने करोड़ों रुपया अपनी कम्पनियों में रख रखे हैं। आप इसकी जांच कीजिए। बिना उन ट्रस्टों को पूछे उस व्यक्ति ने उन कम्पनियों में अधिकारी होते हुए दूसरी कम्पनियों में उस पैसे को भेज दिया जो मेरठ में शराब बना रही हैं।

डूब मरना चाहिए, धर्म का पैसा, आर्य समाज के ट्रस्टों का पैसा, गऊ का पैसा लेकर शराब बना रहे हैं। इसकी जांच कीजिए आपको करोड़ों रु० का काला धन मिल जाएगा नियंत्रण करना चाहिए। यह मैं भारत सरकार से मांग करता हूं।

आचार्य भगवानदेव : सभापति जी, जो बजट पेश किया गया है मैं समझता हूं वह बहुत सुन्दर है। कोई भी सरकार आती है वह अपने समय में आर्थिक स्थिति को देखते हुए कर लगाती है। क्योंकि उसे देश का विकास करना होता है। उसी दृष्टि से उसे कर भी लगाना होता है।

माननीय सदस्य, रवीन्द्र वर्मा जी ने बीस-सूत्री कार्यक्रम की बाबत कहा है कि वह एक अमर आत्मा है। यह एक हकीकत है। संसार भर में जितने भी वाद है वह वाद-विवाद में बदल सकते हैं, लेकिन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधीजी ने जो बीस-सूत्री कार्यक्रम हमारे सामने पेश किया है उससे मजदूरों, किसानों, पिछड़े हुए वर्ग के लोगों तथा ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले लोगों का सर्वांगीण विकास किया जा सकता है जिससे कि वे सुखी जीवन की नींद ले सकते हैं। इसलिए मैं श्री रवीन्द्र वर्मा जी को बधाई देना चाहता हूं कि उन्होंने बीस-सूत्री कार्यक्रम को अमर आत्मा की संज्ञा दी। श्रीमती गांधी ने इस देश की अर्थ व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए, यहां की गरीबी और पिछड़ेपन को पेश किया है और उसके माध्यम से ही देश का सर्वांगीण विकास किया जा सकता है।

अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों तथा अंतर्राष्ट्रीय तनावों को देखते हुए रक्षा के ऊपर जो बजट बढ़ाया गया है उसको भी मैं अत्यावश्यक समझता हूं तथा सरकार को इसके लिए बधाई देता हूं।

जैसी परे सो सहि रहे, कहे रहीम यह देह।
धरती पर ही परत सब शीत, घाम और मेह॥

इसी प्रकार से इस बजट का अच्छा असर मध्यम वर्ग के लोगों तथा कर्मचारियों के जोवन पर भी पड़ेगा क्योंकि इस बजट के द्वारा उनको बहुत सी राहतें दी गई हैं। नशीली चीजों पर रोक लगाने के लिए हमने जीवन भर संघर्ष किया है। अत: उन चीजों पर अधिक कर लगाकर जो अंकुश लगाने का काम किया गया है, उसके लिए भी मैं सरकार को बधाई देता हूं।

इन शब्दों के साथ माननीय वित्त मन्त्री जी ने जो बहुत कुशलता, सुयोग्यता और सुन्दरता के साथ बजट पेश किया उसका मैं हृदय से समर्थन करता हूं।

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल

(दक्षिण दिल्ली की ४७ आर्य समाजियों का संगठन)

रामसरनदास आर्य (महामन्त्री)

श्री भगवान देव को मैं काफी समय से जानता हूँ उन्होंने हर क्षेत्र में उन्नति की है, जो इस प्रकार है—

(1) आप बहुत समय तक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के काफी समय तक सहायक मन्त्री रहे हैं और सार्वदेशिक सभा का काम बड़ी निष्ठा से किया है। सभा को चलाने में बहुत योगदान दिया है।

(2) आप कन्या गुरुकुल बड़ौदा में काफी समय तक रहे हैं। गुरुकुल के प्रबन्ध को अच्छी प्रकार से चलाया। छात्राओं को प्रत्येक हर दृष्टि से प्रोत्साहित किया। इस समय वहाँ के आप उपप्रधान हैं।

(3) आप 5 वर्ष तक लोक सभा के संसद सदस्य रहे हैं। संसद में आपने हिन्दू जाति के लिए और आर्य जाति के लिए आवाज उठाई। हिन्दी के विकास के लिए और पंजाब, कश्मीर आदि समस्या पर खुलकर संसद में बोले। सब मामले आपने संसद में बुद्धिमता से रखे। भगवान न इनकी वाणी में बड़ा मिठास व निडरता दी है।

(4) आर्य समाज के कार्य में बचपन से ही संलग्न रहे हैं। आर्य समाजियों के उत्सवों व सम्मेलनों में थोड़े समय की प्रार्थना पर भी आते रहे और महर्षि के प्रति अपने विचार और श्रद्धांजलि देते रहे। जब भी इनको दक्षिण दिल्ली प्रचार मण्डल ने पधारने के लिए प्रार्थना की, आपने मेरी ऐसी प्रार्थनाओं को सहर्ष स्वीकार किया। हमारा मण्डल आचार्य जी का बहुत आभारी है।

(5) योग के संवन्ध में आपने अनेकों पुस्तकें योग्यता के साथ लिखी हैं जो पढ़ने में बहुत लाभकारी हैं। उनसे लोगों को बहुत लाभ हुआ है।

(6) महर्षि दयानन्द की जन्मभूमि टंकारा में आचार्य जी निरन्तर 12 वर्ष तक आश्रम के अध्यक्ष रहे। टंकारा के कार्यों की रूपरेखा आप पूर्ण निष्ठा के साथ देखते रहे। जब हर वर्ष लोग टंकारा की यात्रा को आते थे—तब अतिथियों और यात्रियों का पूरा सम्मान व सेवा करते थे।

(7) लन्दन, मौरिशस, नैरोबी में आर्य महासम्मेलन हुए भारत के कोने कोने से आपने आर्यजनों को उन सम्मेलनों में सम्मिलित होने की प्रेरणा दी और उनके हर प्रबन्ध को आपने अच्छी प्रकार से संभाला। वहां पर ओजस्वी प्रवचनों से जनता के दिलों पर प्रभाव डाला और बहुत सराहे गये।

कबीरा क्या मैं चिन्तहूं मम चिन्ते क्या होय।
मेरी चिन्ता हरि करे, मोहे न चिन्ता कोय॥

जनता पार्टी शासन में भारत की बिगड़ी छवि

काँग्रेस इ० ने पुनः सुधारी

आचार्य भगवानदेव (अजमेर) : सभापति महोदय, विदेश मंत्रालय की मांगों का समर्थन करने के लिए मैं खड़ा हुआ हूं। मैं अपने माननीय मन्त्री जी को इस बात के लिए बधाई देता हूं कि अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों को देखते हुए जो साम्राज्यवादी शक्तियां आगे कदम बढ़ाना चाहती हैं उसमें बड़ी सूझबूझ है। बैलेन्स रखते हुए भारत की गरिमा का ध्यान रखते हुए उन्होंने जो कुछ भी कदम उठाये हैं उनके लिए मैं उन्हें बधाई देता हूं।

अभी जनता पार्टी के लीडर श्री सुब्रह्मण्यम स्वामी ने विदेश मंत्रालय की नीति की आलोचना की और पड़ोसी देशों के सम्बन्ध बिगड़े हैं ऐसा आक्षेप किया। परन्तु हकीकत यह है कि जनता पार्टी के शासन में जो स्थिति बिगड़ी हुई थी उससे कहीं अधिक बेहतर आज बनी है।

निर्गुट सम्मेलन के समय भी हिन्द और पाक के आयोग सम्बन्धी जो बातें हुईं, माननीय प्रधानमन्त्री जी द्वारा पाकिस्तान के सैनिक शासक के साथ जो बातचीत हुई उसमें उन्होंने बड़े मार्के की बात कही है कि लाहौर और अमृतसर सिर्फ 50 मील की दूरी पर है और हमारा आदान-प्रदान 35 मील है। रेल-डाक-तार और संचार का भी आदान प्रदान होना चाहिए। इससे स्पष्ट हो जाता है कि भारत सरकार क्या सोचती है प्रधान मन्त्री और विदेश मन्त्री क्या सोचते हैं। यह नीति स्पष्ट हो जाती है कि हम पड़ोसी देशों से अच्छे सम्बन्ध रखना चाहते हैं, जिनको बिगाडने का यह प्रयास विरोधी पार्टी के लोग हमेशा करते रहे हैं। ये एक तरफ लोकशाही की बात करते हैं और दूसरी तरफ तानाशाहों के साथ मिलते भी हैं और वहां विरोध भी करते हैं।

परसों यहां भारतीय जनता पार्टी के उपाध्यक्ष श्री राम जेठमलानी ने भी कहा कि निर्गुट सम्मेलन में 101 प्रतिनिधि आये। उसमें दो राष्ट्र ऐसे थे जहां लोकशाही हैं और 19 ऐसे हैं जहां डिक्टेटर राज्य करते हैं। परन्तु यह इस बात को भूल गए कि जो भी यहां आये वे राष्ट्रों के राष्ट्राध्यक्ष या उनके प्रतिनिधि, चाहे वह लोकशाही को मानते हों या न मानते हों, उन्होंने यहां सर्वसम्मति से वोट देकर हमारी परम आदरणीय प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी को सम्मेलन का अध्यक्ष चुना।

एक माननीय सदस्य उसमें चुनाव नहीं हुआ।

आचार्य भगवान देव : यह एक हकीकत है कि जो चुनाव को नहीं मानते थे, वह भी सहमत थे, उन्होंने चुनाव में भाग लिया, किसी ने विरोध नहीं किया। श्रीमती इन्दिरा गांधी को अध्यक्ष बनाने में। यह भी लोकशाही की परम्परा है। जो राष्ट्राध्यक्ष लोकशाही को नहीं मानते, जो चुनाव को नहीं मानते, उन्होंने भी सर्वसम्मति से उन्हें चुना, इसमें 101 राष्ट्रों की सहमति थी उनको बनाया। अगर उन्होंने मत नहीं दिया तो विरोध भी नहीं किया। आज जो इस तरह से लोकशाही को नहीं मानते उन्होंने भी उन्हें चुनकर अध्यक्ष बनाया। दूसरी तरफ इन लोगों की चाल देखिये कि पाकिस्तान के साथ दुहाई देते हैं और यहां अटैक करते हैं।

न कुछ हम हंस के सीखे हैं, न कुछ रोके सीखे हैं।
जो कुछ थोड़ा सा सीखे हैं, किसी के होके सीखे हैं॥

अभी बोल कर गए हैं जनता पार्टी के लीडर श्री सुब्रह्मण्यम स्वामी। क्यों हमें यह पता नहीं है कि यह जनता पार्टी के लीडर श्री स्वामी उस सैनिक तानाशाह से मिलने के लिए पाकिस्तान गए और उनसे बातचीत करके आये, रोटी खाकर आये। दूसरी पार्टी भारतीय जनता पार्टी है उसके उपाध्यक्ष श्री राम जेठमलानि, वे पाकिस्तान गए, वहां उस सैनिक तानाशाह से बातचीत करके आए। लोकदल के जार्ज फर्नांडीज भी उस सैनिक तानाशाह के यहां गये उनसे बातचीत करके आये। ये विरोधी दल के लोग अमरीका के इशारे पर इस देश में क्या-क्या अराजकता फैलाकर आसाम और पंजाब यहां दिल्ली में लाना चाहते हैं? उनके सम्बन्ध में मैं ज्यादा गहराई में नहीं जाना चाहता क्योंकि समय का अभाव है। ये विरोधी पार्टी के लोग हमेशा दुरंगी चाल चलते हैं। वे सदन में कुछ कहते हैं, बाहर कुछ कहते हैं और विदेश में कुछ और कहते हैं। इनकी कलई यहाँ भी खुल चुकी है और पूरे संसार में भी खुल चुकी है। मैंने एक बार कहा भी था कि दुरंगी छोड़कर एक रंग हो जाओ संग हो जाओ या सारा होम हो जा।

आचार्य भगवानदेव : यह संसदीय शब्द नहीं है। आप भले ही देख लीजिए। मैंने उस उद्देश्य से नहीं कहा है। परन्तु हकीकत यह है कि विरोधी पार्टियों के लोग तानाशाही से मिलते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय कूटनीति, ए० के० ब्रोही को दिल्ली की रामलीला ग्राऊंड की आम सभाओं में बुला कर भारतीय जनता पार्टी के लोग स्वागत करते हैं। इससे बढ़कर और क्या. प्रमाण होगा कि ये कितने देशभक्त हैं। इन्होंने इस तरह की स्थिति पैदा करने का प्रयास किया है जिससे पड़ौसी देशों के साथ हमारे सम्बन्ध बिगड़ें। हमारी प्रधानमन्त्री जी और विदेश मन्त्री ने पूरा प्रयास किया है कि न केवल पड़ोसी देश बल्कि सारी दुनिया के साथ हमारी मैत्री हो, जियो और जीने दो की नीति को अपनाकर चलें और हर क्षेत्र में लोकशाही के आधार पर स्वतन्त्र होकर विचारों का आदान-प्रदान कर सकें तथा मुक्त वातावरण में रह सकें। निर्गुट सम्मेलन जिस सफलता के साथ सम्पन्न हुआ है उसके लिए मैं परम आदरणीया प्रधानमन्त्री तथा विदेश मंत्री को बधाई देता हूं।

मैं विदेश मन्त्री का ध्यान इस ओर दिलाना चाहूंगा कि जितने भी हमारे दूतावास हैं उनकी स्थिति अच्छी है। आज जो अन्तर्राष्ट्रीय तनाव है और जो परिस्थितियाँ हैं उनको देखते हुए हमारा बजट बहुत कम है। विदेश मंत्रालय का बजट बढ़ाना चाहिए। संसदीय राजभाषा समिति के दौरे के सिलसिले में कई देशों में मैं गया था। वहां के दूतावासों की जो स्थिति मैंने देखी उसका विस्तृत विवरण मैं नहीं देना चाहता, सामान्य रूप से कहना चाहता हूं कि वहां पर अनेक प्रकार की कमियां हैं। वहां पर आर्थिक स्थिति न होने के कारण कई प्रकार की कमियां हैं। जिनको दूर किया जाना चाहिए इसके अलावा दूतावासों में जो अधिकारी व कर्मचारी हैं उनका वहां के प्रवासी भारतीयों के साथ सम्पर्क भी बढ़ाना चाहिए प्रवासी भारतीयों के साथ उनके सम्बन्ध बहुत कम है। राजभाषा हिन्दी का प्रयोग करने के सम्बन्ध में टाइपिस्ट एवं अधिकारियों की भी कमी थी इसकी पूर्ति होनी चाहिये। इसके सम्बन्ध में आज तक कितनी बाकी है, इसका विवरण देने की कृपा करें।

इसके अतिरिक्त अभी लन्दन में कुछ घटनायें घटी हैं एक ही दिन में तीन भारतीय प्रवासियों की हत्या कर दी गई। आए दिन हम अखबारों में पढ़ते हैं कि लंदन में भारतीय लोगों के ऊपर सरकार के इशारे पर कुछ स्थानीय गुण्डों के द्वारा जुल्म ढाये जाते हैं और उनको डराया-धमकाया जाता है। अभी तीन व्यक्तियों की जो मृत्यु हुई है उसके सम्बन्ध में भारत सरकार ने क्या कदम उठाया है आगे भारतीय प्रवासियों को सुरक्षा के लिए क्या कार्यवाही की गई है? क्या इस सम्बन्ध में ब्रिटिश सरकार को कोई विरोध-पत्र दिया गया है और क्या उनकी ओर से कोई जवाब आया है—इसके बारे में भी विदेश मन्त्री हमें सूचना दें।

मैं एक बात डिएगोगार्सिया के सम्बन्ध में भी कहना चाहता हूं। इसकी चर्चा अभी निर्गुट सम्मेलन में भी

'ग़ालिब' न कर हजूर में, तू बार-बार अर्ज़।
जाहिर है तेरा हाल सब उन पर कहे बग़ैर ॥

हुई है, लेकिन इसके साथ मैं विदेश मन्त्री का ध्यान सेलसियस की तरफ भी दिलाना चाहता हूं। बीच में वहां पर कुछ बगावत, वहां के प्रशासन के खिलाफ हुई थी। जहां तक मुझे पता है मैं एक बार वहाँ पर गया भी था। वह एक अन्तर्राष्ट्रीय अड्डा बनता जा रहा है। विदेशी ताकतों की नजर वहां पर गिद्द की तरह से लगी हुई है। उस टापू के सम्बन्ध में भी भारत सरकार को बड़ी सावधानी रखनी होगी। सिर्फ डिएगोगार्शिया का ही मामला नहीं है। सेलसियस भी उनमें से एक है। इस सम्बन्ध में भारत सरकार क्या कर रही है मैं जानना चाहूंगा।

जहां तक मोरिशियस का सवाल है, मोरिशियस में भी उथल-पुथल हो रही है। जहां तक मुझे पता है, विदेशी ताकत वहां भी अपनी नजर जमाने की कोशिश कर रही है। वहां आर्य समाज का संगठन मजबूत है। मैं वहां एक-दो बार गया हूं। 1973 में आर्य समाज सम्मेलन था उस समय प्रतिकूल अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितयां थीं। उसमें हमने इस ढंग से कार्यवाही की जिससे भारतीयों में फूट न पड़े। मोरिशियस का प्रेम भारत के साथ बना रहे, ऐसी बात वहां के लोगों को समझाने की कोशिश करें। वहाँ दूतावास और कर्मचारी भी बड़े सूझ-बूझ के होने चाहिए, जिससे भारतीयों के साथ संबंध अच्छे रहें। इसकी तरफ भी भारत सरकार को ध्यान देना चाहिए।

पाकिस्तान बहुत छोटा देश होते हुए भी उसने भारत के बजट से सुरक्षा का अपना बजट दुगुना बनाया है। इसके संबंध में भी भारत सरकार को सोचना होगा और कदम उठाना होगा तथा विदेश मंत्रालय को इसकी तरफ भी ध्यान देना होगा।

स्वामी जी आ गए हैं। मैं उनके संबंध में भी एक बात और कहना चाहता हूं। इन्होंने अफगानिस्तान की बात कही और भारतीय जनता पार्टी वालों ने भी अफगानिस्तान की बात कही, परन्तु ये पाकिस्तान की बात नहीं करते हैं। पाकिस्तान ने अमरीका के इशारे पर मदद ली, चाहे वह बारूद की हो या कोई और साधन हो, इस संबंध में वे सदन में खड़े होकर टीका टिप्पणी नहीं करते हैं। आज अफगानिस्तान में रशिया है, तो अफगानिस्तान के कहने से है। उनकी स्वीकृति से है। भारत किसी भी राष्ट्र के अन्दर हस्तक्षेप नहीं कर सकता है। क्योंकि उसने अपनी नीति ऐसी बना रखी है। इस बात पर जोर क्यों दिया जाता है कि रशिया से कह दो कि वह अफगानिस्तान से हट जाए अफगानिस्तान में एशिया है, तो अफगानिस्तान की सरकार ने उनको निमंत्रण दिया है। जब तक वे चाहेंगे उसको रखेंगे और जब नहीं चाहेंगे, तब हटा देंगे।

डॉ० सुब्रह्मण्यम स्वामी दोबारा कहिए।

आचार्य भगवान देव ने कह दिया। मैं आपको सुनाना चाहता हूं। स्वामीजी अफगानिस्तान की बात करते हैं लेकिन पाकिस्तान की बात नहीं करते जो अमरीका से हथियार मंगा रहा है। आप में हिम्मत है तो आप सदन में खड़े होकर कहें कि अमरीका का पाकिस्तान में जमाव है और उनको दी जाने वाली मदद का मैं विरोध करता हूं। यह आप क्यों नहीं कहते हैं?

डॉ० सुब्रह्मण्यम स्वामी : मैं विरोध करता हूं।

आचार्य भगवान देव : यह बात खुलकर आई।

डॉ० सुब्रहमण्यम स्वामी : आप कल की बात कहिए।

आचार्य भगवान देव : मैं तो कह रहा हूं रशिया अफगानिस्तान की सरकार की सहमति से है।

आचार्य भगवान देव : आप उनसे क्या कह रहे हैं। वे पहले ही अपना जवाब दे चुके हैं। आप सोए हुए थे समाधि लग गई थी—

(व्यवधान) विदेश मंत्री ने पहले ही कह दिया है।

विदेश मंत्री (श्री पी. बी. नरसिंहराव) मैंने जो कहा है वही कह रहे हैं।

आचार्य भगवान देव : विदेशमंत्री पहले ही कह चुके हैं कि अफगानिस्तान की स्वीकृति से रशिया वहां पर है। (व्यवधान)

स्वामी जी खुलकर बात नहीं करते हैं आए दिन अमरीकी विश्वविद्यालय के निमंत्रण पर वहां पहुंच जाते हैं। वहाँ पर ये क्या-क्या करते हैं यह उनका व्यक्तिगत मामला हो सकता है लेकिन हमें उनकी गति-विधियों से सावधान रहना पड़ेगा।

डॉ० सुब्रह्मण्यम स्वामी : आप मंत्री जी से पूछिये।

आचार्य भगवानदेव : सारी जानकारी है।

डॉ० सुब्रह्मण्यम स्वामी : रखो न सभा पटल पर।

आचार्य भगवान देव-जहां तक ईराक और ईरान की बात है पड़ौसी देश और दुश्मनावट, उनका भी साथ-साथ हाउस में बैठना कोई कम सफलता की बात नहीं है। □□

शुक्र कर शिकवा न कर बदहाली का अपनी ऐ 'कृष्ण'।
बेहतरी तेरी, कोई इसमें इसी तौर न हो॥

देश के सर्वांगीण विकास के लिए कर लगाना आवश्यक है।
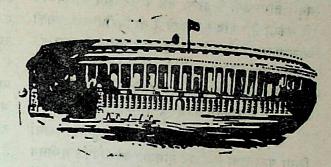
संसद में वित्त विधेयक का समर्थन करते हुए अजमेर जिले के सांसद आचार्य भगवानदेव ने कहा कि "विश्व की बिगड़ती अर्थव्यवस्था को देखते हुए वित्तमंत्री और उनके सहयोगी जिस सूझ-बूझ से अंतर्राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था का ध्यान रखते हुए जो बेलैंस बनाकर चल रहे हैं, ताकि हमारे देश की व्यवस्था बिगड़ने न पाये उसके लिए मंत्रालय के तीनों मंत्री बधाई के पात्र हैं। अतिवृष्टि और अनावृष्टि ने और पिछले पांच सालों में कई राज्यों में जो अकाल पड़ा है, उसने भी हमारे देश की अर्थव्यवस्था पर बड़ा प्रभाव डाला है। उससे भी निपटना अपने आप में एक बड़ी महत्वपूर्ण बात है।

बजट बड़ी समझदारी से तय किया है। 20 सूत्री कार्य-क्रम का, जिसका हर वर्ग हर राजनैतिक पार्टी ने स्वागत किया है, समावेश करने, सस्ते भाव की दुकानों की स्थापना करने, ग्रामीण क्षेत्रों में उद्योगों की स्थापना पर ध्यान देकर ग्रामीण लोगों और नौजवानों के शहरों की तरफ भागने पर रोक लगाने का प्रयास किया गया है। ग्रामीण विकास बैंकों में 25 प्रतिशत की वृद्धि हमारी प्रगति का प्रतीक है। इससे प्रकट होता है कि गांवों की तरफ हमारी नजर गई है। जब तक हमारे गांव का विकास नहीं होगा, तब तक इस देश का विकास नहीं हो सकता।

श्री आचार्य ने कहा कि इस बजट में मध्यम वर्ग के लोगों का ध्यान रखा गया है, महिलाओं तथा गृहणियों की दिक्कतों को सामने रखा गया है और सरकारी कर्मचारियों के लिए वेतन आयोग बनाया गया है। ये सब भी स्वागत योग्य कदम हैं।

विरोधी पार्टियों के सदस्यों ने इस बजट के बारे में जो आपत्ति उठाई थी, उनको ध्यान में रखकर वितमंत्री ने करों में राहत देने के बारे में जो घोषणा की है मैं उसका स्वागत करता हूं और उसके लिए उनका अभिनन्दन करता हूं। कुछ परिस्थितियां अभी-अभी पैदा हुई हैं, जैसे उत्तर प्रदेश में गन्ने के संबंध में कठिन स्थिति बनी। स्वयं प्रधानमंत्री जी ने उसमें रुचि ली। और भारत सरकार की तरफ से राहत देने की घोषणा की तथा उसको तुरन्त लागू भी किया गया। साथ ही साथ महाराष्ट्र में कपास की जो स्थिति पैदा हुई, उसको भी ध्यान में रखते हुए माननीय वित्त मंत्री जी ने रिजर्व बैंक को आदेश दिया और 12 करोड़ की मदद देने की बात कही। यह ऐसी परिस्थितियां हैं जो अचानक खड़ी हो जाती हैं लेकिन वित्त मंत्रालय बड़ी समझदारी से तात्कालिक कार्यवाही उनके संबंध में करता है।

इसी प्रकार से जो बे-मौसम बरसात हुई उसका गेहूं की फसल पर प्रभाव पड़ा। उस पर भी भारत सरकार ने ध्यान दिया तथा प्रदेशीय सरकारों ने भी ध्यान दिया है। यह ऐसी बातें हैं जिन पर टीका करना बड़ा सरल है। हर व्यक्ति अपने क्षेत्र में विकास चाहता है लेकिन दूसरी और टेक्सों की आलोचना भी की जाती

पल्ले खर्च न बांधते पंछी ते दरवेश।
जिन्हां भरोसा रब्ब दा तिन्हां रिजक हमेश॥

है। घर से निकाल कर तो कोई राष्ट्र का उद्धार नहीं कर सकता है। देश में जो उत्पादन होगा और जो कर वसूल होगा उसी के द्वारा देश के हर क्षेत्र का विकास हो सकता है। यदि कर बढ़ते हैं तो विरोधी-दल उसकी आलोचना करते हैं। परन्तु यदि हम सारे बजट पर निष्पक्ष होकर विचार करें तो हम देखेंगे कि यह बजट हर दृष्टि से बहुत सुन्दर है। और मांगें रखीं गई हैं उनका भी मैं समर्थन करता हूं।

यहां दिल्ली के विकास के लिए बहुत-सा खर्चा किया गया तथा यहां पर एशियाड और निर्गुट सम्मेलन के आयोजन किए गए। यह ऐसे सम्मेलन थे जिनके यहां पर किए जाने की कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था। आज दिल्ली का जिस प्रकार से विकास हुआ जो बड़े-बड़े स्टेडियम बने बड़ी-बड़ी प्रदर्शनियां बड़े-बड़े आयोजन तथा बड़े-बड़े सम्मेलन यहां किए जा रहे हैं उनमें जो लाभ होगा उसकी कल्पना इसी समय संकीर्ण विचारधारा वाले व्यक्ति नहीं कर सकते हैं। यदि आप धरती में बीज नहीं डालेंगे तो खेती उत्पादन कैसे होगी। जो खर्च करना नहीं जानते वे उत्पादन कर नहीं सकते। यह खर्च किया अभी गया है परन्तु इसका जो लाभ आने वाले युग में देश को मिलेगा उसका अनुमान देश की अर्थव्यवस्था की गहराई में गए हुए व्यक्ति ही कर सकते हैं। यहां पर जो बड़े-बड़े सम्मेलन हुए या आगे होने वाले हैं उनमें विदेशी लोग आते हैं और उनके आने से इस देश की अर्थव्यवस्था पर क्या प्रभाव पड़ता है उसकी ओर कोई नहीं देखता है। छोटे से देश जर्मनी ने प्रदर्शनियां तथा मेले लगाकर अपने देश की अर्थ-व्यवस्था को संभाला है। हमारी माननीय प्रधान मंत्री जी तथा युवा नेता श्री राजीव गांधी ने स्वयं इनमें रुचि ली थी और उसका लाभ देश को मिल रहा है। प्रगति मैदान में बहुत से मेलों का आयोजन किया जा रहा है। उनमें विदेशी कपनियां विदेशी प्रतिनिधि एवं प्रांतीय सरकारें भी भाग लेती हैं। इसका प्रभाव हमारे देश की अर्थ-व्यवस्था पर पड़ता है साथ ही विदेशों को हमारे देश की प्रगति के बारे में भी जानकारी होती है। इसकी ओर विरोधी पार्टी के लोग ध्यान नहीं देते हैं। यह दुर्भाग्य की बात है। जहां तक राजस्थान का संबंध है वहां पर पांच साल से जो अकाल पड़ रहा है और पेयजल की जो समस्या है उससे हमारी माननीय प्रधान मन्त्री बहुत चिंतित हैं इसी सप्ताह में वे वहां पर राजस्थान नहर को देखने के लिए गई थीं। इसी बात से हम अंदाजा लगा सकते हैं कि हमारी माननीय प्रधानमन्त्री जी देश के कोने-कोने में जाकर वहां की जनता की दिक्कतों को दूर करने का प्रयास स्वयं कर रही हैं। राजस्थान नहर का विकास करना अभी बाकी है और जब राजस्थान कैनाल का काम पूरा हो जायेगा तब मैं समझता हूं कि राजस्थान एक सरसब्ज बन जाएगा और जो समस्या हमारे सामने है वह भविष्य में खड़ी नहीं होगी इस संबंध में से एक बात कहना चाहता हूं कि रिटायर्ड सैनिक यहां रखे जायेंगे रिटायर्ड सैनिक बड़ा बहादुर व्यक्ति होता है वह धरती को हरा-भरा करना चाहता है उत्पादन करना चाहता है क्योंकि वह जानता है कि राष्ट्र के गौरव को कैसे बढ़ाया जा सकता है वहां नहरें निकाले जाने को नागौर तक योजना बनाई गई है, सभापति जी मैं अजमेर जिले से चुनकर आया हूं अजमेर एक बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है वहां ख्वाजा की दरगाह है वहां संसार भर के मुसल-मान यात्री आते हैं विश्व में एकमात्र पुष्कर में ब्रह्माजी का मन्दिर है वहां संसार भर के हिन्दू यात्री आते हैं, महर्षि दयानन्द जी की निर्वाण स्थली है अजमेर में प्रतिवर्ष हजारों व्यक्ति आते हैं लेकिन वहां पेयजल की समस्या बड़ी भयंकर और विकट है मैं वहां का रहने वाला हूं वहां चार-पांच दिनों तक लोगों को पानी नहीं मिल पा रहा है सरकार ने प्रयास करके हैण्डपम्प लगाये हैं परन्तु उनसे गुजारा नहीं हो रहा है वहां नीमाज की योजना पर 2 करोड़ रुपए खर्च किए गए परन्तु पता नहीं वहां सरकार के अधिकारी क्या कर रहे हैं जो पाइपलाइन वहां लगाई गई है वह टूट जाती है और पानी बेकार चला जाता है जनता को पानी नहीं मिल रहा है मैं चाहता हूं कि भारत सरकार उसकी जांच कराए कि उस पाइपलाइन में क्या खराबी है और जनता को पानी क्यों नहीं मिल रहा है उसका दुरुपयोग

बड़े बड़ाई न करें बड़े न बोलें बोल।
रहिमन हीरा कब कहें, लाख टका है मोल॥

क्यों हो रहा है ?

ब्यावर के संबंध में भी हम प्रधानमन्त्री जी से मिले बिसलपुर की योजना राजस्थान सरकार ने केन्द्र सरकार के पास भेजी है अजमेर बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है जहां पर अन्तर्राष्ट्रीय यात्री आते हैं लेकिन उनको दो-तीन दिन तक पानी नहीं मिलता है पानी के अभाव में अनेक प्रकार की समस्याएं पैदा हो जाती हैं और बीमारियां पैदा हो जाती हैं, स्थान के गौरव को ध्यान में रखते हुए बीसलपुर की जो योजना कई सालों से बनाई जा रही थी उस योजना को बनाकर राजस्थान सरकार ने केन्द्र के पास भेजी है यह पहला मौका है जबकि राजस्थान सरकार ने योजना बनाकर केन्द्र के पास भेजी है उस योजना को भारत सरकार को अपने हाथ में लेना चाहिए राजस्थान नहर से जो छोटी-छोटी केनाल बनाई जा रही हैं उसको नागौर तक ले जाने का प्लान है मैं चाहता हूं कि उस केनाल के पानी को नागौर से होते हुए अजमेर और सिरोही तक ले जाया जाये जिससे पिछड़े क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की जो पेयजल समस्या है वह खड़ी न हो इससे वहां की खेती हरी भरी होगी।

राजस्थान एक रेगिस्तानी और पहाड़ी क्षेत्र है। वहां की बहनें मातायें सिर पर मटका रखकर बहुत दूर तक पानी भरने के लिए जाती हैं। यह इतनी विचित्र स्थिति है कि इसको आंखों से ही देखने से पता चल सकता है कि कितना करुणामय दृश्य है। अजमेर के पानी की समस्या का समाधान करना बहुत ही आवश्यक है। मैं चाहता हूं कि भारत सरकार राजस्थान केनाल को अजमेर तक ले जाए और बीसलपुर को जितना जल्दी हो सके उसको क्रियात्मक रूप दे ताकि वहां अजमेर जिले के लोगों की पीने के पानी की समस्या का समाधान हो और लोगों को राहत मिल सके।

इसके साथ-साथ अभी कुछ दिन पहले पेपर में यह बात आई थी कि भारत के कुछ इने-गिने चार-पांच छः उद्योगपतियों ने सारी अर्थव्यवस्था पर कन्ट्रोल कर रखा है पंजा जमा रखा है।

विदेशों में रहने वाले प्रवासी भारतीय हैं, जो चाहते हैं कि हिन्दुस्तान में आकर हम उद्योग खड़ा करें और इस देश को खुशहाल करें, उनके सामने आने वाली अड़चनों को देखते हुए माननीय प्रधानमंत्री और माननीय वित्तमन्त्री जी से प्रार्थना की है। प्रवासी भारतीय चाहते हैं कि हम हिन्दुस्तान में आ करके उद्योग लगायें। परन्तु उनको कुछ सुरक्षा व सुविधाएं चाहिए। भारत सरकार ने उस बात की तरफ ध्यान दिया, प्रधानमंत्री जी ने इसमें रुचि ली। मैं बधाई देता हूं कि वित्तमन्त्री जी और वित्त मन्त्रालय के अधिकारियों ने इसमें रुचि ली और एक योजना बनाई जिससे कि प्रवासी भारतीय अपने वतन में, जन्म भूमि में धन लगाने को प्रेरित हों। परन्तु बूंद मुठ्ठी भर उद्योगपति, सामंतशाही व्यक्ति इस बात को पसन्द नहीं कर रहे हैं। उनके हाथ में पेपर है इसलिए वे इस बारे में तरह-तरह की बातें करते हैं और देश को गुमराह करते हैं। यह एक बहुत बड़ा दुर्भाग्य का विषय है।

हिन्दुस्तान के लोग खुशहाल हों, यहां की तरक्की हो, अर्थव्यवस्था अच्छी बने, इसके लिए हिन्दुस्तान के हर नागरिक को खुश होना चाहिए। दुर्भाग्य है कि चन्द पूंजीपति लोग इस देश को खुशहाल नहीं देखना चाहते। वे यह चाहते हैं कि यहां प्रजा गरीब रहे और वे एयर कंडीशन कमरों में बैठकर, एयर कंडीशन कारों में घूम-कर आराम करें। वे यह नहीं चाहते कि इस देश में से असमानता दूर हो। मैं कहना चाहता हूं कि देश में यह असमानता देर तक नहीं चल सकती है। इस असमानता को दूर करने के लिए माननीय प्रधानमन्त्री जी और वित्त मन्त्रालय कार्य कर रहे हैं। मैं चाहता हूं कि चंद पूंजीपतियों की तरफ ध्यान न देकर उन प्रवासी भारतीयों को जो कि इस देश में पैसा लगाना चाहते हैं अधिक से अधिक सुविधाएं दी जाएं ताकि वे इस देश में आकर उद्योग लगायें जिससे कि इस देश के गरीब लोगों को रोजी-रोटी मिल सके। भारत सरकार का इस तरफ ध्यान है, इसके लिए मैं उसको बधाई देता हूं।

हमारे मिलों के जो मजदूर हैं जिनके संबंध में यह

तुझ से यह वर मांगता, मैं जाऊं सब भूल।
नित दिन तेरी धुन में रहूं, हे जीवन के मूल॥

घोषणा की गई है कि मिलों के प्रबन्ध में मजदूरों का सहयोग लिया जाएगा, यह एक बहुत बड़ा अभिनन्दनीय कार्य है। मेरे क्षेत्र ब्यावर में एक कृष्णा मिल है जिसको प्राइवेट व्यक्ति चला रहा है। मुझे सूचना मिली है कि जो वहां उत्पादन हुआ है, वह बाजार में मंदी के कारण बिक नहीं पा रहा है। मालिक के पास पड़ा है जिसके कारण वह मजदूरों को पेमेंट नहीं कर पा रहा। जब मुझे इस बात की सूचना मिली तो मैं वहां गया और मजदूर यूनियनों जिनमें कम्युनिस्ट लोगों की यूनियन भी शामिल है उनके नेताओं को लेकर मालिक से मिला और उससे इस महीने की पेमेंट मजदूरों को करा दी। मजदूरों ने मुझको यह भी बताया कि अगले महीने भी यह स्थिति आयेगी और जून तक यह स्थिति चल सकती है। इसलिए भारत सरकार से प्रार्थना करता हूं कि जिस प्रकार से उत्तर प्रदेश की गन्ने की स्थिति के बारे में और महाराष्ट्र की कपास के बारे में सरकार ने कदम उठाये, उसी प्रकार के कदम यहां के बारे में भी वह उठाये। महाराष्ट्र की कपास के रिजर्व बैंक से 12 करोड़ रुपये का प्रबन्ध किया गया। मैं चाहता हूं कि कृष्णा मिल में जो माल पड़ा हुआ है, जो कि बिक नहीं रहा है, उस माल को भारत सरकार खरीद ले। उस माल को चाहे दुःखी जनों में वित्तरित करना पड़े लेकिन उस माल को खरीद कर भारत सरकार इस मिल के मजदूरों की सहायता करे।

इसके साथ-साथ वहां दो मिलें चल रही हैं। एक एडवर्ड मिल और दूसरी लक्ष्मी मिल। उन मिलों की अर्थ व्यवस्था भी बिगड़ी हुई है। उनमें लाखों रुपये का नुकसान हो रहा है। उन मिलों के बारे में भी बड़े-बड़े कर्मचारियों की शिकायतें प्रधानमन्त्री तक पहुंची हैं। मैं चाहता हूं कि इन मिलों के जो बड़े-बड़े अधिकारी हैं, जो कि उत्पादन की तरफ ध्यान नहीं देते हैं। मजदूरों को परेशान करते हैं, ऐसे लोगों को वहां से हटा दिया जाय ताकि मजदूरों के सामने इनकी वजह से जो-जो दिक्कतें आती हैं वे दूर हो सकें।

इन मिलों में अनेक प्रकार का कपड़ा बनता है। परन्तु वह बाजार में बिक नहीं रहा है। अतः करोड़ों, लाखों रुपए का नुकसान इन मिलों को हो रहा है जो कि सरकार के अधीन है। यह बड़े-बड़े अधिकारियों की अज्ञानता, व्यावहारित, अकुशलता के कारण होता है। कृष्णा मिल में 35 लाख रुपए का कपड़ा पड़ा है, इसको सरकार द्वारा खरीद लिया जाये जिससे वे मिलें बन्द न हो पाएं। मुझे विश्वास है कि भारत सरकार इस बात पर ध्यान देगी। 35 लाख रुपएं की रकम कोई बड़ी रकम नहीं है। भारत सरकार माल खरीद लेगी जिससे मिल बन्द नहीं होगी और मजदूरों पर इसका प्रभाव नहीं पड़ेगा।

इन शब्दों के साथ मैं वित्त मन्त्रालय की मांगों का समर्थन करते हुए जिस कुशलता के साथ मन्त्रालय को तीनों साथी चला रहे हैं, इसके लिए उनको बधाई देता हूं। □□

डा० वीर रत्न आर्य

एम. बी. एस. बी. आयुर्वेद रत्न
विद्या वाचस्पति

रजिस्टर्ड नं० 7882 ए
दूरभाष : 7
मदनगंज-किशनगढ़ (रजि०)
दिनांक 6 जन० 84

आचार्य भगवान देव जी के पचास वर्ष पूर्ण होने पर आप जो ग्रंथ प्रकाशित कर रहे हैं उसके लिए अनेकानेक बधाई!

श्रद्धेय आचार्य जी का जीवन सदैव ही हम आर्यों के लिए अनुकरणीय रहा है, आचार्य जी का सम्पूर्ण जीवन प्रारम्भ से ही सेवा, त्याग एवं आर्य समाज को समर्पित रहा है। लेखन के क्षेत्र में समाज को आचार्य जी ने जो ग्रंथ दिए हैं, वह अमूल्य है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं, उन्हें वह शतायु करें।

वीर रत्न आर्य (मंत्री)
आर्य समाज, मदनगंज-किशनगढ़

सतत हृदय में जो जले, वह आग चाहिए।
उर में स्वदेश के लिए, अनुराग चाहिए।।

दिल्ली का कायाकल्प कांग्रेस ने किया भा. ज. पा. का संसद में भण्डाफोड़

उपाध्यक्ष महोदय ! दिल्ली प्रशासन संशोधन विधेयक जो हमारे माननीय मन्त्री जी ने प्रस्तुत किया है, मैं उसका समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ हूं ।

अभी विरोधी पार्टी के लोगों ने अपने विचार व्यक्त करते हुए दिल्ली में विधान सभा बनाने की मांग की। परन्तु हकीकत यह है कि जब ये लोग स्वयं यहां सत्ता में रहे, 1977 से 1979 के बीच ये यहां शासन करते थे तब इन्होंने दिल्ली में विधान सभा नहीं बनाई। दिल्ली के बारे में चुनाव होने से पहले घोषणा की थी और दिल्ली में विधान सभा बनाने के बारे में वचन भी दिया था। परन्तु यह कह करके भी इन्होंने दिल्ली में विधान सभा नहीं बनाई। इससे किसी को इंकार नहीं है कि दिल्ली एक आदर्श नगरी बननी चाहिए। दिल्ली इस देश की राजधानी भी है परन्तु अपने शासनकाल में इन लोगों ने ध्यान नहीं दिया। ये विरोधी पार्टी के लोग अपने घरों को भरने में लगे हैं।

इसके साथ यह भी हकीकत है कि जब 1980 में हमारी पार्टी सत्ता में आई, उसके बाद से दिल्ली का नक्शा ही बदल गया है। इसके बाद से दिल्ली का जितना सुन्दर विकास किया गया है उसकी न केवल दिल्ली की और देश की जनता ने ही प्रशंसा की, बल्कि सारे विश्व के नेताओं ने भी जो कि निर्गुट सम्मेलन के समय दिल्ली में आये, उन्होंने भी दिल्ली के कायाकल्प को देखकर उसकी प्रशंसा की।
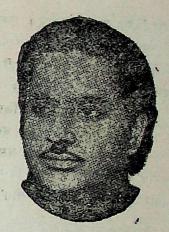
यह भी हकीकत है कि गरीबों ने हमारी पार्टी की मदद की। जो मदद गरीबों ने हमारी पार्टी की, उसका एक कारण यह भी है कि 1976 में जो लोग झोंपड़ियों में रहते थे, गन्दी बस्तियों में रहते थे उनके लिए क्वार्टर और तीन मंजिला मकान बना कर दिए थे। इस प्रकार से उनको स्वच्छ वातावरण प्रदान किया था, और उनके लिए बिजली पानी, स्कूल, अस्पताल वगैरह की व्यवस्था प्रदान की थी। उस समय लोगों ने आवेश में आकर विरोध जरूर किया, लेकिन आगे चलकर उन्होंने अपनी गलती को महसूस किया। इसी का परिणाम था कि अबकी बार उन्होंने चुनावों में हमारी पार्टी को बहुमत प्रदान किया।

कम्युनिस्ट पार्टी ने हमारे शास्त्रीजी ने जो विचार व्यक्त किये, उनसे लगता है कि वे निराश व्यक्ति हैं। दिल्ली में कम्युनिस्ट पार्टी को एक भी सीट नहीं मिली, (व्यवधान)आप जो कुछ बोलते हैं उसमें कुछ दम नहीं है।

आपने यहां पर लिस्ट की बात की। आपने जब हमारी पार्टी को विजय प्राप्त हो गई, यहां पर चुनाव हो गए तब लिस्ट की बात की। अब आपकी तीसरी आंख खुली है, इसके पहले तो आपने कभी नहीं कहा कि वोटर लिस्ट में संशोधन होना चाहिए। आप लोगों ने यहां चुनाव की मांग की तो यहां चुनाव करा दिए गए। आपने असम में चुनाव की मांग की तो वहां चुनाव करा दिए गए।

भारतीय जनता पार्टी दिल्ली के अन्दर चुनाव की बात करती रही। किन्तु उसने असम में चुनावों का विरोध किया। उन चुनावों के विरोध के पीछे उनका

जान हथेली पर लिये चला सदा वह वीर।
संकट, सुख में एकसा आचार्य सौम्य सुधीर ॥

उद्देश्य क्या था ? वह जग प्रसिद्ध है। एक तरफ वे चुनावों की बात करते हैं और दूसरी तरफ वे चुनावों का विरोध करते हैं। मुझे यह समझ में नहीं आता कि आप वहां चुनावों का विरोध क्यों करते रहे। आम चुनावों के आधार पर निर्णय होने दीजिए, परिवर्तन होने दीजिए परन्तु ये हमेशा दुहरी चाल चलते रहे हैं। यहां पर वे मुसलमानों के साथ रहे और असम में मुसलमानों का विरोध करते रहे, ये न हिन्दू रहे न मुसलमान रहे और न साम्प्रदायिक रहे। इनको लोग अब जान गये हैं।

अब ये गांधीवादी बन गये। 30 जनवरी को गांधी जी की समाधि पर भारतीय जनता पार्टी के लीडर फूल चढ़ाने के लिए गए। गांधीजी के साथ उनका क्या रवैया रहा और उसके बाद भी गांधीजी के सम्बन्ध में इनके नेता लोग क्या करते रहे, 37 साल के बाद में अब गांधीजी को स्वीकारने लगे हैं।

उपाध्यक्ष महोदय, गांधीजी की हत्या के 37 साल बाद इनको गांधीजी की नीतियां समझ में आई हैं। आज के राष्ट्रपिता की नीतियों की हिमायत कर रहे हैं। जब महात्मा गांधीजी को ये 37 वर्षों के बाद समझ पाए हैं तो देश की महान माता श्रीमती इन्दिरा गांधी की नीतियों को समझने के लिए तो इनको कई जन्म लेने पड़ेंगे। वे क्या सोचती हैं। किस तरह से राष्ट्र के गरीब मजदूर का भला करना चाहती हैं, उनकी क्या योजनाएं हैं, इनकी गहराई में जाने के लिए इनको कई जन्म लेने होंगे।

अभी साम्यवादी नेता बोल रहे थे। साम्यवाद को पनपाने वाले श्री अमृत डागे हैं। बाकी सब उनके बाद पैदा हो गए हैं। उस व्यक्ति ने स्वयं स्वीकार किया कि देश के मजदूर, गरीब और पिछड़े वर्ग को यदि कोई समझा करता है तो श्रीमती गांधी ही कर सकती हैं। यही कारण है कि इन लोगों को सारे देश की जनता ने फेंक दिया है। जनता इनको समझ चुकी है। कम्युनिस्ट पार्टी को एक भी सीट नहीं मिली है। इनकी पालिसी क्या है ये चाहते क्या हैं। इनकी कथनी और करनी में फर्क है। ये कहते यहां हैं परन्तु प्रेरणा दूसरे देशों से लेते हैं। इस देश को अनेक कुरबानियों के बाद आजादी मिली है लेकिन ये लोग खाते यहां का हैं और बात दूसरे देश की करते हैं। जनता इनको कभी भी वोट नहीं दे सकती।

आज दिल्ली का इतना विकास हुआ है। इतने पुल बने हैं। इतने स्टेडियम बने हैं करोडों रुपया खर्च किया गया है। इन्होंने चुनाव में यह मुद्दा खड़ा किया परन्तु ये इस बात को भूल गए कि 1980, 1981 और 1982 में दिल्ली का जो कायाकल्प किया गया है उनमें पूरे देश से आए हुए 80 हजार मजदूरों को रोजी रोटी भी मिली है। पुलों के निर्माण होने से लोगों के समय की बात हुई है। लोग अपने गंतव्य स्थान को सही समय पर पहुंच सकते हैं। पैट्रोल और डीजल की बजत हुई है जो ट्रैफिक जाम होने के कारण जलता रहता था। ट्रैफिक में सुधार आया है।

□□

मौत से क्यों इतनी दहशत जान क्यों अजीज।
मौत आवे के लिए और जान जाने के लिए॥

गुरुदेव टैगोर की साधना स्थली —विश्व भारती

कुछ राजनैतिक व्यक्ति शिक्षा संस्थाओं में आग लगाकर देश को बर्बाद करना चाहते हैं—आचार्य

आचार्य भगवान देव (अजमेर) : आज गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर की १२३वीं जयन्ती देश और विदेश में मनाई जा रही है। इस अवसर पर शिक्षा मन्त्री जी के द्वारा विश्व भारती के सम्बन्ध में जो बिल पेश किया गया है, वास्तव में वह बहुत स्तुत्य कार्य है और इसके लिए आप अभिनन्दन की पात्र हैं। आपने इतना सुन्दर बिल पेश किया है जिसकी राज्य सभा ने स्वीकृति दे दी है। दोनों सदनों की प्रवर समिति भी उस पर विचार कर चुकी है अब यदि कोई इस बिल का विरोध करता है तो मुझे उस व्यक्ति की बुद्धि पर तरस आता है। मैं इस सदन से यह आशा रखता हूं कि यह सदन भी राज्यसभा का अनुकरण करके सर्वसम्मति से इस बिल को पास करेगा।

अभी प्रो० चक्रवर्ती कह रहे थे कि गुरुदेव टैगोर ने अपने खानदान के किसी व्यक्ति को वहां नहीं रखा उन्होंने लोकशाही की बड़ी दुहाई दी। पता नहीं वह बंगाल में रहते हैं या चीन में रहते हैं या रूस में उनका दिमाग चलता है। उनको इतना भी पता नहीं कि यह जमीन उनके पूज्य पिता देवेन्द्र नाथ टैगोर ने ली थी और गुरुदेव रविन्द्र नाथ टैगोर ने यह पौधा लगाकर उसको वट वृक्ष का रूप दिया। श्री अवनिन्द नाथ और रविन्द्रनाथ का क्या सम्बन्ध था मैं समझता हूं ये उससे अनिभिज्ञ हैं उनको पता नहीं है। इनका दिमाग चीन या रशिया में घूमता रहता है। वरना इस तरह की बात दावे के साथ इस सदन में ये नहीं कर सकते।

सभापति महोदय, इस संस्था को स्थापित हुए कई वर्ष हो गए हैं। १८६३ में इसकी स्थापना हुई और १८८८ में इस संस्था ने एक न्यास का रूप लिया। गुरु रवीन्द्र नाथ टैगोर ने सन् १९०१ में ५ विद्यार्थियों से सादगी के वातावरण में शुरू करके इस संख्या को बहुत बड़ा अन्तर्राष्ट्रीय रूप दिया। इसके अन्तर्राष्ट्रीय रूप को सामने रख करके विश्व में भारत की संस्कृत का परिज्ञान कराने के लिए विश्व शान्ति और बंधुत्व का संदेशा देने के लिए, संसार भर के मजहब, धर्म और विचारधाराएं हैं चाहे ईसाई हो इस्लाम हो, बौद्ध हो, जैन हो या हिन्दू हो, या पारसी हो। हर प्रकार की संस्कृतियों का सुमेल हो, संगम हो उन्होंने सब संस्कृतियों के संगम की कल्पना की थी। मैं चक्रवर्ती जी से पूछना चाहता हूं कि क्या वे सब संस्कृतियों को मानते हैं। वे तो साम्यवाद की ही संस्कृति को मानते हैं। संगम की बात पर आपको क्या हक है। इनको महसूस नहीं हुआ क्योंकि ये समझते हैं मैंने जिस लहजे में कहा है। बीच में उनको नहीं बोलना चाहिए था।

सभापति महोदय उसके बाद सन् १९१२ में गुरुदेव लन्दन और अमरीका गए। उनकी गीतांजलि छपी। उससे इस संस्था को अंतर्राष्ट्रीय रूप मिला और उस गीतांजलि के आधार पर दूसरे साल सन् १९१३ में उनको नोबल पुरस्कार मिला और इस संस्था ने एक अन्तर्राष्ट्रीय रूप धारण कर लिया। उसके बाद सन् १९१५ में पूज्य महात्मा गांधी जब अफ्रीका से हिन्दुस्तान में आए तो वे गुरुदेव से मिलने के लिए शान्ति निकेतन गए और कुछ दिन वहां रहे। उससे इस संस्था ने राजनीतिक दृष्टि से महत्व प्राप्त किया। देश के बड़े-बड़े विचारक बैठे और सन् १९२२ में सोसाइटी एक्ट के अधीन इसका रजिस्ट्रेशन कराया गया।

जो धनवन्ता देत है, देय कहाँ धनहीन।
कहा निचोरे नग्नजन, स्नान सरोवर कौन॥

इसमें बड़े-बड़े व्यक्तियों ने अपना योगदान दिया। सी० एफ० एंड्रयूज डब्ल्यू० डब्ल्यू० पिअरसन, काका साहेब कालेकर आदि व्यक्तियों का योगदान रहा।

संगीत के महान् व्यक्ति श्री भीमराव शास्त्री ने भी अपनी साधना वहां की। श्री कृष्ण कृपलानी जैसे तपस्वी व्यक्ति ने भी वहां अपना जीवन-यापन किया और अनेक व्यक्तियों को शिक्षा दी। अभी प्रधानमन्त्री जी के बारे में हीन भावना से जो बात कही गई, उनके चांसलर सम्बन्धी उसे सुनकर मुझे बड़ा दुःख हुआ। जो व्यक्ति अपने-आपको प्रोफेसर मानता है और इस तरह से आक्षेप करता है और शिक्षा-शास्त्री बनने का ठेका लेता है। मैं पूछना चाहता हूं कि महर्षि दयानन्द जो आर्य समाज के इतने बड़े संस्थापक थे, क्या उन्होंने किसी यूनिवर्सिटी से एम० ए० और पी० एच० डी० की थी।

उन्होंने जो वेदों का भाष्य किया, उसको सारी दुनिया के लोग भी समझ नहीं पाए। महर्षि बाल्मीकि कोई प्रोफेसर नहीं थे। उन्होंने रामायण की रचना की। क्या ये लोग उसको समझ पायेंगे जो अपने आपको प्रोफेसर कहते हैं ? क्या कभी उसके राज को समझा है ? आज, एक अन्तर्राष्ट्रीय शक्ति के रूप में संसार के सामने प्रधान-मन्त्री खड़ी हैं। बड़े-बड़े राष्ट्र और जहां पर डिक्टेटरशिप है, उन्होंने भी प्रधानमन्त्री को अपना अध्यक्ष माना है। उस व्यक्ति के सम्बन्ध में एक साधारण व्यक्ति वह सदन में खड़े होकर आक्षेप करता है।

आचार्य भगवान देव : सभापति जी, जैसा शिक्षामन्त्री जी ने कहा, प्रधानमन्त्री जी जब वहां चांसलर बनी तो वे प्रधानमन्त्री की हैसियत से चांसलर नहीं बनीं बल्कि उन्होंने वहां शिक्षा ली, शांति निकेतन में रहकर उन्होंने शाति का सन्देश अपने जीवन में लाने की कोशिश की और आज वे सारे संसार में उसी का प्रचार और प्रसार कर रही हैं उसकी हैसियत से उनकी नियुक्ति की गई। बाकायदा उनका चुनाव हुआ है, लेकिन जब यहां पर उनके ऊपर आक्षेप किये जाते हैं तो मैं उसको अनुचित मानता हूं। यहा पर ऐसी बातें नहीं होनी चाहिए और इसीलिए मुझे उसका उल्लेख यहां पर करना पड़ा। उसके अलावा श्रीमती समोजिनी नालडू जैसी महान् विचारक इस संस्था से जुड़ी हुई हैं।

उन्होंने इस संस्था की बहुम सेवा की। सन् १९५१ में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने इसे राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया औहै उसके बाद इस संस्था का अच्छी तरह से यिकास होता रहा। परन्तु जैसा मेरे एक माननीय सदस्य ने कहा, सन् १९७१ में वहाँ कुछ असामाजिक तत्वों ने तोड़-फोड़ की और उसके कारण हमारे देश के महान् व्यक्तियों को सोचना पड़ा कि जिस महान् उद्देश्य को लेकर इस अन्त-र्राष्ट्रीय संस्था की स्थापना की गई ताकि संसार भर के हर वर्ग और हर मुल्क के लोग यहां आकर शान्ति निकेतन और श्री निकेतन की परिधि में स्थित शिक्षा भवन, विद्या भवन, कला भवन, संगीत भवन, विनय भवन, रविन्द्र भवन में आकर मानवता का संदेश ले, उसको दृष्टि में रखते हुए बहुत सोच समझकर आज यह बिल इस सदन में पेश किया गया है। अब वहाँ तीन निर्देशकों की नियुक्तियां होंगी और तीन नये विभाग शुरू किये जाएंगे, प्रौढ़ शिक्षा, ग्राम्य पुनर्गठन, सहकारी संगठन, समाज कल्याण, कुटीर उद्योग आदि की प्रवृत्ति वहां चलेंगी।

यहां पर लोकशाही के सम्बन्ध में आशंका खड़ी की गई तथा विशेषकर राष्ट्रपति जी को परिदर्शक अर्थात् विजीबर का पद दिया गया उस पर आक्षेप किया गया, आपत्ति उठाई गई। मैं पूछना चाहता हूं कि क्या राष्ट्रपति का पद हमारे देश में सर्वोच्च पद नहीं माना गया है। क्या उनका चुनाव लोकशाही के द्वारा नहीं किया जाता। यदि लोकशाही के माध्यम से चुनकर ही राष्ट्रपति के पद पर कोई व्यक्ति पहुचता है तो क्या उसको सारे हिन्दुस्तान के अधिकार नहीं मिल जाते। फिर किस आधार पर आप उनके इस संस्था का अधिकारी बना देने पर या कोई पद देने पर आपत्ति करते हैं। मैं समझता हूं कि इसमें लोक-शाही के विपरीत कोई बात नहीं है। राष्ट्रपति लोकसभा और राज्यसभा तथा राज्यों की विधान सभाओं के माध्यम से चुना जाता है। यहां पक्ष और विपक्ष के लोगों ने इस सम्बन्ध में अपने-अपने विचार रखे। हमारी ज्वाइंट प्रवर समिति में दोनों सदनों के हर पार्टी के सदस्य हैं, उसमें उन्होंने भी अपने विचार रखे हैं। क्या इसको भी आप डिक्टेटरशिप लोकशाही नहीं समझते ? यदि आप उसको डिक्टेटरशिप समझते हैं तो मुझे बड़ा अफसोस है कि आप इस तरह की विचारधारा रखते हैं।

यहां पर प्रोफेसर साहब ने कहा कि वहां पर जो पढ़े लिखे व्यक्ति हैं, जिनको यहां पर किताबी कीड़े की संज्ञा दी गई, मुझे बड़ा अफसोस होता है कि जिन शरारती तत्वों की राजनीतिक पार्टियों की ओर से भी आलोचना हुई, जिनका उल्लेख हमारे रंगा साहब ने भी किया जो उच्छृंखल व्यक्ति, विद्यार्थियों को प्रोत्साहन देकर, पैसा देकर तोड़फोड़ करवाते हैं। □

पानी बाढ़ा नाव में, घर में बाढ़ो दाम।
दोनों हाथ उछालिये, बुद्धिमान का काम।

महर्षि अरविन्द की तपोभूमि—पाँडिचेरी

आचार्य भगवानदेव (अजमेर) : सभापति महोदय, पांडिचेरी का नाम आते ही उस महान् योगी महर्षि अरविन्द का चित्र सारे संसार के लोगों के सामने खड़ा हो जाता है। पांडिचेरी मुक्ति के पश्चात् पंडित जवाहर लाल नेहरू का और इस समय श्रीमती इन्दिरा गांधी का जो प्यार वहां की प्रजा को मिल रहा है और वहां की प्रजा का जो प्यार इनको मिल रहा है उसका उल्लेख अभी हमारे माननीय सदस्य ने किया। यह एक हकीकत है जैसा कि विरोधी पार्टी के लोगों की बातों से मालूम पड़ता है, इनके मंसूबे बहुत अपवित्र हैं, ये चाहते हैं कि पांडिचेरी छिन्न-भिन्न हो जाए। उसमें तमिलनाडु, आन्ध्र और केरल के लोग गिद्ध की दृष्टि से पाँडिचेरी का देख रहे हैं और उसका विकास होने नहीं देते। यही बात मिल के सम्बन्ध मे है। मैं विस्तार में जाना नहीं चाहता क्योंकि समय बहुत कम है। पांडिचेरी का विकास करने के लिए उस महान् योगी ने अरोबिल की एक बहुत बड़ी कल्पना की थी और उसे संसार का एक आदर्श स्थान वह बनाना चाहते थे। यह हकीकत है कि जनता पार्टी के टाइम में कुछ इस देश के जयचन्द जैसे स्वार्थी तत्त्वों ने जिसमें बड़ी-बड़ी हस्तियां थीं, जिसमें तत्कालीन प्रधानमन्त्री भी शामिल थे, उन्होंने कुछ विदेशी ताकतों के साथ मिलकर के ऐसा षड्यन्त्र रचा कि उसके अस्तित्व को मिटाने की योजना बनी और आज भी वहां विदेशी तत्व ऐसे बैठे हुए हैं जो उसको बरबाद करने पर तुले हुए हैं जिसके सम्बन्ध में मैं गृह मन्त्रालय को नाम भी लिखकर दे चुका हूं, मैं माननीय मन्त्री जीं से जानना चाहता हूं कि उन लोगों के सम्बन्ध में आपने क्या कार्यवाही की है ? शिक्षा मंत्रालय ने लाखों रुपये उस अरोविल के विकास के लिए दिए जिसमें बहुत बड़ा गबन हुआ, लाखों रुपये लोग खा गये।
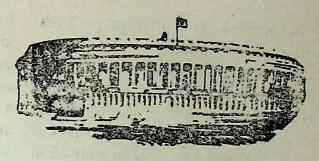
जिसकी जांच हुई और सरकार को वहां एडमिनिस्ट्रेटर बिठाना पड़ा। एडमिनिस्ट्रेटर के वहां जाने के बाद कुछ सुधार हुआ है। भौगोलिक स्थिति को देखते हुए कि वह महान् तपस्वी अरविन्द की भूमि है और मैं भी योग के सम्बन्ध में कुछ लिखता-पढ़ता रहता हूं, गत ३०-३५ साल से मुझे बड़ा लगाव है, मैं कई बार वहां गया हूं, जब आरोविल की समस्या थी तब भी मैं वहाँ गया था और उसके सम्बन्ध में मैंने, माननीय शिक्षा मन्त्री यहां पर बैठी हुई हैं, उनसे भी प्रार्थना की थी कि वहां पर अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्र का अड्डा बन रहा है जिससे हमें सावधान रहना चाहिए। इस समय वहां सुधार हुआ है और मेरी भारत सरकार से विशेष मांग है कि वहां की भौगोलिक स्थिति को देखते हुए आरोविल में एक महान् योगी की जो कल्पना थी, पं० जवाहर लाल नेहरू भी चाहते थे और श्रीमती इन्दिरा गांधी भी चाहती हैं कि उसका विकास हो, उसके रास्ते में बाधा खड़ी की जा रही है तमिलनाडु सरकार की तरफ से। वहां ऐसी परिस्थितियां खड़ी की जा रही हैं जो वहां के कार्यकर्ता के लिये बड़ी कठिनाई का कारण बन् रही हैं। मैं चाहता हूं कि भारत सरकार इस सम्बन्ध में गम्भीरता से सोचे। आरोबिल का एरिया जो तमिलनाडु के साथ जुड़ा हुआ है, उस एरिया को कम से कम मेहरबानी करके—चाहे उसके लिए कानून ही क्यों न बनाना पड़े—पांडिचेरी के साथ मिला दिया जाए।

ये सारे विरोधी पार्टी के लोग पांडिचेरी के अन्तर्राष्ट्रीय महत्व को छिन्न-भिन्न करना चाहते हैं। मेरी मांग

विमल मधुर जल से भरा, जहाँ जलाशय होय।
पशु पक्षी नर नार जो, जात वहाँ सब कोय॥

है कि तमिलनाडु के साथ जो एरिया जुड़ा हुआ है उसको पांडिचेरी के साथ मिला दिया जाए।

यह भी एक हकीकत है कि जितने भी केन्द्र शासित एरियाज हैं वह यदि स्वतन्त्र रहें तो उनका विकास नहीं हो सकता है—चाहे वह दिल्ली हो, गोवा हो, पांडिचेरी हो या अण्डमान निकोवार हो। केन्द्र के साथ जुड़कर ही उनका अधिक विकास हुआ है, होता रहा है और आगे भी होता रहेगा। यदि वे स्वतन्त्र रहें तो उनका विकास नहीं हो सकता है। मैं अभी अण्डमान निकोबार गया था। बंगाल में जितने भी जहाज बन्दरगाह पर खड़े होते हैं, वहां बड़ी भीड़ होती है, जहाज खड़े नहीं हो पाते हैं और वहां की सी० पी० एम० की सरकार बहुत बड़ी कठिनाई खड़ी कर रही है। मैं भारत सरकार से प्रार्थना करना चाहता हूं कि वह एक वन्दरगाह के विकास के सम्बन्ध में विकास योजनायें बनाए। अण्डमान से जो जहाज आते हैं उनके लिये वित्त मन्त्रालय ने मद्रास वन्दरगाह के विकास के लिये योजनाएं बनाई हैं। यदि पैसा न हो तो मैं चाहूंगा कहीं और कटौती करके पांडिचेरी का विकास अवश्य किया जाना चाहिए। मछली के पालन के सम्बन्ध में भी विकास किया जा सकता है।

यूनिवर्सिटी का नाम जो पहले निश्चित हो चुका था, उसमें डी०एम०के० के लोगों ने अड़ंगा लगाया, उस पवित्र योजना को बनने नहीं दिया। उस यूनिवर्सिटी को बना दिया जाए और उसका नाम उस "महान् योगी अरविन्द घोष" के साथ जोड़ा जाए दूसरा किसी का नाम रहने का कोई औचित्य नहीं है। डी० एम० के० के लोगों ने, जो पहले मिनिस्ट्री में थे और मेम्बर थे उन्होंने यहां पर जमीनों पर नाजायज ढंग से कब्जा किया है और नाजायज ढंग से अनुचित लोगों को प्रोत्साहन देने की कोशिश की। स्वार्थ के कारण ही वे लड़े-भिड़े जिससे उनका पतन हुआ। कांग्रेस चाहती है कि वहां विकास हो, वहां के गरीब लोगों का भला हो और उसके लिये कई योजनाएं बनाई गई हैं। जो बजट वहां पेश किया गया है उसके सम्बन्ध में विस्तार से बोलने के लिए टाइम नहीं है। जो मिल चालू करने की बात कही गई है उसके मजदूर मुझसे मिले थे और उन्होंने बताया कि इन लोगों की यूनियन के जो अलग-अलग अधिकारी हैं, जिनका मन्त्री जी ने उल्लेख किया है, वे यही चाहते हैं कि झगड़ा बना रहे और अगले चुनाव में उनको चौधराहट करने का कोई मौका मिल सके। उनके इरादे साफ नहीं हैं। नेशनल टैक्सटाइल कार्पोरेशन उस मिल को टेक ओवर कर सकती है। वहां से जो प्रतिनिधि हमारे कांग्रेस (आई) के यहां पर हैं वे सारी बातें विस्तार से कह चुके हैं। यह आक्षेप किया गया कि वहां से राज्यसभा में हमारा दूसरा कांग्रेस (आई) का प्रतिनिधि नहीं आ सकता है इसलिये विधान सभा भंग कर दी गई लेकिन यह बिल्कुल निराधार है। वहां से जो कांग्रेस (आई) के प्रतिनिधि हैं, वे वहाँ की जनता से मिले हैं और वहाँ की जनता बड़ी खुश है कि इस तरह से विधान सभा को भंग कर दिया गया। वहां पर स्थिति यह थी कि वे लोग रोज आपस में मिलते-जुलते थे, कोई सिनेमा बना लेता था कोई किसी दूसरी जमीन पर कब्जा कर लेता था, कोई रिक्शे वाले को लोन देता था कोई किसी और को देता था—यह डी० एम० के० अंधा बांटे रेवड़ी, अपने अपने को दे—वालों की हालत थी। इसलिये वहाँ बहुत अच्छा कार्य हुआ है और जनता इससे बहुत खुश है और वहाँ पर जो बजट पेश किया गया है उसका मैं समर्थन करता हूं।

———

दान दियो धन ना घटे, नदी न घटयो नीर।
अपनी आँखों देख लो, यूं कह गये कबीर॥

कश्मीर की वादियों को बर्बाद नहीं होने देंगे—आचार्य

आचार्य भगवानदेव (अजमेर) : उपाध्यक्ष महोदय, एक दिन एक शहर के बाहर एक सज्जन रात्रि के समय एक खाई में गिर गया। वह सारी रात वहीं पड़ा रहा। सवेरे जब प्रो० मधु दण्डवते जैसा सज्जन आदमी सैर को निकला, तो उनकी आहट को सुन कर उस आदमी ने आवाज दी कि "मेहरबानी कर के मुझे बाहर निकालो। श्री मधु दंडवते को दया आई कि कोई मुसीबत में पड़ा हुआ है, उसकी सहायता करनी चाहिए। जब वह कदम बढ़ाकर खाई के पास पहुंचे, तो देखा कि एक लम्बा-चौड़ा आपनी धोती-कुर्ता पहने हुए खाई में पड़ा हुआ है। उस व्यक्ति ने पुकारा कि "दण्डवते जी, मुझे बाहर निकालो। दंडवते जी ने कहा कि "मैं आपको बाहर तो निकालता हूं, लेकिन पहले यह बताओ कि आपकी आंखों में चश्मा नहीं लगा है, उम्र ४०, ४५ साल की है, आप इस खाई में गिरे कैसे ?" उस व्यक्ति ने कहा कि "मैं ज्योतिषी हूं, मैं रात के वक्त नक्षत्रों की तहकीकात करता हुआ जा रहा था, मेरी नजर आकाश की तरफ थी, जमीन की तरफ मेरा ध्यान न था, इस लिए खाई में गिर गया।" श्री दंडवते ने कहा कि "भले आदमी, नक्षत्रों की तहकीकात करने से पहले पैरों तले की धरती की तहकीकात कर लेते, तो रात भर खाई में न पड़े रहते, न यह बुरी हालत होती, न सारी रात भूखे रहते और न चोट आती।

अगर डा० फारूख अब्दुल्ला चीफ मिनिस्टर बनने के बाद कश्मीर के विकास के सम्बन्ध में सोचते और काम करते और अपने दायित्व को ईमानदारी से निभाते, तो आज जो उनकी दशा बनी है, वह न बनती। यहां पर विरोधी दलों के जो लोग बोले हैं, प्रो० सोज साहब को छोड़कर उनमें से एक का भी कोई प्रतिनिधि कश्मीर की विधान सभा में नहीं है। तो फिर ये रो क्यों रहे हैं ? एक पुरानी कहावत है, "चोर की दाढ़ी में तिनका।" इनको डर है कि इसके बाद कर्नाटक का नम्बर आने वाला है, आन्ध्र प्रदेश, त्रिपुरा और पश्चिमी बंगाल पर भी इसका प्रभाव पड़ेगा।

इसलिए अपना बचाव करने के लिए पहले ही प्रयास कर रहे हैं उसकी वकालत करके। परन्तु आप इन से पूछिए तो सही, आज उन फारूक अब्दुल्ला की बड़ी बहन खालिदा जी कौन हैं ? जो यह कहते हैं हमारे भाई जैसे अभी इन्द्रजीत गुप्ता ने कहा कि कौन सी नेशनल कान्फ्रेंस है जिसके अधिक मेम्बर हैं, किस को माना जाए ? यह मंत्री जी से पूछा उन्होंने। क्या इन्द्रजीत गुप्ता जी को यह पता नहीं है कि कई महीने पूर्व नेशनल कान्फ्रेंस के अध्यक्ष थे डा० फारूक, नेशनल कान्फ्रेंस के लोगों ने मीटिंग बुला कर के उनको अध्यक्ष पद से हटा दिया और बेगम खालिदा को नेशनल कान्फ्रेंस का अध्यक्ष बना दिया ? आज वह नेशनल—कान्फ्रेंस के लीडर नहीं हैं, न कश्मीर की प्रजा उनको मानती है। आज नेशनल कान्फ्रेंस वह है जिस की

धन-संग्रह से दानधन, सौ गुण अधिक पधान।
बिना दान जो द्रव्य है, सो बन सुमन समान॥

अध्यक्ष बेगम खालिदा हैं जो उन की बड़ी बहन हैं। उन्होंने उन का साथ छोड़ दिया। क्यों? उनके भाई मुस्तफा अब्दुल्ला ने उन का साथ छोड़ दिया। क्यों? उनके दूसरे भाई तारिक अब्दुल्ला ने उन को छोड़ दिया जिनके बारे में···

प्रो० सैफुद्दीन सोज : मुस्तफा के बारे में किस ने कहा आपसे ?

आचार्य भगवानदेव : सोज साहब, आप बीच में मत बोलिए। मैं नहीं बोला हूं। मुझे सारा इतिहास पता है, आप के परिवार से लेकर सारा, मत छेड़िए मुझको। आपको बहुत टाइम दिया गया। आप बार बार बोलते रहे।

मैं पूछना चाहता हूं, तारिक अब्दुल्ला के बारे में, यहां पर बात की गई, कल कौन क्या था, आज कौन क्या है, कल क्या कौन बनने वाला है? यहां से निकल कर कोई शैतानियत कर देता है, व्यक्तिगत झगड़े के कारण कोई किसी का खून कर देता है, किसी के साथ अत्याचार कर देता है कानून उसके खिलाफ कार्यवाही करता है। यह इंसान सुधरता भी है, बिगड़ता भी है। हमें हर व्यक्ति का पता है कि फारूक अब्दुल्ला कौन है या उनके बहनोई जो चीफ मिनिस्टर हैं गुलाम मोहम्मद शाह और उनकी पत्नी शेख अब्दुल्ला की बड़ी बेटी और फारूक की बड़ी बहन कौन है? मुसीबत के टाइम में उन्होंने शेख अब्दुल्ला की मदद की, सेवा की। जब डा० फारूक अब्दुल्ला मौज कर रहें थे लंदन के अन्दर और इनको बनाने वाले कौन थे? डा० फारूक को डा० फारूक बनाने वाले कौन थे? उसका भी इतिहास है। उसके लिए समय चाहिए, समय आपने बहुत कम दिया है।

मैं पूछना चाहता हूं, यदि डा० फारूक ईमानदारी से काम करते और मौलाना फारूक जैसे व्यक्ति मकबूल भट्ट जैसे व्यक्ति, अब्दुल गनी खान जैसे व्यक्ति, सूफी मोहम्मद अमीनुल्ला खां जैसे व्यक्ति जो हमेशा राष्ट्र के खिलाफ बात करके विदेशी ताकतों की वकालत करते रहे, हिन्दुस्तान के खिलाफ यहां दिन रात काम कर रहे हैं, इन लोगों के चुंगल में फंस करके अपने दायित्व को न भूल जाते तो इस हालत में नहीं पहुंचते इन लोगों के चंगुल में फंस करके अपने दायित्व को डा० फारूक अब्दुल्ला भूल गए और कश्मीर को तो बचाया नहीं, उनको नेशनल लीडर बनने की चिन्ता हो गई और इन्टरनेशनल बनने की कोशिश करने लगे जब इंटरनेशनल बनने की कोशिश की तो इनके पांव तले की धरती निकल गई, उस ज्योतिषी की माफिक वह खाई में गिर गए।

यहां पूछते हैं कि नीति क्या है? नीति स्पष्ट है। लोकशाही में बहुमत के आधार पर हुकूमत चलती है। जेठमलानी जी बैठे हैं, बड़ी बातें कर रहे थे, बड़ी लम्बी चौड़ी, उन को बादाम रोगन का तेल लगाना चाहिए सिर पर, ३७० की बात करते-करते उसको समाप्त करने की बात भी कह गए। आज वह फारूक अब्दुल्ला की वकालत करते हैं। कहते हैं कि किसी की गर्दन काटकर उस को फूलमाला पहना दी। कश्मीर की जनता की इन्होंने अपने बयान से गर्दन काट दी। ३७० को समाप्त करने की बात कह कर और उनके ईमानदार साथी बनने का प्रयत्न करते हैं। इस व्यक्ति ने जो वकालत की यहां पर और जो बड़ी-बड़ी बात कीं, मुझे श्यामा प्रसाद मुकर्जी याद आते हैं, जब मैं वाजपेयी जी को फारूक अब्दुल्ला से गले पकड़कर बात करते हुए देखता हूं और जब ये इस तरह की बातें करते हैं। जमात—ए—तलबा, जमात—ए इस्लामी, म्हाज—ए—आजमी, पीपल्स पार्टी और सिख छात्र फेडरेशन, इन सारे के सारे संगठनों के साथ रह कर इन्होंने अपने और कश्मीर की प्रजा के साथ जो कार्य किया है उसका फल उनको मिला है। आज मैं यह बात साफ कह दूं, ४२ के बहुमत से वहां पर मिस्टर शाह ने अपना शाशन संभाल लिया और ३२ व्यक्ति वाक आउट करके चले गए। राज्य के अन्दर जो बहुमत को ले लेता है अपने साथ उस की हुकूमत रहती है।

जिसके साथ अधिक बोट रहेंगे, उसके साथ सत्ता रहेगी। वहां पर यही हुआ है। ये कहते हैं कि वहां पर क्यों फौज की व्यवस्था की और पुलिस की व्यवस्था की, तो क्या वहां गुण्डों को गुण्डागर्दी करने देते। गुण्डागर्दी को रोकने के लिए, कश्मीर की उन हरी-भरी वादियों

ईश नाम के कारणे, सब धन डालो खोय।
मूरख जाने गिर पड़ा, दिन दिन दूना होय॥

को आग से बचाने के लिए, वहां की जनता की जन व माल की रक्षा के लिए हमारा दायित्व हो जाता है कि वहां भी रक्षा करें। जो वहां के मैम्बर हैं, वे खुले रूप में बैठकर बहुमत के आधार पर अपना निर्णय करें और वह निर्णय वहाँ पर किया गया।

उपाध्यक्ष महोदय, यदि आप मुझे दो चार मिनट और दे दें तो मैं कुछ बातों का और उल्लेख करना चाहता हूं, जिनके सम्बन्ध में यहां पर नहीं कहा गया है। १६ मई, १६८३ को कांग्रेस-आई के कार्यालय को नेशनल कान्फ्रेंस के लोगों ने पुलिस के सामने आग लगाई। २६ मई, १६८३ को नेशनल कान्फ्रेंस के लोगों ने बसों, ट्रकों, दुकानों में आग लगाकर लोगों को भयभीत किया। उसके बाद ३ जून, १६८३ को प्रधान मंत्री जी की सभा पर पथराव कराया गया और वहां पर नंगा नाच किया, जिसका जिक्र श्रीमती राजेन्द्र कुमारी वाजपेयी जी ने अपने भाषण में किया है। उसके बाद १५ जुलाई को मौलवी फारूक ने जहरीला भाषण देकर भारत से अलग होने की बात की। ८ अगस्त को मौलाना फारूक ने कश्मीरियों को कहा कि "हथियार उठा लो।" १४ अगस्त को कई स्थानों पर लोगों को मारा-पीटा गया। १५ अगस्त को श्रीनगर के स्पोर्टस क्लब में बम फैंका गया, वहां पर डा० फारूक अब्दुल्ला भी स्थित थे। उसके बाद वहां सितम्बर में काफी हाउस में बम फैंका गया। १५ सितम्बर को कांग्रेस के शान्त जलूस पर हमला किया गया। ६ अक्टूबर १६८३ को सूफी मौहम्मद ने राष्ट्र विरोधी भाषण देकर लोगों को भड़काने की कोशिश की। १३ अक्तूबर को वैस्टइन्डीज और भारत का क्रिकेट मैंच हो रहा था तो वहां पर "पाकिस्तान जिन्दाबाद" के नारे लगाए गये। २६ अक्तूबर को जम्मू-कश्मीर हाईकोर्ट के जज जस्टिम आनन्द के घर पर बम फेंका गया। ७ नवम्बर, १६८३ को कांग्रेस के शान्त जुलूस पर नेशनल कांफ्रेंस के गुण्डों ने हमला किया। २७ दिसम्बर को जरनैलसिंह भिंडरावाले का चित्र डा० फारूख अब्दुल्ला ने मुख्यमन्त्री की हैसियत से अपने आफिस में लगाया। इससे बढ़कर शर्म की और क्या बात हो सकती है।

१६ जनवरी, १६८४ को सत्ता पक्ष नेशनल कांफ्रेंस ने कश्मीर बंद का ऐलान करके लूटपाट की और "पाकिस्तान जिन्दाबाद", "खालिस्तान जिन्दाबाद" के नारे लगाए। दुकानों को जलाया। जिसका रियेक्शत हुआ। कश्मीर की बात पर जरनैलसिंह की बात कही गई। रशीद मसूद साहब चौ० चरणसिंह की पार्टी के सिर्फ इस्लाम पर बोल गए। ये दुहाई देना चाहते हैं बिन साम्प्रदायिकता की और यहां पर जरनैनसिंह की बात कही। क्या दुनिया नहीं जानती कि जरनैल सिंह को विदाई देने में किस पार्टी ने मदद की, किसने क्या काम किया। यदि श्रीमती इन्दिरा गांधी वहाँ पर फौजी कार्यवाही नहीं करती तो वहां पर अभी भी जरनैलसिंह की गतिविधियां चालू रहतीं। इसके करने के बाद कश्मीर में जुलूस निकाला गया। उस जुलूस को निकालने के लिए फारूख साहब की सरकार ने सारा काम किया। वहां आर्य समाज मन्दिर को जला दिया गया। वहां निरंकारी के मंदिर को जलाया गया। हनुमान के मन्दिर को जलाया गया। वह आर्यसमाज का विद्यालय जो ६० साल से वहां पर काम कर रहा है, स्त्री शिक्षा के लिए, उस पवित्र विद्यालय की बिल्डिग को भी जला दिया गया। इस तरह की गतिविधियां करने वाले, "पाकिस्तान जिन्दाबाद" का नारा लगाने वाले, साम्प्रदायिकता को प्रोत्साहन देने वाले, ऐसे लोगों से गले मिलकर वाजपेयी जी स्वागत करते हैं। इससे उनकी साम्प्रदायिकता और विन साम्प्रदायिकता की नीति की कलई खुल जाती है।

यहां "गुरुकुल ट्रेनिंग सैन्टर" की बात कही गई है। जिसका उल्लेख करना मैं बहुत जरूरी समझता हूं। ३ से ११ जुलाई के बीच में उधमपुर जिले की तहसील 'रिथाली' के ग्राम "बरार" में शिविर लगाया खालिस्तान के उग्रवादियों ने। उसके बाद २५ से २७ जून को पूछ के नगाली साहब में शिविर लगाया और वहां पर उपयोग की जारी बन्दूकों के माध्यम से एक व्यक्ति को गोली से मारा गया। उस समय डा० फारूख साहब उस क्षेत्र में थे। लेकिन उसकी जांच नहीं हुई। ८ से १० जुलाई पलवामा के शादी मार्ग में शिविर लगाया, जहाँ पर उग्रवादियों को मदद दी

नर पशु पक्षिन के पिये, घटे न सरिता नीर।
धर्म किये धन ना घटे, यं कहे दास कबीर॥

जाती रही। १२ से २१ जुलाई में बारामूला में शिविर लगाया। वहां पर सारे साधन फारूख साहब ने जुटाए। १४ से ३१ सितम्बर के बीच तथा ७ से ६ अक्तूबर, १६८३ में जम्मू-कश्मीर के डिगियाना आश्रम में उग्रवादी सिक्ख युवकों का शिविर लगा। जहां पर उन्होंने पूरी मदद की। २ जूलाई को पलवामा से जो शिविर उग्रवादी सिक्खों का लगा उसकी समाप्ति पर जो जलूस निकाला गया उसमें खालिस्तान जिन्दाबाद, पाकिस्तान जिन्दाबाद, भिंडरावाला जिन्दाबाद के नारे लगाए गए और नारे लगाने वालों में डा० फारूख साहब भी शामिल थे। उसके बाद नानकपुर (गांधीनगर) जम्मू के अन्दर कई महीनों से उग्रवादियों की गतिविधियों को पूरी मदद दी जाती रही। खाना और सारी सुविधाएं जुटाते रहे। अब यह कहते हैं कि जगमोहन जी ने यह सारा किया। मैं पूछना चाहता हूं कि श्री बी. के. नेहरू, जो गवर्नर थे, उन्होंने तथा केन्द्रीय सरकार के गृह मंत्रालय से कई सूचनाये गईं कि फारूख साहब आपकी स्टेट में इस तरह की गति-विधियां कर रहे हैं, आप कार्यवाही क्यों नहीं करते हैं। उन्होंने कोई कार्यवाही नहीं की और वे चैन की बंशी बजाते रहे और वहाँ पर काम करते रहे। मैं जगमोहन जी के बारे में कह सकता हूं कि उनको जो गवर्नर के नाते सही लगा, उन्होंने किया। उन्होंने तुरन्त उसको हकूमत बनाने के लिए नहीं कहा। जैसा कि श्री जेठमलानी और प्रो० सोज जी ने कहा कि वे लोग रात को वहां पर रहना चाहते थे, क्योंकि वे नेशनल कांफ्रेंस के लोगों से बहुत भयभीत हैं, लेकिन उन्होंने साफ इन्कार कर दिया।

आप गवर्नर हाउस में नहीं रह सकते हैं, यह कहकर उनको विदा कर दिया। उसके बाद डा० फारूख अब्दुल्ला को बुलाया और उनसे कहा कि आपके आदमी काम को छोड़ चुके हैं और उनको बहुमत मिल चुका है, आप अपना स्पष्टीकरण दीजिए। तब उन्होंने कहा कि मैं अपने साथियों से पूछूंगा। मैं कहना चाहता हूं—अगर डा० फारूख अब्दुल्ला के साथ बहुमत था तो उसका फर्ज था कि जिस तरह से दूसरे लोग वहां पहुंचे थे, वह भी अपने साथियों को ले जाकर वहां पहुंचता और अपना बहुमत साबित करता। लेकिन उसके पास बहुमत नहीं था। उनके भाई, बहन, बहनोई, सब परिवार के लोगों ने और जो उनके मुख्य सचेतक थे, उन्होंने भी उनका हाथ छोड़ दिया।

उन्होंने धार्मिक स्थानों के साथ खिलवाड़ की, शराब पीकर तरह तरह की बातें करने लगे, जो कश्मीर के लोगों को सहन नहीं हुआ। वे बाहर जाकर ट्रेड यूनियन का शिविर लगाते हैं और वहां जाकर क्या करते हैं—मैं व्यक्तिगत बात नहीं कहना चाहता हूं। लेकिन उनकी इन बातों के कारण उनके अपने परिवार के लोग, कश्मीर के लोग उनके खिलाफ हो गए, जिसके कारण उनको वहां से हटना पड़ा। विरोधी पार्टियों के लोग जो आज उनका बचाव करने की कोशिश कर रहे हैं, वे किस मुंह से बचाव करना चाहते हैं, वह अपनी मौत अपने कर्मों से गिरा है, उसके अपने कर्मों का फल उसको भुगतना पड़ा है। इस लिए मैं कहना चाहता हूं कि राष्ट्र की अखण्डता के लिए कश्मीर के महत्व को देखते हुए बेहूदा और इधर-उधर की बातें न करें, बल्कि ऐसी बातें करें जिससे कश्मीर में शान्ति स्थापित हो।

मैं बतलाना चाहता हूं —केन्द्रीय सरकार ने किस्तवार की योजना के लिए ३६० करोड़ रुपये लिये लेकिन उस पर काम नहीं हो रहा है।

प्रो० सोज ने कहा था कि वहां पर बिजली पैदा की जा सकती है, मैं उनसे पूछना चाहता हूं क्या इस काम के लिए भारत सरकार ने ३६० करोड़ रुपया नहीं दिया जिससे १४०० मैगावाट बिजली पैदा की जा सकती है? लेकिन अफसोस यह है कि अफसरों के रहने के लिए कालोनी बनाने की जमीन इन्होंने नहीं दी। नेशनल हाई-वे बनाने के लिए तरह-तरह की बाधाएं खड़ी कीं, वहां इनकी पी० डब्लू० डी० के इन्जीनियरों की तरफ से चार-सौ बीसी और भ्रष्टाचार चलता रहा। इस प्रकार की सरकार को वहां पर नहीं चलाया जा सकता था। वहां के लोगों ने, वहां के समझदार एम० एल० एज० ने बहुमत के आधार पर उनको वहां से हटाया है। राष्ट्र की स्थिति को देखते हुए, अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों को देखते हुए इस प्रकार के तत्वों को प्रोत्साहन न दो, जो विदेशी ताकतों के हाथों में खेलते हैं। □

गांठी हो सो हाथ कर, हाथों से कछु देह।
जो देगा सो पायगा, इसमें नहीं सन्देह॥

आचार्य भगवानदेव संसद में :—

चोरों को पकड़वाने वालों को इनाम दें

आचार्य भगवानदेव (अजमेर) : सभापति जी, माननीय कृषि मंत्री जी ने चोर बाजारी, संग्रहखोरी, मुनाफाखोरी को रोकने के सम्बन्ध में जो विधेयक पेश किया है मैं उसका तहेदिल से समर्थन करता हूं। अभी भारतीय जनता पार्टी के, जिस पार्टी का सम्बन्ध व्यापारियों से कैसा है यह सारी दुनिया जानती है और यही कारण है कि शहर में उनकी थोड़ी बहुत दाल गल जाती है, लेकिन ग्रामीण क्षेत्र में उनकी दाल नहीं गलती क्योंकि गरीब मजदूर किसानों के साथ उस पार्टी का कोई सम्बन्ध नहीं है, व्यापारियों के पैसे के आधार पर अपनी दुकानदारी चलाते रहे, उस पार्टी के सदस्य श्री कृष्ण कुमार गोयल जी ने कहा कि इस विधेयक का हम स्वागत करते हैं, लेकिन, और जब लेकिन या परन्तु लगता है तो ऐसा लगता है कि चोर की दाढ़ी में कुछ तिनका है। लेकिन और परन्तु क्यों लगाया जाय ? चोर तो चोर है, उसको पकड़ना चाहिये। पर लेकिन और परन्तु सम्बन्ध रखता है व्यापारियों से। अब कहते हैं कि महंगाई इतनी बढ़ गई। क्या गत वर्ष जब लोक सभा के चुनाव हुए थे उस समय जनता क्या भूल गई कि चीनी को इन लोगों ने चौपट कर दिया, गेहूं को गुम कर दिया था और पेट्रोल को इन्होंने पी लिया। और जितने भी चोर थे पहले नम्बर के, चम्बल तक के डाकू, उनको एक ही दिन जयप्रकाश नारायण के सामने खड़ा करके कह दिया यह तो गांधीवादी हैं, उनको सर्टिफिकेट दे दिया और वह साधू बन गये। जितने चोर थे उनको तो इन्होंने साधू बना दिया, और उनसे मिलजुल करके सारी अर्थ-व्यवस्था को इन्होंने बरबाद कर दिया। यह मेंढक टोली की जो सरकार थी, जनता पार्टी, जिनका सिद्धान्तहीन गठबन्धन हुआ, इन्होंने सब गड़बड़ कर दिया। कहां भारतीय जनता पार्टी, जो अब तक तीन रूप बदल चुके हैं, पहले जनसंघ पार्टी कहलाती थी। कहां जनसंघ मार्क्सवादी, कहां जगजीवन राम और चौधरी चरण सिंह। चौधरी चरण सिंह की जब बात सामने आती है तो इनके चेहरे आइने में सामने नजर आते हैं अगर यह अपना चेहरा देखें तो। कोई भूल सकता है प्याज को जो कि गरीब आदमी खाता है। उत्पत्ति से लेकर आज तक प्याज कभी ५ रु० किलो बिकी ? लेकिन इनके जमाने में वह बिकी जिसको गरीब आदमी रूखी रोटी के साथ खाता है। यह इन लोगों की बदौलत हुआ।

स्वं महिमानमायजताम्। यजु० २१।४७
अपनी महिमा को बढ़ाओ।

और भी इन्होंने बरबाद किया, अगर सभी बातों की पोल खोलूं तो उसके लिये काफी समय चाहिये।

सभापति महोदय : बरबाद खाने वालों को किया या प्याज को किया ?

आचार्य भगवानदेव : सभापति जी, अगर मैं पोल खोलूंगा तो लम्बा भाषण चला जायगा। मैं तो मुख्य-मुख्य बातें कहना चाहता हूं क्योंकि आपने थोड़ा समय दिया है।

जिस समय लोक-सभा का चुनाव हुआ, क्या आप, मैं और इस देश की जनता भुला सकती है कि पैट्रोल पम्पों पर बहुत बड़ी लम्बी लाइनें लगी हुई थीं और चुनाव में जीतने के बाद जब विधान-सभा के चुनाव होने वाले थे, उस बीच के काल में भारत सरकार ने, हमारे केन्द्रीय मंत्रियों ने प्रान्तीय सरकारों के लिये तमाम साधन जुटाये और उस समय प्रान्तीय सरकारें विरोधी पार्टियों के हाथों में थीं, चुनाव हुए नहीं थे। उन सरकारों ने सारा पैट्रोल उन लोगों के हाथों में दिया। चीनी, गेहूं, स्टील तमाम प्रकार के पदार्थ जिन नागरिकों को दिये जाने चाहिये थे, उनको न देकर पीछे के दरवाजे से चोरबाजारी में बेचकर गांव-गांव में यह प्रचार किया। ये हमारे खाकी निक्कर वाले, नागपुरी संतरे मैं इनको कहा करता हूं, कबड्डी खेलने वाले।

अभी पीछे अटल बिहारी वाजपेयी ने डीजल के सम्बन्ध में हमारे माननीय मंत्री से प्रश्नोत्तरकाल में पूछा कि कैसे हो गया ? आज अटल बिहारी वाजपेयी जिनके सम्बन्ध में हमारे पार्टी के लोगों ने आपत्ति उठाई, एक विरोधी पार्टी का जवाबदार व्यक्ति अमरीका गया इन दिनों में, क्यों गया ? मुझे सूचना मिली है कि वहां इंटरनेशनल दीनदयाल उपाध्याय केन्द्र बना हुआ है और अटल बिहारी जी वहां गये।

एक बात मैं सरकार से भी कहना चाहता हूं कि उस इंटरनेशनल दीनदयाल उपाध्याय केन्द्र के मंत्री हिन्दुस्तान समाचार एजेन्सी के वहां पर एजेन्ट भी बने हुए हैं। जिस हिन्दुस्तान समाचार एजेन्सी को भारत सरकार आर्थिक मदद देती है और वह मदद लेकर के वहां पर इस प्रकार का कार्य कर रहे हैं। भारत सरकार को इस पर गम्भीरता से सोचना चाहिए। जिस सरकार के साधनों से सरकार के खिलाफ काम हो रहा हो।

सभापति महोदय : आचार्य भगवानदेव जी,

आचार्य भगवानदेव : मैं सरकार से चाहता हूं कि जाँच करे। मेरा चेलेन्ज है कि इस प्रकार का संगठन वहां पर है और वह कार्य कर रहा है। वह व्यक्ति हिन्दुस्तान समाचार समिति का प्रतिनिधि भी है। मेरा आक्षेप है, आप इसकी जाँच कीजिये।

सभापति महोदय : मेरी बात सुनिये। किसी माननीय सदस्य के खिलाफ इस तरह का आरोप आप तभी लगावें जब कि अध्यक्ष या जो कोई यहां पर बैठा हो, उसे आप सन्तुष्ट कर दें, यदि इसके प्रमाण हैं आपके पास, नहीं तो यह करैक्टर एसेसीनेशन······

आचार्य भगवानदेव : सभापति महोदय, यह तो मैं साबित करने के लिये तैयार हूं कि हिन्दुस्तान समाचार समिति का प्रतिनिधि वहां पर दीनदयाल उपाध्याय केन्द्र का सैक्रेटरी है।

सभापति महोदय : आप शांत रहिये। आप क्यों नहीं मेरी बात सुनते हैं। मैं आपको इतना मना करता हूं, जिसका प्रमाण हो,···उतना ही कहिए।

आचार्य भगवानदेव : मैंने जो आक्षेप किया है, यहां पर जिस व्यक्ति के लिये किया है, वह स्पष्टीकरण दे सकते है। मेरा यह चेलेन्ज है।

सभापति महोदय : मैं आपको इतना ही बंधन डालना चाहता हूं।

आचार्य भगवानदेव : इस देश में और वहां चोर बैठे हैं—

दिल के फफोले जल उठे, सीने के दाग से
घर को आग लग गई घर के चिराग से।

यह घर के चिराग घर को आग लगा रहे हैं, काबे में कुफ्र कर रहे हैं।

सभापति महोदय : आप कृपया नाम न लें।

क्यों आंख मींच कर सोया है, क्यों वक्त राह को खोया है।
जो सोया है सो रोया है, कहते हैं दरद मन्द देंव॥

श्री सत्यनारायण जाटिया : दूसरे के खिलाफ एलीगेशन लगाया गया है।

सभापति महोदय : आप कृपया नाम न लें।

आचार्य भगवानदेव : मैं नाम नहीं ले रहा हूं, बात कह रहा हूं। (व्यवधान)

सभापति महोदय : आप जरा बैठ जाइये, जब अध्यक्ष खड़े हों तो कृपया बैठने की आदत डालिये।

आप जिस तरह से आक्षेप कर रहे हैं, अगर वह सिलसिला चलता रहा, तो फिर उससे कोई अछूता नहीं रहेगा और परिपाटी एकदम बिगड़ जाएगी। इसलिए मैं आपसे कहता हूं कि आम तौर पर आप कह सकते हैं, लेकिन नाम तो न लीजिए।

Shri N. K. Shejwalkar : That should be expunged.

Mr Chairman : I may point it out to you that I was the first person to take it up; I will go through the record and do the needful.

आचार्य भगवानदेव : इस बिल में चोरों को पकड़ने की बात है, लेकिन हमारे देश में साधु के वेश में शैतान भी बैठे हैं—देशभक्ति का चोगा पहनकर चोर-बाजारी को प्रोत्साहन देने वाले भी बैठे हैं। इसलिए मुझे कहना पड़ता है कि वास्तविकता क्या है, किस प्रकार से चोर-बाजारी को प्रोत्साहन मिल रहा है।

मैं कहना चाहता हूं कि जितने भी चोर, चंबल के डाकू और स्मगलर थे, उन लोगों को छोड़ कर इन्होंने चोर-बाजारी को प्रोत्साहन दिया। इसी लिए चोर-बाजारी बढ़ी है। गत वर्ष चीनी, गेहूं और दूसरे पदार्थों के भावों की क्या स्थिति थी ? इन लोगों के कारण चीनी बारह, चौदह रुपये किलो बिक रही थी, मगर आज वह छः रुपये किलो पर पहुंच गई है, क्योंकि दामों को नियंत्रित करने का प्रयास किया गया है। (व्यवधान)

सभापति महोदय : विचार-विमर्श को चलने दीजिए।

आचार्य भगवानदेव : यह परेशानी इसी लिए हो रही है कि जैसा कि मैंने पहले कहा है, चोर की दाढ़ी में तिनका है। ये सब इसलिए परेशान हो रहे हैं कि सौदेबाजी पर आंच आ रही है। इस लिए इनको बड़ी परेशानी महसूस हो रही है।

मैं एक बात मंत्री महोदय से कहना चाहता हूं कि दिल्ली में चुनाव आने वाले हैं और इन खाकी निक्कर वालों ने योजना बनाई है कि चुनाव से पहले डबल-रोटी को गुम किया जाए, सर्व-साधारण पर उसका प्रभाव पड़ेगा चीनी को गुम किया जाए, मदर डेरी का जो दूध बिकता है, उसको खरीदकर उसका मावा बना दिया जाए, ताकि लोगों को दूध न मिलने पाए। ये लोग इस तरह का कृत्रिम अभाव पैदा करने का प्रयास करने वाले हैं, ये संकेत हम को मिले हैं। मेरा उन पर यह आक्षेप है। मंत्री महोदय को इस सम्बन्ध में जाग्रत रहना है।

कानून तो पहले भी लाया गया था और अब भी भी लाया गया है। हम रोज पेपर में पढ़ते हैं। अगर पेपर पढ़ने की इजाजत हो, तो मैं आपके सामने पेश कर सकता हूं। हमारा गृह विभाग और हमारी पुलिस, जहां भी उनको पता चलता है, वे उन चोरों को पकड़ने का प्रयास कर रहे हैं। यह काम योजनाबद्ध ढंग से किया जा रहा है, ताकि किसी को कोई शिकायत न रहे। मंत्री महोदय ने कहा कि हम चाहते हैं कि हम इस बारे में बैठ कर प्रेम से बात करें। उन्होंने व्यापारियों के साथ बात की है और उनकी बातों को सुना है। उन्होंने सब दलों से अपील की है कि वे कोई रचनात्मक सुझाव पेश करें। लेकिन कोई रचनात्मक सुझाव पेश करते नहीं हैं और गाड़ी को पटरी से उतार कर बाहर चले जाते हैं। विरोधी पार्टियों का काम यही रह गया है कि गाड़ी को पटरी से उतार कर बाहर चले जाना। आज उनकी दुकान का दिवाला निकला हुआ है। उनकी पार्टी का कोई नेता इस बारे में विचार-विमर्श नहीं करता है कि देश की अर्थ-व्यवस्था को कैसे सुधारना है। आज उनको गैर-हाजिरी क्या बताती है ? यह साबित करती है कि चोर-बाजारी को रोकने के सम्बन्ध में उनके इरादे क्या हैं, वे उसको रोकना चाहते हैं या नहीं।

स देवां एह वक्षति। ऋ० १।१।२
वह अग्नि हमें दिव्य शक्तियां, गुण ऐश्वर्य देता है।

मैं मंत्री महोदय को एक सुझाव देना चाहता हूं। पुलिस और अधिकारी अपना काम करेंगे, परन्तु वह एक इनामी योजना शुरू कर दें कि देश का जो नागरिक संग्रह किए हुए भंडार के बारे में सरकार को बताएगा, उसको इतना इनाम दिया जायेगा इससे बेरोजगार घूमने वाले नौजवान और दूसरे गरीब व्यक्ति यह पता लगाने का प्रयास करेंगे कि कहां-कहां चोर-बाजारी का भंडार भरा हुआ है।

उससे आप को माल सरलता से मिलेगा। चोरों का भी पता लगेगा और जो माल संग्रह करके लोग रखे हुए हैं उसका भी पता लगेगा। उसके पीछे किस का सम्बन्ध है उसकी भी पोल खुल जायगी। तो इनामी योजना, सार्वजनिक लोगों को इनाम देने की योजना माननीय मंत्री जी शुरू कर दें, फिर आप देखेंगे देश के दीवाने नौजवान गली गली में जाकर किस तरह उन के गोदामों के ताले खुलवाते हैं और उन के काले कारनामों को जाहिर करने का प्रयास करते हैं। इन शब्दों के साथ मैं माननीय मंत्री जी ने जो बिल पेश किया है, उसका हृदय से स्वागत करता हूं।

धन्यवाद।

24-8-1981

प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरागांधी के साथ आचार्य भगवानदेव अजमेर में।

देश उन्नति और जाति सेवा गुणयन का सत्कार।
शील सन्तोष पर स्वार्थरत कर्म योग उर धार॥

आचार्य भगवानदेव संसद म :—

सिनेमा कर्मकारों का कल्याण करें

आचार्य भगवान देव (अजमेर) : उपाध्यक्ष जी, हमारे सुयोग्य सूचना मंत्री जी ने जो सिनेमा कर्मकार कल्याण उपकर विधेयक पेश किया है उसका मैं हृदय से समर्थन करता हूं। विरोधी पार्टी के एक सज्जन ने शुरूआत करते हुए एक बात कही कि यह विधेयक मजदूर विरोधी है और दूसरी बात की राज्य के अधिकारों के विरुद्ध है। मुझे लगता है कि उस व्यक्ति को चमन में हरियाली होते हुए भी नजर नहीं आती। तो देखने वाले का दोष है, दोष चमन का नहीं है। कल्याण की योजना से बनाया गया यह विधेयक है। यह हकीकत है कि इस सिनेमा क्षेत्र के अन्दर बड़े-बड़े कलाकार अपने युग में कई ऐसे देखे जो उच्च स्थान पर थे, परन्तु बुढ़ापा आते ही उनकी बड़ी दयनीय स्थिति रही। डागा जी ने कल एक बात कही कि फिल्म कलाकार और राजनीतिक नेता जितने बूढ़े होते हैं, उन्होंने रंगा जी का नाम लिया, उन पर रौनक आती है। पर डागा जी ने सेन्ट्रल हाल में नहीं देखा कि जो मेम्बर नहीं रहे या मंत्री नहीं रहे उनके चेहरों की क्या हालत है। वहां जो कलाकार हैं उनके चेहरे उन्होंने नहीं देखे। यह हकीकत है कि उनकी स्थिति बहुत दयनीय है। श्रीमती दंडवते ने एक बात कही कि आजकल के कलाकारों ने अपने पैसे का अच्छा इन्वेस्टमेंट कर रखा है। पर उन्हें मालूम होना चाहिये कि इस बिल का सम्बन्ध बड़े-बड़े लोगों से नहीं है, बल्कि जो गरीब हैं, और जिनकी स्थिति दयनीय है या हो गई है उनके लिये यह बिल है। यह हकीकत है कि यदि सिनेमा उद्योग को एक उद्योग घोषित किया जाता और उनको सुविधायें मिल जातीं तो यह बिल लाने की जरूरत नहीं पड़ती। यह लाया ही इसीलिये गया है कि उद्योग अभी तक घोषित नहीं हुआ है और कई कलाकार ऐसी गरीब हालत में हैं कि वह खाने के लिये मोहताज हैं, बच्चों को पढ़ाने की बात तो दूर रही। हमें आशा है कि जो कलाकार रहे हैं मंत्री जी उनका अवश्य कल्याण करेंगे।
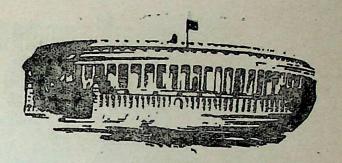
कई शंकायें खड़ी की गई कौन-सी कमेटी होगी, कैसी कमेटी होगी, उसके आफिस पर इतना खर्च होगा। हमेशा कोई भी कार्य शुरू किया जाता है तो उसकी रूप रेखा तैयार होती है। उपाध्यक्ष जी, सिनेमा क्षेत्र के अन्दर पत्र मित्र लोग हैं जिनको मैं जानता हूं अनेक लोग जो जीवन के उतार और चढ़ाव से गुजरे हुए हैं। ऐसे बहुत से बड़े कलाकार हैं फिल्म इंडस्ट्री में। स्वर्गीय नरगिस दत्त के बारे में भी आप जानते होंगे... उन्होंने भी एक संगठन खड़ा किया कल्याण की दृष्टि से, अशोक कुमार भी अपनी तरफ से मदद करने के कुछ प्रयास करते हैं राजकपूर और प्राण भी करते हैं। जो पुराने व्यक्ति हैं, जिन्होंने जीवन में उतार-चढ़ाव देखे हैं, वे अपनी सामर्थ्य के अनुसार प्रयास करते हैं लेकिन सामूहिक रूप से कोई प्रयास नहीं किया गया। यह प्रयास हमारे माननीय मंत्री महोदय ने किया है, जो कि बहुत सुन्दर है।

परम आदरणीय श्री कमलापति जी कह रहे थे, जिस दिन शुरुआत हुई, कि न सिर्फ फिल्म क्षेत्र में काम करने वालों के बारे में सोचें, जैसे रंगा जी ने भी कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में जो नाटक दिखाते हैं, या रास लीला, कृष्ण लीला, या रामलीला करने वाले जो कलाकार हैं उनके बारे में भी ध्यान रखें। परन्तु उसका इस विधेयक से कोई सम्बन्ध नहीं है। उसके बारे में भी मंत्री जी कोई

विश्वदानी सु मनसः स्याम। ऋ० ६५२।५
सारा विश्व अच्छे मन वाला हो!

योजना बनायें तो बहुत अच्छा है ।

एक बात मैं और कहना चाहता हूं कि कुछ ऐसे व्यक्ति भी हैं जो आपके आकाशवाणी के केन्द्रों में आकर अपनी जवानी के टाइम में बहुत सुन्दर-सुन्दर गीत गुनगुनाकर जनता का जन-मनोरंजन करते रहे हैं। वंसी-वादक भी रहे हैं जो अपनी जवानी में बहुत सुन्दर बंसी बजाते थे लेकिन बुढ़ापा आने पर उन लोगों को पान-बीड़ी बेचते हुए देखा गया है । ऐसे बहुत से कलाकार हैं जिनका आपके आकाशवाणी से सम्बन्ध रहा है, जिस विभाग के आप मंत्री हैं मेरा निवेदन है कि उनके बारे में भी आप विचार कीजिये । उनकी बड़ी दयनीय स्थिति बन चुकी है, आप देखें कि कौन-कौन हैं उनके बारे में भी योजना बनाइये । ऐसे बहुत कम केसेज मिलेंगे जोकि अब भी जीवित हैं जिन्होंने अपने टाइम में बहुत सुन्दर गाया अच्छे संगीत पेश किए हैं। परन्तु उनका बुढ़ापा आते ही न उनके स्वर में ताकत रही और न शरीर में दम रहा, वह न नाटक पेश कर सकते हैं न सुन्दर गा सकते हैं। उनकी स्थिति बड़ी दयनीय है। उनका भी सम्मान किया जाना चाहिये । उनकी कठिनाइयों को भी दूर करने की आवश्यकता है। न सिर्फ कलाकार की तरफ ध्यान देने की जरूरत है बल्कि कलाकार के परिवार और उनके बच्चों की तरफ भी ध्यान देने की जरूरत है। मंत्री जी जो विधेयक ला रहे हैं, उसमें जो कल्याण की योजना बना रहे हैं उसमें उनके बच्चों को सुविधा देने के प्रयास हो सकें तो अच्छा है । फिल्म लाइन के लिये जो आप कमेटी बना रहे हैं उसमें जो व्यक्ति लिये गये हैं वह स्वागतयोग्य हैं । उसमें सरकार के भी सुयोग्य व्यक्ति हैं । डागा जी ने तो मंत्री जी को सर्टिफिकेट दे दिया कि फिल्म लाइन की पत्रिका का उन्हें अच्छा ज्ञान है मुझे विश्वास है कि उनके द्वारा किये गये प्रयासों से किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहेगी ।

मैं आशा करता हूं कि जो कलाकार रह चुके हैं, उनके लिये, उनके परिवारों के लिये और बच्चों के लिये मंत्री महोदय पूरा ध्यान रखेंगे लेकिन उसके साथ-साथ रेडियो स्टेशनों के साथ जिन कलाकारों का सम्बन्ध रहा है जिन्होंने वहाँ अपना जीवन लगा दिया है, उनके सम्बन्ध में भी कोई ठोस योजना रखेंगे ।

इन शब्दों के साथ मैं हृदय से इस विधेयक का स्वागत करता हूं यह बहुत ही सुन्दर और अपने आप में पूर्ण विधेयक है । अभी तक इस उद्योग को औद्योगिक क्षेत्र घोषित नहीं किया है किन्तु यह अच्छा प्रयास है। रासलीला, रामलीला करने वालों के बारे में भी कोई प्रयास हो और इस कमेटी को इस तरह के आदेश दे सकें जिससे कलाकारों का सम्मान हो तो बड़ा अच्छा है। इस तरह की आशा मैं मंत्री जी से रखता हूं और इस विधेयक का समर्थन करता हूं ।

सिन्धियों की समस्याओं का समाधान करें

दिनांक २६-४-८२ को संसद में आचार्य भगवानदेव द्वारा सिंधी भाषा में दिये गए भाषण की हिन्दी प्रतिलिपि

आदरणीय अध्यक्ष महोदय,

आज हिन्दुस्तान की पार्लियामेंट में मुझे प्रथम बार "सिन्धी भाषा" में बोलने का अवसर दिया है, इसके लिए मैं आपका आभारी हूं।

मैं सर्वप्रथम आदरणीय प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी का अपनी तरफ से तथा सिन्धी समाज की तरफ से हार्दिक आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने सिंधी भाषा को शैड्यूल्ड 8 में मान्यता दिला कर जो गौरव प्रदान किया और सिंधी जाति की भावनाओं की कदर की है।

पूज्य महात्मा गांधी, पं० जवाहर लाल नेहरू, और अन्य हमारे राष्ट्रीय नेताओं की इच्छा नहीं थी कि भारत का बंटवारा हो। परन्तु अंग्रेजों की चाल तथा साम्प्रदायिक शक्तियों की मलीन मुरादों के कारण हिन्दुस्तान के दो भाग हो गये। बंटवारे के कारण बंगालियों को आधा बंगाल मिला, अपनी विधान सभाई मिली। अपना बजट मिला। जिस कारण वे अपनी भाषा, साहित्य और संस्कृति की रक्षा करने में पूर्ण समर्थ हैं। लेकिन सिन्धी जाति ही एक ऐसी बदनसीब जाति है जिसको न अपना प्रांत है न अपनी विधान सभा है और न उनका कोई बजट है। सिन्धी सारे हिन्दुस्तान में बिखरे पड़े हैं।

पाकिस्तान से बरबाद होकर आने पर सिंधियों ने मेहनत और सूझबूझ से न सिर्फ अपना पेट पाला है और अपना जीवन बनाने की कोशिश की है अपितु देश के हर प्रांत में बड़ी-बड़ी हास्पीटलें, कालेज, स्कूल, धर्मशालायें, आश्रम आदि स्थापित किए हैं। देश और देश में रहने वाले लोगों की भलाई और बहबूदी के लिए सराहनीय कार्य किया है। देश के औद्योगिक क्षेत्र के विकास से सिंधियों का बड़ा योगदान रहा है।

इन बातों के होते हुए भी सिंधियों की भाषा, साहित्य, पुनर्वास आदि की अनेक समस्याएं हैं। यद्यपि स्वर्गीय पं० जवाहरलाल नेहरू तथा प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने समय-समय पर सिंधियों की समस्याओं पर विशेष ध्यान देकर उनका समाधान कराने की कोशिश की है जिसके लिए सिन्धी समाज तथा मैं उनका हार्दिक आभारी हूं। प्रांत और विधान सभा के अभाव में और सिन्धी जाति के विभिन्न प्रांतों में रहने के कारण मेरी भारत सरकार से मांग है कि :—

1. केन्द्रीय सिन्धी बोर्ड स्थापित किए जाये जो सिंधी भाषा साहित्य कला, संगीत, संस्कृति, सभ्यता के विकास, रक्षा, प्रचार-प्रसार का काम कर सके।

2. शिक्षा मंत्रालय में सिन्धी शिक्षा समस्याओं के समाधान के लिए एक प्रभावशाली समिति की स्थापना की जाये। इस समय जो सिन्धी सलाहकार समिति सैंट्रल हिंदी डायरेक्टर के आधीन है वह बिल्कुल निष्क्रिय, निकम्मी

इदंमहमनृतात् सत्यमुपैमि। यजु० १।५
मैं असत्य से हटकर सत्य को प्राप्त करता हूं।

एवं फिजूलखर्ची करने वाली साबित हुई है। उन लोगों ने कोई ठोस काम नहीं किया है। उनको तुरन्त भंग किया जाये और उस सलाहकार कमेटी में एवं सिंधी अकादमी में सुयोग्य व्यक्तियों को रखा जाये।

3. सिन्धी भाषा के विकास के लिए बजट बढ़ाया जाये।

4. आकाशवाणी की ओर से सिन्धी कार्यक्रमों को न्याय नहीं मिलता था। जनता पार्टी शासन में श्री एल. के. अडवानी सूचना मन्त्री सिंधी होते हुए भी उन्होंने सिंधियों के लिए कोई कार्य नहीं किया। परन्तु मैं श्री बसन्त साठे, सूचना और प्रसारण मंत्री का आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने हमारी मांगों पर ध्यान देकर कुछ ठोस कार्य किया है और आकाशवाणी तथा टेलीविजन से सिंधी कार्यक्रमों का समय बढ़ाया है। मेरी दृष्टि में यह अभी भी बहुत कम है। मेरी प्रार्थना है कि सूचना और प्रसारण विभाग में जहां-जहां सिंधी विभाग है वहां सब अधिकारी सिंधी रखे जाएं और जिन प्रांतों में सिंधी विभाग नहीं है उन प्रान्तों में प्रति सप्ताह कुछ समय सिंधी प्रोग्राम दिए जाने चाहिए। सिंधी कार्यक्रम के लिए बजट बहुत कम है, उसको भी बढ़ाया जाना चाहिए।

5. हिन्दुस्तान में कम से कम डेढ़ सौ के करीब सिंधी पत्र-पत्रिकायें प्रकाशित होती हैं। उनकी आर्थिक स्थिति बहुत ही दयनीय है। मुझे शिकायत मिली है कि उनको विज्ञापन मिलने में बहुत कठिनाई पेश आती है। सरकार को चाहिए कि सिंधी पत्र-पत्रिकाओं के लिए डी० ए० वी० पी० को सरकार आदेश कर दे जिससे वह सिंधी पत्र-पत्रिकाओं को विज्ञापन देने में नियम को कुछ उदार बनाए जिससे वे सरकारी विज्ञापनों तथा अन्य सहायता का लाभ उठा सकें।

6. पोस्ट और टेलीग्राफ विभाग जो महापुरुषों एवं सामाजिक एवं राजनीतिक लोगों को डाक टिकट प्रकाशित करता है उसकी तरफ से सिंधी महापुरुषों को बिल्कुल नजरअन्दाज किया गया है। सिंधी समाज को इस बात पर अफसोस और अरमान है। सिंधियों के भगतसिंह, अमर शहीद हेमूकालानी, सन्त कंवर राम, स्वामी लीला शाह और श्री जयरामदास दौलतराम की यादगार के रूप में डाक टिकट शीघ्र प्रकाशित की जानी चाहिए।

7. दिल्ली में सब प्रांतों के अपने-अपने भवन हैं। जैसा कि उत्तर प्रदेश भवन, पंजाब भवन, महाराष्ट्र भवन, नागालैंड हाउस, आदि। यह अपने-अपने राज्य की सभ्यता और संस्कृति के प्रचार-प्रसार करने के लिए काम करते रहते हैं। परन्तु जैसा कि सिंधियों का कोई प्रान्त नहीं है। ऐसी हालत में यह कार्य भारत सरकार को स्वयं करना चाहिये। और राजधानी में एक सिंधु भवन कायम करना चाहिए। आवास और निर्माण मंत्रालय को इसके लिए प्लाट की व्यवस्था करनी चाहिए। और भारत सरकार को उस सिन्धु भवन को बनाने में आर्थिक मदद देनी चाहिए।

8. सिंधी जब भारत में आए तो उनके पुनर्वास की अनेक समस्यायें उनके सामने खड़ी हुईं। उनके क्लैमों की समस्या भी अभी तक चली आ रही है। भारत सरकार को उनकी इन समस्याओं का शीघ्र समाधान करना चाहिए और बंटवारे के समय सिंधियों को जो सरकार ने कर्ज आदि दिये थे, कुछ लोगों की आर्थिक स्थिति खराब हो जाने के कारण वे कर्ज लौटा नहीं सके। उस मूल राशि से भी अब ब्याज दस गुना अधिक बढ़ गया है। उसे लौटाने में लोग बड़े असमर्थ हैं। मेरी सरकार से मांग है कि पाँच हजार रुपये तक जिन्होंने कर्ज लिया हो उनको माफ कर दिया जाये।

9. बंटवारे के पश्चात् सिंधी भारत के अलग-अलग प्रांतों में जाकर बसे हैं वहां उन्हें अपने निवास एवं कारोबार के लिए मकान एवं दुकानों के लिए जो जमीन एलाट की गई उनको उस समय की कीमत पर वह जमीन एलाट कर दी जाए। और जमीन सम्बन्धी उनको मालिकाना हक देने की समस्याओं का शीघ्र निपटारा किया जाये। इस सम्बन्ध में केन्द्रीय सरकार को प्रांतीय सरकारों को हिदायत देनी चाहिए जिससे यह कार्य शीघ्र सम्पन्न हो सके।

10. देश की आजादी के लिए सिंधियों ने तन-मन-

पानी जो मिला पी लिया, जिस तौर का पाया।
रोटी जो मिली तो किया रोटी में गुजारा॥

धन का सहयोग दिया है। अनेक लोगों ने अपनी कुर्बानियां भी दी हैं। शहीद हेमूकालानी की माता जिसको हम सिंधू माता कहते हैं उनको हमारी प्रार्थना पर गृहमन्त्री ज्ञानी जैलसिंह ने मासिक पांच सौ रुपये पैंशन देकर जो पुण्य का कार्य किया है उसके लिए मैं उनका तथा भारत सरकार का सिंधी समाज की तरफ से आभार मानता हूं। यद्यपि सिंधू माता बम्बई की चैम्बूर कालोनी में रहती है जहाँ से श्री हशू आडवानी एवं श्री जेठमलानी विधान सभा एवं लोकसभा में चुनकर के आए और श्री एल. के. आडवानी केन्द्र में मन्त्री होते हुए भी उन्होंने कोई ध्यान सिंधू माता की तरफ नहीं दिया। कांग्रेस सरकार ने हेमू कालानी की माता की कदर करके जो पैंशन जारी की है मैं उसके लिए सरकार का आभारी हूं।

11. एक विशेष बात की तरफ मैं सरकार का ध्यान दिलाना चाहता हूं कि बम्बई में उल्लहास नगर एक ऐसा क्षेत्र है जहां चार लाख के करीब सिंधी रहते हैं। इस नगर का नाम सिंधू नगर रखा जाये और वहां की म्यूनिस्पैलिटी को पूर्ववत कायम रखा जाए तथा वहाँ के व्यापार के प्रोत्साहन के लिए उल्लहासनगर तथा बम्बई के बीच में एक ही टेलीफोन सर्विस की व्यवस्था शीघ्र की जानी चाहिए। वहां कारपोरेशन बनाने की आवश्यकता नहीं है।

12. देश भर के तमाम सिंधी कालेजों को मिलाकर एक सिंधी यूनीवर्सिटी की स्थापाना की जानी चाहिए।

सिंधी समाज की किसी भी समस्या के सम्बन्ध में सरकार को मेरी सलाह एवं सहकार तथा सेवा की कोई भी आवश्यकता हो तो एक सिंधी होने के नाते हर प्रकार से सहयोग देने के लिये मैं अपनी खुशकिस्मती समझूंगा। अन्त में मैं भारत सरकार खासकर आदरणीया प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी एवं उनके मंत्रिमण्डल के सहयोगी
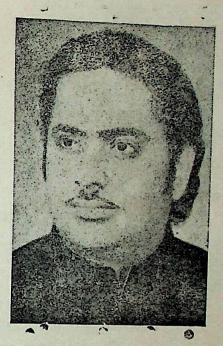
मंत्रियों का हार्दिक आभारी हूं जो कि सिंधी समाज की समस्याओं का समाधान करने की कोशिश करते रहे हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में भी पहले से भी अधिक ध्यान देकर उजड़ी और उखड़ी सिंधी समाज के दुःख और दर्द को दूर करने के लिए सरकार किसी प्रकार की कोई कसर बाकी नहीं छोड़ेगी। सिंधी समाज को हर क्षेत्र में विकास करने के लिए उनका दिली सहयोग मिलता रहेगा।

मुझे आशा है कि वित्तमन्त्री सिंधियों की जिन समस्याओं की तरफ मैंने उल्लेख किया है उनके समाधान के लिये अधिक आर्थिक मदद देंगे। मैं आपका आभारी हूं कि आपने मुझे सिंधी भाषा में बोलने का अवसर दिया।

□

खुदत वाजसातये। अथर्व० १०।६।३९
बल प्राप्ति के लिये व्यायाम करो।

संसद में आचार्य भगवानदेव :—

रीजनल कालेज को युनिवर्सिटी में बदलें

भगवान देव ने अजमेर के हित में संसद में बोलते हुए कहा कि उपाध्यक्ष जी, यूनिर्वासिटी ग्रान्टस कमीशन के सम्बन्ध में यह बिल रखा गया है, इसका स्वागत करता हूं। वास्तव में शिक्षा के अन्दर एकरूपता लाने के लिए काफी समय से चर्चा चल रही थी और यह अच्छा मौका मिला है कि यूनिर्वासिटियों और कालेजों में जो मनमानी हो रही थी इसके माध्यम से उसमें सुधार आयेगा। मैं, अधिक समय नहीं लेना चाहता हूं क्योंकि कार्य समय हो चुका है। एक सुझाव देना चाहता हूं कि अगर शिक्षा का माध्यम अच्छा बनाना है और यू. जी. सी. पैसा खर्च करती है तो उसके लिये आवश्यक है कि कालेजों में से यूनियन-वाद को समाप्त कर दिया जाए। यूनियनवाद ने राजनीति में बिगाड़ लाने की कोशिश की है और यह बच्चों के जीवन से खिलवाड़ करती है। पहले यह परम्परा थी कि जो बच्चा अधिक मार्क्स लाता था उसको मानिटर बनाया जाता था। इसलिये यूनियन, में भो उसी को लीडर बनाया जाना चाहिए। आजकल गुण्डों, बदमाशों या जो शराब पिला सकते हैं, सिनेमा दिखा सकते हैं, गुण्डागर्दी करा सकते हैं, उनको अध्यक्ष या सेक्रेटरी बना दिया जाता है। बनने के बाद वह हराम का पैसा खर्च करता है और उल्टी-सीधी बातें करता हैं। इससे बच्चों की शिक्षा की तरफ ध्यान नहीं जाता है। जब तक यूनियनवाद ग्रान्ट्स कमीशन जो पैसा खर्च कर रही है वह व्यर्थ है। दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि चार रीजनल कालेज हैं। जहां पर दसवीं के बाद प्रेक्टिकल ज्ञान दिया जाता है ताकि कुछ सीखकर वे लोग कुछ काम कर सकें। चार में से एक रीजनल कालेज मेरे क्षेत्र अजमेर में है जिससे आठ प्रान्त सम्बन्धित हैं। वहां करोड़ों की जायदाद और सम्पत्ति है, परन्तु उसका उपयोग नहीं हो रहा है। मैं चाहता हूं कि उस रीजनल कालेज को जो आठ प्रान्तों से सम्बन्धित है, उसको किसी यूनिर्वासिटी का रूप दिया जाए और उसका नाम स्व. संजय गांधी के नाम पर रखा जाए। मुझे याद है जब स्व. संजय गांधी नौजवान थे तो हथौड़ा लेकर मोटरगर मैकेनिक का काम करते थे।
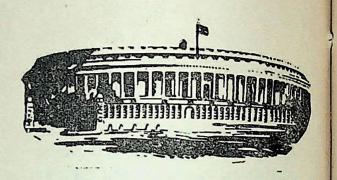
एक प्राइम मिनिस्टर का लड़का होते हुए मैकेनिक का काम करते हुए, मैंने उनको देखा है। इसी प्रकार वहां पर भी मेहनत का काम है। वहां पर हाथ का काम होता है। कोई चमड़े का करता है और कोई खेती का करता है। इस तरह कई प्रकार के काम हैं। तो वहां पर रीजनल कालेज को यूनिर्वासिटी का रूप दिया जाए और उस यूनि-र्वासिटी का नाम स्व० संजय गांधी जी की स्मृति में जो बचपन से ही प्राइम मिनिस्टर के लड़के होते हुए भी मेहनत मजदूरी करके जीवन में आगे बढ़ना चाहते थे उन डायनामिक युवा नेता के साथ जोड़ा जाए। यह मेरा सुझाव है और मैं चाहूंगा कि हमारी शिक्षा मन्त्री महोदय इस पर ध्यान दें और इस सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करें इन शब्दों के साथ मैं इस बिल का समर्थन करता हूं। ★

खाय पिलाय तू दान दे, कर ले अपना काम।
अन्त समये का ध्यान कर, संग चले नहिं दाम॥

कांग्रेस ने दिल्ली का नक्शा बदला

आचार्य भगवान देव (अजमेर) : उपाध्यक्ष महोदय, दिल्ली प्रशासन संशोधन विधेयक जो हमारे माननीय मंत्री जी ने प्रस्तुत किया है, मैं उसका समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ हूं।

अभी विरोधी पार्टी के लोगों ने अपने विचार व्यक्त करते हुए दिल्ली में विधान सभा बनाने की माँग की। परन्तु हकीकत यह है कि जब ये लोग स्वयं यहां सत्ता में रहे १९७७ से १९७९ के बीच ये यहां शासन करते थे तब इन्होंने दिल्ली में विधान सभा नहीं बनायी। दिल्ली के बारे में चुनाव होने से पहले घोषणा की थी और दिल्ली में विधान सभा बनाने के बारे में वचन भी दिया था। परन्तु यह कर के भी इन्होंने दिल्ली में विधान सभा नहीं बनायी। इससे किसी को इंकार नहीं है कि दिल्ली एक आदर्श नगरी बननी चाहिए। दिल्ली इस देश की, राजधानी भी है। परन्तु अपने शासन काल में इन लोगों ने इस पर ध्यान नहीं दिया। ये विरोधी पार्टी के लोग अपने घरों को भरने में लगे रहे।

इसके साथ यह भी हकीकत है कि जब १९८० में हमारी पार्टी सत्ता में आई, उसके बाद से दिल्ली का नक्शा ही बदल गया है। उसके बाद से दिल्ली का जितना सुन्दर विकास किया गया है उसकी न केवल दिल्ली की और देश की जनता ने ही प्रशंसा की, बल्कि सारे विश्व के नेताओं ने, उन बड़े-बड़े नेताओं ने भी जो कि निर्गुट सम्मेलन के समय में दिल्ली आये, उन्होंने भी दिल्ली के कायाकल्प को देख कर उसकी प्रशंसा की।
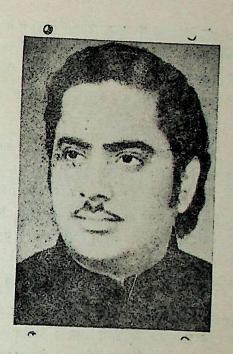
यह भी हकीकत है कि गरीबों ने हमारी पार्टी की मदद की। जो मदद गरीबों ने हमारी पार्टी की की उसका एक कारण यह भी है कि १९७६ में, जो लोग झोंपड़ियों में रहते थे, गन्दी बस्तियों में रहते थे, उनके लिए हमारी सरकार ने नई-नई कालोनियां बनाई थीं, लाखों की संख्या में उनके लिए क्वार्टर और तीन-मंजिला मकान बनाकर दिये थे। इस प्रकार से उनको एक स्वच्छ वातावरण प्रदान किया था और उनके लिए बिजली, पानी, स्कूल, अस्पताल वगैरह की व्यवस्था की थी। उस समय लोगों ने आवेश में आकर विरोध जरूर किया, लेकिन आगे चल कर उन्होंने अपनी गलती को महसूस किया। इसी का परिणाम था कि अब की बार उन्होंने चुनावों में हमारी पार्टी को बहुमत प्रदान किया।

निद्रा भोजन भोग भय, नर है पशु समान।
ज्ञान नरन में अधिकता, ज्ञान बिना पशु जान॥

कम्युनिस्ट पार्टी के हमारे शास्त्री जी ने जो विचार व्यक्त किए, उनसे लगता है कि वे निराश व्यक्ति हैं। दिल्ली में कम्युनिस्ट पार्टी को एक भी सीट नहीं मिली। (व्यवधान) आप जो कुछ बोलते हैं उसमें कुछ दम नहीं है।

आपने यहां पर लिस्ट की बात की। आपने, जब हमारी पार्टी को विजय प्राप्त हो गयी, यहां पर चुनाव हो गये, तब लिस्ट की बात की। अब आपकी तीसरी आंख खुली है, इसके पहले तो आपने कभी नहीं कहा कि वोटर लिस्ट में संशोधन होना चाहिए। आप लोगों ने यहाँ चुनाव की मांग की तो यहां चुनाव करा दिये गये। आपने असम में चुनाव की मांग की तो वहां चुनाव करा दिये गये।

भारतीय जनता पार्टी दिल्ली के अन्दर चुनाव की बात करती रही किन्तु उसने असम में चुनाव का विरोध किया। उन चुनावों के विरोध के पीछे उनका उद्देश्य क्या था ? यह जग प्रसिद्ध है। एक तरफ वे चुनावों की बात करते हैं और दूसरी तरफ वे चुनावों का विरोध करते हैं। मुझे यह समझ में नहीं आती कि आप वहां चुनावों का विरोध क्यों करते रहे ? आप चुनावों के आधार पर निर्णय होने दीजिए, परिवर्तन होने दीजिए। परन्तु ये हमेशा दुरंगी चाल चलते रहे हैं। यहां पर वे मुसलमानों के साथ रहे और असम में मुसलमानों का विरोध करते रहे। ये न हिन्दू रहे, न मुसलमान रहे और न साम्प्रदायिक रहे। इनको लोग अब जान गये हैं।

अब ये गाँधीवादी बन गये। ३० जनवरी को गांधी जी की समाधि पर भारतीय जनता पार्टी के लीडर फूल चढ़ाने के लिए गये। गांधी जी के साथ उनका रवैया क्या रहा और उसके बाद भी गांधी जी के सम्बन्ध में इनके नेता लोग क्या कहते रहे। ३५ साल के बाद वे अब गांधी जी को स्वीकार करने लगे हैं।

उपाध्यक्ष महोदय, गांधी जी की हत्या के ३७ साल बाद इनको गांधी जी की नीतियां समझ में आई हैं। आज ये राष्ट्रपिता की नीतियों की हिमायत कर रहे हैं। जब महात्मा गांधी जी को ये ३७ वर्षों के बाद समझ पाए हैं तो देश की महान् माता श्रीमती इंदिरा गांधी जी की नीतियों को समझने के लिए तो इनको कई जन्म लेने पड़ेंगे। वे क्या सोचती हैं किस तरह से राष्ट्र के गरीब और मजदूर का भला करना चाहती हैं, उनकी क्या योजनायें है, इसकी गहराई में जाने के लिए इनको कई जन्म लेने होंगे।

अभी साम्यवादी नेता बोल रहे थे। साम्यवाद को पनपाने वाले श्री अमृत डांगे हैं। बाकी सब उनके बाद पैदा हो गए हैं। उस व्यक्ति ने स्वयं स्वीकार किया कि इस देश के मजदूर, गरीब और पिछड़े वर्ग का यदि कोई भला कर सकता है तो श्रीमती इंदिरा गांधी ही कर सकती हैं। यही कारण है कि इन लोगों को सारे देश की जनता ने फैंक दिया है। जनता इनको समझ चुकी है। कम्युनिस्ट पार्टी को एक भी सीट नहीं मिली है। इनकी पालिसी क्या है, ये चाहते क्या हैं। इनकी कथनी और करनी में फर्क है। ये रहते यहां हैं परन्तु प्रेरणा दूसरे देशों से लेते हैं। इस देश को अनेक कुरबानियों के बाद आजादी मिली है। लेकिन ये लोग खाते यहां का हैं और बात दूसरे देश की करते हैं। जनता इनको कभी वोट नहीं दे सकती।

आज दिल्ली का इतना विकास हुआ है। इतने पुल बने हैं, इतने स्टेडियम बने हैं। करोडों रुपया खर्च किया गया है। इन्होंने चुनाव में यह मुद्दा खड़ा किया परन्तु ये इस बात को भूल गए कि १९८०, १९८१ और १९८२ में दिल्ली का जो कायाकल्प किया गया है उसमें पूरे देश से आए हुए ६० हजार मजदूरों को रोजी रोटी भी मिली है। पुलों के निर्माण होने से लोगों के समय की बचत हुई है। लोग अपने गंतव्य स्थान को सही समय पर पहुंच सकते हैं। पैट्रोल और डीजल की बचत हुई है जो ट्रैफिक जाम होने के कारण जलता रहता था। ट्रैफिक में सुधार आया है। अब ट्रैफिक जाम नहीं होता। वायु प्रदूषण भी कम हुआ है। स्टेडियमों पर जो खर्च हुआ है उनसे आने वाले सालों में जो प्रदर्शन होंगें उनसे हमारे देश को विदेशी मुद्रा

जब ही ज्ञान हृदय बसा, भया पाप का नास।
जिमि चिनगारी आग की पड़ी पुराने घास॥

प्राप्त होगी। इन बातों की कल्पना विरोधी पार्टी के लोग नहीं कर सकते।

मैं नौजवान नेता श्री राजीव गांधी को बधाई देता हूं। कोई जिम्मेदारी न होते हुए भी दिल्ली का कायाकल्प करने में इनका काफी योगदान रहा है। जितना हो सकता था उन्होंने इसमें काम किया है। यहां से चुने हुए श्री वाजपेयी जी भी किसी गलती में किसी गरीब आदमी से उसका सुखदुख पूछने नहीं गए होंगे लेकिन अमेठी से चुन कर आये राजीव गाँधी हर गली में मजदूरों और किसानों से मिलते रहे। उन्होंने दिल्ली के विकास के लिए काफी काम किया है इसके लिए मैं उनको बधाई देता हूं। आज विरोध्री पार्टी के लोगों को परेशानी हो रही है क्योंकि दिल्ली में इनकी कानूनदारी बन्द हो गई है। लोकप्रिय नेता को लोगों ने चुना है। श्री राजीव गांधी ने बरसात और कीचड़ में जाकर दिल्ली के विकास कार्य में योगदान दिया है। उन्होंने लोगों को ज्यादा राहत दिलाने की कोशिश की है। जितना उन्होंने किया है उतना श्री वाजपेयी जी ने अपने पूरे जीवन में नहीं किया होगा।

दिल्ली का सर्वांगीण विकास हमारी पार्टी कांग्रेस "आई" ने श्रीमती इंदिरा गांधी ने नेतृत्व में उनके २० सूत्रीय कार्यक्रम को अपनाकर किया है जिसको विरोधी पार्टी के लोगों खासतौर से रवीन्द्र वर्मा जों ने अमर आत्मा की संज्ञा दी। मैं यह कहना चाहता हूं कि यह निश्चित ही अमर आत्मा है। देश के हर व्यक्ति और हर वर्ग के आदमी को फायदा पहुंचाने वालीं, उनके दुख:दर्द को दूर करने वाली सिर्फ हमारी कांग्रेस पाटी ही है। इसके अलावा और कोई पार्टी नहीं है। जनता ने अपने चुनाव में इस बात का फैसला कर दिया कि २० सूत्रीय कार्यक्रम के माध्यम से ही इस देश के गरीब और पिछड़े हुए वर्ग का भला हो सकता है। कोई भी विरोधी पार्टी का व्यक्ति संसार का वाद-विवाद पढ़कर के अपना सत्यानाश कर सकता है लेकिन २० सूत्रीय कार्यक्रम का विरोध नहीं कर सकता क्योंकि विरोध करने के लिए कोई दम नहीं है। इन शब्दों के साथ-साथ आपने जो यह संशोधन बिल पेश किया है इसका हृदय से स्वागत करता हूं और इसके लिए माननीय मंत्री महोदय को धन्यवाद देता हूं।

२२-३-१९८३

शुभकामनाएं

—जगपाल सिंह 'सरोज'

दिनांक २३-२०-८४

कभी न बादल घिरें नयन में,
हास अधर पर रास रचाये।
शूल खिलें वन फूल डगर के,
तुम्हें थकन भी गति दे जाये।

मन की साधें सब हों पूरी,
मंजिल चूमे चरण तुम्हारे।
भरो समय की मांग विहंसकर,
जब मानवता तुम्हें पुकारे।

भोर लुटाए कंचन तुम पर,
सांझ उदास न हो कोई भी।
सनापन छू सके न तुम को,
चाहे पास न हो कोई भी।

तुम्हें मिले अमरत्व धरा पर,
महाकाल खुद ही मर जाये।
नभ के चांद सितारों को भी
सारी उमर तुम्हें लग जाये।

३४८८ नारंग कालोनी
गली नं० १ त्रिनगर दिल्ली-३५

जाको जहँ स्वारथ सधे, सोहि ताहि सुहात।
चोर न प्यारी चांदनी, जैसे कारी रात॥

आचार्य भगवानदेव सांसद में

सिख धर्म मसीहा गुरुनानक नें इन्सानियत का पैगाम दिया
शैतान बसे रहें अच्छे उजड़ जाएं

आचार्य भगवान देव : सिख धर्म के जन्म दाता गुरु नानक देव जी थे। मर्दाना को ले कर वह इंसानियत का पैगाम देते हुए मक्का मदीना तक पहुंचे। बड़े बड़े राजा महा-राजा, सुल्तान और बादशाह उनकी प्रेम की वाणी को सुन कर प्रभावित हुए और सिख धर्म संसार में छा गया और प्रेम से छा गया। एक तो वे सन्त थे और दूसरे वह सन्त हैं जो आजकल स्वर्ण मंदिर में बैठे हुए हैं और जो शस्त्र ले कर शैतानियत करके शासन करना चाहते हैं। गुरु नानक देव जी के साथ वाला और मर्दाना दोनों गए थे। मैं गृह मंत्री जी को सुनाना चाहता हूं—क्योंकि बहुत प्रसिद्ध बात है। गुरु नानक ने उनको आशीर्वाद दिया, बसे रहो। जो अच्छे आदमी थे उनको कहा कि उजड़ जाओ। मुझे लगता है गृह मंत्री ने भी निश्चय कर रखा है कि शैतान स्वर्ण दिर मंमें बसे रहें, वहीं कैद रहें, जेल में रहेंगे तो उनको रोटियां खिलानी पड़ेंगी लेकिन मंदिर में रहकर कड़ाह प्रसाद वहीं का खाते रहें। परन्तु यह बात चलेगी नहीं।

सिन्धी गुरु ग्रन्थ साहब को मानते हैं, गुरुओं को मानते हैं। लेकिन वे कंघा दाढ़ी खंजर नहीं रखते, बाल नहीं रखते। यह प्रसिद्ध बात है कि पैसा गुरुद्वारों में अधिक सिन्धियों का चढ़ता है और—कड़ाह—प्रसाद सरदार लोग खाते हैं, क्योंकि सिन्धी व्यापारी लोग श्रद्धा से वहां पैसा चढ़ाते हैं। मैं सब सिखों की बात नहीं करता। लेकिन जो वहां बैठे हैं वे इस तरह की शैतानियत कर रहे हैं, जो उग्रवादी सिख हैं, उनकी बात मैं कर रहा हूं। सिंधियों की दिलों के चोट लग रही है।
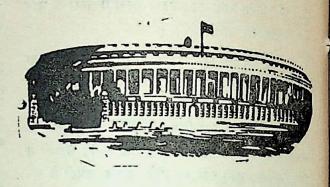
आचार्य भगवान देव : उस दृष्टि से नहीं कह रहा हूं। सिन्धी श्रद्धा से देते हैं।

दूसरी बात यह है कि आज उन लोगों की श्रद्धा गुरुद्वारे के प्रति ऐसे उग्रवादियों के कारण घट गई है, गुरुद्वारों में उन्होंने जाना बन्द कर दिया है। डेपुटेशन गृहमंत्री, प्रधान मंत्री और राष्ट्रपति जी से मिला भी है और उनसे कहा है उन्होंने कि हमारी श्रद्धा मत तोड़ो। वहां जो इस तरह के चन्द लोग बैठे हैं सिख भाइयों को चाहिये कि वे स्वयं पहल करें और गुरुद्वारे से इस प्रकार के तत्वों को निकालें। स्वामी जी वहां गये जिन्होंने यहां यह सवाल खड़ा किया और उन्होंने कहा की लोंगोवाल कहते हैं कि खालिस्तान हमको नहीं चाहिये। तो फिर क्या चाहिये ? उपाध्यक्ष जी, १९५६ से ले कर आज तक पंजाब की समस्या के साथ में भी जुड़ा हुआ हूं जब मास्टर तारासिंह और फतेह सिंह जी ने पंजाबी सूबा के लिये आन्दोलन चलाया। आर्य समाज की तरफ से भाषा के आधार पर जो हिन्दुओं की भाषा हिन्दी थी आर्य समाज ने आन्दोलन चलाया जिसमें गिरफ्तार कर के ४ दिन मुझे चंडीगढ़ जेल में रखा गया, उसके बाद साढ़े तीन महीने जालन्धर जेल में रहा। तब से मैं इस इतिहास को जानता हूं। परन्तु कुछ लोगों ने जो पंजाब के अन्दर परिस्थिति पैदा कर दी है, हिन्दू और सिख भाई जो सदियों से साथ रहे और हिन्दू धर्म की रक्षा के लिये जो बलिदान किया उसको मैं दोहराना नहीं चाहता, उस

दुख में सब सिमरिन करें, सुख में करे न कोय।
जो सुख में सुमिरिन करे, दुख काहे को होय ॥

आन्दोलन के आधार पर पंजाब का बटवारा हो गया। पंजाब गुरुमुखी भाषाभाषी होगा। तो फिर खालिस्तान की कौन सी बात रह गयी ?

जहां तक बात करने का सवाल है, यह विशेष घटना जो २६ अप्रेल को घटी, मरी हुई गाय की गर्दन मन्दिर में रख दी गई, प्रधान मंत्री ने उसी दिन तत्कालीन गृह मंत्री जैल सिंह को आदेश दिया और उनके साथ हमें भी भेजा, नारायण दत्त तिवारी जी को भेजा, और गिरधारी लाल जी को, जो सनातन धर्म के चेयरमैन हैं, उनको भेजा। हम विशेष प्लैन से वहां गये और उसी दिन रात को ६ बजे पहुंच कर ११ बजे मन्दिर और गुरुद्वारे पर गये। वहां जो स्थिति पैदा की अकाली उग्रवादी उसके लिये जवाबदार नही हैं, बल्कि दूसरे भी संकीर्ण साम्प्रदायिक विचारधारा वाले हैं जो होड़ में लगे हुए हैं। जो वहां पर हिन्दुओं के द्वारा जलूस निकालना चाहते हैं तो उसकी प्रतिक्रिया होती है जिसका प्रभाव पटियाला में भी पड़ा। और उस दिन जो झगड़ा हुआ, उसमें विस्तार से जाने का समय नहीं है, परन्तु वहां पर हिन्दू और सिख जो विदेशी ताकतों से मिल कर काम कर रहे हैं, और मुझे आक्षेप है सुब्रह्मण्यम स्वामी जी के ऊपर जो उन्होंने पंजाब की आग में घी डालने का काम किया है और उनकी प्रवृत्तियों पर हमें संदेह हुआ है कि उनकी गतिविधियां देश के लिये खतरनांक साबित होंगी। उनका सम्बन्ध जिन जिन लोगों के साथ है, चाहे गंगा सिंह हो, अजीत सिंह हो चाहे लाल डेंगा और फीजी का लन्दन वाला गठबन्धन हो और उसके साथ उनकी क्या सांठगांठ चल रही है, वहां यह जा सकते हैं और कोई नही जा सकता है। मैं पूछना चाहता हूं लोंगोवाल ने फरमान निकाला वहां पर कोई बन्दूक नहीं रख सकता। २४ घंटे में ही लोंगेवाल को वह वक्तव्य वापिस लेना पड़ा। क्या चलती है उसकी स्वर्ण मन्दिर में ? कुछ नहीं। वहां लोंगोवाल कुछ कहता है, तलवन्डी कुछ कहता है, बादल कुछ कहता है। किस पर विश्वास किया जाय ? धर्म के स्थान पर शैतानियत का काम हो रहा है। और आप जो वयान दे रहे हैं, मैं बागड़ी जी को बधाई देता हूं उन्होंने उसी समय उनको टोका, क्योंकि इस तरह प्रोत्साहन देना देश के साथ गद्दारी है, देशद्रोही है। जो पंजाब का बटवारा हुआ, हरियाणा का हुआ, और यह भी बता दूं अकालियों को प्रोत्साहन जनता पार्टी के समय दिया गया, क्या यह बात सच नहीं है कि १९७७ में जो पंजाब सरकार ने हरियाणा सरकार से आपस में पानी के सम्बन्ध में समझौता किया, और हरियाणा ने पैसा भी दिया, श्री बादल ने उसको स्वीकार भी किया, और आज वही बादल उस नहर को खुदवाने के लिये बाधा खड़ी करना चाहते हैं। इस तरह के शैतानों को प्रोत्साहन नहीं दिया जा सकता। चन्द लोग भारत के भाग्य के साथ खिलवाड़ नहीं कर सकते।

किसने दरवाजा बन्द किया भारत सरकार से बात करने के लिये ? प्रधान मंत्री के पास प्रातःकाल से ले कर शाम तक प्रतिनिधि मंडल मिलते रहते हैं। हर वार बुलाया गया है, बातचीत होती रही है प्रधान मंत्री की, गृह मंत्री की...

Shri Harikesh Bahadur: Mr. Deputy speaker, Sir, derogatory remarks have been used against Shri Badal. He has been called** This should not form part of the record.

Mr. Deputy Speaker :—I will go through the record.

आचार्य भगवान देव : प्रधान मंत्री और गृह-मंत्री ने कभी भी कोइ दरवाजा बन्द नहीं किया, हमेशा बात के लिये बुलाया। बात किस बात पर करनी है ? यह ठीक है, कि राजनीति में दांव पेंच खेला जा रहा है, कोई नहर का या जमीन का मामला नहीं है।

इन्द्रवेश जी ने कहा कि वहां खालिस्तान बनायेंगे। यहां भगतसिंह ने जो शहादत दी थी "भारत मां की जय" कहकर, क्या इसलिये कि खालिस्तान बनेगा ? क्या वह सिख नहीं था ? यह अलग बात है कि बाद में वह आर्य समाजी बन गये और उसके चाचा अजितसिंह सरदार थे, दारा सिंह जो उसके चाचा थे, लालालाजपतराय आर्य समाजी नेता, हिन्दुओं के नेता ने देश को मिलाकर आजादी प्राप्त की। क्या इसलिए कि आगे चलकर ऐसे देश का बटवारा करायेंगे ?

पौड़ी है निज ज्ञान की, भूमण्डल में एक।
प्रभु ज्ञान की टेक से, चढ़ गये सन्त अनेक॥

तलवन्डी, बादल और जरनैलसिंह दिल्ली की तरफ देखते हैं, शरारत करते हैं, उनका ध्यान कभी रावलपिंडी की तरफ क्यों नहीं जाता जहां के लिए उनको पासपोर्ट लेना पड़ता है ? हिन्दुस्तान की राजगद्दी और बड़े से बड़ा दर्जा ज्ञानी जैल सिंह को दिया जो कि सरदार हैं । इस पार्लियामेंट को चलाने का काम संसदीय कार्य मंत्री श्री बूटासिंह के पास है जिसके आधार पर यहां कार्य बनता है । रिजर्व बैंक का गवर्नर एक सिख को बना दिया, एयरफोर्स का जनरल एक सिख को बना दिया । हम सारे हिन्दुस्तान का तख्त और ताज सिखों को देना चाहते हैं, उनको जिनमें योग्यता हो, जो देशभक्त हों । गद्दारों को प्रोत्साहन नहीं मिल सकता । ये कुएं के मेंढ़क बनना चाहते हैं । ये सावधान हो जायें, हिन्दुओं को झंझोड़ने की कोशिश न करें । एक बात हमारे विरोधी भाई ने कही कि वीरेन्द्र जी जो पुराने कांग्रेसी हैं, मेरी उनसे बात हुई है । वह मजबूर हो गये हैं कि उन्हें अनशन करना पड़ेगा ।

मैं गृह-मंत्री से कहना चाहता हूं कि अगर वीरेन्द्र जी ने अनशन किया तो पंजाब की स्थिति विचित्र बन जायेगी । उस पर ध्यान देना पड़ेगा । मैं इस हाउस के माध्यम से उनसे प्रार्थना करता हूं, वह मेरे दोस्त हैं, ३० साल से साथ काम कर रहे हैं, कि वह इस तरह का कदम न उठायें । आप भी उनको विश्वास दिलाइये कि जो पटियाला में हुआ है, उस कांड पर जो वहां की जनता चाहती है, उसको संतोष देने के लिए आप वहां जाइये । गृह-सचिव वहां गये, उन्होंने अच्छा पार्ट अदा किया है । मेरी प्रार्थना है कि आप भी जाइये और उनको आश्वासन दीजिये । आर्यसमाजियों की पंजाब में बहुत बड़ी शक्ति है, गांव-गांव में आर्य समाजी हैं, 48 प्रतिशत हिन्दू पंजाब में हैं, उनकी अपेक्षा नहीं कर सकते हैं । यदि आर्यसमाजी बिगड़ गये तो स्थिति विचित्र बन जाएगी । वह बिगडेंगे नहीं, यह हमें विश्वास है, परन्तु वीरेन्द्र जी को आपको आश्वासन देना पड़ेगा कि इस तरह का कोई कदम नहीं उठाइये जिससे हिन्दू और सिख आपस में युद्ध करें, कत्ले आम करें और खून की नदियां न बहें, पंजाब की नदियों में हिन्दू और सिखों का खून न बहे, इस बात की तरफ आपको ध्यान देना पड़ेगा ।

जहां तक चण्डीगढ़ का सवाल है, उसके बारे में मैं कहना चाहता हूं कि उसको केन्द्रशासित रहने दिया जाये । आप इसकी स्पष्ट घोषणा कीजिये । यदि आपने कोई कदम उठाया तो हरियाणा में असंतोष पैदा हो जायेगा । हिमाचल का भी तो अधिकार है, पानी का वहां भी झगड़ा है । आपको इसका भी फैसला करना पड़ेगा ।

चण्डीगढ़ की प्रजा से आप अभिप्राय मांगिये और लोकशाही से जो अभिप्राय वह दें उस आधार पर चण्डीगढ़ का आप फैसला कीजिये ।

एक बात अन्त में मैं यह कहता हूं कि वहां जो स्थिति आज है, वह बहुत भयंकर है और विचित्र है । उसको संतोष दिलाने के लिए आग को बुझाने के लिए एक ही मार्ग मेरी दृष्टि में है । संसद कल समाप्त हो रही है, परसों के बाद कोई भी दिन आप निश्चित कर लें । लोक-सभा के स्पीकर माननीय श्री बलराम जाखड़, जो इस सदन के नेता हैं, जिसमें सब पार्टी के लीडर हैं, उनके नेतृत्व में सारी पार्टी के लीडर हम सब साथ मिल कर चण्डीगढ़ चलें शांति और अहिंसा का कारवां बनाते हुए स्वर्ण मंदिर में जायें । हम चाहते हैं कि वहां गुरु साहब का पाठ सुनें, गुरु वाणी का पाठ सुनें और वहां का कड़ाह प्रसाद खाकर प्यार का कारवां बनायें ।

हिन्दू सिखों के बीच में, जो एक मां बाप की औलाद है उनमें बंटवारा न हो । उसके लिये हर संभव कोशिश की जाये और मेरी प्रार्थना है कि आप विचार कर निर्णय करें कि लोक-सभा के स्पीकर के साथ हम सब पार्टी के लीडर एक जलूस बनाकर पैदल शांति कूच करते हुए चण्डीगढ़ पहुंचें । अगर मेरी इस प्रार्थना पर ध्यान देंगे तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि प्यार के कारवां के सामने उन शैतानों के सिर झुक जायेंगे और हिन्दुस्तान अखंड रहेगा । ★

माया मेरे ईश की, धरणीधर को देह ।
पूंजी सच्चे शाप की यश अपना कर लेह ।।

आचार्य भगवानदेव सांसद में

विरोधी, अन्धकार में भटक रहे हैं
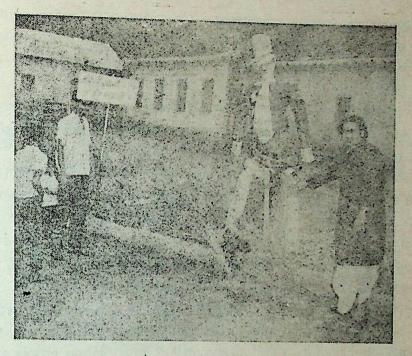
राजकोट में अंग्रेजी का पुतला जलाते हुए आचार्य भगवानदेव सन् १९६४

आचार्य भगवान देव ने संसद में पंजाब स्थिति पर अपने भाषण में विरोधी दलों के नेताओं को लताड़ते हुए कहा कि—

सभापति महोदय : अभी मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी, भारतीय जनता पार्टी, जनता पार्टी और लोकदल, परलोक दल वालों ने जो बात की यहां पर ? इनका एक भी प्रतिनिधि पंजाब में नहीं है। वह भी यहां पर चिल्ला-चिल्लाकर बोलते हैं तो इनकी बुद्धि पर बड़ा तरस आता है। मुझे ऐसा लगता है कि अन्धकार में भटक रहे हैं।

आचार्य भगवानदेव :—सभापति महोदय, डी. एम. के. का प्रतिनिधि तो पंजाब में नहीं है। (व्यवधान) डी० एम० के० के जो मेम्बर हैं उनका तो कोई भी प्रतिनिधि पंजाब में नहीं है। उस व्यक्ति का और उन पार्टियों का पंजाब में एक भी प्रतिनिधि नहीं।

आचार्य भगवान देव :— मैं पंजाब के बारे में ही बात कर रहा हूं। मैं यह कहना चाहता हूं कि जिन पार्टियों का कोई प्रतिनिधि वहां नहीं है, जिन लोगों ने चाहे वह बंगाल वाले हों चाहे डी. एम. के. वाले हों चाहे वह कभी पंजाब गए भी न हों (व्यवधान)

सभापति महोदय :—आप पंजाब के बारे में बात करें।

आचार्य भगवान देव—मैंने कोई ऐसी बात नहीं की, मैंने कहा कि, ये कभी वहां गए भी नहीं है। इसमें कोई असंसदीय बात नहीं है ? क्यों परेशान हो रहे हैं ? ये तो आसाम में घुस गए, रामाराव की बात करने लग गए। (व्यवधान)

आचार्य भगवानदेव :—सभापति महोदय, इसमें कोई असंसदीय बात नहीं है। मैं यह कह रहा हूं कि जो लोग वहां कभी गए नहीं वह लोग भी जब इस प्रकार की बात करने लगते हैं तो सच्चाई से भटक जाते हैं।

गृहमन्त्री जी ने एक साल का समय बढ़ाने के बारे में संशोधन विधेयक पेश किया है। उसमें इन लोगों द्वारा कारण पूछा गया है—मैं कहना चाहता हूं कि क्या इनको कारण का पता नहीं है। अभी भी वहां पर स्कूल जलाए जा रहे हैं, लोगों को मारा जा रहा है। विदेशों में सम्मे-

सत्य बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके मन में सत्य है, ताके मन में आप॥

लन हो रहे हैं और वहां पर अभी भी तथाकथित वेतन भोगी ग्रन्थी हैं, उन्होंने भी चेतावनी दी है कि स्वर्ण मन्दिर में जो पवित्र कार सेवा में हजारों लोग लगे हुए हैं, उसको हम तोड़ेंगे। उनकी इस चेतावनी के पीछे क्या राज छिपा हुआ है यदि उस बात को सुनकर विरोधी पार्टी के लोग अन्दाजा नहीं लगा सकते हैं कि समय क्यों बढ़ाया जा रहा है। विरोधी पार्टी के नेताओं ने हमेशा यह मांग की है (व्यवधान) कार सेवा के लिए कह रहा हूं (व्यवधान) तरस तो खा रहा हूं इनकी बुद्धि पर (व्यवधान) वहां पर तोड़-फोड़ का कार्य चल रहा है और विरोधी दल के लोगों ने यह मांग की थी कि वहां पर प्रशासन तन्त्र के ढांचे के अन्दर परिवर्तन लाया जाए। वहां पर अकाली दल की हकूमत थी, तब उन्होंने नियमों को ताक पर रख कर लोगों की नियुक्तियां की थीं। उसमें सुधार करने के लिए समय की बहुत बड़ी आवश्यकता है। परिवर्तन कोई एक झटके में नहीं होता है। परिवर्तन किया जाता है तो संसद में बिल लाकर और सब के विचार लेकर और बहुमत के आधार पर निर्णय लिया जाता है।

अभी हमारी बहन, श्रीमती प्रमिला दण्डवते, जी ने कहा कि मैं वहां पर होकर आई हूं। वाजपेयी जी भी वहां अपने साथियों को लेकर हो आए हैं। मैं कहना चाहता हूं कि यदि वहां पर मिलिटरी द्वारा सख्त कार्यवाही नहीं की जाती तो क्या वे वहां जरनैल सिंह के होते जा सकते थे। वहां माथा टेक सकते थे, मन्दिर के दर्शन कर सकते थे, बिल्कुल नहीं कर सकते थे। अभी बहन ने कहा कि मैं वहां पर बहन से मिली। मैं पूछता हूं कि किस बहन से मिली, किस बच्चे की मां से मिली। जब वहां अटवाल को मार दिया गया, तो उनकी पत्नी से मिलकर आई उस वक्त क्या स्थिति थी जब लाला जगत नारायण को मार दिया गया उस वक्त परिवार में क्या स्थिति थी ? आज जिन लोगों से उनको मिलना चाहिए, उनसे वे नहीं मिलीं और यहां कहती हैं कि वहां सख्त कार्यवाही क्यों की गई। मेरे पास रिपोर्ट है, वाजपेयी और चौ० चरणसिंह जी व्यक्तिगत लोगों में कहते हैं कि श्रीमती इन्दिरा गांधी ने बड़ी बहादुरी से काम किया है, यह फौजी कार्यवाही करके। पंजाब में अब शान्ति हुई है, लेकिन अभी भी पूर्णरूप से नहीं हुई है। हकीकत यह है कि स्थिति सुधरी है, लेकिन सुधार और जरूरी है। प्रशासन में बहुत परिवर्तन लाना है। कुछ अन्तर्राष्ट्रीय तत्व वहां मौजूद हैं। उनको हटाना है। राष्ट्र विरोधी तत्व जो बाहर घूम रहे हैं तोड़-फोड़ कर रहे हैं उनके ऊपर भी कार्यवाही करने की आवश्यकता है। इसलिए इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए समय बढ़ाना अति आवश्यक है।

इसलिए मैं विरोधी पार्टी के लोगों से भी प्रार्थना करता हूं, जैसी कि आप लोग मांग कर रहे थे कि प्रशासन के अन्दर परिवर्तन लाइए तो इस काम के लिए स्वाभाविक है कि समय लगता है और उसके लिए समय देना चाहिए।

श्री अटल बिहारी बाजपेयी : कितना समय चाहिए।

आचार्य भगवानदेव : यह आपको पता है। सरकारी अधिकारी को बदलने में कितना समय लगता है। वाजपेयी जी यदि आपको पता नहीं है, तो मैं आपको क्या कहूं।

इन शब्दों के साथ मैं इस बिल का समर्थन करता हूं और आग्रह करता हूं कि जब तक वहां पर सामान्य स्थिति पैदा न हो तब तक समय बढ़ाना उचित है। वैसे हमारी सरकार का वहां बहुमत है। कांग्रेस एम. एल. एज. अधिक हैं, फिर इनको क्यों परेशानी हो रही है। हम जो चाहें, जैसा चाहें लोकतन्त्र के आधार पर कर सकते हैं। इन शब्दों के साथ में इस बिल का समर्थन करता हूं।

★□★

सत्य सदा तुम राखियो, धन जावे तो जाय।
सत की बांधी लक्ष्मी, फेर मिलेगी आय॥

संसद में आचार्य भगवानदेव

तस्करी अन्तर्राष्ट्रीय चन्द सफेदपोश डाकू कर रहे हैं

टाटगढ़ में चिकित्सा शिविर का उद्घाटन करते हुए आचार्य भगवानदेव सन् १९८२

अजमेर लोकसभा क्षेत्र के सांसद आचार्य भगवान देव : उपाध्यक्ष महोदय मैं विदेशी मुद्रा संरक्षण तथा तस्करी निवारण (संशोधन) विधेयक १९८४ का समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ हूं। तस्करी का कार्य अन्तर्राष्ट्रीय चन्द सफेद पोश डाकू कर रहे हैं। इसका प्रभाव हर मुल्क की अर्थव्यवस्था पर और उसकी सुरक्षा व्यवस्था पर पड़ रहा है।

अभी विरोधी पार्टियों के लोगों ने यह बात कही कि जो तस्करी करने वाले लोग हैं उनके साथ सख्ती से बर्ताव किया जाये। मैं कहना चाहता हूं कि यह जो संशोधन हो रहा है वह इसीलिए हो रहा है। इससे पूर्व सन् १९७४ में कांग्रेस सरकार ने ही इस तरह का बिल पास किया था। इसके बाद चूंकि हमारी अर्थव्यवस्था पर हमारी रक्षा व्यवस्था पर इसका प्रभाव पड़ रहा था इसलिए श्रीमती इन्दिरा गांधी ने ही एमरजेंसी में सारे स्मगलर्स को, चोर, डाकुओं, और संग्रहखोरों को जेलों में बन्द किया था। इसके बाद इन लोगों ने, मधु दंडवते जी ने जयप्रकाश नारायण का नाम लिया उनके सामने इन सब तथाकथित नेताओं ने उन तमाम तस्करों को खड़ा कर दिया, खादी की टोपी पहन करके खड़ा कर दिया और कह दिया कि ये नेता बन गए, धर्मात्मा बन गये। ये ईमानदार के बेटे बन गए। उनके बारे में कह दिया जो कि दिन-रात देश को चूसते थे। यह सारे अपराध इन लोगों ने किये। चाहे हाजी मस्तान हो, चाहे युसुफ पटेल हो, चाहे बखिया हो, एमरजेंसी के अन्दर श्रीमती इन्दिरा गांधी ने सबको बन्द किया। क्या ये इस बात को भूल गए हैं।

आज ये लोग कहते हैं कि उत्तर प्रदेश के अन्दर एक एम. एल. ए. ने ऐसा किया। मैं पूछना चाहता हूं इन पार्टियों के लोगों से क्या यह कांग्रेस की सरकार नहीं थी जिसने कि एम. एल. ए. को भी अपराधी पाकर गिरफ्तार किया और उसे जेल में बन्द कर दिया? इस बात के लिए ये हमारी सरकार को दाद क्यों नहीं देते? अगर हमारी पार्टी में कोई अपराधी गद्दार है या अपराधी है तो हम उसे नहीं छोड़ते हैं।

ये कहते हैं कि मंत्री ने पत्र लिखा कि सख्ती करो और वहां पर चन्द लोग गिरफ्तार हुए। जब भिवण्डी में कांड हुआ, उसके दो-तीन महीने पहले कुछ लोग गिरफ्तार हुए। उनमें कुछ तस्कर भी गिरफ्तार किये गये जिनको कि छोड़ दिया गया।

मैं इन पढ़े लिखे लोगों को क्या कहूं। बुद्धि का ब्रह्मचारी कहूं या क्या कहूं। आज तो तस्कर दो-तीन महीने पहले गिरफ्तार हुए हैं वे इसलिए गिरफ्तार हुए हैं कि वहां

सत्य धर्म सब से बड़ा, सत जो जाने बोल।
झूठ कहे हो सेठ भी, दो कौड़ी का मोल॥

पर साम्प्रदायिक दंगों में उनको सम्बन्धित पाया गया। इनको तस्करी में नहीं पकड़ा गया था। जो लोग तस्करी में पकड़े गए हैं उन पर केस चल रहे हैं। कई लोग बन्द हैं। आज ये कहते हैं कि हाजी मस्तान को साम्प्रदायिक दंगों के सम्बन्ध में पकड़ा गया था। वे उन दंगों से संबंधित थे। उन पर और शिव सेना के लोगों पर कार्यवाही हो रही है। इनको इस बात की दाद देनी चाहिए कि हम कार्यवाही कर रहे हैं। लेकिन ये इस तरह की बात कर रहे हैं। यह कानून क्यों लाया गया है, इसलिए कि उनसे सख्ती से निपटा जाये क्योंकि देश की अर्थव्यवस्था पर उनका बड़ा प्रभाव पड़ता है।

उपाध्यक्ष महोदय, एक बात मैं और कहना चाहता हूं। तस्कर लोग माल ले आते हैं, कम या ज्यादा, उसकी यहां चर्चा भी होती है लेकिन यहां जो व्यक्ति बैठे हुए हैं और देशभक्ति का दावा करते हैं, वे यहां से विचार ले जाकर पड़ोस के पाकिस्तानी तानाशाह को पहुंचाते हैं और उनके विचार यहाँ लाते हैं। यह बहुत बड़ी भयंकर तस्करी है जो विरोधी पार्टी के तमाम लोग कहते हैं। आज ये यूसुफ पटेल का, हाजी मस्तान और बखिया का नाम ले रहे हैं। विरोधी पार्टी के लोग सुब्रह्मण्यम स्वामी, जिन्होंने चर्चा को शुरू किया, मैं उनसे पूछना चाहता हूं कि सैनिक तानाशाह के पास, जहां लोकशाही स्थापित नहीं की गई है, उनके पास जाने का क्या कारण था। जार्ज फर्नान्डीज यहां बैठे हुए हैं। ये भी सैनिक तानाशाह से मिलने गए थे। बीजू पटनायक, राम जेठमलानी, ये सब उनसे मिले हैं। यह भयंकर राजनीतिक तस्करी हो रही है। इलैक्ट्रानिक्स और सोने-चांदी की तस्करी से ज्यादा भयंकर यह राजनीतिक तस्करी है।

उन तस्करों को बचाने का काम कौन कर रहा है। विरोधी पार्टी के लोग कहते हैं कि उनकी रूलिंग पार्टी के, कांग्रेस (आई) पार्टी के लोग मदद कर रहे हैं। मैं दावे के साथ कहता हूं कि सारे हिन्दुस्तान के पढ़े-लिखे लोगों से, किसी नौजवान व्यक्ति से पूछिए कि स्मगलरों का वकालत करने वाला वकील कौन सा है तो हर व्यक्ति यही कहेगा कि राम जेठमलानी भारतीय जनता पार्टी के वे ही उनकी वकालत करते हैं और उनको छुड़ाते हैं। इन लोगों ने जार्ज फर्नान्डीज वगैरह ने जनता पार्टी के शासन में। इसका प्रमाण हमारे पास है। अगर आप समय दें तो मैं बता सकता हूं कि ये कब उनसे जाकर मिले और क्या कार्यवाही हुई। उपाध्यक्ष महोदय, समय बहुत कम है। इसलिए मैं अब कुछ सुझाव देना चाहता हूं।

पहला सुझाव यह है कि जो व्यक्ति पकड़े जाते हैं, उनके बारे में भाषा की समस्या आती है। कोर्ट में केस चलता है और वे छूट जाते हैं क्योंकि वो अरबी, फारसी भाषा के होते हैं। इसलिए मेरा सुझाव है कि भारत सरकार इस तस्करी को रोकने के लिये विशेष अदालतों की व्यवस्था करे और इसके अन्दर जैसा कि माननीय सदस्य ने सुझाव दिया है, हिन्दी और अंग्रेजी की उनको वहां पर सुविधा दी जाए।

दूसरी बात है कि जो पार्लियामेंट के मेम्बर हैं, अगर वे उनकी वकालत करने के लिए फार्म पर हस्ताक्षर करते हैं तो उनको पार्लियामेंट का मेम्बर नहीं बनने दिया जाए। चाहे वे जेठमलानी जी हों या हमारी पार्टी के कोई व्यक्ति हों। इसके अलावा आयात-निर्यात की नीति के बारे में भी व्यावहारिक कदम उठाने की आवश्यकता है।

इसके अलावा कस्टम अधिकारियों को जो सुविधाएं दी जाती हैं वे अपर्याप्त हैं। राजभाषा समिति के तहत जांच करने का मौका मिला है। उनके पास पूरे साधन उपलब्ध नहीं हैं। अच्छे हैली काप्टर नहीं हैं। सरहद पर जीपों और ऊंटों की उचित व्यवस्था नहीं है। अच्छे स्टीमर नहीं हैं और आधुनिक साधनों की कमी है जिससे वे उनको पकड़ने में सशक्त नहीं हो पाते हैं। इन साधनों को लाना आवश्यक है।

इसके अलावा हमने देखा है कि कस्टम अधिकारी किन मुश्किलों में काम करते हैं किन परिस्थितियों में ये इन शैतानों के साथ रात-दिन मौत से खेलते हैं। इनको रिहायश की पूरी सुविधा भी दी गई है। मैं मन्त्री महोदय से जानना चाहता हूं कि क्या वे हुडको इत्यादि के द्वारा उनके लिए रिहायशी कालोनियों का निर्माण कराएंगे।

विशेष अदालत के अभाव में किसी भी कानून का लाभ होने वाला नहीं है। इस बारे में मन्त्री महोदय बताएं और इन शब्दों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं और इस बिल का हृदय से समर्थन करता हूं।

सतियो सत्य न छोड़ियो, सत छोड़े मत जाए ॥
सत के कारण जो मरे, अमर लोक को पाय ॥

साम्प्रदायिक दंगे करने वालों को जेलों में बन्द करें—आचार्य

राजस्थान सिन्धी अकादमी द्वारा आचार्य जी को "सिन्धी रत्न" की उपाधि से सम्मानित करते हुए श्री इन्द्र इसरानी जी (१९८३)

आचार्य भगवानदेव (अजमेर) : सभापति जी, साम्प्रदायिक दंगों के ऊपर चर्चा हो रही है। मुझे इतिहास याद आता है और याद आते हैं काकोरी षड्यन्त्र केस के अमर शहीद अशफाक उल्ला खां और अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल। इसी सन्दर्भ में एक साम्प्रदायिक दंगा हो गया था और ये दोनों नौजवान स्थानीय आर्य समाज मन्दिर में बैठे हुए थे। कुछ साम्प्रदायिक मुसलमान शैतान आर्य समाज मन्दिर पर हमला करने के लिए आगे बढ़े। जब अशफाक उल्ला खां ने देखा कि कुछ साम्प्रदायिक व्यक्ति आर्य समाज मन्दिर पर हमला करने के लिए आए हैं तो तुरन्त ही उन्होंने रिवाल्वर निकाला और बाहर निकल आए और एक मुसलमान होते हुए भी उन्होंने मुसलमानों को ललकार कर कहा कि यह इबादत का स्थान है, इस पर हमला किया तो गोली से भून दूंगा। उन साम्प्रदायिक शैतानों की हिम्मत नहीं पड़ी और वे वहां से चले गए। तब तक इस देश के अन्दर हिन्दू-मुसलमानों में एक-दूसरे के धर्म के प्रति, एक दूसरे के ग्रन्थों के प्रति, एक दूसरे की मान्यताओं के प्रति, इस तरह की एक विचारधारा पैदा

काम क्रोध को वश करें, वे ही बड़े उदार।
सत धारें व्रत को सदा, दया दीन उपकार॥

नहीं होगी तब तक झगड़े चलते रहेंगे। कौन चाहता था कि देश का बटवारा हो। महात्मा गांधी, पं० जवाहर लाल नेहरू कहते थे कि हमारी लाश पर पाकिस्तान बनेगा। परन्तु साम्प्रदायिक शैतान अंग्रेजों के जास में फंस गए और देश का बंटवारा हुआ और उससे जो फूट पड़ी उसके बीज अभी तक पनपते जा रहे हैं। उसको जड़ से निकालने के लिए हमें बड़ी कुर्वानी करनी पड़ेगी। यह एक लम्बा इतिहास है लेकिन मेरे पास समय थोड़ा है। मेरे जीवन का यह अनुभव है कि संकीर्ण साम्प्रदायिक विचार-धारा रखने वाले लोग जिस मोहल्ले में रहते हैं, चाहे हिन्दू हों या मुसलमान, ये अपनी चौधराहट के लिए इस प्रकार के फसाद वहां पर कराते हैं। हैदराबाद की बात कही गई है। हैदरावाद में भी एक साम्प्रदायिक शैतान व्यक्ति मुसलमानों में भी और हिन्दुओं में भी है। एक तो भारतीय जनता पार्टी से सम्बन्धित है और दूसरा एक मुस्लिम पार्टी से सम्बन्धित है। इनके नाम मैं दे सकता हूं। वे अपनी महत्वाकांक्षा और चौधराहट चलाने के लिए, राजनीतिक लाभ के लिए हिन्दू-मुसलमानों को लड़ाते रहते हैं।

वाजपेयी जी ने यहां पर साम्प्रदायिकता की बात की और यहां पर एन. टी रामाराव की रामायण लेकर बैठ गये। हास्पिटल में पड़ा है, उसकी करुणामय स्थिति है और वह मरण-जीवन के झूले पर झूल रहा है। पता नहीं वे क्या-क्या बातें लेकर बैठे हैं। आल इन्डिया लेवल पर पोलिटिकल पार्टी के इतने बड़े लीडर और यहां बात कर रहे हैं साम्प्रदायिकता पर। वे चले गए हैं, मैं चाहता था कि वे यहां पर होते।

समय कम होने की वजह से मैं ज्यादा बात नहीं कहूंगा। सभापति जी, पंजाब के अन्दर जो झगड़ा हुआ, उसके बारे में आपको बताता हूं। २५ अप्रैल, १९८१ की बात है। एक मरी हुई गाय की गर्दन लाकर मन्दिर में रख दी। दूसरे दिन २६ अप्रैल, १९८१ को भारतीय जनता पार्टी के वहां के एम. एल. ए., जो जनता पार्टी के टाइम में थे। मैं नाम ले रहा हूं।...व्यवधान उस व्यक्ति ने अपने आर. एस. एस. के जवानों को लेकर, भारतीय जनता पार्टी के लोगों को लेकर सिखों के घरों दुकानों को जलाया। जिसका रिएक्शन हुआ। कश्मीर की बात पर जरनैलसिंह की बात कही गई। रशीद मसूद साहब, चौ० चरणसिंह की पार्टी के लोग सिर्फ इस्लाम पर बोल गए। ये दुहाई देना चाहते हैं बिन साम्प्रदायिकता की और यहां पर जरनैलसिंह की बात कही। क्या दुनिया नहीं जानती कि जरनैलसिंह को विदाई देने में किस पार्टी ने मदद की, किसने क्या काम किया। यदि श्रीमती इन्दिरा गांधी वहां पर फौजी कार्यवाही नहीं करती तो वहा पर अभी भी जरनैल सिंह की गतिविधियां वहां पर चालू रहतीं। इसके करने के बाद काश्मीर में जलूस निकाला गया। उस जलूस को निकालने के लिए फारूख साहब की सरकार ने सारा काम किया। वहां आर्य समाज के मंदिर को जला दिया गया। वहां निरंकारी के मंदिर को जलाया गया। हनुमान के मन्दिर को जलाया गया। वह आर्य समाज का विद्यालय जो २० साल से वहां पर काम कर रहा है, स्त्री शिक्षा के लिए उस पवित्र विद्यालय की बिल्डिंग को भी जला दिया गया। इस तरह की गतिविधियां करने वाले, पाकिस्तान जिंदाबाद का नारा लगाने वाले, साम्प्रदायिकता को प्रोत्साहन देने वाले, ऐसे लोगों से गले मिलकर वाजपेयी जी स्वागत करते हैं। इससे उनकी साम्प्रदायिकता और बिन-साम्प्रदायिकता की नीति की कलई खुल जाती है।

उन्होंने अपने भाषण में एक और बात कही है, इस देश का जो बंटबारा हुआ है, वह दो कामों के आधार पर हुआ है। इनके कहने का मतलब यह था कि हिन्दुओं के लिए ही हिन्दुस्तान है। मतलब दूसरे काम को यहां से विदाई दे देनी चाहिए। जब साम्प्रदायिक लोगों ने उन पर प्रतिबन्ध लगाने की बात कही है। यहां पर श्री अटल बिहारी वाजपेयी साम्प्रदायिक संगठन का नाम नहीं लेते कि कौन से साम्प्रदायिक संगठन पर प्रतिबन्ध लगाया जाए और किस को यहाँ से निकाला जाए।

आचार्य भगवान देव : सभापति जी, जिस साम्प्रदायिक संगठन पर वाजपेयी जी ने प्रतिबन्ध लगाने की बात कही है, यदि वे उसका नाम ले लेते तो उसकी भी कलई खुल जाती। भिवण्डी की बात पर श्री राजदा जी ने भी कहा है। मैंने वहां स्वयं जाकर जांच की है। मैं दावे के

सत्य हीन पूजा बृथा, सत्य हीन नहीं तप।
सत्य बिना नहीं दान है, सत्य बिना नहीं जप॥

साथ कह सकता हूं कि चीफ मिनिस्टर ने बड़ी ईमानदारी के साथ तुरन्त कार्यवाही की है। कहा गया कि हैलीकाप्टर में घूमते रहे। उन्होंने वहां स्वयं जाकर वहां की कार्यवाही को देखा है। प्राइम मिनिस्टर वहां पर गईं और हमारी पार्टी के महासचिव, श्री राजीव गांधी जी वहां गए। वहां के सारे वर्कर्स गए और सब सम्प्रदाय के लोगों को मदद दी। वहां उनको मकान बनाकर दिए। भारतीय जनता पार्टी के लोगों से मैं पूछना चाहता हूं कि आपके वर्कर्स जो भी वहां ले जाते हैं, वे एक विशेष समुदाय के लोगों की मदद करते हैं, न कि सारे सम्प्रदाय के लोगों की मदद करते हैं। ये लोग कहते हैं कुछ और करते कुछ हैं। यहां पर शिव सेना के बाल ठाकरे की बात भी कही गई। क्या कारपोरेशन के अन्दर जनता पार्टी और भारतीय जनता पार्टी के लोगों ने शिव सेना से मिलकर अपनी हकूमत नहीं चलाई। क्या यह बात सही नहीं है कि १८ अगस्त को आज से दस दिन बाद वहां पर एक सम्मेलन हो रहा है। भारतीय जनता पार्टी की बैटरी कानपुर में चार्ज होती है, आर. एस. एस. के हैड, देवरस जी ने वहां पर मीटिंग बुलाई है। उस मीटिंग के अन्दर शिव सेना के अध्यक्ष बाल ठाकरे भी शामिल होने वाले हैं।

इनकी भारतीय जनता पार्टी के जो पहले जनसंघी अध्यक्ष थे—बलराज मधोक—ये सारे वहां इकट्ठे होने वाले हैं और ये वहां पर हिन्दू संगठन बनाएंगे। एक सब्बरवाल हैं, जो पहले जालन्धर से जनसंघ के एम. एल. ए. थे, वह भी उसको अटेण्ड करने वाले हैं। आज इनकी कथनी और करनी में बड़ा फर्क है। यह बहुत लम्बा-चौड़ा विषय है, इसलिए समय की कमी के कारण अब मैं कुछ सुझाव गृहमन्त्री जी को देना चाहता हूं—

पहली बात तो यह कि जो भी सम्मेलन होते हैं, समारोह होते हैं—यह कहना कि शिवाजी जयन्ती जुलूस क्यों निकलने दिया, इस देश में कांग्रेस के राज्य में हर सम्प्रदाय और मजहब को अपने फंक्शन मनाने का हक है, लेकिन सबको उनमें शामिल होना चाहिए। अगर शिवाजी जयन्ती में मुसलमान भी भाग लेते तो क्या वह काण्ड हो सकता था? इसी तरह से मुसलमानों के जो त्यौहार होते हैं, जैसे ईद है उनमें हिन्दुओं और दूसरी जातियों को भी भाग लेना चाहिए। इस तरह का माहौल हर पार्टी को खड़ा करने की कोशिश करनी चाहिए।

पुलिस में सुधार की आवश्यकता है। जो पुलिस के उच्च अधिकारी हैं वे दूसरे प्रांतों के होने चाहिए, एक ही प्रान्त के न हों, बल्कि दूसरे प्रांतों के भी होने चाहिए।

जो साम्प्रदायिक साहित्य प्रकाशित होता है उस पर प्रतिबन्ध होना चाहिए।

मैं एक बात और कहना चाहता हूं—इमरजेन्सी में ये जितने स्मगलर्स थे, जैसे हाजी मस्तान का नाम लिया गया, दूसरे बदमाश थे उन सबको श्रीमती इंदिरा गांधी के राज्य में जेलों में बन्द कर दिया गया था जिससे दंगे, चोरी और फिसादाद बन्द हो गए थे। लेकिन जैसे ही जनता पार्टी का टाइम आया उन सब को गांधी टोपी पहनाकर, देवता का सर्टिफिकेट देकर, बाहर निकाल दिया गया। ये ऐसे लोग हैं जो देश में अराजकता लाने की कोशिश करते हैं। इस तरह के तत्वों को तुरन्त जेल में बन्द कर देना चाहिए।

———

यश भूमि बल लक्ष्मी, ये सत के आधार।
जग की सारी सम्पदा, सत से करती प्यार॥

हिन्दी संवाद समितियों को शक्तिशाली बनावें

—आचार्य
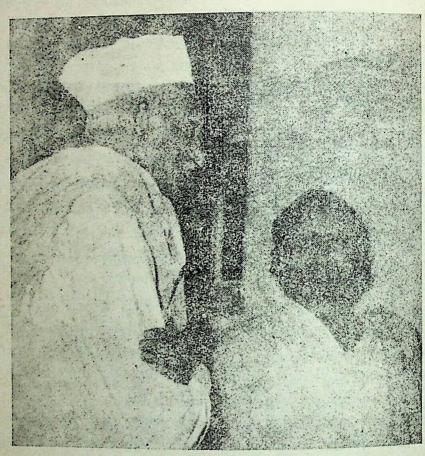
प्रसिद्ध सर्वोदय नेता पूज्य रविशंकर महाराज के साथ गुजरात के भील आदिवासी क्षेत्र में विचार विमर्श करते हुए आचार्य भगवानदेव सन् 1956

आचार्य भगवान देव (अजमेर) : उपाध्यक्ष जी, हिन्दुस्तान समाचार समिति और समाचार भारती की जो दयनीय स्थिति है उसके कारण कर्मचारियों को काफी दिनों से वेतन व अन्य सुविधायें नहीं मिल रही हैं। यह स्थिति दुःखदाई है और इसको दूर करने का प्रयास होना चाहिए। जितनी जल्दी हो सके, इसको किया जाना चाहिए क्योंकि भारत सरकार की यह नीति रही है। बीस सूत्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत, कि देश के हर व्यक्ति को रोजी-रोटी मिले और हर नौजवान को रोजगार मिले। इस प्रकार के जो पत्रकार और विचारक हैं उनकी ऐसी दयनीय स्थिति हो तो उसको भी पसन्द नहीं करेगा। जितनी जल्दी हो सके सरकार को इसका हल ढूंढना चाहिए।

विरोधी पार्टियों की ओर से जो दोषारोपण किया गया कि सरकार दोषी है उससे मैं सहमत नहीं हूं। एक विरोधी दल के माननीय सदस्य ने कहा कि ९५ परसेन्ट राज्य सरकार के शेयर हैं सेन्ट्रल गवर्नमेंट का कोई शेयर नहीं है--यह बात बिल्कुल निराधार है। मुझे पता है कि हिन्दुस्तान समाचार समिति और दूसरी एजेंसियां जब खराब हालत में थीं तो हमारी प्रधान मन्त्री और कांग्रेस सरकार ने इमरजेंसी के टाइम पर — इन एजेंसियों में काम

सत की ही जय होत है, मिथ्या की नित हार ॥
सत्य मार्ग है ऋषिन का, करो यही स्वीकार ॥

करने वाले कर्मचारियों की दयनीय स्थिति न रहे, उनको अधिक साधन और सुविधाएं मिलती रहें - इसके लिए सभी एजेंसियों को संगठित करके एक समाचार एजेंसी बनाई थी। लेकिन उसको विरोधी दल के लोगों ने ही पसन्द नहीं किया। और आज यही लोग कह रहे हैं कि यदि वे एजेंसियां नहीं चलती हैं तो किसी को पी. टी. आई. और किसी को यू एन. आई. के साथ जोड़ दिया जाए। यही तो हम भी चाहते थे, यही हमारी नेता श्रीमती इन्दिरा गांधी और हमारी सरकार चाहती थी लेकिन आपने ही उसको पसन्द नहीं किया।

अलग अलग विचार थे, सभी अपना-अपना प्रभुत्व चाहते थे···(व्यवधान) चुप करके बैठो, बीच में बोलना नहीं है नहीं तो हवा निकाल दूंगा तुम्हारी और तुम्हारी पार्टी की भी।···(व्यवधान) आप बैठ जाइए, क्यों बीच में बोलते हो? इस तरह बोलने का क्या हक है?···(व्यवधान) मत करो, तुम को बोलने का कोई हक नहीं है।

श्री सत्यनारायण जटिया: क्या ये मेरा आफिसर है जो कि मैं···समझा देता हूं। यह कोई इस्तेमाल करने की भाषा है।

Mr. Deputy-Speaker : Mr. Dev, you must address the Chair only.

श्री सत्यनारायण जटिया: यदि ये सम्मान नहीं करना चाहते हैं, तो उनका भी सम्मान नहीं होगा···करने से कोई बड़ा आदमी हो जाता है।···(व्यवधान)

आचार्य भगवान देव: जिनके सिद्धान्त आपस में परस्पर न मिलें और अलग-अलग विचारधारा रखते हों, उनको एक साथ नहीं रखा जा सकता है। यह एक कहावत है कि विभिन्न सिद्धान्तों के लोग थे, कोई काम्युनिस्ट था, कोई जनसंघी था और कोई लोकदल का था · (व्यवधान) ये समझ नहीं पा रहे हैं।···(व्यवधान)

श्री सत्यनारायण जटिया: (व्यवधान) ठिकाना नहीं है'।

श्री मधुसूदन वैराले: आप यह कहिए—कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा भानुमती ने कुनवा जोड़ा—यह संसदीय है।

आचार्य भगवान देव: आपने बिल्कुल सही कहा है। आपने व्याख्या कर दी, इसलिये आपको धन्यवाद! इमरजेंसी में इस समाचार को बनाया गया था। दोनों एजेंसियों की शिकायत हो रही है। जनता पार्टी के शासन में समाचार का जो संगठन बनाया गया कि कोई कर्मचारी दुःखी न हो, कोई परेशान न हो और उनके वेतन उनको मिलते रहें—इस प्रकार की सरकार ने योजना बनाई। जिसको इन लोगों ने तोड़ा और उसी की आज वकालत कर रहे हैं। कोई पी. टी. आई. या यू. एन. आई. के साथ जुड़ सकता है या नहीं यह तो नियम ही बताएगा। क्योंकि कोई उनमें को-आपरेटिव बेसिस पर हैं, कोई स्वतन्त्र है और किसी ने प्रान्तीय सरकारों से कुछ मदद ली है और किसी ने प्राइवेट व्यक्ति से मदद ली हुई है। उसमें कितना कोई इन्टरफेयर कर सकता है यह तो अलग बात है। नियम ही बतायेंगें और सरकार ही बताएगी कि क्या हो सकता है।

Shri Satyanarayan Jatiya : He is using the word···.

He is using unparliamentary word. It should be expunged.

Mr. Deputy Speaker : I will go through the record. Please sit down. If it is unparliamentary word it will not go on record.

आचार्य भगवान देव: बिल्कुल, ···(व्यवधान) कर रहे हो, तुम क्यों बोल रहे हो।

मैं फिर कह रहा हूं तुम···कर रहे हो। बीच में बोलने का कोई हक नहीं है।···(व्यवधान)

श्री सत्यनारायण जटिया: उपाध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि इनका यह तानाशाही रवैया नहीं चलेगा। ···(व्यवधान)

Mr. Deputy-Speaker : If there is anything unparliamentary, it will not go on record. That is all you want.

The Minister of parliamentary Affairs, Sports and works and Housing (Shri Buta Singh) : Sir, may I request the hon-Members Opposite that in case they want to intervene while an hon. Member is speaking, they should take your permission ?

इन्दु बिना ज्यों मन्दनिशि, मन्दकंज बिन ताल।
खीय मन्द त्यों धर्म बिन, तासे धर्म न टाल॥

Interruptiens

श्री सत्यनारायण जटिया : बूटासिंह जी मैं आदर-पूर्वक पूछता हूं कि क्या मतलब होता है ?

आचार्य भगवान देव : जब मैं बोल रहा था, तो मैं असभ्य शब्द का इस्तेमाल नहीं कर रहा था।

श्री बूटासिंह : उपाध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य मुझसे ज्यादा अनुभवी हैं। मैं तो आपसे यह रिक्वैस्ट कर रहा हूं कि आप यदि इन्टर्वीन करना चाहते हैं, तो पहले आप चेयर से आज्ञा लीजिए। वे बैठ जाते हैं, तो आप इन्टरवीन करिए।

इससे ज्यादा मैं नहीं समझता हूं।(…व्यवधान)

आचार्य भगवान देव : मैं समझा देता हूं। मैं समझा देता हूं।

एक बात जरूर है, हिन्दुस्तान समाचार समिति जब जनता पार्टी का शासन आया, उसमें जनरल मैनेजर द्वारा मनमाने ढंग से अपना प्राइवेट कारोबार शुरू किया। उनके ही कर्मचारियों ने उनके खिलाफ आंदोलन किया। मैं भी कर्मचारियों के बुलाने पर दो-तीन बार वहां पर गया था। वे बड़े दुखी थे। समय न होने की वजह से मैं विस्तार से व्याख्या नहीं कर रहा हूं। जनरल मैनेजर वहां ले गया और उस समय जनता पार्टी के शासन में उसको फर्स्ट-क्लास मकान दिया गया। बूटासिंह जी ध्यान देकर मेरी बात सुनिए।

पंडारा रोड का मकान अभी भी उनके पास है, यद्यपि उनका अब इस समाचार एजेंसी से कोई सम्बन्ध नहीं है। बल्कि आज जो इस समाचार एजेंसी के कर्मचारी हैं, जो इसकी सेवा कर रहे हैं उनको मकान तो दूर, तनख्वाह भी नहीं मिल रही है।

श्री बूटासिंह : कौन कह रहे हैं ?

आचार्य भगवान देव : बालेश्वर अग्रवाल, जो पहले इसके जनरल मैनेजर थे। मैं और भी व्यक्तियों के नाम दे सकता हूं जिनको अनेक सुविधायें दी गईं, लेकिन जिनका हक है उनको स्थान नहीं मिल रहा है। इसके बारे में सोचना पड़ेगा। इस एजेंसी की हालत बिगड़ी, इसमें अव्यवस्था पैदा हुई, सरकार ने प्रयास किया कि उसमें

बम्बई के समारोह में बोलते हुए आचार्य भगवानदेव

सुधार किया जाये। कई बार लोग आए, श्री वसन्त साठे जी के पास भी आये, हमारे पास भी आये और आज भी भगत जी से मिलते हैं, श्रम मन्त्री जी से मिलते हैं तथा अन्य लोगों से भी मिलते हैं। सहानुभूति के साथ उनसे बातें होती हैं, लेकिन सरकार कुछ नियमों में बंधी हुई है, उनमें कुछ सुधार करना है। मैं चाहता हूं—सरकार दोनों एजेंसीज को पूर्ण रूप से टेक-ओवर कर ले, क्योंकि उनके कर्मचारियों को रोजी-रोटी अवश्य देनी चाहिए।

अभी एक माननीय सदस्य ने समाचार भारती के बारे में कुछ बातें उठाईं। मैं जानता हूं उसकी स्थिति बहुत खराब थी और हाल में जो उसके जनरल मैनेजर थे, वे त्यागपत्र देकर चले गए, क्योंकि वहां ऐसी विचित्र स्थिति

सुखी दुखी नर जगत् में, धर्म करे सब कोय।
सुखी करे सुख बढ़े, दुखी करे दुख होय॥

है कि जो पानी पीता है, उसको फिर पीना ही पड़ता है। जिम्मेदारी सम्भालने पर ही पता लगता है कि क्या क्या दिक्कतें सामने आती हैं। जहां तक मुझे पता है—इसके दो डायरेक्टर्स – डा० सिंघवी और रमेशचन्द्र – इन दो व्यक्तियों की एक कमेटी जांच कर रही है। रिजर्व बैंक के डायरेक्टर मि० गनेशन भी उसमें हैं। वहां पर गलत काम हुआ है या सही काम हुआ है - वह कमेटी जांच करेगी। वहां पर कहा गया है कि सी. बी. आई. से जांच करायें — हर चीज की जांच सी० बी० आई० करे यह भी कोई उचित सुझाव नहीं है। जो भी जांच होगी वह सबके सामने आएगी लेकिन एक बात जरूर कहना चाहता हूं - किसी व्यक्ति पर इस तरह के आक्षेप नहीं लगाना चाहिए। अगर कोई गलत काम किया गया है तो जांच करने के बाद जो भी कार्यवाही हो सकती है वह अवश्य करनी चाहिये। लेकिन मैं यह जरूर चाहता हूं कि हिन्दी की इन दोनों एजेंसियों की जो दयदीय स्थिति है उससे मैं बहुत दुःखी हूं, क्योंकि राष्ट्रभाषा को उसका उचित महत्व मिले, इस तरह का प्रयास मैं रात-दिन करता रहा हूं। मेरी मातृभाषा सिन्धी है, लेकिन इस देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी है और उसकी ये दोनों एजेंसियां इस तरह की दयनीय स्थिति में रहें - यह हमें मन्जूर नहीं है। मैं चाहता हूं कि इनके लिए आवश्यक कदम, डायनेमिक कदम, शीघ्र उठाना चाहिए और दोनों एजेंसियों को टेक-ओवर करके इसके कर्मचारियों को तुरन्त राहत मिले—इस तरह का प्रयास करना चाहिए। भारत सरकार ने पहले, इस तरह के कई संस्थान हैं, जैसे शान्ति निकेतन है, कलकत्ता की एक लाइब्रेरी है, उनका टेक-ओवर किया है ताकि वे ठीक तरह से चल सकें। मैं चाहता हूं और विरोधी पक्ष के लोग भी चाहते हैं कि इनको जोड़ दिया जाए, इनको मिला दिया जाए। इस तरह का प्रयास फिर से किया जाये जिससे इनको एक एजेंसी बनाकर राष्ट्रभाषा को फिर से वह गौरवपूर्ण स्थान दिलाया जाये, अन्यथा हमारा सिर शर्म से झुक जाता है जब हम इस तरह की इन एजेंसियों और इनके कर्मचारियों की हालत देखते हैं। मैं आशा करता हूं हमारे श्रम मन्त्री जी, ... जी तथा स्वयं प्रधानमन्त्री जी इनके लिए कुछ करने का प्रयास करेंगे। मैं जानता हूं आज भी वहां पर अनेक निष्ठावान, ईमानदार और राष्ट्रीय विचारधारा के लोग बैठे हुए हैं—ऐसे निष्ठावान व्यक्तियों को हमें इन एजेंसियों का काम सौंपना चाहिए जो इसके कार्यों को अच्छी तरह से जानते हैं।

श्री पं० हरिश्चन्द्र शर्मा आचार्य भगवानदेव जी का रूपनगढ़ में स्वागत करते हुए

एक स्थानीय सदस्य ने हमारे लोकसभा के एक माननीय सदस्य श्री अरुण नेहरू का उल्लेख किया है कि वे हिन्दुस्तान समाचार के साथ सम्बन्धित हैं। उन्होंने बिल्कुल गलत बयानी की है। श्री अरुण नेहरू जी ने सार्वजनिक रूप से इसका खण्डन किया है, उनका इस एजेंसी से कोई सम्बन्ध नहीं है।

इस शब्दों के साथ मैं पुनः भारत सरकार से चाहता हूं कि वह तुरन्त उचित कार्यवाही करके इन दोनों एजेंसियों को अच्छी तरह से चलाने के लिए कोई शक्तिशाली कदम तुरन्त उठाएं।

□□□

धर्म कभी न छोड़िए, धर्म सुखों की खान।
तीन लोक की सम्पदा, इसी धर्म में आन॥

आसाम की समस्या को विरोधियों ने राजनैतिक रूप दिया है —आचार्य

मोरिशस के उपप्रधान मन्त्री से बातचीत करते हुए आचार्य भगवानदेव सन् १९७३

आचार्य भगवान देव (अजमेर) : सभापति जी, जो प्रस्ताव पेश किया गया है, उसका समर्थन करते हुए मैं गृह मन्त्री, प्रधान मन्त्री और वहां के गवर्नर ने जिस सूझबूझ, समझदारी और शान्तिपूर्वक तरीकों से आसाम के सम्बन्ध में, मार्ग निकालने की कोशिश की है, उसकी प्रशंसा करता हूं और मैं समझता हूं कि इससे बढ़कर और कोई रास्त इस समस्या को हल करने का नहीं हो सकता है।

विरोधी पार्टियों के लोगों ने बार-बार यह बात कही है, हमारे वर्मा जी और गुप्त जी ने यह कहा है कि उनसे बात की जाए। मुझे याद है कि प्रधान मन्त्री जी के सुपुत्र संजय गाँधी की जब मृत्यु हुई थी, उस समय भी विरोधी पार्टियों के नेता जब उनसे मिलने गए थे, तो उन्होंने आसाम के बारे में उनसे बातचीत की थी। इस तरह से आप देखें कि उनकी कितनी चिन्ता इस बारे में थी और इससे बढ़ कर चिन्ता इन विरोधी पार्टियों के लोगों को क्या हो सकती है। विदेशी नागरिकों की बात कही गई और ये १९६१, १९७१ की बात करते हैं। जब विरोधी पार्टियों के ये लोग सत्ता में थे, ढाई साल में इन्होंने जितना कार्य किया था और ढाई साल में जो कार्य हमारी सरकार ने किए हैं, मैं चेलेंज करता हूं कि इन्होंने उसका सौवां हिस्सा भी कार्य नहीं किया था। विरोधी दल के लोगों ने अपने काल में समस्या का समाधान क्यों नहीं किया? आज विदेशियों की बात करते हैं। अटल बिहारी जी यहां पर बैठे हैं, ये विदेश मन्त्री थे उन दिनों। मैं इनसे पूछना चाहता हूं कि विदेशियों की समस्या के समाधान के बारे में आपने क्या किया? उस समय आप कहां चले गए थे। उस समय विदेशों की यात्रा हो रही थी शिमला के अन्दर सर्किट हाउस में एकांतवास ढूंढा जा रहा था। दिल्ली का "प्रताप" अखबार अपने फ्रंट पेज पर लिख रहा है कि विदेश मन्त्री अटल बिहारी बाजपेयी…(व्यवधान)

गरीब सतावो ना कभी, जाकी मोटी हाय।
मरी भेड़ की खाल से, लोह भस्म हो जाय॥

श्री अटलविहारी वाजपेयी : मेरा व्यवस्था का प्रश्न है……

आचार्य भगवान देव : मैं हकीकत बयान कर रहा हूं, वहां डाक बंगले में… (व्यवधान)

सभापति महोदय : आप मेरी बात सुनिए।

(व्यवधान)

यह कौन सा तरीका है ?

श्री रवीन्द्र वर्मा : माननीय सदस्य को असंगत बात क्यों कहनी चाहिए ? यहां उसका क्या सम्बन्ध है ?

प्रो० मधु दंडवते : हमने प्रधानमन्त्री महोदया पर राजनीतिक प्रहार किया था।

सभापति महोदय : आप चुप क्यों नहीं होते हैं ? जब मैं खड़ा हूं तो आपको बैठ जाना चाहिए। मैं वक्ता महोदय से निवेदन करना चाहता हूं कि यह राष्ट्रीय समस्या है, इस समस्या पर ऊपर उठकर हम लोग विचार-विमर्श करें। व्यक्तिगत आक्षेप करना ठीक नहीं है।

श्री अटलविहारी वाजपेयी : इसे पूरा हो जाने दो।

आचार्य भगवान देव : इन्होंने प्रधानमन्त्री तक के ऊपर व्यक्तिगत आक्षेप लगाए हैं। इनको सुनना भी चाहिए।

प्रो० मधु दंडवते : क्या आपने इनकी बात समझ ली है ?

आचार्य भगवानदेव : आसाम समस्या को पोलिटिकल बनाया गया है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी :‥ कि मैं शिमला में था

श्री रवीन्द्र वर्मा : यह एक घृणित टिप्पणी है।

(व्यवधान)

सभापति महोदय : आप कृपया बैठ जाइए। आप इस तरह का आक्षेप मत कीजिए।

प्रो० मधु दंडवते : सत्तारूढ़ दल की ओर से एक भी सदस्य कुछ भी नहीं बोला है।

सभापति महोदय : यह निश्चितरूप में असंसदीय बात है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : इन आरोपों को दूर किया जाना चाहिए।

आचार्य भगवान देव : उस समय विदेश मन्त्री कहां थे ?

सभापति महोदय : यह आप कह सकते हैं, लेकिन व्यक्तिगत आक्षेप नहीं कर सकते।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : इस तरह की बातें सदन में नहीं चल सकतीं। ‥(व्यवधान)

सभापति महोदय : मैंने अभी घोषणा की है कि मैं रिकार्ड देखूंगा और जहां अन-पार्लियामेंटरी भाषा या व्यक्तिगत आक्षेप किए गए हैं, उनको एक्सपंज कर दूंगा।

श्री रवीन्द्र वर्मा : सभापति महोदय, जिस विषय पर बहस हो रही है उससे इसका क्या ताल्लुक है…।

सभापति महोदय : मैं वही बार-बार कह रहा हूं कि जिस विषय पर विचार-विमर्श हो रहा है, उस पर बोलिए।

(व्यवधान)

आचार्य भगवान देव : मैं सच्ची बात कह रहा हूं।

(व्यवधान)

सभापति महोदय : आप फिर किसी की बात नहीं मान रहे हैं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : जो कांच के घर में बैठे हैं वे दूसरों पर पत्थर न फेंकें। हम सदन की गरिमा को गिराना नहीं चाहते।

आचार्य भगवानदेव : मैं हकीकत कह रहा हूं।

(व्यवधान)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : इस मेम्बर का…

आचार्य भगवान देव : होंगे आपके साथी होंगे।…

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : …

आचार्य भगवान देव : आप और आपके साथी…

श्री मूलचन्द डागा (पाली) : व्यक्तिगत कोई भी बात हो उसे कार्यवाही वृतान्त में से निकाल दिया जाना चाहिए।

इसको आप एक्सपंज करवा दीजिए। (व्यवधान)

श्री अटल बिहारी बाजपेयी…… (व्यवधान)

सभापति महोदय : आप अध्यक्ष की बात भी नहीं सुनते हैं।

श्री मूलचन्द डागा इसको एक्सपंज करवा दीजिए।'

क्षमा विवेक सुदम दया, सत्य वचन तप दान।
शील धैर्य सन्तोष ये, धर्म लिंग दश जान॥

सभापति महोदय : मैंने तो कह दिया है कि आसन से नीचे जाते ही मैं रिकार्ड देख लूंगा।

सभापति महोदय : मैंने प्रारम्भ में ही यह आश्वासन दे दिया था। सारा ही मामला, समस्त समस्या इतनी जटिल है कि यदि दलगत राजनीति से ऊपर उठकर और राष्ट्रीय स्तर पर समस्या पर विचार-विमर्श करें तो केवल तभी हम इस समस्या का सन्तोषजनक हल ढूंढ सकते हैं। (व्यवधान)

श्री सत्यदेव सिंह (छपरा) : जितनी आपत्तिजनक बातें हैं उनको आप हटा दीजिए।

श्री गिरधारीलाल व्यास (भीलवाड़ा)···वगैरह कहां हैं उनको निकालिए।

सभापति महोदय : मैं कह चुका हूं कि सब देखूंगा।

आचार्य भगवान देव : मेरे पास यह कल का हिंदुस्तान अखबार है। इसके प्रथम पृष्ठ पर एक न्यूज छपी है।

"असम में चुनावों का विरोध होगा : छात्रसंघ की चेतावनी" इस छात्रसंघ के अध्यक्ष प्रफुल्ल कुमार महंत और उसके दो साथी यहां आए हैं और ये दोनों श्री अटल-बिहारी वाजपेयी और हमारे श्री वर्मा जी आदि को मिले हैं। असम समस्या का समाधान करना है तो उसका एक सरल मार्ग है कि हमारे विरोधी पार्टियों के नेता उनको साफ-साफ कहें कि हम आपसे बात करने के लिए तैयार नहीं हैं। लेकिन आज हो यह रहा है कि उनको ये बुला-कर प्रोत्साहित करते हैं कि ऐसा बन्दर होता है तो उसका तो स्वभाव है उछल-कूद करना। लेकिन कोई शराब उसको पिला दे और समझे कि इलाज हो गया तो क्या यह उसका इलाज होगा? इन नौजवानों को बुलाते हैं ये लोग, उनको भड़काते हैं, उनको समझाते नहीं कि उनके वास्ते सही मार्ग कौन सा है, उनको सही मार्ग पर लाने की कोशिश नहीं करते। इसके विपरीत उनको प्रेरणा देते हैं, कहते हैं कि वहां पर चुनाव न करवाने दो। माननीय गुप्त जी ने एक बात कही है कि श्री के. सी. बरुआ···।

सभापति महोदय : खानगी बातें भी होती हैं – उनकी चर्चा यहां नहीं करनी चाहिए।

आचार्य भगवान देव : खानगी बात नहीं है। राष्ट्र-हित की बात है। उनको सही रास्ते पर क्यों नहीं लाते हैं? क्यों उनको कहते हैं कि वहां शैतानियत करो?

श्री के. सी. बरुआ की बात हमारे माननीय गुप्त जी ने कही है। इससे एक बात स्पष्ट हो गई है कि यह आंदोलन छात्र नहीं कर रहे हैं। कुछ रिटायर्ड, सेवा निवृत्त व्यक्ति विदेशी ताकतों के साथ मिलकर, उनको कठपुतली बनकर नौजवानों को बहकाकर, उनको भड़काकर, उनको सुविधायें देकर, उनको साधन देकर असम के अन्दर असन्तोष पैदा कर रहे हैं। दो साल पहले जो परिस्थिति असम की थी आज उससे कई गुना अधिक बेहतर हो चुकी है। परन्तु रह-रहकर लोगों को बुलाकर, उनको बहकाकर, उनको भड़का कर, उनको ये आंदोलन करने की प्रेरणा देते रहते हैं। मैं श्री समर मुखर्जी से सहमत हूं कि वहां पर पृथकतावादी, प्रतिक्रियावादी और साम्प्रदायिक शक्तियां तोड़फोड़ करने का प्रयास कर रही हैं। हमारी पार्टी ने हमारी सरकार ने वहां पर विकास के सम्बन्ध में जो कोशिशें की हैं, उसका सौवां हिस्सा भी जब आप सत्ता में थे, आपने नहीं की।

विदेशी नागरिक कौन हैं? जो व्यक्ति वहां पर रह रहे हैं कई सालों से क्या वे विदेशी नागरिक हैं? पहले भी वहाँ कई चुनाव हो चुके हैं। इस समय इनका तीसरा नेत्र खुल रहा है। जब ये सत्ता में थे तब उनको कोई ज्ञान नहीं हुआ। इनके बाद हम आए तो आज इसका तीसरा नेत्र खुल रहा है। ये लोग विदेशियों की बात कह रहे हैं। आर्थिक कारणों से कई व्यक्ति एक शहर से दूसरे शहर में चले जाते हैं। यह कोई नई बात नहीं है।

आज वहां पर कोई व्यक्ति न सिर्फ असम में आए हैं बंगाल के बगाली, त्रिपुरा और बिहार में भी आए। असम में ही क्यों शरारत की जा रही है? इसके पीछे उद्देश्य क्या है? आज साधारण नागरिक के ऊपर आपत्ति करते हैं, मैं पूछना चाहता हूं विरोधी नेताओं से कि क्या यह बात सही नहीं है कि जो पाकिस्तान का सैनिक तानाशाह है उसका एक विशेष कूटनीतिज्ञ, जो शैतानियत का काम कर रहा है अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से, वह जब यहां दिल्ली में आया उसको श्री जेठमलानी जी ने, भारतीय जनता पार्टी के उपाध्यक्ष ने, जिसको बी० जे० पी० कहते हैं जिसका स्पष्ट अभिप्राय बोगस जनता पार्टी होता है, जनता

सूरा सोई जानिये, लड़े धर्म के हेत।
पुरजा पुरजा कट मरे, कबू न छोड़े खेत॥

पार्टी के तो माननीय दंडवते जी बैठे हुए हैं, इनकी नैतिकता क्या है, इनकी भारतीयता क्या है जो एक सैनिक तानाशाह के कूटनीतिज्ञ को रामलीला ग्राउन्ड···

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अगर मैं यह कहूं कि यह चोरों की पार्टी है···

आचार्य भगवान देव : आप चोरों की पार्टी हो सकते हैं। आप विदेशियों से मिले हुए हैं।

सभापति महोदय : आचार्य भगवान देव जो, इससे कटुता और बढ़ेगी और जो विचार-विमर्श का वातावरण है वह बेकार हो जाएगा।

आचार्य भगवान देव : असम में इन्होने आग लगा रखी है। वहां के विद्यार्थियों को भड़का रहे हैं। इससे बढ़ कर आग क्या होगी? ए० के० ब्रोही को बुलाकर इसी रामलीला ग्राउण्ड में इन्हीं वाजपेयी जी ने उस कूटनीतिज्ञ का स्वागत किया, उसके साथ हाथ मिलाया। आज साधारण नागरिक पर आपत्ति है। ए० के० ब्रोही जैसे शैतान को बुलाकर वहां पर यह उसका स्वागत करते हैं। इनकी रीति क्या है? इनके मन में क्या है? इनकी कथनी और करनी में जमीन आसमान का अन्तर है। असम की समस्या का समाधान हो सकता है यदि विरोधी दलों के लोग अपने दिल दिमाग को शांत कर लें तो कोई समस्या नहीं है। विद्यार्थियों को अपने यहां न आने दें तो एक दिन में आंदोलन समाप्त हो सकता है। परन्तु इनकी कथनी और करनी में अन्तर है। एक कहावत है नाचना आये नहीं और आंगन टेढ़ा। यह इधर-उधर की बात करते हैं, क्या इन्होंने कोई ठोस सुझाव पेश किया है? इन्होंने कभी कोई बताया कि कौन से साल की मतगणना के आधार पर चुनाव होगा? आज कोई कुछ कहता है, और यह दुरंगी चाल चल करके देश में अराजता लाने का प्रयास हमारे विरोधी पार्टी के लोग ही कर रहे हैं। इनको स्पष्ट नौजवानों को कहना चाहिए कि हम आपसे बात करने के लिए तैयार नहीं हैं। माननीय वाजपेयी और माननीय रवीन्द्र वर्मा जी ने क्या देखा है असम में क्या है· वहाँ की समस्या क्या है? मैंने आर्यसमाज के एक कार्यकर्ता की हैसियत से जंगलों में काम किया है। डीफू, बोकाजान, गोहाटी और तेजपुर में आज भी हमारे स्कूल चल रहे हैं। हमें मालूम है कि वहां क्या समस्या है। यह जानबूझ कर आग लगा रहे हैं। क्या आपने कोई वहां स्कूल बनाया, आश्रम स्थापित किया? नहीं। इनको काम नहीं करना है बल्कि यहां के पैट्रोल उत्पादन में अड़चन डालनी है। कोई ठोस योजना विरोधियों की तरफ से आज तक नहीं आई। लम्बे-चौड़े भाषण देते हैं, मगर कोई ठोस प्रस्ताव पेश नहीं किया। आप हमारी एक ही बात मान जायें कि ए० ए० एस० यू० और गणसंग्राम परिषद के लोगों से आप मिलना बन्द कर दें। असम की समस्या एक दिन में हल हो सकती है। परन्तु यह लोग वहाँ पर लोगों को भड़काते हैं और यहां पर शैतानियत के काम करते हैं। इससे समाधान नहीं होगा हमारी सरकार वहां की समस्या हल करने के लिए चिन्तित है। हमने जो वहां पर विकास किया है वह आप अपने समय में नहीं कर सके। आंकड़े विकास के मैं नहीं देना चाहता, गृहमन्त्री स्वयं देंगे।

इन शब्दों के साथ मैं इस प्रस्ताव और मांगों का समर्थन करता हूं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : सरकारी पार्टी का दिवाला निकल गया।

आचार्य भगवान देव : निकल गया दिवाला आपका।

□✱□

धर्म के प्यारे जगत में, जो हैं सब नर नार।
अमर सदा वे रहेंगे, पावें मुक्ति द्वार ॥
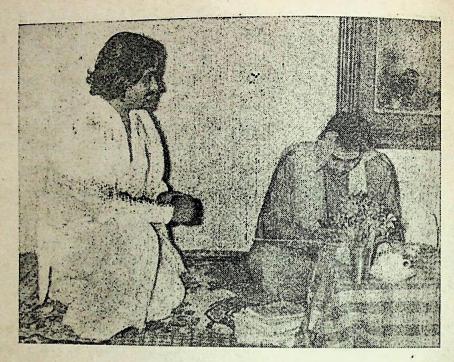
आचार्य भगवान देव तथा गीता भारती टंकारा में

दुबई में आचार्य जी बोलते हुए साथ में बैठे हैं सूरज मंगलानी जी

5 Point Programme

- Family Planning
- Each One Teach One
- Planting of trees
- Anti-Dowry Campaign
- Eradicating Casteism
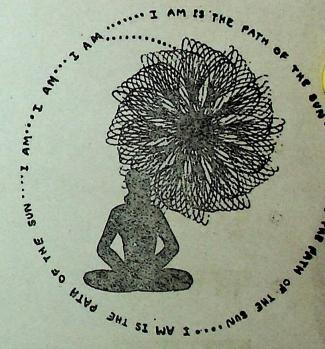
The self-luminous self within shines through our mind and our senses.

स्वयं प्रकाश, आत्म ही अपने प्रकाश से इन्द्रियों और अन्तःकरण को प्रकाशित करता है।

रंग रंग के फूल तो चमन में लाखों खिले।
गर नहीं बूए-सदाकत, तो चमन कुछ भी नहीं॥

- कठिन परिश्रम
- दूरदृष्टि
- पक्का इरादा
- अनुशासन
- ईमानदारी

Churn your mind with self-enquiry. It will give you the cream of knowledge which will ever remain untouched by the water of SANSARA

आत्म—निरीक्षण करते हुए मन मथने पर उसमें से ज्ञान का नवनीत निकलता है जिसे फिर संसार रूपी जल कभी भी स्पर्श नहीं कर सकता।

तुझ से यह वर मांगता, मैं जाऊं सब भूल।
नित दिन तेरी धुन में रहूं, हे जीवन के मूल॥

महर्षि दयानन्द फिल्म

श्री सोमनाथ मरवाह
एडवोकेट
नई दिल्ली

कोषाध्यक्ष
सार्वदेशिक आर्य
प्रतिनिधि सभा
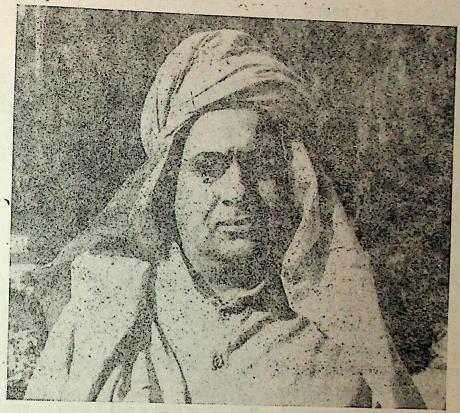
महर्षि दयानन्द फिल्म में आचार्य भगवानदेव संसद सदस्य महर्षि दयानन्द के रूप में।

यह बड़ी दुःखद बात है कि श्री शिवकुमार शास्त्री के स्तर के व्यक्ति ने जो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा के लम्बे समय से सदस्य रहे हैं, यह प्रश्न उठाया है कि आचार्य भगवान देव महर्षि दयानन्द सरस्वती के ऊपर फिल्म क्यों बना रहे हैं। सार्वदेशिक सभा ने 198० में निर्णय लिया था कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के ऊपर फिल्म बनाई जाए तथा 31-5-80 को हुए "शर्तनामे" (शर्तनामा एग्रीमेंट साथ में पढ़ें) के अनुसार श्री इन्द्र नैयर को 30,000 रुपया अग्रिम राशि भी दी गई थी। श्री नैयर ने फिल्म बनाने के कार्य में सफलता न मिलने पर अब यह कार्य आचार्य भगवानदेव ने प्रारम्भ कर दिया है। इस बात का विश्वास नहीं किया जा सकता कि पं० शिवकुमार शास्त्री को इस तथ्य का पता नहीं था कि फिल्म के महूर्त के समय दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सरदारी लाल वर्मा के अतिरिक्त सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ मरवाह भी उपस्थित थे। सन् 1980 में श्री नैयर के साथ फिल्म बनाने सम्बन्धी शर्तनामे का प्रारूप तैयार करने का कार्य सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष श्री मरवाह को सौंपा गया था तथा उस पर सार्वदेशिक सभा की ओर से सभा प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले ने हस्ताक्षर किए थे। उस समय उपदेशक, पण्डित, प्रचारक श्री चन्द्रभान जी भी उपस्थित थे। इस अवसर आर्यसमाजों ने प्रधान तथा पर्याप्त संख्या में आर्यसमाजी उपस्थित थे।

2-- जिस भाषा में यह पत्र लिखा गया है वह केवल सही दिशा में कार्य करने के लिए आचार्य भगबानदेव को ही चुनौती नहीं है बल्कि उन सब लोगों के ऊपर जो फिल्म के महूर्त समारोह में उपस्थित थे, एक सीधा आक्रमण है। मैं केवल यह कह सकता हूं कि आर्यसमाज संस्थाओं की ओर से जितना सहयोग स्व. पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री

न कुछ हम हंस के सीखे हैं, न कुछ हम रोके सीखे हैं।
जो कुछ थोड़ा सा सीखे हैं, किसी के होके सीखे हैं॥

और पं० शिवकुमार जी शास्त्री को तथा अन्य नेताओं एवं कार्यकर्ताओं को उस समय दिया गया था यदि उसका दस प्रतिशत भी आचार्य भगवानदेव को दिया जाता तो आर्य समाज का उद्देश्य तथा कार्य कहीं अधिक लाभान्वित होता जितना कि स्व० प्रकाशवीर शास्त्री के समय हुआ था।

3—यह बड़ी दुःखद बात है कि पिछले इतने लम्बे समय तक आर्य-समाज को यह समझाया जाता रहा है कि संसद भवन में महर्षि दयानन्द का चित्र लगा हुआ है। मुझे अभी आचार्य भगवानदेव जी के द्वारा पता लगा है कि संसद भवन में आज तक महर्षि दयानन्द का चित्र नहीं लगा है।

4—1975 में सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय, भारत सरकार ने महर्षि दयानन्द के ऊपर एक डाकूमैन्टरी फिल्म बनाई थी। तत्कालीन मन्त्री श्री इन्द्रकुमार गुजराल के प्रयास एवं सदभाव का प्रत्येक उस व्यक्ति ने प्रशंसा की थी जिसने भी उस फिल्म को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित उद्घाटन समारोह में देखा था। उसमें भी महर्षि दयानन्द सरस्वती के पात्र को एक जीवित व्यक्ति ने सक्रिय रूप प्रदान किया था तथा उस फिल्म की तीन प्रतियां संपूर्ण भारतवर्ष में तथा विदेशों में प्रचार के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने खरीदी थीं। यदि अब इस कार्य का विरोध किया जा रहा है तो यह उन कुछ निहित स्वार्थी व्यक्तियों की ओर से जिनका आचार्य भगवान देव के स्तर तथा प्रसिद्धी की सहन नहीं कर सके। मैं मानता हूं कि इस फिल्म के निर्माण में विरोध स्पष्टतः व्यक्तिगत प्रतिस्पर्धा के कारण है।

महर्षि दयानन्द फिल्म के महूर्त के अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ मरवाह एडवोकेट फिल्म के गीतकार राष्ट्रकवि सनम गोरखपुरी का स्वागत करते हुए।

5—मुझे बताया गया है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के ऊपर गुजरात सरकार ने एक फिल्म बनाई है जिसका कहीं भी और कभी भी विरोध नहीं किया गया।

6—क्या कोई इस बात को मानने से इन्कार करेगा कि गांधी फिल्म में महात्मा गांधी को सम्पूर्ण संसार के सामने लाकर खड़ा कर दिया है। एक भूला हुआ व्यक्ति आज फिर से सम्पूर्ण संसार में प्रत्येक व्यक्ति की जबान पर है। क्या किसी ने इस बात को अनुभव किया है कि सन्तोषी माता फिल्म एक मुसलमाल तस्कर की प्रेरणा से बनी है और उसकी पुत्री को सन्तोषी माता के पात्र के रूप में दिखलाया गया है और बहुत-सी हिन्दू देवियों ने शुक्रवार को सन्तोषी मां के व्रत रखना आरम्भ कर दिया है क्योंकि मुसलमानों के अनुसार शुक्रवार एक पवित्र दिन है। उस फिल्म के कारण ही आज सन्तोषी माता का नाम पहली पंक्ति में है और जहा तक महर्षि दयानन्द सरस्वती का सम्बन्ध है उनके निर्वाण के 100 वर्ष के पश्चात् भी पाश्चात्य देशों में उन्हें लोग नहीं जानते। दक्षिण भारत के भी काफी क्षेत्रों में उनका नाम नहीं सुना जाता। क्या वे लोग जिन्होंने इस फिल्म का विरोध किया है, इस स्थिति से सन्तुष्ट हैं। मैं विश्वास

दानवों के अत्याचारों को, वीर बनकर झेला।
देश की रक्षा खातिर, जीवन से होली खेला॥

करता हूं कि इन लोगों ने इस बात को अनुभब ही नहीं किया कि इस फिल्म के प्रदर्शन से आर्य समाज और दयानन्द के सिद्धान्तों में प्रचार प्रसार को कितना योगदान मिलेगा तथा कितने सुपरिचित संवाद तथा भजन युवा लड़के-लड़कियों के होठों पर सम्पूर्ण भारत में फैल जायेंगे। मैं मानता हूं कि आजकल यही प्रचार का सही माध्यम है।

7—यह कहा जाता है कि स्वामी जी रामलीला, नाटकों और स्वांग के विरुद्ध थे। मुझे विश्वास है कि यदि दयानन्मैं सरस्वती के सामने फिल्म अद्योग तथा दूरदर्शन का इतना विकास हुआ होता तो वे भी इसका विरोध न करके समर्थन ही करते। इसके अतिरिक्त आज वे लोग फिल्म निर्माण का विरोध कर रहे हैं जिन्होंने महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों का अपने जीवन में पालन नहीं किया। कितने विरोधियों ने अपने जीवन में उनकी शिक्षाओं को शत-प्रतिशत उतारा है। स्वामी दयानन्द के अनुसार वैवाहिक जीवन 50 वर्ष के पश्जात समाप्त हो जाना चाहिए। इनमें से कितने लोगों ने 50 वर्ष के पश्चात वानप्रस्थ ग्रहण किया है तथा कितनों ने 75 वर्ष के पश्चात संयास आश्रम। कितनों ने अस्पृश्ता को दूर करने के लिए अन्तर्राजातीय विवाह किए हैं। मैं मानता हूं कि यह लोग अपने समुदाय से बाहर भी नहीं जा सके हैं। यह कहना व्यर्थ है कि जितने तथाकथित फिल्म विरोधियों ने अपने जीवन में स्वामी जी की शिक्षाओं को क्रियान्वित किया है। स्वामी दयानन्द के अनुसार वह धन जो अच्छे स्रोत से प्राप्त नहीं किया गया है, आर्यसमाज के कामों में नहीं लगाया जाना जाहिए। वेदों के अंग्रेजी भाष्य के कार्य के लिए मोहन मेकिन ब्रेबरी की ओर से धन मिला है। क्या इनमें से कोई व्यक्ति इस बात को न्यायोचित ठहरा सकता है कि यह धन स्वामी दयानन्द के अनुसार लिया जाना ठीक है, क्या हमारे आर्यसमाजी प्रवक्ता इस बात को सही मानते हैं पर मैं यह कहना चाहता हूं कि परिवर्तित परिस्थितियों में हम लम्बे समय तक सोए हुए नहीं रह सकते। क्या इन्हें यह पता है कि नैरोबी की आर्यसमाज के प्रधान शराब की दुकान के मालिक हैं। क्या हम आज स्वामी दयानन्द के द्वारा निर्धारित वेशभूषा में बैठकर यज्ञ करते है। क्या हम उन समिधाओं का प्रयोग करते हैं जो महर्षि ने बताई थीं। क्या हम अपने जीवन में उन सब बातों को चरितार्थ करते हैं जो उन्होंने बताई थीं। क्या हमने अपने बच्चों का पोषण आर्य समाज के नियमों के अनुसार किया है और क्या वे आर्य समाज के मिशन को आगे ले जा सकेंगे।

क्या यह सत्य नहीं है कि आज हमारे कुछ व्यक्ति बानप्रस्थ एवं संन्यास ग्रहण करने के पश्चात भी महर्षि द्वारा निर्दिष्ट सिद्धान्त विरुद्ध अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं अर्थात उसी प्रकार अपने कारोबार में लगे हैं और परिवारों में ही रह रहे हैं। महर्षि ने तो कुछ ऐसे सिद्धान्त भी निर्धारित किए हैं जिन पर इस युग में चलना न केवल कठिन है वल्कि असम्भव है जो आप सब जानते हैं

8—फिल्म निर्माण के सम्बन्ध में पिछले कई दिन पूर्व कुछ परामर्श मिले हैं। एक परामर्श पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने दिया है। उन्हें फिल्म के निर्माण में कोई आपत्ति नहीं है पर उन्होंने यह सलाह दी है कि जिस प्रकार गुरुनानक की फिल्म "नानक दुखिया सब संसार" में गुरुनानक के पात्र को किसी जीवित व्यक्ति द्वारा नहीं दिखलाया गया बल्कि आवश्यक स्थानों पर एक बहुत बड़ी फोटो रखकर पीछे से उनकी बातों को कहा गया है। इसी प्रकार की फिल्म दयानन्द के ऊपर बनाई जाए। मैंने ऐसी कोई फिल्म नहीं देखी और ऐसी फिल्म टी० बी० पर भी नहीं दिखाई गई। मुझे यह पता नहीं कि इन फिल्म विरोधियों का सही सिद्धान्त क्या है। क्या यह कभी सिनेमा नहीं देखने जाते। मैं 1958 से आज तक कभी फिल्म देखने नहीं गया हूं। यह सुझाव विश्वसनीय होते हुए भी उचित नहीं है। उस फिल्म में कुछ अविश्वसनीय चमत्कार दिखाये गये हैं। और ऐसा कोई चमत्कार हम स्वामी दयानन्द के लिए नहीं दिखा सकते। उनके जीवन में जो भी है वह यथार्थ है। उस फिल्म में दिखाया गया है कि गुरुनानक ने पहाड़ों के ऊपर हाथ रखा और वहां से एक फब्बारा निकलने लगा, जिसे वह पंजासाहिब कहते हैं। इसी प्रकार जब वे मक्का-मदीना गए उन्होंने रेठे की कड़वाहट को मीठे स्वाद में बदल दिया। इस प्रकार की अनेकों बातें हैं जो विश्वसनीय नहीं है। कई वर्षों पहले सरदार खुशवन्त सिंह ने इलस्टैटिड पत्रिका में विस्तार में इन बातों को दिया था। मेरा इस बात

हर दिल है सोगवार तो हर आँख अश्कबार।
यह कौन आज अज्म से उठकर चला गया॥

से कोई सम्बन्ध नहीं है कि गुरुनानक का पात्र किसी जीवित व्यक्ति को क्यों नहीं दिया गया। पर मैं इस बात का सशक्त विरोध करता हूं किसी व्यक्ति के द्वारा यह पात्र करने की जगह किसी फोटो को रखा जाए तथा फोटो के पीछे से कोई व्यक्ति बोले।

9—मैं पं० शिव कुमार शास्त्री के पत्र की ध्वनि के ऊपर कोई टिप्पणी नहीं करना चाहता पर मैं यह अवश्य कहना चाहूंगा कि भारतवर्ष का तथा संसार का जितना भ्रमण आचार्य भगवान देव ने किया है उतना करने का श्री शास्त्री जी को अवसर नहीं मिला तथा जितनी सफलता विश्व सिन्धी सम्मेलन आयोजित करने में श्री भगवानदेव को मिली उतनी शायद हमें अजमेर में निर्वाण शताब्दी करने में भी नहीं मिली। विश्व सिन्धी सम्मेलन में राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री तथा अन्य गणमान्य विशिष्टि अतिथि आए थे। यह कार्यक्रम उन्होंने उस स्थान पर आयोजित किया जिसका किराया 2 लाख रुपये था। अजमेर में सार्वदेशिक को छोड़कर अन्य बहुत सी संस्थाएं निर्वाण शताब्दी के कार्य में संलग्न थी पर उन्हें वह सफलता नहीं मिली। आचार्य भगवान देव जानते हैं कि विश्व संगठन क्या होता है। वह हममें से किसी भी व्यक्ति की अपेक्षा संसार की बातों को अधिक समझते हैं। उद्घाटन के समय ही उन्होंने यह स्पष्ट घोषणा कर दी थी कि विश्व आर्य समाज सार्वदेशिक सभा की समानान्तर सभा नहीं है। वास्तव में यह सार्वदेशिक सभा का एक अंग होगी। यदि कोई उस अवसर पर दिए गए भाषणों तथा प्रेस विज्ञप्तियों में निहितार्थ का नहीं समझ पाता है तो इसका दोष आचार्य भगवानदेव तथा उनके साथियों को नहीं दिया जा सकता। मैं मानता हूं कि फिल्म निर्माण का विरोध व्यक्तिगत प्रतिस्पर्धा है और इसके अतिरिक्त कुछ भी नहीं है।

महर्षि दयानन्द फिल्म का महूर्त करते हुए श्री सोमनाथ मरवाह एडवोकेट

10—आर्य समाज के अधिकारियों की इसी मनोवृत्ति के कारण एक बहुत सुनहरी अवसर हाथ से निकल गया जब श्री पृथ्वीराज कपूर ने जो आर्यसमाजी परिवार से थे। महर्षि दयानन्द के ऊपर आर्यसमाज संगठन से कोई भी पैसा लिए बिना, फिल्म बनाने का प्रस्ताव रखा था।

11—सन् 1975 में क्या हुआ, इसके बारे में बहुत कुछ कहा जाता है। तत्कालीन राष्ट्रपति के भाषण के पश्चात सार्वदेशिक सभा के सभी पदाधिकारी प्रधानमंत्री और कोषाध्यक्ष तथा अन्य पण्डाल छोड़कर चले गये थे और पण्डाल सविता बहन के अधिकार में रह गया था। वे गुजरात से एक गुजराती नाटक का मंचन करने के लिए दल लेकर आई थी। यह सर्वविदित है कि उस समय तथाकथित युवा संन्यासियों स्वामी अग्निवेश और स्वामी इन्द्रवेश के नेतृत्व में एक वर्ग विशेष के द्वारा विरोध का हमें सामना करना पड़ा था। उन्होंने स्वामी ओमानन्द के साथ हाथापाई भी की थी तथा शामयाने को ज़लाने की धमकी भी दी थी। यह वही लोग थे जिन्होंने परेशानी खड़ी की थी और यह नाटक इसलिए नहीं दिखाया जा सका था क्योंकि वहां संगठन का कोई भी उत्तरदायी पदाधिकारी स्थिति पर काबू पाने के

भगवानदेव तेरा नाम ही इंकलाब है।
गरीबी मिटाओ की पुकार से तू जिन्दाबाद है॥

लिए उपस्थिथ नहीं था। इस बात को इस प्रकार चित्रित किया जाता है कि आर्यसमाज में इस नाटक के प्रदर्शन के सम्बन्ध में असन्तोष था। इन लोगों को शायद यह पता नहीं है कि डी० ए० वी० प्रबन्ध कर्त्ता समिति के द्वारा चलाए जा रहे पब्लिक स्कूलों में आर्य समाज के उद्देश्यों का प्रचार करने के लिए जिस तरह से प्रदर्शन किया जाता है। अब भी मैं एक संन्यासी को जानता हूं और कुछ अन्य लोगों को जो यहां मंच पर विराजमान हैं और जो इन संस्थाओं के विरोधी रहे हैं पर मैं कहना चाहता हूं कि आर्य समाज के सिद्धान्तों का इन डी० ए० वी० संस्थाओं के माध्यम से इतना प्रचार हुआ है कि जितना यह लोग बिना उनके जलसों को देखें सोच भी नहीं सकते।

12—स्वामी दयानन्द के ऊपर फिल्म निर्माण की फाईल लगभग 100 पृष्ठों में है और फिल्म निर्माण का प्रस्ताव सर्वसम्मित से उज्जैन में 26 अप्रैल 1980 में पारित किया गया था। ऐसा ही एक प्रस्ताव उदयपुर में भी किया गया था। जिसका प्रारम्भ में आचार्य विशुद्धानन्द, श्री गौरीशंकर कौशल, स्वामी ओमानंद सरस्वती, श्रीमती कोशल्या देवी और डां० सुरेश चन्द्र शास्त्री तथा अन्य लोगों ने उत्साहपूर्वक विरोध किया था। उनके विरोधी का मैंने (श्री सोमनाथ मरवाहा) मेरी पत्नी श्रीमती शान्ती मरवाहा, पं० विशम्भर प्रसाद शर्मा, पं० दुर्गादास और श्री सरदारी लाल वर्मा ने सही उत्तर देते हुए फिल्म निर्माण का समर्थन किया था। दोनों पक्षों की बात सुनने के पश्चात यह सर्वसम्मत निर्णय लिया गया था कि श्री नैयर को ३0,0.0 रुपये अग्रिम राशि दी जाए तथा सभा के कानूनी सलाहकार श्री सोमनाथ मरवाहा द्वारा शर्तनामे (एग्रीमेंट)के परारूप का अनुमोदन प्राप्त कर लिया जाए। और यही किया गया था।

13—इन 30,000-/ रुपये के अतिरिक्त उन्होंने 6000-/ रुपये और लिये थे। यह रुपया सार्वदेशिक सभा से नहीं मिला था बल्कि उस फिल्म के निर्माण के लिए श्री वीरेन्द्र की सास जी द्वारा मेरे माध्यम से चैक द्वारा दिया गया था। अब लगभग दो वर्ष की चुप्पी के पश्चात इस बात की बिल्कुल आशा नहीं की थी कि इस फिल्म निर्माण का कोई विरोध करेगा और पं० शिवकुमार शास्त्री से तो इस बात की बिल्कुल आशा नहीं थी। इस फिल्म निर्माण के विरोध में एक पत्र नवभारत टाइम्स में प्रकाशित हुआ था जिसकी गलती से सार्वदेशिक सभा पत्र में भी प्रकाशित कर दिया गया था। जिसका अर्थ यह लिया गया होगा कि सम्भवतः सार्वदेशिक सभा भी फिल्म निर्माण के विरोध में है। सम्भवतः इसी से पं० शिवकुमार शास्त्री को ऐसा पत्र लिखने की प्रेरणा मिली होगी। और दीनानगर आर्यसमाज को भी इसके विरोध में प्रस्ताब पारित करने की प्रेरणा हुई होगी। मैं मानता हूं कि सही यह होगा कि इस फिल्म को जितना जल्दी हो सके उतना जल्दी पूरा कर दिया जाए। यह फिल्म स्वामी दयानन्द के विचारों का प्रचार-प्रसार करने का एक सही माध्यम होगी। इससे आर्य समाज का नाम भी संसार के सामने आ जाएगा।

14—रोहतक (हरियाणा) का एक व्यक्ति कुछ दिन पूर्व दूरदर्लन के कार्यक्रम में आया था और श्री नैयर को यह परामर्श दिया गया था कि उस व्यक्ति को स्वामी दयानन्द का पात्र करने के लिए अनुबंधित कर दिया जाए। वह किसी कारण उसे नहीं खोज सके। जिस किसी ने भी आचार्य भगवानदेव के स्वामी दयानन्द के पात्र में चित्र देखे हैं वह इस बात का अवश्य विश्वास करेंगे कि स्वामी दयानन्द का पात्र निभाने के लिए आचार्य भगवान देव सही व्यक्ति हैं।

15—मैं आशा करता हूं कि जिन लोगों ने यह विरोध किया है वे स्वामी दयानन्द द्वारा निर्धारित सिद्धांतों को अपने जीवन में चरितार्थ नहीं करते। हममें से कितने व्यक्ति अपनी आय का शतांश अथवा वार्षिक 250-/ रुपये आर्य समाज की सदस्यता के रूप में देते हैं। हममें से कितने आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संगों में जाते हैं और कितने दैनिक संध्या हवन अपने घरों में करते हैं। हममें से कितनों के बच्चे आर्यसमाज के कामों में रुचि लेते हैं। दूसरों की आलोचना करना आसान है पर जब बात हमारे ऊपर आती है तो पता चलता है कि विरोध करने वाले भी वास्तव में सही सिद्धान्तों का पालन नहीं करते हैं। अतः यह लोग आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में नवीनता एवं प्रगति लाने के पक्ष में नहीं है।

क्षमता साहस, साधना, संजय में सब श्रेष्ठ।
सदीपुराने घाघ भी, उसे न पायें मेट॥

महर्षि दयानन्द फिल्म बनाने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा श्री इन्द्र नैयर से कोर्ट में किए गए शर्तनामे की प्रतिलिपि

शर्तनामा (एग्रीमेण्ट)

यह शर्तनामा (एग्रीमेंट) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२ की ओर से इसके प्रधान द्वारा (वर्तमान प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले) पार्टी नं० 1 और श्री इन्द्र नैय्यर पुत्र श्री सांझीमल नैयर प्रो० नूफेड्स डाक्यूमैन्टरी फिल्म प्रोठ्यूसर 8 ए० अलकापुरी, उदयपुर (राजस्थान) पार्टी नं० 2 के बीच आज 31 मई 1980 को लिया गला है।

चूंकि पार्टी नं० 2 पिछले 25 वर्षों से फिल्म निर्माण का कार्य कर रही है और श्री नैय्यर न केवल आर्य समाज ही सम्बद्ध है अपितु उन्होंने अपने दादामह से आर्य समाज के संस्कार ग्रहण किए हैं। इसके अतिरिक्त उन्हें अपने बहनोई श्री कृष्णदत्त से जो कि श्रीमती सत्यबती के पति थे आर्यसमाज की बड़ी प्रेरणा मिली है।

चूंकि पार्टी नं० 1 की बहुत दिनों से यह अभिलाषा थी कि ३५ मि० मि० साइज में महर्षि दयानन्द की फिल्म बनाकर देश-देशान्तर में दिखाई जाए जिसका टायटिल महर्षि दयानन्द होगा और यह फिल्म गायत्री चित्र बम्बई से तैयार कराई जाएगी।

पार्टी नं० 2 ने उपरोक्त पार्टी नं० 1 की इच्छा पूर्ति के लिए फिल्म फाइनेन्स कारपोरेशन आफ इण्डिया शिवसागर स्टेट बम्बई की श्री एल० के० अडवानी (यू० पू० सूचना और प्रसारण मन्त्री भारत सरकार) के द्वारा प्रार्थना पत्र लोन के लिए भेजा था। श्री एल० के० अडवानी ने इस योजना को पसन्द किया था और फिल्म फाइनेन्स कारपोरेशन बम्बई के अध्यक्ष डा० पारीख को लोन देने के लिए सिफारिश की थी। पार्टी नं० 2 ने सरकारी नियमों के अनुसार नियत ब्याज पर रुपया उधार लेने की प्रार्थना की श्री।

पार्टी नं० 2 यह वात सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों के नोटिस में लाए। सभा के प्रधान और मन्त्री जी ने 9-10 फरवरी 1980 को उदयपुर में हुई सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग के अवसर पर वहां सभा के अधिकारियों की औपचारिक बैठक बुलाकर इस सम्बन्ध मैं चर्चा की थी। इसी सन्दर्भ में पार्टी नं० 2 ने सार्वदेशिक सभा से स्क्रिप्ट के कथा लेखन के लिए 30 हजार रुपये का लोन मांगा। यह प्रार्थना पत्र सार्वदेशिक सभा की 26-27 अप्रैल, 1980 को उज्जैन में हुई सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग में प्रस्तुत किया गया और उसमें विचार विमर्श के अनन्तर निश्चय सं० 11 (विषय सं० 10) के अर्न्तगत इस प्रार्थना को सिद्धान्ततः स्वीकार किया गया और सभा प्रधान जी को अधिकार दिया गया कि वे सभा के कानूनी सलाहकार से इस सम्बन्ध में शर्तनामा लिखायें और पार्टी नं० 2 उसे स्वीकार करे तो आगे की कार्यवाही करें।

अतः पार्टी नं० 1 की ओर से पार्टी नं० 2 को जो तीस हजार रुपया लोन दिया जाएगा वह 10 हजार रुपया पहली किस्त में और शेष बीस हजार रुपया 5-5 हजार की चार किस्तों में प्रथम 10 हजार देने के वाद दो माह के उपरान्त प्रतिमाह किस्तों में पार्टी नं० 2 को देगी।

पार्टी नं० 2 इस सुस्पष्ट वायदे के आधार पर एक्त लोन दी जा रही राशि को फिल्म फाइनेन्स आफ इण्डिया बम्बई से रुपया लोन मिलने पर पार्टी नं० 1 को लौटाएगी। अन्य परिस्थितियों में पार्टी नं० 2 द्वारा यह तीस हजार

खुदा के बन्दे तो हैं हजारों, वनों में फिरते हैं मारे मारे।
मैं उसका बन्दा बनूंगा, जिसको खुदा के बन्दों से प्यार होगा॥

रुपयों की समस्त राशि सन् 1981 के मध्य यानि जून 81 तक पार्टी नं० 1 को लौटानी होगी और पार्टी नं० 1 एक तक इस लोन पर कोई ब्याज नहीं लेगी।

पार्टी नं० 2 ने फिल्म स्क्रिप्ट (कहानी लेखन) का कार्य शुरू करा दिया है। इस कथानक की सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान द्वारा नियुक्त 5 सदस्यों के निरीक्षक मन्डल द्वारा व उसके बहुतम द्वारा स्वीकार कराना अनिवार्य होगा। जिससे कि आर्य समाज के सिद्धान्तों व 10 नियमों का उल्लंघन न होने पावे। जिस स्थान पर यह स्क्रिप्ट स्वीकृति के लिए दिखाई जाएगी वह दोनों पक्षों की वापसी सहमति से तय होगा, अन्यथा बम्बई में होगा।

पार्टी नं० 2 सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की या उसके आदेशानुसार अन्य किसी सभा या संस्था को उक्त फिल्म से शुद्ध आय का 10 प्रतिशत देगी और 10 प्रतिशत लाभांस दूसरी पार्टी नं० 2 की ओर से प्रथम पार्टी नं० 1 को हमेशा दिया जाता रहेगा। परन्तु यह भी शर्त है कि यदि पार्टी नं० 2 इस फिल्म को तीसरी पार्टी को बेचेगी तो उस पर पार्टी नं० 1 की अनुमति लेनी आवश्यक होगी और तीसरी पार्टी भी लाभांश पर 10 प्रतिशत पार्टी नं० 1 को देती रहेगी।

पार्टी नं० 2 या इस फिल्म को खरीदने वाले को बिना सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा पार्टी नं० 1 के लिखित अनुमति के उसमें कोई हेरफेर करने का अधिकार नहीं होगा। इस फिल्म पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का तब तक अधिकार बना रहेगा जब तक वह दिखाई जाती रहेगी और तब तक उसमें कोई घटा-बढ़ी नहीं होगी।

निःसन्देह पार्टी नं० 2 को इस फिल्म का कापीराइट प्राप्त रहेगा परन्तु यदि वह इस आधार पर कोई लाभ उठाएगी तो उस लाभ का 10वां भाग सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा यानि पार्टी नं० 1 को देना होगा।

यह फिल्म हिन्दी में बनेगी और यदि किसी अन्य भाषा में भी अनुदित होगी तो पार्टी नं० 1 की स्वीकृति लेनी अनिवार्य होगी। इसके लिए दोनों पार्टियों में शर्ततय होने पर ही यह कार्य होगा।

उपर्युक्त शर्तनामा के अन्तर्गत दस हजार रुपये का यूनियन बैंक आफ इण्डिया का बैंक ड्राफ्ट दिनांक 31-5-1980 प्रथम किस्त के रूप में पार्टी नं० 2 को दे दिया गया है जिसकी पृथक रसीद पार्टी नं० 1 ने प्राप्त कर ली है।

सितम्बर 1980 के प्रथम सप्ताह में निरीक्षक मण्डल की स्वीकृति के लिए फिल्म स्क्रिप्ट का हस्तलेख (कथानक) पार्टी नं० 2 को पूर्णतः तैयार करना अनिवार्य होगा और समय-समय पर सुझाए गए संशोधन को भी स्वीकार करना होगा। पार्टी नं० 2 समय-समय पर फिल्म स्क्रिप्ट पार्टी नं० 1 से प्रमाणित कराती रहेगी।

पार्टी नं० 2 : (इन्द्र नैय्यर)
प्रो० नूफैड्स डाक्यूमैण्टरी फिल्म

पार्टी नं० 1 : (रामगोपाल शालवाले)
प्रधान सार्वदेशिक सभा

साक्षी :

(1) ....

(2) ....

(3) ....

दा० मे०

तुमने अपने बलिदान से जवानों में फूँकी जान।
राष्ट्र को तुम्हारी कुर्बानी से, हुआ देश भक्ति का ज्ञान ॥

आचार्य भगवानदेव का सार्वदेशिक सभा के प्रधान को पत्र

श्रीयुत माननीय रामगोपाल शालवाले जी,

सप्रेम नमस्ते !

आपका दिनांक 13-11-1984 का पत्र यथा समय मिल गया था। फोन पर बात कर ही ली थी। प्रवास में रहने के कारण उत्तर देने में कुछ विलम्ब हुआ।

"महर्षि दयानन्द फिल्म" पर सार्वदेशिक सभा की मीटिंग में काफी चर्चा हुई थी और स्पष्टीकरण दे दिए गये थे। दैनिक उर्दू प्रताप के सम्पादक श्री के. नरेन्द्र को भी मैंने उत्तर दिया था।

1—महर्षि दयानन्द फिल्म में सिद्धांत के विरुद्ध कोई बात न आए इसका पूरा ध्यान रखा गया है।

2—फिल्म कोई व्यक्ति नहीं परन्तु संस्था बना रही है जो रजिस्टर्ड है।

3—मैं आपकी इस बात से सहमत हूं कि फिल्म तैयार हो जाने पर रिलीज करने से पूर्व आर्यसमाज के गणमान्य व्यक्तियों को दिखाकर ही रिलीज की जाय।

4—मैं तो बड़ा परिश्रम करके अपना तन-मन-धन लगाकर जो कार्य सभा को करना चाहिए; वह करने का प्रयास कर रहा हूं। जिसमें हर आर्य भाई-बहन तथा संस्था को सहयोग करना चाहिए। आप से भी सहयोग की अपेक्षा रखता हूं। यह असम्भव कार्य सम्भव करके दिखाना है।

सादर।

आपका

—भगवानदेव

मेराजे हयात है फना हों जाना, तकमीले वसाल है जुदा हो जाना ॥
उठ जाये अगर दिल से खुदा का पर्दा, इंसान का मुमकिन है खुदा हो जाना ॥

आचार्य भगवानदेव द्वारा पांच वर्ष के कार्यकाल में किये गये कार्यों का कुछ ब्यौरा

संसद में उपस्थिति ६८२ दिन

संसदीय राज्यभाषा समिति द्वारा किए गए केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के निरीक्षणों में उपस्थिति ३१५ दिन

वायुयान द्वारा अति आवश्यक कार्यों में उपस्थिति २१ दिन

केन्द्रीय मन्त्रियों के साथ अपने चुनाव क्षेत्र में २० दिन

विधान सभा चुनाव प्रचार हेतु व्यतीत किए गए दिन ३० दिन

पंचायतों के चुनावों में प्रचार हेतु व्यतीत किए गए दिन ३० दिन

२० सूत्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत पंचायत समिति के सरपंचों के प्रशिक्षण शिबिरों में उपस्थिति ७ दिन

पंचायत समितियों में सरपंचों द्वारा रखी गई बैठकों में उपस्थिति ७ दिन

मेलों में उपस्थिति

पुष्कर, उर्स, तेजाजी मेला व्याबर, बालाजी मेला किशनगढ़ एवं अन्य ऐतिहासिक उत्सवों में उपस्थिति ३० दिन

विभिन्न चिकित्सा शिविरों में

उपस्थिति - २१ दिन

विभिन्न समुदायों में

मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, आर्य समाज, जैन समाज, सिन्धी समाज, बौद्ध समाज, अम्बेडकर जयन्ती, गुर्जर समाज, राधास्वामी. जाट समाज, अनुसूचित जाति के रेगर, कोली, सांसी, कंजर भीलमीणा, आदि में उपस्थिति ६५ दिन

श्री शिबचरण माथुर की सरकार के ३ वर्ष पूरे होने पर पंचायत समिति शिविरों में २० सूत्रीय कार्यक्रम की क्रियान्वित पर उपस्थिति ७ दिन

विभिन्न चिकित्सा शिविरों में उपस्थित २१ दिन

जनता की विभिन्न समस्याओं के निवारण हेतु रेलवे, रोडवेज, अस्पताल. नगर परिषद् नगर सुधार न्यास, डाक तार, एच. एम टी. दुग्ध डेयरी, रसद विभाग, प्रशासन अधिकारीगणों से मुलाकात, पुलिस विभाग, जल विभाग, हैंडपम्प विभाग, जिला परिषद् आदि विभागों में उपस्थिति १३७ दिन

तीन बार विदेश यात्रा

१—विदेश में संसदीय राज्य भाषा समिति का नीचे दिए गए स्थानों पर दौरा इटली, इंग्लैण्ड, अमेरिका, कनाडा, यूनान, कीनिया, सीसल्स मोरीशस आदि में उपस्थिति ३० दिन

२ – विश्व सिन्धी सम्मेलन सम्बन्धी विदेश दौरा हांगकांग, सिंगापुर, इन्डोनेशिया, दुबई, लन्दन में उपस्थिति १० दिन

३ विश्व आर्य समाज महासम्मेलन लन्दन में उपस्थिति ७ दिन

लघुता से प्रभुता मिले, प्रभुता से प्रभु दूर।
चींटी मिस्री खात है, हस्ती खावत धूल॥

साढ़े चार वर्ष के कार्यकाल में

आचार्य भगवानदेव सांसद द्वारा किये गये कार्य

का

कुछ लेखा जोखा

सातवीं लोकसभा में उपस्थिति

सत्र	समय अवधि	सत्र के कुल दिन
प्रथम सत्र	२१-१-१९८० से २-२-१९८०	१३
द्वितीय सत्र	११-३-१९८० से २८-३-१९८०	१८
तृतीय सत्र	९-६-१९८० ने १२-८-१९८०	६५
चतुर्थ सत्र	१७-११-१९८० से २३-१२-१९८०	३७
पंचम सत्र	१६-२-१९८१ से ९-५-१९८१	८३
षष्ठ सत्र	१७-८-१९८१ से १८-९-१९८१	३३
सप्तम सत्र	२३-११-१९८१ से २५-१२-१९८१ [१० बजे]	३३
अष्टम सत्र	१८-२-१९८२ से ३०-४-१९८२	७२
नवम् सत्र	८-७-१९८२ से १६-८-१९८२	४०
दशम् सत्र	४-१०-१९८२ से ५-११-१९८२	३३
एकादशसत्र	१८-२-१९८३ से १०-५-१९८३	८२
द्वादश सत्र	२५-७-१९८३ से २६-८-१९८३	३३
त्रयोदश सत्र	१५-११-१९८३ से २२-१२-१९८३	३०

नोट—पांच वर्षों में सिर्फ १३ दिन—अति आवश्यक कार्यों से गैरहाजिर रहे।

आचार्य भगवानदेव सांसद द्वारा देश भर के विभिन्न सरकारी गैर सरकारी कार्यक्रमों में वायुयान द्वारा किए गए भ्रमणों का विवरण।

दिनांक	से	तक	दिनांक	से	तक
१६-३-८०	दिल्ली	बम्बई	१३-१-८१	जयपुर	दिल्ली
११-४-८०	दिल्ली	जयपुर		कलकत्ता	दिल्ली
१८-४-८०	दिल्ली	पटना	३०-१-८१	दिल्ली	हैदराबाद
१९-४-८०	पटना	दिल्ली		हैदराबाद	दिल्ली
२१-४-८०	जयपुर	दिल्ली	३-२-८१	बम्बई	बंगलौर
१६-६-८०	बम्बई	अहमदाबाद	८-२-८१	दिल्ली	अहमदाबाद
३०-११-८०	दिल्ली	बम्बई	९-२-८१	अहमदाबाद	दिल्ली
	बम्बई	दिल्ली	१-४-८१	दिल्ली	बम्बई
६-१-८०	दिल्ली	कलकत्ता		बम्बई	दिल्ली
११-१-८०	कलकत्ता	दिल्ली	१-४-८१	दिल्ली	पटना
	दिल्ली	जयपुर		पटना	दिल्ली

भूखे को कुछ दीजिये, यथाशक्ति जो होय।
शीत वचन मुख से कहो, लखो आत्मा सोय॥

दिनांक	से	तक	दिनांक	से	तक
१८-४-८१	दिल्ली	बम्बई	१६-१०-८२	मद्रास	दिल्ली
२३-५-८१	बम्बई	कोचीन	२२-१०-८२	दिल्ली	अहमदाबाद
२६-५-८१	कोयंबटूर	दिल्ली	२२-१०-८२	अहमदाबाद	दिल्ली
१६-७-८१	दिल्ली	बम्बई	४-११-८२	दिल्ली	बम्बई
	बम्बई	दिल्ली	५-११-८२	बम्बई	दिल्ली
२२-८-८१	दिल्ली	बम्बई	१२-१२-८२	जयपुर	बम्बई
२३-८-८१	बम्बई	दिल्ली	१२-१२-८२	बम्बई	जयपुर
१३-९-८१	दिल्ली	हैदराबाद	३-१-८३	जयपुर	दिल्ली
	हैदराबाद	दिल्ली	४-१-८३	दिल्ली	बम्बई
१५-१०-८१	दिल्ली	बम्बई	११-१-८३	बम्बई	दिल्ली
२८-१०-८१	बम्बई	मद्रास	६-२-८३	दिल्ली	टिरची
१९-१०-८१	बम्बई	दिल्ली	१३-२-८३	त्रिवेन्द्रम्	दिल्ली
६-११-८१	दिल्ली	बम्बई	२६-२-८३	दिल्ली	बम्बई
६-११-८१	बम्बई	दिल्ली	२७-२-८३	बम्बई	दिल्ली
१६-१२-८१	दिल्ली	जययुर	१३-३-८३	दिल्ली	जयपुर
	जयपुर	दिल्ली	१५-३-८३	जयपुर	दिल्ली
२२-१२-८१	दिल्ली	बम्बई	१६-६-८३	दिल्ली	बम्बई
२६-१२-८१	बम्बई	दिल्ली	१६-७-८३	दिल्ली	श्रीनगर
२३-१२-८१	दिल्ली	बम्बई	१८-७-८३	श्रीनगर	जम्मू
७-१-८२	दिल्ली	बम्बई	१९-७-८३	जयपुर	दिल्ली
७-१-८२	बम्बई	दिल्ली	२९-७-८३	दिल्ली	बम्बई
२०-१-८२	दिल्ली	बम्बई	१-८-८३	बम्बई	दिल्ली
२२-१-८२	बम्बई	दिल्ली	९-८-८३	दिल्ली	बम्बई
३-२-८२	दिल्ली	बम्बई	१२-८-८३	बम्बई	दिल्ली
४-२-८२	बम्बई	दिल्ली	३-९-८३	दिल्ली	कलकत्ता
६-२-८२	दिल्ली	मद्रास	४-९-८३	कलकत्ता	इम्फाल
११-२-८२	मद्रास	बम्बई	७-९-८३	गोहाटी	दिल्ली
१९-२-८२	दिल्ली	बम्बई	१-१२-८३	दिल्ली	अहमदाबाद
१९-२-८२	बम्बई	दिल्ली	२-१२-८३	अहमदाबाद	दिल्ली
२०-२-८२	बम्बई	दिल्ली	१५-१२-८३	दिल्ली	हैदराबाद
१०-४-८२	बम्बई	दिल्ली	१७-१२-८३	हैदराबाद	दिल्ली
५-९-८२	इन्दौर	बम्बई	१८-१२-८३	दिल्ली	मद्रास
६-९-८२	बम्बई	इन्दौर		मद्रास	दिल्ली
९-१०-८२	दिल्ली	बम्बई	५-१-८४	दिल्ली	बम्बई
	बम्बई	दिल्ली		बम्बई	दिल्ली
१४-१०-८२	दिल्ली	मद्रास	१४-१-८४	बंगलौर	दिल्ली

चिन्ता ताकी कीजिये, जो अनहोनी होय ।
इस मार्ग संसार में, नानक थिर नहिं कोय ॥

Great men are meteors designed to burn, so that Earth may be lighted.

Apoorva Lochan
New Delhi-110065

The following passage is also dedicated to such a man who has spent his life working for the betterment of humanity.

"Uncleji" as I call Acharya Bhagwandev ji has been known to me for the past 12 years, since I was only 8 years old. His life had always fascinated me, of how he had set out at a tender age of 16 and through sher hard work he has risen to dizzy heights. Whenever I think of his life, the following lines flash across my brain :

"Man is The baystain of his fate,
Master of his Luck and
Builder of his Destiny."

I had the opportunity of meeting and corversing with Uncleji quite often and I always felt that he is a very practical man and never prcaches what he himself has not practised.

Like a true Arya Samaji, he is ardently against cow-slaughter and looks upon her as a Mother and he really has strong sentiments on this matter. His feelings can be gleamed through the following incident which occurred 11 years back.

We were sitting in our house in Maharani Bagh when the wail of an animal reached our ears. On going out of the house, we saw that a cow, who was intending to jump over the closed gates of the park, had failed to clear gates and had fallen on the spear shaped spikes of the gate, which had pierced 4 to 5 inches inside the body of the cow and she was stuck. Obviously she was in great pain and streams of blood were flowing. Many people who claimed to be "Cow-Worshippers", were, witnessing the whole drama with interest, at a safe distance from the wailing cow.

Uncleji, moved by the sorry plight of "Mother Cow", rushed to her rescue. He called for a steel ladder from our house and keeping it under the cow, single handedly hoisted the cow clear of the gate. So great was his strength, as he was a "True-Brahmachari." The incident clearly illustrates his total devotion to cow worship."

Unclcji always lead an honest life and his path of righteousness is maintained even after he was elected as M.P. in 1980. If he wanted he could have minted money and swelled up his bank balance to the tune of lacs of rupees, but as he did not believe in making money the wrong way, he did no such thing and I am sure that there is not a single paisa of hoarded money through unfair means in his life.

I just pray that, "God give India people like him so that our country would be on road to success and prosperity.

"Like a Star"
That makes no Haste,
That takes no rest,
But he Keeps fulfilling
His God given Hest."

सख्ती से दब सकेगा न हिन्दोस्तां फलक ।
लोहे का यह चना है चबाया न जाएगा ।।

आचार्य भगवानदेव सांसद द्वारा

संसदीय राजभाषा तीसरी समिति

के

अध्यक्ष होने के नाते देश के विभिन्न केन्द्रीय सरकार के विभागों का निरीक्षण

१६-२-८०	क्षेत्रीय कार्यालय, भारतीय स्टेट बैंक नई दिल्ली।
१८-२-८०	देना बैंक (मुख्यालय) बम्बई।
२१-२-८०	क्षेत्रीय नियंत्रक, भारतीय खान ब्यूरो पणजी।
,,	भारतीय स्टेट बैंक तथा बैंक आफ बड़ौदा पणजी
२२-२-८०	मार्मोगा पोर्ट ट्रस्ट मार्मागा
२४-२-८०	होटल सन्तूर तथा होटल कारपोरेशन आफ इण्डिया बम्बई
२६-२-८०	राष्ट्रीय वस्तर निगम, नई दिल्ली
२८-२-८०	आई. डी. पी. एल. गुड़गांव
१६-४-८०	प्रोजेक्टस कन्स्ट्रक्शन कारपोरेशन दिल्ली
१७-४-८०	भारतीय मानक संस्थान, नई दिल्ली
,,	केनरा बैंक (मंडलीय कार्यालय) नई दिल्ली
१८-४-८०	आयकर आयुक्त पटना
,,	रिजर्व बैंक पटना
१९-४-८०	महालेखाकार-२ पटना
,,	केन्द्रीय उत्पाद पटना
,,	सेन्ट्रल बैंक, पटना
२१-४-८०	रक्षा लेखा नियंत्रक, पटना
,,	माइका कारपोरेशन, पटना
,,	होटल पाटिलपुत्र अशोक, पटना
२२-४-८०	भारत रिफ्रेक्टरीज लिमिटेड, बोकारो (रांची में बैठक)
,,	बोकारो स्टील प्लांट (रांची में बैठक)
२३-४-८०	मेटलरजीकल एण्ड इन्जीनियरिंग कंस्लटेंटस इण्डिया लिमिटेड रांची
,,	सदस्य, लेखापरीक्षा बोर्ड, एवं पदेयन निदेशक वाणिज्यक लेखा परीक्षा, रांची
,,	आर, एण्ड डी. स्टील अथारिटी आफ इण्डिया लिमिटेड रांची

क्षमता, साहस, साधना, आचार्य में सर्व श्रेष्ठ,
सभी पुराने घाघ भी, उसे न पाये भेद।

२४-४-८०	हैवी इन्जीनियरिंग कारपोरेशन
"	रांची सेन्ट्रल कोल फील्ड रांची
२५-४-८०	महालेखाकार-१ रांची
२६-४-८०	डॉ. राम मनोहर लोहिया हास्पीटल, दिल्ली
२६-४-८०	भारत हैवी इलेक्ट्रीकल्स लिमिटेड, दिल्ली
८-५-८०	सम्पदा निदेशालय, दिल्ली
"	भारत एल्मीनियम कम्पनी लिमिटेड, दिल्ली
६-५-८०	सांख्यिकी विभाग, दिल्ली-२
"	सेन्ट्री कावेज इन्डस्ट्रीज कारपोरेशन आफ इन्डिया, लिमिटेड, दिल्ली
२-६-८०	मुख्य श्रम आयुक्त दिल्ली
३-६-८०	भंडार मंडल, (सीमा सड़क महानिदेशालय) पठानकोट
३-६-८०	पश्चिम बेस वर्कशाप (सीमा सड़क महानिदेशालय) पठानकोट
४-६-८०	बैंक आफ इन्डिया } धर्मशाला
४-६-६०	भारतीय स्टेट बैंक } धर्मशाला
५-६-८०	पंजाब नेशनल बैंक, धर्मशाला
६-६-८०	ओरियंटल फायर एण्ड जनरल इन्श्योरेंस कम्पनी लिमिटेड
२६-८-८०	भारत अन्तर्राष्ट्रीय विमानन पतन प्राधिकरण, दिल्ली
२७-८-८०	आयकर आयुक्त, (१, २, ३,) हैदराबाद
"	महालेखाकार का कार्यालय हैदराबाद
"	आन्ध्रा बैंक प्रधान कार्यालय हैदराबाद
२८-८-८०	टकसाल मास्टर का कार्यालय हैदराबाद
"	नेशनल मिनिरलस डिवलेपमेंट कारपोरेशन लिमिटेड, हैदराबाद
"	भारत हैवी इलेक्ट्रीकल्स लिमिटेड, हैदराबाद
२६-८-८०	महानिदेशालय, तकनीकी विकास, दिल्ली
"	नेशनल थरमल पावर लिमिटेड, दिल्ली
३१-१०-८०	इण्डियन एयर लाइन्स नई दिल्ली
१-११-८०	नौवाहन तथा परिवहन मंत्रालय दिल्ली
"	केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग, दिल्ली
३-११-८०	राष्ट्रीय बचत आयुक्त, नागपुर
"	आई. आर. एस. (डी. अटी) स्टाफ कालेज नागपुर
४-११-८०	विस्फोटक सामग्री विभाग, नागपुर
"	मैंगनीज ओर (इण्डिया) लिमिटेड, नागपुर
५-११-८०	वेस्ट्रन कोल फील्डस लिमिटेड, नागपुर
"	बैंक आफ महाराष्ट्र मंडल कार्यालय नागपुर

कांटों से घिरा रहता है, चारों तरफ से फूल।
फिर भी खिला ही रहता है, क्या खुश मिजाज है ।।

५-१-८१	रसायन और उर्वरक विभाग, दिल्ली	
,,	बैंक आफ महाराष्ट्र, अंचल कार्यालय, दिल्ली	
६-१-८१	औद्योगिक विकास विभाग, नई दिल्ली	
,,	पंजाब व सिंध बैंक, प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली	
७-१-८१	भारतीय भू वैज्ञानिक सर्वेक्षण कलकत्ता	
,,	लेखन सामग्री नियंत्रक का कार्यालय कलकत्ता	
,,	हिन्दुस्तान पेपर कारपोरेशन लिमिटेड, कलकत्ता	
८-१-८१	हिन्दुस्तान कापर लिमिटेड, कलकत्ता	
,,	समाहार्ता केन्द्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क, कलकत्ता	
,,	नेशनल इन्शोरेयन्स कम्पनी लिमिटेड, कलकत्ता	
९-१-८१	स्टेड बैंक आफ इण्डिया, पोर्ट ब्लेयर	
,,	मौसम विभाग कार्यालय	-वही-
,,	बोटेनीकल सर्वे आफ इंडिया	-वही-
,,	उप-निदेशक आडिट	-वही-
१२ १-८१	डायरेक्टर आफ लाइट हाऊस एण्ड लाइटशिप	-वही-
,,	आफिस आफ दी प्रिंसीपल इन्जीनियर (ड्राई-डाक एण्ड मेरीन) पोर्ट ब्लेयर	
१३-१-८१	एयर पोर्ट होटल कलकत्ता,	
१३-१-८१	भारतीय अन्तर्राष्ट्रीय विमान पतल प्राधिकरण, कलकत्ता	
१४-१-८१	व्यय विभाग, नई दिल्ली	
,,	ओरिन्यटल बैंक, आफ कामरस, नई दिल्ली	
१५-१-८१	कोयला विभाग, नई दिल्ली	
,,	न्यू बैंक आफ इण्डिया, दिल्ली	
२७-१-८१	सेन्ट्रल बोर्ड आफ डायरेक्टर टैक्स दिल्ली	
,,	सेन्ट्रल बोर्ड आफ इनडायरेक्ट् टेक्स दिल्ली	
,,	भारत पर्यटन विकास निगम, दिल्ली	
२८-१-८१	एन. टी सी. लिमिटेड, नई दिल्ली	
३०-१-८१	नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक के अधीन कार्यालय बम्बई	
,,	काटन कारपोरेशन आफ इण्डिया, बम्बई	
,,	एयर इण्डिया मुख्यालय, बम्बई	
३१-१-८१	संहारता केन्द्रीय उत्पाद तथा सीमा शुल्क बम्बई	
,,	युनिटट्रस्ट आफ इण्डिया, बम्बई	
,,	भारतीय रिजर्व बैंक बम्बई	
२-२-८१	जहाजरानी महानिदेशालय, बम्बई	
,,	जनरल इन्शोरेयन्स कारपोरेशन बम्बई	
,,	न्यू इण्डिया इन्शोरेयन्स कारपोरेशन बम्बई	
,,	यूनाइटेड इण्डिया फायर एण्ड जनरल इन्शोरेन्स कम्पनी लिमिटेड बम्बई	

कभी इमदाद दी तूने, किसी बेकस विचारे को।
सुखी बनकर दिया तूने, मुफलिस के गुजारे को॥

३-२-८१ भारत हैवी इलैक्ट्रीकल्स लिमिटेड; बंगलौर
" स्टेट बैंक आफ मैसूर, बंगलौर
४-२-८१ इन्डियन ओवरसीज बैंक क्षेत्रीय कार्यालय बंगलौर
" एन. टी. सी. लिमिटेड, बंगलौर
" विजया बैंक मुख्यालय बंगलौर
५-२-८१ एच. एम. टी. लिमिटेड तथा एच. एम. टी. इन्टरनेशनल लिमिटेड, बंगलौर
" अशोक होटल, बंगलौर
६-२-८१ एल. एम. पी. होटल, मैसूर
" सिंडीकेट बैंक स्टाफ ट्रेनिंग कालेज, मैसूर
" केन्द्रीय खाद तकनीकी अनुसंधान संस्थान, मैसूर
७-२-८१ नियंत्रक एवं लेखापरीक्षक, दिल्ली
९-२-८१ पर्यटन एवं नागरिक विमानन मंत्रालय
" पंजाब नेशनल बैंक मुख्यालय, नई दिल्ली
२०-५-८१ नागरिक आपूर्ति विभाग, दिल्ली
" स्टील अथारिटी आफ इण्डिया लिमिटेड, दिल्ली
२१-५-८१ भारतीय अन्तर्राष्ट्रीय विमान पतनन प्राधिकरण, बम्बई
२२-५-८१ कारपोरेशन बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, कोचीन
" कापर बोर्ड, कोचीन
" मैराइन प्राडक्टस एक्सपोर्ट डिवलेपमेंट अथारिटी, कोचीन
२३-५-८१ केमीकल एवं फरटीलाईजर, ट्रावनकोर लिमिटेड, कोचीन
" कोचीन ट्रस्ट पार्ट, कोचीन
२५-५-८१ भारत सरकार मुद्रणालय, कोयम्बटूर (बैठक ऊंटी में)
" एन. टी. सी. कोयम्बटूर (मीटिंग ऊंटी में)
२६-५-८१ हिन्दुस्तान फोटो फिल्मस मै० कारपोरेशन, ऊंटी
२८-५-८१ इस्पात विभाग, नई दिल्ली
" न्यू बैंक आफ इन्डिया, मुख्यालय, दिल्ली
२९-५-८१ आयात व निर्यात के मुख्य नियंत्रक का कार्यालय, दिल्ली
" इलाहाबाद बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, नई दिल्ली
८-६-८१ इण्डियन आयल कारपोरेशन, नई दिल्ली
९-६-८१ खान विभाग, नई दिल्ली
" हिन्दुस्तान इन्सेक्टीस एण्ड लिमिटेड, दिल्ली
८-७-८१ मुद्रण निदेशालय, दिल्ली
" ग्रामीण विद्युतीकरण निगम लिमिटेड, दिल्ली
९-७-८१ विज्ञान और प्रौद्योगीकरण विभाग, दिल्ली
" यूनाइटेड कामर्शियल बैंक (मंडलीय कार्यालय) दिल्ली

चिन्ता वाकी कीजिये, जो अनहोनी हो।
अनहोनी होनी नहीं, होनी हो सो हो॥

१२. इन्डियन ओवरसीज बैंक (प्रभाग कार्यायल) नई दिल्ली	१४-११-१९८१
१३. सिडीकेट बैंक (आंचलिक कार्यालय) नई दिल्ली	१२-१-१९८२
१४. बैंक आफ इन्डिया (आंचलिक कार्यालय) नई दिल्ली	१६-१-१९८२
१५. इन्डियन ओवरसीज बैंक (केन्द्रीय कार्यालय) मद्रास	९-२-१९८२
१६. इन्डियन वैंक (मुख्यालय) मद्रास	९-२-१९८२

राजस्व विभाग

१. आयकर आयुक्त, आगरा	२९-८-१९८१
२. आयकर आयुक्त इलाहाबाद	३०-९-१९८१
३. समार्हता केन्द्रीय उत्पाद तथा सीमा शुल्क अहमदाबाद	२२-१०-१९८१
४. पवर्तन निदेशालय, नई दिल्ली	१४-११-१९८१
५. राजस्व विभाग, नई दिल्ली	१६-१-१९८२
६. समाहर्ता सीमा शुल्क समाहर्ता केन्द्रीय उत्पाद, मद्रास	९-२-१९८२

रक्षा प्रभाग

१. रक्षा लेखा नियंत्रक (पेन्शन) इलाहाबाद	३०-९-१९८१

वाणिज्य मंत्रालय

१. वाणिज्य मंत्रालय, नई दिल्ली	१३-१०-१९८१

नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक

१. महालेखाकार १, ११ व १११ इलाहाबाद	१-१०-१९८१

उद्योग मंत्रालय

औद्योगिक विकास विभाग

१. सीमेंट कारपोरेशन आफ इण्डिया लि० नई दिल्ली	१२-८-१९८१
२. राष्ट्रीय डिजाइन्स संस्थान अहमदाबाद	२१-१०-१९८१
३. विकास आयुक्त (लघु उद्योग) का कार्यालय, नई दिल्ली	११-२-१९८२

भारी उद्योग विभाग

१. भारत पम्पस और कम्प्रैसेज लि० इलाहाबाद	१-१०-१९८१
२. त्रिवेणी स्ट्रक्चरलस लि० इलाहाबाद	१-१०-१९८१
३, भारी उद्योग विभाग, नई दिल्ली	१४-१०-१९८१

पेट्रोलियम, रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय

पेट्रोलियम विभाग

१. हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कारपोरेशन लि० बम्बई	१९-१०१९८१
२. भारत पेट्रोलियम कार्पो. लि० बम्बई	१६-१०-१९८१
३. इन्डियन आयल कार्पो. (मार्केटिंग डिविजन) बम्बई	१९-१०-१९८१
४. गुजरात रिफाइनरिंज, वदोदरा	२०-१०-१९७१
५. इंडियन पेट्रोकेमिकल्स कार्पो. लि० वडोदरा	२०-१०-१९८१

मैत्री जागी बुद्ध में अतिलुत अमिट संसार।
हम में भी जागे जरा, तो पाएँ सुख सार।।

६. तेल तथा प्राकृतिक गैस आयोग (अहमदाबाद परियोजना) अहमदाबाद — २२-१०-१९८१

७. पेट्रोलियम विभाग, नई दिल्ली — १३-११-१९८१

८. इन्जीनियर्स इन्डिया लि० नई दिल्ली — १३-१९८१

९. मद्रास रिफाईनरीज, मद्रास — ८-२-१९८२

१०. इन्डो वर्मा पेट्रोलियम कार्पो०, नई दिल्ली (तेल तथा रसायन विभाग) — ११-२-१९८२

रसायन और उर्वरक विभाग

१. फर्टिलाईजर्स कार्पो. आफ इंडिया लि० नई दिल्ली — २२-९-१९८१

२. मद्रास फर्टीलाइजर्स लि० मद्रास — ८-२-१९८२

नौवहन और परिवहन मन्त्रालय

१. शिपिंग कार्पो. आफ इन्डिया, मद्रास — १७-१०-१९८१

२. मद्रास पोर्ट ट्रस्ट, मद्रास — १०-२-१९८२

पर्यटन एवं नागर विमानन मन्त्रालय

१. मौसम विज्ञान विभाग, नई दिल्ली — ११-८-१९८१

निर्माण और आवास मन्त्रालय

२. मुख्य अभियन्ता, केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग, बम्बई — १७-१०-१९८१

ऊर्जा मन्त्रालय

विद्युत विभाग

१. केन्द्रीय विद्युत प्राधिकरण, नई दिल्ली — २४-१०-१९८१

२. नेशनल हाईड्रो इलैक्ट्रीक पावर कार्पो. लि० नई दिल्ली — १२-११-१९८१

परमाणु ऊर्जा मन्त्रालय

१. परमाणु ऊर्जा विभाग, बम्बई — १७-१०-१९८१

इलैक्ट्रीक विभाग

१, इलैक्ट्रोनिक्स ट्रेड एण्ड टैक्नोलोजी डि कार्पो. लि० नई दिल्ली — १३-१०-१९८१

२. इलैक्ट्रोनिकी विभाग, नई दिल्ली — १५-१०-१९८१

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा अगस्त १९८१ के बाद लिए गए साक्षयों की सूची

२-११-१९८१

१. श्री एम. के. मुखर्जी, सचिव, निर्माण और आवास मन्त्रालय

२. श्री पी. एस. अप्पू, निदेशक, लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय अकादमी, मंसूरी

३. श्रीमती इन्द्रजीत कौर, अध्यक्ष कर्मचारी चयन आयोग, नई दिल्ली

३-११-१९८१

१. श्री मोहिन्द्र सिंह, सचिव, नौवहन और परिवहन मंत्रालय

२. ले० जनरल एस० थोमक, कमांडेन्ट, भारतीय मिलट्री अकादमी, देहरादून

श्री बी. एम. यादव निदेशक, सचिवालय प्रशिक्षण तथा प्रबन्ध संस्थान, नई दिल्ली

निज करनी सुधरी नहीं, करी पराईआश।
धर्म-चक्र छूटा, बंधा लोक चक्र के पाश॥

१०-७-८१	योजना आयोग, दिल्ली
,,	जीवन बीमा निगम, नई दिल्ली
२५-७-८१	बैंकिंग सेवा भर्ती बोर्ड, नई दिल्ली
,,	भारतीय स्टेट बैंक, स्थानीय प्रधान कार्यालय, दिल्ली
११-८-८१	मौसम विज्ञान विभाग, नई दिल्ली
,,	यूनाइटेड बैंक आफ इण्डिया, क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली
१२-८-८१	आखिल भारतीय आर्युविज्ञान संस्थान, दिल्ली
,,	सीमेंट कारपोरेशन आफ इन्डिया, नई दिल्ली

१ जनवरी, १९८० से १५ अगस्त, १९८१ तक संसदीय राजभाषा समिति की बैठक
साक्ष्य सम्बन्धी बैठकों की सूची

१. संसदीय राजभाषा समिति की बैठकें :--

१. ७-४-१९८०

२. १०-४-१९८१

२. साक्ष्य सम्बन्धी बैठकें :—

१. १५-६-१९८१ से १९-६-१९८१ (५ दिन)

२. १३-७-१९८१ से १७-७-१९८१ (५ दिन)

३. २७-७-१९८१ से ३१-७-१९८१ (५ दिन)

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा अगस्त, १९८१ से जून १९८२ तक निरिक्षित किए गए कार्यालयों की सूची

वित्त मंत्रालय

१. आर्थिक कार्य विभाग, नई दिल्ली	२६-१०-१९८१
२. यूनाइटेड इन्डिया इन्शोरेन्स कं० लि० मद्रास	१०-२-१९८२

आर्थिक कार्य विभाग, (बैंकिग प्रभाग)

१. सेन्ट्रल बैंक आफ इन्डिया (प्रभाग कार्यालय) आगला	२९-८-१९८१
२. इलाहाबाद बैंक (क्षेत्रीय कार्यालय) इलाहाबाद	३०-९-१९८१
३. सेन्ट्रल केनरा बैंक (प्रभाग कार्यालय) आगरा	२९-८-१९८१
४. सेन्ट्रल बैंक आफ इन्डिया (क्षेत्रीय कार्यालय) नई दिल्ली	१५-१०-१९८१
५. यूनियन बैंक आफ इन्डिया (मुख्यालय) बम्बई	१६ १०-१९८१
६. भारतीय औद्योगिक विकास बैंक, बम्बई	१७ १०-१९८१
७. भारतीय स्टेट बैंक (मुख्यालय) बम्बई	१७-१०-१९८१
८. बैंक आफ बड़ौदा (आंचलिक कार्यालय) अहमदाबाद	२१-१०-१९८१
९. सिंडीकेट बैंक (प्रभाग कार्यालय) अहमदाबाद	२२-१०-१९८१
१०. ओरिन्टयल बैंक आफ कामर्स (मुख्यालय) दिल्ली	२४-१०-१९८४
११. इन्डियन बैंक (क्षेत्रीय कार्यालय) दिल्ली	१४-११-१९८१

करुणा जागी बुद्ध में, अतुलित अमित अपार।
हम में भी जागे जरा, तो पाएं सुख सार ॥

४-११-१९८१

१. श्री एस. पी. मुखर्जी सचिव, कृषि विभाग
   डा. ओ. पी. गौतम, सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग

२. एयर मार्शल एम. जे. धोतीवाला, कमांडेट, राष्ट्रीय प्रतिरक्षा अकादमी, खड़गवासलार, पुणे

५-११.१९८१

१. श्री एम. एल. शहारे, संघ लोक सेवा आयोग

२. एयर मार्शल एम. जे. धोतीवाला, कमांडेट, वायुसेना अकादमी हैदराबाद

६-१-१९८२

१. श्री एस. श्री निवासन, निदेशक डाक स्टाफ कालेज, नई दिल्ली

२. श्री के. राममूर्ति, महानिदेशक, सीमा सुरक्षा बल

३. कैप्टन डी. डी. मोहिन्द्रा, नौसेना अकादमी, कोचीन

७-११-१९८१

१. श्री इन्द्रा सहाय प्रचानाचार्य रेलवे स्टाप कालेज, बड़ोदरा

४-१-१९८२

१. श्री अ. कु. मजुमदार, सचिव, नागरिक पूर्ति मंत्रालय

२. श्री बी. जी. देशमुख, सचिव श्रम मंत्रालय

५-१-१९८२

१. श्री टी. एन. चतुर्वेदी, सचिव, गृह मन्त्रालय
   श्री ए. सी. बंघोपाध्याय, सचिव, कार्मिक और प्रशासनिक सुधार विभाग

२. श्री टी. अंजैया मुख्यमन्त्री, आन्ध्र प्रदेश

६-१-१९८२

१. श्री एस. एम. घोष, सचिव, औद्योगिक विकास विभाग
   श्री जे. वी. कपूर, सचिव, भारी उद्योग विभाग

२. श्री बी. सी. माथुर, सचिव, पूर्ति और पुनर्वास मंत्रालय

३. डा. एच. एन. सेठना, प्रमुख सचिव, परमाणु ऊर्जा विभाग

७-१-१९८२

१. श्री एस. एस. सिद्ध, सचिव, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय

२. श्री सी. सी. पटेल, सचिव, सिंचाई मंत्रालय

३. डा. प्रेम प्रकाश गुप्ता, सचिव, इलैक्ट्रोनिक्स विभाग

८-१-१९८२

१. श्री लव राजकुमार, सचिव, पैट्रोलियम विभाग
   श्री के. वी. रामनाथन, सचिव, रसायन और उर्वरक विभाग

२. श्री सुशील चन्द्र वर्मा, सचिव, ग्रामीण पुर्ननिर्माण मंत्रालय

चमन इस वतन का उजड़ने न पाये।
बागबां बन इस चमन का ख्याल रखना॥

१८-१-१९८२

१. डा. आई. जी पटेल, गवर्नर, भारतीय रिजर्व बैंक

२. प्रो. एम. जी. के. मेनन, सचिव, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विज्ञान

३. डा. बी. वैंकटरमण, सचिव, पर्यटन व नागर विमानन मंत्रालय

१९-१-१९८२

१. श्री आर. वी. एस. पैरिशास्त्री, सचिव, विधायी विभाग

२. श्री के. एस. भटनागर, सचिव, कम्पनी कार्य विभाग

२०-१-१९८२

१. श्री एस. बी. लाल, सचिव, सूचना व प्रसारण मंत्रालय

२. प्रो. सतीश धवन, सचिव, अंतरिक्ष विभाग

२१-१-१९८२

१. शिक्षा मंत्री, तमिलनाडु

२. श्री आबिद हुसैन, सचिव, वाणिज्य विभाग
श्री ए. के. दत्त, सचिव, वस्त्र विभाग

२२-१-१९८२

श्री ए. के. घोष, सचिव, संचार मंत्रालय

२. श्रीमती सरला ग्रेवाल, सचिव, समाज कल्याण मंत्रालय

३. श्री नरसिंह भन्डारी, मुख्यमन्त्री, सिक्किम

२३-१-१९८२

१. श्री टी. आर. सतीशचन्द्रन, सचिव, विद्युत विभाग

२. श्री राजेन्द्र त्रिपाठी, राज्यमंत्री उत्तर प्रदेश

१-२-१९८२

१. श्री पी. बी. वेंकटसुब्रामनियम, सचिव, विधि कार्य विभाग

२. श्री के. एन. कृष्णन, सचिव, संसदीय कार्य विभाग

२-२-१९८२

१. श्री ज्ञान प्रकाश, भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक

२. श्री श. द. साठे, सचिव, विदेश मंत्रालय

३-२-१९८२

१. श्री एम. एस. गुजराल, अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड

२. श्रीमती अन्ना आर. मल्होत्रा, सचिव, शिक्षा तथा संस्कृति मंत्रालय

३. श्री ए. एस. गिल, सचिव, इस्पात विभाग
श्री आर. गणपति, सचिव, खान विभाग

मिला जन्म उत्तम तुझे, कर ले कुछ उपकार।
समय न यह फिर मिल सके, जीता दांव न हार॥

५-२-१९८२

१. श्री एस. आर. दास, सचिब, कोयला विभाग

२. श्री पी. के. कौल, सचिव, रक्षा मंत्रालय

३. श्री ज्ञानचन्द बवेजा सचिव, सांख्यिकी विभाग

६-२-१९८२

१. श्री रा. ना. मल्होत्रा, सचिव, आर्थिक कार्य विभाग

२. श्री वी. बी. ईश्वरन, सचिव, राजस्व विभाग

३. श्री ज्ञान चन्द बवेजा, सचिव, व्यय विभाग

२७-३-१९८२

श्री जय नारायण तिवारी, सचिव, राजभाषा विभाग

आर्थिक कार्य विभाग

१. बैंक नोट प्रेस, देवास	३-९-८२
२. जीवन बीमा निगम (डिविजनल कार्यालय) इन्दौर	४-९-८२
३. ओरियंटल फायर एण्ड जनरल इन्श्योरेन्स कम्पनी लि० अजमेर	१०-१२-८२
४. यूनाईटेड इण्डिया इन्शयोरेन्स कम्पनी लि० मंडल कार्यालय, जोधपुर	११-१२-८२
५. नेशनल इन्शयोरेन्स कम्पनी लि० उत्तरी क्षेत्रीय कार्यालय नई दिल्ली	४-१-८३
६. जीवन बीमा निगम (मंडल कार्यालय) विदुरै	१०-२-८३
७. नेशनल इन्श्योरेन्स कम्पनी लि० मंडल कार्यालय, गोहाटो	७-९-८३
८. जीवन बीमा निगम, जोनल कार्यालय, बंगलौर	११-१-८३

बैंकिंग प्रभाव

१. बैंक आफ इन्डिया (रीजनल कार्यालय) उज्जैन	२-९-८२
२. स्टेट बैंक आफ इन्डिया (स्थानीय प्रधान कार्यालय)	४-९-८२
३. स्टेट बैंक आफ इन्डिया (स्थानीय प्रधान कार्यालय)	४-९-८२
४. बैंक आफ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, अजमेर	१०-१२-८२
५. न्यू बैंक आफ इन्डिया, जयपुर	११-१२-८२
६. रिजर्व बैंक आफ इंडिया, जयपुर	१३-१२-८२
७. पंजाब नेशनल बैंक (क्षेत्रीय कार्यालय) जोधपुर	१४-१२-८३
८. बैंक आफ बड़ौदा, जैसलमेर	१५-१२-८२
९. स्टेट बैंक आफ इंडिया, जैसलमेर	१५-१२-८२
१०. स्टेट बैंक आफ बीकानेर एन्ड जयपुर, स्टाफ प्रशिक्षण कालेज, बीकानेर	१७-१२-८२
११. राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक, बम्बई	५-१-८३
१२. बैंक आफ महाराष्ट्र, पूना	७-१-८३
१३. केनरा बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, गोवा	१०-१-८३
१४. सैन्ट्रल बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, गोवा	१०-१-८३
१५. सिंडीकेट बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, गोवा	११-१-८३

तुलसी अपने राम को, रीझ भजो चहे खीज।
उलटा सीधा जमत है, पड़ा खेत में बीज॥

१६. भारतीय औद्योगिक विकास बैंक (क्षेत्रीय कार्यालय) नई दिल्ली	२७-१-८३
१७. इंडियन बैंक रामेश्वरम	६-२-८२
१८. यूनियन बैंक आफ इंडिया क्षेत्रीय कार्यालय मुदुरै	१०-२-८३
१९. भारतीय स्टेट बैंक, कन्याकुमारी	११-२-८३
२०. विजया बैंक, त्रिवेन्द्रम	१२-२-८३
२१. स्टेट बैंक आफ ट्रावनकोर, त्रिवेन्द्रम	१२-२-८३
२२. पंजाब एण्ड सिंध बैंक (क्षेत्रीय कार्यालय) देहरादून	२५-५-८३
२३. भारतीय स्टेट बैंक, बद्रीनाथ	३०-५-८२
२४. भारतीय स्टेट बैंक, प्रयाग	१-६-८३
२५. इलाहबाद बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, कानपुर	३०-६-८३
२६. भारतीय रिजर्व बैंक, कानपुर	१-७-८३
२७. पंजाब नेशनल बैंक गोरखपुर	२-७-८३
२८. पंजाब नेशनल बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, श्रीनगर	२८-७-८३
२९. देना बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, कलकत्ता	१०-९-८३
३०. यूनाईटेड कार्मशियल बैंक, प्रधान कार्यालय कलकत्ता	१०-९-८३
३१. भारतीय स्टेट बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली	१२-९-८३
३२. ओरियंटल बैंक आफ कामर्स, रीजनल कार्यालय, चंडीगढ़	२७-९-८३
३३. न्यू बैंक आफ इन्डिया रीजनल कार्यालय, चंडीगढ़	२७-९-८३
३४. पंजाब नेशनल बैंक, कुल्लू	२८-९-८३
३५. भारतीय स्टेट बैंक, मनाली	२९-९-८३
३६. पंजाब नेशनल बैंक, जोनल कार्यालय, चण्डीगढ़	३०-९-८३
३७. पंजाब नेशनल बैंक, रीजनल कार्यालय, शिमला	१-१०-८३
३८. भारतीय स्टेट बैंक, रीजनल कार्यालय, शिमला	३-१०-८३
३९. सिंडीकेट बैंक, मंडल कार्यालय, मैसूर	१२-१-८४
४०. केनरा बैंक, केन्द्रीय कार्यालय, बंगलौर	१३-१-८४
४१. आन्ध्रा बैंक, जोनल कार्यालय, दिल्ली	१४-१-८४

राजस्व विभाग

१. आयकर आयुक्त, भोपाल	७-९-८२
२. सीमा तथा उत्पाद शुल्क समाहर्ता, जयपुर	१३-१२-८२
३. आयकर आयुक्त का कार्यालय, जोधपुर	१६-१२-८२
४. सहायक आयकर आयुक्त, बीकानेर	१७-१२-८२
५. आयकर आयुक्त (१ तथा ११) पुणे	७-१-८३
६. प्रकाशन निदेशालय (सीमा शुल्क और केन्द्रीय उत्पादन शुल्क) तथा प्रशिक्षण निदेशालय (सीमा शुल्क और केन्द्रीय उत्पाद शुल्क)	२४-५-८३

भेष फकीरी जो करे, मन नहिं आवे हाथ।
जो फकीर दिल में बने, साहिं तिनके साथ॥

७. निरीक्षण निदेशालय (आयकर और लेखा परीक्षा तथा गवेष सांख्यिकी तथा जन सम्पर्क) नई दिल्ली — २९-६-८३
८. आयकर आयुक्त, कानपुर — १-७-८३
९. उप समाहर्ता सीमा शुल्क और केन्द्रीय शुल्क, गोरखपुर — ४-७-८३

वाणिज्य विभाग

१. प्रोजेक्टस एण्ड इक्युपमेंट कार्पोरेशन आफ इंडिया लि० नई दिल्ली — २-६-८३
२. व्यापार विकास प्राधिकरण, नई दिल्ली — २९-३-८३
३. राज्य व्यापार निगम, नई दिल्ली — २०-७-८३
४. भारतीय निर्यात निरीक्षण परिषद, नई दिल्ली — २-९-८३
५. टी बोर्ड, कलकत्ता — ३-९-८३
६. इलायची बोर्ड, कोचीन — ६-१-८४
७. केश्यु कार्पोरेशन आफ इंडिया, कोचीन — ६-१-८४

वस्त्र विभाग

१. राष्ट्रीय वस्त्र निगम, इंदौर — ६-९-८३

नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक

१. महालेखाकार-११ म० प्र० भोपाल — ८-९-८३
२. निदेशक लेखा परीक्षा डाक-तार दिल्ली — १८-११-८२
३ निदेशक लेखा परीक्षा उत्तर, पूर्वी रेलवे, गोरखपुर — २-७-८३
४. महालेखाकार मणीपुर इम्फाल — ५-९-८३
५. महालेखाकार आसाम, मेघालय, अरुणाचल प्रदेश तथा मिजोरम, शिलांग — ८-९-८३
६. महालेखाकार त्रिपुरा, अगरतल्ला — ९-९-८३
७. महालेखाकार हिमाचल प्रदेश तथा चण्डीगढ़, शिमला — १-१०-८३

स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण मन्त्रालय

१. राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण संस्थान, नई दिल्ली — २८-१-८३

औद्योगिक विकास विभाग

१. लघु उद्योग सेवा संस्थान, इन्दौर — ६-१-८२
२. राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम, नई दिल्ली — १८-११-८२
३. कन्ट्रोलर जनरल, पेटेन्ट्स एण्ड डिजाइन्स बम्बई — ६-९-८२
४. राष्ट्रीय उत्पादकता परिषद्, नई दिल्ली — २८-१-८३
५. भारतीय औद्योगिक विकास निगम लि० नई दिल्ली — १४-२-८३

भारी उद्योग विभाग

१. भारत हैवी इलैक्ट्रीकल्स लि०, भोपाल — ८-९-८२

यह रथ बना शरीर का, तिस पर जीव सवार।
जिन ऐसा कर जानियां, ज्ञानिन के सरदार॥

२. एच० एम० टी०, अजमेर — १०-१२-८२
३. इन्जीनियरिंग प्रोजेक्टस (इन्डिया) लि० दिल्ली — १२-१-८३
४. भारत हैवी इलैक्ट्रीकल्स लि० तिरुचिरापल्ली — ८-२-८३
५. एच० एम० टी० श्रीनगर — १८-७-८३
६. एच० एम० टी० लि० मुख्यालय, बंगलोर — १३-१-८४

श्रम मन्त्रालय

१. सेन्ट्रल प्रोवीडेन्ट फन्ड कमिश्नर, नई दिल्ली — ९-९-८२

पेट्रोलियम विभाग

१. इण्डियन आयल कार्पोरेशन लि० मार्केटिंग डिवीजन, जयपुर — १३-१२-८२
२. तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग, देहरादून — २७-५-८३
३. इण्डियन आयल कार्पोरेशन (मार्केटिंग डिवीजन) लखनऊ — ५-७-८३
४. आयल इन्डिया लि०, नई दिल्ली — १५-७-८३
५- गोहाटी रिफाइनरी, गोहाटी — ७-९-८३
६. कोचीन रिफाइनरी लि० कोचीन — १०-१-८४

इस्पात और उर्वरक विभाग

१. डी० डी० टी० फैक्ट्री (एच० आई एल०) नई दिल्ली — १-९-८२
२. आई० डी० पी० एल० ऋषिकेष — २८-५-८३
३. फर्टिलाइजर कार्पोरेशन आफ इन्डिया, गोरखपुर — ४-७-८३
४. पाइराइटस केमिकल लि० नई दिल्ली — २६-९-८३

नौवहन एवं परिवहन मन्त्रालय, नई दिल्ली

१. मुगल लाइन्स, बम्बई — ५-१-८३
२. नौवहन एवं परिवहन मंत्रालय — ७-२-८३
३. बार्डर रोड टास्क फोर्स, — २३-५-८३
४. सीमा सड़क विकास संगठन, दीमापुर — ६-९-८३
५. दीप घर तथा पोल का स्थामीय कार्यालय मिनिकोय — ७-१-८४
६. लक्षद्वीप बन्दरगाह निर्माण कार्य, कलपेनी — ९-१-८४
७. दीप पोल और दीप घर विभाग, कोचीन — १०-१-८४

इस्पात विभाग

१. स्टेनटन पाइप एण्ड फाउन्ड्री क० लि० (आई० आई० एस० सी० ओ०) उज्जैन — २-६-८२

पूर्ति विभाग

१. मुख्यलेखा नियंत्रक का कार्यालय (पूर्ति मन्त्रालय) नई दिल्ली — ९-११-८३
२. निदेशक, पूर्ति तथा निपटान — ३०-६-८३

अजर अमर तब रूप है, समझ मूढ़ अज्ञान।
अपना आप भुलाय कर, करे देह अभिमान ॥

पर्यटन तथा नागर विमानन

१. महानिदेशालय नगर विमानन, नई दिल्ली	१-९-८१
२. होटल कनिष्क, नई दिल्ली	४-१-८३
३. एयर इंडिया पश्चिमी क्षेत्र बम्बई	६-१-८३
४. इन्डियन एयर लाइन्स, गोवा	११-१-८३
५. वायुदूत, नई दिल्ली	१२-१-८३
६. क्वालम् अशोक विच, रिजॉड, त्रिवेन्द्रम	१३-२-८३
७. होटल सैन्ट्रोर नई दिल्ली	२४-५-८३
८. रेलवे सुरक्षा आयोग लखनऊ (पर्यटन और नगर विमानन)	५-७-८३
९. इन्डियन एयर लाइन्स, श्रीनगर	१६-७-८३
१०. होटल जम्मू अशोक, जम्मू	१९-७-८३

निर्माण और आवास मन्त्रालय

१. हुडको, नई दिल्ली	९-१२-८२
२. केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग देहरादून	२५-५-८३
३. हिन्दुस्तान प्रपैव लि० नई दिल्ली	६-७-८३
४. सम्पदा निदेशालय, नई दिल्ली	१२-९-८३

विद्युत विभाग

१. चीफ प्रोजेक्ट मैनेजर रूरल इलैक्ट्रीशियन कार्पो शिमला	३-१०-८३

अन्तरिक्ष विभाग

१. अंतरिक्ष विभाग बंगलौर	११-१-८४

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग

१. राष्ट्रीय रसायन प्रयोगशाला, पुणे	७.१-८३
२. भारतीय सर्वेक्षण, देहरादून	२७-५-८३

इलैक्ट्रानिक विभाग

१. इलैट्रोनिक्स कमीशन, नई दिल्ली	४-१०-८३

पर्यावरण विभाग

१. पर्यावरण नई दिल्ली	१४-२-८३

४-१-१९८४	११.३० बजे	समिति सचिवालय [११-तीन मूर्ति मार्ग, नई दिल्ली] में एकत्रित होना ।
बुधवार	१२.०० बजे	भारतीय पर्यटन विकास निगम लिमिटेड,
५-१-१९८४	०७.१० बजे	प्रस्थान दिल्ली आई० सी० १८६

जिम जल भीतर पद्म है, जल में डूबत नाय।
ज्ञानी जग में रहत भी, लिप्तमान हो नाय।

बृहस्पतिवार	०९.०० बजे	आगमन	बम्बई	,, ,,
	११.१५ बजे	प्रस्थान	बम्बई	आई० सी० १९१
	१३.०० बजे	आगमन	कोचीन	,, ,,
	समन्वय कार्य : अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक: कोचीन रिफायनरी लि०, कोचीन			
६-१-१९८४	१०.३० बजे	(१) इलायची बोर्ड		
शुक्रवार	१२.०० बजे	(२) केश्यू कार्पोरेशन आफ इन्डिया लिमिटेड,		
	१६.०० बजे	प्रस्थान	कोचीन	एम० वी० भारत, सीमा यात्रा सं० २५
७-१-१९८४	०८.०० बजे	आगमन	मिनीकोय	,, ,,
शनिवार	समन्वय कार्य : (लक्षद्वीप समूह के सभी कार्यक्रम के लिए) प्रशासक लक्षद्वीप समूह			
	११.०० बजे	दीप घर और दीप पोत विभाग का स्थानीय कार्यालय		
	१८.०० बजे	प्रस्थान	मिनिकोय	एम० बी भारत सीमा यात्रा सं० २५
८-१-१९८४	०६.०० बजे	आगमन	कावारती	,, ,,
रविवार	०८.०० बजे	प्रस्थान	कावारती	,, ,,
	१०.३० बजे	आगमन	अमीनी/कदमाठ	,, ,,
	१३.०० बजे	प्रस्थान	अमीनी/कदमाठ	,, ,,
	१५.३० बजे	आगमन	अगाठी	,, ,,
	१७.०० बजे	प्रस्थान	अगाठी	,, ,,
	१९.३० बजे	आगमन	कावारती	,, ,,
९-१-१९८४	०१.३० बजे	प्रस्थान	कावारती	,, ,,
सोमवार	०६.३० बजे	आगमन	कलपेनी	,, ,,
	१०.३० बजे	लक्षद्वीप बन्दरगाह निर्माण कार्य		
	२०.०० बजे	प्रस्थान	कलपेनी	,, ,,
१०-१-१९८४	०८.०० बजे	आगमन	कोचीन	,, ,,
मंगलवार	११.०० बजे	निदेशक का कार्यालय, दीप पोत और दीप-घर विभाग		
	१२.३० वजे	कोचीन रिफायनरी लि.		
	१५.०५ बजे	प्रस्थान	अर्नाकुलम	२५ एक्सप्रेस
११-१-१९८४	०६.१५ बजे	आगमन	बंगलौर सिटी	,,
	समन्वय कार्य : अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक, केनरा बैंक			
	१०.३० बजे	अन्तरिक्ष विभाग		
	[illegible].०० बजे	जीवन बीमा निगम, जोनल कार्यालय		
	१५.०० बजे	प्रस्थान	बंगलौर	सड़क द्वारा
	१८.०० बजे	आगमन	मैसूर	,,
	समन्वय कार्य : मंडल प्रबन्धक, सिंडीकेट बैंक			
१२-१-१९८४	१२.०० बजे	सिंडीकेट बैंक, मंडल कार्यालय		

तुलसी जग में यों रहो, ज्यों रसना मुख मांय।
खाती घी लवण नित, फिर भी चिकनी नांय॥

बृहस्पतिवार	१६.०० बजे	प्रस्थान	मैसूर	सड़क द्वारा
	१९.०० बजे	आगमन	बंगलौर	,,
१३-१-१९८४	१०.०० बजे	एच. एम. टी.		
शुक्रवार	१२.०० बजे	केनरा बैंक, केन्द्रीय कार्यालय		
	१८.३० बजे	प्रस्थान	बंगलौर	आई. सी. ४०४
	२२.१५ बजे	आगमन	दिल्ली	,,
१४-१-१९८४	११.३० बजे	आन्ध्रा बैंक, जोनल कार्यालय		
शनिवार				
२७-१-८४	११.३० बजे	समिति सचिवालय [११, तीन मूर्ति मार्ग, नई दिल्ली] में एकत्रित होना।		
शुक्रवार	१२.०० बजे	क्षेत्रीय भविष्य-निधि आयुक्त का कार्यालय		
	१५.५० बजे	प्रस्थान	दिल्ली	आई० सी० ४०३
	१७.४५ बजे	आगमन	हैदराबाद	,,
	समन्वय कार्य :	मुख्य महा प्रबन्धक, भारतीय स्टेट बैंक, स्थानीय मुख्यालय, हैदराबाद		
२८-१-८४	१०.०० बजे	समाहर्ता, केन्द्रीय उत्पादन शुल्क का कार्यालय		
शनिवार	१२.०० बजे	भारतीय स्टेट बैंक, स्थानीय मुख्यालय		
	१८.०० बजे	प्रस्थान	हैदराबाद	८ गोदावरी एक्सप्रेस
२९-१-८४	०८.५५ बजे	आगमन	वाल्टेयर	,,
रविवार	समन्वय कार्य :	अध्यक्ष एवं प्रबन्धक निदेशक, हिन्दुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड, विशाखापट्टनम		
३०-१-८४	१०.०० बजे	हिन्दुस्तान शिपयार्ड लि.		
सोमवार	१३.०५ बजे	प्रस्थान	वाल्टेयर	३ मद्रास मेल
३१-१-८४	०४.५० बजे	आगमन	मद्रास	,,
मंगलवार	समन्वय कार्य :	मुख्य आयुक्त [प्रशासन] एवं आयकर आयुक्त [१] मद्रास		
	१०.३० बजे	बैंक आफ इन्डिया, आंचलिक कार्यालय		
	१२.०० बजे	एयर इन्डिया		
१-२-८४	०६.१० बजे	प्रस्थान	मद्रास	आई० सी० ५४९
बुधवार	०८.१५ बजे	आगमन	पोर्ट ब्लेयर	,,
१-२-८४	समन्वय कार्य :	मुख्य सचिव, अंडमान निकोबार प्रशासन, पोर्ट ब्लेयर		
बुधवार				
२-२-८४	अंडमान व निकोबार द्वीप समूहों में स्थित			
बृहस्पतिवार	दीप घर और दीप पोत निदेशक के कार्यालय			
३-२-८४	भारतीय स्टेट बैंक, बन्दरगाह निर्माण			
शुक्रवार				
४-२-८४				

यह शरीर नहीं आपनो, समझ परी अब मोय।
इसका मोह न कीजिये, कष्ट व्यापे तोय॥

शनिवार				
५-२-८४	०८.५५ बजे	प्रस्थान	पोर्ट ब्लेयर	आई. सी. ५५०
रविवार	११.०० बजे	आगमन	मद्रास	"
	१६.४० बजे	प्रस्थान	मद्रास इगमोर	११३ एक्सप्रेस
५.२-८४	२०.१० बजे	आगमन	विलुप्पुरम्	११३ एक्सप्रेस
रविवार	२०.३० बजे	प्रस्थान	विलुप्पुरम्	सड़क द्वारा
	२१.१५ बजे	आगमन	पांडिचेरी	"

समन्वय कार्य : महा प्रबन्धक, स्वदेशी काटन मिल्स, पांडिचेरी

६-१-८४	११-३० बजे	स्वदेशी काटन मिल्स		
सोमवार	१३.३० बजे	प्रस्थान	पांडिचेरी	सड़क द्वारा
	१५ ०० बजे	आगमन	विलुप्पुरम्	"
	१५.४० बजे	प्रस्थान	विलुप्पुरम्	१३८ क्यूलान एक्सप्रेस
	१६.०० बजे	आगमन	मद्रास इगमोर	"
७-२-८४	१०.३० बजे	मुख्य आयुक्त [प्रशासन] एवं आय कर आयुक्त [१] का कार्यालय		
मगलवार	१२.०० बजे	भारतीय रिजर्व बैंक		
	१६.४० बजे	प्रस्थान	मद्रास	आई. सी. ५३६
८-२-८४	११.३० बजे	भारतीय आयुर्विज्ञान परिषद्		
बुधवार	१२.१५ बजे	वैज्ञानिक औद्योगिक अनुसंधान परिषद्		

दौरा निरीक्षण कार्यक्रम (१८-५-८४ से २८-५-८४)

१८-८-१९८५	१०-३० बजे	वस्त्र विभाग, वाणिज्य मन्त्रालय, नई दिल्ली।
शुक्रवार	१२-०० बजे	राष्ट्रीय वस्त्र निगम, मुख्यालय, नई दिल्ली।
१९-५-१९८४	१०-३० बजे	परिवार कल्याण विभाग, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मन्त्रालय नई दिल्ली।
	१२०० बजे	भारतीय पर्यटन विकास निगम, नई दिल्ली।
२०-५-१९८४ रविवार	०७-५५ बजे	प्रस्थान दिल्ली २-कालका हावड़ा मेल
२१-५-१९८४	०८-१५ बजे	आगमन हावड़ा

समन्वय कार्य : महाप्रबन्धक केन्द्रीय विपनान संगठन, भारतीय इस्पात प्राधिकरण लि० कलकत्ता

	१४-३० बजे	लोह इस्पात नियंत्रक, कलकत्ता।
	१५-०० बजे	भारतीय रसायन एवं जीव विज्ञान संस्थान, कलकत्ता।
२२-५-१९८४	१०-०० बजे	क्षेत्रीय प्रबन्धक, पंजाब नेशनल बैंक, कलकत्ता।
मंगलवार	११-०० बजे	क्षेत्रीय प्रबन्धक, भारतीय जीवन बीमा निगम, कलकत्ता।

हरि जाना हरिद्वार में, हरि है हृदय माय।
लागी टाटी कपट की, तासे दीसत नाय॥

	१०-०० बजे	टी बोर्ड, कलकत्ता
२३-५-१९८४ बुधवार	११-३० बजे	केन्द्रीय विपणन संगठन, भारतीय इस्पात प्राधिकरण कलकत्ता।
	१८-५५ बजे	**प्रस्थान हावड़ा**
२४-५-१९८४ बृहस्पतिवार	०७-३० बजे	आगमन न्यू-जलपाईगुड़ी ५९ कामरूप एक्सप्रेस
	०८-०० बजे	**प्रस्थान न्यू-जलपाईगुड़ी** ३-डी पैसेन्जर
	५६-२५ बजे	आगमन दार्जिलिंग

(**समन्वय कार्यः** गार्डन मैनेजर, पब्लिक दी इस्टेट, दार्जिलिंग)

२५-५१९८४ शुक्रवार	१०-०० बजे	(१) आयकर अधिकारी, दार्जिलिंग (२) अधीक्षक, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क दार्जिलिंग।
	११-३० बजे	शाखा प्रबन्धक, भारतीय जीवन बीमा निगम, दार्जिलिंग।
२६-५-१९८४ शनिवार	१०-०० बजे	(१) शाखा प्रबन्धक, भारतीय स्टेट बैंक दार्जिलिंग। (३) शाखा प्रबन्धक, यूनाइटिड कोमर्शियल बैंक दार्जिलिंग। (३) शाखा प्रबन्धक, यूनाइटिड कोमर्शियल बैंक दार्जिलिंग।
	१२-३० बजे	गार्डन पैसेन्जर, साशोक टी इस्टेट, दार्जिलिंग।
२७-५-८३ रविवाल	११-०० बजे	**प्रस्थान दार्जिलिंग** सड़क द्वारा
	१४-०० बजे	आगमन बागडीगरा
	१५-०० बजे	**प्रस्थान बागडीगरा** आई० सी० ४९०
	१७-४० बजे	आगमन दिल्ली
२८-५-१९८४ सोमवार	१०-३० बजे	श्रम विभाग, श्रम एवं पुनर्वास मंत्रालय, नई दिल्ली
	१२-०० बजे	भारतीय सड़क निर्माण निगम, नई दिल्ली।

दौरा निरीक्षण कार्यक्रम (८-५-८४ से २१-६-८४ तक)

८-६-८४	१०-०० बजे	समिति सचिवालय (११ तीन मूर्ति मार्ग, नई दिल्ली) में एकत्रित होगा।
	१९-२० बजे	इस्पात विभाग, इस्पात एवं खान मंत्रालय, नई दिल्ली।
	१२-०० बजे	हिन्दुस्तान फर्टिलाईजर्स कार्पोरेशन लि० नई दिल्ली
	२२-१० बजे	**प्रस्थान दिल्ली** १-अहमदाबाद मेल
९-६-८५ शनिवार	१५-४० बजे	आगमन आबू रोड
	१६-०० बजे	**प्रस्थान आबू रोड** सडक द्वारा
	१८-०० बजे	आगमन माउन्ट आबु
	समन्वय कार्य : (आबू रोड से माउण्ट आबू तथा माउण्ट आबू से आबू रोड तक सड़क यात्रा प्रबन्ध समेत)	**अधीक्षक सर्वेक्षक भारतीय सर्वेक्षण माउण्ट आबू**
१०-६-८४	रविवार	

बीती ताहि बिसार दे, आगे की सुध लेय।
जो बन आवे सहज में, ताही में चित देय॥

११-६-८४	१०-०० बजे	शाखा प्रबन्धक, भारतीय स्टेट बैंक शाखा प्रबधक, देना बेंक शाखा प्रबन्धक, बैंक आफ बड़ौदा } बैठक एक ही स्थान पर होगी।
	१२-३० बजे	अधीक्षक सर्वेक्षक, भारतीय सर्वेक्षक, माउन्ट बाबू।
	१७-२० बजे	**प्रस्थान माउन्ट आबू** सड़क द्वारा
	१९-३० बजे	आगमन आबू रोंड
	२०-२५ बजे	**प्रस्थान आबू रोड़** ५-आगरा फोर्ट फस्ट पैसेन्जर/एक्सप्रेस
१२-६-८४	०४-५० बजे	आगमन अहमदाबाद
मंगलवार	समन्वय कार्य :	मुख्य आयुक्त (प्रशासन) एवं आयकर आयुक्त (१) अहमदाबाद
	१०-०० बजे	अध्यक्ष, अन्तरिक्ष उपभोग केन्द्र, अहमदावाद।
	११-३० बजे	राष्ट्रीय डिजाइन्स संस्थान, अहमदाबाद।
१३-६-८४	१०-०० वजे	महाप्रबन्धक भारतीय स्टेट बैंक (स्थानीय प्रधान कार्यालय) अहमदाबाद।
बुधवार	१२-०० बजे	मुख्य आयुक्त (प्रशासन) एवं आयकर आयुक्त (१) का कार्यालय अहमदाबाद।
	१८-१० बजे	**प्रस्थान अहमदाबाद** १० गुजरात क्वीन
	२०-१३ वजे	आगमन बड़ोदरा
	समन्वय कार्य :	समाहर्ता, केन्द्रीय उत्पादन शुल्क, बड़ोदरा।
१४-६-८४ बृहस्पतिवार	१०-०० बजे	मंडल प्रबन्धक, दि ओरिस्पटल फायर एण्ड जनरल इंश्योरेन्स कम्पनी लि० बड़ौदरा।
	१२-०० बजे	तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग, बड़ोदरा।
१५-६-८४	१०-०० वजे	मंडल प्रबन्धक, नेशनल इन्श्योरेन्स कम्पनी लि० बड़ोदरा।
शुक्रवार	१२-०० बजे	केन्द्रीय उत्पादन शुल्क समाहर्ता का कार्यालय, बडोदरा।
१५-६-८४ शुक्रवार	२२-५५ बजे	**प्रस्थान बड़ोदरा** २८ बड़ोदरा एक्सप्रेस
१६-६-८४ शनिवार	०५-०५ बजे	आगमन बम्बई सेन्ट्रल
	समन्वय कार्य :	अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक, राष्ट्रीय रसायन एवं उरर्वक लि० बम्बई
	१०-०० बजे	बैंक आफ बड़ोदरा, केन्द्रीय कार्यालय, बम्बई।
	१२-०० बजे	बैंक आफ बड़ोदा तथा बैंक आफ इण्डिया स्टाफ ट्रेनिंग कालेज, बम्बई।
१७-६-९४	रविवार	
१८-६-८६	१०-०० बजे	रिचांर्डसन एण्ड ट्रूडक्स (१९७२) लि० बम्बई।

मूरख के सुन्दर वचन, हो रहिये चुपचाप।
उसकी समता जो करे, नीच कहावे आप॥

सोमवार ११-३० बजे राष्ट्रीय रसायन एवं उर्वरक लि० बम्बई।

१८-४५ बजे **प्रस्थान बम्बई वी० टी० २१०-पंचवटी एक्सप्रेस**

२२-५५ बजे आगमन नासिक रोड

समन्वय कार्य : (नासिक से बम्बई तक की सड़क यात्रा प्रबन्ध समेत) } महा प्रबन्धक, इंडिया सिक्यूरिटी प्रैस नासिक

१९-६-८४ मंगलवार
१०-०० बजे क्षेत्रीय प्रबन्धक, यूनियन बैंक आफ इन्डिया, नासिक
११-०० बजे क्षेत्रीत्र प्रबन्ध, देना बैंक नासिक
१२-०० वजे मंडल प्रबन्धक, बैंक आफ महाराष्ट्र नासिक
} बैठक एक ही स्थान पर होगी।

२०-६-८४ बुधवार
१०-०० बजे मंडल प्रबन्धक, भारतीय जीवन बीमा निगम, नासिक
११-०० बजे वरिष्ठ मंडल प्रबन्धक, दि न्यू इंडिया इन्श्योरेन्स कम्पनी लि० नासिक।
} बैठक एक ही स्थान पर होगी।

१२-०० वजे महा प्रबन्धक, इन्डिया सिक्यूरिटी प्रैस, नासिक।

२१-६-८४ वृहस्पतिवार
०५-०० बजे **प्रस्थान नासिक रोड सड़क द्वारा**
०९-०० बजे आगमन बम्बई
१०-०० बजे **प्रस्थान बम्बई आई० सी० १८५**
११-५० बजे आगमन दिल्ली
१४-३० बजे महा निदेशालय, सीमा सड़क, कश्मीर हाउस, नई दिल्ली।

(सदस्यों की सुविधा के अनुसार विसर्जन)

1-10-84 तक दौरा/निरीक्षण कार्यक्रम

दिनांक	स्थान	समय	कार्यक्रम
२०-९-८४ गुरुवार	नई दिल्ली	१०-०० बजे	समिति सचिवालय, नई दिल्ली में एकत्रित होना।
		१०-३० बजे	मुख्य आयुक्त (प्रशासन) एवं आयकर आयुक्त
		१२-०० बजे	भारतीय स्टेट बैंक, स्थानीय प्रधान कार्यालय।
		२०-१० बजे	**प्रस्थान दिल्ली आई० सी० २६४**
		२२-०५ बजे	आगमन कलकत्ता ,, ,,
	(समन्वय कार्य :		निदेशक, केन्द्रीय कांच एवं नेरेमिक अनुसंधान संस्थान, सी० एस० आई० आर० कलकत्ता)
२१-९-८४ शुक्रवार	कलकत्ता	१०-०० बजे	भारतीय स्टेट बैंक, स्थानीय प्रधान कार्यालय।
		११-३० बजे	केन्द्रीय कौंच एवं सेरेमिक अनुसंधान संस्थान, सी० एस० आई० आर०
२२-९-८४ शनिवार		१०-०० बजे	भारतीय पटसन निगम।
		११-३० बजे	राष्ट्रीय वस्त्र निगम लिमिटेड।
२३-९-८४ रविवार		०५-३० बजे	**प्रस्थान कलकत्ता आई० सी० २११**
		०९-४५ बजे	आगमन लीलाबाड़ी ,, ,,

जाको जहँ स्वारथ सधे, सोहि ताहि सुहात।
चोर न प्यारी चांदनी, जैसे कारी रात॥

(समन्वय कार्य : प्रबन्धक, भारतीय स्टेट बैंक, लीलाबाड़ी से ईटानगर तथा ईटानगर से लीलाबाड़ी तक सड़क यात्रा सहित)

ईटानगर

१०-०० **बजे** **प्रस्थान** **लीलाबाड़ी** **सड़क द्वारा**
११-३० बजे **आगमन** ईटानगर ,, ,,

२४-९-८४ सोमवार — **ईटानगर**
१०-०० बजे प्रबन्धक, भारत सरकार पर्यटन कार्यालय
११-३० बजे लघु उद्योग सेवा संस्थान शाखा।

२५-९-८४ मंगलवार
१०-०६ बजे अरुणाचल क्षेत्रीय स्टेशन, भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण, पर्यावरण विभाग।
११-०० बजे यूनाइटिड कोमर्शियल बैंक आफ इण्डिया
१२-०० बजे भारतीय स्टेट बैंक।

२६-९-८४ बुधवार — **गोहाटी**
०९-०० **बजे** **प्रस्थान** **ईटानगर** **सड़क द्वारा**
१०-३० बजे आगमन लीलावाड़ी ,, ,,
११-५० बजे **प्रस्थान** **लीलाबाड़ी** **आई० सी० २१२**
१४-०५ बजे **आगमन** गोहाटी ,, ,,

(समन्वय कार्य : भारतीय स्टेट बैंक, स्थानीय प्रधान कार्यालय गोहाटी)

१६-०० बजे भारतीय स्टेट बैंक, स्थानीय प्रधान कार्यालय।

२७-९-८४ गुरुवार
२१-१५ बजे **प्रस्थान** **गोहाटी** **१ एक्सप्रेस**
१२-१५ बजें **आगमन** सिलीगुड़ी ,, ,,

२७-६-८४
(समन्वय कार्य : मुख्य अभियन्ता, 'स्वास्तिक परियोजना' मंत्रालय, गंगटोक, सिलीगुड़ी से गंगटोक तथा गंगटोक से बागडोगरा तक सड़क यात्ला प्रबन्ध सहित)
१२-३० **बजे** **प्रस्थान** **सिलीगुड़ी** **सड़क द्वारा**

कालिपोंग
१५-०० बजे आगमन कालिपोंग ,, ,,
१६-०० बजे (१) वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी, केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान।
(२) क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान स्टेशन, केन्द्रीय रेशम वोर्ड

(दोनों कार्यालयों की बैठक एक स्थान पर होगी)

२८-९-८४ शुक्रवार
०८५८८ **बजे** **प्रस्थान** **कलिपोंग** **सड़क द्वारा**
गंगटोक १० बजे आगमन गंगटोक ,, ,,
(कार्यालय पूर्वी क्षेत्र) ११-०० बजे भारतीय भू-सर्वेक्षण कार्यालय, प्रभारी अधिकारी का
१२-३० बजे उपनिदेशक का कार्यालय, इतावली बोर्ड।

२९-९-८४ शनिबार
१०-०० बजे शाखा प्रबन्धक, भारतीय स्टेट बैंक
११-०० बजे शाखा प्रबन्धक, यूनाइटिड कोमर्शियल बैंक
१२-०० बजे मुख्य अभियन्ता, स्वास्तिक परियोजना, मुख्यालय, ग्रेफ

३०-६-८४ रविवार
०८-०० **बजे** **प्रस्थान** **गंगटोक** **सड़क द्वारा**
१४-०० बजे आगमन बागडोगरा ,, ,,
१५-०० बजे **प्रस्थान** **बागडोगरा** **आई० सी० ४९०**
१७-४० बजे आगमन दिल्ली ,, ,,

१-१०-८४ — नई दिल्ली
१०-०० बजे मुख्य अभियन्ता का कार्यालय (उत्तरी क्षेत्र) केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग, रामकृष्णपुरम्,
१२-०० बजे पंजाब एण्ड सिंध बैंक, प्रधान कार्यालय।

सिन्धियत की शान

१. सिन्धी सभ्यता	मोहन जोदड़ो	१४. सिन्धू माता	जेठीबाई (हेमू की माता)
२. सिन्धूपति	महाराजा दाहेसन	१५. सिन्धी गायक	मास्टर चन्द्र
३. सिन्धी अवतार	झूले लाल	१६. सिन्धी एलची	पो० रामपंजवानी
४. सिन्धी हिन्द शहीद	संत कंवरराम	१७. सिन्धी सन्त	स्वामी लीला शाह
५. सिन्धी मेला	चेटी चण्ड	१८. सिन्धी दरवेश	साधू वासवानी
६. सिन्धी भाषा को मान्यता	१० अप्रेल १९६७	१९. सिन्धी राजनेता	डॉ. चौथराम जिदवानी
७. सिन्धी गवर्नर	जयरामदास दौलतराम	२०. सिन्धी कांग्रेस अध्ययन	आचार्य कृपलानी
८. सिन्धी नारा	आयोलाल झूले लाल	२१. सिन्धी शेरे दिल नेता	आचार्य भगवानदेव
९. सिन्धी देश भगत शहीद	हेमू कालानी	२२. संसद में सिन्धी में प्रथम भाषण—२६ अप्रेल, १९८२	
१०. सिन्धू दरिया	सिन्धू नंदी		(आचार्य भगवानदेव ने दिया)
११. सिन्धी आइना	शाह जो रसालो	२३. प्रथम सिन्धी	एडमीरल आर. एच.
१२. सिन्धी सामाजिक कवि	किशनचन्द "बेवस"	जल सेनाध्यक्ष	टहलियानी
१३. सिन्धी राष्ट्रकवि	हंसराज दुखायल	२४. सिन्धी हास्पीटल	जसलोक (बम्बई)

देह धरे का ये ही फल, देह देह कुछ देह ।
देह खेह हो जाएगी, फिर कौन कहेगा देह ॥

Acharya Bhagwandev aiming at better Sindhi Education

By Bhagu Talreja
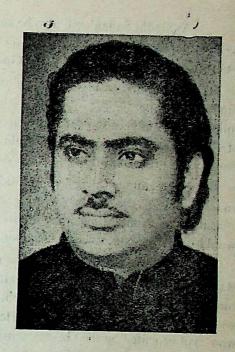
Sindhi leader Acharya Bhagwandev indeed has cause for joy and satisfaction this day of the inauguration of the first even World Sindhi Conference at the Indraprastha Stadium in New Delhi.

The inauguration of the conference by Prime Minister Indira Gandhi will make the culmination of three years of painstaking efforts, innumerable meetings, prodigious running around, diligent organisation and unshaking determination put in and demonstrated by the Acharya, the president of the Vishwa Sindhi Samaj.

"It is the fulfilment of a long-cherished dream," said the leader, who is also a Congress-I Member of Parliament. "It was high time Sindhis from all walks of life and from all corners of the world shared a common platform to air their views, forward suggestions and thrash out a tangible programme for the future well-being of the community."

The Acharya pointed out that the Sindhis had made tremendous progress in all spheres of activity, particularly on account of their hard work, initiative and entrepreneurship. They had especially distinguished themselvs in business and education, he maintained. He also noted the establishment of myriad hospitals the community was credited with.

Some of the primary objectives of the two-day conference will be to identify the problems facing the Sindhi community in India and to try to devise solutions for them, to found a permanent international sociocultural centre of Sindhis in New Delhi for looking after the community's interests and to formulate ways and means for the preservation and development of the Sindhi language, literature and culture and to arrange for research in these fields.

देह धरे का दण्ड है, सब काऊ को होय।
ज्ञानी काटे ज्ञान से, मूरख काटे रोय॥

A 'Sindhi Sadan' will also be sought to be established in the capital city. Another aim is to meet the representatives of the Sindhis overseas with a view to studying their problems and to arrange to place these before the Government.

Explaining the main purpose of setting up the Central Board of Education for the Sindhis—as one of the objectives of the conference—he asserted that the differing courses followed by Sindhi schools in different States had been posing a problem to the Sindhi pupils. He remarked that the Board would evolve recommendations, the implementation of which would help bring uniformity to the school syllabus.

He mentioned that he had touched upon this issue as far back as on April 26, 1981, in a speech in the Sindhi language he had delivered in Parliament. He had subsequently consulted the Prime Minister on the issue and had received an assurance from her that she would notify the concerned States about it.

According to him, the Union Government had written off all government loans upto Rs. 2,000 disbursed to Sindhis after partition. He was currently attempting to urge the Government to bring even those Sindhi debtors, with loans upto Rs. 5, 000 outstanding against them, within the ambit of this provision. He was, however, unable to specify the number of Sindhis who had benefited by the Government's action. Nor could he make known the sum of moneys involved by way of financial loss to the national exchequer.

According to the Acharya, the question of using either the Devnagiri or Arabic script for the written Sindhi language need not be any cause for controversy. He felt that one could opt for either.

The Samaj President also expressed satisfaction at the Government's move on January 26, 1981, to introduce a daily half-hour programme (from 8.45 to 9.15 p.m.) in Sindhi on All India Radio, Delhi. AIR was already broadcasting news bulletins in Sindhi.

Turning his attention to the internal turmoil afflicting the inhabitants of Pakistan's Sind Province since August 14, he pledged his support to the movements' bid to overthrow the allegedly despotic regime of President Mohammed Zia-ul-Haq. He averred that Gen. Zia was deceiving the Pakistani public and that the people had the right to raise their voice and demand their rights. He hoped that democracy would be restored soon in our neighbouring country and this 'rakshas'a (monster) destroyed.

Acharya Bhagwandev recalled that Sind still remains the original homeland of the Sindhis. He felt that the "time was ripe" for this part of Pakistan to become a part of India so that the Sindhis of both Pakistan and India could co-habit and work for their common good. He believed that there was a yearning among the Pakistanis, particularly the Sindhis there, for democratic traditions so ruthlessly wrenched from them by the military autocracy.

सब दानों से है बड़ा, विद्या का ही दान।
जिस प्रताप से मिलत है, मानुष देह महान ।।

Acharya Bhagwan Dev A GIVER

Smt. Viay Soni
New Delhi-110003

Many a people know about Achary Bhagwan Dev as the Yoga-acharya, parliamentarian, a celebrated writer, a self-less social worker, a unifier of Sindhis squattered all over the world ; but little the world knows that he is the true humane at heart. There may be hundreds of people who know by personal experience that Acharya Bhagwan Dev is always striving to help the poor, the down-trodden, the needy in all possible ways. One such is my experience that will prove my point of opinion about the Acharya as that reflects the opinion of masses about him.

As ill-luck would have it, my husband developed a heart disease in mid-1980. I being a lowly placed teacher, did all I could within my means for his treatment in India. But the specialists in India, after his diagnois, advised that he should underga 'open-heart-surgery' of the special kind facilities for which existed at that time in America or Swiss. One can understand the plight of a school-teacher with two little girls aged 2 and 4 being advised to take her husband for open-heart surgery to States ! I appealed through the media for financial help and also approached my friends and relatives. But these days, with meagre salaries, who could come to my rescue ? I made an appeal to SMT. INDIRA GANDHI, the late PRIME MINISTER. Having conviced about the hardship that confronted me, she donated a small sum out of Prime Minister's Relief Fund. And, from there Acharya Bhagwan Dev took the task on his shoulders. He made out all-out efforts through Shri Navin Suri, Proprietor of 'Milap' and others to render all possible help to me. It was due to his initiative and determination to help the needy that he saw to it that my husband was send to National Institutes of Health, Maryland U.S.A. for the surgery in Jan. 1981. It was with the specialised treatment and guidance under the late Dr. Andrew Morrow, Head of Surgery of the Institute, that my husband was successfully operated and returned from States in March 1981. Can my little daughters (whose father virtually got a second life) and my relatives and friends and I ever pay back Acharya Bhagwan Dev in any manner except that we should make an endevour to follow his foot-steps and do all that is possible in the service of mankind. Long live Acharya Bhagwan Dev, Long Live Humantarism :

आचार्य भगवानदेव लोक सभा के विजयी घोषित

अजमेर : इन्दिरा कांग्रेस के उम्मीदवार आचार्य भगवानदेव अजमेर संसदीय क्षेत्र से विजयी घोषित किए।

आचार्य भगवानदेव ने अपने निकटतम प्रतिद्वन्दी जनता पार्टी के श्रीकरण शारदा को 43 हजार 379 मतों से हराया।

आचार्य भगवानदेव को एक लाख 68 हजार 985 मत मिले जबकि श्रीकरण शारदा एक लाख 25 हजार 606 मत ही प्राप्त कर सके।

कम्युनिस्ट पार्टी के उम्मीदवार एच. के. व्यास जिन्हें लोकदल कांग्रेस अर्स गठबन्धन का समर्थन प्राप्त था, 51 हजार 524 मत प्राप्त कर तीसरे स्थान पर रहे।

इन्दिरा कांग्रेस के आचार्य भगवानदेव की इस अभूतपूर्व विजय में कम्युनिस्ट पार्टी के एच. के. व्यास और अन्य पांच निर्दलियों की जमानत जब्त हो गई।

अजमेर संसदीय क्षेत्र के 6 लाख 54 हजार 65 मतदाताओं में से 3 लाख 73 हजार 721 ने मतदानकिया जो कुल मतदाताओं का 56.81 प्रतिशत है।

मतगणना के दौरान 9805 मत रद्द कर दिए गये

अन्य उम्मीदवारों को इस प्रकार मत मिले :—कन्हैया लाल आजाद 2525, गोपाल 5779, धर्मचन्द पालीवाल 2603, ठाकुर बचनसिंह 4283 और युसुफ अली 2611 मत।

आचार्य भगवान देव ने अपने निकटतम प्रतिद्वन्द्वि श्रीकरण शारदा के 8 विधानसभाई क्षेत्रों में से 6 में बढ़त प्राप्त की।

किशनगढ़ में आचार्य भगवानदेव 7418 मतों से आगे रहे तो पुष्कर क्षेत्र में उन्होंने शारदा से 6 हजार 906 मत ज्यदा प्राप्त किए। इसी प्रकार नसीराबाद में 7 हजार 327 व्याबर में 8 हजार 173 और भिनाय में 4 हजार 599 मत अधिक प्राप्त किये। जपा के श्रीकरण शारदा को अजमेर पूर्व में 3 हजार 445 तथा अजमेर पश्चिम में 2 हजार 143 मत अधिक मिले।

आचार्य भगवानदेव को जबरदस्त बहुमत मसूदा विधान सभाई क्षेत्र से मिला जहां उन्होंने जनता प्रत्याशी श्रीकरण शारदा से 17 हजार 324 मत ज्यादा प्राप्त किए।

डाक के द्वारा कुल 647 मतों में से 619 वैध मत पाये गए इनमें से इंका के आचार्य भगवान देव को 392 मत, जपा के श्रीकरण शारदां को 171 मत, कम्युनिस्ट पार्टी के एच. के. व्यास को 24, प. कन्हैयालाल को ३, गोपाल को 4 धर्मचन्द पालीबाल को 2, ठाकुर बचनसिंह को 12 तथा यूसुफ अली को 11 मत मिले।

इस प्रकार आचार्य भगवान देव को डाक मत पत्रों में 221 मत अधिक मिले हैं।

(आधुनिक राजस्थान से)

लघुता से प्रभुता मिले, प्रभुता से प्रभु दूर।
चींटी मिस्री खात है, हस्ती खाबत धूर॥

130-53 229th st.
Laurelton, NY-11413
Oct. 9, 1980

Dear Shri Acharya Bhagwan Dev,

Strange are the turn of events, Enclosed are two issues of *India Abroad* concerning you.

The first issue is dated *Friday Sept*. 26. Please see page 7. The issue reached the readers before our *Vision of Asia* interview went on the TV screen. When we saw it we were horrified. I called Pravasi and he said you were with him *all* day on Sept. 13. Besides, I knew you do not drink.

This was a malicious attack on a fine and noble character in the Congress(I) party. And having known Gopal Raju and his tactics and his leanings I was convinced this was deliberately done to humiliate Mrs. Gandhi's Party.

So on Monday I called up the Consul General. He wanted to have nothing to do with the whole matter. But when I said that the Overseas Congress was planning to sue *India Abroad* for assasination of character, he got scared. So he wrote a letter to the Editor which appears in the issue dated *Oct*. 3 1980 on page 16.

Mean while I called Gopal Raju several times and he did *not* talk to me. Finally I talked to his assistant, Keshavan and insisted that they put a photograph, box the item publish an apology and same page 7 giving an equal amount of space.

My husband also called Gopal Raju and he refused to speak to my husband. And my husband also left a *threatening* message. We were *very* furious.

Then he published the item on *page* 10 of the Oct. 3 issue. The apology is *not* adequate. You should write to the Director General of the Govt. of India Tourist Office, New York. His assistant verified that you were *not* present at the party. Mr. Sethi, the DG of the Tourist Office should write to India Abroad and say that you were *not* present at the Sept. 13 party Sethi should insist the letter be published.

You too should make a noise from your end. Gopal Raju is *the* one, who wrote glowing articles and inter views about Fernandes, Subramanium Swamy and Ram Jethmalani and gave large amounts of space to anti-Congress and anti Mrs. Gandhi elements. He is adept at such political games. Please look into the matter *Vision of Asia* chopped our interwiew to bits. It came out horribly disjointed. Hoping to hear from you.

Sincerely

Mrs. Kusum Mohan

भूखे को कुछ दीजिये, यथाशक्ति जो होय ।
शीत बचन मुख से कहो, लखो आत्मा सोय ।।

न्यूयार्क

अक्तूबर २, १९८०

आदरणीय श्री आचार्य जी,

सादर नमस्कार।

आज गांधी जन्म दिवस है, काश इस दिवस पर मैं आपको इस प्रकार का पत्र न प्रेसित करता। किन्तु असत्य के आगे सिर न झुकाना मेरा स्वभाव सा बन गया है। यही प्रतिक्रिया मुझे India Abroad के प्रति दृढ़ता से करनी पड़ी है। प्रभु की यही कृपा रही कि विजय आप की ही रही।

सारांश में घटना इस प्रकार है कि दिनांक सितम्बर २६, १९८० को India Abraod News paper ने जो सूचना छापी उसकी प्रति आपकी सेवा में प्रेसित कर रहा हूं (दो प्रतियां)। मन और आत्मा को इस असत्य को पढ़कर, बहुत आघात लगा। "मुझे अच्छी तरह स्मरण है, सितम्बर १३, १९८० को मैं लगभग 11.30 प्रातः आपसे भारतीय कांसालावास में मिला था उसके बाद आपका मध्याह्न का भोजन श्री व्रिजेश मिश्रा जी ने तन्दूर में दिया, उसके बाद हम कोलम्बिया अप्लाईसेस पर आप, मैं, श्री गार्गीशंकर मिश्रा जी एवम् श्री गुप्ता जी साथ थे। लगभग 7 सायं से 8.30 तक श्री विश्व सेवा आश्रम में आपका भाषण था, उसके बाद सितम्बर 13 की रात्रि को आपने मेरे साथ रात्रि का भोजन किया था और फिर लगभग मैं और मेरी पत्नी आपको 12.15 पर Unplaza Hotel में हम अपनी कार से छोड़ आए थे।" काफी लोगों ने सन्देहात्मक स्थिति में मुझे phone किये, किन्तु सत्य प्रभु की कृपा से मेरे पास था। श्री केशवन से भी phone पर मेरी काफी लड़ाई हुई, इस सब का परिणाम यह हुआ, oct 3 के paper में पुनः आपका चित्र छापकर मांफी मांगी, मेरी आत्मा को अब शान्ति है, इन दोनों की प्रति आपको प्रेसित हैं। श्रीमती कुसुम आनन्द जी से भी आज मैंने आग्रह किया है कि Indian Overseas Congress (India) की ओर से लिखित मांफी और लिखवाकर मांगनी चाहिए। आप भी यदि चाहें मान हानि का दावा कर सकते हैं। शेष जैसा भी उचित समझें। काश, इस प्रथम पत्र में मुझे यह सब न लिखना पड़ता, किन्तु नियति प्रबल है।

आशा है आप विश्व भ्रमण कर भारत समंगल पहुंच गये होंगे। प्रवास के चित्र स्मृति-पटल पर होंगे—किन्तु प्रवासी विस्मृति के आंगन में सो गया होगा। वैसे भी बिटोही कितने चित्रों को स्मृति के आंगन में सजाये। बाहर आकाश में मेघ न जाने किसकी स्मृति में रो रहे हैं किन्तु वसुधा निर्मम मेघ का जल पीकर अपनी तपन मिटाने में विकल है—उसे क्या पता उसकी तृप्ति का मूल्य मेघ का बरस जाना भर है। फिर भी मौसम सुहावना है। मेरी भावुक लेखनी को क्षमा करना।

मेरी व्यक्तिगत प्रार्थना संदर्भ में श्री लवागिया साहब, बड़ी मृदुल भाषा में नकारात्मक उत्तर दूरभाष्य पर दूसरे दिन दे दिया था। जो हुआ पहले से ज्ञातव्य था। ये लोग बाप की मानते हैं पुत्र की नहीं। यदि आपकी आत्मा कहे तो मार्ग तीन रह जाते हैं—1 श्री ए. पी. शर्मा साहब २ श्री धवन जी, और तीसरा श्री राघवेन्दु-चेयरमैन। जैसा भी आप उचित समझें आपके अधीन है।

शुभ कामनाओं के साथ आपका का ही

अम प्रकाश "प्रवासी"

चिन्ता ताकी कीजिये, जो अनहोनी होय।
इस मार्ग संसार में, नानक थिर नहिं होय॥